

पास्तरीय पत्रियों का विस्तृत अध्ययन

Dr. John Phillips



JOHN PHILLIPS
MINISTRIES *International*

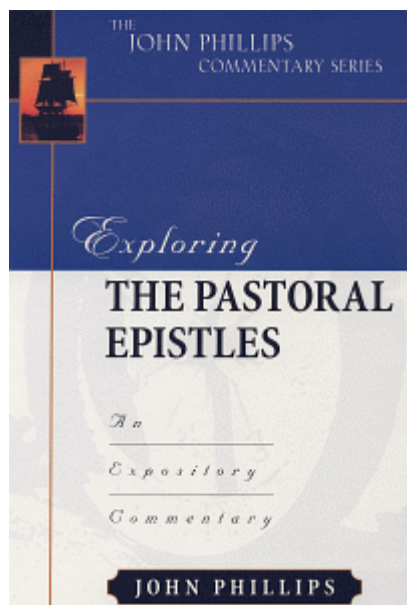
myownlibrary

जॉन फिलिप्स टीका श्रृंखला

पास्तरीय पत्रियों का विस्तृत अध्ययन

जॉन फिलिप्स

द्वारा एक व्याख्यात्मक टीका



© 2004 by John Phillips. Database © 2009 WORDsearch Corp.



तीमुथियुस के नाम पहली पत्री का परिचय

पौलुस तीमुथियुस का आदर्श था। जिन परिस्थितियों में उनकी मुलाकात हुई, उसने निस्संदेह प्रेरित पौलुस के प्रति तीमुथियुस के मन में एक गहरे सम्मान को जगाया। उस पहली भेंट के प्रभाव को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें तीमुथियुस की पृष्ठभूमि के बारे में कुछ जानना होगा।

उसका पिता अन्यजाति था। परन्तु उसकी यहूदी माता और नानी ने उसे बाइबल की कहानियों को सुनाकर पाला और यहूदी लोगों में व्याप्त मसीही आशा के विषय में उसे शिक्षा दी। उसके पिता का प्रभाव इतना प्रबल था कि तीमुथियुस का बचपन में खतना नहीं हो सका, लेकिन उसकी माता ने उस विषय पर समझौता करते हुए भी इस बात पर बल दिया कि वह अपने बेटे को यहूदी विश्वास की महान सच्चाइयाँ सिखाए।

इस प्रकार, जहाँ उसके पिता निश्चय ही उसे यूनानी देवताओं और सिकंदर महान की कथाएँ सुनाया करते थे और उसे रोमी साम्राज्य के महाकाव्यों से परिचित कराते थे, वहीं तीमुथियुस की माता ने उसके कोमल और प्रभावी हृदय को अपने बाइबल के नायकों की कथाओं से भर दिया—मूसा, एलिय्याह, दाऊद, दानिय्येल और यूसुफ। उसने उसे इब्रानी भजन सिखाए और उन भविष्यवाणियों के विषय में बताया जो आने वाले एक उद्धारकर्ता की घोषणा करते थे।

तब पौलुस मसीह के सुसमाचार के साथ गलातिया में पहुँचता है। उसने वहाँ एक के बाद एक नगरों को सुसमाचार से भर दिया—पिसिदिया, अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा और दरबे। लुस्त्रा में पौलुस का आगमन, जो शायद तीमुथियुस का अपना गृह नगर था, अत्यन्त रोमांचक और उथल-पुथल से भरा हुआ था।

पौलुस द्वारा एक स्थानीय लँगड़े व्यक्ति को चंगाई देने की अद्भुत घटना से पूरा नगर हिल गया—वह व्यक्ति जिसे सब जानते थे कि वह जन्म से ही लँगड़ा था (प्रेरितों के काम 14:8-11)। अर्चभित नगरवासियों ने तुरंत पौलुस और बरनबास को अन्यजातीय देवताओं बुध और बृहस्पति का अवतार घोषित कर दिया। स्थानीय मंदिर के पुजारी ने उत्साहपूर्वक उनके सम्मान में बैलों की बलि चढ़ाने की तैयारी कर ली। लेकिन लोगों को यह बलि चढ़ाने से रोकने के लिए पौलुस को अपनी सारी समझाने-बुझाने की शक्ति लगानी पड़ी।

हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि उस अद्भुत दिन की घटनाओं पर तीमुथियुस के घर में भोजन की मेज़ के चारों ओर कितनी चर्चा हुई होगी। शीघ्र ही पौलुस का यह रोमांचक समाचार कि पुराने नियम में की गई भविष्यवाणियों के अनुसार मसीह आ चुका है, तीमुथियुस की आत्मा में आग की तरह जल उठा, और उसने मसीह के दावों के आगे स्वयं को समर्पित कर दिया।

इसके बाद एक और भारी उथल-पुथल हुई। अन्ताकिया और इकुनियुम से आए क्रोधित यहूदी लुस्त्रा पर टूट पड़े। उन्होंने पौलुस को एक विधर्मी और उपद्रव करने वाला ठहराया और दंगा भड़काने में सफल हो गए। पौलुस को घेर लिया गया, उस पर पत्थराव किया गया, उसे नगर के बाहर घसीट कर ले जाया गया और मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया। जब यहूदी यह मान बैठे कि वह मर चुका है, तब कहीं जाकर वह दंगा शांत हुआ।

जब कोलाहल शांत हो गया और आक्रामक भीड़ तितर-बितर हो गई, तब शिष्यों ने पाया कि पौलुस अभी भी जीवित है। यद्यपि उसे बुरी तरह पीटा गया था, चोटों और घावों से लहलुहान था, फिर भी वह प्रेरित उठ

खड़ा हुआ! संभव है कि अगले दिन दरबे में अपने सुसमाचार प्रचार को जारी रखने से पहले उसने वह रात तीमुथियुस के घर बिताई हो। जब पौलुस लुस्त्रा से विदा हुआ, तो वह अपने साथ तीमुथियुस का मन भी ले गया। अंत तक, प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस के स्नेह और आदर में सर्वोच्च स्थान कायम रखा।

पौलुस ने संभवतः अपने युवा मित्र को अनेक पत्रियाँ लिखी होंगी। उनमें से दो पत्रियाँ बाइबल की पुस्तकों के रूप में अमर हो चुकी हैं। जब तीमुथियुस ने मसीही विश्वास ग्रहण किया था, तब उसने कभी नहीं सोचा होगा कि उसका नाम यहाँ-वहाँ घर-घर जाना जाएगा जहाँ सुसमाचार का प्रचार होगा—पृथ्वी की छोर तक और समय के अंत तक। फिर भी आज हम उस महाद्वीप पर खड़े हैं— जिसके विषय में किसी भी कैसर ने कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था— और तीमुथियुस की मृत्यु के लगभग दो हजार वर्ष बाद, हम उन दो पत्रियों में से पहली पत्री में पौलुस द्वारा तीमुथियुस को लिखे गए प्रत्येक शब्द को परखने और मनन करने के लिए तैयार हैं।

1 तीमुथियुस की पूरी रूपरेखा

भाग 1: परिचय (1 तीमु. 1:1-2)

1. पौलुस और उसका हस्ताक्षर (1:1क-ख)
 1. उसकी प्रेरिताई (1:1क)
 2. उसका अधिकार (1:1ख)
2. पौलुस और उसका उद्धारकर्ता (1:1ग-ड)
 1. उद्धारकर्ता वह है जिसमें हम जीवित हैं (1:1ग-ड)
 1. वह क्या है (1 तीमु 1:1ग)
 2. वह कौन है (1 तीमु 1:1घ)
 2. उद्धारकर्ता वही है जिसकी हम प्रतीक्षा करते हैं (1:1ड)
3. पौलुस और उसका पुत्र (1:2)
 1. तीमुथियुस का धन्य संबंध (1:2क)
 2. तीमुथियुस के असीम संसाधन (1:2ख)

भाग 2: एक प्रभावी कलीसिया का निर्माण कैसे करें (1 तीमु 1:3-3:15)

1. कलीसिया और उसके उपदेश (1:3-20)
 1. सत्य की हानि पर विचार (1:3-4)

1. तीमुथियुस का निवास (1:3क)
2. तीमुथियुस की ज़िम्मेदारी (1:3ख-4)
 - 1 ठोस सिद्धांत की माँग करना (1:3ख)
 - 2 मूर्खतापूर्ण भटकावों का विरोध करना (1:4)
 - 1 ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ मूर्खतापूर्ण सिद्ध होती हैं (1:4क-ख)
 1. उनकी कहानियाँ (1 तीमु 1:4क)
 2. उनकी कल्पनाएँ (1 तीमु 1:4ख)
 - 2 ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ निष्फल होने के कारण त्याग दी गई (1:4ग-घ)
 1. वे क्या आमंत्रित करते हैं (1 तीमु 1:4ग)
 2. वे क्या रोकते हैं (1 तीमु 1:4घ)
2. परमेश्वर की व्यवस्था पर विचार किया गया (1:5-11)
 1. इसका पूर्ण रूपांतरण (1:5)
 2. इसके झूठे शिक्षक (1:6-7)
 3. इसके मूर्ख दोषी (1 तीमु. 1:8-11)
 - 1 परमेश्वर की व्यवस्था की अच्छाई (1:8-9क)
 - 2 परमेश्वर की व्यवस्था की महानता (1:9ख-11)
 - 1 यह सामान्य पापों को उजागर करती है (1:9ख-छ)
 - 1 सरकार के विरुद्ध पाप (1:9ख-ग)
 1. विद्रोही (1 तीमु. 1:9ग)
 2. आज्ञा न मानने वाले (1 तीमु. 1:9ग)
 - 2 भक्ति के विरुद्ध पाप (1:9घ-ड)
 1. अधर्मी (1:9घ)
 2. पापी (1:9ड)
 3. भलाई के विरुद्ध पाप (1:9च-छ)

1. वे जो किसी भी प्रकार की झिझक नहीं रखते
(1तीमु 1:9च)

2. वे जो पवित्रता की कोई भावना नहीं रखते
(1 तीमु. 1:9छ)

2 यह घोर पापों का पर्दाफ़ाश करती है (1:9-11)

1 हत्यारे (1:9-1)

1. वे जो अपने माता-पिता को मार डालते हैं (1 तीमु.
1:9ज)

2. वे जो दूसरों की हत्या करते हैं (1 तीमु. 1:9झ)

2 "परिपक्व" (1:10क-ख)

1. वे जो वेश्यावृत्ति करते हैं (1 तीमु. 1:10क)

2. वे जो विकृत आचरण करते हैं (1 तीमु. 1:10ख)

3 मनुष्य के बेचनेवाले (1:10ग)

4 झूठ बोलनेवाले (1:10घ-11)

1. जो बोले गए वचन के विरुद्ध पाप करते हैं (1 तीमु.
1:10घ)

2. जो शपथ के विरुद्ध पाप करते हैं (1 तीमु. 1:10ङ)

3. जो पवित्र वचन के विरुद्ध पाप करते हैं (1 तीमु.
1:10च-11)

3. मसीह के प्रेम पर विचार किया गया (1:12-17)

1 पौलुस का आभार (1:12-14)

1 उसकी वर्तमान सेवकाई (1:12)

2 उसकी पूर्व द्वेष की भावना (1:13-14)

1 उसकी व्यक्त की गई द्वेषभावना (1:13क)

2 उसने जो दया अनुभव की (1:13ख-14)

1 उसकी अज्ञानता क्षमा कर दी गई (1:13ख)

2 उसकी अज्ञानता को भुला दिया गया (1:14)

1. उस अनुग्रह में जिसने उसे भरपूर किया (1 तीमु. 1:14क)

2. उस अनुग्रह में जिसने उसे प्रेरित किया (1 तीमु. 1:14ख)

2. पौलुस का सुसमाचार (1:15-16)

1 पौलुस की दृढ़ घोषणा (1:15क)

2 पौलुस की स्वीकृति (1:15ख)

3 पौलुस का प्रमाण (1:15ग-घ)

1 एक ऐतिहासिक तथ्य के बारे में (1:15ग)

2 एक विनम्र तथ्य के बारे में (1:15घ)

4 पौलुस का अनुप्रयोग (1:15ड)

5 पौलुस की आशंका (1:16)

1. परमेश्वर का धीरज (1 तीमु. 1:16क)

2. अनुग्रह का प्रतिरूप (1 तीमु. 1:16ख)

3. पौलुस का परमेश्वर (1:17)

1 उसकी असीम महानता (1:17क-ग)

1 अपरिवर्तनीय राजा (1:17क)

2 अविनाशी राजा (1:17ख)

3 अनदेखा राजा (1:17ग)

4 अटल राजा (1:17घ)

2 उसकी अनंत महिमा (1:17 ड -च)

1. यह प्रत्यक्ष महिमा है (1 तीमु. 1:17ड)

2. यह अनन्त महिमा है (1 तीमु. 1:17च)

4. विश्वास के जीवन पर विचार किया गया (1:18-20)

1 आज्ञा सौंपना (1:18-19ख)

1 एक पिता की अपील (1:18क)

2 भविष्यसूचक अपील (1:18ख)

3 व्यावहारिक अपील (1:18ग-19ख)

1 युद्ध के संबंध में (1:18ग)

2 विश्वास के संबंध में (1:19क-ख)

1 सत्य का वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विचार (1:19क)

2 सत्य का व्यक्तिनिष्ठ दृष्टि से विचार (1:19ख)

2 चुनौती (1:19ग-20)

1 खतरा प्रकट किया गया (1:19ग)

2 खतरे का उदाहरण दिया गया है (1:20)

2 कलीसिया और उसकी भक्ति (2:1-15)

1 कलीसिया में आराधना का अभ्यास (2:1-8)

1. परमेश्वर को मनुष्यों के बारे में बताना (2:1-3)

1. प्रार्थना के प्रकार (2:1क-घ)

1. विनती (2:1क)

2. व्यक्तिगत स्तर पर लागू करना (2:1ख)

3. निवेदन (2:1ग)

4. धन्यवाद (2:1घ)

2. प्रार्थना के विषय (2:1ङ-2ख)

1. सामान्य लोग (2:1ङ)

2. सरकार में लोग (2:2क-ख)

1. उच्च अधिकार रखने वाले (2:2ख)

2. ऊँचे पद वालों के लिए (2:2ख)

3. प्रार्थना के लक्ष्य (2:2ग-3)

1. मानवीय आयाम (2:2ग-ङ)

1. एक स्थिर वातावरण (2:2ग)

2. एक निरंतर प्रोत्साहन (2:2घ-ड)
 1. भक्ति के लिए (2:2घ)
 2. भलाई के लिए (2:2ड)
2. उच्च आयाम (2:3)
2. लोगों को परमेश्वर के बारे में बताना (2:4-8)
 1. परमेश्वर और उसकी करूणा (2:4)
 1. उसकी इच्छा (1 तीमु. 2:4क)
 2. उसका वचन (1 तीमु. 2:4ख)
 2. परमेश्वर और उसका मध्यस्थ (2:5-6)
 1. उसकी पूर्ण विशिष्टता (2:5)
 2. उसका बहुतायत का प्रायश्चित (2:6)
 3. परमेश्वर और उसका सन्देशवाहक (2:7-8)
 1. पौलुस की नियुक्ति (2:7)
 1. उसकी नियुक्ति का उद्देश्य (2:7क)
 2. उसकी नियुक्ति की गारंटी (2:7ख)
 3. उसकी नियुक्ति का दायरा (2:7ग)
 2. पौलुस का निवेदन (2:8)
 1. प्रार्थना के वातावरण के लिए (1 तीमु. 2:8क)
 2. प्रार्थना के दृष्टिकोण के लिए (2:8ख-ग)
 1. सहज अपेक्षा (1 तीमु. 2:8ख)
 2. आत्म-परीक्षण (1 तीमु. 2:8ग)
2. कलीसिया में महिलाओं का स्थान (2:9-15)
 1. उन्हें संयम के साथ रहना चाहिए (2:9-10)
 1. उन्हें किन बातों से बचना चाहिए (2:9)
 1. उनके पहनावे के विषय में (2:9क)

2. उनके आचरण के संबंध में (2:9ख)
3. उनके बाहरी प्रदर्शन के संबंध में (2:9ग)
2. उन्हें क्या अपनाना चाहिए (2:10)
 1. व्यक्तिगत भक्ति (1 तीमु. 2:10क)
 2. व्यावहारिक भलाई (1 तीमु. 2:10ख)
2. उन्हें चुपचाप रहकर सीखना है (2:11-15)
 1. नियम (2:11-12)
 1. सबसे प्रमुख क्या है (2:11)
 1. मौन (1 तीमु. 2:11क)
 2. अधीनता (1 तीमु. 2:11ख)
 2. क्या मनाही है (2:12)
 1. शिक्षा (1 तीमु. 2:12क)
 2. अतिक्रमण (1 तीमु. 2:12ख)
 2. कारण (2:13-14)
 1. सृष्टि में प्रकट परमेश्वर की क्रम-व्यवस्था (2:13)
 2. सृष्टि में परमेश्वर के क्रम का पलट जाना (2:14)
 1. आदम अवज्ञाकारी था (1 तीमु. 2:14क)
 2. हवा धोखा खा गई (1 तीमु. 2:14ख)
 3. प्रतिक्रिया (2:15)
 1. उद्धार के साधन (1 तीमु. 2:15क)
 2. उद्धार का उपाय (1 तीमु. 2:15ख)
3. कलीसिया और उसके कर्तव्य (3:1-15)
 1. कलीसिया के कर्तव्यों पर चर्चा (3:1-13)
 1. स्थानीय कलीसिया का आत्मिक नेतृत्व—प्राचीन (3:1-7)
 1. खोज (3:1)

1. पद की इच्छा (3:1क)
2. पद की विशिष्टता (3:1ख)
3. पद की माँगें (3:1ग)
2. योग्यताएँ (3:2-7)
 1. एक प्राचीन के लिए बुनियादी आवश्यकताएँ (3:2)
 1. मुख्य आवश्यकता (3:2क)
 2. विवाह संबंधी आवश्यकता (3:2ख)
 3. नैतिक आवश्यकताएँ (3:2ग-ड)
 1. उसकी सावधानी (1 तीमु. 3:2ग)
 2. उसके निष्कर्ष (1 तीमु. 3:2घ)
 3. उसका आचरण (1 तीमु. 3:2ङ)
 4. सेवकाई की आवश्यकताएँ (3:2च-छ)
 1. अपने सामाजिक शिष्टाचार के लिए जाने जाते हो (1 तीमु. 3:2च)
 2. अपने आत्मिक वरदानों के लिए जाने जाते हो (1 तीमु. 3:2छ)
 2. एक प्राचीन के लिए व्यापक आवश्यकताएँ (3:3-7)
 1. उसके संबंध (3:3क-ग)
 1. एक प्राचीन को मद्यपान की लत नहीं होनी चाहिए (1 तीमु. 3:3क)
 2. एक प्राचीन को क्रोधी नहीं होना चाहिए (1 तीमु. 3:3ख)
 3. एक प्राचीन को धन का लोभ नहीं होना चाहिए (1 तीमु. 3:3ग)
 2. उसका व्यवहार (3:3घ-च)
 1. एक प्राचीन को क्रोधी नहीं होना चाहिए (1 तीमु. 3:3घ)

2. एक प्राचीन को झगड़ालू नहीं होना चाहिए
(1 तीमु. 3:3ड)

3. एक प्राचीन को लालची नहीं होना चाहिए (1
तीमु. 3:3च)

3. उसकी उपलब्धियाँ (3:4-7)

1. माता-पिता के रूप में (3:4-5)

1. शासन (1 तीमु. 3:4)

1. वह कहाँ शासन करता है
(1 तीमु. 3:4क)

2. वह किस पर शासन करता
है (1 तीमु. 3:4ख)

2. कारण (1 तीमु. 3:5)

1. बेचैन करने वाला कारक
(1 तीमु. 3:5क)

2. अयोग्य ठहराने वाला
कारक (1 तीमु. 3:5ख)

2. व्यक्तिगत क्षेत्र में (3:6)

1. बल दिया गया आदेश (1 तीमु.
3:6क)

2. ज्ञानपूर्ण टिप्पणी (3:6ख-ग)

1. खतरे से बचना है (1 तीमु.
3:6क)

2. पतन से बचना है (1 तीमु.
3:6ग)

3. सार्वजनिक क्षेत्र में (3:7)

1. एक अच्छी गवाही (1 तीमु. 3:7क)

2. एक उचित कारण (1 तीमु. 3:7ख)

2. स्थानीय कलीसिया का सांसारिक नेतृत्व—सहायक सेवक / डीकन (3:8-13)

1. एक निर्दोष व्यक्ति के रूप में सहायक सेवक (3:8)
 1. उसका स्वभाव (3:8क)
 2. उसकी जीभ (3:8ख)
 3. उसके प्रलोभन (3:8ग-घ)
 1. मदिरा (3:8ग)
 2. धन (3:8घ)
2. एक विश्वासयोग्य पुरुष के रूप में सेवक (3:9-10)
 1. सत्य को धारण करने वाला (3:9)
 1. उसका दृढ़-विश्वास (3:9क)
 2. उसका विवेक (3:9ख)
 3. परीक्षा उत्तीर्ण करना (3:10)
 1. सिद्ध (1 तीमु. 3:10क)
 2. पदोन्नति (1 तीमु. 3:10ख)
3. एक पारिवारिक व्यक्ति के रूप में सेवक (3:11-12)
 1. उसकी पत्नी (3:11)
 1. उसका चरित्र (3:11क)
 2. उसकी बातचीत (3:11ख)
 3. उसकी चिंता (3:11ग)
 4. उसकी स्थिरता (3:11घ)
 2. उसका चाल-चलन (3:12)
 1. एक साथी के रूप में (1 तीमु. 3:12क)
 2. एक अभिभावक के रूप में (1 तीमु. 3:12ख)
4. एक दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में सेवक (डीकन) (3:13)
 1. उसके प्रशासन का मूल्यांकन किया जाता है (1 तीमु. 3:13क)
 2. उसकी उन्नति सुनिश्चित है (3:13ख-ग)

1. वह क्या प्राप्त करता है: विश्वास में एक अच्छा स्तर (1 तीमु. 3:13ख)

2. वह क्या सीखता है: विश्वास में बढ़ता साहस (1 तीमु. 3:13ग)

2. कलीसिया के कर्तव्यों का प्रदर्शन (3:14-15)

1. पौलुस की व्यक्तिगत इच्छा (3:14)

1. उसकी पत्नी (1 तीमु. 3:14क)

2. उसकी अभिलाषा (1 तीमु. 3:14ख)

2. पौलुस की पास्टरीय अभिलाषा (3:15)

1. एक संभावित विलंब की कल्पना की गई थी (3:15क)

2. एक सकारात्मक कर्तव्य सौंपा गया (3:15ख)

3. एक पूर्ण विवरण सुरक्षित रखा गया था (3:15ग-घ)

1. कलीसिया का चरित्र (3:15ग)

2. कलीसिया का संरक्षण (3:15घ)

भाग 3: एक प्रभावी मसीही कैसे बनें (1 तीमु. 3:16-6:19)

1. परमेश्वर के साथ चलें (3:16-4:16)

1. भक्ति का भेद (3:16-4:7क)

1. सत्य की उद्घोषणा (3:16)

1. मसीह के व्यक्तित्व का भेद (3:16क-ख)

1. कुँवारी का गर्भ: वह मानव जीवन जीने आया (3:16क)

2. खाली कब्र: वह पवित्र जीवन जीने के लिए आया (3:16ख)

2. मसीह के लोगों का भेद (3:16ग-घ)

1. स्वर्गीय सेना (3:16ग)

2. अन्यजातीय हृदय (3:16घ)

3. मसीह की सामर्थ्य का भेद (3:16 ङ -च)

1. इस पृथ्वी पर उसका विजय कार्य (3:16ङ)

2. महिमा में उसकी विजय (3:16च)

2. सत्य का आक्रमण (4:1-7क)

1. धर्मत्याग की घोषणा (4:1)

1. वह दिन जिसकी परिकल्पना की गई (4:1क)

2. वह प्रस्थान जिसकी परिकल्पना की गई (4:1ख-ग)

1. इसकी भ्रामक प्रेरणा (1 तीमु. 4:1ख)

2. इसका सैद्धांतिक भटकाव (1 तीमु. 4:1ग)

2. धर्मत्याग का विश्लेषण (4:2-5)

1. इसका भ्रामक स्वरूप (4:2)

1. चरित्रहीन लोगों द्वारा प्रचारित (1 तीमु. 4:2क)

2. विवेकहीन लोगों द्वारा प्रचारित (1 तीमु. 4:2ख)

2. इसका विनाशकारी स्वरूप (4:3-5)

1. विवाह पर इसका आक्रमण (1 तीमु. 4:3क)

2. भोजन पर इसका आक्रमण (1 तीमु. 4:3ख-5)

1. एक झूठा आदेश (1 तीमु. 4:3ख)

2. एक प्रेमपूर्ण सृष्टिकर्ता (1 तीमु. 4:3ग)

3. एक विश्वासयोग्य मसीही (1 तीमु. 4:3घ)

4. एक तार्किक अवधारणा (1 तीमु. 4:4-5)

1. मांसाहारी आहार शास्त्र आधारित है
(1 तीमु. 4:4क)

2. मांसाहार पवित्र है (1 तीमु. 4:4ख-
5)

3. प्रत्याशित धर्मत्याग (4:6-7क)

1. क्या याद रखें (4:6)

1. आरोप (1 तीमु. 4:6क)

2. चुनौती (4:6ख-ग)

1. सेवक का आहार (1 तीमु. 4:6ख)
2. सेवक का विकास (1 तीमु. 4:6ग)
2. किन बातों से अलग रहना है (4:7क)
2. भक्ति का प्रकटीकरण (4:7ख-16)
 1. व्यक्तिगत अभ्यास द्वारा (4:7ख-11)
 1. उचित अभ्यास के प्रश्न की समीक्षा (4:7ख-9)
 1. एक विरोधाभास (4:7ख-8क)
 1. आत्मिक मनुष्य का अभ्यास (4:7ख)
 2. शारीरिक अंगों का अभ्यास (4:8क)
 2. निष्कर्ष (1 तीमु. 4:8ख-9)
 1. भक्ति लाभदायक है (4:8ख-ग)
 1. सांसारिक जीवन के लिए (1 तीमु. 4:8ख)
 2. अनंत जीवन के लिए (1 तीमु. 4:8ग)
 2. भक्ति अधिक श्रेष्ठ है (4:9)
 2. कष्टदायक अनुभव के प्रश्न की समीक्षा (4:10-11)
 1. एक विस्मय (1 तीमु. 4:10)
 1. हमारी सेवा के विषय में (4:10क-ख)
 1. हमारे अवसर (1 तीमु. 4:10क)
 2. हमारा विरोध (1 तीमु. 4:10ख)
 2. हमारे उद्धार के विषय में (4:10ग-घ)
 1. परमेश्वर का उद्धार सक्रिय रूप से बढ़ाया गया (1 तीमु. 4:10ग)
 2. परमेश्वर के उद्धार का वास्तविक अनुभव (1 तीमु. 4:10घ)
 2. एक प्रोत्साहन (4:11)
 2. सार्वजनिक उदाहरण के द्वारा (4:12-16)

1. ज्ञान की बातें (4:12-13)

1. समस्या का सामना करना (4:12क)

2. समस्या से लड़ना (4:12ख-13)

1. कुछ शुरुआती कदम (4:12ख-ज)

1. प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (4:12ख)

2. प्रस्ताव को विस्तृत किया गया (4:12ग-ज)

1. तीमुथियुस की बातचीत अनुकरणीय होनी चाहिए (1 तीमु. 4:12ग)

2. तीमुथियुस का आचरण अनुकरणीय होना चाहिए (1 तीमु. 4:12घ)

3. तीमुथियुस की करुणा अनुकरणीय होनी चाहिए (1 तीमु. 4:12ङ)

4. तीमुथियुस का चरित्र अनुकरणीय होना चाहिए (1 तीमु. 4:12च)

5. तीमुथियुस के विश्वास अनुकरणीय होने चाहिए (1 तीमु. 4:12छ)

6. तीमुथियुस की शुद्धता अनुकरणीय होनी चाहिए (1 तीमु. 4:12ज)

2. आगे के कुछ और कदम (4:13)

1. मानसिक रूप से बढ़ते रहो (4:13क)

2. सेवकाई में आगे बढ़ते रहें (4:13ख-ग)

1. पवित्र लोगों को प्रोत्साहित करके (1 तीमु. 4:13ख)

2. पवित्रशास्त्र की व्याख्या करके (1 तीमु. 4:13ग)

2. चेतावनी का एक वचन (4:14-16)

1. तीमुथियुस और उसका वरदान (4:14)

1. एक चितौनी (4:14क)
2. एक स्मरण (4:14ख)
2. तीमुथियुस और उसकी उन्नति (4:15)
 1. मनन करने का आह्वान (4:15क)
 2. समर्पण का आह्वान (4:15ख)
3. तीमुथियुस और उसकी चौकसी (4:16)
 1. पौलुस ने उसे चेतावनी दी (4:16क)
 2. पौलुस ने उसे सलाह दी (4:16ख)
2. परमेश्वर के लिए गवाही (5:1-6:19)
 1. परमेश्वर के लोग (5:1-6:2)
 1. पवित्र लोगों की संगति (5:1-2)
 1. पुरुषों के विषय में एक संदेश (5:1)
 1. वृद्ध पुरुष: सम्मान पर बल (5:1क)
 2. अन्य पुरुष: रिश्तों पर बल (5:1ख)
 2. स्त्रियों के विषय में एक वचन (5:2)
 1. बूढ़ी स्त्रियाँ: माता-पिता होने पर बल (5:2क)
 2. अन्य स्त्रियाँ: पवित्रता पर बल (5:2ख)
 2. विधवाओं के लिए न्याय (5:3-16)
 1. विश्वसनीय विधवा (5:3-10)
 1. विधवा और उसका सम्मान (5:3)
 2. विधवा और उसके संसाधन (5:4)
 1. नियम (5:4क)
 2. कारण (5:4ख)
 3. विधवा और उसकी प्रतिक्रियाएँ (5:5-7)
 1. विधवा जो बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया करती है (5:5)

1. उसकी असहाय अवस्था (1 तीमु. 5:5क)
2. उसका समर्पण (5:5ख-ग)
 1. परमेश्वर पर उसकी निर्भरता (1 तीमु. 5:5ख)
 2. परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति (1 तीमु. 5:5ग)
2. सांसारिक तरीके से प्रतिक्रिया देने वाली विधवा (5:6-7)
 1. जो उल्लेख किया गया है (5:6)
 2. क्या आवश्यक है (5:7)
4. विधवा और उसके संबंध (5:8)
 1. क्या आवश्यक है (5:8क)
 2. क्या प्रकट हुआ है (5:8ख)
5. विधवा तथा उसका ग्रहण किया जाना (5:9)
 1. उसकी परिपक्वता का प्रश्न (1 तीमु. 5:9ग)
 2. उसकी एक-पतिव्रत निष्ठा का प्रश्न (1 तीमु. 5:9ख)
6. विधवा और उसकी प्रतिष्ठा (5:10)
 1. क्या वह एक भली स्त्री है? (5:10क)
 2. क्या वह उदार स्वभाव की है? (5:10ख-च)
 1. उसके घर पर ध्यान दें (5:10ख)
 2. उसके आतिथ्य-सत्कार को देखें (5:10ग)
 3. उसकी विनम्रता पर ध्यान दें (5:10घ)
 4. उसके मन को देखें (5:10ङ)
 5. उसके सहायतापूर्ण व्यवहार पर ध्यान दें (5:10च)
2. अनिच्छुक विधवा (5:11-15)

1. इनकार (5:11क)

2. कारण (5:11ख-12)

1. वह अपना पहला प्रेम त्याग देगी (1 तीमु. 5:11ख)

2. वह अपना पहला विश्वास त्याग देगी (1 तीमु. 5:12)

3. दोषारोपण (5:13)

1. आलसी जीवन की दोषी (5:13क)

2. घरों में भटकते फिरने की दोषी (5:13ख)

3. किस्से-कहानियाँ सुनाने की दोषी (5:13ग)

4. हस्तक्षेप करने की दोषी (5:13घ)

5. हानि पहुँचाने की दोषी (5:13ङ)

4. सिफारिश (5:14-15)

1. पौलुस ने क्या इच्छा की (5:14क-ग) एक जवान विधवा :

1. एक नए साथी से मंगनी करे (1 तीमु. 5:14क)

2. एक नया माता-पिता बने (1 तीमु. 5:14ख)

3. एक नए पद को सुशोभित करे (1 तीमु. 5:14ग)

2. पौलुस ने किस बात पर खेद प्रकट किया (5:14घ)

3. पौलुस ने क्या परखा (5:15)

3. संबंधित विधवा (5:16)

1. एक सावधानी (5:16क)

2. एक प्रावधान (5:16ख)

3. एक प्रस्ताव (5:16ग-घ)

1. कलीसिया और उसके संसाधन (1 तीमु. 5:16ग)

2. कलीसिया और उसकी ज़िम्मेदारियाँ (1 तीमु. 5:16घ)

3. प्राचीनों के प्रति विश्वासयोग्यता (5:17-25)

1. लोगों के लिए एक वचन (5:17-22)

1. प्राचीनों का आदर करना (5:17-18)

1. उनका शासन (1 तीमु. 5:17क)

2. उनकी भूमिका (1 तीमु. 5:17ख)

3. उनका प्रतिफल (1 तीमु. 5:18)

1. पुराने नियम का संदर्भ (1 तीमु. 5:18क)

2. नये नियम का संदर्भ (1 तीमु. 5:18ख)

2. प्राचीनों पर आरोप लगाना (5:19-20)

1. एक सावधानीपूर्ण आवश्यकता (5:19)

2. सार्वजनिक फटकार (5:20)

3. प्राचीनों को ग्रहण करना (5:21-22)

1. एक नाटकीय माँग (5:21क)

2. एक कठिनाई का खुलासा (5:21ख-ग)

1. आज्ञाकारिता का मुद्दा (1 तीमु. 5:21ख)

2. निष्पक्षता का मुद्दा (1 तीमु. 5:21ग)

3. एक खतरे का संकेत (5:22)

1. जल्दबाजी में कदम उठाने की संभावना (5:22क)

2. भयंकर गलती करने की संभावना (5:22ख)

2. पास्टर के लिए एक वचन (5:23-25)

1. तीमुथियुस की बीमारी (5:23)

2. तीमुथियुस की स्थिति (5:24-25)

1. पाप करने वाले लोग (5:24)

2. सेवा करने वाले लोग (5:25)

4. सेवकों के लिए दृढ़ता (6:1-2)

1. विशिष्ट चरित्र वाले स्वामी (6:1)

1. व्यक्त की गई आवश्यकता (1 तीमु. 6:1क)

2. स्पष्ट की गई आवश्यकता (1 तीमु. 6:1ख)

2. जिनके स्वामी मसीही हैं (6:2)

1. एक खतरा (6:2क-ख)

1. एक आशीष जिसका आनंद लिया जाना है (1 तीमु. 6:2क)

2. एक दोष जिससे बचना है (1 तीमु. 6:2ख)

2. एक कर्तव्य (6:2ग-घ)

1. एक ज़िम्मेदारी (6:2ग)

2. एक कारण (6:2घ)

3. एक आग्रह (6:2ङ)

2. भक्ति की प्राथमिकता (6:3-6)

1. भक्ति की व्याख्या (6:3-5)

1. स्वर्ण मानक का प्रकटीकरण (6:3)

1. जालसाज़ की पहचान कैसे करें (6:3क-ख)

1. उसके द्वारा की गई घोषणाओं से (1 तीमु. 6:3क)

2. उसके द्वारा किए गए इनकार से (1 तीमु. 6:3ख)

2. जालसाज़ी को कैसे परखें (6:3क-ख)

1. उद्धारकर्ता के व्यक्तिगत वचन से (1 तीमु. 6:3ग)

2. पवित्रशास्त्र के शुद्ध वचन से (1 तीमु. 6:3ग)

2. दोष के दाग प्रकट किए गये (6:4-6)

1. झूठे उपदेशकों की परीक्षा (6:4-5घ)

1. उनका व्यक्तिगत पर्दाफ़ाश (6:4क)

2. उनका सार्वजनिक पर्दाफ़ाश (6:4ख-5घ)

1. उनके प्रश्नों का प्रकट होना (6:4ख-ग)

1. ऐसे सांसारिक अवलोकन (1 तीमु. 6:4ख)
2. ऐसे शरारती प्रश्न (1 तीमु. 6:4ग)
2. उनके झगड़ों का प्रकट होना (6:4घ-5घ)
 1. उनकी “सेवा” (6:4घ-च)
 1. लोभ को बढ़ावा देती है (1 तीमु. 6:4घ)
 2. झगड़े को बढ़ावा देती है (1 तीमु. 6:4ङ)
 3. तिरस्कार को बढ़ावा देती है (1 तीमु. 6:4च)
 2. उनकी मानसिकता (6:4छ-5ग)
 1. उनके विचारों का फल (6:4छ-5क)
 1. (a) उनकी मानसिक दरिद्रता (6:4छ)
 2. (b) उनके अनेक झगड़े (6:5क)
 2. उनकी सोच की जड़ (6:5ख-ग)
 1. (a) उनके मनों की अंतर्निहित बुराई (6:5ख)
 2. (b) उनके मनों का अंतर्निहित दिवालियापन (6:5ग)
 3. उनके उद्देश्य (6:5घ)
2. झूठे उपदेशकों का बहिष्कार (6:5ङ)

2. भक्ति की प्रशंसा (6:6)
3. धन का खतरा (6:7-10)
 1. एक मूल तथ्य (6:7)
 2. एक मूल सूत्र (6:8)
 3. एक बुनियादी मूर्खता (6:9)
 1. प्रलोभन की व्याख्या (6:9क-ख)
 1. छिपी हुई लालसा (6:9क)
 2. हानिकारक वासनाएँ (6:9ख)
 2. फंदे का पर्दाफाश (6:9ग)
 4. एक मूलभूत भ्रांति (6:10)
 1. लोग क्या सपने देखते हैं (1 तीमु. 6:10क)
 2. लोग क्या खोजते हैं (6:10ख-घ)
 1. ग़लत प्रेम (1 तीमु. 6:10ख)
 2. बर्बाद ज़िंदगी (6:10ग-घ)
 1. बड़ा प्रलोभन (1 तीमु. 6:10ग)
 2. बड़ा दुःख (1 तीमु. 6:10घ)
4. भलाई की खोज (6:11-19)
 1. तीमुथियुस को चुनौती (6:11-12)
 1. भाग जाने की (6:11क)
 2. अनुसरण करने की (6:11ख-छ)
 1. दैवीय चरित्र का वर्णन किया गया (6:11ख-ग)
 1. मनुष्य के प्रति ईमानदारी (1 तीमु. 6:11ख)
 2. परमेश्वर के प्रति निष्ठा (1 तीमु. 6:11ग)
 2. दैवीय चरित्र का सार (6:11घ-ड)
 1. परमेश्वर के वचन के द्वारा (1 तीमु. 6:11घ)

2. परमेश्वर के आत्मा के द्वारा (1 तीमु. 6:11ड)
3. दैवीय चरित्र का प्रदर्शन (6:11f-छ)
3. लड़ने की (6:12)
 1. आदेश का एक वचन (6:12क-ख)
 1. हार मत मानो! (6:12क)
 2. जाने मत दो! (6:12ख)
 2. सराहना का एक वचन (6:12ग-घ)
 1. तीमुथियुस अपनी बुलाहट के प्रति पूरी तरह से सच्चा था (1 तीमु. 6:12ग)
 2. तीमुथियुस सार्वजनिक रूप से अपनी बुलाहट के प्रति सच्चा था (1 तीमु. 6:12घ)
2. तीमुथियुस के लिए आज्ञा (6:13-19)
 1. प्रोत्साहन (6:13क-ख)
 1. परमेश्वर की उपस्थिति (6:13क)
 2. परमेश्वर की सामर्थ्य (6:13ख)
 2. उदाहरण (6:13ग-14)
 1. प्रभु का अंगीकार (6:13ग)
 2. प्रभु का आगमन (6:14)
 3. उद्घोष (6:15-16)
 1. प्रकट होने का पल (6:15क)
 2. प्रकाशन का आश्चर्य (6:15ख-16)
 1. वह जो पूर्ण सामर्थ्यवान है (6:15ख-घ)
 1. शासक के रूप में (1 तीमु. 6:15ख)
 2. अधिपति के रूप में (1 तीमु. 6:15ग)

3. राज करने वाले के रूप में (1 तीमु. 6:15घ)

2. वह जो अपने व्यक्तित्व में अमर है (6:16क)

3. वह जो अपनी उपस्थिति में अद्भुत है (6:16ख-ग)

1. अगम्य — अद्भुत ज्योति में वास करने वाला (6:16ख)

2. अदृश्य — समस्त सीमित दृष्टि से परे (6:16ग)

4. स्तुति से अलंकृत (6:16घ-ड)

1. अनन्त आदर उसका है (1 तीमु. 6:16घ)

2. अनन्त अधिकार उसका है (1 तीमु. 6:16ड)

4 अपेक्षा (6:17-19)

1. धनवान व्यक्ति और उसका धन (6:17)

1. उसे क्या त्यागना चाहिए (6:17क-ख)

1. अपने धन पर विजय पाना (1 तीमु. 6:17क)

2. अपने धन पर भरोसा रखना (1 तीमु. 6:17ख)

2. उसे क्या पहचानना चाहिए (6:17ग)

2. धनवान व्यक्ति और उसका लक्ष्य (6:18-19) उसे देखना चाहिए

1. अपनी वर्तमान ज़िम्मेदारी को (6:18)

2. अपने भावी प्रतिफल को (6:19)

भाग 4: निष्कर्ष (1 तीमु. 6:20-21)

1. एक विनती भरा वचन (6:20-21क)

1. एक कर्तव्य का उल्लेख (6:20क)
2. एक वैकल्पिक मार्ग की सलाह (6:20ख-21क)
 1. खतरा प्रकट किया गया (6:20ख-ग)
 1. स्पष्ट रूप से मूर्खतापूर्ण विचार (6:20ख)
 2. लोकप्रिय "वैज्ञानिक" विरोध (6:20ग)
 2. खतरा वास्तविक है (6:21क)
2. विदाई का वचन (6:21ख)

भाग 1. परिचय

तीमुथियुस 1:1-2

क. पौलुस और उसका हस्ताक्षर (1:1क-ख)

1. उसकी प्रेरिताई (1:1क)

“पौलुस, यीशु मसीह का प्रेरित...”—इस प्रकार तीमुथियुस को लिखी गई पहली पत्री आरंभ होती है, और यह हमारे ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करता है। अपने प्रिय मित्र को लिखते समय पौलुस ने अपने नाम के साथ अपनी उपाधि जोड़ना क्यों आवश्यक समझा? (उन दिनों पत्री की शुरुआत हस्ताक्षर से करना एक सामान्य रीति थी।) परन्तु, जब हम अपने घनिष्ठ मित्रों को पत्र लिखते हैं, तो अपने नाम के बाद अपनी उपाधियाँ या डिग्रियाँ नहीं लिखते! यह बात आधिकारिक पत्रों में तो उचित हो सकती है, पर व्यक्तिगत पत्रों में नहीं। इसलिए पौलुस द्वारा अपनी उपाधि का प्रयोग करना हमारे ध्यान को खींचता है। स्पष्ट है कि पहला तीमुथियुस केवल एक व्यक्तिगत पत्र नहीं है, यद्यपि उसमें व्यक्तिगत भाव भी अवश्य हैं। यह एक पास्टरीय पत्री है, जिसे न केवल तीमुथियुस द्वारा पढ़े जाने के लिए, बल्कि उन सभी लोगों के लिए भी लिखा गया था जिनकी वह सेवा कर रहा था।

संभवतः जिस समय पौलुस ने यह पत्री लिखी, उस समय तीमुथियुस इफिसुस में था और पौलुस की सबसे महान कलीसियाओं में से एक की चरवाही कर रहा था। जिन “फाड़नेवाले भेड़ियों” के विषय में पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों को पहले ही चेतावनी दी थी (प्रेरितों के काम 20:29), वे अंततः कलीसिया में घुस आए थे। इस स्थिति से निपटने के लिए पौलुस ने तीमुथियुस को वहाँ भेजा। यह पत्री तीमुथियुस के हाथों को दृढ़ करने और उसे यह मार्गदर्शन देने के लिए था कि उसे कौन-कौन से कदम उठाने चाहिए। हम इसमें परमेश्वर के प्रभुत्वपूर्ण हाथ को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं—कि पौलुस स्वयं इफिसुस नहीं गया; क्योंकि यदि वह गया होता, तो संभवतः आज हमारे बाइबल में यह पत्री उपलब्ध न होती।

2. उसका अधिकार (1:1ख)

पौलुस “परमेश्वर की आज्ञा से” एक प्रेरित था। यहाँ “आज्ञा” के लिए प्रयुक्त शब्द उस आज्ञा के पीछे निहित अधिकार पर बल देता है। एक रोमी राज्यपाल अपना अधिकार या तो रोमी महासभा से या कैसर से प्राप्त करता था; परन्तु पौलुस का अधिकार परमेश्वर से आया था।

“परमेश्वर की आज्ञा से” यह वाक्यांश शामिल करना इफिसुस की कलीसिया के पतन के बारे में कुछ इंगित करता है। केवल छह वर्षों के लगभग ही बीते थे जब पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों को अब तक का सबसे भव्य पत्र भेजा था, जिसमें अब तक प्रकट हुई महानतम सच्चाइयाँ समेटी गई थीं, फिर भी पौलुस को पहले ही अपनी प्रेरिताई अधिकार का प्रयोग करना आवश्यक लगा।

ख. पौलुस और उसका उद्धारकर्ता (1:1ग-ड)

1. उद्धारकर्ता वह है जिसमें हम जीवित हैं (1:1ग-ड)

पौलुस “हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर और मसीह यीशु” की आज्ञा से प्रेरित बना। परमेश्वर को यहाँ और पवित्रशास्त्र में अन्य स्थानों में हमारा उद्धारकर्ता कहा गया है (लूका 1:47; 1 तीमुथियुस 2:3; तीतुस 1:3; 2:10; 3:4; यहूदा 25)। आमतौर पर उद्धारकर्ता की उपाधि प्रभु यीशु के लिए आरक्षित होती है, जिसका नाम पौलुस ने यहाँ तुरंत जोड़ दिया, जो मसीह के ईश्वरत्व का अप्रत्यक्ष संदर्भ देता है। परमेश्वर, जो हमारा उद्धारकर्ता है, और मसीह यीशु, जो समान रूप से हमारा उद्धारकर्ता है, ने पौलुस की प्रेरिताई सेवा का दृढ़ समर्थन किया।

हम कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस गलातिया और यूरोप के नगरों में, और एशियाई इफिसुस में कैसे गर्व से कदम रखते हुए प्रवेश किया। वह परमेश्वर के राजदूत के रूप में गया, ताकि पाप में डूबी हुई और घृणित धर्मों से भ्रष्ट नगरों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के विवेक के दरबार को घेर ले। ऐसे स्थानों पर एक व्यक्ति और उसके कुछ अनुयायी भला कैसे यह आशा कर सकते थे कि वे कोई वास्तविक और गहरा प्रभाव डाल पाएँगे? ये नगर तो दुष्टात्मा की गोद में बसी हुई थीं। उनके शासन, न्यायालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय, और लगभग सभी निवासियों के घरों और हृदयों में गहरी बुराई और दुष्टता का राज था। लेकिन पौलुस को परमेश्वर की शक्ति का समर्थन प्राप्त था।

जब पौलुस किसी नगर में प्रवेश करता था, तो वह अपने सुसमाचार प्रचार के कार्य को आरंभ करने के लिए एक उपयुक्त स्थान की खोज करता था। यदि वहाँ कोई आराधनालय होता, तो वह सबसे पहले वहीं जाता। यदि वह कोई आराधनालय नहीं पाता, तो वह नदी किनारे कुछ यहूदियों की तलाश करता, जैसे फिलिप्पियों में, या फिर किसी तम्बू बनाने वाले के यहाँ नौकरी कर लेता, जैसे कुरिन्थ में किया। वह यह भरोसा रखते हुए लोगों से संपर्क बनाता कि परमेश्वर उन हृदयों को उसकी ओर लाएगा जिन्हें उसने छुआ है। शैतान की शक्ति चाहे कितनी भी गहरी क्यों न हो, पौलुस अपने साथ उससे भी एक बड़ी सामर्थ्य और अधिकार लेकर आया था। वह परमेश्वर के आदेश से नियुक्त एक प्रेरित था—वही परमेश्वर जो हमारा उद्धारकर्ता है—और प्रभु यीशु मसीह के आदेश से भी, जो हमारे विश्वास का “कर्ता और सिद्ध करनेवाला” हैं (इब्रानियों 12:2)।

शैतान ऐसे अधिकार से सुसज्जित एक व्यक्ति का मुकाबला नहीं कर सका। उसके गढ़ ढह गए। आत्माएँ बचाई गईं। एक कलीसिया का रोपण हुआ। जीवन रूपांतरित हुए। पूरे परिवारों को छुटकारा मिला। पौलुस के युद्ध के हथियार “गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी” थे (2 कुरिं. 10:4)। अक्सर, शत्रु केवल इतना ही कर पाता था कि सताव भड़का दे, पर इससे केवल यही होता था कि परमेश्वर का यह राजदूत आगे बढ़कर किसी नए नगर की ओर चला जाता था; और जो मसीही पीछे रह जाते थे, वे पौलुस के उदाहरण से और अधिक दृढ़, शुद्ध तथा साहसी बन जाते थे। तीमुथियुस ने पौलुस के अधिकार को पहचाना, जैसा कि इफिसियों ने भी किया था।

2. उद्धारकर्ता वही है जिसकी हम प्रतीक्षा करते हैं (1:1ड)

अपनी प्रेरित्व अधिकार को घोषित करने के बाद, पौलुस ने उस घोषणा को नरम करते हुए ये शब्द जोड़ दिए—“जो हमारी आशा है।” इस प्रकार उसने अपने पाठकों का ध्यान स्वयं और युवा तीमुथियुस से हटा दी और उन्हें प्रभु यीशु पर तथा हर विश्वासी में उसमें निहित अटल आशा की ओर केंद्रित कर दिया।

जब से पौलुस ने इफिसियों को अपनी पत्री लिखी थी, तब से यह दुनिया मसीहियों के लिए कहीं अधिक खतरनाक जगह बन गई थी। नीरो ने रोम में आग लगा दी और अपने अपराध को ढांपने के लिए उसने आग का दोष मसीहियों पर मढ़ दिया। वे यहूदियों की तुलना में अधिक सुविधाजनक ‘बलि का बकरा’ साबित हुए। मसीहियों के पास अपना कोई अंतरराष्ट्रीय संगठन नहीं था, कोई धनवान या प्रभावशाली व्यक्ति नहीं था जो उनके लिए आवाज उठाता, और न ही उनकी कोई मातृभूमि थी जो उनके लिए रोम के साथ युद्ध करने के लिए तैयार होती। वास्तव में, अधिकांश मसीही गुलाम थे।

रोम में सताव की अग्नि भयानक उग्रता के साथ भड़की हुई थी, और उसकी लपटें प्रांतों तक फैल रही थीं। निस्संदेह, पौलुस जानता था कि उसके दिन अब गिने-चुने ही रह गए हैं। यहूदी-रोम युद्ध पहले ही भड़क चुका था, एक ऐसा युद्ध जिसकी भविष्यवाणी मसीही जानते थे कि स्वयं प्रभु ने की थी (लूका 21:6-24)।

निस्संदेह, जब कलीसिया ने 1 तीमुथियुस 1:1 में “आशा” शब्द को पढ़ा, तो अधिकांश विश्वासियों ने उस आशा के बारे में सोचा, जिसे पौलुस ने अन्य किसी स्थान पर “उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट” होने के विषय में कहा था (तीतुस 2:13)। जैसे-जैसे दिन और भी अधिक अंधकारमय होते गए और परछाइयाँ लंबी होती चली गईं, वैसे-वैसे प्रभु के आगमन की आशा और भी प्रज्वलित होकर चमकने लगी। प्रभु के फिर से आने के विचार ने विश्वासियों को सताव के विरुद्ध दृढ़ किया और कलीसिया में अव्यवस्था और त्रुटियों के प्रति एक स्वस्थ प्रतिकार के रूप में कार्य किया।

ग. पौलुस और उसका पुत्र (1:2)

1. तीमुथियुस का धन्य संबंध (1:2क)

तीमुथियुस लगभग पंद्रह वर्ष का था जब पौलुस ने इतनी ऊर्जा और नाटकीय ढंग से लुस्त्रा में उसके जीवन में प्रवेश किया। जब उसने यह पहली पत्री प्राप्त की, तब तीमुथियुस लगभग तीस से पैंतीस वर्ष का रहा

होगा, परन्तु “वृद्ध पौलुस” (तीमुथियुस से लगभग तीस वर्ष बड़ा, फिलेमोन 9) की दृष्टि में तीमुथियुस अभी भी एक युवा ही था।

पौलुस के अपने युवा मित्र के प्रति स्नेह के बारे में कोई संदेह नहीं है। प्रेरित ने अपनी पत्नी को इस प्रकार संबोधित किया—“ तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है।” जितना हमें ज्ञात है, पौलुस विवाहित नहीं था (1 कुरिन्थियों 7:6-8) और उसका अपना कोई पुत्र नहीं था। उसने उस पुत्र को तीमुथियुस में पाया, जिसकी उसे हमेशा लालसा रही थी। पौलुस ने फिलिप्पियों को याद दिलाया कि कैसे वह और तीमुथियुस दोनों फिलिप्पियों में साथ कार्य कर चुके थे: “जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया” (फिलिप्पियों 2:22)। उस पद में “पुत्र” के लिए प्रयुक्त शब्द टेकनॉन है। पौलुस द्वारा इस शब्द का चयन यह दर्शाता है कि उसने तीमुथियुस को अपने वास्तविक पुत्र के समान माना, मानो वह उसका स्वाभाविक जन्मा पुत्र ही हो।

जब उसने कुरिन्थियों को लिखा, तो पौलुस ने तीमुथियुस को —“मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र” कहा (1 कुरिन्थियों 4:17)। स्पष्ट है, कि पौलुस को तीमुथियुस के साथ अपने संबंध से आनंद और स्नेह मिलता था, और तीमुथियुस धन्य था कि उसके पास पौलुस जैसा एक मार्गदर्शक था।

पौलुस परमेश्वर की उन विशिष्ट रचनाओं में से एक था। वह शेर जितना साहसी था और उसका मन समस्त ब्रह्मांड के लिए बना हुआ था। इसके अतिरिक्त, उसकी महान बुद्धि को मसीह ने जीत लिया और उसे अधिक विस्तृत एवं परिपक्व बना दिया। पौलुस हृदय से गर्मजोश, उद्योगशील, ऊर्जावान और प्रभावशाली था। उसके पास मित्र बनाने की—और कभी-कभी विरोधियों को भी प्रभावित करने की—एक असाधारण कला मौजूद थी। वह जन्म से यहूदी था, फरीसी के रूप में पला-बढ़ा और रब्बी बनने के लिए प्रशिक्षित हुआ। उसने एक यूनानी नगर में भी जीवन बिताया और यूनानी दार्शनिकों की सराहना की। वह रोमी नागरिक भी था—जो उस समय एक बहुत ही दुर्लभ सौभाग्य था। उसने बड़े पैमाने पर यात्रा की, हर प्रकार के लोगों को जाना, और जीवन के प्रति तीव्र उत्साह रखता था। शास्त्रों के वर्षों के अध्ययन के परिणामस्वरूप उसकी मान्यताएँ बिल्कुल स्पष्ट और दृढ़ थीं। सबसे बढ़कर, वह जी उठे हुए मसीह से मिला था। वह ज्ञान का कितना महान स्रोत रहा होगा! उसकी बातचीत कितनी प्रेरणादायक रही होगी! विश्वास में पिता और व्यक्तिगत मित्र के रूप में ऐसा व्यक्ति कितना अद्भुत रहा होगा!

2. तीमुथियुस के असीम संसाधन (1:2ख)

पौलुस ने तीमुथियुस और तीतुस के नाम अपनी व्यक्तिगत और पासवानी पत्रियों में “अनुग्रह, दया और शांति” के अभिवादन के शब्दों को सुरक्षित रखा। यह केवल अनुमान का विषय है कि प्रेरित ने अपने सामान्य अभिवादन “अनुग्रह और शांति” में “दया” को क्यों जोड़ा।

संभवतः इसका कारण आशीष और दया के बीच के अंतर में निहित है। अनुग्रह और शांति जैसी आशीषें आत्मिक स्वभाव के होते हैं, जबकि दया अस्थायी प्रकृति की होती है। बहुत कम लोग इस अंतर को समझ पाते हैं। हम अक्सर सुनते हैं कि लोग कहते हैं, “परमेश्वर ने मुझे एक अच्छी पत्नी, सुविधाजनक घर और एक स्थिर नौकरी से आशीषित किया है,” परन्तु ये सभी आशीषें नहीं, बल्कि दया के भाग हैं। हमारे

वास्तविक आशीषों की व्याख्या पहाड़ पर दिए गए पहाड़ी उपदेश में (मत्ती 5:1-12) और पत्रियों में की गई है (जैसे, इफिसियों 1:3)।

पौलुस ने अपने दो युवा मित्रों के लिए अभिवादन में “दया” को क्यों शामिल किया—इसका एक संकेत संभवतः साम्राज्य की राजनीतिक स्थिति में पाया जा सकता है। नीरो क्रोधित होकर अत्याचार पर उतर आया था। अब एक मसीही होना पहले से भी अधिक खतरनाक हो गया था, और कलीसिया का अगुवा होना दोगुना जोखिम भरा था। ऐसे समय में पौलुस ने निश्चित ही परमेश्वर के संरक्षणकारी हाथ—अर्थात् उनकी दया—के लिए प्रार्थना और निर्भरता व्यक्त की होगी।

किसी भी स्थिति में, यह स्मरण रखना बुद्धिमानी है कि परमेश्वर की दयाएँ हमारी सांसारिक आवश्यकताओं से संबंधित होती हैं और उसकी बुद्धि तथा इच्छा के अनुसार ज्वार-भाटे की तरह घटती-बढ़ती रहती हैं। हमारे पास यह कोई गारंटी नहीं है कि हम कभी बीमार न होंगे, कभी कोई दुख सहने के लिए नहीं होंगे, हमेशा अपने शत्रुओं से सुरक्षित रहेंगे, या हमेशा आरामदायक परिस्थितियों में रहेंगे। करोड़ों परमेश्वर के लोग कठिनाइयों का सामना कर चुके हैं और उसके परिणामस्वरूप वे अनुग्रह में बढ़े हैं। इसके विपरीत, हमारी आशीषें सभी आत्मिक हैं, अनंत हैं, और मसीह में हमेशा के लिए सुरक्षित हैं।

पौलुस ने अपने अभिवादन के बाद जो लिखा, वह दो मुख्य विषयों के चारों ओर घूमता है—एक कलीसिया संबंधी और दूसरा व्यक्तिगत। उसने तीमुथियुस को यह बताया कि एक प्रभावशाली कलीसिया का निर्माण कैसे करें (1:3–3:15) और एक प्रभावशाली मसीही कैसे बनें (3:16–6:19)।

भाग 2.

एक प्रभावी कलीसिया का निर्माण कैसे करें

1 तीमुथियुस 1:3-3:15

क. कलीसिया और उसके उपदेश (1:3-20)

1. सत्य की हानि पर विचार (1:3-4)

क. तीमुथियुस का निवास (1:3क)

अपने कार्य में उतरने और सैद्धांतिक मुद्दों से निपटने से पहले, पौलुस इस तथ्य का उल्लेख करता है कि तीमुथियुस इफिसुस में रह रहा था। प्रेरित के पास इफिसुस के कई सुखद यादें थीं—साथ ही कुछ रोमांचक और भयभीत करने वाले अनुभव भी थे।

अपने दूसरे प्रेरितीय यात्रा के अंत में पौलुस ने नगर का संक्षिप्त दौरा किया और अपने सहयोगियों अक्विला और प्रिस्किला को वहाँ छोड़ दिया ताकि वह उनके द्वारा अपनी वापसी के मार्ग की तैयारी कर सकें (प्रेरितों के काम 18:18-26)। पौलुस ने अपनी तीसरी प्रेरितीय यात्रा के दौरान इफिसुस को अपने सुसमाचार प्रचार का मुख्य स्थल बना दिया।

तीन महीनों तक, उसने आराधनालय में उपदेश दिया और कई यहूदी विश्वासियों को मसीहीयत की ओर फेर लाया। फिर, जब उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया गया, तो उसने अगले दो वर्षों तक गैर-यहूदियों तक पहुँचने पर अपना ध्यान केंद्रित किया। वहाँ एक अत्यंत ही प्रभावशाली आत्मिक जागृति हुई, जिसमें प्रेरिताई चिह्न और अद्भुत घटनाएँ शामिल थीं। लूका ने इसके बारे में इस प्रकार टिप्पणी की, “इस प्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया” (प्रेरितों के काम 19:20)।

अंत में, देमेत्रियुस और चांदी बनाने वाले कारीगरों के झुण्ड ने पौलुस और इफिसुस के विश्वासियों के विरुद्ध पूरे नगर में दंगा भड़काया। चाँदी के कारीगर देवी डायना (आर्तेमिड) की मूर्तियाँ बनाते थे, जिनका घृणित मूर्तिपूजक मंदिर बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता था। इतने अधिक लोग मसीह की ओर मुड़ रहे थे कि उन मूर्तियों की बिक्री घटने लगी, और कारीगर शत्रुता की भावना से भर उठे।

फिर पौलुस इफिसुस से मकदूनिया के लिए प्रस्थान करता है। थोड़े समय के बाद, यरूशलेम जाते समय, प्रेरित मितुलेने में इफिसुस के प्राचीनों से मिला और उन्हें अपने कार्य को जारी रखने तथा विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया। कुछ समय बाद, अपनी पहली रोमी कारावास के दौरान, पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया को पत्र लिखा। स्पष्ट रूप से, वहाँ की कलीसिया ने पौलुस के सुसमाचार प्रचार के कार्य को जारी रखा, क्योंकि आग-पास के समुदायों—जैसे स्मरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया, लौदीकिया, कुलुस्से और हीरापोलिस — में नई कलीसियाएँ उभर चुकी थीं।

अपने पहले कारावास से मुक्त होने के बाद, पौलुस के मन में इफिसुस था। स्पष्ट है कि वह स्वयं वहाँ जाना चाहता था, लेकिन अन्य जरूरी कार्यों ने प्राथमिकता ले ली। इसलिए उसने तीमुथियुस, एक युवा जिसे वह प्रेम करता था, को इफिसुस भेजा—उस नगर को जिसे वह प्रिय मानता था।

हमारे पास इफिसुस की कलीसिया के साथ संपर्क में रहे कई विश्वासियों के नाम ज्ञात हैं। इनमें शामिल हैं: पुन्तुस के अक्विला और प्रिस्किला (प्रेरितों के काम 18:18-19), जो पौलुस के विश्वासयोग्य सहकर्मी थे; मकदूनिया के गयुस (प्रेरितों के काम 19:29); थिस्सलुनिके के अरिस्तर्खुस (प्रेरितों के काम 19:29; 20:4); सिकन्दरिया के वाक्पटु अपुल्लोस (प्रेरितों के काम 18:24); इफिसुसवासी त्रुफिमस (प्रेरितों के काम 21:29); उनेसिफुरुस (2 तीमुथियुस 1:16-18); कुरिन्थ के इरास्तुस (प्रेरितों के काम 19:22); कुरिन्थ के फूरतूनातुस, स्तिफनास, अखइकुस और खलोए (1 कुरिन्थियों 1:11; 16:15-17, यह मानते हुए कि पौलुस ने अपना पहली कुरिन्थियों की पत्री इफिसुस से लिखी थी); तीमुथियुस; और बाद में प्रेरित यूहन्ना। स्पष्ट है कि इफिसुस की कलीसिया भी उस नगर की तरह ही बहु-सांस्कृतिक और विविधता से भरी थी।

ख. तीमुथियुस की ज़िम्मेदारी (1:3ख-4)

(1) ठोस सिद्धांत की माँग करना (1:3ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि “कुछ लोगों को आज्ञा दे कि अन्य प्रकार की शिक्षा न दें।” हमें नहीं पता कि पौलुस ने कौन-कौन से अफ़वाहें सुनी थीं, लेकिन वह इस विषय में बहुत चिंतित था। जब उसने तीमुथियुस को दूसरी पत्री लिखी, तब पौलुस कम से कम पाँच लोगों के नामों की सूची दे पाया, जिन्होंने विश्वास को त्याग दिया था: हुमिनयुस और सिकन्दर (1 तीमुथियुस 1:20), फूगिलुस और हिरमुगिनेस (2 तीमुथियुस 1:15), और फिलेतुस (2 तीमुथियुस 2:17)।

सामान्य रूप से बोलते हुए, पौलुस ने कहा, “आसियावाले सब (और सम्भवतः इफिसुस के सभी लोग) मुझ से फिर गए हैं” (2 तीमुथियुस 1:15)।

मामला हमेशा उपदेश पर ही आता है। प्रारंभिक कलीसिया ने अपनी नींव इसी पर रखी थी (प्रेरितों के काम 2:42)। हम जो विश्वास करते हैं वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें सच्चाई के विषय में भ्रामक जानकारी नहीं होनी चाहिए।

यह कहानी एक महिला और उसके बच्चे की है, जो शून्य से नीचे के तापमान में मैदानों (प्रेयरी) के पार रेलगाड़ी से यात्रा कर रहे थे। वह महिला बार-बार बेचैनी से इधर-उधर देखती रहती थी, इस चिंता में कि कहीं वह अपना स्टेशन न चूक जाए। कंडक्टर ने उसे आश्वासन दिया कि वह सही स्टेशन पर उसे ट्रेन से उतार देगा। एक सहयात्री, जो पेशे से सेल्समैन था, उसने भी उसे ढाढ़स बंधाने की कोशिश की। उसने कहा, “मैडम, मैं इस रेल मार्ग पर अक्सर यात्रा करता हूँ। मैं हर स्टेशन और हर छोटे ठहराव को जानता हूँ। अगर कंडक्टर भूल भी जाए, तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आप सही जगह पर उतरें।”

कुछ समय बाद, वह सेल्समैन बोला, “अगला आपका स्टेशन है।” थोड़ी देर बाद ट्रेन रुक गई। कंडक्टर कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। सेल्समैन ने कहा, “मैडम, यही आपकी उतरने की जगह है। मैं आपके सामान को उतारने में मदद कर दूँगा।”

वहाँ काफी अंधेरा था और जोरदार बर्फबारी हो रही थी, और चारों ओर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। सहयात्री ने उस भयभीत स्त्री को आश्चस्त करते हुए कहा, “वे ट्रेन की आवाज़ सुन ही लेंगे। वे एक मिनट में आ जाएंगे। यही आपका स्टेशन है।” जब ट्रेन चलने लगी, तो वह व्यक्ति फिर से ट्रेन में चढ़ गया।

कई मिनट बाद, कंडक्टर डिब्बे में से गुज़रा। “वह बच्चे वाली महिला कहाँ है?” उसने पूछा।

“मैंने उसे पिछले स्टॉप पर उतरने में मदद की थी,” सेल्समैन ने कहा। “वह उसका स्टेशन था और तुम यहाँ नहीं थे।”

“वह कोई स्टेशन नहीं था!” कंडक्टर चिल्लाकर बोला। “हम सिग्नल की वजह से रुके हुए थे। आसपास मीलों तक कोई घर नहीं है।” इंजीनियर ने तुरंत ट्रेन रोक दी और उसे पीछे ले गया। उन्होंने पाया कि वह महिला और उसका बच्चा ठंड से मर चुके थे। वे एक झूठी जानकारी के शिकार बन गए थे।

जो लोग झूठे उपदेश सिखाते हैं, वे उस सेल्समैन जितने ही खतरनाक होते हैं। और जो लोग ऐसे शिक्षकों की बात सुनते हैं, वे गंभीर संकट में हैं। इसलिए तीमुथियुस के लिए झूठे सिद्धांत के प्रचार को रोकना बहुत ही ज़रूरी था।

(2) मूर्खतापूर्ण भटकावों का विरोध करना (1:4)

(क) ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ मूर्खतापूर्ण सिद्ध होती हैं (1:4क-ख)

“उन कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएँ”, पौलुस ने लिखा। यहाँ “कहानियों” के लिए प्रयुक्त शब्द मुथोस है, जिसका अर्थ “पुराने, जर्जर मिथक” भी हो सकता है। ज्ञानवाद के यहूदी पक्ष से जुड़े

लोग पुरानी यहूदी मिथक कथाओं (जैसी कि हम अपोकलिफा में पाते हैं) को खोज-खोजकर निकालते थे और भोले-भाले अन्यजातियों के सामने उन्हें प्रामाणिक सुसमाचार के सत्य के रूप में प्रस्तुत करते थे।

यहाँ “वंशावलियाँ” शब्द का अर्थ उन वैध, परमेश्वर-प्रेरित कालक्रमों और पारिवारिक पीढ़ियों की सूचियों से नहीं है, जो बाइबल में विभिन्न स्थानों पर पाई जाती हैं। ये शास्त्रीय वंशावलियाँ ईश्वरीय प्रकाशन की प्रक्रिया में उपयोगी उद्देश्य पूरा करती हैं। उदाहरण के लिए, 1 इतिहास की पुस्तक के आरंभ में नामों के नौ अध्याय आदम से लेकर सिदकिय्याह तक उद्धार के विकसित होते हुए इतिहास का सार प्रस्तुत करते हैं।¹ वह वंशावली एज़ा के उद्देश्य की भी पूर्ति करती थी—अर्थात् बंधुआई से लौटाए गए निराश यहूदियों को यह आश्वासन देना कि, यद्यपि दाऊद का सिंहासन समाप्त हो चुका था, फिर भी राजवंश सुरक्षित बना हुआ है। इसके अतिरिक्त, यहूदियों ने इतिहास की पुस्तकों को अपने धर्मग्रंथ-संग्रह (कैनन) के अंत में रखा।

मत्ती ने अपने सुसमाचार की शुरुआत एक वंशावली से की, जिसने मलाकी और मसीह के बीच के चार मौन शताब्दियों के दौरान दाऊदी राजवंश के संरक्षण का विस्तृत विवरण दिया। 1 इतिहास में पाई जाने वाली वंशावलियाँ मत्ती के सुसमाचार की वंशावली से जुड़ी हैं। इस प्रकार, ये दोनों मिलकर पुराने और नए—दोनों प्रमुख नियमों के बीच एक स्वाभाविक सेतु का निर्माण करती हैं।

पौलुस ने उन वंशावलियों पर आपत्ति नहीं की, क्योंकि वे शिक्षाप्रद हैं और परमेश्वर-प्रेरित पुस्तक का हिस्सा हैं। वास्तव में, वह जिन बातों का उल्लेख कर रहा था, वे तथाकथित एऑन्स की वे मूर्खतापूर्ण और काल्पनिक उत्पत्तियाँ थीं, जिन्हें ज्ञानवादियों ने परमेश्वर और मसीह के बीच रख दिया था। इन स्वर्गीय प्राणियों की क्रमबद्ध श्रेणियाँ ज्ञानवादी कल्पनाओं के लिए आवश्यक थीं, क्योंकि ज्ञानवादी पदार्थ को बुरा और दूषित मानते थे।

उन्होंने स्वर्गदूतों के एक पूरे समूह की कल्पना कर ली—जो अपने क्रम में नीचे उतरते जाते थे और धीरे-धीरे उस बिंदु के निकट पहुँचते थे जहाँ उनमें से कोई एक परमेश्वर से इतना दूर हो कि उसकी पवित्रता को अपवित्र न कर सके, और फिर भी इतना सामर्थी हो कि पदार्थ को अस्तित्व में ला सके। पौलुस ने इस पूरी योजना को घोर मूर्खता मानकर अस्वीकार किया और तीमुथियुस को आदेश दिया कि वह ऐसी ऊँची लगने वाली, परंतु निरर्थक बातों पर कोई ध्यान न दे।

(ख) ज्ञानवादी प्रवृत्तियाँ निष्फल होने के कारण त्याग दी गईं (1:4ग-घ)

पौलुस ने ऐसी सभी अटकलों को निष्फल मानकर अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे “विवादास्पद प्रश्नों” को जन्म देती हैं और “भक्तिपूर्ण उन्नति” में बाधा डालती हैं। निस्संदेह, वैध प्रश्न भी होते हैं। नए विश्वासियों के लिए, जो संभवतः पहली बार बाइबल पढ़ रहे होते हैं, प्रश्नों से भरा होना स्वाभाविक है। वास्तव में, बाइबल के कुछ अंश तो परिपक्व और भली-भाँति शिक्षित विश्वासियों की समझ को भी चुनौती देते हैं। पौलुस ने वैध प्रश्नों पर कभी कोई आपत्ति नहीं की। बल्कि, 1 कुरिन्थियों का एक भाग उन व्यावहारिक और धर्मशास्त्रीय प्रश्नों से संबंधित है, जो कुरिन्थियों ने उससे पूछे थे। यदि प्रेरित ने उन प्रश्नों का उत्तर न दिया होता, तो हम कहीं अधिक निर्धन होते। स्वयं प्रभु यीशु ने भी अपने महान जैतून पहाड़ी उपदेश (मत्ती 24-25) को शिष्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में दिया था।

पौलुस ने जिन बातों की निंदा की, वे अहंकारी और तिरस्कारपूर्ण प्रश्न थे, जिन्हें वे लोग उठाते थे जो परमेश्वर के वचन से खिलवाड़ करते थे। जब सदूकियों ने ऐसे ही एक प्रश्न से प्रभु को फँसाने का प्रयास किया, तो उसने उन्हें स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे न तो शास्त्रों को जानते हैं और न ही परमेश्वर की सामर्थ्य को (मत्ती 22:23-29)। पिलातुस भी इससे बेहतर नहीं था। उसने जब पूछा, “सत्य क्या है?” तो उत्तर की प्रतीक्षा ही नहीं की (यूहन्ना 18:38)। एथेंस के लोग भी तब सत्य से खेल रहे थे, जब उन्होंने पौलुस को मार्स पहाड़ी पर बुलाया (प्रेरितों 17:18-32)। वे आपस में उपहास करते हुए कहते थे, “यह बकवादी क्या कहना चाहता है?” फिर उन्होंने उससे पूछा, “क्या हम जान सकते हैं कि यह नया उपदेश, जिसके विषय में तू बोलता है, क्या है?”

लूका ने टिप्पणी की कि वे दार्शनिक “नई-नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।” थोड़ी ही देर बाद जब उन्होंने पौलुस का उपहास किया, तब उनकी कपटता प्रकट हो गई।

जो कोई भी कुछ समय तक प्रभु के कार्य में रहा है, उसने ऐसे लोगों से अवश्य मुलाकात की होगी जो किसी सभा के बाद आगे आकर किसी अनावश्यक विषय पर विवाद करने लगते हैं। इस प्रकार के तर्क-वितर्क न तो आत्मिक उन्नति करती है और न ही भक्ति को बढ़ावा देती है; यह उस सुव्यवस्थित जीवन को उत्पन्न नहीं करती, जो प्रभु में सच्चे विश्वास से निकलता है। शारीरिक और सांसारिक सोच रखने वाले लोगों द्वारा प्रस्तुत की गई ऐसी मूर्खतापूर्ण बहसों के लिए मसीही उपदेश में कोई स्थान नहीं है। इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह निरर्थक अटकलों पर रोक लगाए।

2. परमेश्वर की व्यवस्था पर विचार किया गया (1:5-11)

क. इसका पूर्ण रूपांतरण (1:5)

“आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो”, पौलुस ने आगे लिखा। जिस “आज्ञा” का पौलुस यहाँ उल्लेख करता है, वह वही निर्देश है जो उसने तीमुथियुस को दिया था (1:3)। यूनानी शब्द में किसी उच्च अधिकारी से प्राप्त होकर दूसरों तक पहुँचाई जाने वाली घोषणा, आदेश या दायित्व का भाव इसमें निहित है। महायाजक ने इसी शब्द का प्रयोग तब किया था, जब उसने प्रेरितों से कहा, “क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? उसने विशेष रूप से बलवान अभिव्यक्ति का प्रयोग किया, जिसका अर्थ इस प्रकार किया जा सकता है—“क्या हमने आज्ञा के साथ यह आज्ञा नहीं दी थी...?” परन्तु कैफा और उसके समूह से विचलित हुए बिना, शिष्यों ने उत्तर दिया, “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है” (प्रेरितों 5:28-29)।

पौलुस की सरल आज्ञा यह थी कि तीमुथियुस इफिसुस में ज्ञानवादियों और व्यवस्थावादियों को शांत करे और बुझ न सकने वाले प्रेम, निष्कलंक भलाई, तथा निर्विवाद विश्वास को बढ़ावा दे। “भेड़िये” (प्रेरितों 20:29) प्रश्नों और झगड़ों को बढ़ावा देना चाहते थे, परन्तु विधिवादियों के पुराने “यह करो-वह न करो” के नियमों का स्थान अब प्रेम की व्यवस्था ने ले लिया था। प्रेम की व्यवस्था, जिसे बनाए रखने का दायित्व तीमुथियुस को सौंपा गया था, नियमों और विधियों से भरी पुरानी व्यवस्था से कहीं बढ़कर है।

कुछ समय पहले, जब मैं पनामा सिटी में था, तो मैं एक ऐसे मोटेल में ठहरा था जहाँ से समुद्र-तट दिखाई देता था। जब मैंने पहली बार खिड़की से बाहर देखा, तो ज्वार उतरा हुआ था; और समुद्री गल पक्षी तथा अन्य तटीय पक्षी पानी के छोटे-छोटे फँसे हुए तालाबों के आसपास काफ़ी चहल पहल कर रहे थे। फिर समुद्र का पानी चढ़ आया और उन सभी छोटी-छोटी झीलियों को डुबो दिया, और अब पक्षी जल की असीम आपूर्ति में आनंद मनाने लगे। यही उस परिवर्तन का चित्र है जो पुराने नियम के साथ घटित हुआ, जब कलवरी पर परमेश्वर के प्रेम की लहर उमड़ आई। नियम और विधियाँ परमेश्वर के असीम प्रेम के समुद्र में डूब गईं। व्यवस्था मसीह में पूरी हुई, और अब वही व्यवस्था हम में उसके पवित्र आत्मा के द्वारा पूरी होती है। अब “यह करो, वह न करो” का बोझिल कर्तव्य नहीं रहा; बल्कि यह हमारा आनंद बन गया है। पौलुस ने तीमुथियुस को यह निर्देश दिया कि वह प्रेम की व्यवस्था को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करे, क्योंकि विधिवादी लोग अब भी अपना प्रबल प्रभाव बनाए हुए थे—जैसा कि पौलुस आगे हमें दिखाता है।

ख. इसके झूठे शिक्षक (1:6-7)

पौलुस आगे लिखता है, “इनको (अर्थात् सुसमाचार के सत्य को) छोड़कर कितने लोग बकवाद की ओर भटक गए हैं, और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद किया गया है, उसका अर्थ है “लक्ष्य से चूक जाना”—और यही ठीक वही है जो विधिवादी लोग करते हैं। वे मसीह में हमारे नए जीवन के मूल उद्देश्य से ही चूक जाते हैं, जो प्रेम, शुद्ध विवेक और निष्कपट विश्वास है। यह इस बात का प्रश्न नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने बाल किस तरह से बनाता है या किस प्रकार के वस्त्र पहनता है।

यहाँ “मुड़ गए” के रूप में अनूदित शब्द एक्त्रेपोमै है, जिसका प्रयोग इब्रानियों 12:13 में भी किया गया है। वहाँ लेखक, अपनी अंतिम चेतावनी के भाग से ठीक पहले, विश्वासियों से आग्रह करता है कि वे “अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा मार्ग से भटक न जाए”।

1 तीमुथियुस 1:6 में “बकवाद” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त किया गया शब्द मातायोलोज़िया है, जिसका अर्थ मूर्खतापूर्ण बातें करना है। विधिवादी और अन्य झूठे शिक्षक, सच्ची मसीहियत का वास्तविक अर्थ भूल जाने के कारण, शब्दों के समुद्र में स्वयं को खोते जा रहे थे। “बकवाद” की यह अभिव्यक्ति हमें मलाकी 2:17 में प्रभु की शिकायत की याद दिलाती है। पुराने नियम को समाप्त करने और चार शताब्दियों के लंबे मौन में प्रवेश करने से ठीक पहले, परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता के द्वारा अपनी यह शिकायत लिखने को प्रेरित किया: “तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है।”

3. इसके मूर्ख दोषी (1:8-11)

(1) परमेश्वर की व्यवस्था की अच्छाई (1:8-9क)

जो विधिवादी साधारण बातों को ही प्रमुख बना लेते हैं और अपनी छोटी-छोटी, तुच्छ मान्यताओं पर बल देते हैं, वे न केवल सच्ची मसीहियत के मूल उद्देश्य से चूक जाते हैं, बल्कि व्यवस्था की गरिमा को भी घटा देते हैं। व्यवस्था ने अपने समय में एक महान उद्देश्य की पूर्ति की थी, और आज भी उसका बड़ा महत्व है—यदि उसकी सीमाओं को सही रूप में समझा जाए। पौलुस ने लिखा, “हम जानते हैं कि यदि कोई

व्यवस्था को उचित रीति से काम में लाए तो वह भली है” (1 तीमुथियुस 1:8)। यहाँ, जैसे कि रोमियों 7:12 में, पौलुस ने परमेश्वर की व्यवस्था की मूलभूत भलाई पर विशेष बल दिया है।

पुराने नियम के समय में, व्यवस्था ने दोहरी भूमिका निभाई। पहली, उसने पुराने नियम के विश्वासियों के लिए एक संपूर्ण व्यवस्था—एक जीवन-पद्धति—प्रदान की। व्यवस्था उनके जीवन के हर कोने और हिस्से की जाँच करती थी। वह हर स्तर पर आज्ञाकारिता की माँग करती थी और उसे न मानने पर कठोर दंड की चेतावनी देती थी।

इस व्यवस्था में अनेक अनुष्ठानिक और विधियाँ शामिल थे; बलिदानों की एक प्रणाली को बनाए रखा गया था; एक विस्तृत याजकीय व्यवस्था थी जो पृथ्वी के पवित्रस्थान से जुड़ी हुई थी; तथा पर्व-दिनों, उपवाग-दिनों, नये चाँदों और सब्तों को निर्धारित किया गया था। परन्तु व्यवस्था एक प्रणाली के रूप में कलवरी पर समाप्त कर दी गई। परमेश्वर ने मंदिर का पर्दा फाड़ दिया और यहूदी धर्म-व्यवस्था को अप्रचलित ठहरा दिया।

दूसरी बात, व्यवस्था पुराने नियम के विश्वासियों के लिए एक मानक प्रदान करती थी। दस आज्ञाएँ, जिन्हें बाद में अनेक अन्य विस्तृत आदेशों द्वारा विस्तार से स्पष्ट किया गया, मानव आचरण के लिए स्वर्गीय न्यूनतम मानक को निर्धारित करती थीं। नैतिक नियम सभी ईश्वरीय और मानवीय संबंधों के लिए अपरिवर्तनीय सिद्धांत स्थापित करते थे। ऐसे निर्देश—जैसे केवल परमेश्वर की आराधना करना; मूर्तिपूजा और अपवित्रता से पूर्ण मुक्ति; माता-पिता की आज्ञा का पालन; और हत्या, व्यभिचार, चोरी, झूठ और लालच से घृणा—सदैव अपरिवर्तनीय और अनिवार्य बातें हैं।

एक मानक के रूप में व्यवस्था हमारे अनुग्रह के युग में भी उतनी ही प्रभावी है जितनी यह पुराने नियम के समय थी। अंतर केवल परमेश्वर के पापी के प्रति दृष्टिकोण में है। कलवरी पर, उसने पापियों के लिए पूर्ण छुटकारा प्रदान किया। और पिन्तेकुस्त के दिन, उसने मसीह में नया जीवन जीने का पूर्ण माध्यम प्रदान किया; अब मसीही प्रेम द्वारा संचालित ऐसे क्षेत्र में रहकर व्यवस्था से ऊपर जीवन जी सकता है।

इसलिए पौलुस कह सकता था कि “व्यवस्था अच्छी है।” तथापि, उसने यह भी जोड़ा, “...यदि कोई इसे उचित रीति से काम में लाए।” प्रेरित को ऐसे लोगों के बारे में पता था जो व्यवस्था का दुरुपयोग करते थे। उदाहरण के लिए, रब्बियों ने तोराह के सरल किंतु पर्याप्त आदेशों में उभरते हुए तलमूद की आवश्यकताएँ और नियम जोड़ दिए। मसीह के समय तक वे सब्त को अपनी ही बनाई हुई असंख्य बोझिल विधियों से घेर चुके थे। अंततः, उन्होंने व्यवस्था के प्रत्येक आदेश को विश्वकोशीय रब्बी नियमों से घेर दिया।

पौलुस ने मसीहियों—विशेषकर अन्यजाति विश्वासियों—की गर्दनो पर यह असहनीय जूआ डालने के हर प्रयास के विरुद्ध जी-तोड़ संघर्ष किया। यहाँ तक कि पतरस और याकूब ने यह स्वीकार किया कि अन्यजातियों को इससे मुक्त रखा जाना चाहिए (प्रेरितों 15)। फिर भी, कलीसिया में विधिवादी लोग हर युग में यह कोशिश करते रहे हैं कि सरल विश्वास और मसीह में आज्ञाकारिता में अनगिनत आवश्यकताओं और निषेधों की सूची जोड़ दी जाए।

व्यवस्था हमें यह दिखाने के लिए दी गई थी कि पवित्रता क्या है; यह हमें पवित्र बनाने के लिए नहीं दी गई थी। लैव्यव्यवस्था 11:45 में “पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ” की आज्ञा को खाद्य संबंधी नियमों की एक

लंबी सूची में जोड़ दिया गया था। हमें पवित्र बनाने वाला व्यवस्था नहीं, बल्कि स्वयं प्रभु है (1 पतरस 1:13-16)।

1 तीमुथियुस 1:9 में यह विचार भी जोड़ा गया है कि “व्यवस्था धर्मी के लिए नहीं ठहराई गई है।” इसका संकुचित अर्थ यह है कि जो विश्वासी मसीह की निर्दोष धार्मिकता में सुसज्जित है, वह स्थिति के अनुसार व्यवस्था से ऊपर रहता है और व्यवहार के अनुसार भी व्यवस्था से ऊपर जीना चाहिए। प्रेम की व्यवस्था का पालन करके (रोमियों 13:8-10), विश्वासी स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करता है। एक विश्वासी में पवित्र आत्मा का निवास ही मसीह में एक नए जीवन को संभव बनाता है (रोमियों 8:1-4)।

अपने विस्तृत अर्थ में, पौलुस का यह कथन कि “व्यवस्था धर्मी जन के लिए नहीं ठहराई गई है” यह बताता है कि वह व्यक्ति जो व्यवस्था की विशिष्ट मांगों का उल्लंघन नहीं करता, उसे व्यवस्था से कोई डर नहीं होना चाहिए। इसके दंड हत्यारों, चोरों, झूठ बोलने वालों और इसी प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित किए गए हैं। इस प्रकार, पौलुस परमेश्वर की व्यवस्था की भलाई पर जोर दे सकता था। यीशु ने कहा, “मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ” (मत्ती 9:13)।

(2) परमेश्वर की व्यवस्था की महानता (1:9ख-11)

(क) यह सामान्य पापों को उजागर करती है (1:9ख-छ)

जिस प्रकार भूमि के कानून को तोड़ने वाले लोग उसके दंड का सामना करने की अपेक्षा कर सकते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर की व्यवस्था भी अपने सभी दंडों सहित उन लोगों के लिए भय पैदा करती है जो पाप में जीते हैं। पौलुस ने इस सत्य को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणों की एक श्रृंखला दी, जो सामान्य पापों से आरंभ होती है।

i. सरकार के विरुद्ध पाप (1:9ख-ग)

व्यवस्था अपराधी (अधर्मी) और आज्ञा न मानने वाले लोगों को उजागर करने के लिए बनाया गया है। 1:9 में “अधर्मी” के लिए मूल शब्द अनॉमोस है, जिसे “व्यवस्था-रहित व्यक्ति” के रूप में समझा जा सकता है और यह उन लोगों को दर्शाता है जो व्यवस्था का तिरस्कार करते हैं। पतरस ने इस शब्द का प्रयोग पिन्तेकुस्त के दिन किया, जब उसने इस्राएल पर उनके मसीह की हत्या का आरोप लगाया: “उसी यीशु को...तुम ने अधर्मियों [अनॉमोस] के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला” (प्रेरितों 2:23)। पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 2:8 में उसी शब्द का प्रयोग आने वाले मसीह-विरोधी का वर्णन करने के लिए किया, जिसे किंग जेम्स संस्करण में “अधर्म का पुरुष” या “वह दुष्ट” कहा गया है। ऐसे लोग सभी मानव कानूनों की अवहेलना कर सकते हैं, लेकिन वे परमेश्वर की व्यवस्था से भाग नहीं सकते।

1 तीमुथियुस 1:9 में “निरंकुशों” के लिए मूल शब्द अनुपोटाकोस है, जो उन लोगों को संदर्भित करता है जो अधीनता के अधीन नहीं हैं। वे अनुशासनहीन हैं। जहाँ एक अधर्मी व्यक्ति किसी भी नियम को मानने से इनकार करता है, वहीं एक अनुशासनहीन व्यक्ति किसी भी नियम का पालन करने से इनकार करता है। ठीक उसी तरह, व्यवस्था ऐसे लोगों के लिए बनाया गया था।

ii. भक्ति के विरुद्ध पाप (1:9घ-ड)

व्यवस्था उन अभक्त और अधर्मी लोगों के लिए भी बनाई गई थी, या जैसा पौलुस ने कहा, “भक्तिहीनों और पापियों” के लिए ठहराई गई है। यहाँ “अधर्मी” के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ है “अभक्त,” और यह उन लोगों को दर्शाता है जिनमें परमेश्वर के प्रति श्रद्धा की कोई भावना नहीं होती है। ऐसे लोग केवल धर्महीन नहीं होते; बल्कि वे ऐसे कार्य करते हैं जो परमेश्वर की मांगों के विपरीत हैं। वे स्वयं को चालाक और पूरी तरह स्वतंत्र समझ सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था उन्हें अंततः पकड़ ही लेती है, जैसा कि चार्ल्स डार्विन के साथ हुआ।

डार्विन ने अपने करियर की शुरुआत सेवकाई की तैयारी से की थी। लंबे समय तक वह इस बात पर विचार करता रहा कि क्या उसे विकासवाद पर अपनी पुस्तक प्रकाशित करनी चाहिए या नहीं, और उसने ऐसा केवल तब किया जब उसे पता चला कि कोई प्रतिद्वंद्वी उससे पहले यह काम करने वाला है। वह इसलिए हिचकिचा रहा था क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह दो नावों पर पैर रखकर गिर न पड़े और धर्मशास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों—दोनों की ओर से आलोचना का शिकार न हो जाए। उसे चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। टी. एच. हक्सले जैसे लोगों ने तुरंत ही डार्विन की पुस्तक की संभावना को समझ लिया; यह परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध में एक मूल्यवान् हथियार था, क्योंकि इसने उसके जैसे लोगों को नास्तिकता के लिए एक कार्यशील परिकल्पना प्रदान की थी। डार्विन के सिद्धांत ने नास्तिकों को परमेश्वर के बिना ब्रह्मांड की व्याख्या करने में सक्षम बना दिया था।

डार्विन को लोकप्रिय और प्रचारित किया गया, उसे विद्वान माना गया, ईश्वर-विरोधी समुदाय द्वारा उन्हें “संत” के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और उन्हें एक अच्छे, प्रसन्नचित व्यक्ति के रूप में सराहा गया। लेकिन वह अपनी अंतरात्मा के साथ नहीं शान्ति से रह नहीं सका। वह दीर्घकालीन बीमार पड़ गया, अपने लिए बहाने बनाने लगा और आधे-अधूरे मन से परमेश्वर से माफी माँगी। डार्विन ने अपनी बुद्धि को अपना ईश्वर बना लिया था, लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था—“तू मेरे सिवा अन्य किसी को परमेश्वर करके नहीं मानना” (निर्गमन 20:3)—ने उसे पकड़ लिया। डार्विन ने अपने दोषी विवेक के लिए सांत्वना उस प्रशंसा में खोजी, जो एक ईश्वरविहीन संसार ने उत्साहपूर्वक उस व्यक्ति पर उँडेल दी थी, जिसने उन्हें बाइबल से मुक्त कर दिया था।

1 तीमुथियुस 1:9 में “पापियों” के लिए मूल रूप में प्रयुक्त शब्द उस अर्थ को व्यक्त करता है कि कोई लक्ष्य से चूक गया है, सही मार्ग से भटक गया है, या गलत कार्य किया है। परमेश्वर सही मार्ग से भटकने को अधर्म (अपराध) के रूप में देखते हैं। उनकी व्यवस्था ऐसे लोगों के लिए बनाई गई थी; यह उन्हें सही मार्ग की ओर संकेत करती है। यशायाह ने लिखा, “हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया।” लेकिन सौभाग्य से, उसने हमें वापसी का मार्ग दिखाया—“और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया” (यशायाह 53:6)।

iii. भलाई के विरुद्ध पाप (1:9च-छ)

जिन लोगों में किसी प्रकार का नैतिक संकोच नहीं था और जिनमें पवित्रता की कोई भावना नहीं थी, उनके संदर्भ में पौलुस ने उन्हें “अपवित्र और अधर्मी” कहा। व्यवस्था उनके लिए भी बनाई गई थी। यहाँ

“अपवित्र” के लिए मूल शब्द अनोसिओस है, जो पवित्रता के विपरीत अर्थ को दर्शाता है। पवित्रता की अवधारणा में परमेश्वर के लिए अलग किए जाने का विचार शामिल है; विश्वासी को “पवित्रता के लिए बुलाया गया है” (1 थिस्सलुनीकियों 4:7)। अविश्वासी पवित्रता से अपरिचित होता है।

1 तीमुथियुस 1:9 में "अपवित्र" शब्द एक यूनानी शब्द से निकला है जिसका अर्थ है "चौखट"। चौखट वह चीज़ है जिस पर लोग चलते हैं, इसलिए अपवित्र व्यक्ति वह है जिसका जीवन हर दुष्ट आवेग और प्रभाव द्वारा रौंदा जा सकता है। मूल रूप से अधार्मिक होने के कारण, वह सामान्य और अपवित्र है। इसका एक उत्कृष्ट बाइबलीय उदाहरण एसाव (इब्रानियों 12:16) है।

(ख) यह घोर पापों का पर्दाफ़ाश करती है (1:9-11)

i. हत्यारे (1:9-1)

इसके बाद, पौलुस ने दिखाया कि कैसे परमेश्वर का नियम विशेष रूप से उन लोगों के विरुद्ध है जो हत्या जैसे अपराधों में लिप्त हो जाते हैं। यह नियम उन लोगों का पर्दाफ़ाश करने के लिए बनाया गया है जो अपने माता-पिता और दूसरों की हत्या करते हैं। प्रेरितों ने उन्हें "बाप के घात करनेवाले", "माँ के घात करनेवाले" और "हत्यारे" कहा। जो लोग अपने माता-पिता पर हमला करते हैं और पितृहत्या और मातृहत्या करते हैं, वे मूसा के नियम के अभिशाप के अधीन आते हैं।

यहाँ "मनुष्य के हत्यारे" शब्द का अर्थ केवल "हत्यारे" है। हमारे समाज में, कई हत्यारे कभी पकड़े नहीं जाते, और कई अन्य पागलपन का बहाना बनाकर, हल्की सज़ा और समय से पहले पैरोल पाकर, राज्य के साक्ष्यों को तोड़-मरोड़कर, कानूनी खामियों का फायदा उठाकर, भ्रष्ट न्यायधीशों को रिश्त देकर, या गवाहों या न्यायी सदस्यों को डरा-धमकाकर हमारे कानूनों की पूरी सज़ा से बच निकलते हैं। लेकिन हत्यारे परमेश्वर के नियमों की सज़ा से या आने वाले महान श्वेत सिंहासन के न्याय (प्रका. 20) से बच नहीं सकते। जब तक कि वे मसीह की ओर न मुड़ें और अपने पापों की क्षमा न पा लें (1 कुरिं. 6:9-11)।

ii. “परिपक्व” (1:10क-ख)

परमेश्वर की व्यवस्था हमारे अश्लील समाज के उन लोगों के लिए भी बनाया गया है जो खुद को "परिपक्व" या "वयस्क" कहते हैं। इस श्रेणी में वे लोग शामिल हैं जो वेश्यावृत्ति करते हैं और जो विकृत आचरण करते हैं। पौलुस ने उन्हें "व्यभिचारी" और "पुरुषगामी" कहा। यहाँ "व्यभिचारी" शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है जो व्यभिचार में लिप्त है। यह "वेश्या" के लिए यूनानी शब्द के समान है।

ज़हर की बोतल पर लेबल बदलकर उसे "पुदीने का रस" कहना कुछ लोगों को सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक लग सकता है, लेकिन इससे बोतल में मौजूद सामग्री की प्रकृति नहीं बदलती। इसी तरह, अश्लील फ़िल्में देखने वालों को "परिपक्व" कहना उन्हें परिपक्व नहीं बनाता। झूठा लेबल बोतल और उसकी घातक सामग्री को और भी अधिक खतरनाक बना देता है। जो लोग अनैतिक कार्यों में लिप्त होते हैं, वे खुद को परमेश्वर के कानून के दंड के अधीन कर देते हैं। आजकल, इन दंडों में अक्सर घिनौनी, दुर्बल करने वाली और जानलेवा बीमारियाँ शामिल होती हैं।

"जो लोग खुद को अन्य मनुष्य के साथ अपवित्र करते हैं" शब्द का अनुवाद समलैंगिकता करने वालों के लिए किया गया है। समलैंगिकता से संबंधित हमारे कानून लगातार ढीले होते जा रहे हैं। आजकल, समलैंगिक महिलाएं और पुरुष गर्व से विचरण करते हैं और समाज की स्वीकृति पाने और उसके कानूनों का संरक्षण पाने के लिए राजनीतिक व्यवस्था का इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि, समलैंगिकता के विरुद्ध परमेश्वर की व्यवस्था अपरिवर्तनशील हैं।

iii. मनुष्य के बेचनेवाले (1:10ग)

पौलुस ने कहा कि व्यवस्था "मनुष्य के बेचनेवाले" के लिए भी बनाई गई थी। "मनुष्य के बेचनेवाले" शब्द का प्रयोग गुलामों के व्यापारियों और अपहरणकर्ताओं के लिए किया गया है। यह शब्द युद्ध में पकड़े गए गुलाम का वर्णन करने वाले शब्द से निकला है। एंड्रापोडोन शब्द यूनानियों के लिए आपत्तिजनक था क्योंकि यह टेट्रापोडा से मिलता-जुलता था, जिसका अर्थ चौपाया होता था; इसका तात्पर्य यह था कि गुलाम केवल अपने पैरों की संख्या में ही जानवरों से भिन्न होते थे। पवित्र आत्मा ने मनुष्यों को बेचने के पाप के प्रति अपनी अस्वीकृति को बल देकर दिखाने के लिए एक अप्रिय माने जाने वाले शब्द का स्पष्ट रूप से उपयोग किया।

iv. झूठ बोलनेवाले (1:10घ-11)

परमेश्वर की व्यवस्था झूठ बोलनेवालों के लिए भी बनाई गई थी, जो दिए गए अपने वचन के साथ खिलवाड़ करते हैं। जो लोग बोले गए वचन के विरुद्ध पाप करते हैं, उन्हें पौलुस ने "झूठबोलने वाले" कहा।

जो लोग शपथ खाकर उसके विरुद्ध पाप करते हैं, उन्हें "झूठे व्यक्ति" कहा जाता था। प्रेरित उन लोगों के विषय में भी बोलता है जो पवित्र वचन के विरुद्ध पाप करते हैं जब उसने "इनके अतिरिक्त खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है जो मुझे सौंपा गया है" की बात की।

जब किसी मामले की सुनवाई होती है, तो न्यायालय का एक महत्वपूर्ण कार्य यह निर्धारित करना होता है कि कौन सच बोल रहा है। सभी प्रकार के संचार में सत्य आवश्यक होता है। हालाँकि, झूठ कई लोगों के मुँह पर आसानी से आ जाता है। चूँकि सभी मानवीय लेन-देन विश्वास पर आधारित होते हैं, इसलिए झूठ समाज की नींव को नष्ट कर देता है। झूठ शैतान की भाषा का मुहावरा है, क्योंकि वह झूठ का "पिता" है (यूहन्ना 8:44)।

अदालत में शपथ लेकर झूठ बोलने वाले गवाहों को भारी दंड मिलता है। इतिहास में झूठी गवाही का सबसे धिनौना मामला यहूदी महासभा के सामने प्रभु यीशु के मुकदमे में दर्ज दस्तावेजों में मिलता है। हम मत्ती 26:59-61 में पढ़ते हैं:

“प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे, परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आए, और कहा, “इसने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ और उसे तीन दिन में बना सकता हूँ।”

इससे अधिक भ्रष्ट न्यायालय कहीं ओर मिलना कठिन है। उसी मुकदमे में, महायाजक ने यीशु को शपथ दिलाई, और कहा, "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि तू हमें बता कि क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 26:63)। यीशु ने सच्चाई से उत्तर दिया, यह अच्छी तरह जानते हुए कि इसके परिणामस्वरूप उसे मृत्युदण्ड दिया जाएगा।

सबसे बुरे झूठ वे हैं जो परमेश्वर के वचन के संबंध में बोले जाते हैं। इससे बड़ा कोई संवाद नहीं है: परमेश्वर ने मनुष्य से बात की है! पवित्र आत्मा की पूर्ण, मौखिक और अचूक प्रेरणा के द्वारा उसने जो प्रकट किया है, वह बाइबल में सुरक्षित है। उस परम सत्य के समूह के साथ छेड़छाड़ करना, परमेश्वर के वचन को छल से इस्तेमाल करना, पापों में सबसे बड़ा पाप है (प्रका. 22:18-19)। इसलिए पौलुस ने उन झूठे लोगों के बारे में लिखा जो "खरी उपदेश के विरोध" में बातें सिखाते हैं। परमेश्वर के वचन की किसी भी व्याख्या के लिए खरा उपदेश ही आधार है।

1 तीमुथियुस 1:10 में "खरे" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "स्वस्थ होना"। हमारा सिद्धांत स्वस्थ होना चाहिए, और यह तभी स्वस्थ हो सकता है जब यह पवित्रशास्त्र के अधिकार और अचूकता के प्रति अटूट समर्पण और व्याख्या की एक निर्विवाद माध्यम पर आधारित हो। हमें यह मानना चाहिए कि परमेश्वर वही कहता है जो उसका अर्थ है और वही अर्थ रखता है जो वह कहता है और जो वह कहता है उसकी शाब्दिक, व्याकरणीय, सांस्कृतिक और संदर्भ की व्याख्या की जानी चाहिए।

व्याख्या की ऐसी प्रणाली में एकीकृत करने वाला कारक यह मान्यता है कि परमेश्वर सब कुछ अपनी महिमा के लिए करता है। इस प्रकार, पवित्र आत्मा द्वारा पौलुस को सौंपा गया सत्य 1 तीमुथियुस 1:11 में "परमधन्य परमेश्वर की महिमा का सुसमाचार" या, जैसा कि इस वाक्यांश का अनुवाद भी किया जा सकता है, "परमधन्य परमेश्वर का महिमामय सुसमाचार" के रूप में वर्णित किया गया है।

3. मसीह के प्रेम पर विचार किया गया (1:12-17)

क. पौलुस का आभार (1:12-14)

(1) उसकी वर्तमान सेवकाई (1:12)

पौलुस के आभारी शब्दों पर ध्यान दीजिये: "मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।" प्रेरित इस बात के प्रति आभारी था कि परमेश्वर ने उसे योग्य समझा, विशेष रूप से उसके अतीत को देखते हुए।

पवित्र आत्मा पौलुस को इतनी अद्भुत सच्चाइयाँ सौंप सका—यहाँ तक कि इब्रानियों को गिनते हुए उसने नये नियम की चौदह पत्रियाँ लिखीं— उसकी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा के कारण। यह प्रेरित पूर्णतः भरोसेमंद था, और प्रभु ने उसे विश्वासयोग्य "गिना।" यहाँ "गिना" के रूप में अनूदित शब्द का तात्पर्य किसी कार्य पर सावधानीपूर्वक विचार करने, उसे तौलने-परखने और उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखने का भाव निहित है।

कलीसिया के इस उत्साही युवा सतानेवाले में, प्रभु यीशु ने सुसमाचार का भी एक उतना ही उत्साही प्रचारक को देखा। परमेश्वर ने शाऊल की क्षमता देखी, जैसे उसने योना की क्षमता देखी थी। परमेश्वर योना की आत्मा

की गहराई को जानता था; वह जानता था कि वही उग्र स्वभाव जिसने उसे परिणामों की परवाह किए बिना तर्शीश भागने के लिए प्रेरित किया था, उसे नीनवे का एक शक्तिशाली मिशनरी बनाएगा। योना के हृदय की वे दहकती हुई भावनाएँ, जिन्हें नरक ने आग लगा दी थी, बुझाई जाने और फिर परमेश्वर द्वारा नई आग से प्रज्वलित किए जाने की आवश्यकता थी।

वह भविष्यद्वक्ता जो बाद में परमेश्वर के नाम को घोषित करते हुए नीनवे की सड़कों पर घूमता रहा, वही व्यक्ति था जिसने नाविकों से आग्रह किया था कि वे उसे जहाज़ से बाहर फेंक दें। तूफ़ान के बीच में, उसने तर्क रखा कि अगर वह मर गया होता तो नीनवे नहीं जा सकता; अगर वह नीनवे नहीं जाता और आने वाले न्याय के विषय में प्रचार नहीं करेगा, तो परमेश्वर का न्याय निश्चित रूप से वहाँ आ जाएगा। नीनवे को नष्ट कर दिया जाएगा, और इस्राएल को अब उस शत्रु से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। परमेश्वर जानता था कि योना की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान (वास्तव में, निश्चित रूप से प्रतीक के रूप में) के बाद, उसकी आवाज़ नीनवे को उसकी नींव तक हिला देगी।

परमेश्वर ने तरसुस के शाऊल में उतना ही देखा जितना उसने योना में देखा था। उसने पौलुस को "विश्वासयोग्य" माना। और पौलुस पर परमेश्वर का भरोसा व्यर्थ नहीं गया।

(2) उसकी पूर्व द्वेष की भावना (1:13-14)

(क) उसकी व्यक्त की गई द्वेषभावना (1:13क)

पौलुस एक समय नये नियम की सच्चाई का कट्टर दुश्मन था। "[वह] पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धे करनेवाला था" तरसुस के शाऊल के रूप में, वह एक फरीसी, रब्बी-प्रशिक्षित यहूदी, एक प्रतिभाशाली तार्किक, एक उग्र कार्यकर्ता और एक उत्साही राष्ट्रवादी था। वह पूरी तरह से आश्वस्त था कि नासरत का यीशु एक धोखेबाज़ था, मसीहियत एक खतरनाक पंथ था, और अहिंसावाद इसे कभी नहीं मिटा पाएगा। शाऊल का मानना था कि मसीहियत को जड़ से उखाड़ फेंकना ज़रूरी है, यदि आवश्यक हो तो हिंसा से भी पीछे न हटे।

वह मसीहियत को नष्ट करने के लिए महासभा का अधिकृत प्रतिनिधि बन गया, और उसने देश-विदेश में हर कहीं मसीहियों को मृत्यु के घाट उतारा। उसने अपने इस धर्मयुद्ध का वर्णन इस प्रकार किया:

“मैं ने पुरुष और स्त्री दोनों को बाँध-बाँधकर और बन्दीगृह में डाल-डालकर, इस पंथ को यहाँ तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला... मैं ने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। और मैं ने यरूशलेम में ऐसा ही किया; और प्रधान याजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था। हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहाँ तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों [विदेशों] में भी जाकर उन्हें सताता था। (प्रेरितों के काम 22:4; 26:9-11)

पवित्र आत्मा ने शाऊल की गतिविधियों को "अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था," (प्रेरितों के काम 9:1) के रूप में वर्णित किया। इसके अलावा, पहल तो उसकी ही थी, हालाँकि स्वयं महायाजक कैफा निस्संदेह ऐसे एक जोशीले हथियार के लिए पूरी तरह इच्छुक था।

(ख) उसने जो दया अनुभव की (1:13ख-14)

i. उसकी अज्ञानता क्षमा कर दी गई (1:13ख)

“तौभी,” पौलुस ने लिखा, “मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किये थे।” अपने अपरिवर्तित दिनों में भी, पौलुस बौद्धिक बेईमानी का दोषी नहीं था। मसीह और कलीसिया के बारे में उसका आँकलन गलत था, लेकिन ईमानदारी से वह गलत ही था। वह अज्ञानी था, वह गलत जानकारी का शिकार था। इसके अलावा, वह अपनी मान्यताओं के लिए ज़रूरी साहस से रहित नहीं था।

उसके आदरणीय वृद्ध रब्बी, गमलीएल ने मसीहियों के साथ व्यवहार करने में सावधानी बरतने का सुझाव दिया (प्रेरितों के काम 5:34-40), लेकिन शाऊल स्पष्ट रूप से देख रहा था कि यहूदी धर्म और मसीहियत में कोई मेल नहीं है। उसकी नज़र में, यह दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे। उसने अपनी बौद्धिक ईमानदारी को तार्किक निष्कर्ष पर पहुँचने दिया; क्योंकि मसीहियत और यहूदी धर्म एक-दूसरे से अलग थे, इसलिए इस नवीन पंथ (मसीहियत) को शुरुआत में ही नष्ट करना होगा—चाहे इसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। उसने अपनी तर्कशक्ति को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि चूँकि कोई और आवश्यक कठोर कदम उठाने के लिए तैयार नहीं दिख रहा था, इसलिए उसने ऐसा किया।

जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो पौलुस को आश्चर्य हुआ कि परमेश्वर ने उसे क्यों नहीं मार डाला और उसने निष्कर्ष निकाला कि यह उसकी अज्ञानता के कारण था। बेशक, अज्ञानता अदालत में एक वैध दलील नहीं होती है, लेकिन अनुग्रह के अंतर्गत इसे एक उचित बचाव के रूप में तौला और स्वीकार किया जाता है जब इसे पश्चातापी, टूटे हुए हृदय के साथ पेश किया जाता है। संभवतः सबसे पहला मसीही शहीद, स्तिफनुस के चेहरे ने शाऊल के मन में संदेह की जड़ पकड़ने में मदद की थी (प्रेरितों के काम 6:15)। संदेह का वह बीज तब तक बढ़ता रहा जब तक कि दमिश्क के मार्ग पर महिमामय प्रकाश की चमक उस पर नहीं फूट पड़ी। इसके बाद, पौलुस को सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ, और वह उन सभी में सबसे अधिक साहसी विश्वासी बन गया।

ii. उसकी अज्ञानता को भुला दिया गया (1:14)

पौलुस की अज्ञानता अब परमेश्वर के असीम अनुग्रह में समा गया था। “हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ” (1:14)। अनुग्रह, विश्वास और प्रेम पौलुस की नई शब्दावली के सबसे प्रिय शब्द बन गए। वह इस तथ्य से कभी उभर नहीं पाया कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उसकी ईशनिंदा का दोष दूर हो चुका था, मसीहियों को सताने की उसकी इच्छा अब विश्वास में बदल चुकी थी, और परमेश्वर के प्रेम ने उसके अंधेरे करनेवाले व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया था।

अपने अपरिवर्तित दिनों में, पौलुस की जुबान बहुत कठोर थी; वह एक "निंदा करनेवाला" था। 1:13 में "निंदा करनेवाला" के लिए प्रयुक्त शब्द के अनुवाद में क्रिया रूप का तात्पर्य निहित है अर्थात् "निंदा करना, गाली देना", विशेष रूप से मसीह के विरुद्ध। पौलुस ने निस्संदेह प्रभु के बारे में भयानक बातें कही थीं।

वह एक "सतानेवाला" भी था। "सतानेवाला" शब्द का प्रयोग नये नियम में केवल 1:13 में किया गया है। इसके क्रिया रूप का अर्थ है "भगा देना, पीछा करना"। पौलुस एक ऐसे जंगली कुत्ते की तरह था जो भागते हुए मसीहियों के पीछे गुरा रहा था, जो उसके क्रोध से बचने के लिए हर जगह बिखर गए थे (प्रेरितों के काम 8:1-4)।

अपने मन परिवर्तन से पहले, पौलुस "अंधेर करनेवाला" भी था। "अंधेर करनेवाला" शब्द का अनुवाद "अपमानजनक" के रूप में किया गया है। शाऊल की ज़हरीली जीभ अक्सर प्रभु यीशु मसीह के बारे में काफ़ी अपमानजनक और तिरस्कारपूर्ण टिप्पणियाँ करने में व्यस्त रहती थी।

उसके अतीत के पाप क्षमा कर दिए गए थे और उन्हें भुला दिए गए थे। लेकिन पौलुस उन्हें भूल नहीं सकता था, लेकिन प्रभु भूल सकते थे और उसने भुला भी दिया था। परमेश्वर की क्षमा के विषय में एक अद्भुत बात यह है कि जब वह क्षमा करता है तो साथ ही वह भुला भी देता है। परमेश्वर ने कहा, "मैं वही हूँ जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूँगा" (यशायाह 43:25)। क्योंकि वह स्थान और समय के सभी कारकों को नियंत्रित करता है, इसलिए वह सर्वोच्चता से हमारे पापों को अपने मन से निकाल सकता है और साथ ही उन्हें ब्रह्मांड से भी बाहर फेंक सकता है। जहाँ तक परमेश्वर का संबंध है, वे उतने ही अस्तित्व विहीन हैं जितने कि यदि वे कभी किए ही न गए होते (इब्रानियों 8:12)। हमारे व्याकुल हृदय और दोष देने वाला विवेक इस सत्य पर विश्राम पा सकती हैं।

ख. पौलुस का सुसमाचार (1:15-16)

"यह बात सच और हर प्रकार से मानने योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।" पहला तीमुथियुस 1:15 पवित्रशास्त्र के महान सुसमाचार लेखों में से एक है। इसकी गणना यशायाह 53:6; 11, यूहन्ना 3:16 और रोमियों 10:9 के साथ की जाती है।

(1) पौलुस की दृढ़ घोषणा (1:15क)

"यह बात सच है।" सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात, पौलुस हमें यह बताना चाहता है कि मसीह का सुसमाचार तथ्य पर आधारित है। सुसमाचार पूरी तरह से विश्वसनीय है और इसे सार्वभौमिक स्वीकृति मिलनी चाहिए। पौलुस की दृढ़ता उसके सत्य की उसकी स्वयं की जाँच और पुनरुत्थित मसीह के साथ उसकी व्यक्तिगत मुलाकात पर आधारित थी।

चार सुसमाचारों में जो लिखा है वह पूरी तरह से सत्य है। मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना विश्वसनीय, भरोसेमंद गवाह थे जिनकी गवाही सभ्य दुनिया की किसी भी अदालत में टिक सकती थी, जैसा कि साइमन ग्रीनलीफ ने इसे प्रदर्शित किया।

ग्रीनलीफ़, जो कभी हार्वर्ड लॉ स्कूल के डीन हुआ करते थे, साक्ष्य के नियमों के अमेरिका के सबसे बड़े विशेषज्ञों में से एक थे; इस विषय पर उसका ग्रंथ सौ वर्षों तक एक मानक पाठ्य-पुस्तक बना रहा। जब वे

तिरसठ वर्ष के एक परिपक्व वकील थे, तो उन्होंने चार सुसमाचार लेखकों की जाँच करने का निश्चय किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनके कथन पूरी तरह विश्वसनीय हैं या नहीं। उन्होंने मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को मानो अदालत में पेश किया और उनसे सवाल जवाब किया। उन्होंने अपनी जाँच के आधार के रूप में न्यायालय में साक्ष्य के स्वीकृत नियमों का उपयोग किया। उन्होंने उन घटनाओं के उनके विभिन्न वृत्तांतों की सावधानीपूर्वक तुलना की जिनसे वे व्यक्तिगत रूप से परिचित होने का दावा करते थे। बाद में उन्होंने अपने निष्कर्षों को “द टेस्टिमनी ऑफ द इवेंजलिस्ट्स, एग्जामिन्ड बाय द रूलस ऑफ एविडेन्स एडमिनिस्टर्ड इन कोर्ट्स ऑफ जस्टिस” नामक एक लंबी पुस्तक में दर्ज किया। अपनी आरंभिक टिप्पणियों में, जो कानूनी पेशे के सदस्यों को संबोधित थीं, उन्होंने इस प्रकार लिखा,

हमारा पेशा हमें झूठ के चक्रव्यूहों की पड़ताल करने, उसकी चालाकियों का पता लगाने, उसके सबसे घने पर्दों को भेदने, उसके कुतर्कों का अनुसरण कर उन्हें उजागर करने, विभिन्न गवाहों के कथनों की कठोरता से तुलना करने, सत्य की खोज करने और उसे त्रुटि से अलग करने के लिए प्रेरित करता है।[2]

चारों सुसमाचार लेखकों की गवाही को परखने के बाद उसने यह निष्कर्ष निकाला कि उन्होंने यीशु के असाधारण जीवन के बारे में सरल और बिना सजावट का सत्य दर्ज किया है। उनके दावे न्यायालय में भी टिके रह सकते थे। जैसा कि पौलुस ने पुष्टि की है, सुसमाचार का संदेश पूर्णतः भरोसेमंद है।

(2) पौलुस की स्वीकृति (1:15ख)

पौलुस ने लिखा, वह "सच्चा वचन" वास्तव में "हर प्रकार से मानने के योग्य" है। सुसमाचारों में वर्णित चौकाने वाली सभी घटनाएँ वास्तव में घटित हुई थी। बेतलेहम में एक शिशु का जन्म हुआ, और स्वर्गदूतों के समूह ने उसके जन्म की घोषणा की थी। वह वही था जो उसने स्वयं दावा किया था - अर्थात् परमेश्वर का पुत्र। वह भलाई करता फिरा, और उसने सभी प्रकार के अद्भुत चमत्कार किए। उसने सत्य को विशेष रूप से तीखे, बिना मिलावट वाले रूप में और ईश्वरीय अधिकार के साथ सिखाया। उसे सूली पर चढ़ाया गया और गाड़ा गया। वह मृतकों में से जी उठा और सशरीर स्वर्ग में उठा लिया गया। सुसमाचार "चतुराई से गढ़ी हुई कहानियाँ" नहीं हैं (2 पतरस 1:16); उनमें ऐतिहासिक तथ्य दर्ज हैं।

मसीह के जीवन की घटनाएँ भले ही अचंभित करने वाली हों, लेकिन जब पूरे ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता मनुष्य बन गया, तो हम इससे कम आश्चर्यजनक घटना की उम्मीद कैसे कर सकते थे? सुसमाचार के तथ्यों को खारिज करना सत्य को अस्वीकार करना है, वह सत्य जो किसी कानूनी न्यायालय में प्रमाणित है और हमारे शाश्वत कल्याण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(3) पौलुस का प्रमाण (1:15ग-घ)

(क) एक ऐतिहासिक तथ्य के बारे में (1:15ग)

सच्चाई यह है कि मसीह यीशु संसार में आया। अन्य लोग संसार में जन्म लेते हैं, लेकिन वह आया। वह इतिहास में एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसने अपने आगमन का समय, स्थान और परिस्थितियाँ स्वयं चुनीं। आने में उसने अपने जन्म, जीवन और मृत्यु से संबंधित विशिष्ट भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला को पूरा किया। केवल एक अज्ञानी व्यक्ति ही इस तथ्य से इनकार करेगा कि नासरत का यीशु जैसा कोई व्यक्ति

अस्तित्व में था। वह संसार में आया और हमारे ग्रह पर रहा। हमें यह नहीं पता कि उसने अपने अवतार से पहले, जैसे उसने हमारे संसार का किया, अन्य संसारों की भी यात्रा की या नहीं; परंतु हम यह अवश्य जानते हैं कि उसने पृथ्वी की यात्रा की। और हम यह भी जानते हैं कि जब वह आया तो उसके साथ क्या हुआ।

(ख) एक विनम्र तथ्य के बारे में (1:15घ)

वह “पापियों का उद्धार करने” आया। मसीह यीशु महिमा के निवास से, “हाथीदांत के महलों से, दुःख से भरी इस दुनिया में” आया।^[3] वह इसलिए आया क्योंकि हम खोए हुए थे, पाप में दासत्व में जकड़े हुए थे, और स्वयं को बचाने में असमर्थ थे। हम परमेश्वर के क्रोध के सामने थे; नरक हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। सबसे बढ़कर, हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी। इसलिए वह “पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया।”

हमें यह जानना चाहिए कि हम उन लोगों में गिने जाते हैं जिन्हें मसीह बचाने आया था, कि हम पापी हैं। 1:15 में “पापी” के रूप में अनूदित शब्द (जैसा कि 1:9 में है) “उन लोगों” की ओर इशारा करता है जो लक्ष्य से चूक जाते हैं। यह हमें याद दिलाता है कि हम सभी “परमेश्वर की महिमा से रहित” हैं (रोमियों 3:23)। हम परमेश्वर के पैमाने पर खरे नहीं उतर पाते; हम उस लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते जो उसने अपनी व्यवस्था में निर्धारित किया है।

असीम करुणा के साथ, जीवित परमेश्वर के पुत्र ने सर्वोच्च स्वर्ग में अपना सिंहासन त्याग दिया, स्वर्गदूतों की भीड़ को विदा किया, इस ग्रह पर देहधारण किया, “कुंवारी के गर्भ के चक्र को पूरा करके” वह आया, और पापियों को बचाने के लिए जो आवश्यक था, वह सब पूरा करने के लिए इस संसार में आया।

हम पाप के दासत्व में थे, दुष्टता के बंधन में थे, इसलिए हमें छुटकारे की आवश्यकता थी। हम नए जन्म से वंचित थे, पतित मानवीय स्वभाव के निर्देशों का पालन कर रहे थे, इसलिए हमें फिर से नया जन्म लेने की आवश्यकता थी। हम परमेश्वर के वचन से अनभिज्ञ थे, उसकी उपस्थिति से विमुख थे, संसार से प्रेम करते थे, वासना के आधीन थे, और शैतान के बहकावे में थे; दूसरे शब्दों में, हम परमेश्वर के शत्रु थे, इसलिए हमें मेल-मिलाप की आवश्यकता थी। हमें धर्मी ठहराए जाने, पवित्र किए जाने, गोद लिए जाने और महिमामय किए जाने की आवश्यकता थी। इसलिए पौलुस का प्रमाण यह शुभ समाचार था: “मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया।”

(4) पौलुस का अनुप्रयोग (1:15ङ)

पौलुस के अतीत की काली छाया एक बार फिर उसके हृदय पर छा गई। पापियों का ज़िक्र करने के बाद, उसने आगे कहा, “जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।” परमेश्वर ने उसे यह व्यक्तिगत अनुप्रयोग जोड़ने की अनुमति इसलिए दी, क्योंकि इससे अनगिनत अन्य पापियों को आशा और प्रोत्साहन मिलता। वे यह तर्क करते कि यदि परमेश्वर ने पहले ही पापियों में प्रधान को बचा लिया है, तो ऐसा कोई भी नहीं है जिसे यीशु नहीं बचा सकता—यदि वह यह स्वीकार कर ले कि वह पापी है।

यकीनन, एक और आवश्यकता है: उसे परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव को स्वीकार करना होगा। यह वास्तव में “हर प्रकार से मानने योग्य” है। “मानने” शब्द का अर्थ है “हृदय से ग्रहण करना”। परमेश्वर द्वारा दी जाने

वाली क्षमा को प्रसन्नतापूर्वक और उत्साहपूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए। दुर्भाग्य यह है कि कई पापी उद्धार के इस प्रस्ताव पर पौलुस की तरह सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देते।

सांसारिक क्षेत्र में भी, क्षमा को स्वीकार किया जाना चाहिए। जॉर्ज विल्सन के मामले पर ज़रा विचार करें। 1830 में, पेसिल्वेनिया के पूर्वी ज़िले की एक अदालत ने अमेरिकी डाक की सशस्त्र डकैती के जुर्म में इस व्यक्ति को मौत की सज़ा सुनाई और उसकी फाँसी की तारीख तय की। हालाँकि, राष्ट्रपति एंड्रयू जैक्सन ने उसे माफ़ कर दिया। किसी अज्ञात कारण से, विल्सन ने उस माफ़ी को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उसके वकीलों ने फाँसी पर रोक लगाने की माँग की और घोषणा की, "आप उस व्यक्ति को फाँसी नहीं दे सकते जिसे माफ़ कर दिया गया हो।" अंततः, वे उस मामले को सर्वोच्च न्यायालय ले गए।[4] यहाँ, आंशिक रूप से, उस न्यायालय का निर्णय दिया गया है:

माफी एक ऐसा कार्य है जिसकी वैधता के लिए उसका वितरण आवश्यक है, और स्वीकृति के बिना वितरण पूर्ण नहीं होता। फिर इसे वह व्यक्ति अस्वीकार कर सकता है जिसे यह दिया गया है; और यदि इसे अस्वीकार कर दिया जाता है, तो हमें न्यायालय में इसे उस पर थोपने का कोई अधिकार नहीं मिला है।

यह माना जा सकता है कि मृत्युदंड प्राप्त कोई भी व्यक्ति माफी को अस्वीकार नहीं करेगा; लेकिन मृत्युदंड के मामलों और दुष्कर्मों में नियम एक ही होना चाहिए।[5]

इसी प्रकार, परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव को भी स्वीकार करना होगा। हम न्यायालय के उस निर्णय को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं: "यह माना जा सकता है कि अनंत काल तक खोए रहने की सज़ा पाने वाला कोई भी प्राणी परमेश्वर के माफी को अस्वीकार नहीं करेगा, लेकिन यदि उसे अस्वीकार कर दिया जाता है, तो नियम वही होना चाहिए।" हमारी माफी कलवरी में अनंत कीमत देकर खरीदी गई थी, और एकमात्र समझदारीपूर्ण प्रतिक्रिया यही है कि हम परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण प्रस्ताव को हृदय से स्वीकार करें।

(5) पौलुस की आशंका (1:16)

पद 16, पद 15 के अर्थ के प्रति पौलुस की समझ को प्रकट करता है। उसने समझा कि परमेश्वर का धीरज और अनुग्रह का नमूना उसके ही जीवन में प्रदर्शित हुआ था: "पर मुझ पर इसलिये दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ।" पौलुस यह कह रहा था, "यदि वह मुझे बचा सकता है, तो वह किसी को भी बचा सकता है।" प्रेरित को सबसे अधिक जिस बात ने प्रभावित किया, वह यह थी कि परमेश्वर ने उसके प्रति कितना धैर्य दिखाया था—जो संयम उसने बरता, जो दीर्घ-सहनशीलता उसने प्रकट की।

निःसंदेह, तरसुस के शाऊल के रूप में, उसने प्रारंभिक मसीहियों और संभवतः स्तिफनुस, जो बुद्धि और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति था, के साथ सिद्धांत पर बहस की थी। फिर शाऊल, मसीहियों को गलत साबित करने में अपनी असमर्थता से क्रोधित होकर, अधिकाधिक प्रतिशोधी और हिंसक हो गया था। अंततः वह कलीसिया को "उजाड़ने" लगा (प्रेरितों के काम 8:3)। "उजाड़ रहा था" शब्द का मूल अनुवाद लुमैनोमाई है, जिसका अर्थ है "दुर्व्यवहार और अत्याचार करना"। इसका प्रयोग एक सूअर द्वारा अंगूर के बाग को तबाह करने और कोमल पौधों को जड़ से उखाड़ने के लिए किया जाता था।

आधा दर्जन से भी ज़्यादा वर्षों तक, शाऊल एक पागल की तरह व्यवहार करता रहा। उसके उत्पाती समय के दौरान, घर तबाह हो गए थे, पत्नियाँ विधवा हो गई थीं, बच्चे अनाथ हो गए थे, और विश्वासियों को प्रभु की निंदा करने के लिए मजबूर किया जाता था। कलीसिया टूट गई थी और बिखर गई थी, मसीह के नाम को अपवित्र किया गया था, और यहूदियों को उनके अविश्वास में पुष्टि मिली थी। कई विश्वासियों की संपत्ति छीन ली गई थी और वे यरूशलेम की कलीसिया के लिए आर्थिक बोझ बन गए थे। सताव लगातार जारी रहा, फिर भी परमेश्वर पौलुस के प्रति धीरज धरता रहा। परमेश्वर के अद्भुत धैर्य ने प्रेरित को अभिभूत कर दिया और हम सभी को आशा प्रदान करता है। पौलुस का अनुभव सुसमाचार में प्रकट परमेश्वर के अनुग्रह का एक बहुत ही अद्भुत उदाहरण है।

ग. पौलुस का परमेश्वर (1:17)

(1) उसकी असीम महानता (1:17क-ग)

परमेश्वर के अनुग्रह के विचारों से अभिभूत होकर, पौलुस स्वयं को रोक नहीं पाया। बाइबल के एक महान स्तुति-वन्दन में, उसने पुकारा, "अब सनातन राजा अर्थात् अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर..."

शाऊल ने अंततः स्वीकार कर लिया था कि प्रभु यीशु ही राजा था। यहूदियों ने उसे और दाऊद के सिंहासन का तिरस्कार कर दिया था, हालाँकि वह इसका वास्तविक दावेदार था। मत्ती और लूका के वंशावलियों से सिद्ध होता है कि वह अपनी माता और अपने पालक पिता, दोनों के द्वारा दाऊद का वंशज था। उन दिनों मंदिर के अभिलेखों से उन वंशावलियों की पुष्टि आसानी से की जा सकती थी। पूर्व से आए हुए बुद्धिमान पुरुषों ने प्रभु यीशु को राजा घोषित किया; और पिलातुस ने भी, यद्यपि वह उपहास करने वाला संशयवादी था, उसे राजा कहा (मत्ती 2:1-11; 27:37)।

अब राजा पौलुस के हृदय में सर्वोच्च स्थान पर था, और वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था जब हर घटना उसके सामने झुकेगा (फिलिप्पियों 2:5-11)। हज़ारों-लाखों लोग पहले ही उसे राजा मान चुके थे, और समय के साथ, दुनिया भर में लाखों और लोग उसकी आराधना करेंगे। भजन लिखने वाले ने उसके तिरस्कार और उसकी जयजयकार के बीच के अंतर को इस प्रकार व्यक्त किया है:

पापियों ने उसका उपहास करते हुए उसे मुकुट पहनाया,

इस प्रकार उद्धारकर्ता के दावे का मज़ाक उड़ाया;

पवित्र लोग और स्वर्गदूत उसके चारों ओर इकट्ठा होते हैं,

उसकी उपाधि को अपनाते हैं, उसके नाम की स्तुति करते हैं।[6]

इन दिनों में से किसी एक दिन प्रभु यीशु फिर से राज्य करने के लिए आएगा, ताकि उसे “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु” के रूप में स्वीकार किया जाए (प्रका. 19:16)। अभी वह स्वर्ग में अपने पिता के सिंहासन पर विराजमान है (इब्रानियों 1:3), परन्तु वह फिर आएगा ताकि “अपने पिता दाऊद के सिंहासन”

पर बैठे (लूका 1:32) और “नदी से लेकर पृथ्वी के छोर तक” राज्य करे (भजन 72:8)। इसी बीच, संसार भर के विश्वासी प्रतिदिन उसके आगमन के लिए प्रार्थना करते हैं (मत्ती 6:10, 13)।

(क) अपरिवर्तनीय राजा (1:17क)

मसीह "सनातन राजा" हैं। इस वाक्यांश का अनुवाद "युगों के राजा" के रूप में किया जा सकता है क्योंकि "सनातन" शब्द का अर्थ अनिश्चित काल है। प्रभु यीशु सभी युगों के पूर्ण शासक हैं।

वह अनादि, समय से पहले अतीत में वहाँ था—उस समय भी, जब किसी स्वर्गदूत के पंखों की सरसराहट ने अनंत की निस्तब्धता को कभी भंग नहीं किया था। वह वहाँ था, जब असंख्य तारों और उनके उपग्रहों को अनंत अंतरिक्ष में उछाल दिया गया, ताकि वे अकल्पनीय वेग से, अद्भुत कक्षाओं में और गणितीय शुद्धता के साथ यात्रा करें।

वह वहाँ था, जब हमारे ग्रह को मनुष्य के भावी निवास के रूप में तैयार किया जा रहा था। वह अदन की वाटिका में भी वहाँ था, जब उसने झुककर आदम को बनाने के लिए मिट्टी को हाथ में लिया।

वह तब भी मौजूद था जब आदम का पतन हुआ। वह वहाँ था जब जलप्रलय ने पृथ्वी को पूरी तरह से डुबो दिया, जब बाबेल गुम्मत के बनाने वाले तितर-बितर कर दिए गए, और जब अब्राहम को एक स्वर्गीय नगर का दर्शन दिया गया तथा उसे पृथ्वी पर यात्री और परदेशी होकर रहने के लिए बुलाया गया। मसीह मिस्र में वहाँ था जब निर्गमन हुआ। वह सीनै पर वहाँ था जब व्यवस्था दी गई। वह वहाँ था जब दाऊद को इस्राएल का राजा ठहराया गया और जब मसीहाई वंश की शुरुआत हुई। वह वहाँ था जब अशूर ने इस्राएल पर चढ़ाई की, जब बेबीलोन ने यहूदी राजवंश का अंत किया, और जब फारस ने यहूदी राज्य के पुनर्जन्म को स्वीकृति दी। वह तब भी वहाँ था जब सिकंदर ने संसार को जीत लिया और जब रोम अपने पूर्ण सामर्थ्य के साथ अधिकार में आया। वह वहाँ था जब यरूशलेम गिर पड़ा।

वह वहाँ तब भी होगा जब कलीसिया उठा ली जाएगी। वह वहाँ होगा जब सहस्राब्दी युग का अंत होगा और समय का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। प्रभु यीशु ही “अनन्त राजा” हैं।

(ख) अविनाशी राजा (1:17ख)

मसीह "अविनाशी" राजा भी हैं। हम मृत्यु से मुक्ति के विचार को आमतौर पर अमरता के शब्द से जोड़ते हैं, और निस्संदेह, यीशु ने मृत्यु और उसकी सभी शक्तियों पर विजय प्राप्त की है (प्रका. 1:18)। लेकिन 1 तीमथियुस 1:17 में "अमरता" के लिए जिस यूनानी शब्द का अनुवाद किया गया है, वह है अप्थाटोस, जिसका अर्थ है “अविनाशी, अथवा भ्रष्टता या सड़न के अधीन न होने वाला।” प्रभु ने इसी अर्थ में अपनी अमरता को अपनी कब्र में प्रकट किया। कब्र की भयानकता यीशु की देह को छू न सकी, क्योंकि यह पहले से ठहराया जा चुका था: “क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक (शेओल) में छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा” (भजन 16:10)।

जब प्रभु लाज़र की कब्र के द्वार पर खड़ा हुआ और पत्थर हटाने की आज्ञा दी, तो मार्था भयभीत हो उठी। उसने कहा, “हे प्रभु, अब तो उसमें से दुर्गन्ध आती होगी, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं” (यूहन्ना

11:39)। मृत्यु और सड़न पाप के अनिवार्य परिणाम हैं। मृत्यु के ये साथी प्रभु की कब्र में कोई स्थान न पा सके। वह अविनाशी था।

(ग) अनदेखा राजा (1:17ग)

मसीह "अनदेखा" राजा हैं। यहाँ "अनदेखे" शब्द का अनुवाद "अदृश्य" है, जिसका अर्थ है "जिसे किसी ने कभी नहीं देखा"। प्रभु में अपनी इच्छा से प्रकट होने या अदृश्य होने की सामर्थ्य थी, जैसा कि उसने इम्माऊस गाँव में अपने दो चेलों के घर में किया था (लूका 24:31)। एक और उदाहरण ऊपरी कक्ष में उसका अचानक प्रकट होना है (यूहन्ना 20:19)। पौलुस ने प्रभु की दृश्य और अदृश्य होने की क्षमता का व्यक्तिगत अनुभव किया था, क्योंकि जब प्रभु स्वर्ग से उसके सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हुआ, तब उसका मन परिवर्तित हुआ था (प्रेरितों के काम 9:3-4)।

(घ) अटल राजा (1:17घ)

सनातन, अविनाशी और अनदेखा होना परमेश्वर के गुण हैं। यीशु में भी ये गुण हैं क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर हैं। वास्तव में, पौलुस उसे "एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर" के रूप में वर्णित करता है। मनुष्यों द्वारा पूजे जाने वाले अन्य सभी देवता मूर्ख हैं। वे केवल मानवीय कल्पना और दुष्टात्माओं के छल की उपज हैं। वे मूर्ख ईश्वर हैं क्योंकि वे झूठे ईश्वर हैं।

नये नियम का यीशु, जो पुराने नियम का यहोवा है, वही "अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर" है। पौलुस ने कुलुस्सियों को याद दिलाया कि उसमें "बुद्धि और ज्ञान के सभी भण्डार छिपे हुए हैं" (कुलुस्सियों 2:3)। पुराने नियम के भविष्यवक्ता यशायाह ने उसे "अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार" (यशायाह 9:6) कहकर वर्णित किया है।

वह कितना अद्भुत रूप से बुद्धिमान है! वह ब्रह्मांड की रचना की योजना बनाने और आकाशगंगाओं से लेकर परमाणु कणों तक, हर चीज़ के आकार और संरचना की योजना बनाने के लिए पर्याप्त रूप से बुद्धिमान और ज्ञानी है। उसके पास सौ अरब आकाशगंगाओं के आकार, गति और कक्षाओं को तय करने के लिए पर्याप्त बुद्धि है। उसके पास एक परमाणु के भीतर प्रोटॉन को एक साथ बनाए रखने के लिए पर्याप्त बुद्धि और ज्ञान है; जीवन के मूल सिद्धांत, डीएनए का आविष्कार करने के लिए उसमें पर्याप्त बुद्धि और ज्ञान पाया जाता है; और समय, पदार्थ और स्थान के सभी कारकों को नियंत्रित करने और उन्हें उचित संतुलन में रखने के लिए पर्याप्त बुद्धि और ज्ञान है ताकि सभी चीज़ें उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करें।

प्रभु के पास इतनी बुद्धि और ज्ञान है कि वह सम्पूर्ण "अधर्म के भेद" (2 थिस्सलुनीकियों 2:7) को समझ भी सकता है और निष्प्रभावी भी कर सकता है। उसके पास इतनी बुद्धि और ज्ञान है कि वह अन्धकार के प्रधान के मन, उसकी दुष्टता और उसके उद्देश्यों को पूरी तरह जान ले, और उसकी सभी गहरी तथा शैतानी योजनाओं को अचूक रूप से विफल कर दे। उसके पास इतनी बुद्धि और ज्ञान है कि वह समय के सभी युगों में प्रत्येक सृष्ट प्राणी के मन, हृदय, इच्छा, आशाओं, भय, आकांक्षाओं, सामर्थ्य, सीमाओं, विचारों, वचनों और कार्यों से पूर्णतः परिचित है।

उसके पास इतनी बुद्धि और ज्ञान है कि वह भविष्य को पहले से देख सके और अन्ततः सब बातों को हमारे भले और अपनी महिमा के लिए एक साथ कार्य कराने में समर्थ हो।

वही एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर है। पौराणिक ओलिंपस पहाड़ी पर आराम करने या वासना में लिप्त किसी भी देवता के पास कोई बुद्धि नहीं थी। पवित्र शास्त्र में जिन मूर्तिपूजक देवताओं के बारे में हम पढ़ते हैं, उनमें से किसी के पास ज्ञान नहीं था। बाल, अशतरेत, मोलोक या दागोन में कोई समझ नहीं थी। उलझे हुए हिंदू देवताओं में कोई भी देवता बुद्धिमान नहीं है। हम एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की आराधना करते हैं, और उसका नाम यीशु है।

(2) उसकी अनंत महिमा (1:17 ड-च)

परमेश्वर की महिमा स्पष्ट और शाश्वत है। हमें उसे "सदा सर्वदा आदर और महिमा" देनी चाहिए। ये शब्द, आदर और महिमा, इब्रानियों 2:7-9; 2 पतरस 1:17; प्रका. 4:9, 11 में एक साथ जुड़े हुए हैं; 5:12-13; 19:1 में ईश्वरीय महिमा का वर्णन किया गया है। हमारे प्रिय प्रभु को पृथ्वी पर अधिकांश लोगों से बहुत ही कम सम्मान मिलता है। उसके धन्य नाम का प्रयोग अक्सर एक अपशब्द के रूप में किया जाता है और उसे सबसे घटिया भाषा से जोड़ा जाता है और जिसे उद्धार न पाए हुए लोग अपने मन के अन्धे नालों से जो सबसे घिनौनी भाषा निकाल सकते हैं, उसके साथ जोड़ दिया जाता है। लेकिन उसके कुछ ऐसे लोग भी हैं जो उसका आदर करते हैं।

यहाँ "आदर" शब्द का अनुवाद उस मूल्य से संबंधित है जो हम वस्तुओं को देते हैं। केवल विश्वासी ही, और वे भी केवल एक सीमित सीमा तक, प्रभु यीशु के असीम मूल्य की सच्ची सराहना कर सकते हैं। जैसा कि पतरस ने लिखा, "अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये वह "जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था।" "बहुमूल्य" शब्द का अनुवाद एंटिमोस है, जिसका अर्थ है "बहुत ही मूल्यवान, कल्पना से परे महँगा।" इसका प्रयोग इसी संदर्भ में बहुमूल्य पत्थरों के संबंध में किया गया है। इसी संदर्भ में यह शब्द बहुमूल्य पत्थरों के संबंध में भी प्रयुक्त हुआ है। इस शब्द को ग्रहण कर लेने के बाद, पतरस उसे मानो छोड़ना नहीं चाहता था, क्योंकि उसने चार पदों में तीन बार इसका प्रयोग किया (1 पतरस 2:4-7)।

1 तीमुथियुस 1:17 में "महिमा" के लिए प्रयुक्त मूल शब्द डोक्सा है। नये नियम में यह शब्द अक्सर परमेश्वर के स्वभाव और उसके कार्यों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है, जब वह अपने आप को प्रकट करता है—विशेषकर मसीह के व्यक्तित्व में, जिसके द्वारा यह महिमा प्रकाशित होती है (यूहन्ना 17:5)। डोक्सा का प्रयोग उस ज्योति और वैभव का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो परमेश्वर से प्रवाहित होता है (लूका 2:9), मसीह के अद्भुत रूपान्तरण को चित्रित करने के लिए (2 पतरस 1:17), और परमेश्वर को स्तुति अर्पित करने के लिए भी (लूका 17:18)।

परमेश्वर के अनुग्रह और महिमा से प्रभावित होकर, पौलुस ने अपने स्तुति-गान की सम्पूर्णता को उँडोला। फिर मानो कहने को और कोई शब्द न रह गया हो, इसलिए उसने लिखा, "आमीन।"

4. विश्वास के जीवन पर विचार किया गया (1:18-20)

क. आज्ञा सौंपना (1:18-19ख)

प्रभु और उसके चेलों की तरह (देखें मत्ती 17:1-16), पौलुस भी पहाड़ से नीचे उतरा। पहाड़ की चोटी के अनुभवों और उमड़ती हुई स्तुति-गीतों का अपना स्थान है, पर शीघ्र ही जीवन की व्यवहारिक वास्तविकताएँ अपना अधिकार जताने लगती हैं। हम याद करते हैं कि रूपान्तरण के पर्वत से नीचे उतरते समय प्रभु के लिए तराई में एक दुष्टात्मा से ग्रस्त बालक, असहाय विश्वासियों का एक समूह, और उपहास करने वाले शत्रुओं की भीड़ प्रतीक्षा कर रही थी।

उसी प्रकार, पौलुस भी अपनी स्तुति की उछाल के बाद इफिसुस की कलीसिया की कठिन परिस्थिति का सामना करने से बच नहीं सका। इसलिए अपनी स्तुति-गान के बाद वह इफिसुस में अपने युवा सहकर्मी को एक नया, तिगुना निर्देश देता है।

(1) एक पिता की अपील (1:18क)

"हे पुत्र तीमुथियुस,... मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ," पौलुस ने शुरू किया। इस अपील में कुछ कोमलता और अपनापन है क्योंकि यहाँ "पुत्र" के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द टेकनोन है, जिसका अर्थ है "बालक"। इफिसुस में भेड़िये मंडरा रहे थे (प्रेरितों 20:29-30) और वहाँ एक बढ़ती हुई उदासीनता थी (प्रका. 2:4), और, कुछ मामलों में, तीमुथियुस केवल एक बालक था। लेकिन कभी-कभी बच्चों जैसा व्यवहार करना लाभदायक होता है (मत्ती 18:1-6)। एक महान भविष्यवक्ता ने प्रेरित होकर इस प्रकार लिखा, "एक छोटा बालक उनकी अगुवाई करेगा" (यशायाह 11:6)। जब नए राजा सुलैमान ने अपनी भारी ज़िम्मेदारियों और बुद्धि की अपनी अत्यंत आवश्यकता को समझते हुए, परमेश्वर के सामने स्वीकार किया, "मैं तो एक छोटा बालक ही हूँ" (1 राजा 3:7), तो उसे एक महान समझ का वरदान दिया गया।

तीमुथियुस भले ही एक बालक रहा हो, लेकिन उसका आत्मिक पिता पौलुस था। प्रेरित का सारा अधिकार, बुद्धि और अनुभव तीमुथियुस के पास था। वास्तव में, इस बुद्धि का अधिकांश भाग इस पत्री के पन्नों में पाया जा सकता है। पौलुस को तीमुथियुस के प्रति व्यक्तिगत, पितृवत चिंता थी और उसने इसे प्रकट करने में किसी तरह का संकोच नहीं किया।

(2) भविष्यसूचक अपील (1:18ख)

पौलुस ने जो आज्ञा तीमुथियुस को सौंपा, वह "उन भविष्यवाणियों के अनुसार था जो पहले तेरे विषय में की गई थीं।" प्रेरित उसे उन भविष्यवाणियों की याद दिला रहा था जो उसे सेवकाई के लिए नियुक्त किए जाने के समय कही गई थीं (4:14)। यद्यपि पौलुस माता-पिता होने भाव से तीमुथियुस को एक बालक के समान समझ सकता था, और कलीसिया के परिष्कृत बुद्धिजीवी तथा व्यवस्थावादी लोग भी सुविधापूर्ण ढंग से उसे बालक मान सकते थे, फिर भी वह प्रभावशाली वरदानों और प्रमाणों से सुसज्जित था। इसलिए जो इफिसुसवासी तीमुथियुस को कम आँकते थे, वे सावधान रहें। सभी को मत्ती 18:6 में प्रभु की चेतावनी पर ध्यान देना था।

1 कुरिन्थियों 14:20 में पौलुस के शब्द निस्संदेह तीमुथियुस पर लागू होते थे: "हे भाइयो, तुम समझ में बालक न बनो : बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सियाने बनो। " तीमुथियुस को यही दृष्टिकोण

अपनाने की आवश्यकता थी। हालाँकि वह युवा था, फिर भी वह पंद्रह साल से ज़्यादा समय से पौलुस के साथ था और उसने बहुत कुछ सीखा था। निस्संदेह तीमुथियुस को पौलुस की पत्रियाँ कंठस्थ थीं (उनमें से आधा दर्जन में उसका नाम शामिल है)। इसलिए, हालाँकि वह बालक था, फिर भी पौलुस द्वारा सौंपी गई किसी भी ज़िम्मेदारी को निभाने के लिए तीमुथियुस पूरी तरह से तैयार था।

(3) व्यावहारिक अपील (1:18ग-19ख)

(क) युद्ध के संबंध में (1:18ग)

पौलुस ने लिखा, "मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रह" "उन्हें" शब्द, निस्संदेह, उन भविष्यवाणियों और वरदानों को संदर्भित करता है जो तीमुथियुस को तब मिले जब घर पर विश्वासियों ने उसे पहली बार पूर्णकालिक मसीही कार्य के लिए नियुक्त किया था। प्रेरित ने पहले ही इफिसियों को उस युद्ध के बारे में लिखा था जो चल रहा था और उनसे "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लेने" का आग्रह किया था ताकि वे युद्ध में विजयी हों (इफिसियों 6:11-17)।

तीमुथियुस को यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं थी कि कठिन समय आ गया है। उसने रोम में मसीहियों के साथ होने वाले सतावों के बारे में सुनाई जा रही भयानक कहानियाँ सुनी थीं। एक विश्वासी होना लगातार खतरनाक होता जा रहा था। इसके अलावा, मानो बाहर से हमले ही काफ़ी नहीं थे, कलीसिया के भीतर विधर्मी और भी ज़्यादा दुस्साहसी होते जा रहे थे। लेकिन पौलुस ने तीमुथियुस को आदेश दिया कि वह हार न माने, बल्कि उत्साहित किया कि "एक अच्छी लड़ाई लड़े।" चाहे कुछ भी हो जाए, उसे सत्य के लिए खड़ा होना था।

जब सुलैमान ने कहा, "हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है," तो उसने अपनी विविध सूची को "लड़ाई का समय, और मेल का भी समय है" कहकर समाप्त किया (सभोपदेशक 3:1, 8)। झूठे सिद्धांत सिखाने वालों के साथ समझौता करने का समय अब समाप्त हो चुका था। शत्रुतापूर्ण सरकारी अधिकारियों को शांत करने का समय समाप्त हो चुका था। अब युद्ध छेड़ने का समय आ गया था। कलीसिया के भीतर और संसार में, युद्ध की रेखाएँ खींच दी गई थीं। पौलुस ने स्पष्ट किया कि तीमुथियुस को मृत्यु तक लड़ने के लिए तैयार रहना होगा क्योंकि युद्ध का सार यही है।

(ख) विश्वास के संबंध में (1:19क-ख)

i. सत्य का वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विचार (1:19क)

जब पौलुस ने लिखा, "विश्वास [पिस्टिस] को थामे रहना," तो उसके मन में केवल उस महान सत्य-समूह का ही विचार नहीं था जिसे हम "विश्वास" कहते हैं, बल्कि विश्वास को उस जीवित, परमेश्वर द्वारा रोपे गए सिद्धान्त के रूप में भी देखा गया था जो हमें अंत तक संभाले रखता है। यूहन्ना ने लिखा, "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास [पिस्टिस] है" (1 यूहन्ना 5:4)।

ii. सत्य का व्यक्तिनिष्ठ दृष्टि से विचार (1:19ख)

जब हम आत्मिक स्तर पर युद्ध करते हैं, तो उस गतिशील विश्वास के साथ "एक अच्छा विवेक" भी होना चाहिए। शेक्सपियर ने इस प्रकार लिखा, "विवेक हम सभी को कायर बना देता है।"[7] जिस व्यक्ति का

विवेक दोषी और आरोप लगाने वाला होता है, वह प्रभु का कार्य करने में बहुत ही असमर्थ होता है। वह कुछ समय के लिए अच्छा दिखावा कर सकता है और बेशर्मी से बच सकता है, लेकिन उसके पास कोई वास्तविक शक्ति नहीं होती क्योंकि वह पवित्र आत्मा को धोखा नहीं दे सकता।

ख. चुनौती (1:19ग-20)

(1) खतरा प्रकट किया गया (1:19ग)

इफिसुस में तीमुथियुस के सामने जो चुनौती थी, उसके विषय में पौलुस और अधिक स्पष्ट होता है: “जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।” मूल भाषा में “दूर करने” के लिए प्रयुक्त शब्द एक अत्यन्त प्रबल अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है “बल से दूर धकेल देना।” यह दर्शाता है कि कुछ लोगों ने जान-बूझकर अपने विवेक का उल्लंघन किया था। स्तिफनुस ने इसी शब्द का प्रयोग तब किया जब वह मिस्र में दासत्व में पड़े इस्राएलियों द्वारा मूसा की प्रारम्भिक तिरस्कार का वर्णन कर रहा था: “जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर हटा दिया, ‘तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है?’” (प्रेरितों 7:27)

पौलुस ने यही शब्द तब प्रयोग किया जब पिसिदिया की अन्ताकिया के आराधनालय में यहूदी लोग, उसकी सफलता से ईर्ष्या करके, उसका विरोध करने और निन्दा करने लगे: “तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, “अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जब तुम उसे दूर हटाते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं” (प्रेरितों 13:46)।

इफिसुस की स्थिति केवल इतनी नहीं थी कि कुछ लोगों के मन में संदेह उत्पन्न हो गए थे। बल्कि उन्होंने उस सत्य को जानबूझकर अस्वीकार कर दिया था, जिसे वे पहले मानने का दावा करते थे। दूसरे शब्दों में, वे धर्मत्यागी बन गए थे। उन्होंने न केवल अपने व्यक्तिगत विश्वास को त्याग दिया था, बल्कि उस “विश्वास” को भी—अर्थात् परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सत्य के उस सम्पूर्ण मानक को—जो मसीही सिद्धान्त का गठन करता है।

सत्य को तिरस्कारपूर्वक दूर धकेल देने और अपने अच्छे विवेक को त्याग देने के परिणामस्वरूप, उन लोगों के “जहाज़-डूब” गए थे। यहाँ चित्र एक जहाज़ का चट्टानों से जा टकराने और टूट जाने का है।

(2) खतरे का उदाहरण दिया गया है (1:20)

पौलुस ने इन धर्मत्यागियों में से दो के नाम बताए: हुमिनयुस और सिकंदर। प्रेरित ने इन दोनों व्यक्तियों का उल्लेख अपनी दूसरी पत्री, तीमुथियुस के नाम, में फिर से किया। पौलुस ने कहा कि हुमिनयुस की शिक्षा स्वभाव में कैसर के समान थी, और पुनरुत्थान के विषय में उसकी विधर्मी शिक्षा ने कुछ लोगों के विश्वास को उलट-पलट कर दिया था (2 तीमुथियुस 2:17-18)। और पौलुस ने सिकंदर की पहचान एक तांबे का कारीगर के रूप में की, जिसने उसके साथ बहुत बुराई की—संभवतः उसके मुकदमे के समय। प्रेरित ने प्रार्थना की कि उसे उसके “कामों के अनुसार” प्रतिफल दिया जाए (2 तीमुथियुस 4:14)।

दोनों ही व्यक्ति परमेश्वर की निन्दा करने वाले थे।

1 तीमुथियुस 1:20 में, पौलुस ने कहा, "मैंने [हिमिनयुस और सिकंदर] को शैतान को सौंप दिया है।" इस जीवन में प्रेरितिक रूप से शैतान के हवाले किए जाने से ज़्यादा गंभीर और कुछ नहीं हो सकता। कलीसिया से इस तरह का बहिष्कार अपराधी को वापस उस दुनिया में धकेल देता था, जहाँ का प्रभु और ईश्वर शैतान है (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; 2 कुरिं. 4:4) और जहाँ अपराधी शैतान की दुष्टता और घृणा के सामने आ जाता। ऐसा प्रेरितिक अनुशासन बहुत कम और इस उम्मीद में दिया जाता था कि अपराधी ठीक हो जाएगा। पौलुस ने कुरिन्थ में अनाचारी भाई के साथ इसी तरह व्यवहार किया था (1 कुरिं. 5:5)। हिमिनयुस और सिकंदर को इसलिए बहिष्कृत किया गया ताकि वे "परमेश्वर की निंदा करना न सीखें।" स्पष्ट रूप से, उन्होंने कभी अपना सबक नहीं सीखा।

ख. कलीसिया और उसकी भक्ति (2:1-15)

1. कलीसिया में आराधना का अभ्यास (2:1-8)

क. परमेश्वर को मनुष्यों के बारे में बताना (2:1-3)

प्रार्थना "सबसे पहले" आराधना का एक कार्य है। हमें सार्वजनिक प्रार्थना के महत्व को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। पौलुस ने लिखा, "अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ" (2:1)। परमेश्वर को मनुष्यों के बारे में बताना एक महान विशेषाधिकार है।

(1) प्रार्थना के प्रकार (2:1क-घ)

(क) विनती (2:1क)

2:1 में "विनतियाँ" के रूप में प्रयुक्त शब्द का संबंध परमेश्वर से किसी विशेष बात के लिए माँग करने से है। विनतियाँ वे याचनाएँ हैं जिनमें हमारी व्यक्तिगत आवश्यकताएँ सामने रहती हैं, न कि उन आवश्यकताओं को पूरा करने की परमेश्वर की सामर्थ्य पर ध्यान होता है। यहाँ पौलुस के मन में विशेष रूप से वे आवश्यकताएँ थीं जो उन सरकारों की नीतियों के कारण उत्पन्न होती हैं, जिनके अधीन हम रहते हैं। जब हम स्मरण करते हैं कि पौलुस के समय में नीरो साम्राज्य पर शासन कर रहा था और वह कलीसिया के विरुद्ध उग्र रूप से अभियान चला रहा था, तब पौलुस के इस जोर को हम आसानी से समझ सकते हैं।

पश्चिमी संसार में अधिकांश लोग अपेक्षाकृत उदार सरकारों के अधीन रहते हैं, जो लोगों की इच्छा के प्रति उचित रूप से प्रतिक्रिया देती हैं। मसीहियों को सामान्यतः व्यापक रूप से सताया, दबाया, दुर्व्यवहार किया या उनके साथ भेदभाव नहीं किया जाता। लेकिन परमेश्वर के बहुत से लोग ऐसे देशों में रहते हैं जहाँ असहिष्णु सरकारें अपने नागरिकों पर, विशेषकर मसीहियों पर, हर प्रकार का दबाव डालती हैं। साम्यवाद आज भी बड़ी संख्या में लोगों के जीवन को नियंत्रित करता है, और अन्य लोग इस्लामी कट्टरवाद की जकड़न में हैं। सताए गए मसीहियों के पास परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करने के लिए असंख्य विनतियाँ होती हैं।

परमेश्वर ऐसी याचनाओं को सुनता और उन पर ध्यान देता है, यद्यपि वह ऐसे समय-सारणी और ऐसे स्तर पर कार्य करता है जो हमारी समझ से परे हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दुःख को निश्चय देखा है... उनकी पीड़ा पर मैं ने चिंत लगाया है" (निर्गमन

3:7)। हस्तक्षेप करने का परमेश्वर का समय वर्षों के उत्पीड़न और पीड़ा के बाद आया, जिनके दौरान निश्चय ही असंख्य याचनाएँ स्वर्ग तक पहुँची होंगी। निस्संदेह, जब परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र के पक्ष में कार्य करने से पहले प्रतीक्षा कर रहा था, तब भी व्यक्तिगत प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जा रहा था। उदाहरण के लिए, अम्राम और योकेबेद की उन भावपूर्ण विनितियों को लीजिए, जो उन्होंने उस छोटे से शिशु के लिए की थीं, जिसे उन्होंने सरकंडों की टोकरी में रखकर नील नदी के किनारे नरकटों में छिपा दिया था; परमेश्वर ने अद्भुत रीति से उनकी आवश्यकताओं की देखभाल की, यहाँ तक कि उस पूर्व-नियत समय से भी पहले, जब उसने मिस्रियों और इब्रानियों के संकट में सीधे हस्तक्षेप किया।

(ख) व्यक्तिगत स्तर पर लागू करना (2:1ख)

2:1 में "प्रार्थना" शब्द का अनुवाद परमेश्वर को अर्पित की गई प्रार्थनाओं के रूप में किया गया है। ऐसी प्रार्थनाओं में परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रति जागरूकता और व्यक्तिगत भक्ति पर बल दिया जाता है।

प्रार्थना एक आत्मिक शक्ति है जो गुरुत्वाकर्षण, चुंबकत्व और विद्युत जैसी किसी भी भौतिक शक्ति जितनी ही वास्तविक है। परमेश्वर प्रकृति की सभी शक्तियों को नियंत्रित करता है। हवा, लहरें और मौसम पर उसका नियंत्रण है (जैसा कि हम योना की पुस्तक से सीखते हैं)। वह प्रत्येक तारे के ऊर्जा उत्पादन को नियंत्रित करता है। वह पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमते हुए और सूर्य के चारों ओर अपनी यात्रा करते हुए उसे थामे रखता है। ज्वार-भाटा, तूफ़ान, चक्रवात और भूकंप, सूखा और मूसलाधार वर्षा, ये सभी उसके ही शासन के अधीन हैं। हालाँकि शैतान प्रकृति की शक्तियों पर शक्ति रखता है, लेकिन उसकी शक्ति परमेश्वर की सामर्थ्य के अधीन है। परमेश्वर राष्ट्रों के उत्थान और पतन को भी नियंत्रित करता है: "राजा का मन नालियों के जल के समान यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको मोड़ देता है" (नीतिवचन 21:1)। और वह उन अदृश्य स्वर्गदूतों और दुष्टात्मिक शक्तियों पर भी नियंत्रण रखता है, जो मानव मामलों को प्रभावित करने का प्रयास करती हैं।

हम नहीं जानते कि प्रार्थना कैसे कार्य करती है, परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि वह कार्य करती है। हम प्रार्थना करते हैं; परमेश्वर सुनता है। जिन परिस्थितियों के विषय में हम प्रार्थना कर रहे होते हैं, उनसे संबंधित सभी शक्तियों और कारकों को संतुलित करते हुए वह हमारी प्रार्थनाओं को उनका उचित महत्व देता है। कभी वह "हाँ" कहता है; कभी "नहीं"; और कभी "प्रतीक्षा करो" कहता है। हम निश्चिन्त रह सकते हैं कि वह अत्यन्त बुद्धिमान है और कभी कोई भूल नहीं कर सकता, अत्यन्त प्रेमी है और कभी कठोरता नहीं करता, और अत्यन्त सामर्थी है जो कभी पराजित नहीं होता।

(ग) निवेदन (2:1ग)

2:1 में "निवेदन" के लिए जिस शब्द का अनुवाद किया गया है, वह एन्ट्यूक्सिस है, जिसके बारे में द कम्पैनियन बाइबल कहती है कि इसका संबंध "परमेश्वर तक पहुँच को सुरक्षित रखना, प्रार्थना में बच्चों जैसे विश्वास को प्रमुखता देना" से है। [8] एन्ट्यूक्सिस नये नियम में केवल यहीं और 4:5 में आता है। यह किसी व्यक्ति के निकट जाकर उससे परिचित होकर बातचीत करने का विचार व्यक्त करता है, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु इम्माऊस के मार्ग पर अपने दो निराश शिष्यों से बात करने के लिए उनके पास गया था (लूका 24:13-15)। इस शब्द का आरंभ में अर्थ "मिलना" था; इसका अर्थ "बातचीत" और फिर "विनती" हो गया।

एन्ट्यूक्सिस बाद में एक राजा के पास जाने के लिए एक तकनीकी शब्द बन गया और अंततः मध्यस्थता करने के लिए परमेश्वर के पास आने का शब्द बन गया।

निवेदन का अर्थ है दूसरों की ओर से परमेश्वर की उपस्थिति में आना। मध्यस्थता का एक उत्तम उदाहरण मूसा की प्रार्थना है, जो इस्राएलियों द्वारा सोने के बछड़े को बनाकर उसकी उपासना करके घोर पाप करने के बाद की गई थी। मूसा ने पुकारा, “हाय, हाय, उन लोगों ने सोने का देवता बनवाकर बड़ा ही पाप किया है।” “तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर—नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे” (निर्गमन 32:31-32)।

यह परमेश्वर की सन्तानों का विशेषाधिकार है कि वे अपने स्वर्गीय पिता के समीप आएँ और दूसरों के विषय में उससे पूरे अपनेपन के साथ बातचीत करें। नये नियम में हम महान मध्यस्थ को उसके लोगों के महान महायाजक के रूप में कार्य करते हुए देखते हैं, जो अपने शिष्यों के लिए निवेदनों में अपना हृदय उँडेल देता है (यूहन्ना 17)।

(घ) धन्यवाद (2:1घ)

पद 2:1 में “धन्यवाद” के लिए प्रयुक्त शब्द युकारिस्टिया है, जो कृतज्ञता प्रकट करने के भाव को व्यक्त करता है। दुःखद सत्य यह है कि हम परमेश्वर के पास अपनी किसी आवश्यकता के लिए, या अपने किसी प्रियजन की आवश्यकता के लिए माँगने में तो अधिक तत्पर रहते हैं, परन्तु उसकी भलाई और अनुग्रह द्वारा हम पर इतनी उदारता से बरसाए गए असीम लाभों के लिए धन्यवाद देने लौटने में उतने तत्पर नहीं होते।

(2) प्रार्थना के विषय (2:1ड-2ख)

(क) सामान्य लोग (2:1ड)

पौलुस ने प्रार्थना के इन सभी प्रकारों को समेटते हुए कहा कि हमें उन्हें “सब मनुष्यों” के लिए करना चाहिए। इस भीड़-भरी धरती पर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें परमेश्वर की व्यक्तिगत रुचि न हो। वह चाहता है कि हम अपने संकीर्ण क्षितिजों को विस्तृत करें, अपनी दृष्टि के दायरे को बढ़ाएं, अपनी चिंता के क्षेत्र को फैलाएँ, और किसी के लिए भी, कहीं भी, किसी भी समय प्रार्थना करने के लिए तैयार रहें।

मेरी पहली पत्नी, जीन, एक अथक प्रार्थना योद्धा थीं। मसीही विद्यालय और संगठन, मिशनरी और मिशन बोर्ड, कलीसियाएँ, विभिन्न योग्य उद्देश्यों का समर्थन करने वाले समूह, परिवार, मित्र, और यहाँ तक कि अजनबी लोग भी उसे अपनी प्रार्थना-निवेदन भेजते थे। वह निश्चय ही दर्जनों मेलिंग सूचियों में शामिल रही होंगी। हर दिन डाकिया उसके लिए और अधिक पत्र लाता था। उसके पास एक बड़ा तीन-रिंग वाला नोटबुक था, जिसमें वह इन सभी स्मरण-पत्रों को सँभालकर रखती थी, और धैर्यपूर्वक एक-एक करके उनके लिए प्रार्थना करती थी। वह हर नाम पर रुकती, हर निवेदन पर विचार करती, और एक समझदारीपूर्ण प्रार्थना करने के लिए समय निकालती थी।

इस प्रकार के निवेदनों के उत्तर में सबसे कठिन बात यह होती है कि हम “अल्फ़ोंसो, जो बपतिस्मा लेने का साहस करने के कारण सताव का सामना कर रहा है,” या “उम्बोपा, जो एक मूर्तिपूजक से विवाह करने वाला है,” जैसे लोगों के लिए प्रार्थना करें। हमारे लिए अल्फ़ोंसो और उम्बोपा केवल कुछ नाम भर होते हैं,

जिनमें स्थानीय रंग की हल्की-सी झलक होती है। हम उन लोगों में सच्ची रुचि कैसे लें जो हमारे लिए लगभग पूरी तरह अज्ञात हैं, जो बहुत दूर रहते हैं, जिनके चेहरे हमने कभी नहीं देखे, और जिनके व्यक्तित्व हमारे लिए खाली हैं? इसके लिए कल्पना और समय दोनों की आवश्यकता होती है।

मानचित्र और चित्र अपरिचित नामों को देह और चेहरा, परिवेश और रंग प्रदान कर सकते हैं। और यह याद रखना भी सहायक होता है कि परमेश्वर हर जीवन और हर परिस्थिति के प्रत्येक विवरण को जानता है। हमारी ओर से कहा गया एक शब्द भी उसके लिए बहुत कुछ कह देता है। इसलिए जीन तब तक प्रार्थना करती रही, जब तक कि ऑपरेशन न हो सकने वाले कैंसर की विनाशकारी पीड़ा के कारण यह उसके लिए असहनीय न हो गया। मुझे वह दिन याद है जब प्रार्थना-निवेदनों के एक नए ढेर का सामना करते हुए उसने अंततः हार मान ली। उसने अपनी भारी, बड़े आकार की तीन-रिंग नोटबुक नीचे रख दी और कहा, “हे प्रभु, वे वहाँ हैं। अब मैं और नहीं कर सकती। अब आपको ही उनके लिए स्वयं प्रार्थना करनी होगी।”

(ख) सरकार में लोग (2:2क-ख)

i. उच्च अधिकार रखने वाले (2:2ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को “राजाओं के लिए”—दूसरे शब्दों में, नीरो के लिए प्रार्थना करने का भी आह्वान किया।

शक्तिशाली पहले ही पतन का शिकार हो चुके थे। 44 ई.पू. में जूलियस कैसर की हत्या कर दी गई थी। 31 ई.पू. में एक्टियम की लड़ाई में एंटनी को पराजित करने के बाद, ऑक्टवियन 27 ई.पू. में पहला रोमी सम्राट बना, और बहुचर्चित पैक्स रोमाना (दो सौ वर्षों की शांति) का आरंभ हुआ। परंतु शीघ्र ही राजनीतिक सड़न फैलने लगी, जब टाइबेरियस, कैलीगुला, क्लॉडियस और नीरो ने ऑक्टवियन के बाद सत्ता संभाली। इन लोगों ने बार-बार इस तथ्य को स्पष्ट किया कि निरंकुश सत्ता पूर्ण रूप से भ्रष्ट कर देती है। नीरो का नाम आतंक और अत्याचार का पर्याय बन गया था। जब पौलुस ने तीमुथियुस को यह पत्री लिखी, तब तक उसके शासन में हज़ारों मसीहियों की भयानक मृत्यु हो चुकी थी। फिर भी, पौलुस ने मानो यह कहते हुए, कहा, “उसके लिए प्रार्थना करो। वह राजा है।”

प्रेरित ने अपनी पहली रोमी कैद के दौरान, अपने इफिसुस के मित्रों को प्रार्थना के लिए एक निवेदन भेजा था: “हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो, और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस के साथ सुसमाचार का भेद बता सकूँ, जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूँ; और यह भी कि मैं उसके विषय में जैसा मुझे चाहिये साहस से बोलूँ” (इफिसियों 6:18-20)। अब, कुछ समय के लिये फिर से स्वतंत्र होकर, पौलुस ने तीमुथियुस को पत्र लिखा, जो उन्हीं लोगों के बीच सेवा कर रहा था। इस बार, “मेरे लिये प्रार्थना करो” कहने के बजाय, पौलुस ने मानो यह कहा, “नीरो के लिये प्रार्थना करो।” यद्यपि सम्राट के पास साम्राज्यवादी रोम की सारी शक्ति उसके अधीन थी, फिर भी इन दोनों में पौलुस ही अधिक सामर्थी था। क्योंकि जैसा कि प्रेरित पहले ही इफिसुस के विश्वासियों को स्मरण करा चुका था, परमेश्वर की संतान—बाहरी परिस्थितियाँ चाहे कुछ भी दिखाई दें—“आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ” (इफि. 3:16)।

पौलुस की पहली रोमी कैद के दौरान उसका मुकदमा किसी न्यायालय के न्यायाधीश के सामने सुना गया होगा, परन्तु यह भी संभव है—और बल्कि अधिक संभावित है—कि प्रेरित स्वयं नीरो के सामने उपस्थित हुआ हो और उसने सीधे सम्राट के सामने अपनी गवाही दी हो। यदि ऐसा हुआ, तो वह दृश्य कितना अद्भुत रहा होगा!

वहाँ सम्राट राजसी वस्त्रों में सुसज्जित, विलासिता, ठाठ-बाट और शक्ति से घिरा हुआ बैठा था। वहाँ पहरेदार और सीनेटर खड़े थे। उसके चारों ओर कई चाटुकार खड़े थे जो उस व्यक्ति की खुशामद करते थे जिसने अत्यंत क्रूरता से अनगिनत लोगों की हत्या की थी। और वहीं दूसरी ओर अकेला, साधारण घरेलू वस्त्रों में लिपटा हुआ पौलुस खड़ा था।

हम नीरो की कल्पना कर सकते हैं, जब वह उपेक्षा भरी दृष्टि से उस जर्जर से दिखने वाले यहूदी को घूर रहा था—जिसके शारीरिक व्यक्तित्व को कुछ लोग “निर्बल” कहते थे और जिसके विषय में वे कहते थे कि वह वक्तव्य में “अनाड़ी” है (2 कुरि. 10:10)। नीरो, अपने पहले से किए गए अपराधों के कारण दोषी विवेक से सताया हुआ, किसी भी प्रकार की दुष्टता करने में सक्षम था। फिर भी पौलुस ने निर्भीक होकर उसे मसीह के विषय में बताया—उसके क्रूस के विषय में, उसके पुनरुत्थान की सामर्थ्य के विषय में, और उस नए जीवन के विषय में जो सबके लिए उपलब्ध है।

परन्तु जिस समय पौलुस ने तीमुथियुस को यह पत्री लिखी, उस समय वह अब हिरासत में नहीं था। फिर भी वह यह भली-भाँति जानता था कि किसी न किसी दिन नीरो—जिसकी विलासिता अब बेलगाम दुराचार में बदलती जा रही थी—उसे मसीहियत फैलाने के “अपराध” के लिए जवाब देने को बुलाएगा। पौलुस का नाम निश्चय ही नीरो की हिटलिस्ट में ऊपर रहा होगा। आखिरकार, वह उन सब ‘घृणित’ समझे जाने वाले मसीहियों में सबसे निर्भीक, सबसे प्रभावशाली, और सबसे मुखर था। पौलुस की यह स्वतंत्रता की अवधि शीघ्र ही समाप्त होने वाली थी। अगली बार जब उसे गिरफ्तार किया जाता, तो उसके साथ एक रोमी नागरिक के समान नहीं, बल्कि एक अपराधी के समान व्यवहार किया जाने वाला था। वह जानता था कि इसका क्या अर्थ होगा—उसे कठोर कारावास और निश्चित मृत्यु का सामना करना पड़ेगा। वह उधार के समय पर जी रहा था। फिर भी पौलुस ने कहा - “नीरो के लिए प्रार्थना करो।”

इसलिए हमें उन लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिनके पास सर्वोच्च अधिकार है। सत्ता में बैठे उन लोगों द्वारा लिए गए फैसले भले ही हमें पसंद नहीं आ सकते, लेकिन हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो उन्हें लेते हैं। जो लोग हम पर शासन करते हैं, उनके बारे में हमारी शिकायतें और आलोचनाएँ स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन पर प्रकट होनी चाहिए।

ii. ऊँचे पद वालों के लिए (2:2ख)

हमें “सब ऊँचे पदवाले” के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जब पौलुस ने यह उपदेश दिया, तब उसके मन में वे सब लोग थे जो किसी भी प्रकार का अधिकार रखते थे—रोम में सत्ता संभालने वाले सीनेटरों से लेकर प्रांतीय सड़कों पर दिखाई देने वाले सैनिकों तक; रोम के सीनेटरों से लेकर प्रांतों में कार्य करने वाले स्थानीय न्यायधीशों तक, सभी लोग।

कलीसिया पहले से ही सताव से परिचित थी। यरूशलेम की कलीसिया को हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम द्वारा सताया गया था। उसने याकूब की हत्या कर दी और फिर पतरस की हत्या करने का भी प्रयास किया। पतरस, जब कारागृह में बँधा हुआ और पहरों में रखा गया था, प्रार्थना का एक अत्यंत तात्कालिक विषय बन गया। लूका लिखता है, “इसलिये कलीसिया की ओर से उसके लिये परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना की जाती रही” (प्रेरितों के काम 12:5)। लेकिन खोए हुए हेरोदेस के लिए किसने प्रार्थना की थी?

पौलुस कई बार राजनीतिक और धार्मिक अधिकारियों के हाथों में रहा था। वह एक अपराधी महायाजक, एक भ्रष्ट फेलिक्स, एक समझौतावादी फेस्तुस और एक लापरवाह हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय के सामने खड़ा हुआ था। पौलुस उनकी प्रार्थना की ज़रूरत को समझता था। वह स्वयं भी कभी उनमें से एक था, कलीसिया को सतानेवाला। तरसुस के शाऊल के रूप में, उसने कलीसिया को सताने के लिए अपने अधिकार का प्रयोग किया था (प्रेरितों के काम 22:5)। उसके लिए किसने प्रार्थना की थी? शायद अन्दुनीकुस और यूनियास ने ऐसा किया था (रोमियों 16:7)।

(3) प्रार्थना के लक्ष्य (2:2ग-3)

(क) मानवीय आयाम (2:2ग-ड)

i. एक स्थिर वातावरण (2:2ग)

पौलुस ने कहा कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए “कि हम विश्राम और चैन के साथ जीवन बिताएँ।” यहाँ “विश्राम” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ “शांत” या “स्थिर” है, और यह उस शांति की ओर संकेत करता है जो बाहर से आती है—अर्थात् बाहरी उपद्रव और सताव के अभाव में मिलने वाली शांति। हम आसानी से ही विश्वास कर सकते हैं कि हर स्थान पर मसीही इस प्रकार के विश्राम के लिए परमेश्वर के सिंहासन के सामने अत्यन्त लगन से विनती कर रहे थे, विशेषकर उस समय जब नीरो अपने आक्रोश में उत्पात मचा रहा था। कलीसिया के लम्बे इतिहास में अनेक बार मसीहियों ने ऐसी शांति के लिए प्रार्थना की है। और जब यह हमें प्राप्त होती है, तो हम प्रायः इसे स्वाभाविक मान लेते हैं।

“शांतिपूर्ण” शब्द का अनुवाद आंतरिक शांति से उत्पन्न होने वाली शांति को दर्शाता है। जब तूफानी लहरें उठती हैं, और जब दुनिया युद्ध और विपत्ति से त्रस्त हो जाती है, जब अत्याचारी सत्ता में आ जाते हैं और लोग सताए जाते हैं, तब भी शांति परमेश्वर की संतान के लिए आत्मा का एक फल है।

प्रभु यीशु आँधी के बीच भी सो सकता था (मत्ती 8:24) और उठती हुई लहरों पर विजय के साथ चल सकता था (मत्ती 14:25)। पतरस के विपरीत, वह कभी भी परिस्थितियों के अधीन नहीं रहा। पतरस ने स्वयं पानी पर चलने का प्रयास किया। प्रभु के आदेश पर उसने नाव से उतरकर अपने पास की लहर पर पाँव रखा। उसने विश्वास के एक क्रांतिकारी नए जीवन में थोड़ी सी प्रगति की। परन्तु फिर उसने अपनी आँखें प्रभु से हटा लीं, और गरजती हुई हवा तथा उठते हुए समुद्र से अभिभूत होकर भय के मारे चिल्ला उठा। पतरस को अभी यह सीखना था कि जो सब बातें उसके सिर के ऊपर थीं और जो उसे डुबो देने की धमकी दे रही थीं, वे सब पहले से ही स्वामी के चरणों के नीचे थीं।

ii. एक निरंतर प्रोत्साहन (2:2घ-ड)

क. भक्ति के लिए (2:2घ)

हम बाहर और भीतर शांति के लिए प्रार्थना करते हैं "इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ।" यहाँ "भक्ति" का अनुवाद यूसेबिया है, जो एक ऐसे शब्द से आया है जिसका अर्थ है, "भक्त होना, परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला दृष्टिकोण अपनाना।" यूसेबिया शब्द पौलुस के पास्टरीय पत्रियों में अक्सर आता है, लेकिन उसके पहले की पत्रियों में यह नहीं पाया जाता।

नीरो के सताव के समय लिखे गए इन पत्रियों में भक्ति एक विषय के रूप में क्यों उभर कर आती है? शायद इसका कारण यह है कि भक्ति का एक लक्षण अपने शत्रुओं के प्रति प्रेम रखना है (मत्ती 5:43-48)। एक भक्त मसीही के अलावा कौन नीरो से प्रेम कर सकता है? हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि पौलुस अपने शत्रुओं से प्रेम करता था और उनके लिए प्रार्थना करता था। प्रभु यीशु ने पिलातुस से उतना ही प्रेम किया जितना उसने पतरस से किया था। उसने यहूदा से उतना ही प्रेम रखा जितना उसने यूहन्ना से रखा था।

ख. भलाई के लिए (2:2ङ)

2:2 में जिस शब्द "गंभीरता" का प्रयोग हुआ है उसका तात्पर्य प्रतिष्ठा या गरिमा से है और यह शालीनता तथा मर्यादा का भाव प्रकट करता है। विश्वासियों को शालीन वस्त्र क्यों नहीं धारण करना चाहिए? हमें जीवित परमेश्वर के पुत्रों और पुत्रियों—अर्थात् ब्रह्मांड की कुलीनता—के समान आचरण क्यों नहीं रखना चाहिए? हमें बनावटी ठाठ-बाट ओढ़ने की आवश्यकता नहीं है, पर हमें यीशु के समान अवश्य होना चाहिए। वह सदा मनुष्यों के बीच किसी शाही व्यक्ति के रूप में चला-फिरा। हम उसकी कल्पना अशिष्ट, असभ्य या सस्ते रूप में नहीं कर सकते। न ही हम उन्हें किसी विवाद को जीतने की कोशिश करते या तुच्छ झगड़े में उतरते हुए सोच सकते हैं। वह सदैव—हर समय, हर स्थान पर, हर प्रकार की संगति में—शब्द के सर्वोत्तम अर्थ में एक पूर्ण सज्जन था।

(ख) उच्च आयाम (2:3)

जिन उद्देश्यों के विषय में हम चर्चा कर रहे हैं, उनकी ओर की गई हमारी प्रार्थनाओं को परमेश्वर अत्यन्त प्रसन्नता से देखता है, क्योंकि “यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है।”

फिर से हम यहाँ "उद्धारकर्ता परमेश्वर" (2:3; 1:1) वाक्यांश को पढ़ते हैं, जिसका अनुवाद "हमारा उद्धारकर्ता, परमेश्वर" भी किया जा सकता है। “उद्धारकर्ता” के रूप में अनूदित शब्द का दावा नीरो ने भी किया था, जो अपने आप को संसार का उद्धारकर्ता और ईश्वर कहता था। यह एक दयनीय दावा था। हमारा उद्धारकर्ता स्वयं परमेश्वर है, इसलिए हमें पूरा भरोसा हो सकता है कि हमारी प्रार्थनाएँ सुनी जाती हैं और उन पर ध्यान दिया जाता है, और वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घटनाओं की दिशा को प्रभावित करती हैं। एक गीत की पंक्ति प्रार्थना की सामर्थ्य और गरिमा को अत्यंत सुंदर ढंग से व्यक्त करती है:

तू एक राजा के पास आ रहा है;

अपने साथ बड़ी-बड़ी प्रार्थनाएँ लेकर आ;

क्योंकि उसकी कृपा और शक्ति ऐसी है,

कोई भी कभी बहुत अधिक नहीं माँग सकता।[9]

ख. लोगों को परमेश्वर के बारे में बताना (2:4-8)

(1) परमेश्वर और उसकी करूणा (2:4)

पौलुस ने लिखा, परमेश्वर "चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें।" "सब मनुष्यों" में इस संसार के नबूकदनेस्सर, नीरो और नेपोलियन भी शामिल थे। अंग्रेजी के 'द कम्पैनियन बाइबल' के अनुसार, यहाँ "चाहता है" शब्द का अर्थ "इच्छा या अभिलाषा करना" है। यही भावनात्मक तत्व है जो आगे होने वाली कार्रवाई की ओर ले जाता है। इसलिए यह बौलोमई (सोची-समझी, विचारपूर्वक निश्चय करने) से अधिक बलवान है, क्योंकि स्वाभाविक प्रेरणा तर्कपूर्ण संकल्प से अधिक शक्तिशाली होती है।[10] इस प्रकार यह परमेश्वर की कृपापूर्ण इच्छा—उसकी अभिलाषा और उसकी चाहत है - कि सब मनुष्यों का उद्धार हो।

हालाँकि, कुछ लोग उसके "ऐसे बड़े उद्धार" (इब्रानियों 2:3) को अपनाने को तैयार नहीं हैं; इस प्रकार, वे स्वयं को आशीष से दूर कर लेते हैं। कभी-कभी उनके पूर्वाग्रह, उनके विकृत मन के भ्रष्ट विचार, उन्हें उद्धार से दूर रखते हैं। कभी-कभी इसका प्रमुख कारण उनका पाप के प्रति गहरा प्रेम या उनकी विद्रोही इच्छाएँ होती हैं।

परमेश्वर चाहता है कि सभी मनुष्य "सत्य को भली भाँति पहचान लें" इसी उद्देश्य से, उसने हमें अपना वचन दिया है और अपने पवित्र आत्मा को संसार में भेजा है।

क्योंकि परमेश्वर ने मानव जाति को चुनाव करने की शक्ति प्रदान की है और हमें स्वतंत्र नैतिक प्राणी बनाया है, इसलिए वह किसी मनुष्य की इच्छा का उल्लंघन नहीं करता। न ही वह शैतान को ऐसा करने की अनुमति देता है। शैतान बहका सकता है, पर बलपूर्वक धकेल नहीं सकता, जैसा कि हम हव्वा की परीक्षा में देखते हैं (उत्प. 3)। इसी प्रकार परमेश्वर आकर्षित करता है, पर वह विवश नहीं करता। पवित्र आत्मा प्रकाश देता है, जीवन देता है और विनती करता है, पर वह ज़बरदस्ती नहीं करता। तौभी, परमेश्वर का महान हृदय खोए हुए लोगों के लिए तड़पता है, जैसे सृष्टि के प्रारंभ में परमेश्वर का आत्मा अथाह गहराई के अंधकार पर मँडराया करता था (उत्प. 1:2)।

(2) परमेश्वर और उसका मध्यस्थ (2:5-6)

(क) उसकी पूर्ण विशिष्टता (2:5)

"क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।" "बिचवई" शब्द का अर्थ एक ऐसे "मध्यस्थ" है जो किसी दो व्यक्तियों के बीच खड़ा रहता है। पुराने समय के कुलपिता अय्यूब ने अपने कष्टों के बीच ऐसे ही एक बिचवई की इच्छा की थी। उसने पुकार के कहा, "क्योंकि वह [परमेश्वर] मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उससे वादविवाद कर सकूँ, और हम दोनों एक दूसरे से मुकद्दमा लड़ सकें। हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे" (अय्यूब 9:32-33)।

जिस बिचवई की प्रतीक्षा की गई थी, वह अब आ चुका है। वह सब पर परमेश्वर है, सदा के लिए धन्य, स्वयंसिद्ध, और पिता तथा पवित्र आत्मा के साथ सह-अनादि और उनके समान ही है। परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्तित्व मनुष्य बना और इस ब्रह्मांड में इस पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच निवास किया। वह वास्तव में मनुष्य था और वास्तव में परमेश्वर भी, और पाप से रहित था। उसका गर्भाधान पवित्र आत्मा से हुआ और वह कुँवारी मरियम से जन्मा। एक वास्तविक मनुष्य के रूप में वह बड़ा हुआ, विद्यालय गया, एक मानवीय घर में रहा, उसके भाई-बहन थे, गाँव के बड़ई के रूप में काम किया, और भलाई करते हुए फिरता रहा। उसने भूख, प्यास और थकान का अनुभव किया। उसने आनंद और शोक, दुःख और पीड़ा का अनुभव किया। उसने प्रार्थना की। उसने दुःख उठाया, लहू बहाया और मृत्यु को स्वीकार किया। वह मनुष्य था, परन्तु कभी भी परमेश्वरत्व के स्तर से नीचे नहीं आया। परमेश्वर के रूप में उसका मन, हृदय और इच्छा पिता के मन, हृदय और इच्छा के साथ पूर्णतः एक लय में थे। वह जानता था कि वह परमेश्वर है (लूका 2:48-50) और उसने स्पष्ट रूप से स्वयं को परमेश्वर घोषित किया (यूहन्ना 8:57-59)।

प्रभु यीशु ने नतनएल से कहा कि वही पृथ्वी और स्वर्ग के बीच की सीढ़ी है, मनुष्य और परमेश्वर के बीच की कड़ी है (यूहन्ना 1:47-51)। वह उत्पत्ति 28:12 में वर्णित सीढ़ी की ओर संकेत कर रहा था। याकूब ने स्वप्न में एक सीढ़ी देखी थी, जिसका पाँव पृथ्वी पर टिका हुआ था और जिसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुँचता था, और उसने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को उस उज्ज्वल सीढ़ी पर ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते हुए देखा था।

प्रभु यीशु परमेश्वर के विषय में सब कुछ जानता है, क्योंकि वह स्वयं परमेश्वर हैं; और मनुष्य के विषय में भी सब कुछ जानता है, क्योंकि वह स्वयं मनुष्य हैं। वह स्वर्ग में परमेश्वर और पृथ्वी पर मनुष्य—दोनों पर अपना हाथ रख सकता है। महान खाई अब समतल कर दी गई है। मसीह हमारा महान महायाजक है (इब्रानियों 4:14) और पिता के साथ हमारा सहायक है (1 यूहन्ना 2:1)।

यीशु ही परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ हैं। रोमन कलीसिया मरियम को एक निष्कलंक कुँवारी, स्वर्ग की रानी, मसीह के साथ सह-उद्धारक और हमारा मध्यस्थ ठहराना चाहती है। भक्त कैथोलिक अपनी कलीसियाओं में उसकी मूर्तियाँ रखते हैं, उससे प्रार्थना करते हैं और उसके सामने मोमबत्तियाँ जलाते हैं। वे उसे अपने बीच का माध्यम मानते हैं—वह जो पापी और क्रोधित मसीह के बीच मध्यस्थता करती है। इस प्रकार वे उस उद्धार में, जिसे मसीह ने अपने अति मूल्यवान लहू से खरीदा, मरियम को मसीह की सहभागी बना देते हैं।

परन्तु मरियम के मध्यस्थ होने के लिए आवश्यक होता कि वह एक निष्पाप स्त्री होती, न कि ऐसी स्त्री जिसने स्वयं अपने उद्धारकर्ता की आवश्यकता को स्वीकार किया (लूका 1:46-47)। इसके अतिरिक्त, उसे परमेश्वर भी होना पड़ता—जो सैकड़ों भाषाओं में एक साथ अर्पित की जा रही अनगिनत प्रार्थनाओं को सुन सके और उन पर ध्यान दे सके। उसे भाषाओं के उस कोलाहल को समझने, संसार भर से उमड़ती हज़ारों विनितियों को ग्रहण करने में सक्षम होना चाहिए। उसे प्रत्येक प्रार्थना के गुण-दोष का मूल्यांकन करना, हर व्यक्ति की परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान रखना, और बिना किसी भूल के हर निवेदन को स्वीकार या अस्वीकार करना पड़ता। जो लोग मरियम से प्रार्थना करते हैं, वे यह मानते हैं कि उसमें ईश्वरत्व के ये सभी गुण मौजूद हैं। इस प्रकार वे उसे देवी बना देते हैं। यद्यपि वह अत्यंत भली और धन्य है, फिर भी उसमें ईश्वरत्व के कोई भी गुण नहीं हैं।

मरियम की पूजा उपजाऊ धार्मिक कल्पनाओं की उपज है। एक ठोस पद—1 तीमुथियुस 2:5—मानवीय परंपराओं के किसी भी गढ़ को ढा देता है: परमेश्वर ने कहा, "एक ही बिचवई है..." — न स्वर्गदूत, न कोई घोषित रोमी संत, न कुँवारी मरियम। मध्यस्थ केवल एक ही है, "अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।"

(ख) उसका बहुतायत का प्रायश्चित (2:6)

मसीह यीशु ने "जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया।" यहाँ "छुटकारे के दाम" के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द 'एंटील्यूट्रॉन' है। 'लूट्रॉन' एक गुलाम के छुटकारे के मूल्य के लिए सामान्य शब्द है। यह नये नियम में केवल मत्ती 20:28 और मरकुस 10:45 में आता है, जो संयोगवश, मरकुस के सुसमाचार का मुख्य पद है। 1 तीमुथियुस 2:6 में, पौलुस ने 'एंटी' उपसर्ग जोड़ा, जो प्रतिस्थापन को दर्शाता है और जिसका अर्थ है "के स्थान पर"।

कलवरी पर, परमेश्वर के न्याय के सामने प्रकट होकर, प्रभु यीशु ने अपने आप को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दे दिया। इस प्रकार उसने मूल्य देकर छुटकारे का मार्ग प्रदान किया, जिसके द्वारा जो लोग उन्हें अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, वे पाप के दण्ड से छुटकारा प्राप्त करते हैं। यह प्रावधान सार्वभौमिक था—"सब के लिए।" किन्तु यह बलिदान वास्तव में केवल उन्हीं के जीवन में प्रभावी होता है जो मसीह यीशु को ग्रहण करते हैं।

इस अद्भुत छुड़ौती की "गवाही ठीक समय पर दी गई।" 2:6 में प्रयुक्त अभिव्यक्ति "ठीक समय पर" का अनुवाद यूनानी शब्द "कैरोस इडियोस" का अनुवाद है। कैरोस शब्द एक निश्चित, निर्धारित समय काल को दर्शाता है। पूरे इतिहास में, परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को निश्चित समयों के दौरान पूरा किया है। जब इतिहास में महान मोड़ आते हैं, तब वे उद्देश्य, जो धीरे-धीरे परिपक्व होते रहे होते हैं, पूर्ण रूप से प्रभावी होकर फलवन्त होते हैं। तब निर्णायक घटनाएँ होती हैं। एक युग समाप्त होता है और दूसरा आरम्भ होता है। ऐसे ही एक युग के मोड़ पर, परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बन गया। उसके बाद इस पृथ्वी पर जीवन कभी वैसा नहीं रहा। ब्रह्माण्डीय और अनन्त महत्व की एक घटना घट चुकी थी।

"इडियोस" शब्द का अर्थ है "निजी, अद्वितीय, अपनी किस्म का केवल एक।" इसलिए कैरोस इडियोस एक ऐसे विशेष और अद्वितीय समयकाल की ओर संकेत करता है, जब चुकाए गए छुटकारे के सुसमाचार की घोषणा की जानी थी। उस समय की पूर्व-झलक पुराने नियम में व्यवस्था के प्रतिरूपों और छाया के द्वारा तथा नबियों के प्रचार के माध्यम से दी गई थी। उसकी घोषणा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और स्वयं यीशु ने किया। उसका वास्तविक आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उतरने के साथ हुआ, और वह समय के अन्त तक अपनी सम्पूर्ण अवधि पूरी करता रहेगा।

(3) परमेश्वर और उसका सन्देशवाहक (2:7-8)

(क) पौलुस की नियुक्ति (2:7)

i. उसकी नियुक्ति का उद्देश्य (2:7क)

"मैं इसी उद्देश्य से," पौलुस ने लिखा, "प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।" "ठहराया गया" शब्द का अर्थ है "नियुक्त करना", और "प्रचारक" शब्द का

अर्थ है “घोषित करना”। एक दूत या सन्देशवाहक को अपने शासक की ओर से राजाओं या सरकारी अधिकारियों तक आधिकारिक संदेश पहुँचाने और औपचारिक सार्वजनिक घोषणाएँ करने का अधिकार दिया गया था। उसे जो भी संदेश सौंपा गया था, उसे ठीक उसी तरह प्रस्तुत किया जाना था जैसे उसे दिया गया था। उस दूत को उसमें कुछ भी जोड़ना या घटाना नहीं था। पौलुस को एक सन्देशवाहक के रूप में नियुक्त किया गया था।

उसे प्रेरित होने के लिए भी नियुक्त किया गया था—अर्थात् पौलुस परमेश्वर द्वारा “भेजा हुआ” था। इस नियुक्ति के साथ उसे एक प्रेरित का अधिकार भी मिला—आवश्यक होने पर चमत्कार करने की सामर्थ्य, आवश्यकता पड़ने पर न्याय को लागू करने का अधिकार, और मसीह के विषय में प्रत्यक्ष ज्ञान के साथ बोलने की क्षमता, जिससे वह व्यक्तिगत रूप से मिला था।

ii. उसकी नियुक्ति की गारंटी (2:7ख)

पौलुस ने लिखा, “मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता।” ज़ाहिर है कि उसे परमेश्वर के चुने हुए संदेशवाहक और दूत के रूप में अपनी ईमानदारी की पुष्टि करने की ज़रूरत महसूस हुई। संभव है कि जिन लोगों ने कुरिन्थुस में उसके प्रेरित होने के अधिकार और विश्वसनीयता पर अत्यन्त कटु आक्रमण किए थे, वे अपनी वही आलोचनाएँ इफिसुस तक ले आए हों। निश्चय ही पौलुस को अपने आप को शपथ के अधीन रखने की आवश्यकता खेदजनक लगी होगी, फिर भी आवश्यकता पड़ने पर उसने ऐसा किया। वह भली-भाँति समझता था कि संदेशवाहक पर आक्रमण, वास्तव में संदेश पर आक्रमण होता है।

iii. उसकी नियुक्ति का दायरा (2:7ग)

पौलुस को “अन्यजातियों का उपदेशक” नियुक्त किया गया था। यहूदियों ने इसके लिए उसका तिरस्कार किया। बिना मन फिराए यहूदियों ने उसे अपनी आराधनालयों से खदेड़ दिया और नगर-नगर उसके विरुद्ध विरोध भड़काया। विश्वास करने वाले यहूदी भी उससे एक निश्चित दूरी बनाए रखकर देखते थे; वे उस कार्य को करने देने में संतुष्ट थे जिसे वे स्वयं तिरस्कारपूर्ण समझते थे, और वह जो छुड़ाने वाले सत्य का प्रचार करता था, उन्हें वे बड़ी शंका भरी दृष्टि से देखते थे। परन्तु अब परमेश्वर का समय आ पहुँचा था। एक नया युग आरम्भ हो चुका था। परमेश्वर को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो सारे संसार को यह बताए कि शैतान के गुलामों को मूल्य देकर छुड़ा लिया गया है, और इसके लिए उसने पौलुस को अपना संदेशवाहक चुना।

पौलुस ने अन्यजातियों को “विश्वास और सत्य में” शिक्षा दी। उसने सुसमाचार पर अटल विश्वास रखते हुए प्रचार किया। उसने लोगों को सुसमाचार का सत्य विवरण दिया—उस सुसमाचार का, जिस पर वह विश्वास करता था, क्योंकि उसने महान उद्धारकर्ता के हाथों की हथेलियों में कीलों के निशान स्वयं देखे थे।

(ख) पौलुस का निवेदन (2:8)

2:1 में अपने आरंभिक बिंदु पर वापस आते हुए, पौलुस ने प्रार्थना के वातावरण और प्रार्थना के भाव के लिए आग्रह किया: “इसलिये मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें” (2:8)। जैसे-जैसे सताव अपने चरम पर पहुँच रहा था, बहुत-से लोग उस दुष्ट

सम्राट और उसके कायर दरबारियों के प्रति भीतर ही भीतर क्रोध से भरे हुए होंगे। बहुत-से लोग, यहाँ तक कि मसीही भी, संदेह के आगे झुक रहे होंगे। हम उन्हें यह पूछते हुए सुन सकते हैं, “परमेश्वर कैसे सर्वशक्तिमान और सर्व-प्रेमी हो सकता है, जबकि वह नीरो जैसे दानवों को निर्दोष लोगों को यातनाएँ देकर मृत्यु तक पहुँचाने की अनुमति देता है?”

वह कैसे चुप रह सकता है जब नीरो मसीहियों और कलीसिया के बारे में घृणित और क्रूर झूठ फैला रहा है? यदि परमेश्वर सर्व-प्रेमी है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं हो सकता; यदि वह दोनों होता, तो वह मसीहियों के सताव को अवश्य रोक देता। यदि वह सर्वशक्तिमान है, तो वह सर्व-प्रेमी नहीं हो सकता क्योंकि वह अपने सिंहासन पर निष्क्रिय होकर बैठा है और अपने लोगों और अनगिनत अन्य लोगों के अवर्णनीय कष्टों को देख रहा है।" वही अज्ञेयवादी तर्क आज भी सामान्य रूप से प्रचलित हैं।

क्रोधित और संदेह करने वालों के लिए पौलुस का यही उत्तर था, “हर जगह प्रार्थना किया करो।” हर कोई प्रार्थना कर सकता था। उसकी अपनी कुछ सर्वोत्तम प्रार्थनाएँ बंदीगृह में कैद के दौरान ही की गई थीं (इफि. 1:15-23; 3:14-21)।

1 तीमुथियुस 2:8 में “पुरुष” शब्द का अनुवाद एक वयस्क पुरुष या पति के लिए किया गया है। यूनानी में, इसका एक निश्चित उपपद है और इसलिए इसका अनुवाद “पुरुष” होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, पुरुष को सार्वजनिक प्रार्थना में अगुवाई करनी चाहिए। यहाँ पौलुस मानो आगे आने वाली बातों के लिए, अर्थात् कलीसिया की सार्वजनिक आराधना में स्त्रियों के स्थान के विषय में होने वाली चर्चा के लिए मार्ग तैयार कर रहा था।

“पवित्र हाथों को उठाकर” के बारे में पौलुस के शब्द बताते हैं कि प्रारंभिक कलीसिया में लोगों के लिए प्रार्थना करते समय अपने हाथ ऊपर उठाना एक रीति थी, ठीक उसी तरह जैसे घुटने टेकना एक रीति थी (प्रेरितों के काम 20:36)। विनम्रता के ऐसे बाहरी प्रदर्शन संभवतः सांस्कृतिक रहे होंगे।

हालाँकि, “पवित्र हाथ” एक प्रतीकात्मक संदर्भ भी हो सकता है। भजन संहिता 24:3-4 कहता है कि जिसके हाथ निर्दोष और हृदय शुद्ध है, वही प्रभु के पर्वत पर चढ़ेगा और “उसके पवित्र स्थान में खड़ा होगा।” शुद्ध हाथ एक निष्कलंक बाहरी जीवन का प्रतीक हैं; शुद्ध हृदय एक शुद्ध आंतरिक जीवन का प्रतीक है। इसलिए पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर प्रार्थना करना एक शुद्ध जीवन की एक खुली, प्रतीकात्मक घोषणा हो सकती है।

कोई भी स्थिति क्यों न हो, पौलुस का बल हाथों की बजाय पवित्रता पर है। पवित्रता सफल प्रार्थना की एक शर्त है। सफल प्रार्थना उस व्यक्ति से आती है जिसका जीवन परमेश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करता है (भजन संहिता 66:18)।

2. कलीसिया में महिलाओं का स्थान (2:9-15)

लोग अक्सर पौलुस पर स्त्रियों के प्रति विरोधी होने का आरोप लगाते हैं। ऐसे आलोचक विधवाओं और कुँवारियों के विषय में उसके निर्देशों (1 कुरिं. 7) तथा कुरिन्थ की कलीसिया में स्त्रियों को चुप रहने के उसके आदेश (1 कुरिं. 14:34-35) का हवाला देते हैं। नारीवादी स्थानीय कलीसिया में स्त्रियों के स्थान के

विषय में उसके आगे के निर्देशों (1 तीमु. 2:9-15) पर भी आपत्ति जताते हैं। इन पदों का पुरुष-वर्चस्व से कोई संबंध नहीं है। नारीवादियों की लड़ाई पौलुस से नहीं, बल्कि परमेश्वर से है। ये निर्देश, जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए हैं, परमेश्वर के वचन का भाग हैं। पौलुस केवल एक शिक्षक था। सत्य परमेश्वर की ओर से आया था। परमेश्वर के आत्मा की प्रत्यक्ष और अचूक प्रेरणा के अधीन होकर पौलुस ने केवल वही लिखा, जो परमेश्वर चाहता था कि वह स्त्रियों के विषय में कहे।

जबकि वास्तव में, पौलुस कलीसिया में स्त्रियों के प्रति हार्दिक सम्मान रखता था। उदाहरण के लिए, उसने फीबे (रोमियों 16:1-2) और मरियम नामक एक अनजान स्त्री (रोमियों 16:6) की बहुत प्रशंसा की। उसने रूफुस की माँ (रोमियों 16:13) और तीमुथियुस की माँ और नानी (2 तीमुथियुस 1:5) की भी बहुत सराहनीय बातें लिखी। उसकी एक प्रिय मित्र फिलिप्पी की रहने वाली लुदिया थी (प्रेरितों 16:14-15)। केवल अज्ञानी लोग ही पौलुस पर स्त्री-विरोधी होने का आरोप लगा सकते हैं। फिर भी, उसने कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका के बारे में कुछ ठोस बातें कहीं।

क. उन्हें संयम के साथ रहना चाहिए (2:9-10)

(1) उन्हें किन बातों से बचना चाहिए (2:9)

(क) उनके पहनावे के विषय में (2:9क)

पौलुस ने सिखाया कि स्त्रियों को अशालीनता से बचना चाहिए और “संकोच और संयम के सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे।” यहाँ “सँवारे” के लिए प्रयुक्त किए गए शब्द का मूल अर्थ “व्यवस्थित करना, क्रम में रखना” है। अंग्रेज़ी शब्द कॉस्मेटिक इसी से निकला है। इससे संबंधित संज्ञा का अर्थ है “वस्तुओं की एक सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था,” और आगे चलकर इसका अर्थ संसार और ब्रह्मांड के उस दैवीय क्रम से जुड़ गया जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया है। “संकोच” या “संयम” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “व्यवस्थित” या “अच्छी तरह से सजा हुआ।” “वस्त्रों” के लिए प्रयुक्त शब्द उस लहराते हुए बाहरी परिधान की ओर संकेत करता है जिसे राजा और कुलीन वर्ग के लोग पहनते थे। संक्षेप में, पौलुस यह विचार प्रकट करता है कि एक स्त्री को मसीही विश्वास के अनुरूप शालीनता से वस्त्र पहनने चाहिए। न तो अशालीनता के लिए कोई स्थान है और न ही दिखावटी प्रदर्शन के लिए। पौलुस बातों की गहराई तक बहुत ही बुद्धिमानी के साथ पहुँचता था; उसने केवल सिद्धांत को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया।

(ख) उनके आचरण के संबंध में (2:9ख)

पौलुस ने यह भी सिखाया कि स्त्रियों को ऐसे व्यवहार से बचना चाहिए जो “संकोच और संयम” के अनुरूप न हो। “संकोच” शब्द का अनुवाद “विनम्रता” के रूप में किया गया है। आजकल यह “संकोच” शब्द का अर्थ “भोलेपन” से जुड़ गया है, जो निश्चित रूप से पौलुस के मन में नहीं था। यह शब्द उस प्रकार के दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है जो किसी व्यक्ति को अनुचित व्यवहार करने से रोकता है।

संयम शब्द का अर्थ है “आत्म-नियंत्रण, अपनी लालसाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखना।” यह उस आंतरिक अनुशासन को संदर्भित करता है जो व्यक्ति की स्वाभाविक लालसा को भड़कने से रोकने के लिए रूकावट पैदा करता है। पौलुस ने हाकिम फेस्तुस के अपमानजनक प्रकोप का उत्तर देते हुए इस शब्द का प्रयोग

किया: "फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा, "हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।" परन्तु पौलुस ने कहा, "हे महामहिम् फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ" (प्रेरितों के काम 26:24-25)।

इन निर्देशों को देते समय पौलुस के मन में ऐसी स्त्रियों की कल्पना थी जो सादगी से वस्त्र पहनती हों, जिनका व्यवहार शालीन, संयमित और नियंत्रित हो। हम कल्पना कर सकते हैं कि प्रभु यीशु की माता मरियम भी ऐसी ही एक स्त्री थीं।

(ग) उनके बाहरी प्रदर्शन के संबंध में (2:9ग)

पौलुस ने सिखाया कि स्त्रियों को "बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों" के पहनने से भी बचना चाहिए। "बाल गूँथने" शब्द का तात्पर्य चोटियाँ बनाने से हैं और इसका अनुवाद "विशिष्ट तरीके की केश सज्जा" से भी किया जा सकता है। एक विश्वासी की देह पवित्र आत्मा का मंदिर है और उसे सांसारिकता और धन-संपत्ति के दिखावटी प्रदर्शन का माध्यम नहीं बनना चाहिए। मसीही स्त्रियों के पास अपनी व्यक्तिगत सुंदरता को निखारने के अन्य, कई उत्तम तरीके हैं। पौलुस ने पद 10 में उन तरीकों का विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

(2) उन्हें क्या अपनाना चाहिए (2:10)

मसीही महिलाओं को व्यक्तिगत भक्ति और व्यावहारिक भलाई को प्रदर्शित करनी चाहिए। उन्हें अपने आप को "भले कामों से" सजाना चाहिए, "क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।" दोरकास भी इसी प्रकार से सुसज्जित थी (प्रेरितों के काम 9:36-40 देखें)। लूका लिखता है, "याफा में तबीता अर्थात् दोरकास [इस नाम का अर्थ 'हिरनी' है] नामक एक विश्वासिनी रहती थी। वह बहुत से भले-भले काम और दान किया करती थी। उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई।"

एक ऐसी महान और आदरणीय स्त्री के खो जाने से शोकित विश्वासियों को ढाढ़स देने के लिए पतरस को लुद्दा से याफा बुलाया गया। लूका आगे लिखता है, "जब वह पहुँचा तो वे उसे उस अटारी पर ले गए। सब विधवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई, और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं।"

दोरकास उसी तरह सुसज्जित थी जैसे परमेश्वर चाहता है कि सभी मसीही स्त्रियाँ सुसज्जित हों। परमेश्वर की दृष्टि में उसकी सुंदरता इतनी महान थी कि पवित्र आत्मा ने पतरस को उसे मृतकों में से जीवित करने की सामर्थ्य दी; उसे और समय प्रदान किया गया, ताकि वह भले कामों के द्वारा भक्ति का अंगीकार करती हुई आगे भी जीवन बिताती रहे।

कोई भी व्यक्ति विग पहन सकता है या, यदि स्वाभाविक रूप से सक्षम हो, तो एक जटिल केश-विन्यास बना सकता है। जिसके पास धन है, वह अंगूठियाँ, हीरे, सोने के आभूषण और मोती खरीद सकता है। ऐसी बाहरी सुंदरता खरीदी जा सकती है। ऐसी बाहरी सुंदरता खरीदी जा सकती है। हालाँकि, परमेश्वर जिस सुंदरता को देखना चाहता है, उसे स्वयं निर्मित करना होगा—अर्थात्, पवित्र आत्मा के द्वारा एक विश्वास करने वाली स्त्री के जीवन में उसे कार्य रूप में प्रकट किया जाना चाहिए।

ख. उन्हें चुपचाप रहकर सीखना है (2:11-15)

(1) नियम (2:11-12)

(क) सबसे प्रमुख क्या है (2:11)

पौलुस ने लिखा, "स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए।" चुपचाप और अधीनता शब्द महिला अधिकारों के समर्थकों के क्रोध को भड़काते हैं। वे माँग करते हैं कि "स्त्रियों को कलीसिया में चुप क्यों रहना चाहिए?" "उन्हें अधीनता में क्यों रहना चाहिए?" इसका कारण परमेश्वर के मन, हृदय और इच्छा में निहित है, जो उनके अस्तित्व का रचने वाला है और जो निश्चित रूप से सबसे अच्छी तरह जानता है कि घर में, समाज में और (सर्वोच्च रूप से) उसकी कलीसिया में महिलाओं के लिए क्या सही और उचित है। उसके नियम मनमाने नहीं हैं। क्योंकि बाइबल ईश्वरीय प्रेरणा से रचित और पूर्णतः त्रुटिहीन परमेश्वर का वचन है, इसलिए इसमें दिए गए निर्देशों को स्वाभाविक रूप से सही, उचित और सभी संबंधित लोगों के लिए सर्वोत्तम मानकर स्वीकार किया जाना चाहिए।

मान लीजिए कि एक महिला एक जटिल, महंगा उपकरण खरीदती है। जब वह उसके घर में लगाया जाता है, तो उसे वारंटी और निर्देशों की एक पुस्तिका दी जाती है। पहले पृष्ठ पर एक चित्र होता है जो दर्शाता है कि विभिन्न भाग कैसे संबंधित हैं। दूसरे पृष्ठ पर दिखाया जाता है कि उपकरण को कैसे संचालित किया जाना है। मोटे लाल अक्षरों में चेतावनी दी जाती है, "बटन 'बी' को दबाने से पहले बटन 'ए' को दबाएँ।" यह मूलभूत नियम है, जो उपकरण की प्रकृति और संरचना पर आधारित व्यवस्था का नियम होता है। यह इस बात को ध्यान में रखता है कि यह कैसे बनाया गया है और यह कैसे काम करता है। स्पष्ट है कि निर्माता इन बातों के बारे में खरीदार से ज़्यादा जानता है। मूल नियम के बाद एक स्पष्टीकरण दिया जाता है: "यदि इस चेतावनी आ उल्लंघन किया जाता है, तो निर्माता इस उपकरण को हुए नुकसान के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। निर्माता की वारंटी केवल तभी लागू होती है जब इस निर्देशों का पालन किया जाता है।"

अब मान लीजिए कि वह स्त्री नियम पढ़कर क्रोधित और विद्रोही हो जाती है। वह इस अनिवार्य निर्देश को अपने नागरिक अधिकारों पर अतिक्रमण मानती है, और उसे ऐसे पुरुषवादी इंजीनियरों का मनमाना और अनुचित नियम समझती है जो किसी खरीदार के इस अधिकार में हस्तक्षेप करना चाहते हैं कि वह अपने उपकरण के साथ जैसा चाहे वैसा करे। वह अपने सार्वभौमिक अधिकारों का दावा करती है और जानबूझकर बटन 'ए' दबाने से पहले बटन 'बी' दबा देती है।

एक क्षण का विराम होता है, जिसमें कुछ भी नहीं होता। फिर एक घरघराहट, एक धमाका, और धुएँ का एक गुबार उठता है। उपकरण नष्ट हो जाता है। अब उसके पास एक ऐसा यंत्र रह जाता है जो काम नहीं करता और जिस पर कोई वारंटी भी नहीं है। वह उसके साथ छेड़छाड़ कर सकती है। वह उसे इधर-उधर की चीज़ें रखने के लिए इस्तेमाल कर सकती है। वह उस निर्माता के बारे में मूर्खतापूर्ण बातें कह सकती है, परंतु दोष देने के लिए उसके पास स्वयं के अलावा और कोई नहीं है।

कलीसिया केवल किसी साधारण उपकरण की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल इकाई है। कलीसिया एक जीवित संगठन है। उसकी जड़ें अनंतकाल में हैं; वह जीवन के हर क्षेत्र और संसार के हर भाग से आए हुए लोगों से बनी है। कलीसिया के साथ कुछ निर्देश जुड़े हुए हैं, जो विशेष रूप से नये नियम की पत्रियों में पाए

जाते हैं। इसके साथ उसके निर्माता की चेतावनी भी है। यदि कलीसिया को सही रीति से कार्य करना है, तो उसके क्रम का पालन किया जाना आवश्यक है। कलीसिया में पुरुष और स्त्री—दोनों का अपना-अपना स्थान है। दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, परंतु 1 कुरिन्थियों 11 में बताए गए कर्म का पालन किया जाना चाहिए। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारे सभी “अधिकारों” के बावजूद, परमेश्वर अपनी कलीसिया के लिए क्या सर्वोत्तम है, यह वही सबसे अच्छी तरह जानता है।

पहला तीमुथियुस 2:11 हमें बस यह याद दिलाता है कि परमेश्वर ने अपनी कलीसिया के समुचित संचालन के लिए एक अटल नियम बनाया है। स्त्री की भूमिका, जिसमें चुपचाप रहना और अधीनता शामिल है, वह किसी मनमाने तरीके पर आधारित नहीं है। यह कलीसिया की प्रकृति और पुरुषों और महिलाओं की प्रकृति के बारे में परमेश्वर के अचूक ज्ञान पर आधारित है। जो लोग परमेश्वर के निर्देशों की अनदेखी करते हैं, वे कलीसिया को नुकसान पहुंचाते हैं। वे कलीसिया को वैसा बनने से रोकते हैं जैसा परमेश्वर चाहता था।

जब कुलपिता अब्राहम को एहसास हुआ कि सारा उसे वह उत्तराधिकारी देने के लिए बहुत बूढ़ी हो गई है जिसका परमेश्वर ने वादा किया था, तो उसने हाजिरा से विवाह कर लिया। वह सारा की दासी थी। यह विचार सारा के मन में आया था, लेकिन यह एक विनाशकारी उपाय साबित हुआ। जब यह स्पष्ट हो गया कि हाजिरा गर्भवती है, तो सारा क्रोधित हो गई और हाजिरा को सताने लगी। हताश होकर, हाजिरा जंगल की ओर भाग गई। वहाँ उसकी भेंट “यहोवा के दूत” से हुई—जो स्वर्गदूत के रूप में प्रकट परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्तित्व था। उसने उससे कहा, “अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह” (उत्पत्ति 16:9)। परमेश्वर द्वारा हाजिरा को यह आज्ञा देने के अनेक उत्तम कारण थे,[11] परन्तु वह उन्हें समझ नहीं पाई। निस्संदेह, परमेश्वर उससे जो कुछ भी मांग सकता था, उसमें “लौटना” और “अधीन होना” से अधिक कठिन उसके लिए कुछ भी नहीं हो सकता था।

जिस परमेश्वर ने अपनी असीम बुद्धि और असीम प्रेम से, हाजिरा को उन दो ठोस शब्दों से सामना कराया था, अब वह कलीसिया की सभी स्त्रियों को दो समान, अडिग शब्दों से सामना कराता है: चुपचाप और अधीनता में रहना। इस विषय में परमेश्वर के पवित्र आत्मा के प्रभुत्व के प्रति एक स्त्री कैसी प्रतिक्रिया देती है, यह मसीह में उसके आत्मिक विकास का संकेत है।

1 तीमुथियुस 2:11 में “चुपचाप” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह भीतर से उत्पन्न शांति को दर्शाता है। इसका विशेषण रूप 2:2 में “शांतिपूर्ण” के रूप में अनूदित किया गया है। लूका ने इस शब्द का उपयोग यरूशलेम के मंदिर के प्रांगण में भीड़ की प्रतिक्रिया का वर्णन करते समय किया, जब पौलुस ने उनसे उनकी मातृभाषा में संबोधित किया: “वे यह सुनकर कि वह हम से इब्रानी भाषा में बोलता है, और भी चुप हो गए” (प्रेरितों के काम 22:2)। दूसरे शब्दों में, चुपचाप रहने का अर्थ है - “शांत रहना” — चाहे यह पसंद हो या न हो।

1 तीमुथियुस 2:11 में “अधीनता” शब्द एक सैन्य शब्द है जो सेना में निम्न पद के लोगों को संदर्भित करता है। लूका ने इस शब्द का उपयोग यह वर्णन करने के लिए किया कि यरूशलेम की कलीसिया के समस्त नेतृत्व के सामने भी पौलुस ने झूठे शिक्षकों के अधीन होने से पूर्णतः इनकार कर दिया, जो अन्यजाति विश्वासियों को यहूदी व्यवस्था के अधीन करना चाहते थे (गलातियों 2:5)।

(ख) क्या मनाही है (2:12)

स्त्रियों के लिए शिक्षा देना और अधिकार की सीमा का उल्लंघन करना मना है। पौलुस ने लिखा, "मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।"

पौलुस के शब्दों को इस प्रकार कहा जा सकता है, "मैं स्त्री को उपदेश करने की अनुमति नहीं देता।" निस्संदेह, उसका "मैं" उसे पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष प्रकाशन और प्रेरणा के अधीन लिखने वाले प्रेरित के रूप में संदर्भित करता है। अंग्रेजी 'द कम्पैनियन बाइबल' के अनुसार, 2:12 में — जैसे 2:7 में — "नहीं" शब्द "पूर्ण और प्रत्यक्ष निषेध" को व्यक्त करता है, जो स्वतंत्र और निरपेक्ष है; किसी व्यक्त या निहित शर्त पर निर्भर नहीं है। वूस्ट ने संकेत किया, "पौलुस के शब्दों, 'मैं स्त्री को शिक्षा देने की अनुमति नहीं देता,' का सही अर्थ ग्रीक इनफिनिटिव (धातुरूप) के काल और उससे संबंधित व्याकरणिक नियम पर निर्भर करता है।" उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पौलुस का आशय था, "मैं स्त्री को उपदेश होने की अनुमति नहीं देता।" डब्ल्यू. ई. वाइन ने बताया कि "शिक्षा देना" वाला धातुरूप शब्द निरपेक्ष या सकर्मक, दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है; उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि 2:12 में यह निरपेक्ष रूप में प्रयोग हुआ है और इसका अर्थ है "निर्देश देना।"

पौलुस स्थानीय कलीसिया में शिक्षा देने के संदर्भ में बोल रहा था। उसने स्त्रियों को अन्य स्त्रियों को शिक्षा देने (तीतुस 2:3-4) या बच्चों को शिक्षा देने (1 तीमोथियुस 2:15; 5:10) से नहीं रोका। न ही प्रिस्किल्ला की निंदा की गई है, जिसने अपने पति के साथ मिलकर अपुल्लोस को "परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया" था (प्रेरितों के काम 18:24-28)। लेकिन प्रेरित ने कलीसिया में उपदेश देने की भूमिका पूरी तरह से पुरुषों के लिए आरक्षित रखी थी। उसने आगे यह स्पष्ट भी किया कि ऐसा क्यों था।

(2) कारण (2:13-14)

(क) सृष्टि में प्रकट परमेश्वर की क्रम-व्यवस्था (2:13)

"क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई" पौलुस ने समझाया। उदारवादी धर्मविज्ञान उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों में सिखाई गई सच्चाई को नकारता है। पवित्र आत्मा उनके संशयवादी विचारों को नज़रअंदाज़ करता है और हमें रोमियों 5 और 1 कुरिन्थियों 15:45-49 और पुनरुत्थान की संभावना की व्याख्या करने के लिए आदम और हव्वा की ओर वापस ले जाता है। आदम और हव्वा वास्तविक व्यक्ति थे और परमेश्वर का आत्मा उन्हें समस्त मानवजाति के माता-पिता के रूप में संदर्भित करता है।

"बनाई गई" (पद 13) शब्द का अर्थ है "मिट्टी या मोम से किसी चीज़ को गढ़ना या ढालना"। इसका प्रयोग रोमियों 9:20 में किया गया है, जहाँ पौलुस (यशायाह 45:9 से हवाला देते हुए) पूछता है, "क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, 'तू यह क्या करता है?'" यहाँ जोर इस बात पर है कि परमेश्वर को अपनी इच्छा और योजना के अनुसार सब बातों को व्यवस्थित करने का निर्विवाद अधिकार है।

परमेश्वर ने पहले आदम को बनाया, फिर हव्वा को। हव्वा की रचना आदम में से लिए गए भाग से की गई थी (उत्पत्ति 2:21-25)। ऐसा करके परमेश्वर ने मानव जीवन में एक व्यवस्था, एक प्राथमिकता और एक

प्रधानता स्थापित की (1 कुरिन्थियों 11)। और परमेश्वर की व्यवस्था पूरी सृष्टि में, सबसे बड़ी आकाशगंगा से लेकर सबसे छोटे परमाणु तक, व्याप्त है।

मानव जाति के लिए परमेश्वर के क्रम के अनुसार, "आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।" यह एक पवित्रशास्त्रीय तथ्य है। तथ्यों से झगड़ना मूर्खता है। इस तथ्य से बचने का एकमात्र तरीका यह है कि कोई पवित्रशास्त्र की दैवीय प्रेरणा का ही इनकार कर दे।

जो व्यक्ति इस प्रकार बाइबल का इनकार करता है, वह किसी कलीसिया की सदस्य सूची में तो हो सकता है, परंतु वास्तव में स्वयं को मसीही नहीं कह सकता। इसलिए वह सच्ची कलीसिया में नहीं है। अतः इस विषय में पौलुस की शिक्षा के संबंध में उसके विचार अप्रासंगिक हैं।

(ख) सृष्टि में परमेश्वर के क्रम का पलट जाना (2:14)

आदम का पाप और हव्वा का पाप एक-दूसरे से मूल रूप से भिन्न रूप में प्रस्तुत किए गए हैं: "आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।" आदम ने आज्ञा तोड़ी थी, जबकि हव्वा बहकाई गई थी।

अंतर को समझने के लिए हमें शुरुआत की ओर लौटना होगा। पहले आदम की सृष्टि की गई, फिर हव्वा को आदम में से बनाया गया। इसके अतिरिक्त, आदम को नेतृत्व का अधिकार दिया गया और परमेश्वर ने उसे मुकुट पहनाया (1 कुरिन्थियों 11:3)। पुरुष को उसके मस्तिष्क (सिर) के द्वारा संचालित होने के लिए बनाया गया, और स्त्री को उसके हृदय के द्वारा संचालित होने के लिए बनाया गया। जिसने भी अपने जीवनसाथी के साथ कभी तर्क-वितर्क किया है, उसने पुरुष के मुद्दों को देखने के तरीके और स्त्री के मुद्दों को देखने के तरीके के बीच इस मूलभूत अंतर का अनुभव किया है।

निश्चय ही, यह तथ्य कि एक स्त्री अपने हृदय द्वारा संचालित होती है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सोच नहीं सकती; हम सब ऐसी स्त्रियों से मिले हैं जो कुछ पुरुषों से भी अधिक गहराई से सोच सकती हैं। और यह तथ्य कि एक पुरुष अपने मस्तिष्क द्वारा संचालित होता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह अनुभव या महसूस नहीं कर सकता। हम सब ऐसे पुरुषों से भी मिले हैं जो कुछ स्त्रियों से अधिक गहराई से बातों को महसूस कर सकते हैं। किन्तु सामान्य रूप से कहा जाए तो, पुरुष की क्रिया का केंद्र उसका मस्तिष्क होता है, और स्त्री का उसके हृदय में।

आदम और हव्वा के प्रलोभन में, शैतान ने परमेश्वर के क्रम को तोड़-मरोड़ के रख दिया। शैतान ने सबसे पहले हव्वा के मन को लक्ष्य बनाकर उसे प्रलोभित किया और इस विषय में उसे बौद्धिक चर्चा में उलझाया कि क्या उसके लिए वह करना उचित है, जिसे परमेश्वर ने गलत कहा था। हव्वा के लिए एकमात्र बचाव परमेश्वर का वचन था। इसलिए शैतान के पहले कुछ शब्द उसी पर एक सीधा हमला था। उसने मानव इतिहास का सबसे पहला प्रश्न उठाया: "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा?" (उत्पत्ति 3:1)।

शैतान का हमला तीन दिशाओं में था। पहला, उसने परमेश्वर के वचन की प्रामाणिकता पर हमला किया: "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा?" दूसरे शब्दों में, "तुम्हें कैसे पता कि यह सचमुच परमेश्वर का वचन है? आखिरकार, जब परमेश्वर का यह कथित वचन दिया गया था, तब तुम वहाँ मौजूद नहीं थीं।"

फिर शैतान ने परमेश्वर के वचन की सटीकता पर हमला किया: "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?' दूसरे शब्दों में, 'तुम्हें कैसे पता कि यह वचन परमेश्वर की कही बातों का सटीक और त्रुटिहीन विवरण है? आखिरकार, तुम्हारे पास तो वही है जो तुम्हें सौंपा गया है। तुम्हारे पास मूल वचन नहीं है। तुम्हें कैसे पता कि इस संदेश को देते समय इसमें कुछ खोया नहीं है?'"

तीसरा हमला परमेश्वर के वचन की स्वीकार्यता पर था। शैतान ने हव्वा की दृष्टि उस वर्जित फल की ओर घुमाई और उसके मन में लालसा भर दी। उसने "देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है" (उत्पत्ति 3:6)। शैतान ने उसे यह विश्वास दिलाया कि परमेश्वर की ऐसी कथित आज्ञा का पालन करना, जो उसकी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करे और उसे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने से रोके, स्वीकार्य नहीं है। आखिरकार, वह एक परिपक्व, बुद्धिमान स्त्री थी, जिसकी अपनी समझ और अपनी इच्छा थी। इस प्रकार हव्वा धोखा खा गई—चतुराई से धोखा दिया गया, परन्तु अंततः वह धोखा ही था।

हव्वा शैतान के प्रलोभन के प्रति इसलिए कमजोर थी क्योंकि उसने परमेश्वर के वचन को लापरवाही से लिया। उसकी "बाइबल" छोटी सी थी (केवल दो पृष्ठ), परन्तु वह पूरी तरह पर्याप्त थी। उसमें लिखा था: "और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, 'तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा'" (उत्पत्ति 2:16-17)।

शैतान के प्रत्येक सुझाव के उत्तर में हव्वा को केवल इतना कहना था, "परमेश्वर इस प्रकार कहता है," और शैतान उसे बहकाने में असमर्थ रहता। परन्तु इसके स्थान पर वह लापरवाह हो गई। जब उसने परमेश्वर के वचन का हवाला दिया, तो उसने तीन गलतियाँ कीं—दो बार उसने वचन में से घटाया, और एक बार उसमें कुछ जोड़ा।

शैतान जानता था कि जिस तरह से उसने पवित्रशास्त्र का प्रयोग किया, उससे उसे आसानी से धोखा दिया जा सकता है और उसे हराया जा सकता है।

जब शैतान ने कहा, "क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?'" हव्वा ने उत्तर दिया, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।" परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा था। उसने कहा था, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है।" उसने कुछ बातें छोड़ दीं।

हव्वा ने आगे कहा, "परन्तु जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है," कि न तो तुम उसको खाना... नहीं तो मर जाओगे।" यह वह नहीं था जो परमेश्वर ने कहा था। उसने कहा था, "तू निश्चय मर जाएगा" (उत्पत्ति 2:17 और 3:3 की तुलना करें)। फिर से, उसने कुछ छोड़ दिया। इन पदों की तुलना करने पर हम यह भी देखते हैं कि हव्वा ने उसमें यह जोड़ दिया, "और न उसको छूना" परमेश्वर ने ऐसा कुछ नहीं कहा था।

तो, वास्तव में, हव्वा ने पवित्रशास्त्र के मूल लेख को अनदेखा किया और एक संक्षिप्त व्याख्या, एक मुक्त अनुवाद, एक ऐसा संस्करण इस्तेमाल किया जो उसने खुद रचा था। बाइबल के कई आधुनिक "अनुवाद"

भी यही करते हैं। वे कुछ चीज़ें छोड़ देते हैं, कुछ चीज़ें जोड़ देते हैं, और आम तौर पर परमेश्वर के वचन को बिगाड़ देते हैं।

जब हव्वा ने "बिना खटके" ("बिना खटके खा सकता है") शब्द को छोड़ दिया, तो उसने परमेश्वर की भलाई और उदारता को कम कर दिया। जब उसने "अवश्य" ("उसी दिन अवश्य मर जाएगा") शब्द को छोड़ दिया, तो उसने परमेश्वर की सार्वभौमिकता और दंड की निश्चितता को कम करके आंका। जब उसने "और न उसको छूना" को जोड़ा, तो उसने परमेश्वर द्वारा उस पर लगाए गए एक प्रतिबंध को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया।

जितना अधिक हम हव्वा द्वारा परमेश्वर के वचन के प्रति की गई लापरवाही का अध्ययन करते हैं, उतना ही हम सर्प की चतुराई को देखते हैं, जिसने उसकी बुद्धि को संबोधित करके उसके अहंकार को उभारा। जब हव्वा ने उस वर्जित को फल खाया, तो उसने यह दिखाया कि वह अपने विचार को परमेश्वर के वचन से अधिक सही मानती थी। जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, वह "बहकाई" गई थी। शैतान ने अपना प्रलोभन हव्वा के मस्तिष्क पर केंद्रित किया और विजय प्राप्त की। यही कारण है कि परमेश्वर ने कलीसिया में स्त्रियों के शिक्षक होने पर प्रतिबंध लगाया।

दूसरी ओर, आदम बहकाया नहीं गया। वह अच्छी तरह जानता था कि वह क्या कर रहा है। उसने आज्ञा तोड़ी थी, और इसीलिए पौलुस ने लिखा, "क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे" (रोमियों 5:12, 19)।

जबकि शैतान ने हव्वा के मस्तिष्क को निशाना बनाकर उसे बहकाया था, वहीं उसने आदम के हृदय की ओर प्रलोभन को निर्देशित किया। वास्तव में, शैतान ने आदम को सीधे प्रलोभित नहीं किया; उसने यह काम हव्वा से करवाया। "अतः जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया" (उत्पत्ति 3:6)। हव्वा ने नेतृत्व की भूमिका अपने हाथ में ले ली।

स्पष्ट है कि जब आदम ने हव्वा को उसके पतित अवस्था में देखा, तो उसका हृदय उसकी ओर करुणा से उमड़ पड़ा। संभव है कि किसी विकृत अर्थ में, वह अपनी निष्कलंक अवस्था की अपेक्षा और भी अधिक आकर्षक प्रतीत हुई हो। किसी भी स्थिति में, उसने उसे उसकी खोई हुई और एकाकी अवस्था में देखा और फिर भी उससे प्रेम किया। वह जानता था कि उसका अगला कदम स्पष्ट अनाज्ञाकारिता का कार्य होगा। जिस कदम को वह उठाने जा रहा था, उसके विषय में वह किसी भी तरह के बहकावे में नहीं था। उसने अपने हृदय का अनुसरण करते हुए पाप किया; और क्योंकि वह समस्त मानव जाति का प्रधान ठहराया गया था, इसलिए उसने समस्त मानव जाति को अपने साथ पतन में खींच लिया।

परमेश्वर ने पतन की ज़िम्मेदारी आदम पर डाली, हव्वा पर नहीं। ठीक उसी तरह, हव्वा भी अपने पाप के परिणामों से नहीं बच पाई। न ही नारीत्व ही बच पाया। जैसा कि पौलुस ने 1 तीमुथियुस 2:14 में लिखा है, "स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।" "में आकर" के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे "गेगोनेन" (पूर्णकाल में) और "एन" हैं; ये संकेत करते हैं कि हव्वा अपराध में गिर चुकी थी। "अपराधिनी"

शब्द में “एक ओर हट जाना” या “सीमा लांघ जाना” का भाव निहित है। हव्वा ने यही किया था। उसने उस निषिद्ध सीमा-रेखा को पार किया था।

2:14अ में “बहकाया” शब्द का अर्थ है “धोखा दिया गया, प्रलोभित किया जाना”। 2:14ब में “बहकाने” शब्द का अर्थ है “पूरी तरह या पूरी तरह से धोखा दिया जाना”। हव्वा पूरी तरह से बहक गई थी। सर्प ने वास्तव में उसे यह विश्वास दिलाकर बहकाया कि उस वर्जित फल खाने से उसे और मानवजाति को बहुत लाभ होगा। इस कारण, कलीसिया में स्त्रियों के पास्टर-उपदेशक बनने पर दैवीय प्रतिबंध लगा दिया गया।

(3) प्रतिक्रिया (2:15)

क्योंकि हव्वा बहकाई गई थी, इसलिए पौलुस ने स्त्रियों को कलीसिया में उपदेशक बनने से रोक दिया, लेकिन उसने आगे कहा, “तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।”

यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “उद्धार पाएगी” किया गया है, वह नये नियम में केवल पाप से उद्धार तक ही सीमित नहीं है। इसका प्रयोग मत्ती 8:25 में संकट से छुड़ाए जाने के संदर्भ में, लूका 23:35 में मृत्यु से बचाए जाने के संदर्भ में, और मत्ती 9:22 में बीमारी से चंगे होने के संदर्भ में किया गया है। इसलिए हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि 1 तीमुथियुस 2:15 में यह शब्द पाप के अतिरिक्त किसी और बात से उद्धार के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

पद 2:15 में व्यक्तिगत (हव्वा) से सामान्य (स्त्री) की ओर परिवर्तन पर ध्यान दें, जो एकवचन सर्वनाम (“वह”) से बहुवचन सर्वनाम (“वे”) में परिवर्तन द्वारा प्रकट होता है। हव्वा के मामले में, उसके अपराध का तत्काल दंड इस प्रकार व्यक्त किया गया: “मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी” (उत्पत्ति 3:16)। जहाँ तक स्त्री जाति का संबंध है, एक सहायक दंड यह है कि कलीसिया में स्त्रियों को शिक्षा देने की भूमिकाओं से वंचित रखा गया है।

संभव है कि 1 तीमुथियुस 2:15 का अर्थ यह हो कि प्रसव के समय स्त्रियाँ इस सहायक दंड से “उद्धार” पाती हैं, क्योंकि माताओं के रूप में वे निश्चय ही अपने बच्चों को सुसमाचार के सत्य सिखा सकती हैं। तीमुथियुस इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसे उसकी माता और नानी ने बचपन से ही पवित्रशास्त्र की शिक्षा दी (2 तीमुथियुस 3:15)।

यह स्वतंत्रता तब और भी प्रभावशाली हो जाती है जब माताओं का जीवन विश्वास, प्रेम, पवित्रता और संयम से चिह्नित होता है। इस प्रकार उनका जीवन ही उनके उपदेश को सुशोभित करता है। बच्चों को सिखाने के अवसर का स्वागत करना, कलीसिया में स्त्रियों के शिक्षक होने पर लगाए गए निषेध के प्रति एक उचित प्रतिक्रिया है। यह शारीरिक मनोभाव से उत्पन्न कटुता या खुले विद्रोह की प्रतिक्रिया से कहीं बेहतर है।

ग. कलीसिया और उसके कर्तव्य (3:1-15)

1. कलीसिया के कर्तव्यों पर चर्चा (3:1-13)

अब पौलुस एक भिन्न विषय की ओर मुड़ता है—स्थानीय कलीसिया की व्यवस्था। स्थानीय कलीसिया को अपनी सेवकाई को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए आत्मिक और सांसारिक, दोनों प्रकार के अगुवों

की आवश्यकता होती है। इसलिए प्रेरित ने यहाँ दो प्रकार के पदों पर चर्चा की: अध्यक्ष और सेवक। उसने तीमुथियुस के लिए यह स्पष्ट किया कि अध्यक्षों और सेवकों में कौन-कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए।

पौलुस ने उन योग्यताओं को नज़रअंदाज़ किया जिन्हें आज अधिकांश आधुनिक कलीसियाएँ महत्वपूर्ण मानती हैं। आज बहुत-सी कलीसियाएँ इन पदों को भरने के लिए बैंकरों, व्यवसायियों, पेशेवरों, उच्च वर्ग के लोगों, और सरकार, व्यापार तथा मनोरंजन जगत में प्रभाव रखने वाले लोगों को उत्सुकता से चुनती हैं। परन्तु, कोई “एक दरिद्र बुद्धिमान पुरुष” (सभोपदेशक 9:15), जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो (प्रेरितों के काम 6:3), वह एक सांसारिक बुद्धि से भरे हुए शारीरिक प्रवृत्ति वाले व्यापारी की अपेक्षा प्राचीन या सेवक बनने के लिए कहीं अधिक योग्य होगा।

क. स्थानीय कलीसिया का आत्मिक नेतृत्व—प्राचीन (3:1-7)

(1) खोज (3:1)

(क) पद की इच्छा (3:1क)

पौलुस ने शुरू किया, “जो अध्यक्ष होना चाहता है...” सब कुछ इच्छा से शुरू होता है। यहाँ “चाहता है” शब्द का अनुवाद ओरेगोमाई है, जिसका अर्थ है “प्रयास करना”। इच्छा का अर्थ है किसी चीज़ की लालसा करना, उस पर अपना मन लगाना, उसे पाने के लिए प्रयास करना। ओरेगोमाई का अनुवाद 6:10 में “लालच” किया गया है, जहाँ पौलुस ने धन के लोभ के विरुद्ध चेतावनी दी थी।

3:1 में, प्रेरित के मन में पद या अधिकार पाने की इच्छा नहीं थी। वह झुंड की रखवाली करने की इच्छा की बात कर रहा था। कोई व्यक्ति कलीसिया में इसलिए प्राचीन नहीं बन जाता क्योंकि उसका नाम नामांकित व्यक्तियों की सूची में है और वह पर्याप्त वोट प्राप्त कर लेता है; वह इस पद के लिए अपनी खोज इसलिए शुरू करता है क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा उसके हृदय में एक चरवाहा बनने की आंतरिक इच्छा उत्पन्न होती है।

(ख) पद की विशिष्टता (3:1ख)

जिस पद की इच्छा की जाती है, वह है “अध्यक्ष का पद।” जब लोग अध्यक्ष के बारे में सोचते हैं, तो वे एक उच्च पदस्थ, शक्तिशाली कलीसियाई अधिकारी की कल्पना करते हैं। उनके मन में एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर आती है जो विशिष्ट तरह के वस्त्र पहने हुए हो, किसी महल में रहता हो, एक धर्मक्षेत्र का प्रभारी हो, अनेक कलीसियाओं पर किसी राजा की तरह शासन करता हो, और कुछ देशों में संसद में सीट पाने का अधिकारी भी हो। अध्यक्ष की यह धारणा रोम से आई है, न कि नये नियम से। अंग्रेजी के किंग जेम्स संस्करण में इस प्रकार के भारी अर्थ वाले शब्द का प्रयोग अनुवादकों की मानसिकता को दर्शाता है, जिनमें से बहुत से स्वयं कुलीन वर्ग के सदस्य थे।

3:1 में जिस शब्द का अनुवाद “पद” किया गया है, उसमें देखभाल करने का भाव निहित है, जैसा कि 1 पतरस 2:12 में पाया जाता है। 3:2 में जिस शब्द का अनुवाद “अध्यक्ष” किया गया है, उसमें झुंड की रखवाली करने, उस पर निगरानी रखने का विचार निहित है। प्रेरितों के काम 20:17 में “प्राचीनों” के लिए प्रयुक्त शब्द उसी चरवाही के कार्य को दर्शाता है, परन्तु साथ ही उस सेवा के लिए आवश्यक आत्मिक

परिपक्वता की अवस्था को भी दर्शाता है; पतरस और यूहन्ना अपने आप को “प्राचीन” पुकारा करते थे (1 पतरस 5:1; 2 यूहन्ना 1; 3 यूहन्ना 1)। नये नियम के अनुसार, प्रत्येक स्थानीय कलीसिया में उसके अपने प्राचीन होने चाहिए (प्रेरितों के काम 14:23; 20:17; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:5)।

(ग) पद की माँगें (3:1ग)

जिस कार्य के लिए एक प्राचीन को बुलाया जाता है वह “एक भला काम” है। और यह कार्य ही है! पौलुस ने प्रेरितों के काम 20 में प्राचीनों के कर्तव्यों का वर्णन किया है, जहाँ उसने इफिसुस की कलीसिया के अगुवों को उनका कार्यभार बताया है। कड़ी मेहनत के अलावा, चरवाही के लिए समय, धैर्य और बुद्धि की भी आवश्यकता होती है। इसमें परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना, लोगों की मदद करना, झुंड से मिलना, और प्राचीन की देखभाल में सौंपे गए लोगों की आत्मिक और शारीरिक भलाई का ध्यान रखना शामिल है।

(2) योग्यताएँ (3:2-7)

(क) एक प्राचीन के लिए बुनियादी आवश्यकताएँ (3:2)

i. मुख्य आवश्यकता (3:2क)

“एक अध्यक्ष को निर्दोष होना चाहिए।” यहाँ प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “जिस पर कोई दोष न लगाया जा सके।” एक प्राचीन के जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए जो आलोचना या दोषारोपण के लिए खुला हो। उसका चरित्र और प्रतिष्ठा निष्कलंक होनी चाहिए। योग्यता जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही चरित्र भी है।

जब कोई व्यक्ति जो स्थानीय कलीसिया में सार्वजनिक पद धारण करता है, समुदाय में निर्दोष और उत्तम प्रतिष्ठा नहीं रखता, तो क्या होता है? वह अपने कर्तव्यों का ठीक से निर्वाह नहीं कर पाएगा, क्योंकि वह एक शोकित पवित्र आत्मा के साथ जीवन व्यतीत करता है, और वह कलीसिया पर अपमान और तिरस्कार ले आएगा। जब दाऊद ने बतशेबा के साथ अपने पाप के कारण परमेश्वर के मन के अनुसार मनुष्य होने की अपनी प्रतिष्ठा खो दी, तब भविष्यद्वक्ता ने उसे इन शब्दों में डाँटा: “तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है” (1 शमूएल 13:14 और 2 शमूएल 12:14 की तुलना करें)। इसलिए पौलुस ने एक प्राचीन के लिए आवश्यकताओं की सूची में “निर्दोष” होने को सबसे ऊपर रखा।

ii. विवाह संबंधी आवश्यकता (3:2ख)

पौलुस की सूची में अगली आवश्यकता है कि वह “एक पत्नी का पति” हो। यह रोमन कैथोलिक कलीसिया की अपने सेवकगणों पर थोपी गई अनिवार्य ब्रह्मचर्य की नीति पर क्या ही एक बड़ा प्रहार है!

इस पद को लेकर बहुत-सी चर्चाएँ हुई हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह बहुविवाह को निषिद्ध करता है; और यह दृष्टिकोण सबसे अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है, विशेषकर इस तथ्य को देखते हुए कि पुराने नियम में बहुविवाह को व्यापक रूप से स्वीकार्य किया जाता था। अन्य विद्वानों का विचार है कि इस पद का अर्थ यह है कि एक प्राचीन एक समय में केवल एक ही स्त्री का पति होना चाहिए, और इसलिए जो विश्वासी विधुर होकर पुनः विवाह करता है, वह भी प्राचीन हो सकता है; परन्तु एक अविवाहित पुरुष नहीं

हो सकता। फिर कुछ लोग यह मानते हैं कि पौलुस दूसरे विवाह को मना कर रहा था, या किसी तलाकशुदा पुरुष को, अथवा उस पुरुष को अयोग्य ठहरा रहा था जिसकी पत्नी पहले तलाकशुदा रही हो।

वुएस्ट ने 3:2ब का निम्नलिखित अनुवाद सुझाया है: “एक-पत्नी-वाला प्रकार का पति” या “एक-स्त्री-वाला प्रकार का पुरुष।”[16] दूसरे शब्दों में, कलीसिया में सार्वजनिक पद धारण करने वाला कोई भी व्यक्ति अपने आचरण में दोषरहित होना चाहिए—अपने वैवाहिक संबंध में पूरी तरह पवित्रशास्त्र के अनुरूप और अत्यंत संयमित (चाहे वह पुरुष हो या स्त्री)।

वुएस्ट का अनुवाद मुझे मार्क ट्वेन की याद दिलाता है, जिसने एक आदमी को कुत्ते के गले में रस्सी बाँधते देखा था। उसने उस आदमी से पूछा कि वह क्या कर रहा है। उस आदमी ने जवाब दिया, “वह कुत्ता किसी भी उस आदमी या लड़के के पीछे भाग जाता है जो उसे सीटी बजा कर बुलाता है, इसलिए मैं उसे नदी में डुबो दूँगा। मुझे ऐसे किसी कुत्ते की कोई ज़रूरत नहीं है।” वह आदमी ‘एक-मालिक’ वाला कुत्ता चाहता था, एक एयरडेल की तरह जो केवल अपने मालिक से ही जुड़ा रहता है। इसी तरह, परमेश्वर चाहता है कि एक आदमी कलीसिया का पद तभी धारण करे जब वह पूरी तरह से अपनी ही पत्नी से जुड़ा हो। व्यभिचार या स्त्री-लालसा से बढ़कर कोई भी बात किसी व्यक्ति की सेवकाई को इतनी शीघ्रता से नष्ट नहीं करती। दुख की बात है कि सेवकाई में कुछ पुरुष यह पाठ बहुत देर से सीखते हैं—या कभी सीखते ही नहीं हैं।

कलीसिया में विधिवादी लोग अक्सर सभी तलाकशुदा व्यक्तियों के विरुद्ध नियम बना देते हैं, जिनमें वे लोग भी शामिल होते हैं जो निर्दोष पक्ष हैं और जिनके पास तलाक के लिए बाइबल आधारित आधार है। वे उस नियम की अनदेखी करते हैं—“यदि व्यभिचार के कारण न हो”—जो स्त्री-त्याग के विषय में प्रभु के निर्णायक कथन (मत्ती 19:9) और पहाड़ी उपदेश दोनों में पाया जाता है (जहाँ हर क्षेत्र में कल्पनीय सर्वोच्च मानकों को बनाए रखा गया है, मत्ती 5:32)। यह अपवाद बिंदु निर्दोष पक्ष को दोषारोपण और भेदभाव से बचाता है। निर्दोष व्यक्ति - चाहे वह पुरुष हो या स्त्री— के साथ ऐसा व्यवहार करना घोर रूप से अशास्त्रीय और अन्यायपूर्ण है - मानो वही दोषी हो।

विवाह को नष्ट करने वाली बात उस व्यक्ति का विश्वासघात है जो व्यभिचार करता है—विवाह की वाचाओं को तोड़ता है और पश्चाताप किए बिना उसी स्थिति में बना रहता है। जब ऐसा कोई मामला अदालत में आता है, तो न्यायाधीश राज्य की ओर से कार्य करते हुए तलाक को कानूनी दृष्टि से वैध ठहराता है।

निर्दोष पक्ष की यह स्वतंत्रता कि वह बिना दोष या लज्जा के पुनर्विवाह कर सकता है या नहीं—इस प्रश्न पर प्रभु स्वयं मत्ती 19:11-12 में प्रकाश डालता है।

विशेष रूप से आपत्तिजनक बात यह है कि विधिवादी यह दावा करते हैं कि पवित्रशास्त्र-सम्मत तलाक के बाद किया गया पुनर्विवाह “दो जीवित पतियों” (या परिस्थिति के अनुसार पत्नियों) को सम्मिलित करता है। यह दावा पुनर्विवाहित व्यक्ति पर द्विविवाही या बहुविवाही होने का आरोप लगाने के समान है। ऐसा आरोप न केवल असत्य है, बल्कि शर्मनाक भी है।

जो लोग यह आरोप लगाते हैं, वे प्रायः पुनर्विवाहित तलाकशुदा लोगों (या तलाक लेने वालों) पर पाप में जीवन बिताने का आरोप लगाने के लिए रोमियों 7:1-2 का सहारा लेते हैं। यह अंश इन बातों से संबंधित है: (1) विश्वासियों के रूप में हमारी पुरानी आदमिक प्रकृति के प्रति हमारी बंधुआ अवस्था; (2) उस बंधन

को और तीव्र करने में मूसा की व्यवस्था की भूमिका; और (3) किस प्रकार परमेश्वर ने हमें स्वतंत्र करने के लिए मृत्यु का उपयोग किया—हमारी मृत्यु नहीं, बल्कि मसीह की मृत्यु को अपने साधन के रूप में। इन सब बातों में तलाक को जोड़ना भ्रम उत्पन्न करता है और सच्ची व्याख्या के विरुद्ध है।

पुराने नियम में, परमेश्वर ने स्त्री-त्याग की अनुमति दी थी। प्रभु ने टिप्पणी की कि स्त्री-त्याग हृदय की कठोरता से उत्पन्न होते हैं (मत्ती 19:8)। मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत, स्त्री-त्याग अपने आप में एक कृपात्मक रियायत थी, जिसका उद्देश्य उस विवाह को समाप्त करना था जो पूर्ण अव्यवस्था में बदल चुका था। यहूदी रब्बियों ने तलाक के विषय में इतनी छेड़छाड़ की कि मसीह के समय तक एक मत-समूह कठोर कानूनी दृष्टिकोण रखता था, जो तलाक को लगभग बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करता था; जबकि दूसरा मत-समूह इतना ढीला और उदार था कि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को केवल इसलिए तलाक दे सकता था क्योंकि उसने उसकी रोटी जला दी थी। प्रभु ने न तो किसी एक पक्ष का समर्थन किया और न ही दूसरे का, बल्कि उन्होंने अपना संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

आज की दुखद स्थिति यह है कि अनेक कलीसियाएँ किसी न किसी एक चरम पर चली जाती हैं। कुछ कलीसियाओं में मन की कठोरता का शासन होता है। उनके सभाएँ—या उनके स्थानीय प्राचीन, सेवक और पास्टर—ऐसे नरकीय विवाहों के पीड़ितों के प्रति, जिन्होंने तलाक में शरण ली है, इतनी कठोरता विकसित कर लेते हैं कि वे उन पर हर प्रकार के दंड और प्रतिबंध लगा देते हैं—चाहे वे निर्दोष ही क्यों न हों।

iii. नैतिक आवश्यकताएँ (3:2ग-ड)

अध्यक्ष के पद की तीन नैतिक आवश्यकताएँ हैं। प्राचीन को "संयमी, सुशील और सभ्य" होना चाहिए। यहाँ "संयमी" शब्द का अनुवाद बुद्धिमानी से की गई सावधानी का संकेत देता है। पौलुस कह रहा है कि एक अध्यक्ष में आत्म-संयम होना चाहिए।

गमलीएल ने महासभा को दी अपनी सलाह में इस गुण का प्रदर्शन किया (प्रेरितों के काम 5:34-39)। जब सभा के सदस्य प्रेरितों की शिक्षा से क्रोधित होकर उन्हें मार डालने की बात करने लगे, तब प्रतिष्ठित विद्वान हिल्लेल के सम्मानित पौत्र गमलीएल ने चर्चा को बीच में रोक दिया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में गमलीएल का वर्णन इस प्रकार किया गया है—“व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था।”

उसने महासभा को उन कुछ कथित झूठे मसीहा की याद दिलाई जो आए और चले गए, और जिनके पीछे कोई विशेष प्रभाव भी नहीं रह गया। फिर उसने सभा का ध्यान दोबारा प्रेरितों की ओर आकर्षित किया, जिनकी सेवकाई यरूशलेम में हलचल मचा रही थी। उसने कहा: “इसलिये अब मैं तुम से कहता हूँ, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और इन से कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा; परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे। कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।” गमलीएल की यह सलाह उस बुद्धिमानी और सावधानी का उदाहरण प्रस्तुत करती है जिसकी अपेक्षा परमेश्वर कलीसिया के प्राचीनों से करता है।

1 तीमुथियुस 3:2 में "सुशील" शब्द एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो शांत और गंभीर हो, जिसका मन स्थिर हो और जो बुद्धिमानी से निष्कर्ष निकालता हो। वह कोई भी निर्णय लेने से पहले सभी तथ्यों को

जानना पसंद करता है। इसलिए एक अध्यक्ष (प्राचीन) को अपने विवेक के लिए जाना जाना चाहिए, उसे तुच्छ बातों में नहीं पड़ना चाहिए, और उसे जल्दबाज़ी में निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

जब हम सभी तथ्यों को जाने बिना बोलते हैं, तो हम तरह-तरह की गलतियाँ कर बैठते हैं—जैसा कि कुछ वर्ष पहले एक व्यक्ति के साथ हुआ, जब वह देश भर में ट्रेन से यात्रा कर रहा था। वह स्लीपिंग कार में था, और उसके सामने वाले डिब्बे में एक और व्यक्ति रोते हुए बच्चे को चुप कराने की कोशिश कर रहा था। उस छोटे बच्चे की रोने की आवाज़ सुनकर पहले व्यक्ति की नसों पर गुस्सा उतर आया। क्रोध में आकर उसने उस परेशान पिता से कहा, “क्या तुम इस बच्चे को चुप नहीं करा सकते? इस शोर के बीच कोई कैसे आराम कर सकता है? इस बच्चे को उसकी माँ की ज़रूरत है। उसकी माँ कहाँ है?”

पिता ने उत्तर दिया, “इस बच्चे की माँ सामान रखने वाली गाड़ी में, अपने ताबूत में है।”

प्राचीनों को उतावले शब्दों से बचना चाहिए। उन्हें अपने आचरण में भी बुद्धिमान होना आवश्यक है; वे “सभ्य आचरण वाले [कोस्मियोस]” हों। यह यूनानी शब्द, जिसका अनुवाद “सुव्यवस्थित” भी किया जा सकता है, ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत करता है जिसका जीवन अनुशासित हो। ऐसे प्राचीन का कौन आदर करेगा जिसकी आदतें अस्त-व्यस्त हों और जिसका व्यवहार अनुशासनहीन और अव्यवस्थित हो? जो व्यक्ति सभाओं में सदा देर से आता है, नियुक्तियाँ भूल जाता है, वादे तोड़ता है, अपने शारीरिक रूप-रंग के प्रति लापरवाह रहता है, और बार-बार महत्वपूर्ण कागज़ात खो देता है—वह कलीसिया में नेतृत्व के पद के योग्य नहीं है।

iv. सेवकाई की आवश्यकताएँ (3:2च-छ)

एक प्राचीन के लिए सेवकाई की दो आवश्यकताएँ हैं। पहली, उसे अपने सामाजिक शिष्टाचार के लिए जाना जाना चाहिए, या, जैसा कि पौलुस कहता है, उसे “अतिथि सत्कार करने वाला” होना चाहिए। यह अभिव्यक्ति फिलोक्सेनोस विशेषण का अनुवाद है, जिसका संज्ञा रूप “अजनबियों से प्रेम” के अर्थ में प्रयोग होता है। पौलुस का आशय यह था कि अतिथि-सत्कार करने का अर्थ है बिना किसी प्रतिफल की अपेक्षा के आगंतुकों के लिए अपने घर के द्वार खोल देना।

“अजनबियों” के लिए सामान्य शब्द ज़ेनोस है। प्रभु यीशु ने मत्ती 25:31-40 में स्वयं इसका प्रयोग किया था। यहोशापात की घाटी में राष्ट्रों के आने वाले न्याय का वर्णन करते हुए, उसने कहा, “तब राजा कहेगा... मैं परदेशी [ज़ेनोस] था, और तुमने मुझे अपने घर में ठहराया।” ये शब्द उन लोगों के लिए होंगे जो महाक्लेश के अंधकारमय दिनों में यहूदियों के प्रति दयालु होंगे। वे अचंभित होकर कहेंगे, “हमने कब तुझे परदेशी [ज़ेनोस] देखा?” राजा उत्तर देगा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।” इसके विपरीत, प्रभु उन लोगों का न्याय करेंगे जो यहूदियों पर कोई दया नहीं करेंगे, न उनका सत्कार करेंगे। जो लोग उसके लोगों के साथ परदेशियों जैसा रूखा व्यवहार करते हैं, वे “अनन्त दण्ड भोगेंगे।”

इब्रानियों 13:2 में प्रेरित ने लिखा, “अतिथि-सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कुछ लोगों ने अनजाने में स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया है।” अब्राहम, लूत, मानोह और गिदोन, सभी ने स्वर्गदूतों का आतिथ्य किया। चाहे हमें कभी स्वर्गदूतों का सत्कार करने का अवसर मिले या न मिले, हम निश्चय

जानते हैं कि जब हम प्रभु के लोगों का आतिथ्य करते हैं, तब वास्तव में हम उसी का आतिथ्य कर रहे होते हैं।

प्राचीनों को अतिथि-सत्कार को केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि एक आनंद की बात समझनी चाहिए। उन्हें अतिथि-सत्कार करना प्रिय लगना चाहिए। जब पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा (और सम्भवतः जब इब्रानियों की पत्नी भी लिखी गइ), तब नीरो का अत्याचार पूरे रोमी साम्राज्य में उग्र रूप से फैल रहा था। बहुत से मसीही अपने घरों से निकाले गए शरणार्थी बन गए थे। उन्हें अपने घर में ठहराना वास्तव में खतरनाक हो सकता था; फिर भी, भक्ति प्राचीनगण—जो अतिथि-सत्कार में तत्पर और समर्पित थे—किसी भी खतरे की परवाह न करते हुए इन “परदेशियों” को, जो अपने घरों से दूर थे, रहने और खाने की व्यवस्था प्रदान करते थे।

सेवकाई संबंधी दूसरी आवश्यकता यह है कि एक प्राचीन अपने आत्मिक वरदान के लिए जाना जाए। उसे स्थानीय कलीसिया में एकत्र लोगों या अपनी मेज़ के चारों ओर बैठे लोगों को सिखाने में “निपुण” होना चाहिए। “सिखाने में निपुण” के रूप में मूल रूप से प्रयुक्त शब्द दिदाक्तिकोस है, जिसका अर्थ है “शिक्षा देने में निपुण” या “सिखाने में कुशल।”

अन्य सभी कौशलों की तरह, वचन सिखाने की क्षमता रातोंरात हासिल नहीं होती। बाइबल पुस्तकों का एक पुस्तकालय है, और इसकी विषय-वस्तु का गहन और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने और ठोस व्याख्यात्मक सिद्धांतों से परिचित होने के लिए वर्षों के परिश्रमपूर्ण अध्ययन की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक को बाइबल के व्यापक आंदोलनों को समझना चाहिए; इसके अनेक लोगों से मिलना चाहिए; इसके प्रमुख सिद्धांतों में निपुणता प्राप्त करनी चाहिए; इसके महत्वपूर्ण सिद्धांतों को लागू करना चाहिए; इसके भूगोल, इतिहास, संस्कृतियों और विषयों का मूल्यांकन करना चाहिए; उन भाषाओं के बारे में सोचना चाहिए जिनमें इसे मूल रूप से लिखा गया था; इसकी संरचना का अध्ययन करना चाहिए; किसी भी दिए गए पद की पृष्ठभूमि और संदर्भ पर ध्यान देना चाहिए; और विभिन्न पद्यांशों की तुलना करनी चाहिए। एक प्राचीन को सिखाने के इन सभी पहलुओं में निपुण होने का लक्ष्य रखना चाहिए।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अर्जित शिक्षण-कौशल और पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किए गए आत्मिक वरदान के बीच अंतर होता है। केवल इसलिए कि किसी व्यक्ति ने आवश्यक ज्ञान और तकनीकें सीख ली हैं, यह आवश्यक नहीं कि वह एक अच्छा शिक्षक भी होगा—यहाँ तक कि सांसारिक क्षेत्र में भी। हम सबने नीरस डॉक्टरों को बोलते सुना है और प्रभावशाली ढंग से बोलने वाले साधारण लोगों से प्रभावित भी हुए हैं। केवल ज्ञान अर्जित कर लेना यह सिद्ध नहीं करता कि किसी व्यक्ति पर आत्मा का अभिषेक है। आत्मिक सत्य को समझने और इस प्रकार प्रस्तुत करने के लिए कि लोगों के जीवन प्रकाशित हो सके और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित हों, आत्मिक वरदान और पवित्र आत्मा का अभिषेक आवश्यक है। आत्मा के अभिषेक और वरदान के बिना, केवल ज्ञान का बाँटना निर्जीव और निष्फल हो सकता है।

(ख) एक प्राचीन के लिए व्यापक आवश्यकताएँ (3:3-7)

i. उसके संबंध (3:3क-ग)

अपनी योग्यताओं की सूची में कुछ नकारात्मक बातें जोड़ते हुए, पौलुस ने तीन ऐसी लतों का उल्लेख किया जो एक प्राचीन के जीवन में स्पष्ट रूप से अनुपस्थित होनी चाहिए। पहली बात, एक अध्यक्ष को मद्यपान का आदी नहीं होना चाहिए। “पियक्कड़” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द पेरोइनॉस है, जिसका अनुवाद “उत्पात मचाने वाला” भी किया जा सकता है (क्योंकि मद्यपान कुछ लोगों को उत्पाती बना देता है) या “दाखरस के कारण झगड़े रगड़े में फँस” जाता है।” नीतिवचन में मदिरापान के विरुद्ध अनेक कठोर चेतावनियाँ दी गई हैं (नीतिवचन 23:29-35; 31:4-7)। जो व्यक्ति मदिरा का आदी है, वह कलीसिया में अध्यक्ष बनने के योग्य नहीं है।

दूसरा, एक अध्यक्ष को क्रोध का आदी भी नहीं होना चाहिए। “मारपीट करनेवाला” शब्द एक झगड़ालू व्यक्ति की छवि प्रस्तुत करता है जो हमेशा लड़ने को तैयार रहता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के झुंड की रखवाली करने के बिल्कुल भी योग्य नहीं है।

तीसरा, एक अध्यक्ष को धन का आदी नहीं होना चाहिए। पौलुस के शब्दों में, उसे “धन का लोभी” नहीं होना चाहिए। “धन का लोभी” धन या पैसे के लिए प्रयुक्त एक पर्यायवाची शब्द है। धन का लोभी व्यक्ति कलीसिया प्राचीन बनने के लिए अयोग्य है। आखिरकार, “धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है” (1 तीमुथियुस 6:10)।

ii. उसका व्यवहार (3:3घ-च)

पौलुस ने आगे “धैर्य” के विषय में बात की है। नकारात्मक शब्दों में कहें तो, एक प्राचीन को कभी क्रोधी नहीं होना चाहिए। यहाँ “धैर्य” शब्द का अनुवाद नम्रता, निष्पक्षता और समझदारी का संकेत देता है। एक प्राचीन के लिए यह कितना वांछनीय गुण है!

यह शब्द ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो अत्यधिक कठोर नहीं होता और अपने अधिकार के लिए हठपूर्वक आग्रह नहीं करता। जो व्यक्ति लोगों और उनकी समस्याओं से व्यवहार करता है, उसे चिड़चिड़ा या कठोर नहीं होना चाहिए। उसे हर परिस्थिति में व्यवस्था की अक्षरशः कठोरता पर जोर नहीं देना चाहिए। क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति परिस्थितियों को और बिगाड़ सकता है, और वे आसानी से भड़क सकती हैं। यहाँ कोमल व्यवहार की आवश्यकता होती है, और जब दृढ़ता की जरूरत हो, तब भी नम्रता को प्रदर्शित करें। “कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है” - ऐसा बुद्धिमान ने नीतिवचन 15:1 में लिखा है।

पौलुस ने यह भी संकेत किया कि एक अध्यक्ष को झगड़ालू नहीं होना चाहिए। वह “मारपीट करने वाला” न हो। 1 तीमुथियुस 3:3 में “न झगड़ालू हो” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द अमाखोस है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “लड़ाई न करने वाला।” एक अध्यक्ष को झगड़ालू स्वभाव का व्यक्ति नहीं होना चाहिए, जो ज़रा-सी उकसावे पर लड़ने को तैयार हो जाता है। उसे अपने झुंड का नेतृत्व उसी प्रकार करना चाहिए जैसे एक पूर्वी चरवाहा अपनी भेड़ों की करता है। वह अपने झुंड को हाँकता नहीं और न ही कुत्तों से उन्हें दौड़ाता है। इसके विपरीत, वह उन पशुओं के साथ एक मित्रता पूर्ण संबंध स्थापित करता है जो उसकी देखभाल में सौंपे गए हैं। वह उन्हें नाम से जानता है, कठिन स्थानों से पार कराता है, हरी चराइयों और शांत जल के पास ले जाता है, उनके घावों की मरहम-पट्टी करता है, उनके बच्चों की देखभाल करता है, और उन्हें शत्रुओं से बचाता है। यदि चरवाहा लड़ता है, तो वह अपनी भेड़ों से नहीं, बल्कि भेड़ियों से लड़ता है।

इसके अलावा, एक प्राचीन को धन का लोभी नहीं होना चाहिए। यहाँ "न लोभी हो" शब्द के लिए प्रयुक्त शब्द अफिलार्गुरोस है, जिसका अर्थ है "धन का लोभी न होना", इसलिए एक प्राचीन को धन के लोभ से अपने आप को मुक्त रखना चाहिए। लोभ व्यक्ति का ध्यान लोगों के बजाय उनकी वस्तुओं पर, परलोक के बजाय इस संसार की चीज़ों पर केंद्रित करता है। यह बिलकुल सही कहा गया है कि दो तरह के लोग होते हैं: वे जो चीज़ों से प्यार करते हैं और लोगों का इस्तेमाल करते हैं, और वे जो लोगों से प्यार करते हैं और चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं। यकीनन, धन का होना कोई बुराई नहीं है, लेकिन से प्रेम करना और उसकी लालसा करना पूरी तरह से गलत है।

iii. उसकी उपलब्धियाँ (3:4-7)

क. माता-पिता के रूप में (3:4-5)

3:4 में, पौलुस ने माता-पिता के रूप में उपलब्धियों का नियम बताया: एक प्राचीन को "अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन" रखने वाला होना चाहिए। यहाँ "अधीनता" शब्द वही है जो 2:11 में कलीसिया में महिलाओं के पुरुषों के अधिकार के अधीन होने का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यह मुख्यतः एक सैन्य शब्द है। यह एक सरल पवित्रशास्त्रीय सिद्धांत है कि बच्चों को घर में आज्ञाकारिता सीखनी चाहिए, जहाँ माता-पिता को अपने बच्चों पर अधिकार और प्रभुता करना चाहिए। जब बच्चे मनमौजी, झगड़ालू और जिद्दी होते हैं और उन्हें अवज्ञाकारी और गुस्से से बचने की छूट होती है, तो यह स्पष्ट है कि उनके माता-पिता उन पर से अपना नियंत्रण खो चुके हैं।

3:4 में 'गंभीरता' शब्द आदरणीयता और गरिमा का संकेत देता है। यह वह गुण है जो बच्चों में अपने पिता के प्रति सम्मान और विस्मय की भावना पैदा करता है। यकीनन, ऐसी प्रतिक्रिया अर्जित करनी होती है। एक पिता अपने बच्चों को डराकर या पीटकर सम्मान नहीं कमाता। दृढ़ता और निष्पक्षता अधिक प्रभावी होती हैं।

इस नियम का कारण स्पष्ट रूप से 3:5 में बताया गया है: "जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?" इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है।

जब परमेश्वर ऐसे अध्यक्षों की खोज करता है जिनके हाथों में वह अपनी कलीसिया की देखरेख सौंप सके, तो वह अब्राहम जैसे पुरुषों की तलाश करता है। अब्राहम पुराने नियम के महानतम पुरुषों में से एक था। विश्वास के संदर्भ में वह महान था; वह "उन सब का पिता" बना जो विश्वास करते हैं (रोमियों 4:11)। वह अपने भविष्य के संदर्भ में भी महान था—चाहे वह सांसारिक प्रतिज्ञाएँ हों (उत्पत्ति 12:1-3; 15:18) या अनन्त प्रतिज्ञाएँ (इब्रानियों 11:8-10)। और वह अपने परिवार के संदर्भ में भी महान था। इसी कारण परमेश्वर अब्राहम पर भविष्य की घटनाएँ प्रकट कर सकता था। उसने कहा, "क्या मैं वह बात जो मैं करने पर हूँ, अब्राहम से छिपाऊँ...? क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, कि वह अपने पुत्रों और अपने घराने को अपने पीछे आज्ञा देगा, और वे यहोवा के मार्ग का पालन करेंगे" (उत्पत्ति 18:17-19)।

ख. व्यक्तिगत क्षेत्र में (3:6)

पौलुस ने व्यक्तिगत क्षेत्र में उपलब्धियों के विषय में एक दृढ़ आज्ञा दी: एक प्राचीन “नया चेला” न हो, “ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए।” यहाँ “नया चेला” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह दो शब्दों से बना है—एक का अर्थ है “नया” और दूसरे का अर्थ है “अंकुरित होना” या “उग आना।” इसलिए अध्यक्ष वह न हो जो अभी-अभी उगा हो, अर्थात् नया मन फिराया हुआ (नव-विश्वासी) न हो। एक अनुभवहीन व्यक्ति कलीसिया का अगुवा बनने के योग्य नहीं होता। भले ही वह व्यापार में अच्छी तरह स्थापित हो सकता है; संसार के मापदण्ड के अनुसार वह शिक्षित और अनेक प्रकार से सक्षम हो सकता है; परन्तु यदि वह हाल ही में उद्धार पाया हुआ है, तो वह कलीसिया में अध्यक्ष या निरीक्षक बनने के लिए अभी अयोग्य है।

यह मनाही जितनी कलीसिया की भलाई के लिए है, उतनी ही उस व्यक्ति की अपनी भलाई के लिए भी है। यदि उसे बहुत शीघ्र गति से पदोन्नति दे दी जाए, तो वह नया विश्वासी “अभिमान से फूल” सकता है। यहाँ “अभिमान करना” या “फूल जाना” के लिए जो शब्द है, उसका शाब्दिक अर्थ है “धुआँ उठाना।” धुआँ अपनी ओर ध्यान तो आकर्षित करता है, पर उसमें कोई ठोस तत्व नहीं होता।

यदि नया मन फिराया हुआ व्यक्ति अभिमान से भर उठता है, तो उसे “शैतान का सा दण्ड” मिलने का खतरा होता है। इसी घमंड के कारण लूसीफ़र शैतान में बदल गया और उसे स्वर्ग से निकाल दिया गया (यशायाह 14:12-15)।

ग. सार्वजनिक क्षेत्र में (3:7)

सार्वजनिक क्षेत्र में, एक प्राचीन का “बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फँस जाए।” इसी प्रकार, पहले सहायक सेवकों के लिए तीन मूलभूत योग्यताओं में से एक यह थी कि वे “सुनाम पुरुष” हों (प्रेरितों के काम 6:3)। किसी स्थानीय कलीसिया की गवाही के लिए इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता कि वह किसी बुरी प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति को प्राचीन या अध्यक्ष के रूप में चुन ले।

संसार बहुत शीघ्र कपटी व्यक्ति को पहचान लेता है। जो व्यक्ति कार्यस्थल पर गंदी भाषा का प्रयोग करता है, या अपने बिलों का भुगतान नहीं करता, या विवाह के बाहर संबंध रखता है, या कानून के मामलों में उलझा रहता है, या अपने परिवार के साथ दुर्व्यवहार करता है—उसे अध्यक्ष बनने का कोई अधिकार नहीं है। सार्वजनिक राय को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

ख. स्थानीय कलीसिया का सांसारिक नेतृत्व—सहायक सेवक / डीकन (3:8-13)

पौलुस ने अब अपना ध्यान उन लोगों की ओर लगाया जिन्हें स्थानीय कलीसिया के नेतृत्व से जुड़ी सामान्य और दैनिक जिम्मेदारियों को सँभालने के लिए नियुक्त किया जाता है। यरूशलेम के प्रेरितों ने सहायक सेवकों (डीकनों) के कार्य को “खिलाने-पिलाने की सेवा” कहा (प्रेरितों के काम 6:2), परन्तु इसके अतिरिक्त भी असंख्य नियमित कार्य होते हैं जिन्हें पूरा किया जाना आवश्यक है। पौलुस ने ऐसे विशेष पुरुषों के समूह की कल्पना की जो इस प्रकार की सेवा के लिए अभिषिक्त किए जाएँ। यद्यपि उनके कार्य सांसारिक प्रतीत हो सकते हैं, फिर भी उनकी योग्यताएँ आत्मिक हैं और प्राचीनों के लिए निर्धारित योग्यताओं के समान स्तर की हैं।

1 तीमुथियुस 3:8 में “डीकन” के लिए प्रयुक्त शब्द ऐसे सेवक की ओर संकेत करता है जो अपने कार्य में सक्रिय और समर्पित हो। पौलुस ने अपनी पत्रियों में इस शब्द का बाईस बार उपयोग किया है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह शब्द एक बार भी नहीं मिलता, यद्यपि उसी पुस्तक में लूका ने डीकन पद की स्थापना की ओर पहला प्रारम्भिक कदम अवश्य दर्ज किया है। प्रेरितों के काम 6:1-6 में, उसने उन योग्य और आत्मिक रूप से सक्षम पुरुषों को अलग किए जाने का वर्णन किया है, जिन्हें स्थानीय कलीसिया के सेवक के रूप में कार्य करने के लिए चुना गया। इस पद के लिए चुने गए उन सात पुरुषों को प्रेरितों द्वारा अभिषेक करके नियुक्त किया गया था।

‘डायकोनोस’ शब्द को नये नियम के दूसरे सामान्य शब्द, जिसका अनुवाद “सेवक” होता है, डूलोस (“बंधुआ दास”) से अलग किया जाना चाहिए। डूलोस का प्रयोग करने वाला लेखक उस सेवक और उसके स्वामी के बीच के संबंध को ध्यान में रखता है; डायकोनोस का प्रयोग करने वाला लेखक उस सेवक और उसके कार्य के बीच के संबंध को ध्यान में रखता है। पौलुस ने तीमुथियुस को डीकन की सेवकाई के बारे में लिखते समय डायकोनोस शब्द का प्रयोग किया था, क्योंकि डीकन को कलीसिया का सेवक होना चाहिए और उसे काम करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

लूका ने जिस “खिलाने-पिलाने की सेवा” का उल्लेख किया, वह उस महान सामूहिक प्रयोग से संबंधित था जिसमें उस समय की कलीसिया लगी हुई थी। प्रारम्भिक दिनों में विश्वासियों की सब वस्तुएँ साझा की थीं; इस प्रकार उन्होंने लगभग दो हजार वर्ष पहले ही साम्यवाद के नारे—“हर एक से उसकी क्षमता के अनुसार, और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार”—का पूर्वाभास कर लिया था। किन्तु मानव स्वभाव जैसा है, उसके कारण यह सब कुछ समान रूप से मिल-बाँटकर रखने की व्यवस्था सफल नहीं हो सकी।

परन्तु इस प्रयोग के असफल होने से पहले, अनेक नए विश्वासियों ने (अपने उद्धार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए) अपनी संपत्ति बेचकर उसकी पूरी राशि एक साझा कोष में जमा कर दी। उस धन का उपयोग प्रभु के लोगों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता था। किन्तु, शीघ्र ही कुछ लोगों ने शिकायत करना शुरू कर दिया कि यह व्यवस्था कुछ के लिए लाभदायक और कुछ के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही है। इन कथित असमानताओं (चाहे वे वास्तविक हों या केवल काल्पनिक—यह मुख्य बात नहीं थी) को समाप्त करने के लिए प्रेरितों ने सात ऐसे अच्छी गवाही वाले पुरुषों को अलग चुनने की सलाह दी जो चरित्र, क्षमता और आत्मिक हों, ताकि वे “इस काम” को सँभालें। इस प्रकार वे प्रेरितों को एक असंभव प्रशासनिक बोझ से मुक्त कर सकते थे। धन के प्रबंधन और मेज़ की सेवा जैसे कार्य सौंपकर, प्रेरित स्वयं अपनी सेवकाई के अधिक आत्मिक पक्ष में समर्पित रह सकते थे। जब तक पौलुस ने तीमुथियुस और तीतुस को यह पत्री लिखी, तब तक सहायक सेवकों (डीकनों) के काम को औपचारिक रूप से स्थापित करना आवश्यक हो गया था।

आजकल एक सहायक सेवक (डीकन) का कार्य केवल कलीसिया के धन का प्रबंधन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें उसकी इमारतों का प्रबंध, व्यावसायिक लेन-देन और परोपकारी कार्यों की देखरेख भी शामिल होती है। यदि सहायक सेवकों का चयन उचित रूप से किया गया हो, तो प्राचीनों को इन मामलों में केवल सीमित रूप से ही सम्मिलित होना चाहिए। आत्मिक अगुवों को अधिक लाभदायक रूप से प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, सुसमाचार प्रचार, पास्टरीय सेवा और शिक्षा में लगाया जा सकता है। इसका यह अर्थ

नहीं कि सहायक सेवक उन लोगों से कम आत्मिक हो जो वचन का उपदेश और प्रचार करने के लिए बुलाए गए हैं। वास्तव में, सहायक सेवक के लिए पौलुस द्वारा दी गई योग्यताओं की सूची लगभग उतनी ही लंबी है जितनी प्राचीनों के लिए है, और उनमें से कुछ योग्यताएँ समान भी हैं।

(1) एक निर्दोष व्यक्ति के रूप में सहायक सेवक (3:8)

(क) उसका स्वभाव (3:8क)

"वैसे ही," पौलुस ने आगे लिखा, "सेवकों को भी गंभीर [सेमनोस] होना चाहिए।" पौलुस ने यही शब्द फिलिप्पियों 4:8 में भी प्रयोग किया है (जहाँ उसने सच्चे "सकारात्मक चिन्तन की शक्ति" का उत्कृष्ट सार प्रस्तुत किया), और भाइयों से कहा कि वे "जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय [सेमनोस] हैं..।" उन्हीं बातों पर मन लगाएँ। यह शब्द उस बात की ओर संकेत करता है जो सम्माननीय, गरिमामय और गंभीर हो। सेवक होना एक गंभीर विषय है। यह पद किसी हँसी-मज़ाक करने वाले या हल्के स्वभाव के व्यक्ति के लिए नहीं है।

नये नियम के अर्थ में सहायक सेवक (डीकन) का पद कठिन परिश्रम और प्रायः लंबे समय की माँग करता है। एक सहायक सेवक को अपने पवित्र कार्य में उतना ही परिश्रमी होना चाहिए जितना वह अपने सांसारिक व्यवसाय में होता है। यह आश्चर्य की बात है कि कुछ सहायक सेवक अपने पेशे में अपना पूरा मन और प्राण लगा देते हैं, और फिर मुड़कर कलीसिया की सेवा में उदासीनता का भाव दिखाते हैं।

(ख) उसकी जीभ (3:8ख)

पौलुस द्वारा दी गई अगली योग्यता यह है कि सहायक सेवक "दोरंगी" बात करने वाला न हो। "दोरंगी" के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल इसी स्थान पर मिलता है, और इसका अर्थ है "एक ही बात को दो तरह से कहना" या "बातों को तोड़ने-मरोड़ने वाला।"

दोरंगी मनुष्य एक व्यक्ति से कुछ कहता है, और फिर जब दूसरे से बात करता है तो उसी विषय को बिल्कुल अलग ढंग से प्रस्तुत करता है। आज के समय में हम ऐसे दोरंगी व्यक्ति को "दो-मुँहा" कह सकते हैं (साँप की तरह दो जीभ वाला), या यह कह सकते हैं कि वह अपने "दोगले मुँह से बातें करता है।"

किसी स्थानीय कलीसिया में दोहरी बात करने वाले सहायक सेवक से अधिक विनाशकारी कुछ भी नहीं हो सकता। एक सहायक सेवक को अत्यन्त उच्च चरित्र वाला व्यक्ति होना चाहिए, क्योंकि उसे अक्सर संवेदनशील विषयों से निपटना पड़ता है। उसे अपनी जुबान पर नियंत्रण रखना आना चाहिए, चाहे कोई भी उससे जानकारी निकालने का प्रयास करे—यहाँ तक कि उसकी अपनी पत्नी ही क्यों न हो। उसके लिए बेहतर है कि वह कुछ भी न कहे, बजाय इसके कि वह एक व्यक्ति से एक बात कहे और दूसरे से कुछ और। जो व्यक्ति बातचीत में अविश्वसनीय होने की बदनामी कमा लेता है, वह अपने पद में निरर्थक हो जाता है, क्योंकि कोई भी ऐसे ढीली जुबान वाले सहायक सेवक पर विश्वास करके अपनी बात साझा करना नहीं चाहता।

दाऊद की पत्नी मीकल (1 शमूएल 19:10-17 को देखें) दोहरी बात करने वाले व्यक्ति का एक उत्तम बाइबल उदाहरण है। एक बार जब उसके पिता, राजा शाऊल, दाऊद को मार डालना चाहता था, तो दाऊद

घबराकर घर आया। मीकल ने सहानुभूति जताते हुए कहा, “यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो सबेरे मारा जाएगा।” यह सुनकर वहाँ से दाऊद भाग गया। जब शाऊल के अधिकारी उसे गिरफ्तार करने के आदेश के साथ घर पहुँचे, तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” परन्तु थोड़े ही समय बाद, जब वह अपने क्रोधित पिता के सामने खड़ी हुई, तो उसने बिल्कुल अलग कहानी सुना दी। दाऊद के पक्ष में खड़े होने के बजाय उसने उसके विषय में झूठ कहा। साथ ही उसने यह भी जोड़ते हुए कहा, “यदि मैं उसके भागने में बाधा डालती, तो वह मुझे मार डालता।”

बाद में, जब वह अभी भी कानूनी रूप से दाऊद की पत्नी थी, तो उसने अपने पिता का साथ देते हुए पलती नामक व्यक्ति से विवाह करने के लिए सहमति दे दी (1 शमूएल 25:44)। परमेश्वर ऐसे डगमगाने वाले और दोरंगी व्यवहार को उस व्यक्ति में नहीं देखना चाहता जो उसके लोगों की सेवा के लिए बुलाया गया है।

बाइबल के पन्नों के बाहर भी, हमें हर जगह ऐसे दोमुँहे लोगों के उदाहरण मिलते हैं। ट्रेजर आइलैंड में, रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन हमें वाक्पटु समुद्री डाकू लॉन्ग जॉन सिल्वर से परिचित कराते हैं; बार-बार यह बूढ़ा बदमाश अपनी दोहरी भाषा का इस्तेमाल लोगों को गुमराह करने, धोखा देने या मुश्किल स्थिति से खुद को बाहर निकालने के लिए करता है।

पेरिलेड्रा में, सी. एस. लुईस हमें शुक्र ग्रह पर शैतान के वाक्पटु प्रतिनिधि वेस्टन से परिचित कराते हैं; वह अपनी दोहरी भाषा का इस्तेमाल उस जगह की महिला को लॉर्ड मालेल्डिल के प्रति अपनी निष्ठा छोड़ने के लिए मनाने के लिए करता है।

सर हेनरी राइडर हैगार्ड द्वारा लिखित कर्नल क्वारिच में, हम गाँव के वकील क्वेस्ट का कपट देखते हैं। ओलिवर ट्विस्ट में, चार्ल्स डिकेंस हमें चालाक बूढ़े फेगिन से परिचित कराते हैं, जो अपनी चालाक वाणी से गरीब अनाथ ओलिवर को नैतिक सत्यनिष्ठा के मार्ग से भटकाने का प्रयास करता है।

जीवन के पथ पर हम सभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिन्होंने हमसे बड़ी वाक्पटुता से, परन्तु कपटपूर्ण ढंग से बातें की हैं—मानो वे मुँह के गलत छोर से बोल रहे हों। परन्तु समुद्री डाकूओं, पागल वैज्ञानिकों, बेईमान वकीलों और भ्रष्ट व्यापारियों से हम और क्या अपेक्षा कर सकते हैं?

जब उनके झूठ पर सफलता का ताज सजा हुआ दिखाई देता है, तो संसार शायद अनिच्छा से ही सही, उनकी प्रशंसा कर दे। परन्तु पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है कि दोरंगी लोग परमेश्वर की कलीसिया में ‘खिलाने-पिलाने की सेवा’ करने के भी योग्य नहीं हैं।

(ग) उसके प्रलोभन (3:8ग-घ)

i. मदिरा (3:8ग)

पौलुस ने कहा कि एक सहायक सेवक “पियक्कड़” न हो। यहाँ “पियक्कड़” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह ओइनॉस है। यह नये नियम में दाखरस के लिए एक सामान्य शब्द है।

यही शब्द इफिसियों 5:18 में भी प्रयोग हुआ है (जहाँ स्पष्ट रूप से मद्यपान का विचार निहित है); यूहन्ना 2:10 में; और 1 तीमुथियुस 5:23 में, जहाँ पौलुस अपने युवा सहकर्मी को औषधीय प्रयोजन के लिए संयम से दाखरस लेने की सलाह देता है।

एक डीकन को कभी भी अति-विलासिता में नहीं पड़ना चाहिए। एक नशे में धुत्त सेवक से अधिक बुरा और क्या हो सकता है? यद्यपि बाइबल विशेष रूप से पूर्ण-त्याग की आज्ञा नहीं देती, फिर भी वह मद्यपान और मतवालापन के विरुद्ध अत्यन्त कठोर शब्दों में चेतावनी देती है (1 कुरिन्थियों 6:9-10; गलातियों 5:19-21)। नये नियम की यह चेतावनी कि किसी भी ऐसी बात में लिप्त न हों जिससे कोई भाई ठोकर खाए, व्यवहारिक रूप से दाखरस के प्रयोग को लगभग पूर्णतः निषिद्ध कर देती है (रोमियों 14:21)।

सहायक सेवकों की योग्यताओं का चित्रण पुराने नियम की नाज़ीर की व्यवस्था में देखा जा सकता है। नये नियम के सहायक सेवक की तरह ही, पुराने नियम का नाज़ीर भी परमेश्वर के लिए अलग ठहराया गया व्यक्ति था, यद्यपि उनके अभिषेक में कुछ भिन्नताएँ थीं। नाज़ीर को वाचाओं के द्वारा परमेश्वर के लिए समर्पित किया गया; जबकि सहायक सेवक अपनी बुलाहट के द्वारा अभिषिक्त होता है। नाज़ीर की प्रतिज्ञा उसे एक निश्चित अवधि के लिए अलग करती थी; सहायक सेवक का अभिषेक उसे एक निश्चित उद्देश्य के लिए अलग करता है। जीवनभर के लिए केवल तीन ही नाज़ीर हुए: शमूएल, शिमशोन, और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला।

नाज़ीर को अपने बाल लंबे बढ़ाने होते थे; उसे किसी भी मृत शरीर को छूने की मनाही थी (यहाँ तक कि किसी प्रियजन का भी नहीं); और उसे किसी भी तरह के दाखरस के उपयोग से वर्जित किया गया था। उसके लंबे बाल यह घोषित करते थे कि उसका व्यक्तित्व और उसका बाहरी रूप मानो वेदी पर अर्पित है। भीड़ में उसे आसानी से पहचाना जा सकता था; वह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के लिए अलग ठहराया हुआ व्यक्ति था। मृत शरीरों से उसकी पूर्ण दूरी यह दर्शाती थी कि उसके स्नेह और भावनाएँ भी वेदी पर अर्पित हैं। उसके और परमेश्वर के बीच उसके निकटतम संबंधी या मित्र भी नहीं आ सकते थे। नाज़ीर स्वयं को एक मृत संसार के हर प्रकार के संपर्क से अलग रखता था।

दाखरस से उसका पूर्ण परहेज़ यह घोषित करता था कि उसकी भूख-प्यास और उसकी इच्छाएँ भी वेदी पर अर्पित हैं। यहाँ तक कि दाखरस का वैध उपयोग भी उसके लिए वर्जित था। वास्तव में, दाखलता से उत्पन्न होने वाली हर वस्तु उसके लिए वर्जित थी। उसे केवल धार्मिकता के लिए भूखा और प्यासा रहना था। इस मनाही की अवहेलना इस्राएल को दण्डस्वरूप अश्शूरियों के हाथों सौंपे जाने के कारणों में से एक थी। आमोस 2:12 में, भविष्यद्वक्ता ने गंभीरता से परमेश्वर का यह आरोप प्रकट किया: “तुम ने नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया।” परमेश्वर न तो मतवाले नाज़ीरों को सहन करेगा, और न ही ऐसी जाति को जिसने अपने ईश्वरीय उद्देश्य की समझ इतनी खो दी हो कि वह जानबूझकर उन लोगों को भटकाने का प्रयास करे जो उसी उद्देश्य के लिए अलग ठहराए गए थे। परमेश्वर ने पुराने नियम की वाचाओं को गंभीरता से लिया, और निश्चय ही वह सहायक सेवक की बुलाहट को भी उतनी ही गंभीरता से लेता है। कलीसिया में कोई भी पियक्कड़ सहायक सेवक नहीं होना चाहिए।

ii. धन (3:8घ)

सेवक को धन के विषय में भी निर्दोष होना चाहिए। पौलुस ने कहा कि वह “नीच कमाई के लोभी” न हो। यहाँ “लोभी” के लिए प्रयुक्त शब्द ऐसे व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करता है जो धन कमाने के लिए अत्यन्त व्याकुल रहता है। पुराने शब्द लाभ में हम अपने आधुनिक शब्द लाभदायक की जड़ पहचान सकते हैं। कोई भी सहायक सेवक केवल धन कमाने के उद्देश्य से सेवा में नहीं होना चाहिए। परमेश्वर लालची डीकन

नहीं चाहता, ठीक जैसे कि वह पियक्कड़ डीकन को भी नहीं चाहता। यदि कोई व्यक्ति अपनी सेवा के बदले अच्छा पारिश्रमिक पाने की इच्छा से प्रेरित है, तो सम्भव है कि वह इस पद के लिए अयोग्य हो।

प्रभु के चेलों में से एक "नीच कमाई का लोभी" था। उसका नाम यहूदा था। वह थैला अपने पास रखता था, प्रेरितों की संगति के लिए लेखा-जोखा संभालता था, उनकी दान-सेवाओं का प्रभारी था, राशन खरीदता था और बिल चुकाता था। परन्तु समस्या यह थी कि उसे उस थैले में से अपने लिए भी हाथ साफ करने की आदत पड़ गई थी। वह सोचता था कि उसे ऐसा करने का अधिकार है; शिष्य होना उतना लाभदायक सिद्ध नहीं हो रहा था जितनी उसने अपेक्षा की थी। अब तक, उसके हाथ केवल थोड़े-बहुत सिक्के ही लगे थे।

जब यहूदा पहली बार मसीही आन्दोलन से जुड़ा, तो वह बड़ी आशाओं से भरा हुआ था। निस्संदेह उसने अपने मन में यह कल्पना की होगी कि सहस्राब्दी राज्य में उसे कोई ऊँचा और लाभदायक पद मिलेगा। सम्भव है कि उसने स्वयं को खजाने का मंत्री या कोषाध्यक्ष बनने की कल्पना की हो। परन्तु जब उसकी आशाएँ धुंधली पड़ने लगीं, तो उसने यीशु को उनके शत्रुओं के हाथ बेचकर लाभ उठाने का निश्चय किया। यहूदा को अधिक कुछ नहीं मिला—केवल एक स्त्री-गुलाम के मूल्य के बराबर राशि ही मिली। वह ऐसा सहायक सेवक था जो “नीच कमाई का लोभी” था, और अंततः उसने जाकर आत्महत्या कर ली।

चूँकि एक सेवक अक्सर अपनी स्थानीय कलीसिया के आर्थिक प्रबंधन में सहायता करता है, इसलिए वह कभी-कभी चोरी करने के प्रलोभन के सामने आ सकता है। आज के समय में प्रायः बड़ी धनराशियाँ सम्मिलित होती हैं, और यह प्रलोभन किसी लालची व्यक्ति पर भारी पड़ सकता है। इसलिए बेहतर यही होगा कि ऐसे व्यक्ति को सहायक सेवक के पद से दूर रखा जाए।

कुछ समय पहले, जब मैं एक अन्य प्रचारक के साथ सामान्य बातचीत कर रहा था, उसने टिप्पणी की, “सूअर ऊपर नहीं देख सकता।” यह बात सही है। सूअर का ध्यान केवल उन बातों पर रहता है जो इस संसार से संबंधित हैं। इसी प्रकार कुछ लोग धन, खेल या मनोरंजन में इतने अधिक उलझ जाते हैं कि उनका सारा ध्यान इसी संसार की बातों पर केंद्रित हो जाता है। धन का प्रेम धीरे-धीरे उनके मन को इस संसार से ऐसा बाँध देता है कि वे ऊपर देखना ही छोड़ देते हैं। यही सुलैमान के साथ हुआ; यह किसी के साथ भी हो सकता है। यीशु ने कहा, “तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते” (मत्ती 6:24)। धन के प्रति अति आकर्षण किसी व्यक्ति को एक डीकन बनने के योग्य नहीं रहने देती।

(2) एक विश्वासयोग्य पुरुष के रूप में सेवक (3:9-10)

(क) सत्य को धारण करने वाला (3:9)

i. उसका दृढ़-विश्वास (3:9क)

एक सेवक को वचन का पालन करने वाला व्यक्ति होना चाहिए। पौलुस ने लिखा कि वह “विश्वास के भेद” को सुरक्षित रखने में समर्थ हो। यहाँ “भेद” शब्द का अर्थ एक पवित्र गुप्त सत्य से है। नये नियम में यह उन महान योजनाओं और उद्देश्यों की ओर संकेत करता है जिन्हें पुराने नियम में तो प्रकट नहीं किया गया था, परन्तु वे नये नियम के प्रकाशन का विषय हैं (रोमियों 16:25; इफिसियों 3:5, 9; कुलुस्सियों 1:26)।

नये नियम में विभिन्न भेद प्रकट होते हैं: स्वर्ग राज्य के गुप्त भेद (मत्ती 13:10-11), अनुग्रह के इस वर्तमान युग में इस्राएल की अंधता का भेद (रोमियों 11:25), कलीसिया के उठा लिए जाने का भेद (1 कुरिन्थियों 15:51), स्वयं कलीसिया का भेद (इफिसियों 3:9-11), अधर्म का भेद (2 थिस्सलुनीकियों 2:7), भक्ति का भेद (1 तीमुथियुस 3:16), और बेबीलोन का भेद (प्रका. 17:5)।

ii. उसका विवेक (3:9ख)

डीकनों के लिए आवश्यक है कि उन्हें कम से कम इन सत्यों का मूलभूत और व्यावहारिक ज्ञान हो और वे उन्हें पूर्ण निष्ठा के साथ धारण करें—“शुद्ध विवेक से।” यहाँ “शुद्ध” शब्द का अर्थ है “शुद्ध किया हुआ, अशुद्धता के किसी भी मिश्रण से रहित, निष्कलंक।”

पौलुस ने डीकनों में विवेक की पवित्रता की अपेक्षा की, क्योंकि विवेक भ्रष्ट हो सकता है, सुन्न पड़ सकता है, और दागा भी जा सकता है।

आदम और हव्वा अदन की वाटिका से अपने साथ केवल एक ही वस्तु लेकर आए थे, वह था विवेक; वे उस वाटिका से परमेश्वर के सामने अपराधबोध की जागरूकता और भले-बुरे के बोझिल ज्ञान के साथ बाहर निकले।

विवेक अपने आप में एक अच्छा प्रेरक (चेतावनी देने वाला अंकुश) हो सकता है, परंतु वह हमेशा अच्छा मार्गदर्शक नहीं होता। इसलिए उसे परमेश्वर के वचन द्वारा नियंत्रित और परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किया जाना आवश्यक है।

(ख) परीक्षा उत्तीर्ण करना (3:10)

“और ये भी,” पौलुस ने डीकनों के विषय में कहा, “पहले परखे जाएँ; तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें।”

उन्हें पदोन्नति से पहले परखा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, डीकनों को भरोसे की जिम्मेदारी सौंपने से पहले परीक्षा में खरा उतरना आवश्यक है। यहाँ “परखे” जाने के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “इस अपेक्षा के साथ जाँचना कि परीक्षा का परिणाम अनुकूल सिद्ध होगा।” ऐसी परीक्षण अवधि की आवश्यकता जीवन के किसी भी क्षेत्र में समझदारी भरी बात है।

जब मैंने ब्रिटेन में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की और एक बड़े बैंकिंग संस्थान में नौकरी के लिए आवेदन किया, तो मेरी लिखित परीक्षा हुई और फिर बैंक के एक अधिकारी ने मेरा व्यक्तिगत साक्षात्कार लिया। कुछ दिनों बाद, बैंक ने मुझे एक पत्र भेजा जिसमें बताया गया था कि मेरा आवेदन स्वीकृत हो गया है और मुझे तीन महीने की परीक्षण अवधि पर रखा जा रहा है। बैंक नियुक्ति के विषय में सावधान था और यह सुनिश्चित करना चाहता था कि संभावित कर्मचारी उन पर किए जाने वाले प्रशिक्षण और विश्वास के योग्य हों।

बैंक अपने कर्मचारियों को पदोन्नति देने में भी उतना ही सतर्क था। अगर सांसारिक संस्थाएँ कर्मचारियों के मामले में इतनी सतर्क हैं, तो कलीसिया को और भी कितना ज़्यादा सतर्क रहना चाहिए!

मूसा को पदोन्नति देने से पहले परमेश्वर ने उसे एक लंबी परीक्षण अवधि से गुज़ारा। मिस्र के शाही परिवार में गोद लिए जाने के बाद, उसने अपने जीवन के पहले चालीस साल मिस्र में मिलने वाली सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त करने में बिताए। उसे "मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह वचन और कर्म दोनों में सामर्थी था" (प्रेरितों के काम 7:22)। फिर परीक्षा आई, और मूसा बुरी तरह असफल रहा। वह एक मिशनरी बनना चाहता था; इसके बजाय, वह एक हत्यारा बन गया और उसे जंगल में भागने के लिए मजबूर होना पड़ा (निर्गमन 2:11-15)। अगले चालीस सालों तक उसे झुंड की देखभाल करना सीखना पड़ा। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद ही परमेश्वर उसे इस्तेमाल कर सकता था।

इसी तरह, दाऊद की भी लंबी परीक्षण अवधि थी। जब शमूएल ने पहली बार जब उसे इस्राएल का अगला राजा होने के लिए अभिषिक्त किया, तब वह लगभग सोलह वर्ष का था, लेकिन जब यहूदा के गोत्र ने उसे राजा अभिषिक्त किया, तब वह तीस वर्ष का था और जब उसे पूरे इस्राएल के राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया, तब वह अड़तीस वर्ष का था। बीच के कई वर्ष कठिनाइयों, कष्टों और सतावों से भरे रहे। अपनी प्रशिक्षण काल के दौरान, उसे अपने नगर में भेड़ों की देखभाल करते हुए, शिविर में गोलियत का सामना करते हुए, दरबार में शाऊल की सेवा करते हुए, और गुफा में खतरे से बचते हुए समय बिताना पड़ा। यदि परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति के लिए इतनी कठोर तैयारी की अपेक्षा करता है जिसे एक सांसारिक राज्य चलाना था, तो वह स्वर्ग-जनित, स्वर्ग से संबंधित कलीसिया जी की अगुवाई करने के लिए बुलाए गए लोगों के लिए कम "परीक्षण" की अपेक्षा क्यों करेगा?

प्राचीन इस्राएल में, लेवियों को पच्चीस वर्ष की आयु में प्रशिक्षण में ले लिया जाता था (गिनती 8:24), लेकिन वे अपनी वास्तविक सेवा तब तक शुरू नहीं करते थे जब तक कि वे तीस वर्ष की आयु तक नहीं पहुँच जाते थे (गिनती 4:2-4)। यूसुफ तीस वर्ष का था जब उसने मिस्र में अपनी सेवकाई शुरू की (उत्पत्ति 41:46)। प्रभु यीशु भी तीस वर्ष का था जब उसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू की (लूका 3:23)। परमेश्वर चाहता है कि परिपक्व और परखे हुए पुरुष उसकी कलीसिया में अधिकारी के रूप में उसकी सेवा करें।

वह यह भी चाहता है कि वे "निर्दोष" हों। यहाँ प्रयुक्त शब्द ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जिसका जीवन इतना निष्कलंक हो कि उस पर कोई आरोप सिद्ध न किया जा सके। एक डीकन के जीवन में ऐसा कुछ भी न हो जिसे सार्वजनिक जाँच-पड़ताल में निकालकर उसके विरुद्ध प्रयोग किया जा सके। उसके विरुद्ध किसी भी प्रकार का आरोप लगाने का कोई आधार नहीं होना चाहिए।

पौलुस ने स्वयं एक निर्दोष जीवन जिया था, जैसा कि इफिसुस के विश्वासी और तीमुथियुस जानते थे (प्रेरितों के काम 20:17-38)।

(3) एक पारिवारिक व्यक्ति के रूप में सेवक (3:11-12)

(क) उसकी पत्नी (3:11)

i. उसका चरित्र (3:11क)

“इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए,” पौलुस ने लिखा। ध्यान दीजिए कि डीकन के लिए जो पहली योग्यताओं में से एक है, वही उसकी पत्नी के लिए भी पहली विशेषता के रूप में दी गई है। डीकन और उसकी पत्नी सेवा कार्य में साथ-साथ होते हैं, इसलिए पत्नी भी पति के समान आदरणीय होनी चाहिए। एक डीकन की सेवा एक गैर-जिम्मेदार पत्नी के कारण आसानी से प्रभावित या कमजोर हो सकती है।

ii. उसकी बातचीत (3:11ख)

सेवकों की पत्नियों को "दोष लगाने वाली" नहीं होना चाहिए। "दोष लगाने वाली" शब्द का अनुवाद डायबोलोस है, जिसका अर्थ है "आरोप लगाने वाली, निंदा करने वाली", और यह शैतान के नामों में से एक है। नये नियम में दुष्ट शैतान के लिए इस उपाधि का प्रयोग लगभग चौतीस बार किया गया है। अदन की वाटिका में, शैतान ने मनुष्य से बात करते समय परमेश्वर पर दोष लगाया। अय्यूब की पुस्तक में, जब शैतान परमेश्वर से बात कर रहा था तब उसने मनुष्य पर दोष लगाया। इसलिए जब परमेश्वर इस बात पर बल देता है कि एक सेवक की पत्नी दोष लगाने वाली न हो, तो उसका तात्पर्य यह है कि एक दोष लगानेवाली स्त्री शैतान का काम करती है और इस प्रकार वह अपने पति को सेवक के पद के लिए अयोग्य ठहराती है।

बाइबल में दोष लगाने वाले (निंदक) का एक प्रसिद्ध उदाहरण सीबा है, जिसने दाऊद के सामने मपीबोशेत की सत्यनिष्ठा को कमजोर करने का प्रयास किया। सीबा काफी हद तक सफल भी हुआ, यद्यपि मपीबोशेत ने विरोध करते हुए कहा, “मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के सामने मेरी चुगली खाई है” (2 शमूएल 19:27)। निंदक लोग खतरनाक होते हैं। वह व्यक्ति दया का पात्र है जो अन्य सभी बातों में डीकन बनने के योग्य हो, परन्तु अपनी पत्नी की दुष्ट वाणी के कारण अयोग्य ठहराया जाए।

iii. उसकी चिंता (3:11ग)

एक सेवक की पत्नी को “सचेत” होना चाहिए। यहाँ जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह 3:2 में “सतर्क” के रूप में अनूदित किया गया है। इसका तात्पर्य “संयमित” या “संतुलित” भी हो सकता है। अर्थात् पौलुस यह कह रहा था कि डीकन की पत्नी को स्थिर और आत्म-संयम रखने वाली स्त्री होनी चाहिए। एक अत्यधिक भावुक या असंयमित पत्नी डीकन की सेवा में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

iv. उसकी स्थिरता (3:11घ)

इसके अलावा, एक सेवक की पत्नी को "सब बातों में विश्वासयोग्य" होना चाहिए। उसपर भरोसा किया जाना चाहिए। संभव है कि पौलुस के मन में नीतिवचन 31 में सुलैमान द्वारा वर्णित आदर्श पत्नी की तस्वीर थी। संभावना है कि वहाँ जिस स्त्री का वर्णन सुलैमान ने किया है, वह शूलेमी स्त्री रही हो, जिसके पास उसे ठुकराने की समझ थी। अपनी सारी बुद्धि और धन-संपत्ति के बावजूद, सुलैमान अपनी पत्नियों के चयन में अत्यंत दुर्भाग्यशाली रहा, जिन्होंने उसके जीवन के अंतिम वर्षों में उसके पतन का कारण बनकर उसे गिरा दिया।

(ख) उसका चाल-चलन (3:12)

पौलुस ने सेवक को एक साथी और एक अभिभावक के रूप में देखा। प्रेरित ने लिखा, "सेवक एक ही पत्नी के पति हों और बाल-बच्चों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों।" यह अपेक्षा प्राचीनों पर लागू होने वाली अपेक्षा के समान ही है।

घर समाज की परमेश्वर द्वारा ठहराई गई मूल इकाई है। जैसा घर चलता है, वैसा ही राष्ट्र चलता है। पति और पिता की अपनी भूमिकाओं में, एक पुरुष उन मनोभावों, अनुशासन, करुणा और कौशलों को विकसित करता है जो उसे कलीसिया में एक अगुवा बनने योग्य बनाते हैं। घर में वह प्रेम, निष्ठा, सहानुभूति और समझ दिखाना सीखता है। घर में ही वह अधिकार, सामर्थ्य और धन का सही प्रबंधन करना सीखता है। घर ही प्राचीनों (अध्यक्षों) और सेवकों (डीकनों) के लिए परीक्षा की भूमि है।

नये नियम में आदर्श सेवक (डीकन) फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक था (प्रेरितों के काम 6:5)। लूका ने उसके बारे में केवल अच्छी बातें ही लिखीं। प्रेरितों के काम 21:8-9 में लूका ने लिखा, "दूसरे दिन [पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत की ओर] हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था; जाकर उसके यहाँ रहे। उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं, जो भविष्यद्वाणी करती थीं।" फिलिप्पुस न केवल अतिथि-सत्कार करने वाला था, बल्कि उसके घर में ऐसी बेटियाँ भी थीं जो परमेश्वर के वचन को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकती थीं। पौलुस को अपने आदर्श सेवक की कल्पना को साकार रूप में देखकर अवश्य ही अत्यंत आनंद हुआ होगा।

(4) एक दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में सेवक (डीकन) (3:13)

जब आदर्श डीकन की सेवकाई का मूल्यांकन किया जाता है, तो उसकी उन्नति निश्चित होती है: "क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस प्राप्त करते हैं।"

दूसरे शब्दों में, डीकन का पद अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं समझा जाना चाहिए। यह परमेश्वर के कार्य में और भी बड़े कार्यों की ओर बढ़ने के लिए एक सीढ़ी बन सकता है। जो लोग डीकन के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को परिश्रमपूर्वक निभाते हैं, वे अपने भविष्य के लिए एक महान निवेश करते हैं।

यहाँ "प्राप्त करते हैं" के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है उसका अर्थ है "अधिकार में लेना, हासिल करना।" पौलुस ने यही शब्द मिलेतुस में इफिसुस के प्राचीनों को व्यक्तिगत रूप से संबोधित करते समय भी प्रयोग किया था। वह उन पर यह गंभीर जिम्मेदारी प्रभावी रूप से रख रहा था, जिसे उन्होंने प्राचीन बनकर स्वीकार किया था। उन्हें कभी नहीं भूलना था कि वे "परमेश्वर की कलीसिया" के चरवाहे और चौकसी करने वाले हैं, "जिसे उसने अपने लहू से मोल [वही शब्द] लिया है" (प्रेरितों के काम 20:28)।

1 तीमुथियुस 3:13 में "पद" के लिए जो शब्द अनूदित किया गया है, वह "बाथमोस" है, जिसका अर्थ है एक कदम, सीढ़ी या देहलीज़। "बाथमोस" शब्द नये नियम में केवल इसी स्थान पर पाया जाता है और संभवतः यह उस चित्र को दर्शाता है जिसमें एक डीकन सफलता की सीढ़ी पर एक पायदान ऊपर चढ़ता है। ऐसी उन्नति का उदाहरण हम यरूशलेम की कलीसिया द्वारा नियुक्त सात डीकनों में से दो के जीवन में देखते हैं—स्तिफनुस और फिलिप्पुस।

स्तिफनुस आगे चलकर कलीसिया का पहला शहीद बना। उसने खिलाने-पिलाने की सेवा करने का अपना कर्तव्य कैसे निभाया, इसके बारे में हमें कुछ ज्ञात नहीं है, यद्यपि निस्संदेह उसने अपना कार्य अच्छी रीति से किया होगा। लूका उसकी कथा को कुछ आगे बढ़ाते हुए लिखता है कि “स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्भुत काम और चिह्न दिखाया करता था” (प्रेरितों के काम 6:8)। उस समय तक, स्तिफनुस का व्यवहार एक डीकन से अधिक एक प्रेरित के समान दिखाई देने लगा था। बाइबल कहती है कि मनुष्य का वरदान उसके लिए स्थान बना देता है (नीतिवचन 18:16), और स्तिफनुस के साथ भी ऐसा ही हुआ। वह वचन और कर्म दोनों में सामर्थी था।

“तब,” हम यहाँ आगे पढ़ते हैं, “उस आराधनालय में से जो लिबिरतीनों की कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और एशिया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाघ-विवाद करने लगे” (प्रेरितों के काम 6:9)। किलिकिया का उल्लेख हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि तरसुस का शाऊल भी उन लोगों में से एक रहा होगा जिन्होंने वाघ-विवाद में स्तिफनुस को पराजित करने का प्रयास किया। यदि ऐसा था, तो अपने हृदय-परिवर्तन से पहले ही पौलुस ने आत्मा से परिपूर्ण और परमेश्वर द्वारा उन्नत किए गए एक डीकन की प्रभावशाली शक्ति और प्रभावशीलता का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर लिया था।

वाघ-विवाद में स्तिफनुस को चुप कराने में असमर्थ होकर सुसमाचार के शत्रुओं ने यह निश्चय किया कि उसे मृत्यु द्वारा ही शांत कर देना सबसे अच्छा होगा। उनका यह निर्णय उनकी पराजय की मौन स्वीकृति था। यह प्रतीत होता है कि यहूदियों के राष्ट्रीय जीवन के उस अंधकारमय अध्याय में तरसुस का शाऊल उन शत्रुओं के अगुवों में से एक था। अपने मुकदमे के दौरान स्तिफनुस द्वारा सुसमाचार की प्रभावशाली बचाव और उसके बाद उसकी विजयी मृत्यु, शाऊल के बाद के हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण किंतु असाधारण प्रभाव डालने वाले कारक सिद्ध हुए।

हमारा दूसरा उदाहरण उन्नति का है—फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक और डीकन। वह आगे चलकर कलीसिया का पहला मिशनरी बना। पुनरुत्थित प्रभु ने प्रेरितों को जो महान आदेश दिया था, वह बिल्कुल स्पष्ट था: “तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे” (प्रेरितों के काम 1:8)। तथापि, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरित यरूशलेम में ही रहने से संतुष्ट थे (प्रेरितों के काम 8:1)। आखिरकार, यरूशलेम की कलीसिया में विश्वासियों की संख्या अब हजारों में हो गई थी, इसलिए उन बारह भाइयों के लिए सेवा करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध थे। उन्हें अन्य स्थानों पर जाने की क्या ज़रूरत थी? प्रभु की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करना एक सेवक के हिस्से में आया।

“और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा” (प्रेरितों के काम 8:5)। मिशनरी कार्यसूची के सामरिया वाले भाग को गंभीरता से लेने वाला वह पहला व्यक्ति बना। प्रेरितों में से कोई भी सामरिया की सीमा पार करने के लिए उत्सुक प्रतीत नहीं होता था। आखिरकार, सभी आत्म-सम्मानी यहूदियों की दृष्टि में सामरी लोग घोर तिरस्कार के पात्र समझे जाते थे। परन्तु फिलिप्पुस के साहसिक कदम के परिणामस्वरूप सामरिया में एक महान जागृति फैल गई। प्रतिक्रिया इतनी उल्लेखनीय थी कि प्रेरितों को उसे स्वीकार करना पड़ा और वे स्वयं इसकी सेवकाई में सक्रिय हुए (प्रेरितों के काम 8:14)।

बाद में पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस का उपयोग एक महत्वपूर्ण इथियोपियाई अधिकारी को मसीह तक पहुँचाने के लिए किया (प्रेरितों के काम 8:26-39) और उसने पलिस्तीन के समुद्री तटीय नगरों में, अजोटुस

(प्राचीन पलिशती नगर अशदोघ) से लेकर कैसरिया तक सुसमाचार का प्रचार किया। उस महत्वपूर्ण, वैश्विक और अन्यजातीय नगर में वह एक स्थायी सुसमाचार प्रचारक बन गया। ऐसे थे वे दूरदर्शी प्रारंभिक सेवक!

2. कलीसिया के कर्तव्यों का प्रदर्शन (3:14-15)

क. पौलुस की व्यक्तिगत इच्छा (3:14)

पौलुस की इच्छा थी कि वह इफिसुस जाकर अपने प्रेरिताई कर्तव्य को पूरा करे। उसने तीमुथियुस को अपने पत्रों में लिखा, “मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे लिखता हूँ।” तीमुथियुस पहले से ही वहाँ उपस्थित था ताकि जो भी समस्या हो, उसका समाधान कर सके, और पौलुस की पत्रों उसका मार्गदर्शन करने तथा उसका हाथ मजबूत करने के लिए था। परन्तु स्पष्ट है कि इफिसुस की स्थिति इतनी गंभीर थी कि वहाँ प्रेरित का स्वयं जाना आवश्यक समझा गया।

पौलुस के निर्णय प्रायः परिस्थितियों और सामान्य समझ के साथ-साथ पवित्र आत्मा की अगुवाई से संचालित होते थे। परिस्थितियों ने ही उसे अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में बरनबास के स्थान पर सीलास को साथ लेने के लिए प्रेरित किया (प्रेरितों के काम 15:37-41), और परिस्थितियों के कारण ही उसने मरकुस के स्थान पर तीमुथियुस को अपना व्यक्तिगत सहायक चुना। पौलुस की मिशनरी सेवकाई भी अक्सर परिस्थितियों से प्रभावित होती थी (प्रेरितों के काम 13:50-52; 14:19-20)।

जब उसने तीमुथियुस को पहली पत्र लिखी, उस समय प्रेरित “आने की आशा” कर रहा था, परन्तु परिस्थितियाँ—विशेषकर नीरो के बढ़ते हुए अत्याचारों के रूप में—शीघ्र ही भयानक रूप से हावी होने वाली थीं। इन सबके बीच भी, पौलुस यह कभी नहीं भूला कि सभी परिस्थितियाँ पवित्र आत्मा के नियंत्रण में हैं, जो वास्तव में “कटनी का प्रभु” है (लूका 10:2)।

पौलुस अपने प्रिय युवा मित्र से मिलने के लिए इफिसुस जाने के लिए व्याकुल हो रहा था। वह इफिसियों के साथ संगति करने के लिए भी उत्सुक था, जिनमें से कई लोगों को वह स्वयं मसीह की ओर लेकर आया था। वह वहाँ के विश्वासियों को मजबूत करना चाहता था क्योंकि आने वाला तूफान जल्द ही निकट और दूर की कलीसिया पर प्रचंड रूप से टूट पड़ने वाला था।

ख. पौलुस की पास्टरीय अभिलाषा (3:15)

(1) एक संभावित विलंब की कल्पना की गई थी (3:15क)

पौलुस इफिसुस जाने की इच्छा रखता था, लेकिन उसने तीमुथियुस को संकेत दिया कि परिस्थितियाँ उसे रोक सकती हैं। संभावित देरी की कल्पना करते हुए, उसने लिखा, “कि यदि मेरे आने में देर हो...” “देर हो” शब्द का अर्थ है “विलम्ब होना या धीमा होना।” दूसरे शब्दों में, पौलुस तीमुथियुस से कह रहा था कि वह उसके आने पर निर्भर न रहे।

चूँकि पौलुस शायद उससे मिलने न आ सके, इसलिए वह चाहता था कि तीमुथियुस उसकी पत्रों में लिखी गई शिक्षाओं और निर्देशों पर ध्यान दे। हमें कितना आभारी होना चाहिए कि पौलुस ने यह सावधानी बरतते हुए यह पत्र लिखा!

यदि पौलुस तीमुथियुस को लिखने के बजाय सब कुछ छोड़कर शीघ्रता से इफिसुस चला गया होता, तो हम कितनी महत्वपूर्ण व्यावहारिक शिक्षा और कितनी महान सैद्धांतिक शिक्षाओं से वंचित रह जाते!

(2) एक सकारात्मक कर्तव्य सौंपा गया (3:15ख)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "[ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूँ] कि तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में तुझे कैसा बर्ताव करना चाहिए।" यहाँ "बर्ताव" शब्द का अनुवाद 2 कुरिन्थियों 1:12 में "बातचीत" किया गया है और इसका अनुवाद "जीवनशैली" भी किया जा सकता है। कुरिन्थियों के संदर्भ में पौलुस ने इसी शब्द का प्रयोग अपने निष्कलंक आचरण का वर्णन करते हुए किया।

(3) एक पूर्ण विवरण सुरक्षित रखा गया था (3:15ग-घ)

(क) कलीसिया का चरित्र (3:15ग)

पौलुस ने "परमेश्वर के घराने" का दोहरे रूप में वर्णन जोड़ा। पहले, उसने उसे "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" कहा। "कलीसिया" के लिए जो शब्द अनूदित किया गया है, वह बुलाए हुए लोगों की एक विशेष सभा की ओर संकेत करता है। इस शब्द का प्रयोग पवित्र आत्मा द्वारा उन सभी लोगों के पूरे समुदाय, जो मसीह पर विश्वास करते हैं, और साथ ही उसके लोगों की किसी भी स्थानीय सभा के लिए किया गया है।

अधिकांश लोगों की कलीसिया के बारे में बहुत ही गलत धारणा है। यदि वे उसके बारे में सोचते भी हैं, तो वे उस विशाल संगठित धार्मिक व्यवस्था के बारे में सोचते हैं जो लगभग तीसरी शताब्दी से विकसित होने लगी और जो आज रोमन कैथोलिक, यूनानी ऑर्थोडॉक्स और रूसी ऑर्थोडॉक्स कलीसियाओं; धर्मत्यागी उदारवादी कलीसियाओं; विभिन्न प्रोटेस्टेंट राज्य कलीसियाओं; अनेक असंप्रदायिक और स्वतंत्र कलीसियाओं; तथा विभिन्न प्रकार के विचित्र पंथों के रूप में दिखाई देती है।

वह मिश्रित समूह कलीसिया नहीं है, बल्कि "ईसाईयत" है—जिसे लोग देखते हैं और कलीसिया के रूप में पहचानते हैं। वे उसकी उलझी हुई आवाज़ों को सुनते हैं, उसके मतभेदों और युद्धों को देखते हैं, राजनीति में उसके हस्तक्षेप और विज्ञान में दखल पर ध्यान देते हैं, और एक महासंघीय ध्वज के नीचे एक होने के उसके निष्फल प्रयासों को देखते हैं। वे ईसाईयत को देखते हैं और कलीसिया को तुच्छ समझते हैं।

हालाँकि, सच्ची कलीसिया उस मिश्रित समूह से बिल्कुल भिन्न है। कलीसिया मसीह की रहस्यमय देह है (1 कुरिन्थियों 12:13), जो पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर अब तक के सभी युगों के लहू से मोल लिए गए विश्वासियों से मिलकर बनी है। कलीसिया का निवास स्थान स्वर्ग में है, और उसके सदस्य पृथ्वी के सब राष्ट्रों से आते हैं। वे जीवन के हर क्षेत्र से आते हैं। अधोलोक की सेनाओं के लिए कलीसिया सचमुच "पताका फहराती हुई सेना के तुल्य भयंकर है" (श्रेष्ठगीत 6:4, 10)।

कलीसिया, जो मसीह की दुल्हन है, पहले ही उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाई जा चुकी है। वही मसीह की देह है, जिसके द्वारा वह संसार में अपना कार्य करता है। "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" परमेश्वर के पवित्र आत्मा की रचना है और परमेश्वर के जीवन में सहभागी है।

समय और अनंतकाल के समस्त इतिहास में कलीसिया का कोई सानी नहीं है। उसका स्थान स्वर्गदूतों, करूबों और सराफों, प्रधानताओं और शक्तियों, सिंहासनों और प्रभुताओं, तथा हर उस नाम से ऊँचा है जिसका नाम लिया जाता है। वह परमेश्वर के लिए अति मूल्यवान है क्योंकि उसने उसे अपने लहू से मोल लिया है। हमें कभी भी कलीसिया को कम नहीं आँकना चाहिए।

पिन्तेकुस्त के दिन से ही कलीसिया परमेश्वर की आँखों का तारा रही है। जो कोई उसके साथ छेड़छाड़ करता है, उस पर हाय है। शैतान अपनी दुष्ट योजनाओं में लगा रहता है। वह झूठे दर्शन और पंथीय धर्मों को संसार में बोता है और मनुष्यों के मनो को भ्रष्ट करता है। फिर परमेश्वर कलीसिया के द्वारा जागृति भेजता है, और शैतान का ताश का महल ढह जाता है। तब शैतान फिर से आरम्भ करता है। वह एक अत्याचारी को ले आता है, जो पृथ्वी पर कष्ट और उत्पात फैलाए। युद्ध, अकाल, महामारी और सताव संसार को झकझोर देते हैं। फिर अचानक परमेश्वर कलीसिया के द्वारा पुनः जागृति भेजता है और मनुष्य के क्रोध से भी अपनी स्तुति करवाता है (भजन 76:10)।

बार-बार शैतान ने अपने “पाप के पुरुष” (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-4) के आगमन के लिए मंच तैयार किया है, परन्तु अनगिनित बार परमेश्वर ने अपनी कलीसिया के द्वारा जागृति भेजकर शैतान की उन योजनाओं को एक और पीढ़ी के लिए विफल कर दिया है। शैतान कलीसिया के बारे में जानता है। वह उससे घृणा करता है और उससे डरता है। यह “जीविते परमेश्वर की कलीसिया” है!

(ख) कलीसिया का संरक्षण (3:15घ)

“परमेश्वर के घराने” के द्विगुणित वर्णन का दूसरा भाग यह बताता है कि कलीसिया “सत्य का खंभा और आधार” है। “खंभा” के लिए जो शब्द प्रयुक्त किया गया है वह ‘स्टम्प’ है, जिसका तात्पर्य ऐसी स्तंभ-रचना से है जो किसी भवन को सहारा देने के लिए बनाई गई हो। “नींव” के लिए प्रयुक्त शब्द वास्तव में सहारा या किले का संकेत देता है।

कुछ मध्ययुगीन गिरजाघरों में छत के विशाल विस्तार को फ्लाइंग बट्रेस द्वारा सहारा दिया जाता है, जो उसके भारी बोझ को संभालते हैं। यह उसी बात का चित्र है कि “जीविते परमेश्वर की कलीसिया” को सत्य के लिए क्या करना है।

इस संसार में सत्य पर निरंतर आक्रमण होता रहता है। शैतान के पास उपदेशात्मक त्रुटियाँ बनाने के लिए अत्यंत उपजाऊ बुद्धि है, और वह छल तथा झूठ फैलाना कभी बंद नहीं करता। इन सभी आक्रमणों के बीच कलीसिया सत्य का एक खंभा और सहारा बनकर खड़ी रहती है।

कलीसिया पुराने नियम की उन्तालीस पुस्तकों और नये नियम की सत्ताईस पुस्तकों में निहित सत्य की संरक्षक है।

भाग 3. एक प्रभावी मसीही कैसे बनें

1 तीमथियुस 3:16-6:19

क. परमेश्वर के साथ चलें (3:16-4:16)

1. भक्ति का भेद (3:16-4:7क)

क. सत्य की उद्घोषणा (3:16)

पौलुस ने उन सत्य के मुख्य तत्वों का संक्षेप में वर्णन किया, जिनकी कलीसिया संरक्षक है: “इसमें सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्, वह जो शरीर में प्रकट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।” ये वही सत्य हैं जिनसे शैतान घृणा करता है और जिन पर वह आक्रमण करता है (देखें 4:1-7)।

केवल 1 तीमुथियुस 3:16 पर ही एक पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। यह एक अद्भुत पद है। यह यीशु को परमेश्वर के रूप में आरंभ करता है और महिमा में यीशु के साथ समाप्त होता है। यह उसके देहधारण से आरंभ होता है और उसके स्वर्गारोहण पर समाप्त होता है।

(1) मसीह के व्यक्तित्व का भेद (3:16क-ख)

(क) कुँवारी का गर्भ: वह मानव जीवन जीने आया (3:16क)

इस पद का पहला भाग मसीह के व्यक्तित्व के भेद की ओर संकेत करता है: “इसमें सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्,

वह जो शरीर में प्रकट हुआ।” “इसमें सन्देह नहीं” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग किया गया है उसका अर्थ है “अंगीकार के रूप में” या “सर्वसम्मति से।” 3:16 में निहित सत्य प्रारम्भिक कलीसिया में विश्वास की एक सामान्य अंगीकार के मूल तत्व थे; इसलिए यह पद एक प्रकार का सामान्य और सर्वमान्य विश्वाग-घोषणापत्र है। “भक्ति का भेद” प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व में देहधारी होकर प्रकट हुई भक्ति का प्रकाशन है।

मेजर इयान थॉमस कहते हैं कि यीशु को जैसा वह आया, वैसा ही आना आवश्यक था, ताकि वह वही हो सके जो वह था (पूर्णतः परमेश्वर और पूर्णतः मनुष्य)। उसे वही होना था जो वह था, ताकि वह वैसा जीवन जी सके जैसा उसने जिया (मनुष्य के रूप में पूर्णतः परमेश्वर अपने पिता पर निर्भर रहते हुए)। उसे वैसा जीवन जीना था जैसा उसने जिया (उसने पूर्णतः पवित्र और निष्कलंक जीवन जिया), ताकि वह वह कर सके जो उसने किया (उसने पहले उस जीवन को सेवा में और फिर बलिदान में दे दिया)।

परमेश्वर धधकते सूर्यों और जलते तारों में, बदलते ऋतुओं में, मेघधनुष के रंगों में और अस्त होते सूर्य की लाल किरणों में प्रकट होता है। वह आकाशगंगाओं की महिमा में और चंद्रमा के फीके, चाँदनी में प्रकट होता है। अब वह देह में प्रकट हुआ है।

परमेश्वरत्व मानवता का वस्त्र धारण किए हुए है। परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बन गया है। हमारे ग्रह पर जीवित परमेश्वर के महिमामय पुत्र ने बाह्य अंतरिक्ष से प्रवेश किया है—वही जो ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है; जिसे स्वर्गदूत आराधना करते हैं; जो अनंत, असृजित, स्वयं-विद्यमान परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति है! बेतलेहेम की चरनी ने उसे संभाला जो परमेश्वर था, और अब आदम की संतान के एक बालक के रूप में प्रकट हुआ।

यीशु ठीक वैसा ही मनुष्य था जैसा परमेश्वर ने सदा से मनुष्य को होने के लिए ठहराया था—ऐसा मनुष्य जिसमें परमेश्वर वास करता हो। मसीह की मानवीय आत्मा परमेश्वर की वास करने वाली आत्मा से इतनी परिपूर्ण थी और उसका कार्य परमेश्वर के आत्मा द्वारा इतना अभिषिक्त था कि पवित्र आत्मा ने उसे “अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप” और “[परमेश्वर] के तत्व की छाप” (कुलु. 1:15; इब्रानियों 1:3) कहा। उसके विषय में यह सचमुच कहा जा सकता था कि “उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है” (कुलु. 2:9)।

(2) खाली कब्र: वह पवित्र जीवन जीने के लिए आया (3:16ख)

मसीह केवल एक मानवीय जीवन जीने के लिए ही नहीं, बल्कि एक पवित्र जीवन जीने के लिए भी आया। उस जीवन को समय-समय पर स्वर्ग से समर्थन मिला (मत्ती 3:17; 17:5), परन्तु उसे पूर्ण स्वीकृति तब तक नहीं मिली जब तक वह मरे हुएों में से जी नहीं उठा।

पौलुस ने रोमियों 1:4 में लिखा है कि प्रभु यीशु “पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुएों में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।” रोमियों 8:10-11 में प्रेरित कहता है कि मसीह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मरे हुएों में से जिलाया गया। इस प्रकार और उसी समय मसीह “आत्मा में धर्मी ठहरा” (1 तीमथियुस 3:16)।

यहाँ “धर्मी ठहरा” शब्द का अनुवाद जिस शब्द से किया गया है, वह वही सामान्य शब्द है जो किसी पापी को धर्मी घोषित करने के लिए प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ है “निर्दोष ठहराया जाना, या धर्मी सिद्ध किया जाना।” प्रभु यीशु, “जो पाप से अज्ञात था,” हमारे लिए “पाप ठहराया गया” (2 कुरिन्थियों 5:21)। जिन दुष्ट लोगों ने उसकी मृत्यु की योजना बनाई थी, उन्होंने सोचा कि वे विजयी हो गए हैं। वे उसकी मृत्यु के समय कलवरी पर इकट्ठे होकर उसका ठट्ठा उड़ा रहे थे।

परन्तु अन्तिम वचन परमेश्वर का था। तीन दिन बाद, यीशु मरे हुएों में से जी उठाए जाने के द्वारा “आत्मा में धर्मी ठहराया गया।” जीवन और मृत्यु दोनों में निर्दोष सिद्ध होकर उसने घोषणा की, “मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं। हैं” (प्रका. 1:18)।

(2) मसीह के लोगों का भेद (3:16ग-घ)

(क) स्वर्गीय सेना (3:16ग)

पौलुस ने लिखा, मसीह “स्वर्गदूतों को दिखाई दिया।” प्रभु के देहधारण, क्रूस पर चढ़ाए जाने, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, मध्यस्थता और राज्याभिषेक से संबंधित घटनाओं में स्वर्गदूतों की गहरी रुचि रही है। जैसा कि 1 पतरस 1:12 में कहा गया है, “इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।”

स्वर्गदूतों ने मसीह के जन्म की घोषणा की और उसके आगमन का शुभ समाचार सुनाया (लूका 1:26-38; 2:8-15)। परीक्षा के बाद (मत्ती 4:11) और गतसमनी की वाटिका में उसके व्याकुलता के समय (लूका 22:43) उन्होंने उसकी सेवा की। यीशु ने पतरस से कहा था कि यदि वह चाहता तो उसके पास बारह पलटनों से भी अधिक स्वर्गदूत थे, जो उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी रक्षा करते (मत्ती 26:52-54)। उसके पुनरुत्थान (मत्ती 28:1-10; यूहन्ना 20:11-14) और उसके स्वर्ग लौट जाने (प्रेरितों के काम 1:9-11) के

संबंध में भी स्वर्गदूतों का उल्लेख मिलता है। उसके पुनः आगमन के समय भी स्वर्गदूत उसके साथ होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16), और कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद के दिनों में वे न्याय के कार्य में अहम भूमिका निभाएंगे (प्रका. 7:1-3; 8:1-13; 12:7-9; 14:1-18:21; 19:11-20:3)।

स्वर्गीय सेनाओं ने उद्धार की घटना के सभी हिस्से को बड़ी गहरी रुचि के साथ देखा है। आखिरकार, “अधर्म का भेद” (2 थिस्सलुनीकियों 2:7) पृथ्वी पर नहीं, बल्कि स्वर्ग में आरम्भ हुआ था।

यह आदम और हव्वा से शुरू नहीं हुआ; इसका जन्म महिमा में सर्वोच्च स्थान रखने वाले प्रधान स्वर्गदूत लूसीफर के हृदय में हुआ था (यशायाह 14:9-14; यहजकेल 28:12-15)।

इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र में “जगत की उत्पत्ति से [या उससे पहले]” घटित हुई घटनाओं (जैसे, मत्ती 13:35; 25:34; इफिसियों 1:4; प्रका. 13:8) के असंख्य उल्लेख यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने अपनी संप्रभुता में हमारे ग्रह को ब्रह्मांड में वह स्थान चुना, जहाँ अधर्म के समस्त प्रश्न को एक ही बार में, उसकी संपूर्ण और शाश्वत संतुष्टि के लिए, हमेशा के लिए सुलझा दिया जाएगा।

इसलिए स्वर्गीय सेनाएँ हमारे ग्रह पर सामान्य रुचि से कहीं अधिक ध्यान लगाए रहती हैं। उन्होंने अपनी दृष्टि प्रभु यीशु पर उस क्षण से टिकाए रखी जब वह अपने पिता के ऊँचे सिंहासन से उतरकर पृथ्वी पर आया, और तब तक जब तक कि वह स्वर्ग में लौट नहीं गया, जैसा कि भजन संहिता 24 में वर्णन किया गया है।

(ख) अन्यजातीय हृदय (3:16घ)

पहला तीमुथियुस 3:16 विरोधाभासों का एक भजन है—गर्भ और कब्र के बीच, स्वर्ग की स्वर्गदूतीय सेनाओं और पृथ्वी के खोए हुए अन्यजातियों के बीच, तथा इस पृथ्वी और महिमा के बीच। परन्तु निश्चय ही इससे बड़ा कोई विरोधाभास नहीं हो सकता जितना कि प्रकाश के निष्पाप पुत्रों के बीच—जिनके हल्लेलुयाह की आवाज़ अनन्त पहाड़ियों की गुँज को जागृत कर देते हैं जब वे मसीह की स्तुति गाते हैं—और उन मूर्तिपूजक अन्यजातियों के बीच, जो पाप में डूबे हुए, अंधविश्वास और कपटपूर्ण तर्क के बंधन में जकड़े हुए, और खुदी हुई मूर्तों की दासता भरी उपासना से अंधे बने हुए हैं।

महान प्रेरित, जो अन्यजातियों के लिए नियुक्त किया गया था, ने लिखा कि मसीह “अन्यजातियों में प्रचार किया गया।” यरूशलेम में और दूर-दूर तक फैले हुए प्रवास में रहने वाले यहूदी समुदाय कभी भी पौलुस को इस बात के लिए क्षमा नहीं कर सके कि उसने उनकी सारी धार्मिक रिवाजों को तोड़ दिया और स्वयं को अन्यजातियों के साथ जोड़ लिया।

यहाँ तक कि विश्वास करने वाले यहूदियों को भी पौलुस की अन्यजाति सेवकाई से नाराजगी थी, विशेषकर जब बड़ी संख्या में अन्यजाति लोग कलीसिया में आने लगे और यहूदी लगातार घटते हुए अल्पसंख्यक बनते गए। पतरस को एक दर्शन के द्वारा समझाया गया कि परमेश्वर उसी प्रेम और करुणा के साथ अन्यजातियों तक पहुँचना चाहता है, जैसा उसने यहूदियों पर प्रकट किया था (प्रेरितों के काम 10:9-11:18)।

यरूशलेम के यहूदी विश्वासियों को बड़ी कठिनाई से रोका गया कि वे अन्यजातियों को पहले यहूदी बनने के लिए बाध्य न करें, तब कहीं वे मसीही बन सकें (प्रेरितों के काम 15)। और जब यह विवाद सुलझ भी गया, तब भी यहूदी प्रचारक पौलुस का पीछा करते रहे, उसकी स्थापित कलीसियाओं में जाते रहे, और अन्यजाति विश्वासियों को यहूदी धर्म और व्यवस्था-पालन को अपनाने के लिए समझाने का प्रयास करते रहे।

अन्यजातियों में प्रचार करना एक साहसिक कदम था—यह मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार में एक नए युग की विशिष्ट पहचान थी।

हाम, शेम और येपेत की संतानों—तीनों जातीय परिवारों—को परमेश्वर के आत्मा की इस कार्यवाही के द्वारा मसीह में एक बना दिया गया।

प्रेरितों के काम 8 में, हम एक इथियोपियाई (हाम का वंशज) के हृदय-परिवर्तन के विषय में पढ़ते हैं। प्रेरितों के काम 9 में, हम तरसुस के शाऊल (जो “इब्रानियों का इब्रानी” था, फिलिप्पियों 3:4-7) अर्थात शेम के वंशज के हृदय-परिवर्तन के विषय में पढ़ते हैं। और प्रेरितों के काम 10 में, हम रोमी सैनिक कुरनेलियुस के हृदय-परिवर्तन के विषय में पढ़ते हैं, जो येपेत का वंशज था।

प्रेरितों के काम 11 से लेकर पुस्तक के अंत तक (जो कलीसिया की महान मिशन-मार्गदर्शिका है) मुख्य ध्यान पौलुस और उसकी उस महान सेवकाई पर केंद्रित है, जिसमें उसने अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का प्रचार किया। उसकी तीन महान मिशनरी यात्राएँ लगभग पंद्रह वर्षों की यात्रा को समेटे हुए थीं, जो लगातार फैलते हुए क्षेत्रों में सम्पन्न हुईं। अंताकिया से लेकर कुरिन्थ तक, उसने नगर-नगर में एक के बाद एक कलीसियाएँ स्थापित कीं। एक प्रमुख नगर के बाद दूसरे प्रमुख नगर में कलीसियाओं की लंबी श्रृंखला खड़ी होती गई, और प्रत्येक के चारों ओर घनी आबादी वाले क्षेत्र थे। जब उसने रोमियों को पत्र लिखा, तो वह राजधानी के विश्वासियों से कह सका कि “यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक” उसने “मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया,” और ऐसा करते हुए उसने सावधानी से इस बात से अपने आप को बचाए रखा कि वह “दूसरे की नींव पर घर” बनाए (रोमियों 15:19-20)। पौलुस ने दावा किया कि उसने लगभग पंद्रह सौ मील के विस्तृत क्षेत्र में—सीरिया से होकर, एशिया माइनर को पार करते हुए, मकिदुनिया में, वहाँ से यूनान तक, और फिर इल्लुरिकुम (युगोस्लाविया का प्राचीन नाम, उत्तरी बाल्कन प्रायद्वीप) तक—सुसमाचार का पूर्ण प्रचार कर दिया था। इसके अतिरिक्त, वह स्पेन जाने की भी योजना बना रहा था (रोमियों 15:24)।

पिन्तेकुस्त के लगभग छह दशकों बाद कलीसिया में अन्यजातियों की संख्या यहूदियों से अधिक हो गई थी, फिर भी अन्यजातियों तक पहुँचने का कार्य अभी बहुत दूर तक अधूरा था। लगभग दो हजार वर्ष बाद भी, वह परमेश्वर, जो “शरीर में प्रकट हुआ,” अब भी “अन्यजातियों में प्रचार किया जा रहा है।” आज भी संसार एक मिशन-क्षेत्र है।

सबसे कम सुसमाचार-प्रचारित देश, जिनमें साम्यवादी चीन भी शामिल है, उस क्षेत्र में स्थित हैं जिसे अक्सर “प्रतिरोधी पट्टी” कहा जाता है। यह पश्चिमी अफ्रीका से लेकर पूर्वी एशिया तक फैली हुई है और लगभग 10 डिग्री उत्तर अक्षांश से 40 डिग्री उत्तर अक्षांश के बीच स्थित है। विश्व के सबसे बड़े और सुसमाचार के

प्रति सबसे अधिक प्रतिरोधी धर्म—इस्लाम, बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म—इसी क्षेत्र में प्रमुख हैं। संसार की लगभग दो-तिहाई जनसंख्या इस पट्टी में रहती है, जबकि यह क्षेत्र विश्व की कुल भूमि का केवल एक-तिहाई भाग ही अपने में समेटे हुए है। लगभग साठ देश और संसार के लगभग पचास सबसे कम सुसमाचार-प्रचारित महानगर इसी क्षेत्र में हैं। इन महानगरों (जिनमें कोलकता, टोक्यो, टेल अवीव और इस्तांबुल शामिल हैं) में लाखों लोग निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त, संसार के सबसे निर्धन लोग भी इसी क्षेत्र में रहते हैं। इन प्रतिरोधी देशों में से अनेक देश मिशनरियों के लिए बंद हैं, फिर भी सुसमाचार रेडियो, साहित्य और अन्य साधनों के द्वारा वहाँ पहुँच ही जाता है।

(3) मसीह की सामर्थ्य का भेद (3:16ड-च)

(क) इस पृथ्वी पर उसका विजय कार्य (3:16ड)

मसीह की इस पृथ्वी पर विजय यह है कि “जगत में उस पर विश्वास किया गया।” बाधाओं और विरोधों के बावजूद लोग विश्वास कर रहे हैं। भेद यह है, कि कुछ लोग विश्वास क्यों नहीं करते। आखिरकार, सुसमाचार इस पृथ्वी पर घोषित किया गया सबसे उत्तम समाचार है। परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बना, ताकि मनुष्यों के पुत्र परमेश्वर के पुत्र बन सकें! हमें पूर्ण और मुफ्त उद्धार का प्रस्ताव दिया गया है—परमेश्वर के परिवार में स्थान, स्वर्ग में एक घर, और मसीह में ऐसी स्थिति जो सब सिंहासनों, प्रभुताओं, प्रधानताओं और सामर्थ्यों से ऊपर है। अविश्वास का एकमात्र स्पष्टीकरण यह है कि इस युग में सुसमाचार का उद्देश्य केवल “अपने नाम के लिए एक लोग बनाना” है (प्रेरितों के काम 15:13-14)। कलीसिया बुलाए हुए लोगों का समुदाय है—ब्रह्मांड की सच्ची कुलीन जाति यही है।

सुसमाचार प्रचार के परिणाम हमें भले ही छोटे लग सकते हैं, लेकिन परमेश्वर संतुष्ट हैं। पवित्र आत्मा कटनी का प्रभु है। वह कोई गलती नहीं करता; वह जानता है कि वह क्या कर रहा है। पिन्तेकुस्त के बाद से कलीसिया का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि प्रभु यीशु पर “जगत में उस पर विश्वास किया गया” है।

हम जॉन वेस्ली को साक्षी के रूप में बुलाते हैं, जो भारतीयों का हृदय-परिवर्तन करने के लिए एक मिशनरी के रूप में अमेरिका गए थे और उन्हें पता चला कि उनका स्वयं हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ था। जब वे इंग्लैंड वापस लौटे, तब वे स्वयं एक सच्चे विश्वासी बने और सुसमाचार के महान घोषक सिद्ध हुए।

हम शहीद ह्यूग लैटिमेर को साक्षी के रूप में बुलाते हैं, जिन्हें “इंग्लैंड का सबसे ईमानदार व्यक्ति” कहा जाता था। वे थॉमस बिलनी के द्वारा मसीह के पास लाए गए, जो एक साधारण व्यक्ति थे जो स्वयं इरास्मस की रचनाएँ पढ़कर मसीह के पास आया था। जब लैटिमेर को लकड़ी की गठरी पर बाँधकर जलाया गया, तो उन्होंने घोषणा की कि उनकी शहादत इंग्लैंड में एक ऐसी मोमबत्ती जलाएगी जो कभी नहीं बुझेगी। वे सही थे।

हम इंग्लैंड और ब्रिटिश साम्राज्य के सम्राट किंग जॉर्ज षष्ठम को साक्षी के रूप में बुलाते हैं— एक ऐसे व्यक्ति जो प्रभु को जानते और उनसे प्रेम करते थे। राजा बनने से पहले, और इस प्रकार चर्च ऑफ इंग्लैंड के प्रमुख बनने से पूर्व, उन्हें अपने बड़े भाई एडवर्ड, जो युवराज थे, की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी। एक नम्र विश्वासी होने के कारण, जॉर्ज ने अपनी स्वतंत्रता का लाभ उठाते हुए समान विचारधारा वाले कुछ

विश्वासियों के छोटे समूह के साथ केवल बातचीत के रूप में बाइबल पाठ में सहभागी होने के उद्देश्य से संगति करना जारी रखा।

हम अपनी माता को गवाह के रूप में बुलाते हैं। वह एक साधारण स्त्री थीं, जिन्होंने अपने बचपन के दिनों से ही प्रभु से प्रेम किया। वह एक समर्पित विश्वासी थीं। मेरी सबसे प्रारंभिक स्मृति यह है कि वह मुझे पुराने भजनों की धुन पर झुलाते हुए सुलाया करती थीं। कई वर्ष पहले जब फ्लोरिडा के एक वृद्धाश्रम में उनका देहांत हुआ, तब उनके बिस्तर की मेज़ पर रखी बाइबल भजन संहिता 23 पर खुली हुई थी। उस स्थान पर रखे एक कागज़ के टुकड़े पर उन्होंने लिखा था,

“एक आनंदमय जीवन का रहस्य! एक आनंदमय मृत्यु का रहस्य!

एक आनंदमय अनंतकाल का रहस्य!” इन्हीं विचारों को अपने मन में लेकर वे अनुग्रह से महिमा में प्रवेश कर गईं।

हम इवान रॉबर्ट्स को गवाह के रूप में बुलाते हैं। वे एक अज्ञात खनन कर्मचारी थे, जो आगे चलकर एक प्रसिद्ध जागृति-प्रचारक बन गए। एक विश्वासी के रूप में वे अपने समय की आत्मिक नवजागृति की तीव्र आवश्यकता से अत्यंत व्याकुल थे और उन्होंने स्वयं को मध्यस्थता की प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया। जागृति वेल्स में आई। उसने ब्रिटेन को प्रभावित किया और पेंसिल्वेनिया में वेल्स कोयला खनन कर्मचारियों तक फैल गई। उसने जीवनों को बदल दिया और समाज को शुद्ध कर दिया।

हम तरसुस के हत्यारे शाऊल को साक्षी के रूप में बुलाते हैं। वह मसीह से घृणा करता था और मसीहियत से घृणा करता था। वह मसीह को ईश-निन्दक और मसीही विश्वास को एक पंथ मानता था। शाऊल ने कलीसिया को मिटा देने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और जितने अधिक विश्वासियों को संभव हो सके, उन्हें नष्ट करने के लिए महासभा का चुनाव हुआ प्रतिनिधि बन गया।

प्रेरितों के काम 9:1 बताता है कि वह “धमकाने और घात करने की धुन में” फिरता रहता था। वहाँ “हत्या” के लिए जो यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ है वह “फोनोस” है, जिसका अर्थ “हत्या” है। नये नियम में “फोनोस” शब्द दस बार आता है और प्रेरितों के काम 9:1 तथा इब्रानियों 11:37 को छोड़कर, हर स्थान पर उसका अनुवाद “हत्या” ही किया गया है। स्वयं पौलुस ने स्वीकार किया कि उसने बहुत से विश्वासियों के मृत्यु-दण्ड के पक्ष में मत दिया था (प्रेरितों के काम 26:9-11)। परन्तु जी उठे हुए प्रभु की केवल एक झलक ही उसे प्रभु पर विश्वास लाने के लिए पर्याप्त थी।

हम पूर्व गैंगस्टर जिम वॉस को गवाह के रूप में बुलाते हैं, जो उस तकनीक के प्रारंभिक दिनों में इलेक्ट्रॉनिक्स के माहिर विशेषज्ञ थे। उनका जन्म एक मसीही परिवार में हुआ था और उनकी पत्नी भी विश्वासिनी थीं, परन्तु उन्होंने उन गुंडों और धन-उगाही करने वालों का धन स्वीकार किया जिन्हें उनकी तकनीकी कुशलता उपयोगी लगती थी। फिर बिली ग्राहम के एक सुसमाचार सभा में वे आगे आए और मसीह को ग्रहण किया। उन्होंने अपनी जान के परवाह न करते हुए उस अपराधी गिरोह को छोड़ दिया, समाज के प्रति अपना ऋण चुकाने के लिए कारावास का दण्ड भोगा, और बाद में एक मिशनरी बन गए।

हम व्यापारी डी. एल. मूडी को गवाह के रूप में बुलाते हैं—एक जूते बेचने वाले सेल्समैन, जो न्यू इंग्लैंड से शिकागो अपनी किस्मत चमकाने आया था। जिस जूते की दुकान में वे काम करते थे, उसी के कमरे के पीछे एक स्थान में उन्होंने मसीह को ग्रहण किया। जो निडर और उत्साही सेल्समैन संसार में उन्नति की ओर बढ़ रहा था, वही निडर और उत्साही विश्वासी बन गया। उसने आत्माओं को जीतने के कार्य में अपने आप को उतने ही जोश से झोंक दिया, जितने जोश से वह जूते बेचा करता था। उसने किसी को यह कहते सुना कि संसार ने अब तक यह नहीं देखा कि परमेश्वर उस मनुष्य के द्वारा क्या कर सकता है जो पूर्णतः उसके लिए समर्पित हो; और उसने उत्तर दिया, “परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं वही मनुष्य बनूँगा।” मूडी संसार के महान जागृति-प्रचारकों में से एक बन गए, और उनके द्वारा बहुतों ने संसार में प्रभु यीशु पर विश्वास किया। आज भी, मूडी बाइबल संस्थान के माध्यम से वह कार्य, जिसे उन्होंने आरम्भ किया था, पृथ्वी के छोर तक जारी है।

हम नाविक जॉन न्यूटन को गवाह के रूप में बुलाते हैं। जन्म से ही विद्रोही स्वभाव का यह व्यक्ति घर से भागकर समुद्र की ओर चला गया और पतन तथा निराशा की गहराइयों में गिरता चला गया; यहाँ तक कि वह एक दास का भी दास बन गया। फिर समुद्र में आए एक भयंकर तूफ़ान के दौरान उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो प्रभु जहाज़ के डगमगाते डेक पर उसके पास खड़े हों और उसकी आत्मा में झाँक रहे हों—और उसी क्षण उसने उद्धार पाया। उसने समुद्री जीवन छोड़ दिया और एक प्रचारक तथा भजन लिखने वाला बन गया। उनका अंग्रेजी भजन “अमेजिंग ग्रेस” (अद्भुत अनुग्रह) आज भी संसार भर में गाया जाता है।

अंत में, हम एक साधारण सेविका—सफाई का काम करने वाली सोफी—को साक्षी के रूप में बुलाते हैं। वह अशिक्षित और साधारण स्त्री थी, परंतु उसकी इच्छा एक मिशनरी बनने की थी। उसके पास्टर, डॉ. ए. बी. सिम्पसन, कोई ऐसी मिशनरी संस्था को नहीं जानते थे जो उसका आवेदन स्वीकार करती। जब वह उनसे सलाह लेने आई, तो उन्होंने उसे घर जाकर प्रार्थना करने की सलाह दी।

अगले सप्ताह वह फिर लौटी। डॉ. सिम्पसन ने उसे आते देखा और सोचा कि अब वह उससे क्या कहेंगे। पर उन्होंने पाया कि प्रभु ने पहले ही उसको वह सब बता दिया था जो उसके लिए आवश्यक था। परमेश्वर ने उसका ध्यान कोने पर रहने वाले एक चीनी धोबी की ओर, सामने रहने वाले इटली के दर्जी की ओर, और उसकी गली में ठेला लगाने वाले यूनानी सब्जीवाले की ओर आकर्षित किया था। प्रभु ने उससे कहा था कि वे सब न्यूयॉर्क इसलिए आए हैं ताकि वह उनके लिए एक मिशनरी बन सके।

इस प्रकार सोफी ने अपने महान नगर में रहने वाले विभिन्न जातियों और राष्ट्रों के लोगों तक पहुँच बनाई। उसके अंतिम संस्कार में लोग बार-बार खड़े होकर गवाही देने लगे कि सोफी ने उन्हें मसीह तक पहुँचाया था। सोफी के द्वारा विश्वास में लाए गए लोगों और असंख्य अन्य लोगों के द्वारा, “अन्यजातियों में मसीह का प्रचार हुआ।”

(ख) महिमा में उसकी विजय (3:16च)

पौलुस ने 3:16 का समापन इस घोषणा के साथ किया कि मसीह “महिमा में ऊपर उठाया गया।” उस विजय की महिमा पर ज़रा विचार कीजिए। चालीस दिन और चालीस रात तक, यीशु उस महान दिन की प्रतीक्षा

करता रहा। उस समय के दौरान, वह यहाँ-वहाँ लोगों को दिखाई देता रहा और “उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया” (प्रेरितों के काम 1:3)।

अंत में, उसने लगभग 120 लोगों को, जो उस पर विश्वास करते थे, एकत्रित किया और उन्हें नगर के फाटक से बाहर, किद्रोन नाले को पार करते हुए, गतसमनी के बगीचे के पास से होते हुए, जैतून पर्वत की चोटी तक ले गया। क्या ही अद्भुत दृश्य था! प्रेरित और अन्य विश्वासी एक जी उठे हुए मनुष्य के पीछे चल रहे थे, जब वह पृथ्वी पर अपनी अंतिम कदमों को रखते हुए चल रहा था।

वे सब जैतून पर्वत की चोटी पर पहुँचे। उसने विदाई के आशीर्वाद के लिए अपने हाथ उठाया और आकाश की ओर ऊपर उठा लिया गया। हम उन्हें वहाँ खड़े हुए, गर्दन उठाकर आश्चर्य से निहारते हुए कल्पना कर सकते हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

हनोक, जहाँ तक हम जानते हैं, जब उठा लिया गया तब अकेला था। एलिय्याह स्वर्ग में स्वर्गदूतों की संगति में उठा लिया गया, पर केवल एक व्यक्ति ने उसे जाते हुए देखा था। परन्तु यीशु लगभग एक सौ बीस लोगों की पूर्ण नज़रों के सामने स्वर्ग में उठाया गया था। जब महिमा का बादल उसे अपने आगोश में लेने लगा, तब उनके पैरों के कीलों के निशान ही वे अंतिम दृश्य थे जिन्हें शिष्यों ने देखा।

वह ऊपर उठाया गया, यहाँ तक कि स्वर्गीय लोक के फाटक उसके सामने प्रकट नहीं हो गया। उसने भजन संहिता 24 में दाऊद द्वारा दर्ज किए गये विजय-घोषणा का आदेश दिया और परमेश्वर के नगर में प्रवेश किया। वह स्वर्गदूतों के “होशाना” के जयघोष के बीच आगे बढ़ते हुए परमेश्वर के महान श्वेत सिंहासन तक पहुँचा।

मसीह की उस विजय के भेद पर भी विचार कीजिए। अब स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन पर एक मनुष्य विराजमान है—महिमामय, फिर भी युद्ध के घावों के चिह्नों से अंकित देह के साथ! उसे वहाँ बैठने का पूरा अधिकार है, क्योंकि वह सब पर प्रभु, सदा-सर्वदा धन्य परमेश्वर है।

स्तिफनुस ने उस स्वर्गारोहित मसीह को देखा और कलीसिया का प्रथम शहीद बन गया। शाऊल ने उसे देखा और कलीसिया का प्रमुख मिशनरी बन गया।

यदि कोई साधारण ब्रिटिश नागरिक या कोई विदेशी आगंतुक महारानी एलिज़ाबेथ के सिंहासन पर बैठने का प्रयास करे, तो उसे तुरंत वहाँ से हटा दिया जाएगा। परन्तु यीशु—जो बैतलहम में जन्मा, वास्तव में मनुष्य का पुत्र—परमेश्वर के सिंहासन पर महिमा के साथ, समस्त ब्रह्मांड पर राज्य करते हुए और स्वर्गदूतों की आराधना ग्रहण करते हुए विराजमान हैं! अब मानव जाति के कुटुंब का एक संबंधी परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा है। निश्चय ही शैतान और उसकी सारी सेनाएँ काँप उठें।

मसीह की विजय की सेवकाई पर भी विचार कीजिए। अब हमारे पास महिमा में विराजमान एक महान महायाजक है, जो हमारी निर्बलताओं की भावनाओं से सुपरिचित है और हमारे लिए मध्यस्थता करता है। अब “पिता के पास हमारा एक सहायक है” (1 यूहन्ना 2:1), जो शत्रु के सभी आरोपों को शांत करने में समर्थ है।

अपने इस महान महायाजक के द्वारा हमें परमेश्वर तक पहुँच प्राप्त हुई है (रोमियों 5:1-2); और उसी के कारण हम स्वर्ग के परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते हैं (इब्रानियों 10:19-22)।

कल्पना कीजिए कि यदि मसीह “महिमा में ऊपर उठा लिए जाने” के स्थान पर यहीं पृथ्वी पर ही ठहरे रहता तो क्या होता। मान लीजिए कि उसने अपने चेलों से इस प्रकार कहा होता, “मैं यरूशलेम में यहाँ एक महल बनाऊँगा। जो लोग मुझसे मिलना चाहें, उन्हें मैं दर्शन दूँगा। तुम लोग सब व्यवस्थाएँ सँभाल लेना। लोगों को उनके आवेदन की व्यवस्था करने में समय देना। प्रत्येक को केवल पंद्रह मिनट मिलेंगे।” तो हमें राजा से मुलाकात करने का अवसर कितनी बार मिलता, इसकी कितनी संभावना होती? और उस केवल पंद्रह मिनट की थोड़ी-सी अवधि में क्या कहा और सूना जा सकता था?

परन्तु हमारे पास उससे कहीं उत्तम बात है। यीशु स्वर्ग लौट गया हैं, और हम जब चाहें उनकी उपस्थिति में आ सकते हैं, जितनी देर चाहें ठहर सकते हैं, और जो कुछ चाहें उनसे कह सकते हैं। यही है “भक्ति का भेद।”

ऐसा प्रतीत होता है कि 1 तीमुथियुस 4:1-7 में आगे जो कुछ आता है, उससे यह स्पष्ट है कि जब पौलुस ने 3:16 में दर्ज वह सैद्धांतिक कथन दिया, तब उसके मन में बढ़ते झूठे उपदेश के प्रति चिंता थी। जो ज्ञानवादी झूठे उपदेश बाद में पूर्ण रूप से विकसित होकर फलित हुआ, उसने पहले ही अपना सिर उठा लिया था।

ज्ञानवादियों ने इस बात से इनकार किया कि परमेश्वर ने स्वयं को देह में प्रकट किया था। उनमें से कुछ ने मसीह के मनुष्यत्व को पूरी तरह से नकार दिया। उन्होंने कहा कि उसका शरीर एक छलावा, एक भ्रम, या एक मृगतृष्णा है, या यह कि हमारे शरीरों के बिल्कुल विपरीत, यह दिव्य पदार्थों से बना हुआ है। सभी ज्ञानवादियों ने यीशु के ईश्वरत्व पर हमला किया; उनका मानना था कि वह किसी प्रकार का कोई साधारण देवता या देवदूत था।

कुछ ज्ञानवादियों ने घोषित किया कि यीशु केवल एक साधारण मनुष्य था जिस पर उसके बपतिस्मा के समय “मसीह” (एक शक्तिशाली दूत या आत्मा) उतरा और “मसीह” के साथ मिलकर यीशु “यीशु मसीह” बन गए। इस झूठे उपदेश के अनुसार, “मसीह” ने क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु को छोड़ दिया था; इसी शिक्षा के आधार पर, ज्ञानवादियों ने मसीह की मृत्यु की वास्तविकता को नकार दिया। इसी प्रकार, उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि यीशु “आत्मा में धर्मी ठहराए गए” थे (जैसा कि पहले संकेत किया गया है, आत्मा का यह उल्लेख सम्भवतः मसीह के पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है, जो पवित्र आत्मा के द्वारा सम्पन्न हुआ था।)

जैसा कि हम 2:5 में पहले ही देख चुके हैं, पौलुस ने बल देकर “मसीह यीशु जो मनुष्य है” के विषय में लिखा और ज्ञानवादियों के अनेक उत्सर्जन (अनेक मध्यवर्ती आत्मिक प्राणी) या मध्यस्थ स्वर्गदूतों के सिद्धांत का विरोध करते हुए उसे “एक ही मध्यस्थ” घोषित किया।

इसके अतिरिक्त, पौलुस ने पहले ही इफिसुस के प्राचीनों से निवेदन किया था, “तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है” (प्रेरितों के काम 20:28)। उसने उन्हें यीशु के दैवीयता और मनुष्यता दोनों की वास्तविकता तथा उसकी प्रायश्चित करने वाली मृत्यु की याद दिलाई थी।

खतरनाक ज्ञानवादी विधर्म का खण्डन न केवल यहाँ किया गया है, बल्कि कुलुस्सियों की पत्री और यूहन्ना की पहली पत्री में भी किया गया है।

ख. सत्य का आक्रमण (4:1-7क)

(1) धर्मत्याग की घोषणा (4:1)

(क) वह दिन जिसकी परिकल्पना की गई (4:1क)

प्रेरितों के समय में जो धर्मत्याग जड़ पकड़ रहा था, वह अन्त के समय में पूर्ण और अंतिम रूप से विकसित होगा। पौलुस ने इसके विषय में भविष्यवाणी की, “परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग... विश्वास से बहक जाएँगे।”

जिस शब्द का प्रयोग मूल रूप से “स्पष्ट रीति से” के लिए किया गया है, वह नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और उसका अर्थ है “विशेष रूप से” या “स्पष्ट शब्दों में।” पवित्र आत्मा इस अन्त-समय की भविष्यवाणी की गवाही अस्पष्ट या प्रतीकात्मक भाषा में नहीं, बल्कि साफ़ और बिना किसी भ्रामक शब्दों में देता है।

“आनेवाले” के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं विशेषण के रूप में आता है। यह “जो बाद में आएगा” को संदर्भित करता है। हालाँकि “आने वाले समय” में निस्संदेह प्रेरितों के बाद का समय भी शामिल है, लेकिन यह अंतिम समय की परिस्थितियों का भी पूर्वानुमान लगाता है। यहाँ “समय” के लिए अनूदित शब्द काइरोस है। यह समय को नहीं (जैसा कि क्रोनोस भी करता है) बल्कि इतिहास के उन महत्वपूर्ण मोड़ों को संदर्भित करता है, जो सभी परमेश्वर के नियंत्रण में हैं।

“बहक” शब्द का शाब्दिक अर्थ है “धर्मत्याग करना”। “विश्वास” शब्द से पहले प्रयुक्त निश्चित पद यह स्पष्ट करता है कि यहाँ सामान्य विश्वास की नहीं, बल्कि उस विश्वास के त्याग की बात हो रही है—अर्थात् मसीही सिद्धांतों के उस संपूर्ण शिक्षात्मक सत्य की, जिसे पौलुस ने 3:16 में संक्षेप रूप में प्रस्तुत किया था।

4:1 में ध्यान उस अन्त-समय के विश्वाग-त्याग पर केंद्रित है, जो कलीसिया के उठा लिए जाने से पहले होगा और मसीह-विरोधी के आगमन के लिए एक वैश्विक वातावरण तैयार करेगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।

जो लोग इस अन्त-समय के धर्मत्याग में अगुवाई करेंगे—जो आगे चलकर आने वाले “भटका देनेवाली सामर्थ्य” (2 थिस्सलुनीकियों 2:11) के लिए मार्ग तैयार करेगा—वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने सत्य को जाना है और विश्वास का अंगीकार भी किया है, परन्तु जानबूझकर उसे त्याग दिया है। विश्वास से इस प्रकार का हट जाना हुमिनयुस और सिकन्दर के जीवन में दिखाई देता है, जिन्होंने विश्वास के विषय में “जहाज़ टूटने” का अनुभव किया (1 तीमुथियुस 1:19)। अन्य किसी स्थान पर, पौलुस ने ऐसे धर्मत्याग को “उलट पुलट करना” या “नाश करना” (2 तीमुथियुस 2:18) कहा है।

मसीहियत को छोड़कर मूर्तिपूजा या अन्यजातीय धर्म की ओर लौट जाना—जैसा कि रोमी सम्राट जूलियन ने किया—धर्मत्याग है। एक धर्मत्यागी किसी झूठे धर्म को मानता है, जो मसीही धर्म के प्रकट सत्यों के विपरीत होता है। सत्य का ऐसा त्याग नूह के दिनों की विशेषता थी (उत्पत्ति 4-6), और यह हमारे आधुनिक युग में भी दिन-प्रतिदिन अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है (मत्ती 24:37-39)। झूठा मसीह इसी प्रकार के धर्मत्याग की भूमि से उत्पन्न होगा।

(ख) वह प्रस्थान जिसकी परिकल्पना की गई (4:1ख-ग)

पौलुस ने परिकल्पना की थी कि जो लोग अंत समय में विश्वास त्याग देंगे, वे "भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन" लगाएंगे। "भरमाने" के लिए जिस शब्द का अनुवाद हुआ है वह प्लानोस है, जिसका अर्थ है "भटका देना, दूर हटा देना।"

अपने एक दृष्टान्त में, प्रभु ने सिखाया कि एक समय ऐसा आएगा जब शैतान ऐसा प्रतीत होगा मानो पराजित होकर अपने गढ़ से निकाल दिया गया हो; लेकिन वह फिर लौटेगा—पहले से भी अधिक शक्तिशाली और अधिक बुराई के साथ। एक दुष्ट "पीढ़ी" उसका स्वागत करेगी—ऐसी पीढ़ी जो आरम्भ की तुलना में सात गुना अधिक शैतान से ग्रस्त होगी (मत्ती 12:45; लूका 11:26)। ऐसे अनेक संकेत मौजूद हैं जहाँ यह कहा जा सकता है कि हमारी पीढ़ी ही वह पीढ़ी हो सकती है। यह उस अंतिम परमेश्वर-त्याग की तैयारी कर रहा है, जो अंतिम समय में मसीही जगत की एक भविष्यवाणीय पहचान है।

धर्मत्याग की प्रगति को जर्मनी की घटनाओं से समझाया जा सकता है। जिस देश ने हमें मार्टिन लूथर दिया, उसी ने बाद में तथाकथित "उच्च आलोचक" को जन्म दिया और फिर एडोल्फ हिटलर को। इस दुष्टात्मा द्वारा नियंत्रित व्यक्ति का शासन अन्त-समय की घटनाओं के लिए शैतान का मानो एक पूर्वाभ्यास था। हिटलर नियमित रूप से ज्योतिषियों से परामर्श करता था और उसने जर्मनी में "फेडरल कमीशन ऑफ ऑकल्टिज़्म" (सरकारी जादू-टोना) की स्थापना की। यह पहली बार था जब किसी आधुनिक राज्य ने आधिकारिक रूप से तांत्रिकी (जादू-टोना) को मान्यता दी और उसकी देखरेख के लिए एक सरकारी विभाग को भी स्थापित किया। ब्रिटेन ने हिटलर के जादू-टोना को इतनी गंभीरता से लिया कि उसने वाल्टर स्टीन नामक एक जर्मन तांत्रिक और माध्यम की सेवाएँ लीं, जिसने अधिकारियों को यह बताया कि ज्योतिषी हिटलर से क्या कह रहे थे।

हिटलर को नाज़ी पार्टी के संस्थापकों में से एक, डिट्रिख एकार्ट ने शैतानवाद में दीक्षित किया। इस दुष्ट व्यक्ति ने हिटलर की आत्मा को शक्तिशाली दुष्ट आत्माओं के प्रभाव के लिए खोल दिया, जिन्होंने उसे और जर्मनी को विनाश की ओर आकर्षित किया। इस प्रकार धर्मत्याग ने नाज़ी जर्मनी को जन्म दिया।

हम डार्विन के सिद्धांत के स्वयं डार्विन पर पड़े विनाशकारी प्रभाव का पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। संसार पर उसके पड़े हुए विनाशकारी प्रभाव का पूर्ण आकलन अनन्तकाल के इस पार कभी नहीं किया जा सकेगा। वह नाज़ीवाद और साम्यवाद—दोनों के मूल में था।

कैम्ब्रिज के भूविज्ञानी प्रोफेसर सेजविक ने डार्विन की पुस्तक को तुरंत समझ लिया। उन्होंने उसे "भौतिकवाद की एक थाली, जिसे चतुराई से पकाकर और परोसकर केवल हमें सृष्टिकर्ता से स्वतंत्र बनाने के लिए प्रस्तुत किया गया है" के रूप में वर्णित किया। उन्होंने घोषणा की कि यदि और जब डार्विन का सिद्धांत सामान्य रूप से स्वीकार कर लिया जाएगा, तो यह मानव जाति के क्रूरता की ओर पतन का कारण बनेगा।

विकासवाद के सिद्धांत ने आधुनिक मानववाद को भी जन्म दिया है। सांसारिक मानववादी हमारे विद्यालयों, न्यायालयों, विधायिकाओं और मीडिया में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं; और वे मूलतः विज्ञान पर आधारित एक नए धर्म की स्थापना करना चाहते हैं। जिस "नई विश्व व्यवस्था" की वे कल्पना करते हैं, उसमें मनुष्य स्वयं अपना ईश्वर होगा; राज्य सर्वोच्च होगा; सभी धर्मों के प्रमुख विचारों का समन्वय करके संसार को एक

साझा धर्म प्रदान किया जाएगा; सच्ची कलीसिया और बाइबल आधारित मसीहियत (उनकी दृष्टि में अंधविश्वासी संस्थाएँ) को उखाड़ फेंका जाएगा; आनुवंशिक अभियांत्रिकी के द्वारा एक श्रेष्ठ मानव जाति उत्पन्न की जाएगी; बच्चों को दो वर्ष की आयु से लेकर कॉलेज की शिक्षा पूर्ण करने तक विचारधारात्मक रूप से शिक्षित किया जाएगा; और जनसंचार माध्यम, न्यायालय, शैक्षिक प्रणाली, कलीसियाएँ तथा सभी सरकारी संस्थाएँ इस उद्देश्य में लगा दी जाएँगी। यह सब मसीह-विरोधी के लिए मार्ग तैयार करने का एक माध्यम है।

मनुष्य कोई मशीन नहीं है। उसमें एक आत्मा है, विवेक है, और परमेश्वर के प्रति एक जन्मजात प्यास है; इसलिए मानववादियों का भौतिकवाद उसके लिए बिना स्वाद के आहार के समान है। आधुनिक मनुष्य ने बड़े पैमाने पर मसीही विश्वास को त्याग दिया है, इसलिए लोग अपने भीतर के खालीपन को भरने के लिए किसी और चीज़ की खोज करते हैं। अन्त-समय के धर्मत्याग में एक और तत्व उभरकर सामने आया है, जो संसार को मसीह-विरोधी के लिए तैयार करेगा— वह है “न्यू एज आंदोलन”। यह तांत्रिक आंदोलन उन लोगों के बढ़ते और संभावित रूप से खतरनाक समूह को आकर्षित कर रहा है, जो ज्योतिषी, जादू-टोना, दुष्टात्मा-वाद, मानसिक शक्तियों, अलौकिक घटनाओं, भूत-प्रेत, अतिंद्रिय ज्ञान (ईएसपी), आत्मवाद और शैतान की उपासना में शामिल हैं।

यह आंदोलन कुछ हद तक लोगों को इसलिए स्वीकार्य लगता है क्योंकि यह पारिस्थितिक और पर्यावरण सुधार के प्रति उत्साह दिखाता है, कीटनाशकों से रहित प्राकृतिक खाद्य पदार्थों के लिए जोश रखता है, और तथाकथित रूप से स्वस्थ शाकाहारी आहार की ओर एक प्रबल झुकाव रखता है। (गहन तांत्रिक अनुभवों के लिए शाकाहार को अनिवार्य माना जाता है।)

नए युग के आंदोलन में रुचि को मीडिया की कुछ प्रस्तुतियों से विशेष बढ़ावा मिला, जैसे रोज़मेरीज़ बेबी पुस्तक और उसी नाम की फिल्म—जो एक युवा स्त्री की कहानी है, जिसने शैतान के बच्चे को जन्म दिया। जब यह फिल्म पश्चिमी तट पर प्रदर्शित हुई, तो समाचार-पत्रों के विज्ञापनों में निन्दात्मक रूप से यह अपील की गई, “रोज़मेरी के बच्चे के लिए प्रार्थना करें।” एक अन्य तंत्रवादी फिल्म द एक्सॉर्सिस्ट ने भी लाखों लोगों की कल्पना को आकर्षित किया। प्रतिदिन प्रसारित होने वाले रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम, जिनमें ज्योतिषियों और भविष्य बताने वालों को प्रमुखता दी जाती है, निरंतर बढ़ती हुई संख्या में लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं।

तांत्रिकवादी संसार कभी भी दूर नहीं रहा है। बाइबल जादू-टोना के विरुद्ध चेतावनी देती है। जादू-टोना और मृतकों से संपर्क करना जैसी प्रथाएँ मूसा की व्यवस्था के अधीन मृत्युदण्ड के अपराध थे (निर्गमन 22:18; व्यवस्थाविवरण 18:10)। राजा शाऊल ने अपने ही विनाश के लिए एक टोना करने वाली से परामर्श लिया था (1 शमूएल 28:6-19)।

बाइबल के ऐतिहासिक भागों में दुष्टात्माओं की गतिविधियों के तीन बड़े विस्फोटों का उल्लेख मिलता है। पहला नूह के दिनों में शैतानवाद का असीमित प्रकोप था। दूसरा कनान देश में इस्राएलियों की विजय से ठीक पहले हुआ। इन दोनों प्रकोपों ने पृथ्वी पर दैत्याकार, दुष्टात्मिक संतानों को उत्पन्न की।

तीसरा प्रकोप मसीह की सार्वजनिक सेवकाई के समय दिखाई देता है। वास्तव में, मरकुस और लूका के सुसमाचारों में दर्ज पहला चमत्कार एक दुष्ट आत्मा के साथ मुठभेड़ से संबंधित था। मसीह के आगमन ने शैतानी संसार में हलचल मचा दी और दुष्टात्माओं की गतिविधियों की मानो एक महामारी को ही उत्पन्न कर दिया।

चौथा प्रकोप मसीह-विरोधी के आगमन के निकट आने पर होगा। हम आज अन्त-समय की घटनाओं की छाया में जी रहे हैं, और हमारे युग में—जो इतिहास का सबसे उन्नत वैज्ञानिक युग है—तांत्रिकवाद के प्रति बढ़ती हुई रुचि यह दर्शाती है कि हम उस समय के कितने निकट आ पहुँचे हैं।

आधुनिक आत्मवाद की शुरुआत 1848 में मार्गरेट और केट फॉक्स (क्रमशः बारह और नौ वर्ष की आयु) द्वारा हुई, जो न्यूयॉर्क के हाइड्सविल में रहती थीं। इन बहनों ने अपने घर की दीवारों पर खटखटाहट की आवाज़ें सुनीं और जवाब देने वाली खटखटाहटों की एक पद्धति स्थापित की, जिसके माध्यम से वे कथित भटकती आत्माओं से संवाद करने लगीं।

आत्मवादी आंदोलन ने कई प्रतिष्ठित समर्थकों को अपनी ओर आकर्षित किया, जिनमें प्रसिद्ध ब्रिटिश वैज्ञानिक सर ओलिवर लॉज और प्रसिद्ध काल्पनिक जासूस शेरलॉक होम्स के रचयिता सर आर्थर कॉनन डॉयल शामिल थे।

यद्यपि इस आंदोलन में बहुत-से धोखाधड़ी के तत्व रहे हैं, फिर भी इसमें संदेह नहीं कि आत्मवादी लोग परलोक की किसी बुद्धिमान सत्ता से संपर्क करते हैं। वे यह मान लेते हैं कि वे मृत व्यक्तियों की आत्माओं से संपर्क कर रहे हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि वे दुष्टात्माओं से संवाद कर रहे होते हैं, जो मृत लोगों का रूप धारण कर लेती हैं।

इस छल में सम्मिलित दुष्टात्माओं को “परिचित आत्माएँ” कहा जाता है, क्योंकि वे उन मृत व्यक्तियों के जीवन के कुछ विवरणों से परिचित होती हैं, जिनका वे रूप धारण करती हैं। ये दुष्टात्माएँ देह धारण करने की लालसा रखती हैं और अवसर मिलते ही अपने शिकार के शरीर पर अधिकार कर लेती हैं।

मानव जाति के प्रति घोर घृणा से प्रेरित होकर ये दुष्टात्माएँ अपने शिकारों को विनाश की ओर ले जाने के लिए सदैव उत्सुक रहती हैं।

ऐसे शिकार का एक प्रसिद्ध आधुनिक उदाहरण जेम्स ए. पाइक है, जो अमेरिकी एपिस्कोपल कलीसिया के एक विद्वान किन्तु विवादास्पद बिशप थे। वे पहले एक वकील थे, फिर पादरी बने, फिर धर्मत्यागी बने, और अंततः दुष्ट आत्माओं के छल के शिकार हो गए।

मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान में उसके पूर्ण अविश्वास के कारण उसके संप्रदाय ने उन पर विधर्मी होने का आरोप लगाया।

पाइक का एक पुत्र था जो मादक, मनोप्रभावी नशीली पदार्थों का आदी हो गया और बीस वर्ष की आयु में आत्महत्या कर ली। बिशप ने अपने पुत्र के शरीर का दाह संस्कार कराया और उसकी राख को सैन फ्रांसिस्को के गोल्डन गेट ब्रिज के ठीक बाहर समुद्र में बिखेर दिया।

इसके बाद वह इंग्लैंड के कैम्ब्रिज गया और उसी अपार्टमेंट में ठहरा जहाँ वह पहले अपने पुत्र के साथ समय बिता चुका था। इस प्रकार एक धर्मत्यागी बिशप को फँसाने के लिए दुष्टात्माओं के लिए परिस्थितियाँ तैयार हो गईं।

कुछ ऐसी अजीब घटनाएँ घटित होने लगीं, जिन्होंने उस व्याकुल पिता को यह विश्वास दिलाया कि उसका मृत पुत्र उससे संपर्क करने का प्रयास कर रहा है। यह विचार उसके मन में एक जुनून बन गया, इसलिए उसने लंदन के ईस्ट एक्टन की श्रीमती ट्विंग नामक महिला की सेवाएँ लीं। उनकी ख्याति इंग्लैंड की प्रमुख टोना करने वालों में से एक के रूप में थी जो मृत आत्माओं से संपर्क कर सकती थी।

पाइक को यह दृढ़ विश्वास हो गया कि कैम्ब्रिज का वह अपार्टमेंट, जो उसके लिए स्मृतियों से भरा हुआ था, उसके पुत्र की आत्मा द्वारा प्रेतबाधित है। जिस छल करने वाली आत्मा से उसने संपर्क किया था, उसने उसे उन लोगों के विरुद्ध अपने संघर्ष में साहसी बने रहने के लिए उकसाया, जो उस पर विधर्म का आरोप लगा रहे थे।

इसके बाद बिशप से उस आत्मा ने भेंट की, जिसे उसने जर्मन-अमेरिकी धर्मशास्त्री और अपने मित्र रहे पॉल टिलिख की आत्मा समझा। टिलिख का रूप धारण करने वाली उस आत्मा ने पाइक को धन्यवाद दिया कि उसने एक पुस्तक उसे समर्पित की थी, और उसे मसीही सिद्धांतों के विरुद्ध अपने अभियान को जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

आत्मावाद में विश्वास करने के बाद, पाइक संयुक्त राज्य अमेरिका लौट आया, कलीसिया से त्यागपत्र दे दिया और टोन्हों का समर्थन करने लगा। अंततः, उसे नियंत्रित करने वाली दुष्टात्माओं ने उसे मृत सागर के आसपास के जलते हुए रेगिस्तान में अपने आप को मार डालने के लिए फुसलाया। [3] जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी चेतावनी में लिखा था, “कितने लोग भ्रमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाएंगे।”

आत्मावाद आज के धार्मिक संसार में अच्छी तरह स्थापित हो चुका है। इसे पूर्वी धर्मों के पश्चिम में प्रवेश से और भी बल मिला है, जो सदैव तांत्रिकता से गहराई से प्रभावित रहे हैं। “न्यू एज आंदोलन” के रूप में आत्मावाद ने एक सम्मानजनक मुखौटा धारण कर लिया है, जिसके कुछ प्रभावशाली और लोकप्रिय समर्थक भी हैं। लोग बहकाए जा रहे हैं।

अपने आरम्भ से ही, आधुनिक आत्मावाद धोखाधड़ी और तुच्छ बातों से भरा रहा है। इसके सबसे प्रबल समर्थकों ने भी स्वीकार किया है कि जिन आत्माओं से उन्होंने संपर्क किया, उनकी अयोग्यता और निर्लज्ज दुष्टता देखकर वे चकित रह गए—ऐसे “होमर” जो ठीक-ठाक यूनानी नहीं लिख सकते, ऐसे “शेक्सपीयर” जो एलिज़ाबेथ के काल की अंग्रेज़ी नहीं बोल सकते, और ऐसे “सर आइज़ैक न्यूटन” जो साधारण अंकगणित के प्रश्न हल नहीं कर सकते। आत्मावादी स्वयं मानते हैं कि जिन अधिकांश घटनाओं का उन्होंने अनुभव किया—आवाज़ें, खटखटाहट, थपथपाहट, मेज़ों का हिलना-डुलना, प्रश्नों के मूर्खतापूर्ण उत्तर—वे बचकानी, तुच्छ, अशिष्ट और कई बार बिल्कुल हास्यास्पद होती हैं।

आत्मिक संसार में ऐसी बुद्धिमान सत्ताओं का अस्तित्व, जो मानव जाति को प्रभावित करना चाहती हैं, अब संदेह के घेरे में नहीं है। प्रश्न यह है कि वे कौन हैं?

सर ओलिवर लॉज ने स्वीकार किया, “कभी-कभी सीधे-सीधे रूप धारण करना होता है।” उन्होंने यह भी माना, “मृतकों के आत्मा-सभा में लौट आने के अतिरिक्त एकमात्र विकल्प यह है कि किसी प्रकार की अलौकिक शरारत की कल्पना की जाए, जो इतनी जटिल रूप से भ्रामक हो कि उसे दुष्ट या यहाँ तक कि शैतानी कहना पड़े।”

और वास्तव में, बात ठीक वैसी ही है।

स्टेन्टन मोसेस एक ऑक्सफोर्ड के पादरी थे, जिन्हें उनकी “परिचित आत्माओं” ने धर्मत्यागी बना दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख आत्मावादी के रूप में उसने स्वीकार किया कि जिन आत्माओं से उसका संपर्क था, वे “नैतिक चेतना से रहित” थीं।

उसने कहा, “इन प्रकटनों को संचालित करने वाली आत्माओं की ओर से हम पर और इस युग की धार्मिक सोच पर प्रभाव डालने की एक संगठित योजना होती है। मसीही विश्वास के मुख्य सिद्धांत विशेष रूप से आक्रमण के लक्ष्य प्रतीत होते हैं, और यही बात मुझे चौंका गई।”

सर आर्थर कॉनन डॉयल ने भी लगभग यही स्वीकार किया था: “दुर्भाग्य से, हमें दुष्ट बुद्धिजीवियों के निर्दयी झूठ का सामना करना पड़ता है।” यदि डॉयल ने प्रेरित पौलुस पर विश्वास किया होता और उसकी चेतावनी पर ध्यान दिया होता, तो डॉयल को उनका शिकार नहीं बनना पड़ता।

आज तांत्रिक विद्या में नई रुचि उस “आनेवाले समय” के आगमन का संकेत देती है जिसके बारे में पौलुस ने लिखा था। चार्ल्स डी. लैम की गवाही विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, और इसका महत्व इस तथ्य से कम नहीं होता कि उन्होंने इसे कई वर्ष पहले दिया था।

हृदय- परिवर्तन से पहले, वे ब्रह्मविद्या के आंतरिक समूह के एक प्रशिक्षु थे। उसे जल्द ही इस बात का एहसास हो गया कि महान शक्ति कार्य कर रही है, लेकिन वह इसकी विश्वसनीयता की कमी से परेशान था। एक गैर-मसीही होने के नाते, वह किसी व्यक्तिगत शैतान को सभी बुराइयों का स्रोत नहीं मानता था। लेकिन वह जानता था कि वह महान आत्मिक बुद्धिजीवियों के संपर्क में था जो दुनिया को, उसके समय में भी, आने वाले झूठे भविष्यद्वक्ता और मसीह-विरोधी के लिए तैयार कर रही थीं।

वह कहता है कि एक महान शिक्षक के शीघ्र आने की बड़ी अपेक्षा की जा रही है। शैतान की अलौकिक शक्तियाँ “पाप के पुरुष” के लिए मार्ग तैयार कर रही हैं।

उसने सी. ज़िंदरपोदासा जैसे व्यक्तियों को—जो एक बौद्ध थे—ऐसे संदेश देते हुए सुना था जिनमें गुप्त जानकारी सम्मिलित थी, जो उनके अनुसार अदृश्य लोक से एक महान अगुवे के आगमन के विषय में प्राप्त हुई थी। उसने हिन्दू ऋषियों को यह कहते सुना था कि कोई महान विश्व-गुरु अवश्य आएगा, जो अतीत के किसी “गुरु” का पुनर्जन्म होगा।

वह जानता था कि बौद्ध भिक्षु एक ऐसे विश्व-बुद्ध के उदय की बात करते हैं, जो पवित्र और परम प्रबुद्ध होगा।

वह यह भी जानता था कि बौद्ध धर्म के प्रमुख विचारक दावा करते हैं कि उन्होंने अदृश्य प्राणियों से संपर्क किया है, जिन्होंने यह सूचना दी है कि कोई आने वाला है।

आने वाला मसीह-विरोधी उन सभी प्रकार की विचारधाराओं के तांत्रिकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगा जो यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि एक ईश्वर-सम्राट स्वयं प्रकट होगा। उसके प्रकट होने का तरीका यह होगा कि वह स्वयं द्वारा चुने गए और अपने उपयोग के लिए तैयार किए गए एक शरीर पर अधिकार कर लेगा। दूसरे शब्दों में, तांत्रिक ऐसे व्यक्ति की खोज में हैं जिसकी आत्मा स्वयं को एक मानव शरीर में अवतरित करेगी। [9]

थुले समूह के तांत्रिक, जिनसे हिटलर और अनेक अन्य प्रमुख नाज़ी जुड़े हुए थे, इस बात के प्रति आश्चस्त थे कि लंबे समय से जिस मसीहा की प्रतीक्षा की जा रही थी वह स्वयं हिटलर ही है। तब से पश्चिमी संसार में अनेक हिंदू और बौद्ध गुरु आए हैं, और उनकी शिक्षाओं तथा अपेक्षाओं ने उस समाज में गहरी जगह बना ली है जिसने बड़े पैमाने पर मसीही विश्वास को त्याग दिया है। परन्तु आने वाले विश्व-मसीहा के संबंध में सही और विश्वसनीय जानकारी केवल बाइबल में ही पाई जाती है।

हम एक बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि शैतान को उस महामानव को उत्पन्न करने की अनुमति नहीं दी जाएगी—जिसकी कल्पना नीत्शे ने की, जिसकी घोषणा नाज़ियों ने की, जिसकी प्रतीक्षा नव् युग आंदोलन में की जा रही है, जिसकी अपेक्षा पूर्वी धर्मों के भिक्षु करते हैं, और जिसकी भविष्यवाणी बाइबल में की गई है—जब तक परमेश्वर का समय न आ जाए।

पवित्र आत्मा जो कलीसिया में कार्य कर रहा है, महान रोकनेवाला है; शैतान की योजनाएँ निरंतर बाधित की जाती हैं, यद्यपि वह अपने भरमाए हुए मानवीय अनुयायियों को बार-बार आशावादी घोषणाएँ करता रहता है कि समय निकट है। रोकनेवाला (पवित्र आत्मा) अभी भी यहाँ उपस्थित है (2 थिस्सलुनीकियों 2:7-8)।

"भरमानेवाली आत्माएँ" भी यहाँ मौजूद हैं। और "दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ" भी बहुतायत से प्रचलित हैं। झूठे पंथों के सदस्यों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। अजीबोगरीब मसीहा अपने अनुयायियों को ज़हर पीकर सामूहिक आत्महत्या करने या अग्नि की भीषण ज्वालाओं में स्वयं को और अपने बच्चों को झोंक देने के लिए भी राज़ी कर लेते हैं। पूर्वी गुरु लोगों को मन-नियंत्रण करने वाले पंथों में फँसा लेते हैं। यहाँ तक कि कथित कलीसिया ने भी बड़े पैमाने पर पारंपरिक मसीही विश्वास को त्याग दिया है और उसके स्थान पर या तो बाइबल को नकारने वाली उदारवादी धर्मशास्त्र को अपना लिया है, या फिर ऐसी पंथ-संबंधी धर्मशास्त्र को, जो अनुभव को ऊँचा उठाती है और सिद्धांत को कम महत्व देती है। अनुभव पर ऐसा अत्यधिक जोर देना तांत्रिक विद्या के साथ छेड़छाड़ करने के समान है।

(2) धर्मत्याग का विश्लेषण (4:2-5)

(क) इसका भ्रामक स्वरूप (4:2)

अंत-समय के धर्मत्याग का विश्लेषण करते हुए, पौलुस ने बताया कि उसे ऐसे लोग फैलाएँगे जिनमें चरित्र का अभाव होगा—ऐसे लोग जो “झूठे मनुष्यों के कपट” के दोषी होंगे। दूसरे शब्दों में, वे झूठे होंगे।

यहाँ “झूठ मनुष्यों” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है वह स्यूडोलोगोस है, जिसका अर्थ है “झूठे शब्द बोलना।” और “कपट” के लिए प्रयोग किया गया शब्द हुपोक्रिसिस है, जो अभिनय करने या दिखावा करने के विचार को व्यक्त करता है।

“झूठे मनुष्यों के कपट” का यह वर्णन उन दुष्ट आत्माओं पर लागू हो सकता है जो धर्मत्याग को प्रेरित करेंगी, या उन लोगों पर जो उसे फैलाएँगे—और संभव है कि यह दोनों पर ही लागू होता हो।

ऐसा प्रतीत होता है कि दुष्टात्माएँ पूर्णतः भ्रष्ट प्राणी हैं, जो पाप से प्रेम करती हैं और लोगों को पाप में गिराने में आनंदित होती हैं। दुष्टात्माओं के मानवीय माध्यम भेड़ों के भेष में घुमते भेड़िए होते हैं, जिनके विषय में कलीसिया को पहले ही पर्याप्त चेतावनी दी जा चुकी है (मत्ती 7:15; प्रेरितों के काम 20:29)। ये धोखेबाज़ किसी भ्रम के शिकार नहीं होते; बल्कि वे जानी-पहचानी सच्चाई और अपने विवेक के विरुद्ध जान-बूझकर कार्य करते हैं।

वास्तव में, पौलुस ने घोषित किया कि अंत-समय का धर्मत्याग ऐसे लोगों द्वारा फैलाया जाएगा जिनका विवेक मर चुका होगा। उसने उनका वर्णन इस प्रकार किया: “जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है।” यह उन दुष्ट आत्माओं और मनुष्यों की पहचान होगी जो जान-बूझकर और समझ-बूझकर धर्मत्याग को बढ़ावा देते हैं।

यद्यपि वे जानते हैं कि उनकी शिक्षा का अंतिम परिणाम परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा, बेलगाम अधर्म के काम, और अनियंत्रित हिंसा होगा, फिर भी वे लोगों को यह विश्वास दिलाएँगे कि केवल उनकी शिक्षा ही सच्ची पवित्रता को बढ़ावा देती है। (पूर्ण रूप से धर्मत्यागियों के जीवन और उनके दुष्प्रभाव के विषय में अधिक जानकारी के लिए 2 पतरस और यहूदा की पत्रियों को देखें।)

यहाँ “दागा गया है” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वही शब्द हमें अंग्रेज़ी का कटोराइज़ शब्द देता है। पुराने समय में, घावों को गरम लोहे से दागकर (कटोराइज़ करके) उपचार किया जाता था। इस शब्द का अनुवाद “चिह्नित करना” या “सुन्न कर देना” भी किया जा सकता है। जिस प्रकार हम पशुओं को लाल-गरम लोहे से दागकर उन पर निशान लगाते हैं, उसी प्रकार शैतान अपने दूतों के विवेक पर दाग लगा देगा। इस तरह वे पवित्र आत्मा के अपराधबोध के कार्य की पहुँच से बाहर हो जाएँगे।

यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि आने वाले धर्मत्याग ने हमारे आधुनिक समाज को कितनी गहराई तक प्रभावित कर दिया है—विशेषकर उस तरह की फ़िल्मों से जो बनाई और प्रचारित की जा रही हैं। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनमें बेलगाम वासना और हिंसा को दिखाया जाता है, जो आज उन बहुत से लोगों का दैनिक मनोरंजन बन चुकी है जो सिनेमाघरों में जाते हैं या केबल टेलीविज़न पर फ़िल्में देखते हैं। उदाहरण के लिए, ‘द लास्ट टेम्पटेशन ऑफ़ क्राइस्ट’ ने लाखों दर्शकों को आकर्षित किया और समय-समय पर घरेलू वीडियो सामग्रियों में भी उपलब्ध हो रही है। इस फ़िल्म में परमेश्वर के पुत्र को व्यभिचारी के रूप में और यहूदा इस्करियोति को नायक के रूप में चित्रित किया गया है। कुछ दशक पहले, चाहे कोई मसीह के प्रति कितना भी कटुता क्यों न रखता हो, ऐसी फ़िल्म बनाने का साहस नहीं करता था। परंतु अब इस प्रकार की निन्दात्मक प्रस्तुतियाँ बॉक्स ऑफिस पर सफल होती हैं, उनका व्यापक प्रचार किया जाता है, और प्रेस में उनकी सराहना भी की जाती है।

(ख) इसका विनाशकारी स्वरूप (4:3-5)

अंत-समय के धर्मत्याग के दो और चिन्हों का उल्लेख करते हुए पौलुस लिखता है: “जो विवाह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे” (4:3)। धर्मत्याग की पहचान इस बात से होती है कि वह विवाह पर आक्रमण करता है और मांसाहार के विरोध के द्वारा खाने-पीने पर भी आक्रमण करता है। यह दोहरी मनाही उस दुष्टात्मिक शिक्षा से उत्पन्न होती है जो प्रारंभिक कलीसिया को सताने वाले ज्ञानवाद में दिखाई देती थी। जैसे-जैसे अंत-समय निकट आएगा, वैसे-वैसे यह प्रवृत्ति और भी अधिक प्रकट होगी। कठोर संयमवाद अपना प्रभाव बढ़ाएगा और प्रमुख स्थान ग्रहण करेगा।

कुछ लोग मानते हैं कि धर्मत्याग के ये लक्षण रोमन पंथ में दिखाई देते हैं, क्योंकि ये मनाही आंशिक भी हो सकती हैं और पूर्ण रूप में भी। रोमन कैथोलिक चर्च अपने याजकों और मठों में प्रवेश करने वालों पर ब्रह्मचर्य लागू करती है; भिक्षुओं और ननों से कभी-कभी मांस से परहेज करने की अपेक्षा की जाती है; और एक समय ऐसा भी था जब रोमन कैथोलिक कलीसिया अपने सभी सदस्यों से शुक्रवार को मांस न खाने की अपेक्षा करती थी।

फिर भी, यह निश्चित है कि रोमन कैथोलिक चर्च ने विवाह को स्वयं इतना नष्ट नहीं किया है। यद्यपि कैथोलिक उपदेश नये नियम की शिक्षा में अनेक अतिरिक्त बातों को जोड़ देता है और अपनी अनेक परंपराओं को पवित्रशास्त्र के समान अधिकार देता है, तथापि वह 1 तीमुथियुस 3:16 में उल्लिखित विश्वास के मुख्य सिद्धांतों को मानता है। वह विश्वास करता है कि यीशु देह में प्रकट हुआ परमेश्वर है, और कि वह मरा, फिर जी उठा, और स्वर्ग पर उठा लिया गया है।

"विवाह करने से रोकेंगे"- यह 4:3 में उल्लिखित पहला प्रहार है। “रोकेंगे” शब्द उस अधिकार पर बल देता है जिसे धर्मत्यागी शिक्षक अपने ऊपर ले लेंगे—ऐसा अधिकार जो उन दुष्टात्माओं से प्राप्त होगा जिनकी वे सेवा करेंगे।

आत्मवाद में दुष्टात्माएँ लोगों को यह शिक्षा देती हैं कि वे केवल “आध्यात्मिक अनुरूपता” के आधार पर ही एक हों; इस शिक्षा ने अनेक घरों को नष्ट कर दिया है।

ज्ञानवादी सिद्धांत यह मानता था कि विवाह स्वयं में ही एक बुरी चीज़ है।

दूसरा प्रहार है—“भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा।” हमारे समाज में “मांस” शब्द मुख्य रूप से पशु के मांस के लिए प्रयुक्त होता है। परन्तु यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द सामान्य रूप से भोजन के लिए है, फिर भी संभव है कि यह दुष्टात्मा द्वारा मनाही विशेष रूप से मांस खाने पर ही लागू होती हो।

आत्मावादी मानते हैं कि मांस खाना उस शक्ति के विकास में बाधा डालता है जिसकी आवश्यकता माध्यमों को होती है, ताकि वे मृतकों के संदेश जीवित लोगों तक पहुँचा सकें।

जलप्रलय से पहले तक परमेश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी आहार तक ही सीमित रखा था। यद्यपि आदम को मछलियों, पक्षियों और अन्य सभी जीवित प्राणियों पर प्रभुत्व दिया गया था, फिर भी उसका आहार फलों और सब्जियों तक ही सीमित था। परमेश्वर ने कहा, “सुनो, जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के

ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं।”

पतन के बाद कुछ पशुओं का उपयोग बलिदान के लिए किया गया; परन्तु उन्हें भोजन के रूप में उपयोग करने की कोई व्यवस्था नहीं दी गई थी (उत्पत्ति 1:28-29; 4:1-5)।

परन्तु जलप्रलय के बाद मनुष्य के आहार में अचानक और मूलभूत परिवर्तन किया गया। परमेश्वर ने कहा, “सब चलनेवाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे; जैसा तुम को हरे हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब कुछ देता हूँ।”

केवल एक ही प्रतिबंध रखा गया था — ‘मांस को लहू समेत तुम न खाना’ (उत्पत्ति 9:3-4)।

आहार में यह परिवर्तन संभवतः इस तथ्य से संबंधित प्रतीत होता है कि जलप्रलय से पहले इस ग्रह पर गुप्त-विद्याओं का एक व्यापक आक्रमण हुआ था। पतित स्वर्गीय प्राणियों ने पृथ्वी पर दानवों की एक भयानक उच्च जाति उत्पन्न करने के उपाय खोज लिए थे (उत्प. 6:1-5)। जिस शब्द का अनुवाद “दानवों” के रूप में किया गया है, वह नेफिलीम है, जिसका अर्थ है “गिरे हुए लोग।” उनके प्रकट होने के साथ ही दुष्टता में अचानक वृद्धि हुई, और ज्ञान का भी विस्फोट हुआ। मांसाहार की अनुमति संभवतः इस प्रलय-पूर्व गुप्तवाद से जुड़ी रही हो, यदि मांस खाने को आत्मावाद, दानववाद, जादूटोना और शैतानवाद को रोकने वाला माना जाता था।

इसलिए कुछ प्रकार के भोजन—विशेषकर मांस—को खाने के विरुद्ध लगाए गए निषेध ठीक वैसे ही हैं जैसी हम उन शिक्षाओं से अपेक्षा करते हैं जो दुष्ट आत्माओं से आती हैं, जो अंतिम समय के धर्मत्याग के प्रसार में बाधा डालने वाली हर रुकावट को तोड़ने के लिए उत्सुक रहती हैं। इन सबका प्रभाव हम पूर्वी धर्मों में देख सकते हैं, जो प्रायः गुप्त-विद्याओं से गहराई से जुड़े होते हैं और जिनमें मांसाहार से परहेज़ को जीवन का नियम बना दिया जाता है। शाकाहारी भोजन के चलन की लोकप्रियता में वर्तमान उछाल भी इस बात का एक और संकेत है कि अंतिम समय का धर्मत्याग निकट आ रहा है।

1 तीमुथियुस 4:3-5 में पौलुस ने हमारे लिए सर्वाहारी आहार उपलब्ध कराने में परमेश्वर की भलाई और बुद्धि को विस्तार से स्पष्ट किया। उसने इस तथ्य पर बल दिया कि हम जो चाहें खा सकते हैं, बशर्ते हमारा भोजन परमेश्वर की उस भलाई के प्रति उचित कृतज्ञता के साथ हो, जिसके द्वारा वह हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

प्रभु यीशु ने मांस खाया। उदाहरण के लिए, उसने फसह के मेम्ने में भाग लिया; और उसने एक छोटे लड़के की रोटियों और मछलियों से एक बड़ी भूखी भीड़ को भोजन कराया। अपने पुनरुत्थान के बाद जब वह ऊपर की कोठरी में प्रकट हुआ, तो उसने जानबूझकर भूनी हुई मछली खाई, ताकि यह सिद्ध कर सकें कि वह कोई आत्मा नहीं, बल्कि एक वास्तविक मनुष्य हैं। और जब अपने पुनरुत्थान के बाद वह गलील की झील के किनारे पतरस और उसके साथियों से मिले, तो उसने उनके लिए ऐसा नाश्ता तैयार किया जिसमें मछली भी शामिल थी।

(3) प्रत्याशित धर्मत्याग (4:6-7क)

(क) क्या याद रखें (4:6)

पौलुस ने तीमुथियुस को यह आदेश दिया कि वह इफिसुस के मसीहियों को आने वाले धर्मत्याग की याद दिलाए। भेड़ों के बीच भेड़िए पहले ही आ चुके थे। उसने इफिसुस के प्राचीनों को पहले ही चेतावनी दे दी थी कि उन्हें क्या अपेक्षा रखनी चाहिए। “तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे” (प्रेरितों के काम 20:30)। पौलुस ने उन्हें पहले ही सावधान कर दिया था, इसलिए उसने तीमुथियुस से आग्रह किया कि वह “भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाता” रहे।

पौलुस के मन में कलीसिया को भीतर से धमकाने लगे खतरे, बाहर से आने वाले खतरों की तुलना में कहीं अधिक गंभीर लग रहे थे। वह नीरो के समय के सतावों का मुश्किल से ही उल्लेख करता है, क्योंकि उभरती हुई ज्ञानवादी झूठे उपदेशों की तुलना में उनका महत्व छोटा और क्षणिक था। कलीसिया अपने ‘नीरो’ से तो बचकर निकल सकती थी; परन्तु अपने धर्मत्यागियों से वह केवल बड़ी कठिनाई से ही जीवित रह सकती थी।

पौलुस की महानतम प्रेरितीय सफलताओं में से एक इफिसुस में कलीसिया की स्थापना करनी थी, क्योंकि वह नगर शैतान की राजधानियों में से एक था। वहाँ जादू-टोना और टोटके खूब फल-फूल रहे थे, और उसके नागरिक अपनी देवी की घृणित मूर्ति की बड़ी उत्साह से सेवा करते थे (प्रेरितों के काम 19:13-20, 23-41)। इस नैतिक और धार्मिक दलदल के बीच कलीसिया एक सुंदर सोसन के फूल के समान निर्मल और निष्कलंक, सूर्य के समान उज्ज्वल खड़ी थी। वह डायना के घृणित मंदिर और उसकी अशुद्ध उपासना के विपरीत एक तीव्र विरोध के रूप में दिखाई देती थी। पौलुस जानता था कि कलीसिया बाहर से उसे घेरे हुए मूर्तिपूजा के सताव को सहन कर सकती है, परन्तु यदि मूर्तिपूजा और आत्मावाद भीतर तक घुस आएँ, तो उसकी स्थिति वास्तव में अत्यन्त दयनीय हो जाएगी।

इसलिए प्रेरित ने तीमुथियुस को यह आदेश दिया कि वह उन्हें कोई नई शिक्षा न सिखाए, बल्कि इफिसियों को उन बातों का स्मरण दिलाए जिन्हें वे पहले से जानते थे। यदि वह उन्हें इन बातों के प्रति सावधान करता रहता, तो वह स्वयं को “मसीह यीशु का अच्छा सेवक” ठहराता (1 तीमुथियुस 4:6)।

विश्वास से गिरना स्पष्ट रूप से आरम्भ हो चुका था, इसलिए विश्वासियों को “पोषित” किए जाने की आवश्यकता थी। 4:6 में जिस शब्द का अनुवाद “पालन-पोषण” किया गया है, वह एन्त्रेफोमाई है, जिसका अर्थ है “प्रशिक्षित किया जाना” या “पोषित किया जाना।” जैसे हम लंबे समय तक शारीरिक भोजन के बिना नहीं रह सकते, वैसे ही हम लंबे समय तक आत्मिक भोजन के बिना भी नहीं रह सकते। इफिसियों को आत्मिक रूप से भोजन दिया जाना आवश्यक था, और उनके सेवक तीमुथियुस को भी। तीमुथियुस को पोषण देने के लिए, पौलुस ने उसे यह परमेश्वर-प्रेरित पत्री भेजी। ऐसा करके, प्रेरित ने ऐसा आत्मिक भोजन प्रदान किया जो उस समय से लेकर आज तक परमेश्वर के लोगों का पोषण करता आ रहा है।

पद 4:3-5 में, पौलुस ने उस मेज़ के विषय में चर्चा की थी जिसे परमेश्वर अपने लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निरंतर लगाता है। अब 4:6 में, वह उस मेज़ का उल्लेख करता है जो उनकी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगाई जाती है। उसने तीमुथियुस को यह चुनौती दी कि वह विश्वासियों को “विश्वास और अच्छे उपदेश” से पोषित करे। ये “शाही व्यंजन” (उत्पत्ति 49:20)

परमेश्वर के लोगों को भूले-भटके शिक्षाओं और आने वाले समयों के धर्मत्याग के विरुद्ध दृढ़ और सशक्त बनाएँगे।

उपदेश की उपेक्षा करना खतरनाक है, इसलिए पौलुस उस पर बार-बार बल देता रहा (1 तीमुथियुस 4:6, 13, 16)। हम अपनी आत्माओं का निर्माण केवल गीतों, भजनों और गवाहियों पर नहीं कर सकते। शोर-शराबा और सनसनी उत्पन्न करने वाले तरीके अच्छे उपदेश का बहुत ही कमजोर विकल्प है। इसी कारण, प्रारम्भिक कलीसिया में चिन्ह और चमत्कार के वरदान अपना उद्देश्य पूरा करते ही हटा लिए गए (1 कुरिन्थियों 13:8-12)। अय्यूब की कथा पर छाया रहने वाला महान प्रश्न यह था: “क्या उसका अनुभव उसके धर्मविज्ञान पर विजय पाएगा, या उसका धर्मविज्ञान उसके अनुभव पर विजय पाएगा?” यही प्रश्न उन सभी पर भी मंडराता रहता है जो उपदेश की दृष्टि से स्वस्थ कलीसियाओं को छोड़कर भावनाओं से संचालित होने वाले समूहों को अपनाते हैं।

हम गहन व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन और व्यापक पवित्रशास्त्र मनन के द्वारा अपनी आत्माओं को पालन-पोषण कर सकते हैं। हम उन लोगों के चरणों में बैठ सकते हैं जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने सिखाया है। और हम युगों-युगों के महान मंचीय उपदेशकों की पुस्तकों को पढ़ सकते हैं।

तीमुथियुस ने परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी और शिक्षक—दोनों रूपों में—पौलुस की स्वीकृति प्राप्त की थी। पौलुस ने लिखा, “जो तू मानता आया है” (1 तीमुथियुस 4:6)। यहाँ “मानता आया है” के लिए प्रयुक्त शब्द भूतकाल में है और जिसका अर्थ है “निकटता से अनुसरण करना।” तीमुथियुस ने पौलुस से प्राप्त प्रेरिताई शिक्षा पर गहराई से ध्यान दिया था और पौलुस के पदचिह्नों पर निकटता से चला था। मरकुस ने इसी शब्द का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि प्रारम्भिक सुसमाचार प्रचार के साथ चिन्ह और अद्भुत काम कैसे चलते थे: “विश्वास करनेवालों में ये चिह्न होंगे” (मरकुस 16:17)। लूका ने इसी शब्द का प्रयोग यह बताने के लिए किया कि सुसमाचार लिखने की तैयारी में उसने अपने सूचना-स्रोतों का कितनी सावधानी और निकटता से अनुसरण किया था: “सब बातों का सम्पूर्ण हाल [यही शब्द]” (लूका 1:3)। पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग यह पुष्टि करने के लिए किया कि तीमुथियुस ने उसके उदाहरण और शिक्षा का पूर्ण रूप से अनुसरण किया था।

(ख) किन बातों से अलग रहना है (4:7क)

तीमुथियुस को किसी भी बात के कारण “अच्छे उपदेश” के पीछे चलने से हटना नहीं था। पौलुस ने उसे चेतावनी दी कि वह “अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों” का इनकार करे। स्पष्ट है कि ऐसी बातें इफिसुस में काफी प्रचलित थीं। जिस शब्द का अनुवाद “कहानियाँ” किया गया है, वह मिथोस है, जिसके अर्थ के कई रंग हैं, पर यहाँ इसका तात्पर्य कल्पना या गढ़ी हुई कहानियों से है और यह ज्ञानवादी त्रुटि की ओर संकेत करता है। पौलुस पहले ही इस शब्द का उपयोग यहूदी कथाओं के संदर्भ में कर चुका था (1:4)। स्पष्ट रूप से, तीमुथियुस को ज्ञानवादियों की मूर्खतापूर्ण और परमेश्वर-विहीन कल्पनाओं में अपना समय नष्ट नहीं करना था।

ऐसी कल्पित कथाओं पर अपना समय नष्ट करना हमारे लिए कितना मूर्खतापूर्ण होगा। हमारे पास बाइबल है। वह परमेश्वर-प्रेरित और अविनाशी है। अनंतता के ही तत्त्व से बनी हुई, यह आकाश के सभी तारों से भी

अधिक समय तक बनी रहेगी। उसकी गहराइयों को खोजने, उसकी ऊँचाइयों पर चढ़ने और उसके असीम क्षेत्रों में भ्रमण करने के लिए हमें सम्पूर्ण अनंतकाल भी कम पड़ेगा। हमारे हाथों में अधिकारपूर्ण, अनंत और पूर्ण सत्य उपलब्ध है।

“अशुद्ध और बूढ़ियों की कहानियाँ” का परमेश्वर के वचन से कोई मेल नहीं है। यहाँ “अशुद्ध” के लिए प्रयुक्त शब्द 1:9 में भी उपयोग किया गया है। “बूढ़ियों की सी” के लिए प्रयुक्त शब्द केवल यहीं मिलता है। इसका अनुवाद “बूढ़ी स्त्रियों जैसा” भी किया जा सकता है। यकीनन, निरर्थक बातें करने का एकाधिकार केवल बूढ़ी स्त्रियों का नहीं है (प्रेरितों के काम 17:18-21)। किसी भी स्थिति में, हमें उन लोगों की मूर्खतापूर्ण धारणाओं पर समय नष्ट नहीं करना चाहिए जो भूल में पड़े बूढ़े हो चुके हैं।

तीमुथियुस को उन लोगों के साथ बहस करने से “इनकार” करने के लिए कहा गया था जो अपनी मूर्खताओं में पड़े हुए थे। जिस शब्द का अनुवाद “इनकार करना” किया गया है, उसका अर्थ “विनम्रतापूर्वक टाल देना” या “क्षमा माँगकर अलग हो जाना” भी हो सकता है। ऐसे मूर्ख लोगों के प्रति हमें असभ्य होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उनके साथ दृढ़ रहना बहुत आवश्यक है।

हमारे पास उन लोगों से बहस करने का समय नहीं है जो कहते हैं कि पृथ्वी सपाट है, कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने वास्तव में मनुष्यों को चंद्रमा पर नहीं उतारा, या नाज़ी नरसंहार कभी हुआ ही नहीं। इसी प्रकार, जब लोग धार्मिक प्रकृति की विचित्र बहसें छेड़ते हैं—जैसे, “एक सुई की नोक पर कितने स्वर्गदूत खड़े हो सकते हैं?” या “यदि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है, तो परमेश्वर को किसने बनाया?” या “कैन को उसकी पत्नी कहाँ से मिली?”—तो हम उनमें उलझना नहीं चाहते। साथ ही हम किसी दार्शनिक चर्चाओं या विचित्र पंथों की विचित्र और निराधार विवादों में भी पड़ना नहीं चाहते।

क्योंकि हमारे पास करने के लिए कहीं अधिक अच्छे कार्य हैं, इसलिए हमें ऐसी सभी उलझनों से स्वयं को अलग कर लेना चाहिए। जो लोग मूर्खतापूर्ण प्रश्न या मुद्दे उठाते हैं, उनका सामना हमें परमेश्वर के वचन की सच्चाइयों से करना चाहिए और वहीं पर बात रोक देनी चाहिए। सामान्य रूप से, बौद्धिक तर्क लोगों को मसीही बनने के लिए राज़ी नहीं करते। लोग मसीही इसलिए बनते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा उन्हें मसीह के बिना अपनी पूर्णतः खोई हुई अवस्था का बोध कराता है (यूहन्ना 16:7-11)।

2. भक्ति का प्रकटीकरण (4:7ख-16)

क. व्यक्तिगत अभ्यास द्वारा (4:7ख-11)

(1) उचित अभ्यास के प्रश्न की समीक्षा (4:7ख-9)

(क) एक विरोधाभास (4:7ख-8क)

i. आत्मिक मनुष्य का अभ्यास (4:7ख)

अविश्वासी लोगों के साथ रहस्यमय और आत्मिक अस्पष्टताओं पर बहस करने में लगाया गया समय और परिश्रम, विश्वासी के लिए शारीरिक और आत्मिक अभ्यास में कहीं अधिक बेहतर रूप से लगाया जा सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, “भक्ति की साधना कर।” यहाँ “साधना” के लिए प्रयुक्त शब्द से ही अंग्रेज़ी

शब्द जिम्नेज़ियम की उत्पत्ति हुई है। यह यूनानी शब्द प्रशिक्षण में प्रवेश करने, अर्थात् नियमित रूप से अभ्यास करने को दर्शाता है।

पौलुस चाहता था कि मसीही लोग अपने भीतरी मनुष्यत्व को प्रशिक्षित करने में उतने ही दृढ़ निश्चयी और ऊर्जावान हों, जितने कुछ लोग अपने शरीर को प्रशिक्षित करने में होते हैं। जिम ऐसे लोगों से भरे रहते हैं जो अपनी मांसपेशियों को विकसित करने और अपने शारीरिक तालमेल को सुधारने के लिए व्यायाम करते हैं। वे लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम करते हैं। उनमें से कुछ तो अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु घर पर भी अभ्यास करने के लिए महंगे उपकरणों पर काफी धन खर्च करते हैं।

इसी प्रकार, विश्वासियों को अपने आत्मिक विकास के प्रति उतना ही गंभीर होना चाहिए। उन्हें ऐसे वास्तविक लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए जो धीरे धीरे अधिक कठिन होते जाएँ। इसमें कोई शॉर्टकट नहीं है। “भक्ति के लिए” की जाने वाली साधना प्रतिदिन की जानी चाहिए।

एक प्रसिद्ध वायलिन वादक से पूछा गया कि वह प्रतिदिन कितने घंटे अभ्यास करता है। जवाब था कि वह काफ़ी अधिक घंटे तक अभ्यास करता है। फिर उनसे पूछा गया कि अगर वे अभ्यास करना बंद कर दें तो क्या होगा। उन्होंने कहा, “अगर मैं एक दिन भी अभ्यास न करूँ, तो मुझे पता चल जाएगा। अगर मैं दो दिन भी अभ्यास न करूँ, तो संचालक को पता चल जाएगा। अगर मैं तीन दिन भी अभ्यास न करूँ, तो सबको पता चल जाएगा।”

उसी प्रकार, यदि हम आत्मिक मनुष्यत्व की साधना करना बंद कर दें, तो संसार इसे अवश्य देख लेगा। तब हम अपने अंतिम उद्देश्य—अर्थात् भक्ति को प्रकट करने—तक पहुँचने में असफल रहेंगे। जिस समय को हमें अपने आत्मिक जीवन के विकास में लगाना चाहिए, उसे हम व्यर्थ नहीं गँवा सकते। और निश्चित ही हमारे पास उन लोगों के साथ समय बिताने का अवसर नहीं है जो अपनी अपनाई हुई विचित्र दर्शन-प्रणालियों पर चर्चा करने के लिए मानसिक खेल खेलना चाहते हैं।

ii. शारीरिक अंगों का अभ्यास (4:8क)

इसके विपरीत, पौलुस ने लिखा, “देह की साधना से कम लाभ होता है।” यहाँ संकेत संभवतः जिम्नास्टिक व्यायामों की ओर है। पौलुस का आशय यह था कि शारीरिक स्वास्थ्य का विकास कुछ हद तक मूल्यवान तो है, परंतु आत्मिक अभ्यास की तुलना में वह अपेक्षाकृत कम महत्व रखता है।

पौलुस ने यूनानियों के बीच कई वर्ष बिताए थे। वास्तव में, उसका गृह नगर भी यूनान का ही भाग था, इसलिए वह शारीरिक अभ्यास के प्रति उनके समर्पण और ओलंपिक खेलों तथा विभिन्न नगरों के स्टेडियमों में होने वाले अन्य खेल आयोजनों के प्रति उनके उत्साह से भली-भाँति परिचित था। वह जानता था कि कुछ यूनानियों के लिए शारीरिक व्यायाम सब कुछ निगल लेने वाला जुनून बन चुका था। निस्संदेह, पौलुस के अनेक यूनानी विश्वासी शारीरिक अभ्यास के प्रति अपनी उसी लगन को कलीसिया के जीवन में भी ले आए होंगे।

पौलुस ने उन्हें जिम्नास्टिक में भाग लेने से मना नहीं किया, लेकिन उसने उसे उसका उचित स्थान अवश्य दिखाया। उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे कभी भी इसे भक्ति की खोज में बाधा न बनने दें।

(ख) निष्कर्ष (4:8ख-9)

i. भक्ति लाभदायक है (4:8ख-ग)

पौलुस ने समझाया, “भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।” दूसरे शब्दों में, भक्ति न केवल इस पृथ्वी के जीवन के लिए, बल्कि अनन्त जीवन के लिए भी लाभदायक है। पौलुस के कुछ पाठकों को शायद लगा हो कि वह शारीरिक व्यायाम को तुच्छ ठहरा रहा है, पर ऐसा नहीं था। वह केवल यह चाहता था कि वे सभी बातों को उचित संतुलन में रखें।

“लाभदायक” शब्द का अर्थ है “उपयोगी”। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान कहेगा कि शारीरिक व्यायाम धमनियों को खुला रखने, कोलेस्ट्रॉल को कम रखने और स्ट्रोक व दिल के दौरों से बचाव में मददगार है। पौलुस इस बात से सहमत होता कि शारीरिक स्वास्थ्य का इस जीवन के लिए कुछ महत्व है, परंतु खेलकूद में उसकी विशेष रुचि नहीं थी। उसकी रुचि आत्मिक स्वास्थ्य में थी, जिसका मूल्य न केवल इस जीवन के लिए, बल्कि आने वाले जीवन के लिए भी है।

भक्ति जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है—जिसमें खेलकूद भी शामिल है—जैसा कि लोकप्रिय फ़िल्म ‘चरिअट्स ऑफ़ फायर’ में दिखाया गया है। यह फ़िल्म एक युवा स्कॉट, एरिक लिडेल की कहानी बताती है, जिसे ओलंपिक खेलों में ब्रिटेन के लिए दौड़ने के लिए चुना गया था। वह और उसके साथी खिलाड़ियों के उत्साहपूर्ण जयकारों के बीच ब्रिटेन से रवाना हुए, लेकिन तभी एक संकट खड़ा हो गया जब लिडेल को बताया गया कि उसकी दौड़ रविवार के दिन निर्धारित है। सब्त का उल्लंघन करना उसके विश्वासों के विरुद्ध था, इसलिए उसने दृढ़तापूर्वक दौड़ने से इनकार कर दिया।

कोच, उसके साथी खिलाड़ी और अधिकारी सभी हैरान रह गए। लिडेल स्वयं को अलग-थलग, सबके द्वारा गलत और अपमानित महसूस करने लगा। उसे अपना मन बदलने के लिए हर प्रकार का दबाव डाला गया। यहाँ तक कि उसे वेल्स के राजकुमार एडवर्ड, के सामने भी ले जाया गया, जिन्होंने अपने आकर्षण का पूरा उपयोग किया, पर उस खिलाड़ी ने शांति से अपने विश्वास पर अडिग रहना चुना। जो लोग इस निर्णय से सबसे अधिक व्यथित थे, वे भी उसके साहस की प्रशंसा करने लगे और उसके दृढ़ विश्वास का सम्मान करने लगे।

अंत में यह गतिरोध सुलझ गया। उसने एक अलग प्रतियोगिता में भाग लिया और बिना अपने मसीही गवाही पर कोई आंच आए उस दौड़ को जीत लिया। अंत में, उसकी भक्ति ही सब पर विजयी हुई।

ईश्वर-भक्ति मनुष्य का एक अलंकार है—चाहे उसकी आयु कुछ भी हो, सामाजिक स्थिति कैसी भी हो, या जीवन में किसी भी स्तर पर क्यों न हो। शारीरिक रूप से अपंग कोई भक्त, निःसंदेह उस व्यक्ति से कहीं उत्तम है जो शरीर से तो अत्यंत सुदृढ़ है, पर नैतिक रूप से कोढ़ी है। ईश्वरभक्ति जैसे हल चलाने वाले के कुटीर को सुशोभित करती है, वैसे ही बिशप के महल को भी; जैसे सैनिक बैरक के कमरे को, वैसे ही संसद के भव्य सभागारों को रोशन करती है। भक्ति उपदेशमंच और उपासना-स्थल—दोनों में सौंदर्य भर देती है। यह ठट्ठा करने वाले को मौन कर देती है, अपवित्र को लज्जित करती है, आलोचक को उलझन में डाल देती है, पाखंडी को सबके सामने प्रकट करती है, और अविश्वासी का खंडन करती है। शारीरिक व्यायाम,

अपने सर्वोत्तम रूप में भी, मनुष्य को उसके सत्तर या अस्सी वर्षों के जीवनकाल तक ही लाभ पहुँचाता है; परंतु ईश्वरभक्ति, जिसकी जड़ें अनंत काल में हैं, अंतरिक्ष के आकाशगंगीय साम्राज्यों से भी अधिक अटल है। यह परमेश्वर की ओर से आती है और सदा बनी रहती है।

परमेश्वर-भक्त हनोक को स्वर्ग में उठा लिया गया, ताकि “वह मृत्यु को न देखे” (इब्रा. 11:5; साथ ही उत्पत्ति 5:21-24; यहूदा 14-15 को भी देखें)। क्या यह इसलिए हुआ कि वह धनी था, शक्तिशाली था, या बहुत चतुर था (यदि वह था भी)? नहीं! उसे उठा लिया गया क्योंकि “उसकी यह गवाही थी कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया।” इस बात में वह ठीक यीशु के समान था (मत्ती 3:17)। हनोक हजारों वर्ष से स्वर्ग में है—उन सबका जीवित प्रतिरूप जो “इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा” रखते हैं।

ii. भक्ति अधिक श्रेष्ठ है (4:9)

यह कहने के बाद कि भक्ति अधिक श्रेष्ठ है, पौलुस ने लिखा, “यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है।” उसके ऐसे ही एक और “सच्ची बात” को हमने 1:15 में देखा है: “यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया।”

1:15 में पौलुस ने भक्ति की नींव को स्थापित किया; 4:9 में उसने भक्ति की महानता को प्रमाणित किया। पहली “सच्ची बात” में उसने हमें बताया कि भक्ति कैसे प्राप्त की जाती है; दूसरे वचन में उसने बताया कि वह हमें कहाँ तक पहुँचाती है। पहला हमें पापियों के रूप में हमारे पुराने स्वभाव की याद दिलाता है; दूसरा पवित्र लोगों के रूप में हमारे नए स्वभाव का स्मरण कराता है। पहला हमें याद दिलाता है कि प्रभु यीशु हमें छुड़ाने के लिए संसार में आया; वहीं दूसरा हमें यह स्मरण कराता है कि प्रभु यीशु हमें अपने पास लेने के लिए वापस आएँगा।

4:8 में, पौलुस ने “आने वाले जीवन” के बारे में लिखा और फिर 4:9 में जोड़ा, “यह बात सच है।” दूसरे शब्दों में, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है!

(2) कष्टदायक अनुभव के प्रश्न की समीक्षा (4:10-11)

(क) एक विस्मय (4:10)

इस बिंदु पर पौलुस ने एक संक्षिप्त टिप्पणी की, जो संभवतः उस सताव की ओर संकेत करती है जो पूरे रोमी साम्राज्य में तेज़ी से बढ़ रहा था: “क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसी लिये करते हैं कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “उद्धारकर्ता” किया गया है, वही शब्द राज्य-धर्म का अनुसरण करने वाले लोग सम्राट के लिए भी प्रयोग करते थे। नीरो स्वयं को उद्धारकर्ता और देवता—दोनों होने का दावा करता था। मसीही लोग, जिन्होंने उसे न तो उद्धारकर्ता माना और न ही देवता, देशद्रोही और धर्मत्यागी समझे गए और उन पर क्रूर अत्याचार किए गए। नीरो ने उन्हें इसे सुविधाजनक बलि का बकरा बना लिया, जिन पर वह अपने ही अपराधों का दोष मढ़ सकता था।

विश्वासियों ने जीवते परमेश्वर पर भरोसा रखने के कारण निन्दा सही। फिर भी, चाहे उन पर कितना ही क्रूर सताव क्यों न किया गया हो, उन्होंने उसे कोई उद्धारकर्ता मानने से इनकार कर दिया। जिस शब्द का

अनुवाद “यत्न करना” किया गया है, उसका अर्थ “अपमानित किया जाना” भी हो सकता है। यह अभिव्यक्ति चरित्र-हनन के भाव को प्रकट करती है। पौलुस ने यह शब्द इसलिए चुना, क्योंकि वह जानता था कि मसीहियों पर उनके शत्रुओं द्वारा सबसे घिनौने अपराधों के झूठे आरोप लगाए जा रहे थे। ऐसे समय में भी, जब उन्हें संसार के तिरस्कार और बदनामी सहनी पड़ी, तब भी विश्वासियों ने भक्ति का जीवन जीने का प्रयास किया। वे प्रभु के कार्य में लगे रहे और अपना भरोसा जीवते परमेश्वर पर ही बनाए रखा।

पौलुस ने परमेश्वर को “सब मनुष्यों का उद्धारकर्ता” कहा। वह इस अर्थ में सब मनुष्यों का उद्धारकर्ता है कि वह अपना हाथ रोक लेता है। वह हर एक अपराध को तुरंत दंडित नहीं करता, जैसा कि उसने हनन्याह और सफीरा के मामले में किया था (प्रेरितों के काम 5:1-10)। वह न्याय एक उदाहरण के रूप में था— परमेश्वर के आत्मा की पवित्रता और मानवीय पाप की भयानकता के विषय में एक गंभीर चेतावनी थी। यदि परमेश्वर हमारे पापों को, उनके किए जाते ही उसके योग्य पूरे दंड के साथ दंडित करने लगे, तो मानव जाति शीघ्र ही समाप्त हो जाए।

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को दंडित करने से पहले सर्प को दंडित किया—और उस दंड में मानव जाति के लिए आने वाले उद्धारकर्ता के विषय में एक संकेत भी था। उसी ने दंड की रोक और आदम तथा हव्वा के उद्धार और ढांपने की व्यवस्था को संभव बनाया (उत्पत्ति 3:14-21)।

सभी लोग एक निलंबित दण्ड के अधीन रहते हैं, जब तक कि परमेश्वर का अनुग्रह उसके क्रोध को रोके रखता है। पवित्र आत्मा संसार में सक्रिय है और हर स्थान पर सभी मनुष्यों से व्यवहार कर रहा है। इसलिए यूहन्ना ने “उस सच्ची ज्योति” के विषय में लिखा है, “जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी” (यूहन्ना 1:9)। केवल तब, जब लोग जानबूझकर उस ज्योति को अस्वीकार करते हैं, वे पूरी तरह दोषी ठहराए जाते हैं (यूहन्ना 3:19-20)।

पहला यूहन्ना 2:1-2 इसे इस प्रकार कहता है: “यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह; 2 और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी।”

दूसरे शब्दों में, कलवरी का बलिदान सभी मनुष्यों के लिए पर्याप्त है; और जब तक वे निर्णय और उत्तरदायित्व के बिंदु तक नहीं पहुँचते, तब तक सभी अस्थायी रूप से उसके संरक्षण के अधीन लाए जाते हैं।

पहला यूहन्ना 1:8-9 सक्रिय करने वाले सिद्धांत का वर्णन करता है: “यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।”

जब लोग विश्वास करते हैं, तब परमेश्वर का उद्धार आत्मा में पूर्ण रूप से कार्य करने लगता है। कलवरी का बलिदान तब पूरी तरह और सदा के लिए उद्धार करने में प्रभावी बनता है, जब लोग उसके प्रति उचित प्रतिक्रिया देते हैं। प्रभु यीशु “सब मनुष्यों का और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।”

(ख) एक प्रोत्साहन (4:11)

पौलुस ने लिखा, "इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह।" युवा तीमुथियुस को अपने अधिकार का प्रयोग करना था और अपनी शिक्षा में स्पष्टता बनाए रखनी थी। उसे अपने लोगों पर उन सच्चाइयों का प्रभाव डालना था जिनका ध्यान पौलुस ने उसे दिलाया था। उसे कलीसिया में धीरे-धीरे प्रवेश कर रही पंथवादी प्रवृत्तियों का सामना पौलुस की शिक्षा के द्वारा करना था।

तीमुथियुस पौलुस के साथ इतना समय बिता चुका था कि वह अधिकांश विषयों पर उसके विचारों से भली-भाँति परिचित था। वह कुरिन्थ में पौलुस के साथ था जब प्रेरित ने रोमियों के नाम अपना उपदेश संबंधी उत्कृष्ट ग्रंथ लिखा (रोमियों 16:21), एक ऐसा ग्रंथ जिसे हम उचित रूप से "पौलुस रचित सुसमाचार" कह सकते हैं।

तीमुथियुस का उल्लेख 1 कुरिन्थियों 16:10 में मिलता है, और 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 थिस्सलुनीकियों और 2 थिस्सलुनीकियों की प्रारम्भिक अभिवादनीय शब्दों में उसका नाम पौलुस के साथ जुड़ा हुआ है।

हम निश्चित रूप से मान सकते हैं कि उन महान पत्रियों की महान और आधारभूत शिक्षाओं को तीमुथियुस पूरी तरह से जानता था।

तीमुथियुस मिशन के क्षेत्र में पौलुस के साथ गया था, इसलिए वह प्रेरित के तरीकों को प्रत्यक्ष रूप से जानता था। वह उन आत्माओं को बचाने वाली, जीवन को रूपांतरित करने वाली, संसार में सुसमाचार फैलाने वाली, कलीसिया का निर्माण करने वाली, मन को विस्तृत करने वाली और हृदय को उत्साहित करने वाली सच्चाइयों से भली-भाँति परिचित था, जिन्हें पौलुस सिखाता था। ये सच्चाइयाँ पवित्र आत्मा की ओर से ज्ञानवाद, यहूदीवाद और आत्मावादी झूठे उपदेशों के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच थीं। निश्चित ही, तीमुथियुस इन सत्यों को सिखाने में पूरी तरह व्यस्त रहता और उसके पास मूर्खतापूर्ण तुच्छ बातों पर वाघ-विवाद करने के लिए समय नहीं होता।

ख. सार्वजनिक उदाहरण के द्वारा (4:12-16)

(1) ज्ञान की बातें (4:12-13)

(क) समस्या का सामना करना (4:12क)

परमेश्वर की बातों में तीमुथियुस का व्यक्तिगत अभ्यास उसके सार्वजनिक जीवन में उदाहरण के रूप में प्रकट होना आवश्यक था, चाहे लोग उसकी युवावस्था के विषय में कैसी भी धारणा रखते हों। पौलुस ने लिखा, "कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए।" यहाँ "जवानी" के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वही सुसमाचारों में उस धनी जवान अधिकारी के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो काफ़ी उत्साह से भरकर मसीह के पास आया, परन्तु जब उसे शिष्यत्व की शर्तें समझाई गईं तो वह उदास होकर चला गया (मत्ती 19:20; मरकुस 10:20; लूका 18:21)। नये नियम में यह शब्द केवल एक और स्थान पर, प्रेरितों के काम 26:4 में मिलता है, जहाँ पौलुस ने अपनी ही युवावस्था का संक्षिप्त उल्लेख किया है। (हम इन तीन युवकों की तुलना फायदेमंद तरीके से कर सकते हैं: अपनी सारी संपत्ति के साथ एक उत्साही धनी जवान, अपने सारी धार्मिक मान्यताओं के साथ तरसुस का जवान शाऊल, और अपनी सारी जिम्मेदारी के साथ जवान तीमुथियुस।)

यद्यपि पौलुस ने तीमुथियुस को “युवा” कहा, फिर भी वह कोई किशोर नहीं था। सम्भवतः वह अपने तीसवें दशक के अंत में था। फिर भी, उसे इफिसुस की कलीसिया के उन प्राचीनों के साथ कार्य करना था जो उससे आयु में कहीं अधिक बड़े थे, इसलिए पौलुस ने उसे बताया कि आयु का अंतर उसके मार्ग में बाधा न बने। तीमुथियुस भले ही उम्र के बोझ से झुका हुआ न था, परन्तु अनुभव में वह काफ़ी परिपक्व था। और आयु सापेक्ष होती है। अधिकांश पेशेवर खिलाड़ियों के लिए चालीस वर्ष की आयु वृद्ध मानी जाती है, जबकि किसी बड़े कॉर्पोरेट समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के लिए वही आयु युवा मानी जाती है, और किसी राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के लिए तो अत्यन्त युवा ही समझी जाती है।

“तुच्छ न समझने पाए” के लिए अनूदित शब्द का अर्थ है — “किसी के विषय में हल्के रूप से सोचना” या “किसी को कम आंकना।” स्पष्ट है कि पौलुस को आशंका थी कि इफिसुस में कुछ लोग तीमुथियुस को डराने या दबाव में लाने का प्रयास करेंगे।

कोई भी पास्टर जिसने ऐसे लोगों के बीच सेवा की हो जो उससे अधिक धनी, अधिक बुद्धिमान, अधिक सफल, अधिक प्रतिभाशाली और अधिक प्रभावशाली हों, वह यह भली-भांति इस बात को समझ सकता है कि भयभीत या दबाव में आने का अनुभव कैसा होता है।

किसी की युवावस्था को तुच्छ समझने का शास्त्रीय उदाहरण दाऊद की कहानी में मिलता है। दाऊद की सिफारिश शाऊल के पास एक ऐसे सेवक ने बड़े प्रशंसात्मक शब्दों में की, जो राजा से अधिक समझदार था। उसने कहा, “मैं ने बैतलहमवासी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है [दाऊद की योग्यता], और वह वीर [दाऊद का साहस], योद्धा भी है [दाऊद की उपलब्धियाँ], और बात करने में बुद्धिमान [दाऊद की सावधानी], और रूपवान भी है [दाऊद का आकर्षण], और यहोवा उसके साथ रहता है। [दाऊद का चरित्र]” (1 शमूएल 16:18)। ये वास्तव में अत्यन्त उच्च सराहना के शब्द थे! शाऊल ने दाऊद को बुलवा भेजा और उसे देखा, परन्तु उसकी दृष्टि में वह केवल एक लड़का ही था।

कुछ समय बाद दाऊद अपने परिवार के खेत पर वापस लौट गया। परन्तु राजा शाऊल के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि जब गोलियत मैदान में आया, तब दाऊद फिर से वहाँ पहुँचा। शाऊल ने गोलियत को देखा और अंदाज़ा लगाया कि वह इतना ऊँचा है कि उससे लड़ नहीं सकता; परन्तु दाऊद ने गोलियत को देखा और अंदाज़ा लगाया कि वह इतना बड़ा है कि उसका निशाना कभी चूकेगा नहीं! इसलिए उसने उस दानव से लड़ने के लिए स्वयं को तैयार किया।

शाऊल सन्देह में था। आखिरकार, दाऊद लगभग सत्रह वर्ष का ही था, और उसके तीन बड़े भाई सेना में थे। पवित्र आत्मा ने उसकी युवावस्था पर बल देते हुए कहा, “सबसे छोटा दाऊद था” (1 शमूएल 17:14)।

शाऊल को तो केवल इतना दिखाई दिया कि एक लड़का किसी पुरुष का काम करने के लिए आगे आ रहा है। उसने कहा, “तू जाकर उस पलिशती के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है” (1 शमूएल 17:33)। उस दानव ने भी वही भूल की: “जब पलिशती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था” (1 शमूएल 17:42)। यह गोलियत की सबसे बड़ी भूल सिद्ध हुई।

तीमुथियुस भी अपेक्षाकृत युवा ही था, लेकिन पौलुस की नज़र में उसका कद काफी ऊँचा था। आत्मिक उन्नति में, विकास के कई अन्य क्षेत्रों की तरह, उम्र परिपक्वता का प्रमाण नहीं है। केवल इस कारण किसी व्यक्ति को अस्वीकार करना कि वह युवा है, बड़ी मूर्खता होगी।

(ख) समस्या से लड़ना (4:12ख-13)

i. कुछ शुरुआती कदम (4:12ख-ज)

क. प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया (4:12ख)

तीमुथियुस को अपनी समस्या का सामना करने के लिए कहने के बाद, पौलुस ने उसे बताया कि उसे इन सबसे कैसे निपटना है। प्रेरित ने पहला कदम बताया: “विश्वासियों के लिए एक आदर्श बन जा।” एक आदर्श जीवन सबसे कटु आलोचक को भी चुप करा देता है।

यहाँ “आदर्श” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह तूपोस है, जो एक ऐसे शब्द से निकला है जिसका अर्थ है “प्रहार करना” या “हमला करना।” तूपोस कभी-कभी उस निशान या छाप के लिए भी प्रयुक्त होता है जो किसी प्रहार से बनती है। थोमा ने इसी शब्द का प्रयोग तब किया जब उसने घोषणा की कि वह मसीह के पुनरुत्थान पर तब तक विश्वास नहीं करेगा जब तक कि वह “उसके हाथों में कीलों के छेद (तूपोग) को” देख और छू न ले (यूहन्ना 20:25)।

अन्य स्थानों पर, पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग पुराने नियम के एक “प्रतिरूप” के लिए किया है। “प्रतिरूप” पुराने नियम में नये नियम के सत्य का एक विशेष चित्रात्मक उदाहरण होता है। इस्राएल राष्ट्र के जंगल के कुछ अनुभवों का वर्णन करने के बाद पौलुस ने कहा, “ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरें, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें” (1 कुरिन्थियों 10:6)। तीमुथियुस को अपनी सभा के लिए मसीह का एक प्रतिरूप होना था। जिन लोगों की वह सेवा करता था, वे उसे देखकर मसीह को स्मरण कर सकें — ऐसा उसका जीवन होना चाहिए था।

ख. प्रस्ताव को विस्तृत किया गया (4:12ग-ज)

पौलुस ने छह प्रकार से बताया कि तीमुथियुस को किस प्रकार एक आदर्श बनना चाहिए। यदि वह पौलुस की सलाह का पालन करता, तो वह अपनी युवावस्था की बाधा पर विजय पा सकता था। पहले, पौलुस ने कहा, “वचन में, विश्वासियों के लिए एक आदर्श बन जा।” तीमुथियुस की बातचीत सौम्य होनी चाहिए थी। “वचन” उस लोगोस शब्द का अनुवाद है जो बोले गए शब्द का संकेत देता है। अपने बोलचाल में, तीमुथियुस को लोगों पर उस व्यक्ति की समानता की छाप छोड़नी थी जो देहधारी वचन था। उसकी दैनिक बातचीत का स्वभाव, स्थिरता और विषय-वस्तु ऐसी होनी चाहिए थी कि लोग उसे सुनकर यीशु को स्मरण करें।

दूसरा, पौलुस ने कहा, “चाल-चलन में...उदाहरण बन जा।” यह शब्द “चाल-चलन” का अर्थ समय के अनुसार काफ़ी बदल चुका है। यह शब्द एक यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका आज के अर्थ में तात्पर्य है — “जीवन-शैली” या “रहन-सहन।” जब पौलुस ने गलातियों को स्मरण दिलाया कि वे उसकी “चाल-चलन” से भली-भांति परिचित हैं, तो दरअसल वह उनके जीवन-शैली की ओर संकेत कर रहा था (गलातियों

1:13)। पतरस ने भी इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जब उसने कहा कि लूत “अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दुःखी था...” (2 पतरस 2:7)।

इस प्रकार, तीमुथियुस के लिए पौलुस की सलाह यह थी कि उसका आचरण आदर्श होना चाहिए। उसकी जीवन-शैली मसीह के सुसमाचार का एक जीवित विज्ञापन होना चाहिए। तीमुथियुस के जीवन का तरीका ऐसा होना चाहिए था कि कोई उस पर किसी प्रकार का कोई दोष न लगा सके।

तीसरा, पौलुस ने कहा, "प्रेम में... एक आदर्श बन जा।" तीमुथियुस को दया दिखाने में आदर्श बनना था। यहाँ “प्रेम” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द सर्वोच्च प्रकार के प्रेम का संकेत देता है। निस्संदेह तीमुथियुस को पौलुस का प्रेम पर लिखा गया महान अध्याय (1 कुरिन्थियों 13) कंठस्थ रहा होगा, इसलिए वह जानता था कि पौलुस उससे क्या अपेक्षा रखता है। तीमुथियुस को सबके प्रति प्रेम प्रकट करने में यीशु के समान होना था। यीशु ही एकमात्र व्यक्ति था जिसका जीवन पल-पल हरपल, दृश्य और जीवंत रूप में, इस सर्वोच्च प्रेम का प्रत्यक्ष प्रदर्शन था। तीमुथियुस को उसे के समान बनना था।

चौथा, पौलुस ने कहा, "आत्मा में... एक आदर्श बन जा।"

उसका आशय यह था कि तीमुथियुस का चरित्र आदर्श होना चाहिए। उसका मानवीय आत्मिक जीवन इस प्रकार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण और नियंत्रित हो कि उसका समस्त अस्तित्व परमेश्वर के जीवन को प्रकट करे। तीमुथियुस को रोमियों 8 के सत्य में अटल बनकर जीना था। यदि हमें भी, तीमुथियुस के समान, आदर्श बनना है, तो हमारी आत्मा को परमेश्वर की आत्मा के साथ सहयोग करना होगा।

केवल परमेश्वर के आत्मा के द्वारा ही हम परमेश्वर के वचन को समझ सकते हैं, परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकते हैं, परमेश्वर के कार्य को पूरा कर सकते हैं, परमेश्वर की आराधना में उचित रूप से भाग ले सकते हैं, और परमेश्वर की बुद्धि को प्रकट कर सकते हैं।

पाँचवाँ, पौलुस ने कहा, "विश्वास में... एक आदर्श बन जा।" तीमुथियुस को अपने विश्वास में भी आदर्श बनना था। सदियों से, पीढ़ियों से पीढ़ियों तक, परमेश्वर ने ऐसे लोगों को खड़ा किया है जिन्होंने अविश्वासी संसार और आधे-अधूरे विश्वास वाली कलीसिया के सामने विश्वास का उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे ही एक महान व्यक्ति थे ब्रिस्टल के रहने वाले जॉर्ज मूलर, जिन्होंने जान-बूझकर यह सिद्ध करने का निश्चय किया कि परमेश्वर कौन है और वह “अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है” (इब्रानियों 11:6)। कहा जाता है कि उनके समय में उनके नगर में अज्ञेयवादी लोग अपने सिर उठाने का साहस नहीं करते थे। इस दृढ़ विश्वास वाले व्यक्ति के विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। एक घटना का वर्णन इस प्रकार है कि जब वे प्रचार कर रहे थे, तब एक छोटा बच्चा रोने लगा। माता उठकर बच्चे को सभा से बाहर ले जाने लगी, परन्तु मूलर ने उससे बैठ जाने को कहा। उन्होंने कहा, “हम प्रभु से प्रार्थना करेंगे कि वह बच्चे को सुला दे।”

तीमुथियुस भी ऐसा ही एक पुरुष था।

छठा, पौलुस ने कहा, "पवित्रता में... एक आदर्श बन जा।"

तीमुथियुस की पवित्रता अनुकरणीय होनी चाहिए थी। 1 तीमुथियुस 4:12 में “पवित्रता” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह हग्निया है जो उसी मूल शब्द से निकला है जिससे “पवित्रता” या “पवित्र जीवन” का

अर्थ निकलता है। तीमुथियुस को एक अशुद्ध वातावरण में रहते हुए भी स्वयं को हर प्रकार की मलिनता से बचाकर रखना था। इफिसुस, कुरिन्थुस और अन्ताकिया की तरह, नैतिक रूप से भ्रष्ट नगर था। इफिसुस में स्थित डायना (आर्तेमिस) का मन्दिर अपने उपासना-पद्धति की अश्लीलता के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। बहुत से अन्यजाति लोग जो मसीही बने थे, वे दरअसल अत्यन्त अनैतिक पृष्ठभूमि से आए थे। मसीहियों की पवित्रता ने पहले तो अन्यजाति संसार को अचंभित किया, फिर उसे क्रोधित किया, और अंततः उस पर जीत हासिल कर ली। पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया कि वह पवित्र जीवन का अच्छा उदाहरण स्थापित करें।

यदि तीमुथियुस इन छह बातों में सच्चे मसीही जीवन का आदर्श बनता, तो उसे अपनी युवावस्था की चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी।

ii. आगे के कुछ और कदम (4:13)

क. मानसिक रूप से बढ़ते रहो (4:13क)

पौलुस ने आगे कहा, “जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने में लौलीन रह।” हमें नहीं पता कि पौलुस कभी आया या नहीं, परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि यह सलाह सदा के लिए उपयोगी है। निस्संदेह, तीमुथियुस पवित्रशास्त्र बाइबल पढ़ने से आरम्भ करता था, और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

बाइबल एक बहुत बड़ी पुस्तक है, और कोई भी व्यक्ति केवल एक बार पढ़कर उसे पूरी तरह जानने की आशा नहीं कर सकता, विशेषकर यदि वह उसे जल्दी-जल्दी पढ़े। उसे बार-बार पढ़ना आवश्यक है। बाइबल धीमे, विचारपूर्ण और मननपूर्ण अध्ययन का प्रतिफल देती है। पूरी बाइबल से परिचित होने के लिए हमें उसकी पुस्तकों के बारे में जानना होगा, उसके प्रवाह को समझना होगा, और उसके मुख्य विषयों पर अधिकार प्राप्त करना होगा। साथ ही हमें प्रत्येक पुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना चाहिए, यह सीखते हुए कि अध्याय, अनुच्छेद और पद कैसे व्यवस्थित और जुड़े हुए हैं।

सही व्याख्या के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए, हमें सत्य के वचन को ठीक रीति से विभाजित करना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:15) और जहाँ परमेश्वर अंतर करता है वहाँ अंतर करना चाहिए।

हमें उन अलंकारों को पहचानना चाहिए जिनका प्रयोग परमेश्वर हमारी भाषा में अपने वचन को व्यक्त करने के लिए करता है। हमें उन भाषाओं से कम से कम कुछ हद तक परिचित होना चाहिए जिनमें बाइबल मूल रूप से लिखी गई थी और उसकी सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना चाहिए। जैसे-जैसे हम बाइबल का व्यावहारिक ज्ञान विकसित करते जाते हैं, तब हम देखने लगते हैं कि उसकी हजारों छोटी-छोटी बातें किस प्रकार एक साथ मिलकर एक सुसंगत और व्यापक संपूर्णता प्रस्तुत करती हैं।

“पढ़ने में लौलीन रह” के लिए हमें वरदान-प्राप्त और भक्त पुरुषों द्वारा लिखी गई पुस्तकों और टीकाओं की ओर भी ध्यान देना ज़रूरी है। परन्तु टीकाओं का चयन करते समय हमें सावधान और विवेकपूर्ण होना चाहिए, क्योंकि प्रसिद्ध नाम वाले सभी लेखक विश्वसनीय मार्गदर्शक नहीं होते।

जैसे-जैसे हम पढ़ते जाते हैं, तो हम पाएँगे कि हम उपयोगी पुस्तकों का एक संग्रह तैयार कर रहे हैं। हमारी रुचियाँ उन अनेक विषयों तक फैलने लगेंगी जो बाइबल में उल्लिखित बातों से संबंधित हैं। हम इस्राएल, कलीसिया, और उनके आसपास के राष्ट्रों तथा साम्राज्यों के इतिहास का अध्ययन करने लगेंगे। हम प्राकृतिक इतिहास, खगोल विज्ञान, और अन्य ऐसे विषयों में भी गहराई से देखेंगे जिनका बाइबल से अप्रत्यक्ष संबंध है। जिन पुस्तकों को हम प्राप्त करना चाहेंगे, उनकी सूची बढ़ती ही जाएगी। पढ़ने के द्वारा हम भी, तीमुथियुस की तरह, आयु या आत्मिक अपरिपक्वता की कमी को दूर कर सकते हैं।

ख. सेवकाई में आगे बढ़ते रहें (4:13ख-ग)

पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया कि वह “उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह”। दूसरे शब्दों में, एक सेवक के रूप में उसका कार्य यह था कि वह पवित्र लोगों को उत्साहित करे और पवित्रशास्त्र की व्याख्या करे। केवल व्यापक रूप से पढ़ा-लिखा होना तीमुथियुस के लिए काफी नहीं था; उसे अपने अध्ययन के फल को उपदेश के माध्यम से दूसरों तक पहुँचाना था।

यहाँ “उपदेश” शब्द का अर्थ “शिक्षा” और “शान्ति” दोनों है। लूका ने प्रेरितों के काम 4:36 में इस शब्द का प्रयोग पौलुस के मित्र, बरनबास को “शान्ति का पुत्र” कहने के लिए किया। प्रभु ने पवित्र आत्मा को शान्ति देने वाले या “सहायक” (यूहन्ना 14:16) के रूप में वर्णित करते समय इससे संबंधित एक शब्द का प्रयोग किया था। इसलिए, उपदेश केवल लोगों को वही बनने और करने के लिए प्रेरित करने का विषय नहीं है जो उन्हें होना चाहिए; इसमें विनती करना, प्रोत्साहित करना और शान्ति देना भी शामिल है।

एक पास्टर को एक चरवाहा होना चाहिए, जो अपनी भेड़ों को शीतल जल के पास और हरी चराइयों में ले जाता है। उसे उन्हें धार्मिकता के मार्गों में अगुवाई देनी है। अंधेरी तराई में वह उनके साथ रहे, ताकि उन्हें शांति और सांत्वना दे सके। उसे शत्रु से भी उनकी रक्षा करनी है (भजन संहिता 23)।

एक पास्टर आसानी से अपने पढ़ने को ही अपने आप में लक्ष्य बना सकता है, लेकिन यदि उसके अध्ययन का कोई लाभ होना है तो उसका एक व्यावहारिक परिणाम भी होना चाहिए। उपदेश देना या उत्साहित करना पास्टर का एक महान कार्य है। उपदेश पर ध्यान देना शिक्षक का महान कार्य है। आज बहुत से लोग उपदेश की अपेक्षा अनुभव को अधिक महत्व देते हैं। वे कहते हैं कि उपदेश विभाजन उत्पन्न करता है; इसलिए वे उपदेशात्मक मतभेदों पर समझौता करने और साझा भावनात्मक अनुभवों के आधार पर एक होने के लिए तैयार रहते हैं। गैर-आवश्यक में, पौलुस अत्यंत मेल-मिलाप रखने वाला व्यक्ति था (प्रेरितों के काम 21:18-27), परंतु जीवन-मृत्यु से जुड़े आवश्यक उपदेशों के विषय में वह काफी दृढ़ था (प्रेरितों के काम 15:1-18; गलतियों 1:1-14)।

(क) चेतावनी का एक वचन (4:14-16)

(2) तीमुथियुस और उसका वरदान (4:14)

i. एक चितौनी (4:14क)

पौलुस ने तीमुथियुस को चितौनी दी, “उस वरदान के प्रति जो तुझ में है...निश्चिन्त मत रह।” यहाँ “वरदान” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है वह करिस्मा है, जिसका अर्थ है “एक निःशुल्क उपहार।” यह शब्द नये

नियम में सत्रह बार पाया जाता है और हर बार परमेश्वर के वरदानों के लिए ही प्रयुक्त होता है। यद्यपि हमें स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया गया कि तीमुथियुस के आत्मिक वरदान कौन-कौन से थे, फिर भी निश्चय रूप से उनमें चरवाही (पास्टर सेवकाड) और शिक्षा देने के वरदान शामिल थे। संभव है कि उसके पास उत्साहित करने और अगुवाई करने के वरदान भी थे (रोमियों 12; 1 कुरिन्थियों 12)।

यहाँ "निश्चिन्त" शब्द का अर्थ "घृणा से भरकर उपेक्षा करना" या "लापरवाही के साथ उपेक्षा" या "किसी चीज़ की परवाह न करना" हो सकता है। एक वरदान की देखभाल की जानी चाहिए और उसका निरंतर उपयोग किया जाना चाहिए, नहीं तो वह वैसे ही सूख जाता है जैसे कोई मांसपेशी जिसे इस्तेमाल नहीं किया जा रहा। "उपयोग करो, नहीं तो खो दो" — इस प्रकार भी इसे कहा जा सकता है। यहाँ पौलुस ने यूनानी भाषा में क्रिया के वर्तमान आज्ञार्थक रूप का प्रयोग किया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि जिस उपेक्षा के विषय में वह मना कर रहा था, वह पहले से ही हो रही थी। इस शब्द का इब्रानियों 2:3 में भी प्रयोग किया गया है, जहाँ उन लोगों के संदर्भ में कहा गया है जो "ऐसे बड़े उद्धार" की उपेक्षा करते हैं। इसी प्रकार मत्ती 22:5 में प्रभु यीशु ने इस शब्द का उपयोग उन लोगों के लिए किया है जिन्होंने राजा के पुत्र के विवाह के निमंत्रण को "तुच्छ जाना" या "हल्का समझा।"

स्पष्ट है कि पौलुस ने तीमुथियुस के स्वभाव में एक कमी देखी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इस युवा व्यक्ति को समय-समय पर उत्साहित करने और प्रेरित करने की आवश्यकता पड़ती थी, क्योंकि उसमें ठहर जाने या शिथिल हो जाने की प्रवृत्ति थी। पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि वह अपने वरदान को धधकती चिंगारी की तरह पड़ा रहने देने के प्रलोभन का विरोध करे। जिस किसी के घर में अंगीठी रही हो, वह जानता है कि चिमटा, फावड़ा और सलाई क्यों आवश्यक उपकरण होते हैं। विशेषकर सलाई इसलिए आवश्यक होती है क्योंकि लकड़ियों और कोयलों को समय-समय पर हिलाना पड़ता है, ताकि हवा का संचार हो और आग जलती रहे। पौलुस की यह चेतावनी तीमुथियुस को सक्रिय होने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से थी।

आत्मिक वरदान "पवित्र लोगों को सिद्ध होने के लिए, सेवा के काम के लिए, और मसीह की देह की उन्नति के लिए" दिए गए हैं (इफि. 4:12)। उदाहरण के लिए, जब किसी व्यक्ति को सुसमाचार प्रचार का वरदान मिला हो और वह लोगों से व्यक्तिगत रूप से बात करता है या मंच से प्रचार करता है, तो लोग उद्धार पाते हैं। परंतु यदि वह अपने वरदान की उपेक्षा करे, तो वह मुरझा जाता है, और परिणामस्वरूप कलीसिया हानि उठाती है। वह मानो अपने वरदान को सांसारिक बना देता है और उसका उपयोग एक सफल सेल्समैन बनने के लिए करता है। जिन गुणों को पवित्र आत्मा ने उसे सुसमाचार का प्रभावी प्रचारक बनाने के लिए दी थी, उन्हीं गुणों का उपयोग वह कार बेचने या किसी राजनीतिक दल अथवा अन्य समूह के हितों को बढ़ावा देने में करने लगता है। इस प्रकार कलीसिया ने एक सुसमाचार प्रचारक को खो दिया, और संसार ने एक और सेल्समैन या राजनेता को पा लिया।

अपने आत्मिक वरदान के प्रति निश्चित रहना एक गंभीर भूल है। इस भूल के परिणाम मसीह के न्यायासन पर प्रकट होंगे, जहाँ हर सेवा का मूल्यांकन उस प्रभु के द्वारा किया जाएगा जो सभी परिस्थितियों और कारणों को भली-भांति जानता है (1 कुरि. 3:11-15)।

ii. एक स्मरण (4:14ख)

तीमुथियुस को उसका वरदान “भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय” दिया गया था। संभवतः “भविष्यद्वाणी के द्वारा” वाक्यांश उस दैवीय प्रकाशन की ओर संकेत करता है, जो पौलुस को उस समय मिला जब उसने तीमुथियुस को वचन की सेवा में अपना सहभागी बनने के लिए बुलाया था। संभव है कि गलातिया के नगरों लुस्त्रा और इकुनियुम के प्राचीनों को भी इस उत्तरदायी कार्य के लिए युवा तीमुथियुस की उपयुक्तता के विषय में इसी प्रकार का भविष्यद्वाणी संबंधी संकेत मिला हो (प्रेरितों के काम 16:1-3)।

यहाँ “प्राचीनों” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयुक्त किया गया है, वह प्रेसबुटेरियन है। नये नियम में, इससे संबंधित शब्द प्रेसबुटेरोस का साधारण अर्थ है “प्राचीन” या “बुजुर्ग”, और यह उन लोगों का वर्णन करता है जो दूसरों से अधिक आयु वाले होते हैं। यहूदियों के बीच इस शब्द का उपयोग गोत्रों के अगुवों के लिए किया जाता था। सनहेद्रिन मुख्य याजकों, शास्त्रियों और “प्राचीनों” से मिलकर बनी थी। कलीसिया में, यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें पवित्र आत्मा स्थानीय कलीसिया के आत्मिक पहलु की देखरेख करने के लिए उठाता और योग्य ठहराता है। जहाँ एपिस्कोपोस शब्द प्राचीनों के कार्य के स्वरूप को दर्शाता है, वहीं प्रेसबुटेरोस प्राचीन की आत्मिक परिपक्वता की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

1 तीमुथियुस 4:14 में पौलुस ने तीमुथियुस को उसके नियुक्ति समारोह की याद दिलाई, जिसके द्वारा प्राचीनों ने एकमत होकर उस पर हाथ रखकर उसे सेवा के कार्य के लिए नियुक्त और अभिषेक किया था। उस समारोह में उसे आत्मिक वरदान भी प्रदान किया गया था, जिसके प्रति निश्चित रहने के खतरे में वह अब पड़ रहा था। कुछ समय पहले पौलुस और बरनाबास को भी बाहरी मिशन कार्य के लिए इसी प्रकार नियुक्त किया गया था (प्रेरितों के काम 13:1-4)। यूहन्ना मरकुस के उनके साथ जुड़ने का उल्लेख केवल एक प्रकार की टिप्पणी के रूप में प्रेरितों के काम 13:5 में मिलता है। सीलास को भी अंताकिया की कलीसिया द्वारा अभिषिक्त किया गया था (प्रेरितों के काम 15:40)।

यूहन्ना मरकुस के द्वारा साथ छोड़ देने के कारण तीमुथियुस का अभिषेक पौलुस के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। यूहन्ना मरकुस ने जब मिशन कार्य से स्वयं को जोड़ा था, तब उसके साथ कोई औपचारिक नियुक्ति समारोह नहीं हुआ था, और न ही पौलुस और बरनाबास ने इसकी अपेक्षा की थी। परन्तु मरकुस के स्थान पर तीमुथियुस के चयन के समय प्रेरित ने यह सुनिश्चित किया कि इस बार ऐसी कोई अपेक्षा न हो।

तीमुथियुस स्वयं भी अपने अभिषेक को भूलने वाला नहीं था, क्योंकि उसी समय के आसपास, पौलुस ने उसका खतना कराया था ताकि वह उन यहूदियों के बीच अधिक ग्रहणयोग्य हो सके जिन्हें सुसमाचार सुनाना था। उस पीड़ादायक प्रक्रिया को सहने की तीमुथियुस की इच्छा ने पौलुस को यह प्रमाण दे दिया था कि उसमें साहस और धैर्य है, और जब परिस्थितियाँ कठिन भी हो तौभी वह पीछे हटने वाला नहीं है।

(ख) तीमुथियुस और उसकी उन्नति (4:15)

i. मनन करने का आह्वान (4:15क)

पौलुस ने तीमुथियुस को “इन बातों को सोचते रहने” की चुनौती दी। यहाँ “सोचने” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द का तात्पर्य “गहराई से विचार करना या लगन से मेहनत करना” है। यही शब्द प्रेरितों के काम 4:25 में भी प्रयुक्त हुआ है, जहाँ प्रारम्भिक कलीसिया की उस प्रार्थना का एक भाग दर्ज है, जब महासभा ने धमकी भरे स्वर में अपना विरोध प्रकट किया था। अपनी प्रार्थना में, उन विश्वासियों ने भजन संहिता 2:1

का हवाला दिया: “जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं?”

तीमुथियुस के लिए पौलुस का आह्वान यह था कि वह सुसमाचार की महान सच्चाइयों को अपने मन में बार-बार सोचता रहे और उन पर गंभीरता से विचार करता रहे।

मनन या चिंतन परिपक्व और विचारपूर्ण निष्कर्षों तक पहुँचाता है। यह किसी विषय के विभिन्न पक्षों पर ध्यान देता है और प्रत्येक को उसका उचित महत्व देता है। चिंतन एक मूल्यवान अभ्यास है, और इसे जल्दबाजी में नहीं किया जा सकता। एक वर्ष में पूरी बाइबल को तेजी से पढ़ लेना हमें पवित्रशास्त्र का व्यापक दृष्टिकोण तो दे सकता है; परंतु यह वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति एक सप्ताह में पोर्टलैंड, मेन से पोर्टलैंड, ओरेगन तक गाड़ी चलाकर चला जाए। यह संभव तो है। बहुत दूरी तय की जा सकती है, और अनेक रोचक दृश्य तेज गति से देखे भी जा सकते हैं। यात्री इस प्रकार देश को देख तो लेगा, पर उसे वास्तव में जान नहीं पाएगा।

जब मैं लंदन से उत्तरी अमेरिका पहली बार बैंक ऑफ मॉन्ट्रियल के एक नए कर्मचारी के रूप में आया, तो मैंने मॉन्ट्रियल में बैंक के मुख्यालय में रिपोर्ट किया। परंतु अधिकारियों ने निश्चय किया कि मुझे कनाडा के बिल्कुल दूसरे छोर पर स्थित वैकूवर भेजा जाए। उसी समय वैकूवर शाखा का एक प्रबंधक मॉन्ट्रियल में था। उसने कुछ समय पहले ही एक नई कार खरीदी थी। उसने मुख्य कार्यालय में फोन किया और पूछा, “क्या कोई ऐसा युवा कर्मचारी है जिसे ब्रिटिश कोलंबिया स्थानांतरित किया जा रहा हो और जो मेरे साथ ड्राइविंग में मदद कर सके?” बैंक ने मुझे उनके साथ भेज दिया। मेरे घर भेजे गए पत्र कुछ इस प्रकार होते थे:

आज हम फ्रांसीसी भाषीय कनाडा से निकले और ओंटारियो पहुँचे। वहाँ ‘महान झीलों’ की पहली झलक देखी। वे किसी अंतर्देशीय समुद्र जैसे लगते हैं।

आज सुबह हम सॉल्ट सेंट मैरी नामक जगह से संयुक्त राज्य अमेरिका पहुँचे। बैंक मैनेजर का कहना है कि अमेरिकी सड़कें कनाडा की सड़कों से बेहतर हैं।

प्रेयरी! ऐसा लगता है कि इसका कोई अंत ही नहीं है। हम घंटों तक पश्चिम की ओर लगातार गाड़ी चलाते रहे। साल के इस समय में सब कुछ कितना सपाट और सूना होता है।

फिर हम बैडलैंड्स से होकर गुजरे जहाँ मृत चट्टानों और मिट्टी की लहरदार पहाड़ियाँ थीं। पहली बार एक काउबॉय को पारंपरिक टोपी और रस्सी के साथ पूरा सुसज्जित घोड़े पर सवार देखा।

अब रॉकी पर्वत सीधे सामने दिखाई दे रहे हैं। पश्चिम की ओर बढ़ने वाले आरंभिक कबीले के लोगों को इन्हें देखकर कितना भय लगा होगा! ये पर्वत अत्यंत मनोहर हैं—निचली ढलानें देवदार के पेड़ों से ढकी हुई हैं, और ऊपरी भाग ठोस ग्रेनाइट की चट्टानों की चोटियाँ हैं, जिन पर हिम जमी हुई है।

फिर से कनाडा में! कल वैकूवर पहुँचेंगे। समुद्र की एक झलक मिली, इसलिए अब हम अटलांटिक से प्रशांत महासागर तक आ गए हैं।

मैंने उस महाद्वीप को देखा, लेकिन उसके बारे में ज़्यादा कुछ सीख नहीं पाया! किसी देश को सच में पूरा जानने के लिए समय देना पड़ता है, धीरे-धीरे यात्रा करनी होती है, बार-बार रुकना होता है, प्रश्न पूछने होते हैं, लोगों से बातचीत करनी होती है, पुस्तकें खरीदनी होती हैं, स्थानों का भ्रमण करना होता है, नोट्स की तुलना करनी होती है, अपनी धारणाएँ बनानी होती हैं और निष्कर्षों की जाँच करनी होती है।

इसी प्रकार, बाइबल को जानने के लिए उसे वैसे ही पढ़ना चाहिए जैसे पौलुस ने दमिश्क के मार्ग पर यीशु से मिलने के बाद अपने पुराने नियम को नई आँखों से फिर पढ़ा होगा। वह सीनै की एकांतता में चला गया; अपनी थैली में अपने चर्मपत्र लेकर, और कीलों के निशान वाले हाथों के साथ पुनुरुत्थान पाए मसीह का दर्शन उसके विचारों पर छाया रहा। दिन-ख-दिन, सप्ताह-दर-सप्ताह, महीना-दर-महीना, वह वहीं बैठा जहाँ मूसा बैठा था और वहीं खड़ा हुआ जहाँ एलिय्याह खड़ा हुआ था। सीनै पर्वत उसके निकट ऊँचा खड़ा था। मूसा! व्यवस्था! दाऊद! भविष्यद्वक्ता! पौलुस ने सब बातों को कलवरी की नई रोशनी में फिर से सोचा। पुनुरुत्थान पाए मसीह के उस संक्षिप्त दर्शन ने पौलुस को एक विश्वासी बना दिया; और जंगल में मनन के उन महीनों ने उसे प्रेरित बना दिया।

मनन के लिए समय ही वह वस्तु थी जिसे पौलुस तीमुथियुस के लिए चाहता था। प्रेरित ने उसे सलाह दी कि वह कभी इतना व्यस्त न हो जाए कि मनन करने का समय ही न बचे। केवल 1 तीमुथियुस 4:15अ में पौलुस की आज्ञा का पालन करने से ही उस युवक की धारणाएँ जीवित परमेश्वर के वचन पर आधारित दृढ़ विश्वास में बदल सकती थी।

ii. समर्पण का आह्वान (4:15ख)

दृढ़ विश्वास का स्वाभाविक परिणाम समर्पण होता है। “इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह,” पौलुस ने तीमुथियुस से कहा। पवित्रशास्त्र के अध्ययन और वचन की सेवा के लिए खाली समय पर्याप्त नहीं होता, यद्यपि इन कार्यों के लिए दिया गया हर समय अच्छा और लाभकारी ही होगा।

जब मैं पहली बार मूडी बाइबल संस्था के स्टाफ में शामिल हुआ, तब एमबीआई नेटवर्क के रेडियो पास्टर एक वृद्ध विश्वासी थे जिनका नाम रॉबर्ट जे. लिटिल था। यह भक्त व्यक्ति बाइबल ज्ञान का चलता-फिरता विश्वकोश था और सम्मेलन वक्ता के रूप में उनकी बहुत मांग रहती थी। एक बार जब उन्होंने एक स्थानीय कलीसिया में संदेश दिया, तो उनके ही समान आयु का एक व्यक्ति उनके पास आया और बोला, “मिस्टर लिटिल, काश मेरे पास भी बाइबल का आपका जैसा ज्ञान होता।”

आर. जे. ने उस व्यक्ति की ओर कुछ पल के लिए देखा, फिर कहा,

“मेरे मित्र, अब आप बहुत देर कर चुके हैं। आप मेरी ही आयु के लगते हैं, इसलिए मैं कहूँगा कि आप लगभग पचास वर्ष देर से आए हैं। बाइबल का मेरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपको पचास वर्ष पहले ही आरंभ कर देना चाहिए था और प्रतिदिन लगन के साथ अध्ययन करना चाहिए था। मुझे बाइबल का यह ज्ञान प्राप्त करने में इतना समय लगा है। आप देर तो कर चुके हैं—पर अभी भी आप शुरुआत कर सकते हैं।”

तीमुथियुस अपेक्षाकृत एक युवा व्यक्ति था, इसलिए यदि वह अपने आप को पूरी तरह परमेश्वर की बातों में समर्पित कर देता, तो उसके लिए बाइबल का गहन ज्ञान प्राप्त करना देर की बात नहीं थी।

पौलुस ने उसे सलाह दी, “इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह... ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रकट हो।” यहाँ “उन्नति” के लिए जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, वही शब्द पौलुस ने तब भी प्रयोग किया था जब उसने फिलिप्पी में अपने मित्रों को बताया कि कैसे परमेश्वर ने उसकी रोम की कैद को आत्माओं के उद्धार के लिए अपनी सार्वभौमिक योजना में उपयोग किया: “...मुझ पर जो बीता है, उससे सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है” (फिलि. 1:12)। शैतान ने जिस कैद को रुकावट बनाने का इरादा किया था, वही लोगों तक पहुँचने का एक साधन बन गया—ऐसे लोगों तक भी, जिनसे पौलुस किसी अन्य तरीके से कभी नहीं मिल पाता, यहाँ तक कि किले के पहरेदारों के सदस्यों तक भी वह पहुँच सका।

“उन्नति” शब्द के पीछे का विचार आगे बढ़ने या प्रगति करने का है। डब्ल्यू. ई. वाइन ने उल्लेख किया है, “मूल रूप से यह शब्द उस अग्रदूत के लिए प्रयोग किया जाता था जो झाड़ियों को काटते हुए अपना मार्ग बनाता है।” पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस परमेश्वर की बातों में निरंतर प्रगति करे। एक सेवक के रूप में, उसके लिए केवल दूसरों की आत्मिक उन्नति के लिए उत्साही होना पर्याप्त नहीं था; उसे स्वयं भी आगे बढ़ना था। साथ ही, उसकी यह प्रगति सबको स्पष्ट दिखाई देनी चाहिए थी। इसलिए पौलुस ने “प्रकट हो” के लिए यूनानी शब्द एइमी फानेरोस का उपयोग किया। इसका अर्थ है “दिखाई देना,” “आँखों के सामने खुला होना,” या “प्रकट किया जाना।”

जब इस्राएल के लोग मिस्र से कनान के लिए निकले, तो उनकी प्रारम्भिक यात्रा की प्रगति मानचित्र पर अंकित की जा सकती थी। वे रामसेस से सुक्कोत तक गए, और आग और बादल का खम्भा उनके आगे-आगे चलता रहा। उन्होंने मिगदोल और लाल समुद्र के बीच पीहाहीरोत में डेरा डाला। समुद्र के किनारे परमेश्वर ने एक और महान चमत्कार किया, और शीघ्र ही वे पार उतर गए—“और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया।” उन्होंने मिस्र और उसकी गुलामी को सदा के लिए छोड़ दिया था। तीन दिन बाद, वे मारा नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने सीखा कि परमेश्वर कड़वे अनुभवों को भी मीठा कर सकता है। आगे बढ़ते हुए वे एलीम पहुँचे और जाना कि विश्वास के जीवन के सभी अनुभव परीक्षा और कष्ट ही नहीं होते। फिर भयानक सीन का जंगल आया। वे आगे बढ़ते गए और शीघ्र ही रपीदीम पहुँचे, जहाँ परमेश्वर ने चट्टान से उन्हें पानी पिलाया। वे मरुभूमि से होते हुए सीनै पर्वत तक पहुँचे। वहाँ वे काफी समय तक ठहरे, क्योंकि उन्हें विश्वास के जीवन का चलन, संघर्ष और आराधना के विषय में बहुत कुछ सीखना था। अन्ततः वे कादेशबर्ने और वायदे के देश की सीमा तक पहुँचे। अब उन्हें अपनी यात्रा के महान संकट और निर्णायक मोड़ का सामना करना था। प्रत्येक स्थान उनकी आत्मिक उन्नति में एक चरण को दर्शाता था, और प्रत्येक स्थान पर उन्होंने कई सबक सीखे (1 कुरिन्थियों 10:1-11)।

उसी प्रकार, पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस की आत्मिक प्रगति भी अंकित की जाए। उसने कहा कि वह सबके सामने प्रकट होनी चाहिए। यही बात हमारे लिए भी सत्य है। हम चाहे जितनी दूर आ चुके हों, “बहुत देश रह गए हैं, जो अधिकार में अभी तक नहीं आए हैं” (यहोशू 13:1)।

(ग) तीमुथियुस और उसकी चौकसी (4:16)

i. पौलुस ने उसे चेतावनी दी (4:16क)

फिर से पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी, “अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख।” प्रेरित पौलुस को तीमुथियुस के विषय में कुछ चिंताएँ थीं, क्योंकि जो नए पंथ उठ रहे थे वे बहुत जटिल लेकिन सटीक लगते थे। जिस पुराने ढंग के व्यवस्थावाद का सामना पौलुस ने गलातियों को लिखी अपनी पत्री में किया था, वह उस बौद्धिकता, रीति-रिवाज़, व्यवस्थावाद, रहस्यवाद और तप के मिश्रण की तुलना में अपेक्षाकृत छोटा खतरा था, जिसका सामना उसने कुलुस्सियों को लिखी अपनी पत्री में किया था। परन्तु वह प्रकार का ज्ञानवाद भी उस बात की तुलना में हल्का था, जो अब इफिसुस की कलीसिया में प्रवेश कर रही थी।

तीमुथियुस को “चौकसी रखने” की आवश्यकता थी, क्योंकि अब शैतान स्वयं कलीसिया पर मानसिक और नैतिक आक्रमण की योजना बना रहा था। वह पुराना सर्प हर उस व्यक्ति के पीछे पड़ा था जो अपने को विश्वासी कहता था—विशेषकर मिशनरियों, सेवकों और अन्य कलीसिया के अगुवों के पीछे। वह गरजते हुए सिंह के समान घूम रहा था। तीमुथियुस किसी भी तरह अपने प्रतिदिन के भक्ति समय या वचन के निरंतर मनन की उपेक्षा करने का जोखिम नहीं उठा सकता था।

“...उपदेश की चौकसी रख,” पौलुस ने कहा। फिर वही शब्द आता है—उपदेश। उपदेश अत्यन्त महत्वपूर्ण बिंदु है। हम उस व्यक्ति के समान नहीं हो सकते, जिससे जब पूछा गया कि वह क्या विश्वास करता है, तो उत्तर दिया, “मैं वही विश्वास करता हूँ जो कलीसिया विश्वास करती है।”

"अच्छा," किसी ने चुनौती दी, "तो कलीसिया क्या विश्वास करती है?"

"क्यों," उसने कहा, "कलीसिया वही विश्वास करती है जो मैं विश्वास करता हूँ।"

सवाल पूछने वाले ने ज़िद की, "तो फिर तुम दोनों क्या विश्वास करते हो?"

"यकीनन," उस निडर विश्वासी ने उत्तर दिया, "हम दोनों एक ही बात पर विश्वास करते हैं!"

यह मनोभाव हमें उन खतरों और फंदों से नहीं बचा पाएगा जो हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।

ii. पौलुस ने उसे सलाह दी (4:16ख)

“इन बातों में स्थिर रह,” पौलुस ने सलाह दी, “क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।” यहाँ प्रेरित सुसमाचार के अर्थ में पापियों के उद्धार या विश्वासियों के विश्वास की सुरक्षा के अर्थ में उद्धार की बात नहीं कर रहा था। “उद्धार” शब्द जब भी प्रयोग होता है, उसका अर्थ उसके संदर्भ से निर्धारित किया जाना चाहिए। 4:16 में जिस उद्धार की बात की गई है, वह स्पष्ट रूप से उन झूठी, परन्तु शैतानी चतुराई से भरी शिक्षाओं से छुटकारा पाने से सम्बन्धित है, जो दुष्टात्माओं से प्रेरित पंथ के लोगों द्वारा फैलाई जा रही थीं।

तीमुथियुस, अपने ऊपर और अपने उपदेश पर ध्यान देकर, स्वयं को और अपनी प्रजा को पंथों की कुतर्क से भरी शिक्षाओं में फँसने से बचा सकता था। मंच पर की अनिश्चितता अवश्य ही सभा तक पहुँचती है और प्रायः और भी आगे बढ़ जाती है। गिरा हुआ सेवक जो अनैतिकता या अविश्वास के आगे झुक गया हो — उससे बड़ा ठोकर का कारण कोई नहीं होता।

उदाहरण के लिए विचार कीजिए कि जब कोई सेवक अत्यधिक काल्विनवादी सिद्धान्तिक स्थिति अपना लेता है तो उसके क्या परिणाम होते हैं। वह दावा करता है कि क्योंकि मनुष्य अपराधों और पापों में मरा हुआ है, इसलिए वह सुसमाचार के प्रति किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया देने में असमर्थ है। परमेश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता ही यह निर्धारित करती है कि कौन, कैसे और कब उद्धार पाएगा। यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को बचाने का चुनाव नहीं करता, तो वह व्यक्ति दोषी ठहराया जाता है। जो सेवक मंच से ऐसे सिद्धांतों का प्रचार करता है, वह देख सकता है कि सभा में बैठे लोग उन्हें भयानक पूर्णता के साथ अपने जीवन में लागू कर रहे हैं।

ऐसे ही एक मामले में, जिसे मैंने स्वयं देखा, एक पिता ने यह तर्क दिया: यदि मेरे बच्चों को उद्धार के लिए चुना गया है, तो वे उद्धार पाएँगे। मैं इसके विषय में कुछ नहीं कर सकता। यदि उन्हें नहीं चुना गया है, तो वे उद्धार नहीं पाएँगे। यह बात मेरे हाथ में नहीं है।

मंच से सिखाई गई बात की इस प्रकार सभा-स्तर पर की गई व्याख्या के परिणामस्वरूप, उस व्यक्ति के बच्चों को बिना किसी सुसमाचारीय शिक्षा के ही बड़ा होने दिया गया। अब उनमें से केवल एक या दो ही परमेश्वर की बातों में रुचि दिखाते हैं। वे अति-काल्विनवाद की जीवित मिसाल हैं। जिसने भी उस पिता को यह सिखाया, वह निश्चय ही मसीह के न्याय सिंहासन के सामने उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

पौलुस ने तीमुथियुस को झूठी शिक्षाओं से अपने आप को सुरक्षित रखने की चेतावनी दी, “क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।” हमने यह भी देखा है कि इसका विपरीत भी सत्य है: शुद्ध उपदेश को न मानने और न सिखाने से, झूठे उपदेश सिखाने वालों तथा उसे सीखकर अपने जीवन में लागू करने वालों — दोनों का आत्मिक पतन हो जाता है।

ख. परमेश्वर के लिए गवाही (5:1-6:19)

1. परमेश्वर के लोग (5:1-6:2)

क. पवित्र लोगों की संगति (5:1-2)

(1) पुरुषों के विषय में एक संदेश (5:1)

(क) वृद्ध पुरुष : सम्मान पर बल (5:1क)

पौलुस प्रभावी मसीही बनने के विषय में अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाता है। उसने तीमुथियुस से कहा, “किसी बूढ़े को न डाँट, पर उसे पिता जानकर समझा दे।” “डाँट” के लिए प्रयुक्त बलशाली यूनानी शब्द एपिप्लेस्सो है जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका शाब्दिक अर्थ है “प्रहार करना” या “वार करना।” “प्राचीन” के लिए प्रयुक्त शब्द प्रेस्बुटेरोस यहाँ किसी पद का नहीं, बल्कि आयु में बड़े व्यक्ति की ओर संकेत करता है।

युवा लोग, जो यह भूल जाते हैं कि एक दिन वे स्वयं भी बूढ़े होंगे, प्रायः बुढ़ापे के साथ आने वाली धीमी गति, परंपरावाद और सीमाओं के प्रति अधीर और असहिष्णु हो जाते हैं। वास्तव में, कुछ युवा जिस प्रकार वृद्ध लोगों से बात करते और व्यवहार करते हैं, वह कभी-कभी मानो उनके मुख पर प्रहार करने के समान होता है। जो वृद्ध पुरुष कलीसिया का सम्मान और विश्वास प्राप्त कर चुके हैं, उनसे आदर के साथ व्यवहार

किया जाना चाहिए। पौलुस ने यहाँ स्पष्ट किया कि हमें वृद्ध लोगों को न फटकार लगानी है, न कठोर व्यवहार करना है, और न ही डाँटना है। कलीसिया उतनी ही कमजोरों, वृद्धों और निर्बलों के लिए है जितनी कि युवाओं, सक्रिय और बलवान लोगों के लिए हैं।

दाऊद वृद्ध पुरुषों के मूल्य को जानता था। इसी कारण उसने अस्सी वर्ष के बर्जिल्लै को अपने साथ यरूशलेम चलने और अपनी मेज़ पर सम्मानित स्थान लेने का आग्रह किया (2 शमूएल 19:31-38)। बर्जिल्लै ने अपनी योग्यता सिद्ध की थी, और अब मेज़ पर एक स्थान खाली था, क्योंकि दुष्ट वृद्ध अहीतोपेल ने आत्महत्या कर ली थी। यकीनन, दाऊद बर्जिल्लै द्वारा उसके सलाहकारों के भीतरी समूह में सम्मिलित होने से इनकार करने पर निराश हुआ होगा। इसलिए उसने उसके स्थान पर युवा किम्हाम को अपने साथ ले जाने की स्वीकृति दी—और दाऊद ने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया—परन्तु वह वृद्ध बर्जिल्लै को ही अधिक पसंद करता।

पूरी बाइबल में, बुढ़ापे को सम्मान और गरिमा के साथ देखा गया है। अब्राहम पचहत्तर वर्ष का था जब परमेश्वर ने उसे पहली बार बुलाया (उत्पत्ति 12:4)। मूसा अस्सी वर्ष का था जब उसे मिस्र की गुलामी से इब्रानी लोगों को मुक्त कराने की बुलाहट मिली (निर्गमन 7:7)। मजबूत वृद्ध कालेब पचासी वर्ष का था जब उसने एक पहाड़ पर विजय पाने की माँग रखी (यहोशू 14:10)। दानिय्येल लगभग अठासी वर्ष का था जब उसने बेबीलोन की बंधुआई की समाप्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करना आरम्भ किया।

उन पुरुषों की सलाह को आदर करना बुद्धिमानी है जो परमेश्वर की बातों में वयस्क हो चुके हैं। वे अतीत के साथ निरंतरता प्रदान करते हैं और प्रायः समृद्ध अनुभव के कारण ज्ञान के स्रोत सिद्ध होते हैं। परन्तु जब शारीरिक दुर्बलता के कारण वे उपयोगी रूप से कार्य करने में सक्षम नहीं रहते, तब भी उन्हें सम्मान, प्रेम और देखभाल दी जानी चाहिए। दुर्भाग्य से संसार प्रायः बूढ़े लोगों के साथ—विशेषकर हमारी व्यस्त, भौतिकवादी और व्यवहारवादी पश्चिमी संस्कृति में—उनके साथ बहुत कम ही सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है। कभी-कभी लोगों को उनके सर्वोत्तम उपयोगिता के समय ही व्यवसाय से सेवानिवृत्त कर दिया जाता है; उन्हें पेंशन देकर अलग कर दिया जाता है या सीधे काम से निकाल दिया जाता है, और वे एक वृद्धाश्रम से दूसरे नर्सिंग होम तक भटकते रहते हैं, तथा उनसे उतनी ही कम भेंट की जाती है जितनी किसी की अंतरात्मा उन्हें अनुमति देते हैं।

(ख) अन्य पुरुष : रिश्तों पर बल (5:1ख)

पौलुस आगे बढ़ते हुए कहता है, “जवानों को भाई जानकर समझा...” तीमुथियुस को अपने पासबानी दायित्व में, बूढ़ों के प्रति आदर दिखाना था और अन्य पुरुषों के साथ परमेश्वर के परिवार के किसी सदस्य के रूप में समान व्यवहार करना था।

यहाँ “भाई” के रूप में अनूदित शब्द उन सार्वभौमिक उपाधियों में से एक है, जिनसे प्रारम्भिक कलीसिया में मसीह पर विश्वास करने वालों को जाना जाता था। नये नियम की कलीसिया के पास कोई सांप्रदायिक उपाधियाँ नहीं थीं। जो लोग मसीह के थे, वे चेले, पवित्र जन, विश्वासी, मसीही या भाई कहलाए जाते थे। वे स्वर्ग से जन्में और स्वर्ग की ओर बढ़ते हुए एक नए समुदाय के सह-सदस्य थे। वे एक ही तरह के उद्धार

को जानते थे, जी उठे हुए प्रभु के प्रति एक जैसा समर्पण रखते थे, और एक ही पारिवारिक बंधन में एक साथ जुड़े हुए थे।

बाइबल में “भाई” का पहला उल्लेख कैन और हाबिल के संबंध में मिलता है। उत्पत्ति 4:1-2 हमें बताता है कि “हव्वा ने गर्भवती होकर कैन को जन्म दिया ...फिर उसने उसके भाई हाबिल को भी जन्म दिया।” ये पृथ्वी पर रहने वाले पहले दो भाई थे। उन प्रारम्भिक दिनों में उनके पास एक-दूसरे के सिवा कोई और नहीं था। परन्तु पाप एक बड़ा विनाशक है। पहले पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग किया; दूसरे पाप ने मनुष्य को मनुष्य से अलग कर दिया। पहले पाप ने मनुष्य को परमेश्वर के परिवार से बाहर कर दिया; दूसरे पाप ने कैन को मनुष्य के परिवार से बाहर कर दिया।

उत्पत्ति 4:8-10 में कैन और हाबिल के भाइयों के रूप में एक और उल्लेख मिलता है: “कैन [अपने हृदय में हत्या का विचार लिए हुए] ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा।” फिर उसने उसपर चढ़कर उसे घात किया। बाद में परमेश्वर ने कैन से पूछा, “तेरा भाई हाबिल कहाँ है?”

कैन ने लापरवाही से जवाब दिया, “क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?”

परमेश्वर ने उत्तर दिया, “तेरे भाई का लहू भूमि से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है।”

कैन के विपरीत, जिसे अपने परिवार से दूर भगा दिया गया और वह “भटकनेवाला और भगोड़ा” बन गया, वहीं अब्राहम और लूत “परदेशी और बाहरी” बने (उत्पत्ति 4:12; इब्रानियों 11:13)। वे स्वाभाविक संबंध में चाचा और भतीजा थे, परन्तु जब वे यात्री बने, तो एक नया संबंध स्थापित हुआ। अब्राहम और लूत अब प्रभु में भाई बन गए। वे बाइबल में भाइयों की सबसे महत्वपूर्ण जोड़ियों में से एक हैं।

जब उनके चरवाहों में झगड़ा हुआ, तब अब्राहम ने इस भाईचारे के संबंध का सहारा लिया। उसने लूत से कहा, “हम तो भाई हैं।” आयु और आत्मिक परिपक्वता में बढ़ा होने के कारण अब्राहम ने स्वयं को नम्र स्थान पर रखा। मेल-मिलाप की इच्छा रखते हुए, अपने अधिकार छोड़ने को तैयार होकर, और अच्छी गवाही बनाए रखने के लिए किसी भी बलिदान को स्वीकार करते हुए, उसने अपने भाई से विनती की। बाद में, लूत ने अब्राहम का फायदा उठाया, परन्तु जब लूत घोर संकट में पड़ गया, तब भी अब्राहम ने उसे भाई के समान प्रेम किया और उसके बचाव के लिए आया (उत्पत्ति 14:14)।

लोग अक्सर मनुष्य के बीच भाईचारे की बात करते हैं। परन्तु परमेश्वर के माता-पिता होने के बिना मनुष्य का कोई वास्तविक भाईचारा नहीं हो सकता। और प्रचलित धारणा के विपरीत, परमेश्वर सब मनुष्यों के पिता नहीं हैं। परमेश्वर सबका सृष्टिकर्ता तो अवश्य है, परन्तु वह केवल उन्हीं का पिता है जो पवित्र आत्मा के नए जन्म के कार्य के द्वारा उसके परिवार में जन्म लेते हैं (यूहन्ना 1:11-13)। इस प्रकार जब वे परमेश्वर की सन्तान बन गए, तो इफिसुस की कलीसिया के वे जवान लोग तीमुथियुस के भाई बन गए थे, और उसे उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना था।

(2) स्त्रियों के विषय में एक वचन (5:2)

(क) बूढ़ी स्त्रियाँ : माता-पिता होने पर बल (5:2क)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि “बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर समझा।” यह एक अत्यन्त सुन्दर विचार है, जो एक युवा पास्टर और उसकी देखरेख में सौंपी गई वृद्ध स्त्रियों के बीच संबंध को दर्शाता है। तीमुथियुस को उन्हें माताओं के समान देखना था।

मसीह में पौलुस की माताओं में से एक रूफुस की माता थी। रूफुस और उसकी माता का उल्लेख पौलुस ने रोम की कलीसिया को अपने अंतिम अभिवादन में किया है। यदि यह रूफुस वही है जिसका उल्लेख मरकुस ने किया है, तो वह कुरेनी शमौन का पुत्र था, जिसे रोमियों ने मसीह का क्रूस उस कलवरी के पहाड़ी तक उठाकर ले जाने के लिए विवश किया था (मरकुस 15:21)। संभव है कि शमौन एक अश्वेत व्यक्ति था और संभवतः वही अन्ताकिया की कलीसिया का एक प्राचीन भी था, जिसका उल्लेख प्रेरितों के काम 13:1 में “शमौन जो नीगर कहलाता था” के रूप में किया गया है। यदि ऐसा है, तो पौलुस रूफुस और उसके परिवार को बहुत अच्छी तरह जानता था और सम्भवतः उनके घर में अतिथि के रूप में भी रहा था। सम्भव है कि पौलुस को वहाँ बहुत-सी सेवाएँ और कृपा प्राप्त हुई हों; इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि उसने रूफुस को “प्रभु में चुना हुआ” कहा और उसे ही नहीं, बल्कि “उसकी माता को, जो मेरी भी माता है” (रोमियों 16:13) कहकर, अभिवादन भेजा। तीमुथियुस को भी अपनी कलीसिया की वृद्ध स्त्रियों के साथ इसी प्रकार का आदरपूर्ण व्यवहार करना था।

हमें उस अवसर की याद दिलाई गई जब पतरस ने यीशु से कहा, “देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं : तो हमें क्या मिलेगा?” यीशु ने उनसे कहा, “जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता, या माता, या बाल-बच्चों, या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उसको सौ गुना [10,000 प्रतिशत!] मिलेगा, और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा” (मत्ती 19:27-29)। पतरस की तरह, पौलुस ने भी यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया था, और उसने पाया कि प्रभु की प्रतिज्ञा अद्भुत रीति से सत्य है। मसीह में उसकी दस हज़ार माताएँ थीं—और रूफुस की माता उनमें से एक थी (मत्ती 19:2-9)।

तीमुथियुस ने भी प्रभु का पूर्णकालिक सेवक बनने के लिए सांसारिक लाभों का त्याग किया था। वह अपनी माता और नानी को छोड़कर एक मिशनरी बना और अंततः दूर देश में एक पास्टर बना—और मसीह में उसकी भी उतनी ही माताएँ थीं जितनी पौलुस की थीं। उनमें इफिसुस की उसकी कलीसिया की वृद्ध स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं, और तीमुथियुस को उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना था। निस्संदेह उसने यह अनुभव कर लिया होगा कि वे उसे किस प्रकार मातृत्व का स्नेह दिखाना पसंद करती थीं। यदि उसे उनमें से किसी एक को समझाने या चेतावनी देने की आवश्यकता होती, तो उसे “विनम्रतापूर्वक समझाना” था, उसी आदर के साथ जैसा वह अपनी माता यूनीके को दिखाता (प्रेरितों के काम 16:1; 2 तीमुथियुस 1:5)। पौलुस का यह नियम वास्तव में उत्तम है।

(ख) अन्य स्त्रियाँ: पवित्रता पर बल (5:2ख)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह जवान स्त्रियों के साथ “पूरी पवित्रता से बहिन जानकर” व्यवहार करें। भाई प्रायः अपनी बहनों के साथ संगति, विश्वास और देखभाल का एक रिश्ता रखते हैं। एक भाई का अपनी बहन के प्रति भाव सामान्य रूप से एक सुरक्षात्मक प्रेम का होता है। वह कोमल तो होता है, परन्तु उसमें दृढ़ता भी होती है। भाई-बहन के संबंध की निकटता की स्पष्ट सीमाएँ होती हैं। बहन पत्नी नहीं होती।

एक स्वस्थ भाई-बहन का संबंध ऐसा होता है जिसमें प्रकृति और परमेश्वर के वचन द्वारा निर्धारित सीमाओं को लांघने का विचार तक नहीं होता।

कलीसिया में, नया जन्म पाई हुई स्त्रियाँ मसीह में बहनें होती हैं। मसीह में अपने भाइयों के साथ उनका संबंध यद्यपि निकट और मैत्रीपूर्ण होता है, फिर भी उसकी स्पष्ट और कठोर सीमाएँ होती हैं। इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि कलीसिया की जवान स्त्रियों के साथ अपने सभी व्यवहार में वह सावधान रहे। पवित्रता ही उसका पैमाना होना चाहिए। उनके बीच किसी प्रकार की अनुचित घनिष्ठता नहीं होनी चाहिए।

पौलुस पहले ही तीमुथियुस को स्मरण दिला चुका था कि उसे “पवित्रता में” एक आदर्श बनना है (4:12)। “पवित्रता” के लिए जो यूनानी शब्द हमने प्रयोग हुआ है, वही शब्द 4:12 और 5:2 दोनों स्थानों पर पाया जाता है, और नया नियम में यह केवल इन्हीं दो स्थानों पर मिलता है।

हमने ऐसी पवित्रता की ओर संकेत करता है जो हर प्रकार की शारीरिक और आत्मिक अशुद्धता—चाहे व्यवहार में हो या कर्म में—सबको निषिद्ध करती है। यह शब्द उसी मूल शब्द से निकला है जिससे हागियोस बना है, जिसका अर्थ है “पवित्र,” और हाग्नोस, जिसका अर्थ है “कलंक से रहित।” कलीसिया में पुरुष जवान स्त्रियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार कर सकते हैं, पर उन्हें उचित दूरी बनाए रखनी चाहिए। यह बात विशेष रूप से उन लोगों के लिए और भी अधिक सत्य है जिन पर पास्टरीय जिम्मेदारी है। उन्हें दोगुना सावधान रहने की आवश्यकता है

पास्टरीय परामर्श विशेष रूप से जोखिमों से भरा होता है। इसलिए सबसे सख्त सुरक्षा उपायों को लागू रखना और उन्हें अच्छी स्थिति में बनाए रखना आवश्यक होता है। व्याख्यात्मक प्रचार को कलीसिया के अधिकांश सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा कर देना चाहिए। क्योंकि भावनात्मक ज़रूरतवाले लोग प्रायः परामर्शदाता से अत्यधिक जुड़ सकते हैं, इसलिए पास्टर को विपरीत लिंग के सदस्यों के साथ परामर्श सत्रों को सीमित रखना चाहिए। मुलाकातें केवल खुले स्थान पर ही दी जानी चाहिए, जहाँ आने-जाने वाले लोगों की उपस्थिति अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान कर सके।

कुछ समय पहले, एक सभा के समाप्त होने पर एक स्त्री मेरे पास मुझसे मिलने आई। मैंने अपने पुत्र के प्रारम्भिक विद्रोही स्वभाव और बाद में उसके मसीह को पाने की कहानी सुनाई थी, जिसने उसके हृदय को छू लिया था। मेरे प्रचार ने उसके जीवन की एक आवश्यकता को स्पर्श किया था, और वह चाहती थी कि मैं उसको परामर्श के लिए कुछ समय निर्धारित करूँ। मैंने कहा, “मैं स्त्रियों को सलाह नहीं देता। मेरी पत्नी देती है। जिस कहानी का मैंने अपने संदेश में उल्लेख किया, उसके प्रत्येक पहलू में वह खुद भी सम्मिलित थी। उसके पास एक स्त्री का दृष्टिकोण है। वह आपको मुझसे बेहतर सलाह दे सकती है। यह हमारा फ़ोन नंबर है—उसे फ़ोन कर लो।”

बहुत से सेवकों और प्रचारकों ने कलीसिया की जवान स्त्रियों के साथ अपने संबंधों के विषय में तीमुथियुस को दी गई पौलुस की सलाह पर ध्यान न देकर अपने जीवन को बर्बाद कर लिया है। किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सलाह या चेतावनी उसी प्रकार दी जानी चाहिए जैसे कोई भाई अपनी बहन को समझाता या सुधारता है।

ख. विधवाओं के लिए न्याय (5:3-16)

पौलुस को विधवाओं के प्रति गहरी करुणा का भाव था। अपने अज्ञानता के दिनों में, जब वह कलीसिया का प्रमुख सतानेवाला था, उसने अनेक स्त्रियों को विधवा बना दिया था। निस्संदेह वे उसके मन में सदैव बनी रहती होंगी। लेकिन, तीमुथियुस के लिए जो नियम उसने निर्धारित किए थे, वे किसी भावना पर आधारित नहीं थे; वे पवित्र किए हुए सामान्य बुद्धि पर आधारित थे।

अन्यजातीय संस्कृतियों में विधवाओं के साथ अक्सर कठोर व्यवहार किया जाता रहा है। पुराने पश्चिम के मूल अमेरिकियों (नेटिव अमेरिकन) की विधवाओं की दयनीय दशा के विषय में अनेक कहानियाँ कही गई हैं; उन्हें प्रायः बोझ समझा जाता था, उनकी संपत्ति हड़प ली जाती थी और उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाता था, जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो जाती। जिस किसी ने भी भारत का इतिहास पढ़ा है, वह जानता है कि विशेषकर हिन्दू स्त्रियों—और खासकर विधवाओं—की स्थिति कितनी दुःखद रही है। यहाँ तक कि पुराने नियम के समय के इब्रानियों में भी, विधवाओं का विवाह उनके निकट संबंधी से कर दिया जाता था, चाहे उनकी अपनी भावना कुछ भी हो। यह मसीह का सुसमाचार ही था जिसने समाज में विधवाओं को सम्मानजनक स्थान प्रदान किया है।

(1) विश्वसनीय विधवा (5:3-10)

(क) विधवा और उसका सम्मान (5:3)

मूसा की व्यवस्था के तहत, यदि कोई स्त्री विधवा और निःसंतान रह जाती थी, तो उसका विवाह सामान्य रूप से उसके मृत पति के भाई से कर दिया जाता था, और इस विवाह से उत्पन्न पहला पुत्र उस विधवा के पहले पति का नाम धारण करता था, ताकि उसका वंश इस्राएल में बना रहे (व्यवस्थाविवरण 25:5-6)। ऐसे ही एक विवाह—रूत और बोअज़ के विवाह—के माध्यम से यीशु इस संसार में आए (रूत 1-4)। फिर भी, यहूदियों में विधवापन और बांझपन को भय और लज्जा की दृष्टि से देखा जाता था (यशायाह 54:4)। लैव्यव्यवस्था के अंतर्गत यह विवाह निर्धन विधवाओं को कुछ सुरक्षा अवश्य प्रदान करता था, परन्तु वास्तव में यह प्रथा संपत्ति को उसी परिवार में बनाए रखने का एक उपाय भी था। जब पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि “उन विधवाओं का, जो सचमुच विधवा हैं, आदर कर” (1 तीमुथियुस 5:3), तब उसने विधवाओं को अनचाहे और उन्हें विवश करने वाले दूसरे, तीसरे या चौथे विवाह से स्वतंत्र कर दिया।

“आदर” के लिए प्रयुक्त किए गए शब्द का अर्थ है “मूल्य आँकना या निर्धारित करना, सम्मान देना, आदरपूर्वक मान देना।” यहाँ इस शब्द का भाव यह है कि विधवा के मसीह में एक बहन होने के नाते उसके मूल्य को समझा जाए और उसे उचित सम्मान दिया जाए। “सचमुच” (या “वास्तव में”) शब्द का अर्थ “निश्चय ही” भी किया जा सकता है। अतः यहाँ पौलुस उन विधवाओं की ओर संकेत कर रहा था जो पूर्ण रूप से दूसरों पर निर्भर थीं और जिनके पास कोई आर्थिक सहारा नहीं था। आगे चलकर, पौलुस ने कुछ कर्तव्यों का भी उल्लेख किया, जिन्हें कलीसिया की सहायता प्राप्त करने वाली विधवाओं से अपेक्षित किया जाना चाहिए।

हम प्रभु के जन्म से संबंधित घटनाओं के विवरण में ऐसी ही एक परमेश्वर भक्त विधवा से मिलते हैं (लूका 2:22-38)। उसका नाम हन्नाह था, जो आशेर के गोत्र की थी। वह चौरासी वर्षों से विधवा थी। उसके विवाह

के केवल सात वर्ष बाद ही उसके पति की मृत्यु हो गई थी, परन्तु पुनर्विवाह करने कि बजाय उसने अपने आपको आत्मिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। उसने मन्दिर में एक कोना खोज लिया और परमेश्वर के भवन को ही अपना घर बना लिया—मानो उसने अपने आप को उसी से विवाह कर लिया हो। उसे “भविष्यद्वक्तिन” कहा गया है (लूका 2:36), और वह “उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी।”

हन्नाह का व्यक्तित्व थुआतीरा की कलीसिया में पाई जाने वाली “उस स्त्री इज़ेबेल” के साथ बिल्कुल विपरीत दिशा में था। इज़ेबेल अपने आप को “भविष्यद्वक्तिन” कहती थी, परन्तु उसने अपने आप को परमेश्वर के लोगों को भ्रमाने के लिए समर्पित कर दिया था (प्रका. 2:20)। यह विरोध केवल संयोग नहीं है, क्योंकि नये नियम में “भविष्यद्वक्तिन” शब्द केवल दो ही स्थानों पर पाया जाता है—लूका 2:36 और प्रका. 2:20।

मरियम की चालीस दिनों की शुद्धि की अवधि पूरी होने के बाद जब यूसुफ और मरियम बालक मसीह को यरूशलेम में प्रभु के समर्पित करने के लिए लाए तब हन्नाह मन्दिर में ही उपस्थित थी। जिस समय वृद्ध शिमौन ने “प्रभु के मसीह” को पहचान लिया, तब हन्नाह वहीं खड़ी थी। तुरंत उसने धन्यवाद किया और एक नई सेवा आरम्भ की—वह “उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उस बालक के विषय में बातें करने लगी।” निस्संदेह, हन्नाह ठीक वैसी ही एक विधवा थी जिसका उल्लेख पौलुस ने “सचमुच में विधवा” कहते समय मन में रखा था।

(ख) विधवा और उसके संसाधन (5:4)

i. नियम (5:4क)

इसके बाद पौलुस ने उन विधवाओं के विषय पर ध्यान आकर्षित किया जो पूरी तरह निर्भर नहीं थीं। उसने कहा, “यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही घराने के साथ भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उनका हक्क देना सीखें।” यहाँ “बच्चे” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह टेक्नोन है, जो स्वाभाविक जन्म से उत्पन्न पुत्र या पुत्री के लिए प्रयोग होता है। “नाती-पोते” के लिए जो शब्द है वह एक्गोनोस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और जिसका अर्थ है पोते-पोतियाँ या अन्य वंशज। अंग्रेज़ी शब्द “नेफ्यूज़” का अर्थ समय के साथ बदल गया है। जब किंग जेम्स संस्करण का अनुवाद किया गया था, तब इसका अर्थ “पोते-पोतियाँ” होता था। हम “नेफ्यूज़” शब्द का यही पुराना प्रयोग शेक्सपियर के ओथेलो में भी देखते हैं।

“भक्ति का बर्ताव” के रूप में प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “आदरपूर्वक व्यवहार करना।” नये नियम में यह शब्द केवल दो स्थानों पर ही पाया जाता है—एक यहाँ और दूसरा एथेंस के अरियुपगुस पर पौलुस के भाषण में, जहाँ उसने भोले-भाले यूनानी बुद्धिजीवियों से कहा कि उसने उनके “अनजाने ईश्वर” की अंधविश्वासी उपासना को देखा है (प्रेरितों के काम 17:23)। इस प्रकार 1 तीमुथियुस 5:4 में इस शब्द का प्रयोग बच्चों और नाती-पोतों को गंभीर स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर के प्रति उनकी जिम्मेदारी यह है कि वे उसकी उपासना अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करके व्यावहारिक रूप में प्रकट करें।

“हक्क देना” के रूप में प्रयुक्त वाक्यांश का अर्थ है “बदला चुकाना” या “लौटाकर देना।” माताएँ अपने बच्चों पर जो प्रेम और देखभाल, जो त्याग और गहरे समर्पण को उँडेल देती हैं, उसे देखते हुए यह आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर अपनी सन्तानों से अपेक्षा करता है कि वे अपनी विधवा माताओं का उसी प्रकार हक्क चुकाया करें।

हमारा समाज पौलुस के इस उपदेश से दूर होकर कंगाल हो गया है। सामाजिक कल्याण, आत्मिक कल्याण का अच्छा विकल्प नहीं हो सकता; और राज्य या कोई निजी संस्था, एक प्रेममय घर का ठंडा और निर्जीव विकल्प ही बन सकता है। एक विधवा माता जो अपने बच्चों के साथ घर में रहती है, वह आशीष का कारण बन सकती है। वह परीक्षा का कारण भी हो सकती है, और साथ ही अपने परिवार के लिए अनुग्रह में बढ़ने की प्रेरणा भी बन सकती है।

जहाँ तक मुझे याद है, मेरी दादी मेरे माता-पिता के साथ ही रहती थीं। वे हमारे परिवार की एक रीति के अनुसार भोजन की मेज़ पर उनका अपना एक निश्चित स्थान था और आग के पास उनका अपना एक कोना था जहाँ वह बैठती थी। वह सदा अपनी बुनाई, अपनी मुस्कान, अपना स्नेह और अपनी छोटी-छोटी मिठाइयों के साथ वहाँ उपस्थित रहती थीं। कभी-कभी हम माँ और पिताजी का विरोध कर देते थे, परन्तु दादी से हम हमेशा प्रेम करते और उनकी आज्ञा मानते थे। वे शांति, स्थिरता और भक्तिमय जीवन का एक केंद्र थीं। वह प्रिय वृद्ध महिला, जिनकी चाल-ढाल मानो इस संसार से परे की थी, हमसे प्रेम करती थीं और प्रार्थना के द्वारा हमें परमेश्वर के राज्य में लाने में सहायक हुईं। दादी को उनके अनन्त विश्राम में गए अनेक वर्ष बीत चुके हैं, पर मुझे उनके पुराने ढंग के काले वस्त्र, फीते वाले जूते, गोल तार वाले चश्मे और जूड़े में बँधे हुए उनके सफेद बाल आज भी स्मरण हैं।

दादी सारे फटे कपड़ों को सील दिया करती थीं, और हर सोमवार जब बॉयलर चलाया जाता था और हफ्ते भर के इकट्ठे हुए मैले कपड़े और बिस्तर धोए जाते थे, तो सारी व्यवस्था उन्हीं के हाथ में होती थी। उन्होंने जितना स्वादिष्ट टोस्ट बनाया, वैसा मैंने कभी नहीं खाया; इन्हें रसोई की आग के लाल कोयलों पर सेंका जाता था और दोनों ओर से मक्खन लगाया जाता था! हर रविवार सुबह हम दादी की साप्ताहिक भेंट से जागा करते थे— जिसमें ठीक तरह से बनी हुई अंग्रेज़ी चाय का एक प्याला और मक्खन लगी पतली-पतली ब्रेड की फाँकें, जिन पर चीनी छिड़की होती थी! क्रिसमस के समय तो वह सचमुच खिल उठती थीं, जब वे प्लम केक बनातीं और क्रीम और चीनी की परत से सजा हुआ बड़ा केक तैयार करतीं थी। इसके अतिरिक्त, दादी हमेशा ‘डोमिनोज़’ का खेल खेलने या ‘जिगसॉ’ पहेली में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहती थीं। और अपनी छोटी-सी पेंशन में से जेब खर्च बढ़ाने के लिए थोड़ा-सा योगदान देने में भी वे कभी पीछे नहीं रहती थीं। यही थीं हमारी दादी। वह हमारे परिवार का अभिन्न हिस्सा थीं।

पौलुस बिल्कुल सही था। एक विधवा माता को अपने किसी एक संतान के घर में स्थान मिलना चाहिए। मेरी पत्नी और मैंने अपनी माता को उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले तक कई वर्ष अपने घर में रखा। निस्संदेह उनकी उपस्थिति के कारण कुछ परिवर्तन करने पड़े, और हमने अपनी स्वतंत्रता का थोड़ा-सा हिस्सा खो दिया था। परन्तु यह सब उस प्रेम की तुलना में बहुत मामूली था जो उन्होंने हमें दिया, और उन प्रार्थनाओं की तुलना में कुछ भी नहीं था जो उन्होंने हमारे बच्चों के लिए कीं।

ii. कारण (5:4ख)

हमें अपने माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए क्योंकि “यह परमेश्वर को भाता है।” इस नियम के कारण को बताते हुए मानो हमें रोमियों के नाम पौलुस के उस कथन की प्रतिध्वनि सुनाई देती है, जहाँ उसने परमेश्वर की इच्छा को “भली, और भावती, और सिद्ध” कहा था (रोमियों 12:2)। निश्चय ही यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम विश्वास करने वाले अपने वृद्ध, विधवा माताओं का सहारा बनें। यदि हमारी भक्ति में इस स्पष्ट और मूलभूत कर्तव्य का पालन शामिल नहीं है, तो हमारी भक्ति केवल दिखावटी है।

शास्त्रियों और फ़रीसियों ने अपने माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्य से बचने के तरीके द्वारा अपनी कपटता प्रकट की और इस कारण प्रभु की कठोर फटकार के पात्र बने। रब्बी परम्परा उन्हें यह दिखावा करने की अनुमति देती थी कि वे अपने माता-पिता का पालन-पोषण नहीं कर सकते, क्योंकि उन्होंने अपनी आय का इतना बड़ा भाग परमेश्वर को ‘कुर्बान’ कर दिया है (मत्ती 15:4-9)। यीशु ने उनके कपट और उनकी परम्परा—दोनों की कड़ी निंदा की।

(ग) विधवा और उसकी प्रतिक्रियाएँ (5:5-7)

i. विधवा जो बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया करती है (5:5)

पौलुस फिर से उस पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर विधवा के विषय की ओर लौटता है। वह उसकी एकांतता, उसके समर्पण, परमेश्वर पर उसकी निर्भरता और परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति का उल्लेख करता है। प्रेरित लिखता है, “जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं, वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात दिन विनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है।” वह प्रभु के अतिरिक्त और कहाँ जा सकती है?

“जिसका कोई नहीं” के रूप में प्रयुक्त शब्द मोनोओमाइ है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और जिसका अर्थ है “अकेला छोड़ दिया गया हो।” यीशु नाइन नगर के फाटक पर एक अकेली विधवा से मिला, और लूका ने इस घटना का वर्णन किया है। वह लिखता है, “देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी माँ का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी।” उसके साथ बड़ी भीड़ थी, परन्तु यह किसी उदार सहायता की गारंटी नहीं थी। लोग अंतिम संस्कार के बाद शीघ्र ही तितर-बितर हो जाते हैं, और जो घर तक लौटते भी हैं, वे भी अधिक देर नहीं ठहरते। परन्तु यीशु ने उसकी उस निराश अवस्था के लिए कुछ किया। पहले उसने उसके आँसू पोंछे, और फिर उसका पुत्र उसे जीवित लौटा दिया (लूका 7:11-17)। और उसने विधवाओं की चिंता करना कभी नहीं छोड़ा है। आज वह अपनी कलीसिया—जो उसकी आत्मिक देह है—के द्वारा अपनी करुणा और देखभाल के कार्य को आगे बढ़ाता है।

जो विधवा बेसहारा है और बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया करती है, वह “परमेश्वर पर आशा रखती है।” यहाँ “आशा रखती है” के लिए जो क्रिया प्रयोग हुई है, वह पूर्ण काल में है। इसका अर्थ है “आशा करना।” इसका संकेत यह है कि उस विधवा ने परमेश्वर पर अपनी आशा टिकाए रखने की आदत बना ली है, इसलिए उसका शोक उसकी आशा को डगमगाने नहीं देता। उसकी आशा अब अटल विश्वास बन चुकी है, जो निरंतर प्रार्थना और विनती से भरे जीवन में प्रकट होती है। उसने हमेशा परमेश्वर पर भरोसा रखा है, और अब वह उस पर और भी अधिक भरोसा करती है।

यीशु ने लूका 18:1-8 में एक और विधवा के विषय में एक दृष्टांत सुनाया। उसने कहा, “किसी नगर में एक न्यायी रहता था, जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था। उसी नगर में एक

विधवा भी रहती थी, जो उसके पास आ-आकर कहा करती थी, ‘मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा।’ कुछ समय तक तो वह न माना परन्तु अन्त में मन में विचारकर कहा, ‘यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूँ; तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि घड़ी-घड़ी आकर अन्त को मेरी नाक में दम करे’।”

इस दृष्टांत का उद्देश्य यह था कि “मनुष्यों को सदा प्रार्थना करनी चाहिए और हियाव नहीं छोड़ना चाहिए।” परमेश्वर उस अन्यायी न्यायधीश के समान नहीं है, जिसने मूसा की व्यवस्था और अन्य स्थानों में विधवाओं की रक्षा के लिए दिए गए अनेक आदेशों (निर्गमन 22:22; व्यवस्थाविवरण 10:18; यशायाह 1:17, 23; मलाकी 3:5) के होते हुए भी, केवल अपने स्वार्थ के कारण उसके पक्ष में कार्य किया।

परमेश्वर कभी-कभी हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने में विलंब अवश्य करता है, परन्तु ऐसा विलंब एक दैवीय और सर्वज्ञानी उद्देश्य के अंतर्गत होता है। स्वर्गीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो परमेश्वर “शीघ्र” ही उत्तर देता है।

जो विधवा बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया देती है, वह बस परमेश्वर पर भरोसा करती रहती है और उसके उत्तम समय में जवाब देने के लिए उसी की ओर निहारती है।

ii. सांसारिक तरीके से प्रतिक्रिया देने वाली विधवा (5:6-7)

क. जो उल्लेख किया गया है (5:6)

पौलुस ने कहा, “जो भोगविलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है।” जो विधवा अपने पति की मृत्यु के दुख (या संभवतः अपनी सांत्वना के भाव) को संसार के भोग-विलास में डूबकर दबाने का प्रयास करती है, वह अपनी आत्मा को एक गहरी क्षति पहुँचाती है।

यहाँ “भोग विलास में पड़ना” वाला भाव उसी प्रकार का है जैसा याकूब ने अधर्मी धनवान लोगों को फटकारते हुए कहा: “तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा” (याकूब 5:5)। इस शब्द का अर्थ है “ऐशो-आराम और भोग-विलास में जीवन बिताना।” यह शब्द उड़ाऊ पुत्र पर भी उचित रूप से लागू किया जा सकता है (लूका 15:13)।

पौलुस के अनुसार जो विधवा पापमय भोग-विलास की ओर मुड़ जाती है, वह “जीते-जी मर गई है।” इस अभिव्यक्ति का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि “वह अपनी ही आत्मा को नष्ट कर रही है।” अभी-अभी विधवा हुई स्त्री मृत्यु की भयानक वास्तविकता का प्रत्यक्ष सामना करती है; ऐसे में यदि वह भोग-विलास की दौड़ में कूद पड़ती है, तो संभव है कि वह स्वयं विनाश को आमंत्रित कर रही हो। उसका खतरा मरकुस 8:35 के वचन से स्पष्ट होता है, जहाँ प्रभु ने कहा, “जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खोएगा।” यदि अपने जीवन को बचाने का प्रयास करते हुए उसे खो देना संभव है, तो जानबूझकर उसे त्याग देने पर उसे खो देना कितना अधिक संभव और खतरनाक होगा!

ख. क्या आवश्यक है (5:7)

ऐसे खतरे को देखते हुए, शोकग्रस्त लोगों की व्यावहारिक सेवा में स्थानीय कलीसिया द्वारा उनका मार्गदर्शन करने के लिए कुछ नियम आवश्यक हैं। ये दिशानिर्देश पहले से ही प्रेरितों के मानकों के अनुसार स्थापित

किए गए हैं। “इन बातों की भी आज्ञा दिया कर,” पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, “ताकि वे निर्दोष ठहरें।” सेवकों को लगातार यह आदेश देना चाहिए कि इन नियमों का पालन किया जाए।

“आज्ञा दिया कर” के रूप में प्रयुक्त यह शब्द प्रेरितों के काम 1:4 में भी पाया जाता है, जहाँ प्रभु ने अपने चेलों को “आज्ञा दी [यही शब्द]” कि वे यरूशलेम को न छोड़ें, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहें। “निर्दोष” के रूप में मूल रूप से प्रयुक्त शब्द का अर्थ है कि विरोधी को आरोप लगाने का कोई आधार या कारण न मिले।

यदि किसी स्थानीय कलीसिया के प्राचीन किसी सांसारिक जीवन जीने वाली विधवा की जीवन-शैली को आर्थिक सहायता देते हैं, तो कलीसिया पर इस प्रकार की जीवन-शैली को समर्थन देने का दोष लगाया जा सकता है। इसके विपरीत, भक्त विधवा को कलीसिया द्वारा सहायता दी जानी चाहिए, परन्तु भोग-विलास में पड़ी हुई विधवा, सांसारिक जीवन-शैली को चुनकर, स्वयं को ऐसी मदद से अलग कर लेती है।

(घ) विधवा और उसके संबंध (5:8)

i. क्या आवश्यक है (5:8क)

पौलुस फिर उस विधवा की ओर लौटता है जिसके रिश्तेदार मौजूद हैं। वह ऐसी स्थिति की कल्पना करता है जिसमें कोई परिवार का सदस्य, जो स्वयं विश्वासी होने का दावा तो करता है, लेकिन विधवा की देखभाल करने की अपनी जिम्मेदारी उठाने से इनकार कर देता है। पौलुस प्रेरित को ऐसे खोखले विश्वास की घोषणा के प्रति बिल्कुल धैर्य नहीं था। उसने लिखा, “पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।” यह भाषा काफी कठोर है, परन्तु इस बात पर पौलुस उतना ही दृढ़ था जितना याकूब - कि विश्वासियों को अपने आचरण से अपने विश्वास को प्रदर्शित करना चाहिए।

यहाँ “चिन्ता करने” के लिए प्रयुक्त शब्द का तात्पर्य है पहले से सोच लेना, आवश्यकता का अनुमान करना, और सच्ची प्रबंध करना। पौलुस के विचार में, यह बिल्कुल सामान्य ज्ञान की बात थी कि यदि आवश्यकता उत्पन्न हो, तो व्यक्ति पहले से ही परिवार के सदस्य की देखभाल करने के लिए तैयार रहे। अविश्वासी लोग भी अपने परिवार के प्रति स्वाभाविक स्नेह दिखाना जानते हैं। इसलिए एक मसीही व्यक्ति देखभाल के मामले में किसी अविश्वासी से भी निम्न स्तर नहीं अपना सकता। एक विश्वासी को उसी तरह का प्रेम दिखाना चाहिए जिसका वर्णन 1 कुरिन्थियों 13 में किया गया है; ऐसा प्रेम ही मसीही विश्वास का केन्द्र है।

जो मसीही केवल नाम के विश्वासी है, पर इस प्रकार का प्रेम नहीं दिखाते, उनकी तुलना उस दास से की जा सकती है जिसकी कथा प्रभु ने मत्ती रचित सुसमाचार 18:23-35 में सुनाई है। उस दास पर राजा के दस हजार तोड़े का ऋण था; और यद्यपि उसने अधिक समय माँगा और सब कुछ ठीक कर देने के वादे भी किए, फिर भी स्पष्ट था कि वह इतना बड़ा कर्ज चुकाने में असमर्थ था। इसलिए राजा ने उसका सारा ऋण स्वयं क्षमा कर दिया। किन्तु जैसे ही वह बेईमान व्यक्ति मुक्त हुआ, उसने अपने एक साथी दास को ढूँढ़ निकाला, जो उस पर सौ दीनार का ऋणी था। उसने अपने साथी के साथ कठोर व्यवहार किया, तुरन्त भुगतान की माँग की, और उस दास को बन्दीगृह में डलवा दिया। जब अन्य दासों ने यह बात राजा को बताई, तो उसने उस मनुष्य को फिर दरबार में बुलवाया। राजा ने कहा, “हे दुष्ट दास, मैंने तुझ पर दया करके

तेरा सारा कर्ज क्षमा कर दिया था; क्या तुझे भी अपने संगी दास पर वैसी ही दया नहीं करनी चाहिए थी, जैसी मैंने तुझ पर की थी?” तब राजा ने उस दुष्ट दास को बन्दीगृह में डलवा दिया, जब तक कि वह अपना सारा ऋण चुका न दे।

यही सिद्धान्त विधवाओं के साथ हमारे व्यवहार पर भी लागू होता है। जो व्यक्ति अपने आपको विश्वासी कहता है, उसने अपने सारे पापों के ऋण की क्षमा के लिए स्वर्गीय अनुग्रह पर भरोसा किया है। परमेश्वर ने उस पर महान प्रेम, दया और अनुग्रह दिखाया है, और अब वह उससे अपेक्षा करता है कि वह भी दूसरों के प्रति वैसी ही दया और करुणा प्रकट करें। वह प्रेम का ऋणी है — विशेष रूप से अपने परिवार के सदस्यों के प्रति।

ii. क्या प्रकट हुआ है (5:8ख)

जो व्यक्ति अपने जरूरतमंद रिश्तेदारों के प्रति कठोरता और निर्दयी व्यवहार करता है, उसे पवित्र आत्मा अविश्वासी के समान ठहराता है। प्रेरित पौलुस ने लिखा, “वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।” किसी विधवा माता, चाची, बहन या भतीजी के प्रति मसीह के प्रेम को प्रकट करने से इनकार करना एक कठोर हृदय को दर्शाता है और विश्वास की किसी भी घोषणा को निरर्थक बना देता है।

यहाँ “अविश्वासी” के रूप में प्रयुक्त किया गया शब्द अपिस्तोस है। जबकि “विश्वास” के लिए प्रयुक्त शब्द पिस्तिस है। किसी यूनानी शब्द के आगे अक्षर अल्फा (α) जोड़ देने से उसका अर्थ नकारात्मक हो जाता है। कभी-कभी हिन्दी भाषा में भी ऐसा ही होता है। उदाहरण के लिए, विश्वासी उस व्यक्ति को कहते हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व को मानता है; लेकिन उसके आगे α जोड़ देने से अविश्वासी शब्द बनता है, जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो परमेश्वर के अस्तित्व को नकारता है। इसी प्रकार यूनानी अक्षर अल्फा शब्द पिस्तिस (“विश्वास”) को बदलकर अपिस्तोस (“अविश्वासी”) बना देता है।

(ड) विधवा तथा उसका ग्रहण किया जाना (5:9)

पौलुस ने तीमुथियुस को दो ऐसे दैवीय निर्देश दिए, जिन्हें किसी विशेष विधवा को कलीसिया की ओर से मदद देने पर विचार करते समय ध्यान में रखना था। प्राचीनों को विधवा की आत्मिक परिपक्वता और उसकी एक-पतिव्रत निष्ठा को ध्यान में रखना चाहिए: “उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो।” “नाम लिखा जाए” के रूप में अनूदित शब्द काटालेगोमाई है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। शास्त्रीय यूनानी भाषा में, यह शब्द सैनिकों को सूचीबद्ध करने या सेना में भर्ती करने के संदर्भ में प्रयोग किया जाता था। अंग्रेज़ी शब्द कैटलॉग भी इसी काटालेगोमाई से निकला है।

केवल परिपक्व आयु की विधवा को ही कलीसिया की आर्थिक सहायता प्राप्त करने वालों की सूची में सम्मिलित किया जाना था। कलीसिया की सहायता-सूची में शामिल होने के बाद, उसे विशेष रूप से प्रभु के कार्य के लिए समर्पित होना था; जब वह इस सेवा में लग जाए, तो उसे पीछे नहीं हटना था। कलीसिया की आर्थिक मदद स्वीकार करके विधवा-स्त्री कलीसिया की सेवा करने के लिए अपने आपको समर्पित करती थी, विशेषकर आतिथ्य-सत्कार के क्षेत्र में। सम्भवतः कम आयु की विधवाओं को इसलिए शामिल नहीं

किया जाता था क्योंकि इस प्रकार की सेवा में आने वाले प्रलोभनों का सामना करना उनके लिए अधिक कठिन हो सकता था। साठ वर्ष की आयु की यह शर्त युवा विधवाओं को ऐसे वाचाओं और जिम्मेदारियों में उलझने से भी बचाती थी, जिन्हें उन्होंने सावधानी से नहीं सोचा होता और जिनका पूरा भार वे हाल ही के शोक और टूटे हुए मन की अवस्था में समझ नहीं पातीं। वाचा के विषय में मूसा की व्यवस्था में भी साठ वर्ष की आयु का विशेष महत्व था (लैव्यव्यवस्था 27:1-4, 7)।

कलीसिया की मदद के लिए सूची में सम्मिलित होने के लिए विधवा का केवल परिपक्व होना ही पर्याप्त नहीं था। यह भी आवश्यक था कि उसने केवल एक ही बार विवाह की हो। सम्भवतः, जो विधवा दो या अधिक बार विवाह कर चुकी होती है, उसके रिश्तेदारों का दायरा अधिक व्यापक होता है, जिनसे कुछ आर्थिक सहायता की उचित अपेक्षा की जा सकती थी। इसके अतिरिक्त, उसका एक-पतिव्रत-निष्ठ जीवन उसकी विश्वासयोग्यता और स्थिर चरित्र का प्रमाण माना जाता था।

(च) विधवा और उसकी प्रतिष्ठा (5:10)

i. क्या वह एक भली स्त्री है? (5:10क)

पौलुस ने दो मूलभूत प्रश्न बताए जिन्हें किसी विधवा को सहायता-सूची में शामिल करने से पहले पूछा जाना चाहिए। पहला प्रश्न बहुत ही व्यावहारिक है: क्या वह “भले काम में सुनाम रही है”? दूसरे शब्दों में, क्या उसके पास एक अच्छे जीवन को जीने की ठोस और स्थापित प्रतिष्ठा है?

“भले काम” यह वाक्यांश पास्टरीय पत्रियों में बार-बार पाया जाता है (1 तीमुथियुस 2:10; 3:1; 5:10, 25; 6:18; 2 तीमुथियुस 2:21; 3:17; तीतुस 1:16; 2:7, 14; 3:1, 8, 14)। पहाड़ी उपदेश में, प्रभु ने घोषणा की कि उसके चेलों की एक प्रमुख पहचान ‘भले काम’ होने चाहिए — ऐसी पहचान जो विशेष रूप से अविश्वासियों के लिए प्रभावशाली गवाही बने (मत्ती 5:16)। स्वयं प्रभु का जीवन और सेवकाई भी भले कामों से परिपूर्ण थी (यूहन्ना 10:32-33)। पतरस, जिसने व्यक्तिगत रूप से प्रभु के अनेक कार्यों को देखा था, ने कुरनेलियुस से कहा कि यीशु “वह भलाई करता फिरा” (प्रेरितों के काम 10:38)।

भले काम अच्छे इरादों से बढ़कर होते हैं (मत्ती 21:28-31)। प्रेम अपने-आप में एक भला काम नहीं है; बल्कि भूखों को भोजन देना, नंगों को वस्त्र पहनाना और बीमारों से भेंट करना भले काम हैं (मत्ती 25:35-36)। निस्संदेह, अविश्वासी लोग भी भले काम कर सकते हैं — और अक्सर वे आशा करते हैं कि ऐसे कार्य उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिलाएँगे — परन्तु इससे भले कामों का महत्व कम नहीं हो जाता। विश्वासी भले काम उद्धार पाने के लिए नहीं करता, बल्कि इसलिए करता है क्योंकि वह उद्धार पा चुका है। इसी कारण पौलुस ने प्राचीनों से कहा कि वे उन विधवाओं के जीवन में ऐसे प्रमाण देखें जो कलीसिया की ओर से स्थायी मदद प्राप्त करना चाहती थीं।

ii. क्या वह उदार स्वभाव की है? (5:10ख-च)

क. उसके घर पर ध्यान दें (5:10ख)

दूसरा प्रश्न पाँच ऐसे क्षेत्रों को बताता है जिन्हें प्राचीनों को किसी विधवा को आर्थिक सहायता देने का निर्णय लेने से पहले जाँचना था। उदाहरण के लिए, उन्हें उसके घर-परिवार को देखकर यह पूछना था, “क्या

उसने बच्चों का पालन-पोषण किया है।” “बच्चों का पालन-पोषण” के रूप में प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। माना जाता है कि इसका अर्थ यह है कि वे बच्चे उसके अपने ही रहे हों। अभिप्राय यह प्रतीत होता है कि जिस विधवा की बात की जा रही है, उसने अपने बच्चों का उत्तम पालन-पोषण किया हो और उनके प्रति एक अच्छी माता रही हो; साथ ही यह भी आवश्यक था कि उसके बच्चों द्वारा उसका भरण-पोषण न कर पाने के उचित कारण भी हों, जैसा 5:3-4 में अपेक्षा की जा रही है। या संभव है कि जो विधवाएँ अच्छी माताएँ रही थीं, वे कलीसिया में विशेष रूप से मूल्यवान मानी जाती थीं; इतना कि उनकी पूर्णकालिक सेवा को एक ऐसी संपत्ति समझा जाता था, जिसे आर्थिक सहायता देकर सुरक्षित रखना उचित समझा गया (1 कुरि. 9:9; 1 तीमु. 5:18)। निश्चय ही, जिस विधवा का मातृत्व का अच्छा प्रमाणित जीवन रहा हो, उसे स्थानीय कलीसिया में सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ख. उसके अतिथि-सत्कार को देखें (5:10ग)

किसी विधवा की योग्यताओं की जाँच करते समय, प्राचीनों को यह भी देखना था, कि उसने “अतिथियों की सेवा की हो।” यह इस पद में दिए गए पाँच “यदि” में से दूसरा है। प्रत्येक स्थान पर “यदि” शब्द के बाद संकेतवाचक रूप का प्रयोग किया गया है। द कम्पैनियन बाइबल यह समझाती है कि, “परिकल्पना को एक वास्तविक तथ्य के रूप में मान लिया जाता है; यद्यपि शर्त पूरी नहीं हुई है, फिर भी उस धारणा पर कोई संदेह नहीं डाला जाता।” [13] इसी प्रकार का प्रयोग 1 कुरिन्थियों 15:16-17 में भी मिलता है: “और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा; और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है।”

“अतिथियों की सेवा की हो” के रूप में प्रयुक्त किये गए शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है, परन्तु इससे संबंधित शब्द “अतिथियों” या “परदेशियों” का जिक्र प्रभु की भेड़ों और बकरियों के दृष्टान्त में लगातार चार बार आता है (मत्ती 25:35, 38, 43, 44)। उस कथा में प्रभु ने स्वयं को उसी संसार में “परदेशी” के रूप में प्रस्तुत किया, जिसे उसने अपने ही हाथों ने बनाया था; और लोगों ने परदेशियों के साथ जैसा व्यवहार किया, उसे उसके साथ किए गए व्यवहार का ही प्रमाण माना गया। इस दृष्टान्त की व्याख्या महाक्लेश के समय और प्रभु के पुनरागमन पर जातियों के न्याय से संबंधित है, जो यहोशापात की तराई में होगा (मत्ती 24:15-22; योएल 3:2)। फिर भी, इस दृष्टान्त का व्यावहारिक प्रयोग उस योग्य विधवा के जीवन के संदर्भ में भी लागू होता है, जिसकी अतिथियों के प्रति दयालुता उसकी कलीसिया के प्राचीनों द्वारा पहचानी गई हो।

ग. उसकी विनम्रता पर ध्यान दें (5:10घ)

विधवा के विषय में विचार करते समय, प्राचीनों को यह भी ध्यान देना था कि क्या “पवित्र लोगों के पाँव धोए” हैं। कुछ कलीसियाएँ पैर धोने को एक धार्मिक रीति-रिवाज़ मानती हैं, परन्तु पौलुस के मन में यहाँ किसी रिवाज़ का विचार नहीं था। वह अपने समय की व्यावहारिक परिस्थितियों की बात कर रहा था। उस समय लोग खुले जूते पहनते थे और सड़कें तथा सड़कें काफ़ी गर्म और धूल-मिट्टी से भरे होते थे, इसलिए यात्रा के बाद पैर जल्दी थक जाते और मैले हो जाते थे। घर के आँगन में पानी रखना उत्तम अतिथि का चिन्ह माना जाता था, ताकि घर में प्रवेश करते ही कोई सेवक उनके पैर धोकर उन्हें ताज़गी पहुँचा सके।

ऊपरी कोठरी में भवन के मालिक ने पानी रखवाया था ताकि अंतिम भोज के समय प्रभु और उसके चेले जब वहाँ पहुँचें, तो कोई दास उनके पैर धोकर सेवा कर सके। परन्तु वहाँ कोई दास नहीं था, और चेलों में से कोई भी इस साधारण सेवा को करने के लिए स्वयं को नम्र करने को तैयार नहीं था। तब प्रभु ने स्वयं दास का स्थान लिया और सबके पैर धोए — जिससे वे भीतर ही भीतर लज्जित हुए और पतरस ने खुलकर अपनी असहजता तक प्रकट की (यूहन्ना 13:3-17)। इस घटना को प्रभु ने नम्रता और सेवा का पाठ सिखाने के अवसर के रूप में उपयोग किया।

पहले भी एक अवसर पर, जब यीशु को एक फरीसी के घर आमंत्रित किया गया था, तब उस घमण्डी व्यक्ति ने अपने अतिथि के प्रति यह सामान्य शिष्टाचार भी नहीं दिखाया था। परन्तु, उस फरीसी की इस लापरवाही की भरपाई एक पापिनी स्त्री के आगमन से हुई, जिसने अपने आँसुओं से उसके पैर भिगोए और अपने बालों से उन्हें पोंछा। तब प्रभु ने उस फरीसी को यह कहते हुए दोषी ठहराया, “तू ने मेरे पाँव धोने के लिये पानी न दिया” (लूका 7:44)।

इस प्रकार, पौलुस तीमुथियुस से केवल यह कह रहा था कि योग्य विधवा वह है जो कर्तव्य और समर्पण की भावना से सेवा करते हुए सबसे साधारण समझे जाने वाले और छोटे कार्य करने से भी पीछे न हटे।

घ. उसके मन को देखें (5:10ड)

किसी विधवा की योग्यता का मूल्यांकन करते समय प्राचीनों को यह भी देखना था कि क्या “उसने दुःखियों की सहायता की” है। यहाँ “सहायता की” के लिए प्रयुक्त शब्द अन्य ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग बहुत कम पाया जाता है। इसका अर्थ है कठिन परिस्थितियों से दबे हुए लोगों को सहारा देना और उनकी सहायता करना। प्राचीन मूर्तिपूजक संसार में अनेक विधवाएँ स्वयं भी विपरीत परिस्थितियों से गुज़री होती थीं। जो विधवा ऐसे संघर्षों पर विजय पा चुकी होती थी, वह इस बात का प्रमाण थी कि उसने प्रभु पर भरोसा रखा, दृढ़ चरित्र और परिश्रम का जीवन जिया, और अब वह दूसरों को उनकी कठिनाइयों से उभरने में सहायता करने के लिए तत्पर रह सकती थी।

हम एलिय्याह की कथा में ऐसी ही एक विधवा से मिलते हैं। अपनी स्पष्ट दरिद्रता के बावजूद, उस साहसी स्त्री ने उस अतिथि भविष्यद्वक्ता को अपने पास जो कुछ था, उसे देने की इच्छा प्रदर्शित की। उसे जो प्रतिफल मिला, वह पुराने नियम की सबसे मनोहर कथाओं में से एक है (1 राजा 17:8-24)।

परमेश्वर किसी का ऋणी नहीं रहता। जो विधवा अपनी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करती है, वह उस विश्वासयोग्य सेवक के समान होती है जो “अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस प्राप्त करते हैं” (1 तीमुथियुस 3:13)। इस प्रकार वह कलीसिया की सहायता-सूची में सेविका के रूप में सम्मिलित होने और आवश्यकता में पड़े लोगों की सेवा करने के योग्य ठहरती है।

ड. उसके सहायतापूर्ण व्यवहार पर ध्यान दें (5:10च)

अन्त में, किसी विधवा का मूल्यांकन करते समय प्राचीनों को यह भी ध्यान में रखना था, क्या “हर एक भले काम में मन लगाया” है। यहाँ “मन लगाया” के रूप में प्रयुक्त शब्द का प्रयोग मरकुस 16:20 में भी हुआ है, जहाँ प्रारम्भिक कलीसिया के प्रचार के पीछे-पीछे होने वाले प्रेरिताई चिन्हों का वर्णन किया गया

है। यही शब्द 1 तीमुथियुस 5:24 में उन पापों के लिए भी प्रयोग हुआ है जो अपराध करने वालों का पीछा करते हैं। यहाँ 5:10 में, इसका अर्थ है हर एक भले काम में लगातार धैर्यपूर्वक लगे रहना। कोई भी व्यक्ति कभी-कभार दया या उदारता का कोई कार्य कर सकता है, परन्तु योग्य विधवा मन लगाकर हर सम्भव भलाई करने का प्रयास करती है।

(2) अनिच्छुक विधवा (5:11-15)

(क) इनकार (5:11क)

पौलुस अब अपना ध्यान उन युवा विधवाओं की ओर लगाता है, जिन्होंने अभी तक अपनी योग्यता सिद्ध नहीं की थी या जो पहले ही कलीसिया से मिलनी वाली सहायता के प्रति अयोग्य साबित हो चुकी थीं। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा, “पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना।” यहाँ “न लिखना” के रूप में अनूदित शब्द पराइतेओमाई है, जिसका अर्थ है “टाल देना” या “विनम्रता से इनकार कर देना।” पौलुस ने यही शब्द 1 तीमुथियुस 4:7 में भी प्रयोग किया, जब उसने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि वह “अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह।”

पौलुस जीवन की वास्तविकताओं से भली-भाँति परिचित था। निस्संदेह उसने अनेक विधवाओं को देखा था — युवा भी और वृद्ध भी। उसने यह भी देखा कि जैसे ही उनका शोक कुछ कम होता है, युवा विधवाएँ प्रायः पुनः विवाह करने के विषय में सोचने लगती थीं। निश्चय ही, किसी विधवा का पुनर्विवाह करना गलत नहीं था। पुराने नियम में निःसंतान विधवा की देखभाल का सामान्य उपाय पुनर्विवाह ही माना जाता था। परन्तु युवा विधवाओं की पुनर्विवाह की इच्छा इस बात के विरुद्ध जाती थी कि उन्हें कलीसिया की स्थायी आर्थिक सहायता सूची में रखा जाए, क्योंकि वहाँ सम्मिलित होने के लिए प्रभु के कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण की आवश्यकता थी।

(ख) कारण (5:11ख-12)

किसी युवा विधवा द्वारा मसीह के कार्य के लिए उतावली में किया गया समर्पण बाद में उसके लिए बोझिल और कष्टदायक बन सकता था, विशेषकर यदि उसमें वाचाएँ भी शामिल हों। ऐसे असन्तोष के कारण, वह अपने पहले प्रेम और अपने प्रारम्भिक विश्वास को छोड़ सकती थी। इसी सम्भावित परिणाम को देखते हुए पौलुस ने लिखा, “जब वे मसीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं तो विवाह करना चाहती हैं, और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पहले विश्वास को छोड़ दिया है।”

“सुख-विलास में पड़ जाती हैं” के रूप में प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं पर पाया जाता है। इस शब्द के अर्थ में ‘किसी के नियंत्रण से बाहर हो जाने’ का विचार निहित है। इससे संबंधित शब्द प्रका. 18:3, 7, 9 में भी प्रयुक्त हुए हैं (“सुख विलास,” “ऐशो-आराम से जीना”), जहाँ मसीह-विरोधी की बेबीलोन की भोग-विलासी और भृष्ट जीवन-शैली का वर्णन किया गया है। विद्वान ट्रेच ने इस शब्द का अर्थ “अधीर अहंकार” बताया है — ऐसा अहंकार जो तृप्ति और समृद्धि से उत्पन्न होती है, जैसे यशूरून के विषय में कहा गया है कि वह “मोटा होकर लात मारने लगा” (व्यवस्थाविवरण 32:15)। स्पष्ट है कि यहाँ पौलुस ने बहुत ही कठोर और गंभीर भाषा का प्रयोग किया है।

प्रेरित ऐसी युवा विधवा की कल्पना कर सकता था जो अपने हुए नुकसान पर शोक मना रही हो और अपने भविष्य को लेकर चिन्तित हो। उसका भरण-पोषण कौन करेगा? वह केवल मसीह के लिए जीवन समर्पित करने की प्रतिज्ञा करने के विषय में सोच सकती है। यद्यपि उसे पूरा विश्वास होता है कि उसका विश्वास और प्रेम कभी कम नहीं होगा, फिर भी वह प्रभु से ऐसे वायदे करने के खतरे में पड़ सकती है जिन्हें वह बाद में निभा न सके।

वह अपनी प्रतिज्ञा लेती है। फिर कोई आकर्षक पुरुष उसके जीवन में आता है। वह उसमें रुचि लेने लगती है और अपनी प्रतिज्ञा द्वारा अपने ऊपर लगाए गए बन्धनों के विरुद्ध मन ही मन विद्रोह करने लगती है। धीरे-धीरे वह उस समर्पण और प्रार्थनामय जीवन से असन्तुष्ट होने लगती है जिसे उसने अपनाया था। संभव है कि वह पुनः विवाह कर ले। यह भी सम्भव है कि वह उस सांसारिक सुख-विलास में फिर से पड़ जाए जिसे उसने अपने गहरे दुःख के समय त्याग दिया था। इस प्रकार वह अपने पहले विश्वास को छोड़कर अपने आप को “दंड” के अधीन कर लेती है।

पौलुस की सलाह यह थी कि ऐसी विधवा को कलीसिया की आर्थिक सहायता-सूची में न रखा जाए। हाल ही के शोक के समय प्रभु की उपस्थिति उसके लिए अत्यन्त वास्तविक अनुभव हुआ होगा। सम्भव है कि उसे सचमुच लगा हो कि वह सदा उससे गहरा प्रेम करेगी और उस पर पूरा भरोसा रखेगी। प्रभु ने उसके हृदय को सांतवना से भर दिया था। परन्तु पौलुस एक अनुभवी सुसमाचार प्रचारक और पास्टर था; वह केवल भावनाओं पर आधारित प्रेम और विश्वास पर अधिक भरोसा नहीं करता था। प्राचीनों को समय लेकर देखना चाहिए। आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए उससे प्रतिज्ञाएँ करवाना अन्ततः हानिकारक सिद्ध हो सकता था और भविष्य में उसकी समस्याओं को और बढ़ा सकता था।

जैसा कि पौलुस ने कहा, जो युवा विधवाएँ उतावली में प्रतिज्ञाएँ करती हैं, वे “दोषी ठहर” सकती हैं, क्योंकि उन्होंने अपने पहले विश्वास को छोड़ दिया है। यहाँ “छोड़ दिया” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है — निष्फल कर देना, अस्वीकार करना, भरोसा तोड़ना या अपने समर्पण से पीछे हट जाना। “दोष” या “दण्ड” के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में अट्ठाईस बार आता है और प्रायः इसे “न्याय,” “दण्ड,” या “दोषी ठहराए जाने” के अर्थ में अनूदित किया गया है। यह पद किसी भी प्रकार से यह नहीं सिखाता कि प्रतिज्ञा तोड़ने वाली युवा विधवा अपना उद्धार खो देगी। इसका आशय यह है कि यदि वह प्रभु से किए गए अपने वचनों को त्यागकर पुनः विवाह करती है, तो वह अपने नए वैवाहिक जीवन में अपराध-बोध और आत्मग्लानि की भावना लेकर प्रवेश कर सकती है, और आलोचकों की निन्दात्मक टिप्पणियों का सामना भी कर सकती है। इन सब बातों से बचा जा सकता है। कलीसिया के प्राचीनों को पौलुस के निर्देशों का पालन करना चाहिए और युवा विधवाओं के साथ किसी भी तरह की आर्थिक प्रतिबद्धताएँ न करें और उनसे किसी तरह की जीवनभर की प्रतिज्ञाएँ भी न करवाएँ।

(ग) दोषारोपण (5:13)

स्पष्ट है कि पौलुस परमेश्वर से प्रतिज्ञाएँ करने के विषय में बहुत गंभीर था। आखिरकार, मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण और उसके कार्य के लिए सम्पूर्ण प्रतिबद्धता — जो किसी प्रतिद्वन्द्वी या इनकार को स्वीकार नहीं करती — अत्यन्त गंभीर विषय है। ऐसी प्रतिबद्धता केवल भावनाओं का ही नहीं, बल्कि बुद्धि, इच्छा-शक्ति और जागरूक विवेक का भी प्रश्न है। पौलुस ने समझा कि यदि कलीसिया युवा विधवाओं की भावनात्मक

संवेदनशीलता और आर्थिक आवश्यकता का लाभ उठाने लगे, तो अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

i. आलसी जीवन की दोषी (5:13क)

पौलुस ने इस खतरे को भी पहचाना कि यदि किसी युवा विधवा का भरण-पोषण कलीसिया द्वारा किया जाए, तो वह “आलसी होना सीख” सकती है। यहाँ “आलसी” के लिए प्रयुक्त शब्द आर्गोस है, जो “काम” के अर्थ वाले शब्द का नकारात्मक रूप है। जब काम करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, तो अनेक प्रकार की बुराइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। परमेश्वर ने कभी भी मनुष्य को आलसी रहने के लिए नहीं बनाया। अदन की वाटिका में भी, जब सब कुछ सिद्ध अवस्था में था, तब भी परमेश्वर ने आदम को कार्य दिया था (उत्पत्ति 2:15)। पतन के बाद तो उस कार्य को कठिन परिश्रम में बदल दिया गया (उत्पत्ति 3:17-19)।

पौलुस कड़ी मेहनत का एक दृढ़ समर्थक था। जैसा कि उसने इफिसुस के प्राचीनों को स्मरण कराया था, वह स्वयं और अपने साथियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तम्बू बनाने का काम करने के लिए हमेशा तैयार रहता था (प्रेरितों के काम 20:34)। वह इस बात में कोई बुद्धिमानी नहीं देखता था कि युवा और स्वस्थ विधवाओं को अपने जीवन-निर्वाह के लिए काम करने की आवश्यकता से मुक्त कर दिया जाए। यह कहावत — “शैतान के पास खाली हाथों के लिए कई सारे काम हैं” — वास्तव में गहरी सच्चाई को प्रकट करती है।

ii. घरों में भटकते फिरने की दोषी (5:13ख)

एक और खतरा यह भी था कि आलसी युवा विधवाएँ “घर-घर फिरना” सीखती हैं। जब आर्थिक चिन्ता न रहे, तो वे बुरी आदतों में पड़ सकती थीं, जिनमें सबसे हल्की आदत यह होती कि वे पड़ोसियों और मित्रों के घर जाकर अपना समय व्यर्थ करें। “घर-घर फिरना” के रूप में मूल शब्द पेरिएरखोमाई है, जिसका अर्थ “इधर-उधर टहलना” या “भटकते रहना” भी किया जा सकता है। यही शब्द प्रेरितों के काम 19:13 में उन “फिरने वाले” यहूदियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जिन्होंने पौलुस के चमत्कारों की नकल करते हुए दुष्टात्माओं को निकालने का प्रयास किया — जिसका परिणाम उनके लिए विनाशकारी साबित हुआ। प्रेरितों के काम 28:13 में इसका अनुवाद “घूमकर” किया गया है, जहाँ लूका समुद्री जहाज़ की यात्रा का वर्णन करता है। उस प्रसंग को पढ़ते समय हम जहाज़ को हवा का लाभ उठाने के लिए इधर-उधर मुड़ते हुए देख सकते हैं।

कलीसिया द्वारा सहायता प्राप्त करने वाली वृद्ध विधवाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे घर-घर जाकर लोगों की भौतिक और आत्मिक रूप से सेवा करें। परन्तु युवा विधवाएँ, अलग-अलग घरों में आते-जाते समय, अनेक प्रकार के प्रलोभनों का सामना कर सकती थीं।

iii. किस्से-कहानियाँ सुनाने का दोषी (5:13ग)

युवा विधवाओं के लिए यह भी खतरा था कि वे “बकबक करने वाली” (फ्लुआरोग) न बन जाएँ, अर्थात् व्यर्थ और मूर्खतापूर्ण बातें करने वाली न बन जाएँ। इस यूनानी शब्द का क्रियात्मक रूप “बकबक करना” या लगातार व्यर्थ बोलते रहने को दर्शाता है। ऐसे लोग बहुत अधिक बोलने वाले होते हैं; वे गपशप करने वाले होते हैं और उनकी ज़बान आवश्यकता से अधिक चलती रहती है।

व्यर्थ बातें शीघ्र ही निरर्थक आरोपों, आधारहीन दोषारोपणों और दुर्भावनापूर्ण शब्दों में बदल जाती हैं। जैसा कि याकूब ने लिखा, “देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है!” (याकूब 3:5-10)। पौलुस इस विचार से ही व्याकुल हो उठा था कि युवा विधवाएँ, विशेषकर कलीसिया की सहायता पर निर्भर रहते हुए, अपना कीमती समय ऐसी व्यर्थ और हानिकारक बातचीत में न गुजारे।

iv. हस्तक्षेप करने की दोषी (5:13घ)

एक और खतरा यह था कि युवा विधवाएँ “दूसरों के काम में हाथ भी डालने वाली” न बन जाएँ। यहाँ मूल रूप से प्रयुक्त शब्द का अर्थ है ऐसे लोग जो उन बातों में हस्तक्षेप करते हैं जिनसे उनका कोई संबंध नहीं होता। संबंधित क्रिया ‘पेरियरगाज़ोमाइ’ का अर्थ है “व्यर्थ बातों में लगे रहना” और यह परिश्रम को व्यर्थ करने के विचार को प्रकट करती है। यह शब्द 2 थिस्सलुनीकियों 3:11 में मिलता है, जहाँ पौलुस आलसी लोगों की निंदा करता है: “हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं।” पेरियरगोस, जिसका अनुवाद “जिज्ञासापूर्ण कलाएँ” किया गया है, लूका के उस वर्णन में मिलता है जहाँ इफिसुस में जादू-टोना की पुस्तकों को जलाया गया था (प्रेरितों के काम 19:19)। यह शब्द उस सीमा से आगे बढ़ जाने का संकेत देता है जो उचित और वैध है।

पौलुस को इसमें कोई कारण दिखाई नहीं देता था कि कलीसिया युवा विधवाओं को आर्थिक सहायता देकर उनके दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे। बल्कि उनके लिए यह अधिक अच्छा था कि वे परिश्रम करके सम्मानजनक आजीविका प्राप्त करें।

v. हानि पहुँचाने की दोषी (5:13ड)

अन्तिम खतरा यह था कि युवा विधवाएँ “अनुचित बातें बोलने” न लग जाएँ जो उन्हीं शोभा नहीं देती। पौलुस को डर था कि जब वे घर-घर जाकर आते-जाते रहेंगे तो वे कितना नुकसान कर सकते हैं। चुगली की छोटी-छोटी बातें इकट्ठी करके और अपनी खबरें तथा विचार फैलाते हुए वे संगति को कमजोर कर सकते थे और स्थानीय कलीसिया को नष्ट कर सकते थे। “नहीं,” मानो पौलुस पुकारकर कहता है, “दस हज़ार बार नहीं! कभी किसी विधवा को कलीसिया से इतनी मदद न दी जाए कि उसके पास अपने समय के साथ करने के लिए इससे बेहतर कुछ न हो।”

(घ) सिफ़ारिश (5:14-15)

i. पौलुस ने क्या इच्छा की (5:14क-ग)

पौलुस ने युवा विधवाओं के लिए कुछ व्यावहारिक और सामान्य ज्ञान पर आधारित सुझाव दिए। सबके हित में यही बेहतर होगा कि वे पुनः विवाह करें, इसलिए उसने उन्हें नया जीवन-साथी चुनने की सलाह दी। प्रेरित की सोच-समझकर व्यक्त की गई इच्छा यह थी कि “युवा स्त्रियाँ विवाह करें।” एक युवा विधवा पहले ही वैवाहिक जीवन का अनुभव कर चुकी होती है और सम्भव है कि वह अविवाहित जीवन के लिए उपयुक्त न हो; इसलिए उसके लिए नया पति पाना अधिक उचित माना गया।

पौलुस ने आगे यह सुझाव दिया कि वह फिर से माता बने, अर्थात् “संतान उत्पन्न करे।” यह विवाह का स्वाभाविक और तर्कसंगत परिणाम है। मसीही माताओं की बहुत आवश्यकता है। और कौन जानता है कि पुनर्विवाह करने वाली विधवाओं से भविष्य में किस प्रकार के कलीसिया के अगुवे जन्म ले सकते हैं? उदाहरण के लिए, ओबेद दूसरे विवाह से जन्मा पुत्र था (रूत का बोअज़ से विवाज), और वह दाऊद का दादा बना!

युवा विधवा को एक नए स्थान को सुशोभित करना चाहिए। उसका कार्य है “घरबार संभालना,” जैसा कि पौलुस ने कहा है; क्योंकि वहीं स्त्री अपनी पूर्णता को प्राप्त करती है। “घरबार संभालें” इस शब्द का प्रयोग केवल इसी स्थान पर पाया जाता है और उसका अर्थ है “घर के कार्यों का प्रबन्ध और संचालन करना।” इस शब्द के मूल में शासन करने का भाव निहित है।

घर स्त्री का कार्यक्षेत्र होता है। एक घर को अच्छी तरह संभालना एक पूर्णकालिक काम है, विशेषकर जब वहाँ बच्चे हों। भक्त पत्नी और माँ, जो अपने छोटे से संसार पर रानी की तरह राज करती है, राष्ट्रों की नियति अपने हाथों में रखती है। यह बात कितनी सच है कि जो हाथ पालना झुलाता है वही दुनिया पर राज करता है!

धन्य है योकेबेद, जिसने शिशु मूसा का पालना झुलाया!

धन्य है यिशै की पत्नी, जिसने दाऊद का पालना झुलाया!

धन्य है मरियम, जिसने यीशु का पालना झुलाया!

ii. पौलुस ने किस बात पर खेद प्रकट किया (5:14घ)

पौलुस विरोधी को कलीसिया की बुराई करने के लिए ज़रा भी मौका देना नहीं चाहता था, इसलिए वह चाहता था कि युवा विधवाएँ “किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।” वह दुष्ट की चालों को अच्छी तरह जानता था। वह जानता था कि शैतान हाल ही में विधवा हुई स्त्री के मानसिक आघात और भावनात्मक उथल-पुथल का कैसे फायदा उठा सकता है। इसलिए, विधवा और कलीसिया दोनों को हमले से सुरक्षित रखने के लिए उचित कदम उठाए जाने ज़रूरी थे।

यहाँ “विरोधी” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “एंटीकाइमाई” है। यही शब्द मसीह-विरोधी के लिए भी उपयोग किया गया है, जो “विरोध [एंटीकाइमाई] करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है” (2 थिस्सलुनीकियों 2:4)। इसी शब्द का प्रयोग पवित्र आत्मा और शरीर (पापमय स्वभाव) के परस्पर विरोध को व्यक्त करने के लिए भी किया गया है: “और ये एक दूसरे के विरोधी [एंटीकाइमाई] हैं” जैसा कि पौलुस ने लिखा (गलातियों 5:17)। सेप्टुआजिन्ट में भी यह शब्द जकर्याह 3:1 में शैतान के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

1 तीमुथियुस 5:14 में जिस “विरोधी” का उल्लेख पौलुस ने किया है, वह या तो शैतान हो सकता है या सुसमाचार के मानवीय विरोधी। जब रोमी साम्राज्य में नीरो मसीहियों के विरुद्ध सताव कर रहा था, तब यह और भी आवश्यक था कि कलीसिया को बदनाम करने के लिए कुछ भी न कहा जाए और न किया जाए।

पहले ही बहुत सी दुष्ट निन्दा की बातें फैलाई जा रही थीं; इसलिए कलीसिया को चाहिए था कि वह शत्रु को किसी तरह का ज़िंदा गोला-बारूद न दे।

"अवसर" के रूप में प्रयुक्त शब्द का अर्थ है "एक आरंभिक बिंदु"। वाइन के अनुसार, यह शब्द "युद्ध में संचालन के आधार" को दर्शाता है।[15] पौलुस को डर था कि युवा विधवाओं के लापरवाह व्यवहार से शैतान को विश्वास के विरुद्ध आक्रमण करने का एक तैयार मंच हासिल हो सकता है।

यहाँ “बदनाम” शब्द का सीधा तात्पर्य है “बुरा-भला कहना” या “अपमान करना।” सुसमाचार के दुश्मन पहले से ही मसीहियों को बदनाम कर रहे थे। नीरो ने उन पर रोम में लगी आग का आरोप लगाया था। उन पर यह भी आरोप लगाया जा रहा था कि वे बहुत बुरे और धिनौने काम करते हैं। पौलुस को डर था कि जवान विधवाएँ, जब रोज़ी-रोटी कमाने की ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाएँगी, तो कहीं वे अनजाने में अपने लापरवाह व्यवहार से वही गलती न कर बैठें जो दाऊद ने की थी। उसने “यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया” (2 शमूएल 12:14)।

iii. पौलुस ने क्या परखा (5:15)

पौलुस ने जान लिया था कि कई विधवाएँ पहले से "बहककर शैतान के पीछे हो चुकी हैं।" यह केवल अनुमान नहीं था; प्रेरित को वास्तविक मामलों की जानकारी थी।

“शैतान” नाम का अर्थ है “विरोधी” या “दुश्मन।” वह हमारा सबसे बड़ा शत्रु है और संसार में परमेश्वर जो कुछ कर रहा है, उसका वह लगातार विरोध करता है। कलीसिया में जो झूठी शिक्षाएँ फैलाई जा रही थीं, उनके पीछे अदृश्य रूप से वही बहकानेवाला था। रोम में चल रहे भयानक नीरो के अत्याचारों का भी मूल कारण वही था। वही लोगों के लिए जाल बिछाता है, खासकर उनके लिए जो सावधान नहीं रहते। उसे जवान विधवाओं के शोक और कमजोरी की कोई परवाह नहीं है। बल्कि वह उनका फायदा उठाने की कोशिश करता है, और जैसा पौलुस ने कहा, कुछ मामलों में वह इसमें सफल भी हो चुका था।

यहाँ “पीछे हो चुकी है” शब्द हमें पौलुस की तीमुथियुस को दी गई शुरुआती चेतावनी की याद दिलाते हैं: “इनको छोड़कर कितने लोग बकवाद की ओर भटक गए [एक्ट्रेपोमाइ] हैं” (1:6)। पौलुस का हृदय खासकर जवान विधवाओं के लिए व्याकुल हो उठा था। वह चाहता था कि उन्हें उस दुश्मन से बचाया जाए, जो उन्हें बहकाकर गलत रास्तों पर ले जाता है। उसकी चेतावनियाँ और सलाह केवल इस इच्छा से दी गई थीं कि जवान और असहाय विधवाएँ मजबूत और पवित्र विश्वासिनी बन सकें।

(3) संबंधित विधवा (5:16)

(क) एक सावधानी (5:16क)

फिर से उन विधवाओं की बात करते हुए जिनके रिश्तेदार उनकी सहायता कर सकते हैं, पौलुस ने लिखा, “यदि किसी विश्वासिनी के यहाँ विधवाएँ हों...” सबसे पहले, विधवाओं की देखभाल परिवार की जिम्मेदारी है। पौलुस ने यह भार उनके रिश्तेदारों पर रखा कि वे ही उनकी सहायता और देखभाल करें।

एक विश्वासी अपने शोक में जी रहे रिश्तेदारों की देखभाल करने के लिए कर्तव्यबद्ध होता है। इस आज्ञा के मूल में संयुक्त परिवार की धारणा निहित है। यह विचार यहूदियों के बीच अत्यंत प्रबल था (इब्रानियों 11:8-

9), आज भी कई तीसरी दुनिया के देशों में यह मजबूत है, और परमेश्वर के लोगों के बीच भी यह मजबूत होना चाहिए। परिवार की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा ठहराई गई है, और उसका टूटना सदैव किसी समाज के पतन का संकेत देता है। शोकग्रस्त, बेरोज़गार, बीमार और निर्धनों के लिए सहायता की पहली पंक्ति परिवार ही होना चाहिए।

(ख) एक प्रावधान (5:16ख)

“वही उनकी सहायता करे” पौलुस ने लिखा। हो सकता है आज स्थिति ऐसी न हो, परंतु ऐसी ही होनी चाहिए। हमारे आज के समय में, पारिवारिक जीवन पर एक तराह से विपत्ति आ पड़ी है। जैसा कि वेंस हैवनर ने कहा, मोटरकार ने परिवार को घर से बाहर निकाल दिया; और टेलीविजन ने संसार को घर के भीतर ला दिया है। मोटरकार और टेलीविजन के आगमन के परिणामस्वरूप पुरानी पारिवारिक जीवन-शैली लगभग समाप्त हो गई, और उसके साथ ही अपने आश्रितों के प्रति जिम्मेदार होने का आदर्श भी लुप्त होता जा रहा है।

परन्तु पौलुस का आदेश आज भी काफी प्रभावी है। एक विश्वासी—चाहे पुरुष हो या स्त्री—अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करने के लिए जिम्मेदार होता है। यह दायित्व समय और तकनीक के बदलने से कम नहीं होता। परिवार अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परमेश्वर की ओर से पहला प्रबंधन है।

(ग) एक प्रस्ताव (5:16ग-घ)

पौलुस ने आगे कहा, “कि कलीसिया पर भार न हो, ताकि वह उनकी सहायता कर सके जो सचमुच विधवाएँ हैं।” विधवाओं के संबंध में पौलुस की शिक्षा यही है। कलीसिया के धन को उन लोगों की सहायता के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिए जिनके पास जीवन-यापन का कोई अन्य साधन नहीं है।

पवित्रशास्त्र में अनेक विधवाओं की कहानियाँ वर्णित हैं, और सामूहिक रूप से वे एक रोचक अध्ययन प्रस्तुत करती हैं। [16] मसीह के न्यायासन के सामने कलीसिया और विश्वासियों का न्याय इस बात के लिए किया जाएगा कि उन्होंने विधवाओं के साथ कैसा व्यवहार किया; इसलिए आइए हम अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के प्रति सचेत रहें।

ग. प्राचीनों के प्रति विश्वासयोग्यता (5:17-25)

(1) लोगों के लिए एक वचन (5:17-22)

(क) प्राचीनों का आदर करना (5:17-18)

प्राचीनों के विषय पर लौटते हुए, पौलुस ने इन परमेश्वर के द्वारा नियुक्त लोगों के नेतृत्व के लिए स्थानीय कलीसिया की जिम्मेदारी पर भी चर्चा की। उसने आरम्भ किया, “जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं...” (5:17)। यहाँ “प्रबंध करना” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वही शब्द 3:4 में एक प्राचीन के अपने घर का प्रबंध करने के संदर्भ में भी उपयोग किया गया है। यह शब्द प्रोइस्टेमी है, जिसका अर्थ है “निगरानी करना।”

स्थानीय कलीसिया कोई लोकतंत्र नहीं है जहाँ कार्य बहुमत के मत से तय किए जाते हों। लोकतंत्र मनुष्य की दृष्टि में शासन का आदर्श रूप हो सकता है, परन्तु परमेश्वर का आदर्श एक पूर्ण राजतंत्र है जिसमें सारी सत्ता यीशु के हाथों में निहित है। कलीसिया में मसीह सिर है और पवित्र आत्मा उस कार्य को लागू करने वाला है। पवित्र आत्मा ही प्राचीनों को खड़ा करता है, जो उसकी अगुवाई में निर्णय लेते हैं, और यदि वे अपना कार्य भली-भाँति करते हैं तो उन्हें आदर दिया जाना चाहिए। इस प्रकार कलीसिया का संचालन उन पुरुषों द्वारा होना चाहिए जिन्हें पवित्र आत्मा ने वरदान दिया है, परस्वा है और नियुक्त किया है। इफिसुस के प्राचीन इस सत्य से भली-भाँति परिचित थे (प्रेरितों के काम 20:17, 20)।

प्राचीनों को उनके कार्य के लिए सम्मानित भी किया जाना चाहिए। उन्हें “दो गुने आदर के योग्य समझा” जाए, विशेषकर वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं” (1 तीमुथियुस 5:17)। यद्यपि यह अपेक्षा की जाती है कि सभी प्राचीन “सिखाने में निपुण” हों (3:2), फिर भी उनमें से कुछ दूसरों की अपेक्षा अधिक वरदान पाए हुए होते हैं और इसलिए वे शिक्षा देने में अधिक समय समर्पित करते हैं। सभी प्राचीन आदर के योग्य हैं, और जो परमेश्वर के वचन और शुद्ध उपदेश की शिक्षा में उत्तम हैं, वे दोगुने आदर के पात्र हैं। इस दोगुने आदर का कारण यह है कि स्थानीय कलीसिया के सामूहिक जीवन में परमेश्वर का वचन सर्वोच्च महत्व रखता है। परमेश्वर ने अपने वचन को अपने महान नाम से भी बढ़कर महिमा दी है (भजन 138:2)। संसार भले ही ऐसा न माने, परंतु पृथ्वी पर परमेश्वर के वचन को प्रकट करने से बढ़कर कोई अन्य महान कार्य नहीं है।

प्राचीनों को उनके प्रतिफल के लिए भी सम्मानित किया जाना चाहिए। 1 तीमुथियुस 5:18 में पौलुस स्पष्ट करता है, “क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, “दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना” (व्यवस्थाविवरण 25:4 को देखें)। और, “क्योंकि “मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है।” (मत्ती 10:10 को देखें)। स्पष्ट है कि पौलुस ने यह कल्पना की थी कि स्थानीय कलीसिया में सेवा करने वाले प्राचीनों को पारिश्रमिक दिया जाए, क्योंकि “प्रतिफल” के लिए प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ “मजदूरी” या “वेतन” है। “परिश्रम” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह थक जाने, कठिन श्रम से चूर हो जाने का भाव प्रकट करता है। यहाँ “मजदूर” शब्द कभी-कभी खेत में काम करने वाले या शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति के लिए भी प्रयुक्त होता है। इससे स्पष्ट है कि प्राचीनों से अपेक्षा की जाती है कि वे कठोर परिश्रम द्वारा अपनी आर्थिक सहायता के योग्य सिद्ध हों, और उसी के अनुसार उन्हें पारिश्रमिक दिया जाए।

(ख) प्राचीनों पर आरोप लगाना (5:19-20)

i. एक सावधानीपूर्ण आवश्यकता (5:19)

यह काफ़ी असाधारण बात है कि लोग कलीसिया के अगुवों के विषय में चुगली करने के लिए कितने तत्पर रहते हैं। वे सच्ची या झूठी कहानियों को बड़े उत्साह से सुनते हैं और उन्हें दूसरों तक पहुँचा देते हैं। जो कलीसिया के सदस्य प्राचीनों के निर्णयों के विषय में शिकायत करते रहते हैं, वे असंतोष और विभाजन को बढ़ावा देते हैं। ऐसी बातों को रोकने के लिए पौलुस ने एक सरल नियम स्थापित किया: “कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।” स्वयं पौलुस पर भी कुरिन्थ और अन्य स्थानों में निर्दयतापूर्वक और अन्यायपूर्वक तरीके से आक्रमण किए गए थे, और निश्चय ही इफिसुस में तीमुथियुस को भी अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा होगा।

मूसा अपने पूरे जीवनकाल में—जब वह परमेश्वर की प्रजा का अगुवा, चरवाहा और शिक्षक था—लगातार आलोचना का सामना करता रहा। इस्राएली लोग निरंतर उसके और हारून के विरुद्ध कुड़कुड़ाते रहे। कई बार परमेश्वर को अपने विश्वासयोग्य सेवकों का पक्ष लेने और उनकी रक्षा करने के लिए हस्तक्षेप भी करना पड़ा (निर्गमन 14:11-12; 15:24; 16:2, 7, 9, 12; 17:3; 32:1; गिनती 11:1, 9-15; 12:1; 14:1-5; 16:11-32, 41-46; 21:4-5)। दाऊद ने भी आलोचना का सामना किया। यिर्मयाह ने भी इसका सामना किया। उस भविष्यद्वक्ता का जीवन तो राष्ट्र की अधिकांश जनता के हठ और विरोध के कारण उसके लिए बोझ-सा बन गया था।

इसलिए किसी मंडली के अगुवों के साथ दुर्व्यवहार होना कोई असामान्य बात नहीं थी। इस प्रवृत्ति से निपटने के लिए पौलुस ने सरल रूप से कहा कि किसी प्राचीन के विरुद्ध लगाया गया कोई भी आरोप औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया जाए और कम से कम दो—और बेहतर हो तो तीन—गवाहों द्वारा सिद्ध किया जाए (व्यवस्थाविवरण 19:15 को देखें)। इस पुराने नियम के सिद्धांत की स्वयं प्रभु ने मत्ती 18:16 में दृढ़ता से पुष्टि की।

किसी प्राचीन के विरुद्ध आरोप केवल तभी स्वीकार किए जाने चाहिए जब वे उचित रीति से प्रस्तुत किए जाएँ। यही नियम है। उचित प्रमाण के बिना आरोपों को स्वीकार करना परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों के अधिकार को कमजोर करना है और परमेश्वर के वचन के विपरीत कार्य करना है। जिस शब्द का अनुवाद “दोष” किया गया है, वह न्यायिक प्रक्रिया से संबंधित है। ध्यान दें कि पौलुस ने निन्दा या बदनामी के लिए इस शब्द का उपयोग नहीं किया। उसने विशेष रूप से किसी व्यक्ति के विरुद्ध सार्वजनिक रूप से, विशेषकर किसी न्यायपीठ के सामने, बोलने पर जोर दिया। पौलुस का अभिप्राय ऐसा प्रतीत होता है कि हम किसी प्राचीन के विरुद्ध किसी भी आरोप को तब तक स्वीकार न करें, जब तक आरोप लगाने वाला आवश्यक संख्या में गवाहों को साथ न लाए, जो उस आरोप की पुष्टि करने में समर्थ और इच्छुक हों।

ii. सार्वजनिक फटकार (5:20)

अपने सार्वजनिक पद के कारण, यदि कलीसिया के अगुवे पाप करते हैं, तो उन्हें सार्वजनिक रूप से समझाया जाना चाहिए। पौलुस ने कहा, “पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।” “समझा” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “दोषी ठहराना” या “डॉक्टर समझाना।” इसका अर्थ यह है कि दोषबोध अंततः उसे अंगीकार की ओर ले जाएगा। जब किसी कलीसिया के अगुवे को सार्वजनिक रूप से किसी बात के लिए दोषी ठहराया जाता है, उस पर आरोप सिद्ध होता है और उसे दंडित किया जाता है, तो इसका प्रभाव अन्य प्राचीनों पर निश्चित रूप से लाभदायक होता है। प्रेरणा देने वाली शक्ति के रूप में भय लगभग प्रेम जितना ही प्रभावशाली होता है।

कभी-कभी 5:20 के इस आदेश को मंडली के सामान्य सदस्यों पर लागू किया जाता है। पाप करने वाले व्यक्तियों को कलीसिया के सामने लाया जाता है और सार्वजनिक रूप से ताड़ना दी जाती है। परंतु यहाँ पौलुस का आशय ऐसा प्रतीत नहीं होता। संदर्भ प्राचीनों से संबंधित है, न कि साधारण सदस्यों से जो मंडली में कोई सार्वजनिक पद नहीं रखते।

(ग) प्राचीनों को ग्रहण करना (5:21-22)

i. एक नाटकीय माँग (5:21क)

स्पष्टतः पौलुस को तीमुथियुस के नैतिक साहस के विषय में कुछ संकोच था, इसलिए प्रेरित ने अपने युवा मित्र को सीधे, स्पष्ट और निर्भीक शब्दों में संबोधित किया: “परमेश्वर, और मसीह यीशु और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूँ...” इस आज्ञा की गंभीरता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

हम समझ सकते हैं कि पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के सामने क्यों शपथ दिलाई। परन्तु उसने उसे “चुने हुए स्वर्गदूतों” के सामने भी क्यों शपथ दिलाई? बाइबल में यही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ स्वर्गदूतों को “चुने हुए” कहा गया है। निस्संदेह, पौलुस गिरे हुए स्वर्गदूतों—जो शैतान के विशाल साम्राज्य के संचालन में सहायता करते हैं—और पवित्र स्वर्गदूतों—जिन्हें परमेश्वर अपनी सार्वभौमिक प्रभुता में सृष्टि के संचालन के लिए उपयोग करता है—के बीच अंतर स्पष्ट कर रहा था। परन्तु यह समझने के लिए कि प्रेरित ने 5:21 में स्वर्गदूतों का उल्लेख क्यों किया, हमें उनके कुछ कार्यों की समीक्षा करनी होगी।

स्वर्गदूत प्रायः परमेश्वर के संदेशवाहक के रूप में कार्य करते हैं (लूका 1:5-22, 26-38; मती 28:1-7)। वे पराक्रमी योद्धाओं के रूप में सेवा करते हैं और शैतान की योजनाओं में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप करते हैं (दानियेल 10:10-21; प्रका. 12:7-8)। वे प्राकृतिक तत्वों को नियंत्रित करते हैं (प्रका. 7:1-3)। वे पृथ्वी पर परमेश्वर के न्याय का संचालन करते हैं (प्रका. 8-9:16)। वे बच्चों पर दृष्टि रखते हैं (मती 18:10), परमेश्वर के लोगों की सेवा-टहल करते हैं (इब्रानियों 1:14), और व्यक्तिगत रूप से विश्वासियों की आवश्यकताओं की देखरेख करते हैं (प्रेरितों के काम 12:6-11; 27:21-25)। स्वर्गदूत परमेश्वर की उद्धार संबंधी योजनाओं में गहरी रुचि रखते हैं (1 पतरस 1:12) और कलीसिया की आराधना पर भी दृष्टि रखते हैं (1 कुरिन्थियों 11:10)। यदि हम सात कलीसियाओं को लिखी गई पत्रियों में स्वर्गदूतों के बार-बार उल्लेख को शाब्दिक रूप से लें (और हम प्रका. में अन्य स्थानों पर भी उन्हें शाब्दिक ही लेते हैं), तो प्रत्येक कलीसिया का अपना एक नियुक्त स्वर्गदूत है (प्रका. 2-3)। पृथ्वी पर कलीसिया शत्रु के क्षेत्र में है और शैतान की सेनाओं के निरंतर आक्रमण के अधीन है (इफिसियों 6:11-13), इसलिए हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पवित्र स्वर्गदूत किसी न किसी प्रकार से शैतान को रोकने और पवित्र लोगों की सहायता करने में लगे रहते हैं। आत्मिक जगत में यह गतिविधि इस बात को स्पष्ट करती है कि क्यों पौलुस ने परमेश्वर और उसके पुत्र के साथ-साथ “चुने हुए स्वर्गदूतों” को भी तीमुथियुस को दी गई अपनी चेतावनी का गवाह ठहराया।

ii. एक कठिनाई का खुलासा (5:21ख-ग)

तीमुथियुस के सामने आज्ञाकारिता और निष्पक्षता के प्रश्न को रखते हुए, पौलुस ने अपनी चेतावनी इस प्रकार बताया: “तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।” जिस शब्द का प्रयोग “माना कर” के लिए किया गया है, उसका अर्थ है “रक्षा करना, सावधानी से देखना, या सचेत रहना।” तीमुथियुस को सावधान रहना था। विशेष रूप से उसे इस बात से बचना था कि वह किसी को “पहले से महत्व दे” या “पक्षपात” दिखाए। जिस शब्द का प्रयोग “अधिक महत्व देना” के लिए किया गया है, वह यूनानी शब्द प्रोक्रिमा है। यह शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका अर्थ है “पहले से निर्णय कर लेना या पूर्व धारणा बनाना।” यहाँ जिस शब्द का प्रयोग “पक्षपात” के लिए किया

गया है, वह यूनानी शब्द प्रोस्क्लिसिस है। यह भी नये नियम में केवल यहीं मिलता है और इसका शाब्दिक अर्थ है किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर झुकाव रखना।

स्पष्ट है कि इफिसुस में तीमुथियुस कुछ प्रभावशाली, प्रभावी वक्ता या मिलनसार विश्वासियों के प्रभाव में आने के खतरे में पड़ सकता था। संभवतः पौलुस उन लोगों में से कुछ को जानता था जो उसके सहकर्मी को प्रभावित करने का प्रयास कर सकते थे। उसे यह भय था कि तीमुथियुस उनसे भयभीत हो सकता है और विधवाओं तथा प्राचीनों के विषय में परमेश्वर की प्रकट इच्छा के अनुसार चलने के बजाय उनके दबाव में आ सकता है। प्रेरित को इस बात की भी चिंता थी कि तीमुथियुस पर्याप्त प्रमाण को तौले बिना कुछ बातों पर पहले ही निर्णय कर सकता है, और कुछ लोगों के साथ दूसरों की अपेक्षा अलग व्यवहार करने के लिए प्रभावित हो सकता है। इसलिए परमेश्वर और स्वर्गदूतों को गवाह मानकर, पौलुस ने गंभीरता से तीमुथियुस को आज्ञा दी कि वह सबके साथ समान रूप से व्यवहार करे और न्याय के तराजू को न तो इस ओर झुकाए और न उस ओर।

iii. एक खतरे का संकेत (5:22)

क. जल्दबाजी में कदम उठाने की संभावना (5:22क)

पौलुस ने अपने युवा पास्टर मित्र को चेतावनी दी, “किसी पर शीघ्र हाथ न रखना।” इस पद की व्याख्या उस बात से निर्धारित होती है जो पौलुस ने इस विषय में तीमुथियुस से अन्य स्थानों पर कही है (1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6)। इन दोनों स्थानों पर, संदर्भ अभिषेक या नियुक्ति का है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि 1 तीमुथियुस 5:22 में पौलुस यह चेतावनी दे रहा था कि प्रभु के कार्य में किसी व्यक्ति को उन्नत करने या नियुक्त करने में उतावली न की जाए।

किसी मसीही को स्थानीय कलीसिया की सार्वजनिक सेवा में जोड़े जाने से पहले स्वयं को सिद्ध करना चाहिए। अनेक बार ऐसा हुआ है कि किसी व्यक्ति को केवल इसलिए बहुत सराहा गया क्योंकि उसकी गवाही बहुत प्रभावशाली थी या उसमें असाधारण वरदान या उत्साह दिखाई देता था। वह कुछ समय तक सार्वजनिक प्रशंसा की लहर पर सवार तो रहता है—और फिर अपमान में गिर पड़ता है। पौलुस निश्चय ही पुराने नियम के याजकों के उस लम्बे प्रशिक्षण काल से परिचित था, जो उनकी औपचारिक नियुक्ति से पहले आवश्यक था (गिनती 4:1-3; 8:24)। उनके परिक्षण काल की अवधि पच्चीस वर्ष की आयु में आरंभ होती थी, और उनका अभिषेक तीस वर्ष की आयु में किया जाता था। इसी प्रकार, प्रभु यीशु ने भी लगभग तीस वर्ष की आयु में अपनी सेवा आरंभ की (लूका 3:2)। पौलुस और बरनबास ने भी अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा आधिकारिक रूप से मिशनरी नियुक्त किए जाने से पहले स्वयं को अच्छी तरह से सिद्ध किया था (प्रेरितों के काम 11:19-26; 13:1-3)।

निश्चय ही 1 तीमुथियुस 5:22 का उपदेश ठोस और उचित है। पौलुस की आज्ञा तीन प्रकार की परिस्थितियों में जल्दबाजी करने के विरुद्ध चेतावनी देती है: (1) किसी प्राचीन, सेवक या प्रभु के किसी अन्य आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त दास को अभिषिक्त या नियुक्त करते समय; (2) किसी व्यक्ति को कलीसिया की परिषद् के सामने अभियोग के लिए प्रस्तुत करते समय; (3) किसी अनुशासित कलीसिया सदस्य को फिर से पूर्ण संगति में बहाल करते समय। स्वाभाविक आवेगों को नियंत्रण में रखना चाहिए।

स्वाभाविक प्रवृत्तियों को नियंत्रण में रखना चाहिए। जब हम उतावली करते हैं तो गलती करना बहुत आसान हो जाता है।

ख. भयंकर गलती करने की संभावना (5:22ख)

पौलुस आगे कहता है, “और दूसरों के पापों में भागी न होना; अपने आप को पवित्र बनाए रख।” जो लोग किसी को सेवा के लिए अभिषिक्त करने या पूर्णकालिक मसीही सेवा के लिए सिफारिश करने में अत्यधिक उतावले होते हैं, यदि उसके परिणाम विनाशकारी निकलते हैं तो वे भी दोष और जिम्मेदारी में उतने ही सहभागी होते हैं। इसी प्रकार, जो लोग मेल-मिलाप कराने में बहुत जल्दी करते हैं, वे भी उसके बाद आने वाले नकारात्मक परिणामों के लिए उत्तरदायी होते हैं। यदि किसी अपराधी को जल्दबाज़ी में पुनःस्थापित किया जाए, तो उसे यह एहसास हो सकता है कि उसका अपराध इतना गंभीर नहीं था। अन्य लोग भी यही संदेश ग्रहण कर सकते हैं और उसके उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं।

5:22 में जिस शब्द का अनुवाद “पवित्र” किया गया है वह हग्नोस है, जिसका अर्थ है किसी प्रकार की अशुद्धि से रहित होना। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने जब तीमुथियुस को अपने आप को “पवित्र बनाए रखने” की चेतावनी दी, तो उसका आशय यह था कि वह अयोग्य लोगों को सेवकाई में नियुक्त करने के प्रति सावधान रहे। आज पूरी कलीसिया को इसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ रहा है, क्योंकि पौलुस की यह सामान्य-ज्ञान पर आधारित आत्मिक सलाह नहीं मानी जाती।

(2) पास्टर के लिए एक वचन (5:23-25)

(क) तीमुथियुस की बीमारी (5:23)

पौलुस एक पल के लिए यहाँ एक सहायक विषय की ओर मुड़ा और स्वीकार किया कि तीमुथियुस का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रेरित को अचानक स्मरण हो आया कि उसका प्रिय युवा मित्र अक्सर बीमार रहता था और उसका शरीर भी विशेष रूप से मजबूत नहीं था। संभव है कि पौलुस कुछ देर से ही सही, इस बात को ध्यान में रख रहा था कि कमजोर स्वास्थ्य ने तीमुथियुस की उस प्रवृत्ति में योगदान दिया हो, जिसमें वह कम विरोध वाले मार्ग को चुन लेने की ओर झुक जाता था।

इसलिए, पौलुस ने तीमुथियुस को सलाह दी, “भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार-बार बीमार होने के कारण थोड़ा-थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर।” पौलुस के समय में, स्थानीय जल-स्रोतों को जीवाणुओं और परजीवियों से मुक्त रखने की कोई खास व्यवस्था नहीं थी, इसलिए संभव है कि पानी ही तीमुथियुस की “बीमारियों” का कारण रहा हो। (जिस शब्द का अनुवाद “बीमार” के रूप में किया गया है वह अस्थेनेइया है, जिसका प्रयोग यहाँ कमज़ोरी, बीमारी, या रोग के आक्रमणों के अर्थ में किया गया है।) आज भी अनेक देशों में जल-स्रोत प्रायः दूषित होते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका से लैटिन अमेरिका जाने वाले यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे सबसे प्रतिष्ठित होटलों में भी नल के पानी से परहेज़ करें। कुछ स्थानों पर स्थानीय पानी से धुले हुए ताजे फल और सब्जियाँ भी उल्टी-दस्त जैसी बीमारी का कारण बन सकती हैं।

पौलुस ने तीमुथियुस को पानी के स्थान पर “थोड़ा थोड़ा दाखरस” लेने की सलाह देकर व्यावहारिक समझदारी दिखाई। अपने जीवाणुनाशक गुणों के कारण दाखरस पीने के लिए अधिक सुरक्षित था। यहाँ “दाखरस” शब्द का अर्थ सचमुच दाखरस ही है, न कि अंगूर का रस; इससे बचा नहीं जा सकता। यही शब्द मत्ती 9:17, यूहन्ना 2:10 और इफिसियों 5:18 जैसे प्रसिद्ध पदों में भी प्रयुक्त हुआ है। हालाँकि 1 तीमुथियुस 5:23 में “थोड़ा” शब्द पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। पौलुस यहाँ मद्यपान या मतवालेपन को प्रोत्साहित नहीं कर रहा था; यह उसकी अन्य शिक्षाओं (गलातियों 5:19-21) के विपरीत हो जाता। वह यह सुझाव दे रहा था कि तीमुथियुस, जो स्पष्ट रूप से पूर्ण रूप से दाखरस से दूर रहता था, औषधीय उद्देश्य के लिए “थोड़ी थोड़ा दाखरस” का उपयोग करे।

(ख) तीमुथियुस की स्थिति (5:24-25)

i. पाप करने वाले लोग (5:24)

जब पौलुस ने अपनी पत्नी के इस भाग को समाप्त किया, तो उसने पाप की गंभीरता की याद दिलाकर पास्टर के रूप में तीमुथियुस के संकल्प को दृढ़ करने का प्रयास किया। प्रेरित ने लिखा, “कुछ मनुष्यों के पाप प्रकट हो जाते हैं और न्याय के लिये पहले से पहुँच जाते हैं, पर कुछ के पीछे से आते हैं।” संभव है कि पौलुस अभी भी उन व्यक्तियों के विषय में सोच रहा हो जिन्हें उतावली में नियुक्त किया गया था और जिन्होंने शीघ्र ही सार्वजनिक रूप से अपने जीवन को नष्ट कर लिया। या फिर वह सामान्य रूप से पापों के विषय में विचार कर रहा हो।

कुछ मनुष्यों के पाप इतने स्पष्ट और घोर होते हैं कि उन्हें उजागर करने के लिए किसी जाँच की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे पाप दोषी व्यक्ति से पहले ही न्याय के स्थान तक पहुँच जाते हैं। अन्य पाप छिपे हुए होते हैं और सावधानीपूर्वक जाँच के बिना प्रकट नहीं होते। कुछ लोग अपने पूरे जीवन भर अपने अपराध को छिपाए रखने में सफल हो जाते हैं, परन्तु उनके पाप—जो नेवले की तरह खरगोश के पीछे लगे रहते हैं—अंततः मसीह के न्यायासन पर उन्हें आ पकड़ते हैं। उदाहरण के लिए, शिमौन और लेवी का पाप बिल्कुल खुलेआम और भयानक था, जो न्याय की आवश्यकता की घोषणा करता था (उत्पत्ति 34:25-31; 49:5-7)। परन्तु रूबेन का पाप छिपा हुआ था, इसलिए उसने समझ लिया कि वह बच निकला है—जब तक कि याकूब ने अपने मृत्यु-शय्या पर उसे सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं कर दिया (उत्पत्ति 49:3-4)।

ii. सेवा करने वाले लोग (5:25)

“वैसे ही,” पौलुस ने आगे लिखा, “कुछ भले काम भी प्रकट होते हैं; और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।” हम सब ऐसे लोगों को जानते हैं जिनकी भक्ति, वरदान और महानता ने उन्हें इसी जीवन में सार्वजनिक सम्मान दिलाया है। मार्टिन लूथर के उठाए हुए झंडे के नीचे लोग बड़ी संख्या में एकत्र हुए। स्कॉटलैंड की रानी मैरी, जॉन नॉक्स और उसके प्रचार से इंग्लैंड की सारी सेनाओं से भी अधिक भयभीत रहती थी। डेविड लिविंगस्टोन को जीवन में और मृत्यु के बाद भी एक प्रशंसक राष्ट्र ने सम्मानित किया। जॉर्ज मूलर के अंतिम संस्कार के समय ब्रिस्टल शहर ठहर सा गया। विभिन्न वर्गों के लाखों लोगों ने बिली ग्राहम को एक सुसमाचार प्रचारक और राष्ट्र-नेता के रूप में सम्मान दिया। कलीसिया के इतिहास की

पुस्तकें ऐसे लोगों की कथाओं से भरी हुई हैं। स्वयं पौलुस को भी विश्वास था कि मसीह के न्यायासन पर उसके लिए प्रतिफल रखा हुआ है (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

उसी प्रकार, जिन्होंने विश्वास के महान नायकों का विरोध किया, उन पर आक्रमण किया और उनकी निन्दा की, वे भी एक दिन अपना उचित परिणाम पाएँगे, जैसा कि पुराने नियम में शिमें ने पाया। उसने दाऊद को शाप दिया—पहले गुप्त रूप से और फिर खुलेआम—और अंततः उसे उस दिन पर पछताना पड़ा (2 शमूएल 16:5-13; 19:16-23; 1 राजा 2:8-9, 36-46)। जिनका विरोध गुप्त और विश्वासघाती रहा है, वे भी एक दिन खुले रूप में प्रकट कर दिए जाएँगे।

घ. सेवकों के लिए दृढ़ता (6:1-2)

(1) विशिष्ट चरित्र वाले स्वामी (6:1)

कलीसिया के आरंभिक दिनों में, विश्वासियों का एक बड़ा समुदाय दासों का था, जिनमें से अधिकांश के स्वामी अविश्वासी थे। कुछ स्वामी काफ़ी दयालु थे, परन्तु कुछ अन्य काफ़ी क्रूर थे। कुछ न्यायपूर्ण थे, तो कुछ अत्याचारी। कुछ उदार थे, तो कुछ कठोर। किसी भी परिस्थिति में दासों के पास कोई अधिकार नहीं था। कभी-कभी उन्हें कुछ विशेष सुविधाएँ मिल जाती थीं, परन्तु उनकी कानूनी स्थिति स्पष्ट थी: वे केवल संपत्ति माने जाते थे—मूल्य चुकाकर प्राप्त किए गए, शरीर और आत्मा सहित, पूरी तरह खरीदे गए।

एक मसीही दास को अपने अविश्वासी स्वामी के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? (हमारी आज की संस्कृति में यह प्रश्न इस प्रकार होगा, “एक मसीही कर्मचारी को अपने अविश्वासी नियोक्ता के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?”) पौलुस ने कहा, “जितने दासता [डूलोस, अर्थात् “गुलामी”] के जूए के नीचे हैं, वे अपने अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो।” यहाँ कोई व्यक्ति दास है या स्वतंत्र, यह मुख्य बात नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि वह ऐसा कुछ न करे जिससे सुसमाचार की बदनामी हो जिसके कारण सबसे कठोर स्वामी के उद्धार में भी बाधा उत्पन्न न हो।

पौलुस जीवन के प्रत्येक स्तर पर स्थापित अधिकार में दृढ़ विश्वास रखता था। उसने नागरिकों को व्यवस्था का पालन करने, अधिकारियों का आदर करने और उनके लिए प्रार्थना करने की शिक्षा दी (रोमियों 13:1-7; 1 तीमुथियुस 2:1-4)। उसने पत्नियों से कहा कि वे अपने पतियों के अधीन रहें, पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम करने की आज्ञा दी, बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानने को कहा, और माता-पिता को चेतावनी दी कि वे अपने बच्चों को क्रोधित न करें (इफिसियों 5:21-6:4)। उसने विश्वासियों को भी कलीसिया के प्राचीनों का ध्यान रखने और उनकी अगुवाई को स्वीकार करने की शिक्षा दी (इब्रानियों 13:7; 1 तीमुथियुस 5:17)।

रोमी साम्राज्य की व्यवस्था दासप्रथा को मान्यता देती थी। यद्यपि पौलुस का हृदय दासों के प्रति करुणा से भरा था—और उसने फिलेमोन को लिखे अपनी पत्री में इस विषय के मूल पर प्रहार भी किया—लेकिन फिर भी उसने कभी कानून को बदलने का प्रयास नहीं किया। इसके बजाय, उसने दासों और उनके स्वामियों दोनों के हृदयों को बदलने का प्रयास किया।

1 तीमुथियुस 6 में पौलुस के निर्देश उसके इस विश्वास के अनुरूप थे कि सामाजिक बुराइयों का कारण आत्मिक होता है, और एक प्रेरित तथा प्रचारक के रूप में उसकी मुख्य बुलाहट उस आत्मिक पक्ष से निपटना था। पौलुस जानता था कि जो दास मसीह के स्वभाव को प्रकट करता है, उसके लिए अपनी परिस्थितियों में परिवर्तन देखना उस दास की अपेक्षा अधिक संभव है जो कटु मनोभाव रखता है। ऐसा सकारात्मक स्वभाव वाला दास अपने अविश्वासी स्वामी के उद्धार को देखने की अधिक संभावना रखता था। किसी भी स्थिति में, मसीह के स्वभाव को प्रकट करके वह दास अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर जीवन जी सकता था।

यहाँ पौलुस ने कई ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जो जीवन में दास की स्थिति के प्रति उसकी समझ को प्रकट करते हैं। वह स्वयं भी बंधनों में कैदी रह चुका था और बंधन की कष्टदायक पीड़ा को भली-भाँति जानता था। जिन दासों का उसने 6:1 में उल्लेख किया, वे “जुए के नीचे” थे। “दासता” शब्द के साथ इन शब्दों को जोड़कर पौलुस ने संकेत दिया कि उनका बंधन काफी कठोर और दुःखदायी था।

“जुए” शब्द सुनते ही हमारे मन में बैल या घोड़े की छवि आती है, जिसे जुतकर अपने स्वामी की इच्छा के अनुसार कठिन परिश्रम करना पड़ता है। मानवीय आत्मा स्वाभाविक रूप से ऐसी दासता के विरुद्ध विद्रोह करती है, इसलिए स्वामी अपने दासों को मानसिक रूप से तोड़ने के उपाय अपनाते थे, जैसे लोग घोड़े को वश में करने के तरीके अपनाते हैं। परन्तु एक मसीही दास को वश में करने के लिए ऐसे उपायों की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। निस्संदेह यह बंधन कष्टदायक था, परन्तु परमेश्वर का उद्देश्य केवल दासों को स्वतंत्र करना नहीं था; वह तो पापियों को स्वतंत्र करने का कार्य कर रहा था। दासों की मुक्ति तो स्वाभाविक रूप से उसके पीछे-पीछे आती।

यहाँ “स्वामी” के लिए प्रयुक्त शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही शब्द अंग्रेज़ी के “डेस्पॉट” (निरंकुश शासक) का मूल है और इसका अर्थ है पूर्ण स्वामित्व तथा अनियंत्रित अधिकार। इस शब्द के प्रयोग से यह संकेत मिलता है कि पौलुस विशेष रूप से उन मसीही दासों को ध्यान में रख रहा था जो अत्याचारी और निरंकुश स्वामियों के अधीन बंधन में थे।

जिन दासों के स्वामी कठोर थे, उन्हें क्या करना था? मानवीय दृष्टि से देखें तो पौलुस ने उनसे लगभग असंभव माँग की: अपनी दुःखी परिस्थितियों में भी वे अपने स्वामियों को “पूर्ण आदर के योग्य जानें।” “जानें” शब्द का अर्थ है मन में पहला स्थान देना या विचारपूर्वक निर्णय करना। इसका भाव यह है कि दास अपने स्वामी के प्रति केवल भावनाओं के आधार पर प्रतिक्रिया न करे—क्योंकि ऐसा करने से वह अनेक कठिनाइयों में पड़ सकता था—बल्कि विवेकपूर्ण विचार के आधार पर व्यवहार करे। तथ्य सरल थे: वह दास था और तब तक दास ही रहेगा जब तक उसका स्वामी उसे मुक्त न करे या किसी ऐसे व्यक्ति को न बेच दे जो उसे स्वतंत्र करे; और रोमी व्यवस्था का पूरा भार स्वामी के पक्ष में था। वह व्यवस्था—चाहे जितनी भी कठोर, अमानवीय और अन्यायपूर्ण क्यों न हो—बलवान थी। दास को उस वास्तविकता को स्वीकार करना था।

एक और तथ्य यह था कि यदि और किसी कारण से नहीं तो केवल अपने पद के कारण उसका स्वामी आदर का अधिकारी था। यहाँ “आदर” शब्द का मुख्य अर्थ मूल्यांकन से जुड़ा है और उस सम्मान को दर्शाता है जो किसी उच्च पद पर बैठे व्यक्ति को दिया जाता है। व्यक्तिगत रूप से कोई स्वामी घृणित हो

सकता था; परन्तु अपने पद के कारण वह सम्मान और आदर का अधिकारी था। और सम्भावना के रूप में वह एक ऐसी आत्मा है जिसके लिए मसीह ने अपना प्राण दिया था, इसलिए वह भी उद्धार का पात्र हो सकता था।

एक और तथ्य पर भी विचार किया जाना था। मानवीय दृष्टि से देखा जाए तो एक मसीही दास के लिए किसी अयोग्य स्वामी के प्रति आदर और सम्मान प्रकट करना वास्तव में असंभव प्रतीत हो सकता था। परन्तु मसीह में एक नया मनुष्य होने के कारण वह दास परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण था और उसके पास परमेश्वरत्व के वे सभी साधन उपलब्ध थे, जो उसे वह करने में समर्थ बना सकते थे जो मानवीय रूप से असंभव था। इस प्रकार हैरिएट बीचर स्टोव की प्रसिद्ध कहानी में बेचारे अंकल टॉम को निर्दयी और प्रतिशोधी साइमन लेग्री के सामने भी मसीह के समान जीवन जीने में समर्थ बनाया गया।

पौलुस ने दासता के पूरे प्रश्न को प्राकृतिक स्तर से उठाकर आत्मिक स्तर पर रख दिया और विचार तथा निष्पक्ष मूल्यांकन के लिए एक और तथ्य जोड़ दिया: एक मसीही को कभी भी ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो सुसमाचार के लिए हानिकारक हो। एक क्रूर स्वामी शायद कभी मसीही न बने, परन्तु उसे अपने अविश्वास के समर्थन में प्रयोग करने के लिए कोई हथियार कभी न दिया जाए—हथियार जैसे कि उसके मसीही दास का बुरा व्यवहार या गलत मनोभाव।

एक अंतिम तथ्य याद रखना चाहिए: परमेश्वर अब भी सिंहासन पर विराजमान है! उदाहरण के लिए, यूसुफ के जीवन को लें। जब उसे गुलामी में बेच दिया गया, तब भी उसने इतना भक्तिपूर्ण जीवन जिया कि उसके स्वामी पोतीपर ने उसे विश्वास, सम्मान और अधिकार के स्थान पर रखा (उत्पत्ति 39:3-6)। जब यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया गया और उसे कारागृह में डाल दिया गया, तब भी उसने ऐसा धर्मी जीवन जिया कि उसे कारागृह के सभी स्थानों में आने-जाने की स्वतंत्रता दी गई, ताकि वह कैदियों के बीच गवाही दे सके और उनकी सेवा कर सके (उत्पत्ति 39:21-40:23)।

(2) जिनके स्वामी मसीही हैं (6:2)

(क) एक खतरा (6:2क-ख)

कुछ दास इतने भाग्यशाली थे कि उनके स्वामी मसीही थे, ठीक वैसे ही जैसे आज कुछ विश्वासियों को मसीही स्वामियों के कार्यालय में काम करने का अवसर मिलता है। परन्तु पौलुस ने वहाँ भी एक खतरे को पहचाना और ऐसे दासों के लिए चेतावनी का वचन दिया: “जिनके स्वामी विश्वासी हैं उन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें।” यहाँ “तुच्छ न जानें” शब्द का अर्थ है किसी के बारे में नीचा सोचना या किसी को हल्के में लेना।

“भाई” होने के कारण, स्वामी और दास दोनों एक ही बाइबल-शिक्षकों के चरणों में बैठते थे। वास्तव में दास ही शिक्षक भी हो सकता था, क्योंकि आत्मा के वरदानों को देने में परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। दास और स्वामी एक ही प्रभु-भोज की मेज़ पर बैठते थे और मिलकर उसी प्रभु की आराधना करते थे। परमेश्वर की बातों में उनकी समान रुचि थी। खतरा यह था कि सोमवार को दास यह सोच सकता था कि उसे सामाजिक रूप से भी वही अधिकार प्राप्त हैं जो उसने रविवार को आत्मिक रूप से अनुभव किए

थे। एक शब्द में, वह इस बात का अनुचित लाभ उठा सकता था कि उसका स्वामी एक विश्वासी है। इसीलिए पौलुस ने ऐसे मनोभाव और दुस्साहस के विरुद्ध चेतावनी दी।

मैं एक बार एक मित्र के लिए काम करता था, जो एक बड़े व्यवसाय का स्वामी था और अपने समुदाय का धनी तथा प्रभावशाली सदस्य था। यह तथ्य कि मैं रविवार को उसके शानदार घर में अक्सर अतिथि होता था, मुझे यह अधिकार नहीं देता था कि सोमवार को उसके कार्यालय में घुसकर उसे बताऊँ कि वह अपना व्यवसाय कैसे चलाए या उससे कोई विशेष व्यवहार की माँग करूँ। इसके विपरीत, मुझे विशेष रूप से सावधान रहना पड़ता था कि अन्य कर्मचारियों को ठेस न पहुँचे। वे कंपनी के स्वामी और उसके प्रबंधक दोनों के साथ मेरे रविवार के संबंध के बारे में जानते थे और मेरी विशिष्ट स्थिति का किसी भी प्रकार का लाभ उठाने के प्रयास पर तुरंत नाराज़ हो जाते, और यदि मैं इस बात का लाभ उठाने की कोशिश करता तो वह बिल्कुल अनुचित होता। इसी प्रकार, एक दास को भी दैनिक कार्य के जीवन में अपने मसीही स्वामी का अनुचित लाभ उठाने का कोई अधिकार नहीं था।

(ख) एक कर्तव्य (6:2ग-घ)

i. एक ज़िम्मेदारी (6:2ग)

पौलुस ने उन दासों के कर्तव्य को भी पहचाना जिनके स्वामी मसीही थे। उसने कहा, “उनकी और भी सेवा करें।” विशेष अधिकारों और रियायतों की माँग करने के बजाय, एक मसीही दास को अपने स्वामी के सभी दासों में सबसे उत्तम होना चाहिए—परिश्रम, निष्ठा, उत्पादकता और व्यवहार में सबसे श्रेष्ठ। इसी प्रकार, एक मसीही कर्मचारी को अपने नियोक्ता की सेवा में उत्कृष्ट होने का प्रयास करना चाहिए।

यहाँ “उनकी और भी सेवा करें” के लिए अनूदित शब्द का अर्थ “दास बनकर सेवा करना” है। दूसरे शब्दों में, पौलुस कह रहा था कि दास को बंधुआ सेवक के समान सेवा करनी चाहिए। जैसा हम आज कहेंगे, उसे अपने स्वामी के लिए जी-जान से काम करना चाहिए। कोई भी काम इतना कठिन या उबाऊ नहीं समझा जाना चाहिए। दास को प्रसन्नता से एक कोस अतिरिक्त चलना चाहिए (मत्ती 5:38-48)। संसार ऐसी सेवा को मूर्खता समझता है। संसार स्पार्टाकस की प्रशंसा करता है, जिसने दास विद्रोह का नेतृत्व किया और अंत में क्रूस पर चढ़ाया गया। परन्तु मसीही व्यक्ति बातों को एक भिन्न संसार के दृष्टिकोण से देखता है।

ii. एक कारण (6:2घ)

पौलुस ने कहा कि दासों को भली भाँति सेवा करनी चाहिए, “क्योंकि इससे लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्रेमी हैं।” यहाँ “लाभ उठानेवाले” शब्द उन कृपालु कार्यों और उदार लाभों की ओर संकेत करता है जो मसीही स्वामी अपने दासों पर करते थे। ये लाभ भी एक और कारण थे कि दास अपने स्वामियों का किसी रीति से अनुचित लाभ न उठाएँ।

(ग) एक आग्रह (6:2ड)

पौलुस ने आग्रह किया, “इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह।” उसकी व्यावहारिक शिक्षा केवल ऊँची-ऊँची दार्शनिक बातें नहीं थीं, जिन पर तीमुथियुस और स्थानीय कलीसिया के प्राचीन केवल

सिर हिलाकर सहमत हो जाएँ और फिर भूल जाएँ। पौलुस की पत्नी ठोस, पवित्र आत्मा से प्रेरित उपदेश था, जिसे लगन के साथ सिखाया जाना और समझाने के द्वारा कलीसिया में दृढ़ता से लागू किया जाना था।

पौलुस ने जो लिखा, वह प्रारम्भिक कलीसिया में सभा का अधिकांश भाग बनाने वाले साधारण दासों के बीच लोकप्रिय नहीं होता। निस्सन्देह उनमें से कुछ आशा करते थे कि प्रेरित अपनी लेखनी, व्यक्तित्व और समझाने की शक्ति का उपयोग करके दासप्रथा के विरुद्ध कार्यवाही का आग्रह करेगा या कम से कम मसीही स्वामियों से अपने दासों को स्वतंत्र करने की माँग करेगा। परन्तु पौलुस ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। सामाजिक बुराइयों को इस प्रकार ठीक करना प्रतिकूल सिद्ध होता (और अक्सर होता भी ऐसा है)। प्रेरित लोगों को उनके स्वामियों के विरुद्ध भड़काने के कार्य में नहीं लगा था। बाद की एक शताब्दी में मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन ने ऐसा प्रयोग करने का प्रयास किया, जिसकी कीमत अनेकों जीवनों की हानि, दुःख, वैश्विक अशान्ति और राष्ट्रों की आर्थिक बर्बादी के रूप में चुकानी पड़ी।

पौलुस के पास इससे बेहतर योजना थी: स्वामियों और दासों दोनों को कलवरी के पास लाना, और मसीह को उन विचारों, भावनाओं और निर्णयों को बदलने देना जिन्होंने प्रारम्भ में दासप्रथा को सम्भव बनाया था। मसीह सब में और सब कुछ हो, तब सामाजिक बुराइयाँ घृणा के नहीं, बल्कि प्रेम के वातावरण में शीघ्र और स्थायी रूप से समाप्त हो जाएँगी। इसलिए तीमुथियुस को उन सत्यों को भी सिखाने और समझाने में संकोच नहीं करना चाहिए जो लोकप्रिय न हो।

2. भक्ति की प्राथमिकता (6:3-6)

क. भक्ति की व्याख्या (6:3-5)

(1) स्वर्ण मानक का प्रकटीकरण (6:3)

(क) जालसाज़ की पहचान कैसे करें (6:3क-ख)

3:16–4:16 में पौलुस का विषय भक्तिमय जीवन था, और अब वह फिर उसी पर लौट आता है। सब बातों का सार और सारांश यह है कि भक्ति ही वह है जिसके बारे में वास्तव में मसीही जीवन है। इस विषय को समझाते हुए प्रेरित ने विश्वासियों को स्वर्ण-मानक की याद दिलाई और उन जालसाज़ों को प्रकट किया जिनकी शिक्षाएँ उस पैमाने पर खरी नहीं उतरतीं। पौलुस ने संकेत दिया कि जालसाज़ अपने कथनों और अपने इनकार—दोनों से प्रकट हो जाता है। जब उसकी शिक्षा पौलुस की प्रेरित शिक्षा के विपरीत होती है, तब वह उजागर हो जाता है। किसी जाली चित्र, दस्तावेज़ या सिक्के को पहचानने का तरीका उसे असली वस्तु से तुलना करना है। पौलुस का उपदेश वास्तविक था, इसलिए कोई भी शिक्षा जो मसीह का एक अलग चित्र, अलग मत या अलग मूल्यों का समूह प्रस्तुत करे, वह जालसाज़ी है।

पौलुस ने कहा कि “यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता,” तो वह उजागर हो जाता है। यहाँ 6:3 में “यदि” के बाद विधिवाचक रूप प्रयुक्त हुआ है, जिससे यह अनुमान एक वास्तविक तथ्य माना जाता है। पौलुस अच्छी तरह जानता था कि कुछ लोग उसकी शिक्षा के विपरीत सिखा रहे थे, और यह इस बात से भी स्पष्ट

होता है कि उसने यहाँ ऐसा शब्द प्रयोग किया जिसका अर्थ है “और ही प्रकार का उपदेश देता है।” यह दर्शाता है कि उनकी घोषणाएँ उसके उपदेश से अलग थीं।

“खरी बातों” का अर्थ वही है जो 1:10 में “खरे उपदेश” का है। अनूदित “खरी” शब्द का अर्थ “स्वस्थ” होता है— और अंग्रेज़ी शब्द “हाइजीन” भी इसी शब्द से निकला है। धोखा देने वालों की शिक्षा में हमेशा कुछ-न-कुछ दूषित या अस्वस्थ बात अवश्य होती है।

पौलुस को इसमें कोई सन्देह नहीं था कि बहुत से तुच्छ लोग उसके खर्च पर तात्कालिक लाभ पाने के लिए उसकी शिक्षा का तिरस्कार करेंगे और उसका उपहास उड़ाएँगे। प्रेरित के ऊँचे नैतिक मानदंड और किसी विषय के दोनों पक्षों को देखने की उसकी क्षमता—तत्काल से आगे अंतिम तक, समयिक से आगे अनन्त तक, और इन्द्रिय तथा सामाजिक बातों से आगे आत्मिक बातों तक—कुछ लोगों को उसे असंवेदनशील, अव्यावहारिक या अस्वीकार्य प्रतीत कराती थी।

यरूशलेम की कलीसिया ने उस महान स्वतंत्रता को संदेह की दृष्टि से देखा, जिसका प्रचार पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के लिए किया था। सामान्य यहूदी मसीहियों में पौलुस जैसे एक व्यापक दर्शन का अभाव था। वे विधिवाद का पक्ष लेते थे। वे गलत थे और पौलुस सही था। यदि उनके विचार लागू हो जाते, तो मसीहियत केवल एक और यहूदी संप्रदाय बनकर रह जाती, जो अन्यजातियों के लिए बिल्कुल आकर्षक न होती। जब पौलुस ने यहूदी धर्म के सभी रूपों से पूर्ण मसीही स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, उसके कुछ ही समय बाद यरूशलेम रोम के साथ एक ऐसी लड़ाई में फँस गया जिसे जीता नहीं जा सकता था, और शीघ्र ही उसने मसीही कलीसिया पर अपना प्रभाव खो दिया—सिवाय इसके कि वह पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के आने-जाने का स्थान बनकर रह गया।

(ख) जालसाज़ी को कैसे परखें (6:3क-ख)

सब प्रकार की शिक्षा की कसौटी “हमारे प्रभु यीशु मसीह के वचन” हैं। हमें हर शिक्षा की तुलना उस उपदेश से करनी है “जो भक्ति के अनुसार है,” क्योंकि प्रभु की शिक्षा भक्ति को बढ़ावा देती है—अर्थात् परमेश्वर के प्रति सही मनोभाव उत्पन्न करती है। पौलुस की नैतिक, चारित्रिक और व्यावहारिक शिक्षा पहाड़ी उपदेश के स्वर्ण-मानक पर पूर्ण रूप से खरी उतरती थी। उसकी भविष्यद्वाणीय सम्बन्धी शिक्षा प्रभु के दृष्टान्तों और भविष्यद्वाणियों के साथ सही तालमेल में थी।

(2) दोष के दाग प्रकट किए गये (6:4-6)

(क) झूठे उपदेशकों की परीक्षा (6:4-5घ)

i. उनका व्यक्तिगत पर्दाफ़ाश (6:4क)

जब हम इफिसुस की कलीसिया के लिए पौलुस द्वारा लिखित अद्भुत पत्री को, जहाँ तीमुथियुस कलीसिया की चरवाही कर रहा था, फिर से पढ़ते हैं, तो यह लगभग अविश्वसनीय लगता है कि वहाँ के विश्वासी इतनी जल्दी झूठे उपदेशकों के प्रभाव में आ गए। इफिसुस के मसीहियों को पहले ही चेतावनी दी गई थी कि ऐसे “भेड़िए” आने वाले हैं (प्रेरितों के काम 20:17, 28-31), और वे आए भी—तेजी से और मानो काफी सफलता

के साथ। इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस को झूठे उपदेशकों के विरुद्ध अपने स्थिर दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने के लिए लिखा।

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि झूठे उपदेशक की एक पहचान यह है कि “वह अभिमानी हो गया” है (1 तीमुथियुस 6:4)। यहाँ “अभिमानी” के लिए प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ है “धुँएँ या कोहरे में लिपटना, धुंधला कर देना,” और यही कार्य वे भ्रष्ट पंथ के अगुवे करते हैं। वे पहले अपने ही मन को धुँएँ से भर लेते हैं और फिर सुनने वालों के मन में स्पष्ट बातों को धुंधला कर देते हैं। झूठे उपदेशक आत्म-अभिमान से भरे होते हैं, अपने आप को अत्यन्त चतुर और सत्य के एकमात्र अधिकारी समझते हैं।

पौलुस ने आगे झूठे उपदेशकों का वर्णन “कुछ नहीं जानता” के रूप में किया। “जानता” के लिए प्रयुक्त शब्द एपिस्टामार्ई जो समझने की क्षमता से सम्बन्धित है और उस वैचारिक प्रक्रिया की ओर संकेत करता है जो समझ तक पहुँचाती है। झूठे उपदेशकों के पास तथ्य नहीं होते, और इसलिए वे सत्य के ज्ञान तक पहुँचने में असमर्थ रहते हैं (1 कुरिन्थियों 2:12-16)। यहाँ “कुछ नहीं” का अर्थ है “बिल्कुल कुछ भी नहीं।” झूठे उपदेशक सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं, परन्तु वास्तव में वे कुछ भी नहीं जानते।

ii. उनका सार्वजनिक पर्दाफाश (6:4ख-5घ)

क. उनके प्रश्नों का प्रकट होना (6:4ख-ग)

झूठे शिक्षकों का पर्दाफाश जारी रखते हुए, पौलुस ने उन्हें इस प्रकार वर्णित किया कि उन्हें “विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “रोग” के रूप में किया गया है, वह मूल यूनानी शब्द “नोसेओ है, जिसका अर्थ “बीमार” या “रोगग्रस्त” होता है। प्रेरित के विचार में, जो लोग खरे उपदेश और परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सत्य के विपरीत बातें सिखाते थे, वे मानो मन से बीमार थे। एक अनुवादक ने ऐसे उपदेशक को “घमण्डी मूर्ख!” कहकर संबोधित किया है।

कलीसिया केवल झूठे शिक्षकों की बातें सुनकर ही उनका न्याय कर सकती है। जब वे बोलते हैं, तो उनके पास देने के लिए केवल “विवाद और शब्दों पर तर्क” होते हैं। जिस शब्द का अनुवाद “विवाद” किया गया है, उसका मुख्य अर्थ “खोज करना” या “ढूँढ़ना” है। यह शब्द प्राकृतिक मन की जिज्ञासा और उन बातों की जाँच-पड़ताल करने की उसकी बेचैन इच्छा से संबंधित है, जो अंत में जाकर कहीं नहीं पहुँचतीं। जिस शब्द का अनुवाद “शब्दों पर तर्क” किया गया है, वह “लोगोमाखिया” है, जो “लोगोस” अर्थात् “शब्द” और एक ऐसे अन्य शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ “लड़ना” है। पौलुस का अर्थ यह था कि झूठे उपदेशक न केवल अंतहीन और निष्फल सवाल उठाते हैं, बल्कि शब्दों पर भी लड़ना-झगड़ना करना पसंद करते हैं।

झूठे शिक्षक खतरनाक होते हैं। उनकी एक सामान्य चाल यह होती है कि वे सुसमाचार के अच्छे शब्दों को लेकर उन्हें अलग अर्थ दे देते हैं। वे वही बातें कहते हैं जो विश्वासी कहते हैं, परन्तु उनका अर्थ वह नहीं होता जो हम समझते हैं। उदाहरण के लिए, एक ‘न्यू एज’ उपदेशक इस बात से सहमत हो सकता है कि लोगों को “नया जन्म लेना चाहिए,” परन्तु वह “नया जन्म” वाक्यांश से वही अर्थ नहीं लेगा जो हम लेते हैं। हमारा अर्थ है कि मनुष्य आत्मिक रूप से मरे हुए जन्म लेते हैं और उन्हें मसीह को अपना व्यक्तिगत

उद्धारकर्ता ग्रहण करना तथा पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म पाना आवश्यक है। परन्तु ‘न्यू एज’ उपदेशक कहते हैं कि लोगों को अपने भाग्य के चक्र को पूरा करने के लिए असंख्य बार पुनर्जन्म लेना पड़ता है।

एक और उदाहरण यह होगा कि कोई मॉर्मन मेलकीसेदेक के याजकपद की बात करता है, परन्तु उससे उसका अर्थ प्रभु यीशु के राजकीय याजकपद से नहीं होता। इसी प्रकार, मसीही विज्ञान ने सुसमाचार के लगभग सभी शब्दों को नया अर्थ दे दिया है और उनका उपयोग एक भ्रमित स्त्री के रहस्यवाद और अध्यात्मवाद को प्रचारित करने के लिए करती है। ऐसे सब शब्दिक विवादों और तर्कों का स्रोत शैतान है।

ख. उनके झगड़ों का प्रकट होना (6:4घ-5घ)

1. उनकी “सेवा” (6:4घ-च)

तीन शब्द इन भ्रष्ट पंथवादियों की “सेवा” का सार बताते हैं: डाह, झगड़े, और निन्दा की बातें। “डाह” के लिए प्रयुक्त शब्द फथोनोस उस दुष्ट भाव को दर्शाता है जो किसी दूसरे व्यक्ति की पदोन्नति या समृद्धि को देखकर या उसके विषय में सुनकर किसी के मन में उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, एक झूठा उपदेशक किसी दूसरे प्रचारक की सफलता को संदेह और कुटिल दृष्टि से देखता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि पंथवादियों की “सेवा” लोभ और लालसा को बढ़ावा देती है।

“झगड़े” के लिए प्रयुक्त शब्द एरिस हैं जो उस विवाद को दर्शाता है जो शुद्ध बैर-भाव से उत्पन्न होता है। पंथवादियों की गतिविधियाँ झगड़े को बढ़ावा देती हैं। झूठी शिक्षा इस प्रकार के झगड़ों को जन्म देती है जो परमेश्वर के लोगों की शांतिपूर्ण सभा को युद्ध-भूमि में बदल सकती है।

यहाँ “निन्दा के शब्दों” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द से अंग्रेज़ी शब्द “ब्लासफेमी” निकला है। निन्दा परमेश्वर के प्रति तिरस्कार को उंडेलने को दर्शाती है; यह अपमानजनक और बुरी बातें कहना है। पंथों की गतिविधियाँ “निन्दा की बातें” उत्पन्न करती हैं। यह लोगों में तिरस्कार और अवमानना की भावना को बढ़ावा देती हैं।

झूठे शिक्षकों की गतिविधियाँ ऐसी ही संदिग्ध होती हैं। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से रहित होकर वे शैतान की शक्ति को प्रकट करते हैं, जो लोगों में परेशानी, असंतोष, वाघ-विवाद, झगड़े और अपमान को भड़काती है।

2. उनकी मानसिकता (6:4ग-5ग)

(i) उनके विचारों का फल (6:4ग-5क)

“बुरे-बुरे सन्देह” के फल का उल्लेख करते हुए पौलुस उन झूठे उपदेशकों की मानसिक नीचता की ओर संकेत कर रहा था। यहाँ “सन्देह” शब्द का अर्थ “अनुमान या कल्पना करना” है। “बुरे बुरे सन्देह” वाक्यांश लोगों के बारे में सबसे बुरा सोचने की धारणा को प्रकट करता है। इसका अनुवाद “दुर्भावनापूर्ण संकेत” भी किया गया है।

“व्यर्थ रगड़े-झगड़े” के फल का उल्लेख करते हुए पौलुस झूठे उपदेशकों के अनेक झगड़ों की ओर संकेत कर रहा था। यहाँ “व्यर्थ रगड़े-झगड़े” के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल इसी स्थान पर पाया जाता

है और निरंतर टकराव को दर्शाता है। यह यूनानी शब्द लगातार टकराव से होने वाली थकान भरी स्थिति का भाव प्रकट करता है। व्यर्थ रगड़े-झगड़े उस प्रयास का फल है जिसके द्वारा झूठा उपदेशक अपने पीछे चलने के लिए अनुयायी बनाने की कोशिश करता है। कोई भी ऐसी बात की कल्पना करना कठिन है जो पौलुस द्वारा बढ़ावा दी गई भक्ति से इससे अधिक भिन्न हो। और झूठे उपदेशकों की सोच “मसीह के मन” से कितना अलग है (1 कुरिन्थियों 2:16; फिलिप्पियों 2:5-11)!

(ii) उनकी सोच की जड़ (6:5ख-ग)

“जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है” - इस वाक्यांश में, पौलुस हमें उनके मन की गहराईयों में व्याप्त बुराई की एक झलक देता है। यहाँ “बिगड़” के लिए प्रयुक्त शब्द यह दर्शाता है कि झूठे उपदेशक पूरी तरह से, भीतर तक भ्रष्ट हो चुके हैं। उनका मन विकृत हो गया है।

“वे सत्य से विहीन हो गए हैं” - इस वाक्यांश में, पौलुस उनके मन की गहराईयों में व्याप्त दिवालियापन की एक झलक देता है। यहाँ “विहीन” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “ठगा जाना, लूट लिया जाना।” डब्ल्यू. ई. वाइन ने कहा कि 1 तीमुथियुस 6:5 में यह शब्द संकेत देता है कि झूठे शिक्षक, जो कभी सत्य को जानते थे, अपने मन की भ्रष्ट अवस्था के कारण दण्डस्वरूप सत्य से वंचित कर दिए गए हैं। दूसरे शब्दों में, वे धर्मत्यागी हैं।

जो मनुष्य किसी दूसरे व्यक्ति को उसके धन से, या यहाँ तक कि उसके जीवन से भी वंचित कर देता है, वह अनन्तता के प्रकाश में उतना अपराधी नहीं है जितना वह मनुष्य जो किसी को प्रकट किए गए सत्य से वंचित कर देता है और इस प्रकार उस व्यक्ति की अविनाशी आत्मा को संकट में डाल देता है। सम्पूर्ण बाइबल में, सबसे कठोर भाषा उन लोगों के लिए इस्तेमाल की गई है जो दूसरों को भटका देते हैं।

3. उनके उद्देश्य (6:5घ)

जैसा कि अपेक्षा की जाती है, झूठे उपदेशकों के उद्देश्य आर्थिक होते हैं। “जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है,” वे अपने अनुयायियों से धन प्राप्त करने के लिए ऐसा करते हैं। वे मसीही विश्वास से लाभ कमाने की आशा रखते हैं। उनके लिए झूठा उपदेश सिखाना केवल एक और व्यवसाय है, जिससे वे आशा करते हैं कि अच्छी कमाई होगी। पौलुस के लिए ऐसा एक उद्देश्य अंतिम सीमा थी। यह पहले ही बहुत बुरा था कि उसके समय के झूठे उपदेशक खतरनाक त्रुटियों का प्रचार कर रहे थे और उन बातों को सिखा रहे थे जिसे वे जानते थे कि झूठ है। सबसे बढ़कर बात यह थी कि वे यह सब धन कमाने के लिए कर रहे थे।

(ख) झूठे उपदेशकों का बहिष्कार (6:5ड)

“ऐसों से अलग रहो,” पौलुस ने लिखा। हमें झूठे उपदेशकों से कोई संबंध नहीं रखना है। हमें उन्हें परमेश्वर पर छोड़ देना है कि वह अपने समय और अपने तरीके से उनसे व्यवहार करें।

ख. भक्ति की प्रशंसा (6:6)

अब पौलुस झूठे उपदेशकों के लोभ और दोष से उत्पन्न एक विषय की ओर मुड़ता है: “संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।” लाभ भक्ति नहीं है; ये दोनों प्रायः एक-दूसरे से बहुत दूर होते हैं। सच्ची पूँजी भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि आत्मिक बातों में पाई जाती है।

पौलुस “संतोष सहित भक्ति” का एक आदर्श था। धन के विषय में प्रेरित अपने फिलिप्पी के मित्रों के साथ उतना ही स्पष्ट था जितना वह सबके साथ रहता था। उसने उनसे साच-साफ कहा कि उसने बहुतायत के समय भी देखे हैं और गरीबी के समय भी, और उसने दोनों ही परिस्थितियों में संतुष्ट रहना सीख लिया है (फिलि. 4:10-13)। पौलुस ने यह भी बताया कि उसने “सब वस्तुओं की हानि उठाई” (फिलि. 3:8)। संभव है कि सुसमाचार का प्रचार करने के कारण उसके परिवार ने उसे उत्तराधिकारी के पद से वंचित कर दिया हो।

पौलुस ने अपनी सेवकाई के दौरान बड़ी धनराशियों का प्रबंध किया था। अधिकतर वह केवल एक माध्यम था, जिसके द्वारा आवश्यकता में पड़े लोगों तक सहायता और भेंटें पहुँचाई जाती थीं (प्रेरितों के काम 11:29-30)। भक्त पौलुस अपने हाथों से परिश्रम करने के लिए उतना ही तत्पर था, जितना कि अपने लिए आर्थिक सहायता स्वीकार करने के लिए (प्रेरितों के काम 20:33-35)।

मैंने अनेक भक्त लोगों को देखा और जाना है। ये मसीह स्वरूप लोग भलाई को प्रकट करते हैं। धीरज को सीख लेने के कारण वे शांति, आनंद, पवित्रता, भलाई, प्रेम और स्थिरता के वातावरण में बने रहते हैं। वे 1 कुरिन्थियों 13 के अनुसार जीवन जीते हैं और उनमें परमेश्वर के प्रति ऐसा बालक-समान विश्वास होता है जो क्षणिक घटनाओं से विचलित नहीं होता। उनमें से अधिकतर, यदि वास्तव में गरीब नहीं भी हैं, तो भी साधारण आर्थिक परिस्थितियों में रहते हैं। वे नम्र, पवित्र और आनंदित होते हैं। वे इतने निष्कपट होते हैं कि मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि उनके हृदय में बुराई बसती हो। वे मिलनसार, सरल (यद्यपि आवश्यक नहीं कि अशिक्षित हों) और संसारिकता से दूर होते हैं।

इन व्यक्तियों के लिए प्रभु यीशु अत्यन्त वास्तविक प्रतीत होते हैं। वे उसे भली-भाँति जानते हैं और उससे अक्सर बात करते हैं—और अवसर मिलने पर उसके विषय में भी बताते हैं। वचन के लोग होने के कारण, वे प्रायः उसके गहरे सत्यों की अच्छी समझ रखते हैं। जब वे किसी से असहमत होते हैं, तो वे अपने विचारों को आकर्षक, विनम्र और बिना दिखावे के व्यक्त करते हैं। जब भी मैं ऐसे किसी भक्त व्यक्ति की संगति में रहा हूँ, तो वहाँ से इस भावना के साथ लौटा हूँ मानो मैं परमेश्वर की उपस्थिति में रहा हूँ।

“संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।” संसार इसे दे नहीं सकता और न ही इसे छिन सकता है। इसके अलावा, यह बिकाऊ भी नहीं है। 1 तीमुथियुस 6:6 में “संतोष” के लिए प्रयुक्त शब्द आतार्केइया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “जो कुछ किसी के पास है उसी में संतुष्टि।” ऐसी संतुष्टि जीवन की उलझनों को दूर कर देती है। संतोष सहित भक्ति मनुष्य को भौतिक, सांसारिक और क्षणिक क्षेत्र से उठाकर आत्मिक और अनन्त क्षेत्र में पहुँचा देता है। जिन्होंने संतुष्ट रहना सीख लिया है वे शानदार पर्वत-शिखरों के समान होते हैं; बादल और आँधियाँ उनके चरणों के चारों ओर घूम सकती हैं, पर उनकी दृष्टि उस क्षेत्र पर लगी रहती है जहाँ सूर्य सदा चमकता है और तूफान पहुँच नहीं पाता।

धन का खतरा (6:7-10)

क. एक मूल तथ्य (6:7)

धन और भक्ति प्रायः साथ-साथ नहीं रहते। और यदि कभी रहते भी हैं, तो केवल थोड़े समय के लिए, क्योंकि सोने की उपयोगिता केवल इसी जीवन तक सीमित रहती है। परन्तु भक्ति का मूल्य सदा के लिए

बना रहता है। यह बताने के लिए कि भौतिक वस्तुएँ केवल थोड़े समय के लिए ही उपयोगी हैं, पौलुस ने एक मूल और स्पष्ट तथ्य के विषय में बताया: “क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।”

हमारे पास अय्यूब का उदाहरण है। वह बहुत धनी था। उसके पास सात हज़ार भेड़ों के विशाल झुंड थे। उसके पास तीन हज़ार ऊँट भी थे, दूर-दूर तक व्यापार करने के लिए बड़े कारवाँ थे — यह आज के समय में मानो सड़क पर तीन हज़ार ट्रकों के होने के समान होता। इसके अतिरिक्त उसके पास पाँच सौ गदहियाँ और पाँच सौ जोड़ी बैल थे जिनसे वह अपने खेतों को जोतता और बोता था। और भी, उसके पास बहुत से सेवक थे और उसके पास दस बच्चों की आशीष भी थी, जिन्हें वह बहुत प्रेम करता था। यदि कभी किसी मनुष्य के पास सब कुछ था, तो वह मनुष्य अय्यूब ही था।

फिर अचानक विपत्ति आ पड़ी। उसकी सारी संपत्ति उससे छीन ली गई, उसके बच्चे बवंडर में मारे गए, उसकी पत्नी उसके विरुद्ध हो गई, और उसके मित्रों ने उस पर दुष्ट होने का आरोप लगाया। अय्यूब ने इस संसार की वस्तुओं की निरर्थकता को समझ लिया। उसने परमेश्वर के सामने दण्डवत होकर कहा, “मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा” (अय्यूब 1:21)। वह गर्भ से कुछ भी लेकर नहीं आया था और कब्र में भी कुछ लेकर नहीं जाएगा। पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:7 में इसी सत्य को व्यक्त किया। हम कह सकते हैं, “इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते।” इस संसार में जो भी धन और भौतिक संपत्ति हम प्राप्त करते हैं, वह सब कब्र पर ही छूट जाएगा।

एक धनी व्यक्ति के अंतिम संस्कार में एक शोककर्ता ने मृतक की अचल संपत्ति, व्यापारिक हितों और व्यक्तिगत धन-संपत्ति के बारे में सोचकर अपने मित्र से पूछा, “वह कितना छोड़ गया?”

“वह कितना छोड़ गया?” मित्र ने उत्तर दिया, “सब कुछ।”

लूका 12:15 में यीशु ने कहा, “किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।” फिर उसने एक ऐसे धनी मनुष्य के विषय में दृष्टान्त सुनाया जो किसी राजकुमार की तरह रहता था। वह अपनी बढ़ोतरी पर, अपनी भरपूर फसलों वाले खेतों पर और सामान से भरे अपने गोदामों पर अहंकार करता था। वह रात को बिस्तर पर बैठकर और भी बड़े व अच्छे गोदामों तथा भव्य भोजों की योजनाएँ बनाने लगा। तब परमेश्वर ने उससे कहा, “हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है वह किसका होगा?” (लूका 12:20)। यहाँ दृष्टान्त उसी प्रकार समाप्त हुआ जैसे आरम्भ हुआ था—“वस्तुओं” के साथ (लूका 12:15, 20)।

प्रभु ने आगे उच्च स्तर पर जीए जाने वाले जीवन का वर्णन किया, जो भौतिक वस्तुओं की दासता से मुक्त है, और यह सलाह दी: “परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी” (लूका 12:31)। उसने लोगों को सलाह दी कि वे वस्तुओं को छोड़कर निर्धनों और जरूरतमंदों में लगाएँ और इस प्रकार “ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं” (लूका 12:33)। हम इस संसार में कुछ लेकर नहीं आए और न कुछ लेकर जा सकते हैं, परन्तु हम कुछ आगे भेज सकते हैं और जब हम अंत में उस पार पहुँचेंगे तो हमारा स्वागत बड़े आनंद के साथ होगा (लूका 16:9-12)। यदि हम स्वर्ग में धन चाहते हैं, तो हमें अपना कुछ धन ऐसे किसी व्यक्ति को देना चाहिए जो वहाँ जा रहा है।

ख. एक मूल सूत्र (6:8)

पौलुस आगे कहता है, “यदि हमारे पास खाने और पहिने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए।” यहाँ “खाने” के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और यह भोजन की पर्याप्त आपूर्ति को दर्शाता है। पौलुस स्वयं कई बार भूखा और प्यासा रह चुका था, इसलिए वह किसी पर भी वास्तविक अभाव आने की इच्छा नहीं कर सकता था (2 कुरिन्थियों 11:27)। दूसरी ओर, वह मन्ना को इकट्ठा करके जमा करने में कोई समझदारी नहीं देखता था, क्योंकि पुराने नियम के विश्वासियों ने पाया था कि ऐसा करना असंभव है (निर्गमन 16:15-20)।

“पहने” के लिए अनूदित शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इसका अर्थ है “आवरण, छत, आश्रय।” पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग यह विचार प्रकट करने के लिए किया कि मनुष्य के पास रहने के लिए पर्याप्त स्थान और पहने के लिए पर्याप्त कपड़े होने चाहिए।

पौलुस हमें सलाह देता है कि यदि हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो रही हों तो हमें इसमें “संतोष” करना चाहिए। यहाँ “संतोष” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह पर्याप्त होने का भाव व्यक्त करता है। यही शब्द 2 कुरिन्थियों 12:9 में परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के वर्णन में “बहुत है” के रूप में अनूदित किया गया है। 1 तीमोथियुस 6:8 में पौलुस कहता है कि यदि हमारे पास अपने शरीर को खिलाने, ओढ़ने और रहने के लिए स्थान हो, तो वही काफी होना चाहिए।

संतोष का यह सिद्धांत पौलुस के समय में संसार में अधिक प्रचलित नहीं था, और आज भी प्रचलित नहीं है। परन्तु पौलुस इस संसार के लिए नहीं जी रहा था; वह आने वाले संसार के लिए जी रहा था।

अब्राहम बहुत धनी मनुष्य था, फिर भी वह तम्बू में रहने से संतुष्ट था। यह तथ्य महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी प्रकार उसने संसार के प्रति अपना मनोभाव प्रकट किया। उसके मूर्तिपूजक पड़ोसी उसकी समृद्धि और सामर्थ्य से प्रभावित होकर उसे “बलवान प्रधान” पुकारते थे, परन्तु वह अपने आप को केवल “परदेशी और यात्री” कहता था। अब्राहम की दृष्टि दूसरे संसार पर लगी हुई थी। उसकी वेदी आने वाले संसार के प्रति उसके मनोभाव को प्रकट करती थी (देखें उत्प. 12:7; 13:2-4)। वह एक तंबू में रहने वाला था। उसका तंबू उस संसार के प्रति उसके मनोभाव को प्रकट करता था जिसमें वह रहता था। वह एक यात्री था (उत्पत्ति 12:4, 6; इब्रानियों 11:9-10 को देखें)।

हालाँकि, अब्राहम का भतीजा और सहविश्वासी लूत इस आवश्यक यात्री-स्वभाव को बनाए रखने में असफल रहा। उसने इस संसार की धन-दौलत और प्रशंसा का पीछा किया और सब कुछ खो दिया। अंत में उसकी आत्मा तो बच गई, पर उसका जीवन नष्ट हो गया (उत्प. 14; 19; 2 पतरस 2:7-8 को देखें)।

पौलुस ने उस याचक की प्रार्थना में निहित बुद्धि को सीख लिया था, जिसकी प्रार्थना नीतिवचन 30:8-9 में लिखी है: “मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना; प्रतिदिन की रोटी मुझे खिलाया कर। ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इनकार करके कहूँ कि यहोवा कौन है? वा अपना भाग खो कर चोरी करूँ, और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूँ।” इस प्रकार प्रेरित ने उस फंदे से अपने आप को बचाए रखा जिसमें सुलैमान फँस गया था जो अत्यन्त धनवान तो हो गया, परन्तु अंत में धर्मत्यागी बन गया था (2 इतिहास 1:12; 1 राजा 11:1-9)।

ग. एक बुनियादी मूर्खता (6:9)

(1) प्रलोभन की व्याख्या (6:9क-ख)

(क) छिपी हुई लालसा (6:9क)

धन धोखा देने वाला होता है। पौलुस ने समझाया, “जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं।” यहाँ “चाहते हैं” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द बूलोमई है, जो सामान्यतः सोच-समझकर किए गए दृढ़ निश्चय को दर्शाता है। कुछ लोग धनी बनने के लिए दृढ़-निश्चय करते हैं। पौलुस ऐसे लोगों की बात कर रहा था जिनकी धनवान बनने की योजनाबद्ध इच्छा किसी पल भर की भावना से नहीं, बल्कि जान-बूझकर किए गए विचार से उत्पन्न होती है। उनका लक्ष्य आवश्यक नहीं कि करोड़ों का स्वामी बनना हो; वह केवल इतना भी हो सकता है कि उनके पास अपनी वास्तविक आवश्यकता से अधिक हो।

धन अपने आप में, जब जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया में प्राप्त होता है, न तो नैतिक है और न अनैतिक। यह भलाई का एक साधन बन सकता है। पौलुस ने जिस बात की निन्दा की, वह केवल धन को पाने के लिए धन के प्रति लालसा है। लोग धन का पीछा इसलिए करते हैं क्योंकि इससे उन्हें प्रभाव, सामर्थ्य और भौतिक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। पैसा आराम, सुख और वैभव तो खरीद सकता है, परन्तु वह सच्चा आनंद नहीं खरीद सकता।

पौलुस ने हर कीमत पर धनी बनने की उस दृढ़-संकल्प की निन्दा की। क्योंकि धनी बनने की लालसा एक भस्म करने वाला जुनून बन सकती है, इसलिए यह प्रलोभन के लिए द्वार खोल देती है। धन की खोज में बहुत से लोगों ने परमेश्वर, परिवार और मित्रों को एक समान ही दूर कर दिया है। नैतिक नियमों को अनदेखा कर दिया जाता है। लोग अपने विवेक को दबा देते हैं और लोगों का उपयोग तथा दुरुपयोग करते हैं। जैसे-जैसे वे अधिक से अधिक धन पाने का प्रयास करते हैं, वे अक्सर अनैतिक उपायों का सहारा लेते हैं और व्यापार के नाम पर बुरे काम करते हैं।

इस प्रकार जो लोग धनी बनने के लिए दृढ़ संकल्प लेते हैं, वे “फंदे” में पड़ जाते हैं। 6:9 में “फंदे” के लिए प्रयुक्त शब्द पागिस है, जिसका अर्थ है “जाल” या “जाल में फँसाने का उपकरण।” यहाँ पागिस उस प्रलोभन को दर्शाता है जिसके द्वारा शैतान धन की लालसा रखने वालों को फँसा लेता है। यह आश्चर्य की बात नहीं कि ऐसे लोग जल्द ही उस जाल में फँस जाते हैं, क्योंकि धन इकट्ठा करने की इच्छा मनुष्य का ध्यान इस संसार और अपने आप पर केंद्रित कर देती है।

दर्पण कभी-कभी चाँदी चढ़े काँच से बनाए जाते हैं। साफ काँच के आर-पार मनुष्य दूसरों को देख सकता है, लेकिन जब काँच के पीछे चाँदी लगा दी जाती है तो वह केवल अपने आप को ही देखता है। एक बार जब हम अपनी आँखें प्रभु से हटाकर धन पर लगा देते हैं, तो हम केवल स्वयं को देखते हैं और हर प्रकार के पाप में गिर पड़ते हैं। संसार के सुख, दर्शनशास्त्र, रीति-रिवाज और बुद्धि बहुत अधिक आकर्षक लगने लगते हैं। और इसमें आश्चर्य भी क्या है! यही वह संसार है जिस पर शैतान हाकिम और ईश्वर के रूप में शासन करता है। यह पापियों के लिए उसका अड्डा और पवित्रों के लिए उसका प्रलोभन है। धन का पीछा

करते-करते लोग इस संसार से और अधिक बँधते चले जाते हैं और परमेश्वर तथा आने वाले संसार के प्रति धीरे-धीरे असंवेदनशील बनते जाते हैं।

(ख) हानिकारक वासनाएँ (6:9ख)

जो लोग धनी होने के लिए दृढ़ संकल्प करते हैं, वे “बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं” में भी पड़ जाते हैं। यहाँ “व्यर्थ” शब्द ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो इसलिए विवेकहीन है क्योंकि वह जो कुछ हो रहा है उस पर अपना मन नहीं लगाता। प्रभु ने यही शब्द इम्माऊस के मार्ग पर जाते हुए उन अविश्वासी चेलों को फटकार लगाने के लिए प्रयोग किया: “हे निर्बुद्धियो...मन्दमतियो!” उसने कहा (लूका 24:25)। वे मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के विषय में ठीक प्रकार से विचार नहीं कर रहे थे। उसी प्रकार “जो धनी होना चाहते हैं” वे अनन्तकाल की बातों के विषय में ठीक प्रकार से सोचना बंद कर देते हैं।

“हानिकारक” के लिए, मूल रूप से प्रयुक्त शब्द ब्लाबेरोस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और चोट पहुँचाने, बिगाड़ने और नुकसान करने का विचार प्रकट करता है। इस आयत में मुख्य बल इस बात पर है कि धनी बनने के दृढ़ निश्चय से मनुष्य की आत्मा को कैसी हानि पहुँचती है।

यहाँ “लालसाओं” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द एपिथुमिया है, जो बुरी इच्छाओं को दर्शाता है। गलातियों 5:16 और 24 शरीर की अभिलाषाओं का उल्लेख करता है। धनी बनने की अत्यधिक लालसा विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं के लिए द्वार खोल देती है, और ये सब “मूर्खतापूर्ण और हानिकारक” होती हैं।

(2) फंदे का पर्दाफ़ाश (6:9ग)

और भी बुरा यह है कि ये अभिलाषाएँ “मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबाने” के लिए प्रेरित करती हैं। यहाँ “विनाश” के लिए प्रयुक्त शब्द ओलेथ्रोस है, जिसका अर्थ बर्बादी या उजाड़ है। पौलुस ने यही शब्द तब प्रयोग किया जब उसने कुरिन्थियों से कहा कि उस व्यभिचारी व्यक्ति को “शरीर के विनाश” के लिए शैतान को सौंप दिया जाए (1 कुरि. 5:5)। प्रेरित ने ओलेथ्रोस शब्द का प्रयोग उस “एकाएक आने वाले विनाश” के लिए भी किया जो कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद पृथ्वी पर आएगा (1 थिस्स. 5:3), और उस “अनन्त विनाश” के लिए भी जो अधर्मियों की प्रतीक्षा कर रहा है (2 थिस्स. 1:9)।

1 तीमुथियुस 6:9 में “विनाश” के लिए अनूदित शब्द अस्तित्व की हानि नहीं, बल्कि कुशल-क्षेम की होने वाली हानि को दर्शाता है। इस शब्द का प्रयोग मसीह-विरोधी के लिए किया गया है, जिसे 2 थिस्सलुनीकियों 2:3 में “विनाश का पुत्र” कहा गया है, और यहूदा के लिए भी, जिसका वर्णन यूहन्ना 17:12 में इसी प्रकार किया गया है। डब्ल्यू. ई. वाइन बताते हैं कि यहाँ पौलुस का आशय क्या है—

“शरीर की इच्छाओं को पूरा करने के परिणाम” (शारीरिक विनाश, और संभवतः पूरे अस्तित्व का भी) और साथ ही “उस विनाश का अंतिम, अनन्त और अपरिवर्तनीय स्वरूप।” [20]

यहूदा हमें एक ऐसा भयानक उदाहरण देता है कि जब धन की अनुचित लालसा को खुली छूट दे दी जाती है तो क्या हो सकता है। उसने आरम्भ में थैले में से चोरी करना शुरू किया। फिर उसने थोड़े से चाँदी के सिक्कों के लिए मसीह को उसके शत्रुओं के हाथ बेच दिया। अन्त में, उसने आत्महत्या कर ली।

घ. एक मूलभूत भ्रांति (6:10)

पौलुस ने लिखा, “क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुःखों से छलनी बना लिया है।”

धन के प्रति अति लालसा आकान के पतन का कारण बना। वह यहूदा के गोत्र का सदस्य और उस समय यहोशू की सेना का एक सैनिक था जब यरीहो इस्राएल के हाथ में सौंपा गया। वह नगर शापित ठहराया गया था, और केवल राहाब तथा वे लोग जो उसके घर की छत के नीचे शरण लिए हुए थे, आने वाले विनाश से बचाए गए। यरीहो की लूट के विषय में परमेश्वर की घोषणा बिल्कुल स्पष्ट थी: “और तुम अर्पण की हुई वस्तुओं से सावधानी से अपने आप को अलग रखो, ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर बाद में उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और इस प्रकार इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके उसे कष्ट में डाल दो। सब चाँदी, सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के हैं, वे यहोवा के लिये पवित्र हैं, और उसी के भण्डार में रखे जाएँ” (यहोशू 6:18-19)।

युद्ध योजना के अनुसार लड़ा गया और यरीहो ढा दिया गया। लूट इकट्ठी की गई और यहोवा के भवन के भण्डार में रखी गई। राहाब और उसके सम्बन्धी बचा लिए गए। यरीहो जला दिया गया और उस स्थान को शापित ठहराया गया। सब कुछ ठीक लग रहा था—जब तक कि आकान का पाप प्रकट नहीं हो गया।

जब कब्जा किए हुए नगर की लूट इकट्ठी की जा रही थी, तब आकान ने “शिनार देश का एक सुन्दर ओढ़ना, और दो सौ शेकेल चाँदी, और पचास शेकेल सोने की एक ईंट” देखी। धन के लोभ ने उसके हृदय को जकड़ लिया। उसने बाद में स्वीकार किया, “मैं ने उनका लालच करके उन्हें रख लिया” (यहो. 7:21)।

पहले तो आकान ने सोचा कि उसने बड़ी सफलता पा ली है। परन्तु बातें बिगड़ती चली गईं। अगला युद्ध छोटे से नगर ‘ऐ’ के विरुद्ध था। वहाँ इस्राएलियों को भयंकर और अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा। छत्तीस मनुष्यों ने अपने प्राण गँवाए, और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि इस्राएलियों की छावनी में पाप छिपा हुआ था। धन के प्रति अपने लगाव के कारण आकान “विश्वास से भटक गया”। दोषी को पकड़ने के लिए यहोशू ने चिट्ठियाँ डलवाईं।

कल्पना कीजिए कि जैसे-जैसे दोष का संकेत अधिकाधिक उसकी ओर होने लगा, आकान के मन में भय कितना बढ़ता गया होगा। पहले चिट्ठी यहूदा के गोत्र पर पड़ी, फिर जरहवंशियों के गोत्र पर, फिर जब्दी के घराने पर, और अन्त में कम्मर्ी का पुत्र आकान पकड़ा गया। सचमुच आकान ने अपने आप को बहुत से दुखों से छलनी कर दिया था। उसकी मजबूरी में और देर से किया गया अंगीकार उसके किसी काम न आया। वह छत्तीस सैनिकों की मृत्यु का जिम्मेदार था और साथ ही वह अपने तथा अपने पूरे परिवार पर सार्वजनिक कलंक लेकर आया था। उसके अनुचित तरीके से छिपाए गए लाभ को राष्ट्र के सामने उसके अपराध के प्रमाण के रूप में रखे गए और उसके विरुद्ध भयानक दण्ड सुनाया गया। शाप उस पर और उसके परिवार पर पड़ा, जो स्पष्ट रूप से उसकी साज़िश में शामिल थे। उन्हें मृत्यु दंड दिया गया, और उनके शवों के ऊपर पत्थरों का एक ढेर लगा दिया गया, ताकि यह सबके लिए चेतावनी बने कि परमेश्वर के स्थान पर धन को चुनने की कीमत बहुत भारी होती है।

आज हम धन के प्रति लालच की कीमत के ऐसे नाटकीय उदाहरण शायद न देखें, परन्तु जो लोग धन का पीछा करते हैं वे आज भी अपने आप को “नाना प्रकार के दुःखों से छलनी” कर लेते हैं।” बारबरा हट्टन (वूलवर्थ की उत्तराधिकारी, जिसे मीडिया अक्सर “बेचारी छोटी अमीर लड़की” कहता था) और हावर्ड ह्यूजेस (वह अरबपति जो साधारण भोजन पर जीता था, राह चलते किसी व्यक्ति के संपर्क में आने से बीमारी लग जाने के भय से हमेशा ग्रस्त रहता था और अंत में एकांतवासी होकर मरा) की कहानियाँ 1 तीमुथियुस 6:10 में पौलुस की बात को स्पष्ट करती हैं।

“रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है” — इसका प्रमाण खोजने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोग धन के लिए कुछ भी कर गुजरते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के निषेध-काल में अल कैपोन और अन्य गिरोह के सदस्यों ने धन इकट्ठा करने के लिए असंख्य अपराध किए। धन का प्रेम ही अवैध नशीले पदार्थ बनाने, उनकी तस्करी करने और बेचने वालों को प्रेरित करता है। माफिया और अन्य अपराध-संघों के पीछे भी यही प्रेरक शक्ति कार्य करती है। वेश्यावृत्ति, जुआ, सूदखोरी और धन-उगाही उनका सामान्य व्यवसाय है। बड़े-बड़े उद्योग भी अधिक लाभ के लिए मजदूरों पर अत्याचार करने और युद्ध तक छेड़ने के लिए जाने गए हैं। सचमुच, “धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है।”

4. भलाई की खोज (6:11-19)

क. तीमुथियुस को चुनौती (6:11-12)

(1) भाग जाने की (6:11क)

पौलुस ने तीमुथियुस को चुनौती दी, “पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग।” “परमेश्वर के जन” यह उपाधि, जो बाइबल में बहुत कम प्रयोग होती है, तीमुथियुस को विशिष्ट संगति में खड़ा करती है। पुराने नियम में यह उपाधि सामान्यतः नबियों के लिए आरक्षित थी। उदाहरण के लिए, मूसा को व्यवस्थाविवरण 33:1 में “परमेश्वर का जन” कहा गया है। शिमशोन की माता ने एक स्वर्गदूत को देखा और अपने पति से उसका वर्णन “परमेश्वर के जन” के रूप में संबोधित करके किया (न्यायियों 13:6)। एली नामक लापरवाह याजक को दोष देने के लिए जो भविष्यद्वक्ता आया था, उसे “परमेश्वर का जन” कहा गया (1 शमूएल 2:27)। उसी प्रकार जो भविष्यद्वक्ता बेतेल में यारोबाम और उसके बछड़े की उपासना पर परमेश्वर का न्याय सुनाने के लिए आया था, उसे भी “परमेश्वर का जन” कहा गया (1 राजा 13:1)। एलिय्याह को भी “परमेश्वर का जन” कहा गया (2 राजा 1:9), और अब तीमुथियुस को भी ऐसा ही कहा गया। वह बाइबल में उल्लिखित अंतिम “परमेश्वर का जन” है। यह उपाधि तीमुथियुस को सम्मान प्रदान करने, उसके अधिकार को बढ़ाने और उन लोगों के साथ उसका विरोध दिखाने के लिए दी गई थी जो धन के प्रेम में डूबे हुए थे। वे परमेश्वर के जन नहीं थे और न ही हो सकते थे।

और पौलुस इस “परमेश्वर के जन” से क्या चाहता था कि वह करें? “भाग!” यह तो शायद कोई आखिरी बात होती जिसकी हम किसी परमेश्वर के जन से अपेक्षा करते। हम तो शायद उसे लड़ने के लिए कहते। फिर भी, एक समय ऐसा आया जब एलिय्याह भी भाग गया था। जब उसने अकेले ही शत्रु की सारी शक्ति का सामना किया और कर्मेल पर्वत पर बाल की उपासना करने वालों पर महान विजय प्राप्त की (1 राजा 18-19), तब ईज़ेबेल ने उसे मार डालने की धमकी दी।

हालाँकि, पौलुस जिस बात की चर्चा कर रहा था वह यह नहीं था। इसके कुछ समय बाद ही परमेश्वर ने एलिय्याह के स्थान पर उसके उत्तराधिकारी को चुन लिया, क्योंकि एलिय्याह अपने कर्तव्य और खतरे के स्थान से भाग गया था।

पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस धनी बनने की इच्छा से ऐसे भागे मानो वह कोई महामारी हो। मध्ययुगीन भिक्षुओं ने निर्धनता की प्रतिज्ञाएँ लेकर, भिक्षुक संप्रदायों में शामिल होकर, ठंडे मठों की उदास, कारागृह-जैसी कोठरियों में स्वयं को बंद करके, और लम्बे समय तक कष्ट तथा उपवास सहकर भागने का प्रयास किया। परन्तु समय के साथ मठ इतने धनी और शक्तिशाली हो गए कि वे सिंहासन पर बैठे राजाओं की भी टक्कर देने लगे। पौलुस के मन में इस प्रकार का भागना नहीं था।

धन के प्रलोभन से बचने का सबसे अच्छा तरीका है यीशु की बाँहों में शरण लेना। वह यद्यपि धनी था, फिर भी हमारे कारण कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से हम भी धनी हो जाएँ (2 कुरिन्थियों 8:9)। पौलुस के मन में जो धन था वह भौतिक वस्तुएँ नहीं थीं, बल्कि वे असीम और कभी समाप्त न होने वाली आत्मिक धन-सम्पत्तियाँ थीं, जिनके विषय में वह पहले ही इफिसियों को लिख चुका था (इफिसियों 2:7; 4:7)।

(2) अनुसरण करने की (6:11ख-छ)

(क) दैवीय चरित्र का वर्णन किया गया (6:11ख-ग)

पौलुस ने तीमुथियुस (और हमसे भी) कहा कि “धर्म और भक्ति का पीछा कर।” दूसरे शब्दों में, हमें धन की लालसा से प्रकट होने वाली सांसारिकता से भागकर मसीह-सदृशता की ओर बढ़ना है। दैवीय चरित्र का वर्णन “धर्म” और “भक्ति” शब्दों से होता है। जब हम मसीह के समान बनते हैं, तब “धार्मिकता” मनुष्य के प्रति हमारी सत्यनिष्ठा को दर्शाती है और “भक्ति” परमेश्वर के प्रति हमारी सत्यनिष्ठा को प्रकट करता है।

प्रभु यीशु ने पूर्ण धार्मिकता को प्रकट किया। उसने सदा वही किया जो सही था। वह “भलाई करते हुए फिरता रहा” (प्रेरितों 10:38)। उसने एक निष्कलंक भक्ति का भी प्रदर्शन किया। वह कह सकता था, “मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है” (यूहन्ना 8:29)।

(ख) दैवीय चरित्र का सार (6:11घ-ड)

पौलुस ने तीमुथियुस से (और हमसे) यह भी कहा कि “विश्वास और प्रेम का पीछा कर।” “विश्वास” शब्द हमारा ध्यान परमेश्वर के वचन की ओर ले जाता है, क्योंकि “विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है” (रोमि. 10:17)। प्रभु यीशु सदा परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जीता था। उसने कहा, “देख, मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है। हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ” (इब्रा. 10:7; भज. 40:7)।

“प्रेम” शब्द हमारा ध्यान परमेश्वर के आत्मा की ओर ले जाता है (2 तीमु. 1:7)। प्रभु यीशु ने अपना जीवन परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ्य में जीया (मत्ती 3:16-17; यूहन्ना 3:34)।

(ग) दैवीय चरित्र का प्रदर्शन (6:11च-छ)

पौलुस ने तीमुथियुस (और हमसे भी) से कहा कि “धीरज और नम्रता का पीछा कर।” दैवीय चरित्र धीरज और नम्रता में प्रकट होता है। प्रका. 1:9 में यूहन्ना, जिसने प्रभु यीशु को बहुत निकट से जाना था, हमें “यीशु मसीह के धीरज” की याद दिलाता है। वह कितना धीरजवंत था! वह संसार की उत्पत्ति से पहले से ही परमेश्वर की उद्धार की योजना को पूर्ण करने के लिए पृथ्वी पर आने की प्रतीक्षा करता रहा। उसने सार्वजनिक सेवा में आने से पहले और तीस वर्ष प्रतीक्षा की। वह पहले ही दो हजार वर्षों से उस समय की प्रतीक्षा कर रहा है जब वह फिर से आएगा। और जब उसके चेले विश्वास करने में इतने धीमे थे, तब उसने उनके साथ कितना धीरज धरा (लूका 24:25)! वह हमारे साथ भी उतना ही धीरज रखता है।

मसीह ने अपनी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य को अपने नियंत्रण में रखकर नम्रता प्रकट की। उसने अपनी नम्रता के विषय में कहा और उसे हमें भी प्रदान किया: “मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ” (मत्ती 11:29)।

1 तीमुथियुस 6:11 में मसीह के चरित्र का वर्णन करने के लिए पौलुस ने जिन छह शब्दों का प्रयोग किया—“धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता”—ये गुण प्रत्येक मसीही के चरित्र का वर्णन करने चाहिए। यदि हम इन सभी छह गुणों का अनुसरण करें, तो हम पाएँगे कि हमने धन के प्रेम और उससे जुड़े सभी प्रकार के बुरे परिणामों से प्रभावी रूप से बच निकलने में सफलता पाई है।

(3) लड़ने की (6:12)

(क) आदेश का एक वचन (6:12क-ख)

i. हार मत मानो! (6:12क)

पौलुस ने तीमुथियुस को “विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ने” की चुनौती दी। यहाँ “लड़” क्रिया सार्वजनिक खेलों से जुड़ी हुई है। पद 6:12 में, इसका अर्थ है “प्रतियोगिता में पुरस्कार के लिए प्रयत्न करना।” पौलुस यूनानी खेलों के बारे में अच्छी तरह जानता था। वह एशिया माइनर के एक यूनानी नगर तरसुस से था। तीमुथियुस का पिता यूनानी था और स्वयं तीमुथियुस भी एक यूनानी नगर में पला-बढ़ा, इसलिए हम मान सकते हैं कि वह अखाड़े में उतरकर लड़ने की पौलुस की आज्ञा को पूरी तरह समझता था। वह जानता था कि यह संघर्ष डरपोकों के लिए नहीं है। केनेथ वूएस्ट के अनुसार, “यूनानी मुक्केबाज़ के दस्ताने भीतर से ऊनी गद्देदार होते थे, पर बाहर से बैल की खाल के बने होते थे जिनमें सीसा और लोहे के टुकड़े सिले रहते थे... और कुश्ती में हारने वाले की आँखें तक निकाल दी जाती थीं.... इस प्रकार ‘लड़’ शब्द का अर्थ तीमुथियुस के लिए बहुत स्पष्ट था।”[21]

6:12 में “कुश्ती” शब्द का संज्ञा रूप उस अखाड़े की ओर ध्यान आकर्षित करता है जहाँ यह संघर्ष होना था। तीमुथियुस को विश्वास के लिए, अर्थात् नये नियम में प्रकट सत्य के पूरे भंडार के लिए संघर्ष करने के लिए बुलाया गया था।

ii. जाने मत दो! (6:12ख)

“और उस अनन्त जीवन को धर ले,” पौलुस ने आगे कहा। यहाँ “धर ले” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ “मजबूती से थामे रहो” भी किया जा सकता है। पौलुस ने तीमुथियुस को उत्साहित किया कि वह अनन्त

जीवन के अधिकार, विशेषाधिकार और उत्तरदायित्वों के लाभों को अपने व्यवहारिक जीवन में अपनाए। उद्धार पाना एक बात है, पर उस उद्धार को अपने दैनिक जीवन में अमल में लाना बिल्कुल दूसरी बात है।

पौलुस जानता था कि इफिसुस में तीमुथियुस किन परिस्थितियों का सामना कर रहा है। वह गलातिया, यरूशलेम और कुरिन्थ में भी इसी प्रकार की बातों का सामना कर चुका था, पर वह एक योद्धा था। तीमुथियुस में पौलुस जैसी ठोस दृढ़ता नहीं थी, इसलिए पौलुस ने अपने अपेक्षाकृत शांत स्वभाव वाले साथी में संघर्ष की भावना भरने का प्रयास किया। यह किनारे पर खड़े रहने का समय नहीं था। मसीही जीवन दर्शकों के लिए नहीं, बल्कि प्रतियोगियों के लिए है।

(ख) सराहना का एक वचन (6:12ग-घ)

पौलुस ने तीमुथियुस की सराहना की: “जिसके लिये तू बुलाया गया और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।” जब तीमुथियुस ने मसीह को ग्रहण किया, तब उसने परमेश्वर की बुलाहट का जवाब दिया। उस बुलाहट में युद्ध का आह्वान भी सम्मिलित था, क्योंकि यह संसार शत्रु का क्षेत्र है और यहाँ कोई तटस्थता नहीं हो सकती। परमेश्वर शैतान से कोई समझौता नहीं करेगा और शैतान किसी विश्वास करने वाले के तटस्थ रहने के प्रयास का सम्मान नहीं करेगा। भले वह चाहे या न चाहे, तीमुथियुस पहले ही अखाड़े में उतर चुका था।

“अंगीकार” शब्द तीमुथियुस के विश्वास के अंगीकार की ओर संकेत करता है। कुछ बाइबल विद्वानों का मानना है कि पौलुस विशेष रूप से उस अंगीकार की ओर संकेत कर रहा था जो तीमुथियुस ने अपने बपतिस्मा के समय की थी। उन दिनों बपतिस्मा यहूदियों और अन्यजातियों—दोनों के लिए एक साहसी कदम था। नदी या झील में डुबकी सार्वजनिक रूप से लगाई जाती थी, जहाँ विश्वास करने वाले और अविश्वासी दोनों उनको देखते थे। कुछ दर्शक केवल जिज्ञासु होते थे, कुछ स्पष्ट रूप से विरोधी होते थे और कुछ खुलेआम उनका उपहास करते थे। अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना कोई छोटी बात नहीं थी। अक्सर ऐसे अंगीकार के कारण सताव भी सहना पड़ता था। कभी-कभी, हालांकि, इसके परिणामस्वरूप कई लोगों का मन-परिवर्तन भी होता था।

चाहे पौलुस तीमुथियुस के बपतिस्मा की ओर संकेत कर रहा था या मसीह और प्रेरित के प्रति उसकी निष्ठा की ओर, लेकिन उसके शब्द काफ़ी सराहनीय थे। तीमुथियुस का स्वभाव भले ही संकोची रहा हो, पर मसीह में वह इतना दृढ़ था कि उस पर विजय पा सका।

ख. तीमुथियुस के लिए आज्ञा (6:13-19)

(1) प्रोत्साहन (6:13क-ख)

(क) परमेश्वर की उपस्थिति (6:13क)

पौलुस ने तीमुथियुस को एक नया आदेश दिया। इफिसुस में एक कार्य किया जाना था। पौलुस स्वयं वहाँ उपस्थित होकर उस काम को करना चाहता था, पर यह संभव नहीं था। तीमुथियुस को यह कार्य स्वयं करना था। पौलुस उसके साथ नहीं हो सकता था, परन्तु उसका यह युवा सहकर्मी अकेला खड़ा नहीं होगा,

क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। उसकी उपस्थिति से परिस्थिति बदल जाती। “मैं तुझे परमेश्वर को गवाह करके आज्ञा देता हूँ”, पौलुस ने तीमुथियुस को आश्चस्त करते हुए कहा।

केवल एक स्वर्गदूत की उपस्थिति ने ही पुनरुत्थान की सुबह का पूरा दृश्य बदल दिया। “प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले के समान उज्ज्वल था। उसके भय से पहरे काँप उठे, और मृतक समान हो गए” (मत्ती 28:2-4)। यदि केवल एक स्वर्गदूत का ऐसा प्रभाव था, तो परमेश्वर की उपस्थिति क्या अंतर ला सकती है! उसके भय से स्वयं शैतान भी काँप उठता है!

(ख) परमेश्वर की सामर्थ्य (6:13ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को परमेश्वर की सामर्थ्य की भी याद दिलाई। वही है “जो सब को जीवित रखता है।” यहाँ “जीवित रखता है” का अर्थ है “जीवित को सुरक्षित रखना” या “जीवन प्रदान करना।” उस समय नीरो के सैनिक रोम में अनेक मसीहियों को मार डाल रहे थे और पौलुस अपने आप को “वध होनेवाली भेड़ों के समान” मानता था (रोमियों 8:36)। परन्तु परमेश्वर की स्पष्ट अनुमति के बिना कोई भी तीमुथियुस को हानि नहीं पहुँचा सकता था। यदि क्रूस के शत्रु उसे मार भी डालते, तो वे केवल उसके शरीर को ही मार डालते—लेकिन उसे मृत नहीं रख सकते थे। एक मसीही के लिए मृत्यु केवल महिमा के द्वार को खोल देती है। (फिलि. 1:23)। तीमुथियुस के पास पुनरुत्थान की दृढ़ और निश्चित आशा थी, इसलिए उसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

(2) उदाहरण (6:13ग-14)

(क) प्रभु का अंगीकार (6:13ग)

पौलुस ने तीमुथियुस को “मसीह यीशु को गवाह करके जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया...” आज्ञा दी। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस उस व्यक्ति के सामने मसीह के साहस को स्मरण करे जो उसे मृत्यु दण्ड देने की शक्ति रखने का दावा करता था। यीशु ने शान्ति से उससे कहा, “यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता” (यूहन्ना 19:11)। अंत में भय और लज्जा के साथ पिलातुस ही उस सामना से पीछे हट गया। तीमुथियुस को भी प्रभु की तरह सत्य की साहसपूर्वक गवाही देनी थी।

प्रभु तीमुथियुस के स्वाभाविक भय को भली-भाँति जानता था। जिसने मनुष्यों द्वारा किए जा सकने वाले सबसे भयानक पीड़ाओं का सामना किया था, वही तीमुथियुस के साथ खड़े रहने को तैयार था। तीमुथियुस स्वयं प्रभु की उपस्थिति में था।

(ख) प्रभु का आगमन (6:14)

पौलुस अब अतीत से भविष्य की ओर मुड़ता है। उसने तीमुथियुस को स्मरण दिलाया, “तू हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक और निर्दोष रख।” स्पष्ट रूप से, “आज्ञा” वही है जो पौलुस ने अभी 6:11-12 में दी थी: “भाग... पीछा कर... लड़।” तीमुथियुस को सावधान रहना था कि कभी भी कोई उस पर समझौता, लापरवाही या कायरता का आरोप न लगा सके।

यहाँ “निष्कलंक” के लिए प्रयुक्त शब्द हमें हर प्रकार की अशुद्धता से अपने आप को दूर रखने के लिए बुलाता है, और “निर्दोष” शब्द यह अपेक्षा करता है कि हम ऐसा जीवन जीएँ जिस पर कोई किसी प्रकार का दोष न लगा सके।

डगमगाने से बचने का एक शक्तिशाली प्रेरणा प्रभु के व्यक्तिगत पुनरागमन की आशा है। यह आशा कलवरी के केवल तीन दशकों बाद, तीमुथियुस के दिनों में, बहुत प्रबल रूप से जल रही थी। 6:14 में जिस शब्द का अनुवाद “प्रकट होना” किया गया है, वह मूल रूप से एपिफ़ानेइया है। यह उन तीन शब्दों में से एक है जो सामान्य रूप से पूरे नये नियम में प्रभु के लौटने का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

पहला शब्द पैरोसिया है, जो किसी राजा के आगमन का संकेत देता है। यह शब्द लगभग चौबीस बार प्रयुक्त हुआ है, और सबसे पहले प्रभु के भविष्यवाणी संबंधी उपदेश की भूमिका में मिलता है (मत्ती 24:3)। पैरोसिया शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से उस घटना के लिए किया जाता है जिसे हम कलीसिया के उठा लिए जाने के रूप में जानते हैं, यद्यपि हमेशा ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए, 2 थिस्सलुनीकियों 2:8 में यह प्रभु के उस आगमन को दर्शाता है जब वह पाप के पुरुष का नाश करने आएगा। पौलुस की थिस्सलुनीकियों को लिखी दोनों पत्रियों में यह शब्द सात बार आता है। यह प्रभु के आने के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; और 2 थिस्सलुनीकियों 2:1, 8 में प्रयुक्त हुआ है; जबकि 2 थिस्सलुनीकियों 2:9 में यह मसीह-विरोधी के आने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

दूसरा शब्द अपोकालुप्सिस है, जिसका अर्थ है “पर्दा हटना” या “प्रकाशित होना।” हम प्रका. की पुस्तक को अक्सर “अपोकैलिप्स” कहते हैं, क्योंकि वह यीशु मसीह के प्रकट होने का वर्णन करती है (प्रका. 1:1)। यह शब्द 1 कुरिन्थियों 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 1 पतरस 1:7 में भी पाया जाता है। अपोकालुप्सिस, जो प्रभु के दृश्य रूप में लौटने पर जोर देता है, कलीसिया के उठा लिए जाने और प्रभु के सामर्थ्य तथा महान महिमा के साथ पृथ्वी पर अन्तिम आगमन—दोनों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है।

तीसरा शब्द एपिफ़ानेइया है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, जिसे पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:14 में प्रयोग किया। इसका शाब्दिक अर्थ है “चमकदार रूप से प्रकट होना।” 2 थिस्सलुनीकियों 2:8 में इसका प्रयोग उस समय के वर्णन में हुआ है जब प्रभु अपने आगमन (पैरोसिया) की “चमक” (एपिफ़ानेइया) से मसीह-विरोधी का नाश करेगा। वहाँ पौलुस मसीह के पृथ्वी पर राज्य करने के लिए आने की बात कर रहा है।

निस्सन्देह, तीमुथियुस पौलुस की द्वितीय आगमन सम्बन्धी शिक्षा से अच्छी तरह परिचित था, विशेषकर जैसा कि थिस्सलुनीकियों के पत्रियों में प्रकट हुआ है। तीमुथियुस को लिखते समय, प्रेरित को यह फिर से समझाने की आवश्यकता नहीं थी कि कलीसिया के लिए मसीह का मध्य-आकाश में आना और उसके बाद कलीसिया के साथ पृथ्वी पर उसका लौटना—इनमें क्या अंतर है। तीमुथियुस मसीह के न्याय सिंहासन और वहाँ दी जाने वाली डाँट तथा पुरस्कारों के विषय में सब अच्छी तरह जानता था। वह जानता था कि प्रतिफल पाए हुए विश्वासी उस समय प्रभु के साथ राज्य करेंगे जब वह अपनी महिमा प्रकट करेगा और अपनी निष्कलंक दुल्हन के साथ पृथ्वी पर पुनः लौटेगा। इसलिए पौलुस “हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने” को अपने इस युवा मित्र के लिए एक सामर्थ्यशाली प्रेरणा के रूप में प्रयोग कर सकता था, ताकि वह प्रभु द्वारा सौंपे गए अपने कर्तव्यों को सम्मान के साथ पूरा कर सके।

(3) उद्घोष (6:15-16)

(क) प्रकट होने का पल (6:15क)

पौलुस का मन प्रभु के आगमन के विजयी विचार से ऊँचा उड़ने लगा—“जिसे वह ठीक समय पर दिखाएगा।” उसका दिन आने वाला है। आज मनुष्य सिंहासन पर बैठा हुआ है, और वह ऐसे व्यवहार करता है मानो न कोई मसीह है, न कोई परमेश्वर, न कोई प्रकट किया हुआ सत्य, और न कोई आने वाला न्याय। परन्तु प्रभु अपने समय में आएगा।

जब चले जैतून पहाड़ी की ओर जा रहे थे, जहाँ वे उसके स्वर्गारोहण के गवाह बनने वाले थे, तब उन्होंने प्रभु से उसके लौटने के समय के विषय में पूछा, “हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?” उसने उनसे कहा, “उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं” (प्रेरितों 1:6-7)। कलीसिया के उठा लिए जाने का समय गुप्त है (मत्ती 24:36), और उसकी तिथि की गणना करने का कोई भी प्रयास असफल ही होगा। पौलुस समय को परमेश्वर पर छोड़कर संतुष्ट था, पर उसे पूरा विश्वास था कि उठा लिया जाना अवश्य होगा। एपिफ़ानेइया का क्षण उतना ही निश्चित है जितना मसीह के जन्म का समय था।

(ख) प्रकाशन का आश्चर्य (6:15ख-16)

i. वह जो पूर्ण सामर्थ्यवान है (6:15ख-घ)

प्रभु के लौटने की आशा ने पौलुस के मनन को पंख दे दिया। उसने प्रभु को शासक के रूप में देखा (“परमधन्य और एकमात्र अधिपति”), राजकीय रूप में (“राजाओं का राजा”), और राज्य करने वाले के रूप में (“प्रभुओं का प्रभु”) भी देखा। पौलुस ने मसीह को पूर्ण अधिकार और सामर्थ्य के रूप में देखा।

रोम में नीरो नाम का एक नीच और दुष्ट मनुष्य सिंहासन पर बैठा हुआ था और एक महान विश्व साम्राज्य पर शासन कर रहा था। उसने अपनी शक्ति का उपयोग कलीसिया को अत्यन्त क्रूरता से सताने के लिए किया; फिर भी, पौलुस ने उसके विषय में कोई ध्यान नहीं दिया। वह जानता था कि कैसर से भी महान एक राजा रोम से भी बड़े एक राज्य पर शासन कर रहा है।

“अधिपति” के लिए प्रयुक्त शब्द से हमें “राजवंश” शब्द मिलता है। इसका अर्थ है “शक्तिशाली राजकुमार”। नये नियम में इस शब्द का प्रयोग प्रभु के लिए केवल इसी स्थान पर हुआ है। यह दो अन्य स्थानों पर भी आता है: लूका 1:52 में सांसारिक शासकों के लिए और प्रेरितों 8:27 में कुशी (इथियोपियाड) खोजे के लिए। यह शब्द डूनामिस से संबंधित है, जो असीम और अद्वितीय सामर्थ्य को दर्शाता है।

यीशु “परमधन्य” अधिपति है, जो पशु-स्वभाव वाले नीरो के ठीक विपरीत है। यहाँ “परमधन्य” के लिए प्रयुक्त शब्द मकारियोस है, जिसका अर्थ है “आनन्दित” या “सुखी”। 1 तीमुथियुस 1:11 में इसका प्रयोग परमेश्वर के लिए किया गया है। हमारे पास एक आनन्दित परमेश्वर, एक आनन्दित शासक है! वह अकेला खड़ा है—पूरी तरह आनन्दित और पूरी तरह सामर्थी होकर।

पौलुस ने मसीह को “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु” के रूप में देखा, और प्रका. 19 बताता है कि यूहन्ना ने भी ऐसा ही देखा। यूहन्ना ने उसे स्वर्ग से उतरते हुए देखा कि वह “न्याय करने और युद्ध करने” को

आता है। “उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं, और उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे;... वह लहू में डूबे हुए वस्त्र पहिने हुए था।” कलवरी का पलटा लिया जाने वाला था। स्वर्ग की सेनाएँ उसकी अगुवाई में उमड़ पड़ीं, और प्रभु की भयानक तलवार म्यान से बाहर निकाली गई। पृथ्वी की सेनाएँ मगिदो में बड़ी संख्या में इकट्ठी हुईं और मांस खाने वाले पक्षी उस भोज के लिए इकट्ठे हुए। उसके वस्त्र और उसकी जाँघ पर उसका नाम लिखा हुआ था: “राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।” संसार शीघ्र ही जानने वाला था कि वास्तविक नियंत्रण किसके हाथों में है।

हम उस शैतान से भरे हुए मसीह-विरोधी, उस दुष्ट झूठे भविष्यद्वक्ता, पृथ्वी के राजाओं और संसार की सेनाओं की कल्पना कर सकते हैं जो “उसके विरुद्ध... और उसकी सेना के विरुद्ध युद्ध करने को इकट्ठे हुए।” मानो कोई हिमकण अग्निकुंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करे! तलवार की एक चमक के साथ ही युद्ध समाप्त हो जाता है। यही है हरमगिदोन की “लड़ाई”! “और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गए, और रसकुण्ड में से इतना लहू निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँचा, और सौ कोस तक बह गया” (प्रका. 14:20)। पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता जीवित पकड़े गए और आग की झील में डाल दिए गए, और शैतान को पकड़कर अथाह कुण्ड में बन्द कर दिया गया। इस प्रकार, अंततः संसार पर सिद्ध हो जाता है कि मसीह ही “परमधन्य और एकमात्र अधिपति, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु” है।

वास्तव में, 1 तीमुथियुस 6:15 में पौलुस मानो कह रहा था, “हिम्मत रखो, तीमुथियुस। केवल एक बार फिर से यीशु की ओर देखो। सब उसके नियंत्रण में है। वह फिर आने वाला है।”

ii. वह जो अपने व्यक्तित्व में अमर है (6:16क)

प्रभु यीशु के अपने वर्णन को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने लिखा, “और अमरता केवल उसी की है।” यहाँ “अमरता” के लिए प्रयुक्त शब्द अथानसिया है, जिसका अर्थ है “मृत्यु का अभाव” या “अमरत्व।” 1 कुरिन्थियों 15:53-54 में यह शब्द विश्वासियों के महिमामय शरीर की अमरता का वर्णन करने के लिए भी प्रयोग किया गया है। नये नियम में इस शब्द का प्रयोग केवल अनन्त दिनों का ही संकेत नहीं देता, बल्कि जीवन की एक अद्भुत और पूर्णतः नई गुणवत्ता का भी संकेत देता है (2 कुरि. 5:4)।

यीशु ने अपने लिए भी और अपने लोगों के लिए भी मृत्यु पर विजय पाई। उसने कहा, “मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं” (प्रका. 1:18)। यह सत्य है कि यदि पहले उठा लिया जाना न हो, तो हम मसीहियों को मरना पड़ेगा; परन्तु उसका धन्यवाद हो कि ““जय ने मृत्यु को निगल लिया।” इसलिए हम गाते हैं, हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?” (1 कुरि. 15:54-55)। हमें एक ऐसा शरीर मिलने वाला है जो “उसके महिमामय की देह के अनुकूल” होगा (फिलि. 3:21)।

जब प्रभु मृतकों में से जी उठा, तब उसने तुरंत अपने पुनरुत्थान के शरीर के अद्भुत गुणों को प्रकट किया। वह दीवार के आर-पार होकर ऊपरी कौठरी में प्रकट हो सकता था (यूहन्ना 20:19; लूका 24:36-39); भोजन कर सकता था (लूका 24:41-43); उसे छुआ और देखा जा सकता था (यूहन्ना 20:24-28); अपनी इच्छा से प्रकट हो सकता था और अदृश्य हो सकता था (लूका 24:13-16, 30-31); और गुरुत्वाकर्षण के नियम को चुनौती देते हुए बादलों पर ऊपर उठा लिया गया (प्रेरितों के काम 1:9)। अपने इसी देह में, वह लगभग दो

हज़ार वर्षों से स्वर्ग में विराजमान हैं। वह बूढ़ा नहीं होता। वह आकाशगंगाओं पर शासन करता है, पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को देखता है, सूर्य से भी अधिक चमकता है, और “वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ” सदा जीवित है (1 पतरस 1:8)। उसका शरीर न थकने वाला, न मरने वाला और न ही बूढ़ा होने वाला है। हिम्मत रखो, तीमुथियुस!

iii. वह जो अपनी उपस्थिति में अद्भुत है (6:16ख-ग)

क. अगम्य — अद्भुत ज्योति में वास करने वाला (6:16ख)

पौलुस ने आगे प्रभु का वर्णन करते हुए कहा कि वह “वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है।” प्रेरित अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह लिख रहा था; जब उसने पहली बार महिमामय मसीह से भेंट की थी, तब वह चकाचौंध कर देने वाले प्रकाश में घिरा हुआ था। पौलुस दमिश्क की ओर वहाँ की कलीसिया को नष्ट करने जा रहा था। उस समय वह तरसुस का शाऊल कहलाता था और महासभा से अधिकार-पत्र लेकर चला था। बाद में उसने स्मरण करते हुए कहा, ““जब मैं चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि दो पहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी और मैं भूमि पर गिर पड़ा” (प्रेरितों के काम 22:6-7)। राजा अग्रिप्पा के सामने अपने अनुभव का वर्णन करते हुए उसने कहा, “हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैं ने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति, अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी” (प्रेरितों के काम 26:13)। वे सब के सब भूमि पर गिर पड़े।

ऐसी ही वह ज्योति है जिससे मसीह अपनी महिमा में अपने आप को घेरे रहता है। चमकते हुए साराप भी, यद्यपि वे निष्पाप ज्योति के पुत्र हैं, “उसकी महिमा के प्रकाश” को देखने का साहस नहीं कर सकते (इब्रानियों 1:3); इसलिए वे अपने पंखों से अपने मुख को ढाँप लेते हैं (यशायाह 6:1-3)।

ऐसे अद्भुत प्रभु के साथ होने के कारण, तीमुथियुस को बिल्कुल भयभीत होने की आवश्यकता नहीं थी। न ही हमें डरने की ज़रूरत है। जैसा कि भजन लिखने वाले ने हमें याद दिलाया,

हे परमेश्वर के पवित्रों, नया साहस धारण करो,

जिन बादलों से तुम इतना डरते हो

वे दया से भरे हैं, तुम्हारे सिर पर आशीष बनकर

वे उमड़ पड़ेंगे।[22]

प्रभु अगम्य है—परन्तु अपने लोगों के लिए नहीं। हमारे लिए, मृत्यु का अर्थ केवल इतना होगा कि हम “देह से अलग होकर प्रभु के साथ” रहेंगे (2 कुरिन्थियों 5:8)।

ख. अदृश्य — समस्त सीमित दृष्टि से परे (6:16ग)

पौलुस ने प्रभु का उल्लेख उस रूप में भी किया है “न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है।” यहाँ विचार यह प्रतीत होता है कि प्रभु अपने व्यक्तित्व को चकाचौंध कर देने वाले तेज ज्योति में

छिपाए रखते हैं। स्पष्टतः 6:16स का मुख्य संकेत पिता की ओर है। फिर भी हमें स्मरण रखना चाहिए कि प्रभु यीशु के पास अपनी इच्छा से स्वयं को अदृश्य कर लेने की सामर्थ्य थी (लूका 24:31)।

iv. स्तुति से अलंकृत (6:16घ-ड)

पौलुस तीमुथियुस को एक और उत्साह बढ़ाने वाली बात स्मरण कराता है। हमारे प्रभु के पास अनन्त आदर और अनन्त अधिकार है: “उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।” यहाँ “राज्य” के लिए प्रयुक्त शब्द उस सामर्थ्य को दर्शाता है जो प्रभावी रूप से और किसी शासन में प्रकट होती है।

कैसर के पास ऐसी शक्ति थी जो लगभग असीमित लगती थी, और वह उसे भयानक तरीकों से प्रयोग करता था। फिर भी रोमी सामर्थ्य से ऊपर शैतान की प्रधानताओं, प्रभुताओं, इस संसार के अन्धकार के हाकिमों और आकाशमंडल की दुष्ट आत्माओं की अधिक बड़ी शक्ति कार्य कर रही थी (इफिसियों 6:12)। उसकी शक्तियाँ, भयंकर द्वेष और मनुष्यजाति के प्रति अटल शत्रुता से प्रेरित होकर, आज भी राष्ट्रों और साम्राज्यों पर मँडराती हैं और मनुष्यों के लिए हर प्रकार की बुराई को बढ़ावा देती हैं। शैतान की सामर्थ्य भयानक तो है, परन्तु उससे भी अधिक बढ़कर मसीह की सामर्थ्य है।

वह वहाँ स्वर्ग में अपने पिता के सिंहासन पर विराजमान है। उसके हाथ में सार्वभौमिक शक्ति और प्रभुत्व का राजदण्ड है। वह अपने अनन्त उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। अनुग्रह के इस युग में, वह प्रायः अनदेखे रूप में और पर्दे के पीछे कार्य करता है। हम उसके अनन्त योजनाओं का दसवाँ भाग भी नहीं जानते, इसलिए हम अक्सर उसके कार्यों के कारणों और उद्देश्यों को समझ नहीं पाते। फिर भी हम यह जानते हैं कि कोई भी शक्ति, सामर्थ्य या अधिकार उससे बड़ा नहीं है। और हम यह भी जानते हैं कि वह शासन में अपने अधिकार और सामर्थ्य का प्रयोग कर रहा है। परमेश्वर की इच्छा जैसे स्वर्ग में, वैसी पृथ्वी पर भी पूरी होती है। “जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है” (दानि. 4:26)। हमारी समस्या हमारी अल्पदृष्टि में है।

“हिम्मत रखो, तीमुथियुस!” हम लगभग सुन सकते हैं कि पौलुस ऐसा कह रहा है। इन सब बातों के अंत में पौलुस एक गूँजता हुआ “आमीन!” जोड़ता है। निश्चय ही तीमुथियुस ने भी उस विजयी शब्द को दोहराया होगा। निश्चय ही हम भी ऐसा ही कर सकते हैं! वह इस ज्ञान से उत्साहित हो सकता था कि वह विजयी समूह में है।

(4) अपेक्षा (6:17-19)

(क) धनवान व्यक्ति और उसका लक्ष्य (6:17)

i. उसे क्या त्यागना चाहिए (6:17क-ख)

जब पौलुस हमें इस प्रकार ऊँची आत्मिक उड़ानों पर ले जाता है, तो वह हमेशा हमें एक झटके के साथ फिर पृथ्वी पर वापस ले आता है। यहाँ भी वह ऐसा ही करता है, और उस विषय पर लौटता है जिसने उसे स्वर्गीय बातों में एक और विषय का उल्लेख करने के लिए प्रेरित किया था। अब वह फिर से धनवान लोगों और उनके धन के विषय पर अपनी चर्चा पर लौट आता है: “इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें।”

धन के फन्दों में से एक यह है कि वह धनवान लोगों को झूठी सुरक्षा और शक्ति का एहसास दिलाता है। उनका धन बहुत सी वस्तुएँ खरीद सकता है, उन्हें अनेक विपत्तियों से बचा सकता है और जीवन की राह को आसान बना सकता है। गरीब लोगों में प्रायः परमेश्वर की ओर मुड़ने की प्रवृत्ति होती है; जबकि धनी लोग सोने-चाँदी पर भरोसा रखते हैं। परन्तु धन के लुप्त हो जाने में देर नहीं लगती। कुछ गलत निवेश, या किसी बड़े आर्थिक पतन, या किसी चोर या ठग से सामना हो जाना —और अचानक वह धनवान व्यक्ति धनी नहीं रहता।

इससे भी बुरा यह है कि धन जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। जिसके पास बहुत सारा धन होता है, वह अपने विचारों से परमेश्वर को बाहर कर देने के खतरे में रहता है। उदाहरण के लिए, लूका 18:18-25 का धनवान युवा अधिकारी मसीह के पास आया, पर जब यीशु ने स्पष्ट कहा कि उसका धन अनन्त जीवन पाने में उसके लिए बाधा है, तो वह उदास होकर लौट गया। लूका 12:16-21 का मूर्ख धनवान अपने धन की गणना कर रहा था जब उसके प्राणों पर मृत्यु का फैसला सुनाया गया। लूका 16:19-31 का वह धनवान मनुष्य अंत में नरक में जागा; उसने बहुत देर से जाना कि उसके धन ने उसे अनन्त वास्तविकता से अन्धा कर दिया था।

कभी-कभी कोई धनवान मनुष्य अपने धन से अप्रभावित रहता है क्योंकि उसने उस पर अपना भरोसा त्याग दिया होता है। अब्राहम, इसहाक और याकूब अपने धन से ऊपर उठकर जीए। अय्यूब ने अपना सब कुछ खो दिया, पर उसकी इस हानि ने परमेश्वर पर उसके विश्वास को और अधिक सुदृढ़ कर दिया।

ii. उसे क्या पहचानना चाहिए (6:17ग)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि धनवान लोगों को केवल परमेश्वर पर आशा रखनी चाहिए “जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है।” सब अच्छी वस्तुएँ परमेश्वर की ओर से आती हैं, परन्तु हमें अपना भरोसा केवल देने वाले पर रखना चाहिए, न कि दी हुई वस्तु पर—चाहे वह धन हो, अच्छा स्वास्थ्य, सुखी पारिवारिक जीवन, या कुछ और क्यों न हो।

याकूब हमें स्मरण दिलाता है कि “क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है” (याकूब 1:17)। परमेश्वर के स्वभाव में न कोई भिन्नता है और न अदल-बदल की कोई छाया। वह सदा वही करता है जो सही और उत्तम है—यद्यपि उसका दृष्टिकोण अक्सर हमारे दृष्टिकोण से काफ़ी भिन्न होता है (यशायाह 55:8-9)। परमेश्वर इतना प्रेममय है कि वह कभी निर्दयी नहीं हो सकता, इतना बुद्धिमान है कि कोई भूल नहीं कर सकता, और इतना सामर्थी है कि उसे कोई रोक नहीं सकता। उस पर पूर्ण रूप से भरोसा किया जा सकता है।

(ख) धनवान व्यक्ति और उसका लक्ष्य (6:18-19)

i. उसकी वर्तमान ज़िम्मेदारी (6:18)

तीमुथियुस को धनवान लोगों को यह निर्देश देना था कि “वे भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों।” परमेश्वर कुछ लोगों को धन इसलिए सौंपता है कि वे उसका उपयोग

मानवजाति की भलाई के लिए करें। धनी व्यक्ति के पास भलाई करने की महान संभावना होती है। यीशु ने उस धनी युवा अधिकारी से कहा, “अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाँट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा” (लूका 18:22)। हमारे पास जितना अधिक धन होता है, उतनी ही अधिक दूसरों की सहायता करने की हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

ii. उसका भविष्य का प्रतिफल (6:19)

धनवान लोग जो अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं, वे “आगे के लिये एक अच्छी नींव डाल रखें कि सच्चे जीवन को वश में कर लें।” धन्य है वह धनी व्यक्ति जो अपनी सम्पत्ति के द्वारा थोपे गए भौतिकवाद के बन्धन को तोड़ देता है और समय से परे अनन्तता को तथा सांसारिक धन से परे अनन्त प्रतिफलों को देखता है।

बहुत वर्ष पहले एक काफ़ी धनवान और अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति रहा करता था जिसका नाम यूसुफ था। उसकी भलाई और निष्पक्षता की ख्याति उचित ही थी। वह देश की शासन सभा का एक गणमान्य सदस्य था। जब नासरत के उस युवा उपदेशक का मामला सामने आया और बहुमत ने परिषद् के अध्यक्ष से सहमत होकर कहा कि वह उपदेशक एक खतरा है और उसे रास्ते से हटाया जाना चाहिए, तब यूसुफ ने असहमति में अपना मत दिया।

कई वर्ष पहले, यूसुफ ने अपनी मृत्यु के बारे में और उस कब्र के बारे में सोचना शुरू किया था जिसकी उसे आवश्यकता होगी। उसने यरूशलेम के आग-पास खोपड़ी के आकार की एक पहाड़ी के पास एक गुफा खरीद ली और कामगारों को उस गुफा को परिवार की कब्र के रूप में तैयार करने के लिए लगाया। वह पवित्र नगर में अपने अंतिम विश्राम-स्थान के विषय में स्नेहपूर्वक सोचता था, जहाँ वह पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करेगा।

संभव है कि यूसुफ समय-समय पर अपने एक सहकर्मी निकुदेमुस के साथ आत्मिक बातों पर चर्चा करता रहा हो, जो यीशु का एक गुप्त चेला बन गया था। स्वयं यूसुफ भी “परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था” (लूका 23:51)। निःसंदेह निकुदेमुस ने यीशु के साथ अपनी आधी रात की बातचीत के बारे में जो कुछ उसे बताया, उससे वह गहराई से प्रभावित हुआ होगा।

यीशु की गिरफ्तारी के बाद घटनाएँ तेजी से घटित हुईं। उस पर झूठे आरोप लगाए गए, दोषी ठहराया गया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। यूसुफ ने एहसास हुआ कि यीशु के लिए तुरन्त एक कब्र की आवश्यकता है। उसे अपनी ही कब्र का विचार आया। उसने उसे अपने लिए तैयार कराने में बहुत धन और समय लगाया था और वहाँ दफनाए जाने की आशा लंबे समय से दिल में संजोए हुए था। परन्तु उसने यह सब त्याग कर अपनी कब्र यीशु को दे दी। यूसुफ ने अपनी धन-संपत्ति, प्रतिष्ठा और प्रभाव के बल पर पीलातुस से मिलने और यीशु को दफनाने की अनुमति प्राप्त करने का निश्चय किया—इससे पहले कि कैफा और उसकी भीड़ उस देह को लेकर उसका अपमान करें। यूसुफ ने अपनी नई योजना को पूरा किया। वह अपनी कब्र उसे देगा और निकुदेमुस सुगन्धित पदार्थ लाएगा। साथ मिलकर वे महासभा के सामने एक सिद्ध तथ्य प्रस्तुत करेंगे।

इस प्रकार एक प्राचीन भविष्यवाणी पूरी हुई। प्रभु के शत्रुओं ने उसके लिए “दुष्टों के साथ कब्र” की योजना बनाई थी, परन्तु परमेश्वर ने ऐसा किया कि वह “अपनी मृत्यु में धनवान के साथ” ठहराया गया (यशायाह

53:9)। यूसुफ और निकुदेमुस ने अपने धन का उपयोग स्वर्ग में धन संचय करने के लिए किया। स्वर्ग में उनका प्रतिफल महान होगा। पृथ्वी पर भी उनका प्रतिफल महान रहा, क्योंकि जो उन्होंने किया वह परमेश्वर के वचन में लिख दिया गया। उनकी कहानी लगभग दो हज़ार वर्षों से संसार की लगभग हर भाषा में सुनाई और दोहराई जाती रही है।

1 तीमुथियुस 6:19 में “सच्चे जीवन” के रूप में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ संभवतः “वही जीवन जो वास्तव में जीवन है” भी किया जा सकता है। जब यूसुफ ने अपने उस प्रिय कब्र को यीशु को दे दिया, तो वह घाटे में नहीं रहा। आज भी असंख्य देशों में उसकी यह बात आदर के साथ याद की जाती है। ऐसा ही निकुदेमुस के साथ भी है। मसीह के पुनरुत्थान के बाद वह कब्र खाली रही और प्रभु की यादगार के कारण वह पवित्र स्थान बन गया। निस्संदेह, हर बार जब यूसुफ उस खाली कब्र के पास से गुजरा होगा, तब उसका हृदय आनन्द से भर उठा होगा। जब उसने पहली बार उस कब्र की योजना बनाई थी, तब वह अपनी ही मृत्यु के विचारों में लगा हुआ था; पर अब वह खाली कब्र उसे जीवन का संदेश देती थी। हम यकीन के साथ कह सकते हैं कि इसके बाद यूसुफ ने अपने शरीर की हड्डियाँ कहाँ विश्राम करेंगी, इस बात की बहुत कम चिन्ता की होगी। वह यीशु के साथ होगा और “सच्चे जीवन” का आनन्द उठा रहा होगा। इसी प्रकार हमें भी जो कुछ हमारे पास है—चाहे थोड़ा हो या ज़्यादा—उसे “सच्चे जीवन” के लिए निवेश करना चाहिए और “आगे आने वाले समय के लिए” अपने मन में सर्वोपरि रखना चाहिए।

भाग 4.

निष्कर्ष

1 तीमुथियुस 6:20-21

क. एक विनती भरा वचन (6:20-21क)

1. एक कर्तव्य का उल्लेख (6:20क)

“हे तीमुथियुस,” पौलुस ने लिखा, “इस धरोहर की रखवाली कर।” उस छोटे से शब्द “हे” में कितनी आत्मीयता और स्नेह भरा है! एक स्वर्गदूत ने दानिय्येल से बात करते समय यही शब्द कहा: “हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष” (दानिय्येल 10:11)। दाऊद ने भी अपने प्रिय पुत्र अबशालोम के लिए विलाप करते हुए यही शब्द प्रयोग किया: “हे मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!!” (2 शमूएल 18:33)।

पौलुस का विशाल हृदय अपने युवा सहकर्मी के लिए कितना तड़पता था! वह तीमुथियुस के गुणों और दुर्बलताओं दोनों को भली-भांति जानता था। दोनों पुरुष लंबे समय तक साथ रहे थे। वे पहाड़ियों और मैदानों में कंधे से कंधा मिलाकर चलते रहे थे। उन्होंने कई बार जहाज़ की रेलिंग पर साथ-साथ झुककर समुद्र के पीछे सूर्य को अस्त होते देखा था। उन्होंने मिलकर मसीह के महिमामय सुसमाचार को नगर-नगर तक पहुँचाया—पहले यहूदियों को और फिर अन्यजातियों को भी।

पौलुस तीमुथियुस की बार-बार होने वाली बीमारियों और उसके संकोची स्वभाव को जानता था; फिर भी उसने उसे एक से अधिक कठिन कार्यों पर भेजा, और हर बार तीमुथियुस जाने को तैयार रहता था। पौलुस

उसे अपने पुत्र के समान प्रेम करता था। इसलिए उसके पूरे हृदय की भावना उस “हे तीमुथियुस!” में समा गई थी।

क्या तीमुथियुस डगमगा रहा था? क्या वह सिद्धांत संबंधी सत्य के किसी पहलू को छोड़ देने के खतरे में था? क्या वह किसी पंथ के सूक्ष्म और निरंतर प्रयासों के सामने पीछे हट रहा था? क्या वह पौलुस की शिक्षा से असहमत लोगों की तिरस्कारपूर्ण बातों के कारण पीछे हट रहा था? क्या तीमुथियुस इफिसुस की कलीसिया के किसी धनी सदस्य द्वारा प्रभावित या खरीदा जाने के खतरे में था? पौलुस का स्वर हमें यह सोचने पर मजबूर करता है।

“इस धरोहर की रखवाली कर,” पौलुस आगे कहता है। यहाँ “रखवाली कर” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “पहरेदारी करना, निगरानी रखना, सतर्क रहना।” यूनानी लोग इस शब्द का उपयोग सैनिक प्रसंगों में करते थे। पहरे पर खड़े सैनिक का केवल एक ही ज़िम्मेदारी होती है—जागते रहना और उस वस्तु की रखवाली करना जो उसकी निगरानी में सौंपी गई है। अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए, वह जाँचता है कि दरवाज़ा बन्द हैं कि नहीं, जिस क्षेत्र की ज़िम्मेदारी उसे दी गई है उसकी निरन्तर गश्त करता है, और यह सुनिश्चित करता है कि सब ठीक है। वह किसी भी शत्रु की गतिविधि पर नज़र रखता है और पास आने वाले हर व्यक्ति को चुनौती देता है। वह अपने ध्यान को भटकने नहीं देता, यहाँ तक कि उन बातों की ओर भी नहीं, जिनमें सामान्यतः उसकी उचित रुचि हो सकती है।

पहरे पर खड़े सैनिक की यह तस्वीर हमें उस कहानी की याद दिलाती है जो नबी के पुत्रों में से एक ने (भेष बदलकर) राजा अहाब से कही: “जब तेरा दास युद्ध क्षेत्र में गया था तब कोई मनुष्य मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे पास ले आया, और मुझ से कहा, “इस मनुष्य की चौकसी कर; यदि यह किसी रीति छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे अपना प्राण देना होगा; नहीं तो किककार भर चाँदी देनी पड़ेगी। उसके बाद तेरा दास इधर उधर काम में फँस गया, फिर वह न मिला” (1 राजा 20:39-40)।

अहाब ने तुरंत उस अंगीकार का जवाब दिया: “तेरा ऐसा ही न्याय होगा।”

कहानी सुनाने वाले ने अपना भेष उतार दिया और राजा से कहा: “यहोवा तुझ से यों कहता है, ‘इसलिये कि तू ने अपने हाथ से ऐसे एक मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैं ने सत्यानाश हो जाने को ठहराया था, तुझे उसके प्राण के बदले अपना प्राण... देना पड़ेगा” (1 राजा 20:42)।

क्या तीमुथियुस “इधर उधर काम में फँस गया” था जिसके कारण उस बहुमूल्य सत्य को, जिसकी उसे रक्षा करनी थी, खो देने के खतरे में था? ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि पौलुस ने उसे स्नेहपूर्ण संबोधन “हे” कहकर पुकारने के बाद चेतावनी भरे शब्द “रखवाली कर” से सावधान किया।

2. एक वैकल्पिक मार्ग की सलाह (6:20ख-21क)

क. खतरा प्रकट किया गया (6:20ख-ग)

(1) स्पष्ट रूप से मूर्खतापूर्ण विचार (6:20ख)

तीमुथियुस को सावधान रहना था कि कहीं वह “अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों” में न फँस जाए। यहाँ दो चरम सीमाओं में से एक का वर्णन है।

“अशुद्ध” के रूप में प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ है “पैरों तले रौंदा जाना” (जैसे किसी चौखट पर चला जाता है) या “अधर्मी होना।” एसाव को “अधर्मी” कहा गया है (इब्रानियों 12:16) क्योंकि उसे परमेश्वर की बातों में कोई रुचि नहीं थी। उसने एक कटोरे दाल के बदले अपना आत्मिक ज्येष्ठाधिकार बेच दिया था। बाद में उसने स्वादिष्ट मांस के बदले अपने पितृ-आशीर्वाद को प्राप्त करने का प्रयास किया। और भी अधिक— दो अन्यजाति स्त्रियों से विवाह करके अपने पिता को अप्रसन्न करने के बाद, एसाव ने इश्माएल की एक बेटी से विवाह करके सुधार करने की कोशिश की। ये उदाहरण पर्याप्त हैं। एसाव अधर्मी था।

“अशुद्ध बकवाद” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त किए गये शब्द का अर्थ है खाली चर्चाएँ—बिना मतलब की बहुत बातें।

यदि इन सबको एक साथ देखें तो “अशुद्ध बकवाद” हमें ऐसे लोगों की याद दिलाता है जिनका परमेश्वर से संपर्क न होने के कारण वे बेमतलब विषयों पर निरंतर चर्चाओं में लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए, रब्बी लोग अनन्तकाल तक इस बात पर बहस करते रहे कि सब्त का उल्लंघन किसे कहा जाए, और अंततः वे निरर्थक तथा बोझिल निष्कर्षों पर पहुँचे। आज के समय में ‘न्यू एज’ दार्शनिक भी इसी प्रकार तुच्छ और निरर्थक बातों से अपने को घेर लेते हैं—जैसा कि उनके किसी पुस्तकालय में जाकर देखा जा सकता है। इसी तरह पूर्वी पंथों के अगुवे हमें पुनर्जन्म की कल्पनाओं का अन्वेषण करने और अपने मन में उन जीवनों की कल्पना करने के लिए आमंत्रित करते हैं जिन्हें हम कथित रूप से शून्यता (निर्वाण) की अंतिम अवस्था तक पहुँचने की यात्रा में पहले जी चुके हैं। पौलुस ने ऐसे सब लोगों की चर्चाओं को “अशुद्ध बकवाद” कहकर संक्षेप में व्यक्त किया है।

(2) लोकप्रिय "वैज्ञानिक" विरोध (6:20ग)

दूसरी चरम सीमा है “उस तथाकथित ज्ञान के विरोध, जिसे झूठे रूप से ‘विज्ञान’ कहा जाता है।” ऐसी “विरोध की बातें,” उन “बकवादों” की तरह, समय की एक बड़ी बरबादी हैं। “विरोध” के लिए प्रयुक्त शब्द एण्टिथेसिस है, जिसका अर्थ है “विपरीत विचार या मत”। “बातें” के लिए प्रयुक्त शब्द का साधारण अर्थ “ज्ञान” है। यूनानी भाषा में निश्चित पद के प्रयोग से संकेत मिलता है कि किसी विशेष प्रकार के “ज्ञान” का उपयोग उस सच्चे उपदेश का विरोध करने के लिए किया जा रहा था जिसकी रखवाली के लिए तीमुथियुस को नियुक्त किया गया था। “विरोधी बातों” के लिए प्रयुक्त शब्द प्स्यूडोनुमोस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। 6:20स में, पौलुस मुख्य रूप से उस झूठे ज्ञान के प्रति तीमुथियुस को सावधान कर रहा था जिसे ज्ञानवादी (ग्नोस्टिक) लोग बढ़ावा देते थे। ये झूठे शिक्षक दूसरी शताब्दी में कलीसिया के सबसे खतरनाक शत्रु बन गए थे।

हम “जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, ऐसी विरोधी बातों” को आधुनिक विकासवाद के सिद्धान्त से भी जोड़ सकते हैं, जो सम्भवतः कलीसिया के सामने आने वाले सबसे खतरनाक शत्रुओं में से एक रहा है। यकीनन, सुसमाचार का विरोध डार्विन से भी बहुत पहले से हो रहा था; पर उसके विकासवाद के सिद्धान्त ने टी. एच. हक्सले जैसे लोगों को वह साधन दे दिया जिसकी उन्हें कमी थी। हक्सले ने इस सिद्धान्त को नास्तिकता के कार्यकारी परिकल्पना के रूप में अपना लिया—अर्थात् परमेश्वर के बिना ब्रह्मांड को समझाने का एक तरीका उसे मिल गया।

सौ वर्ष से भी अधिक अनुसंधान के बाद भी, विकासवाद का सिद्धान्त वही है—एक सिद्धान्त, और वह भी अनेक कमियों से भरा हुआ है। इसने असंख्य वैज्ञानिकों को जीवन भर एक मृगतृष्णा के पीछे लगे रहने को विवश किया है और लाखों लोगों के विश्वास को डगमगा दिया है। व्यावहारिक राजनीति की भाषा में कहें तो, विकासवाद इस विचार का समर्थन करता है कि जिसकी शक्ति है वही सही है।

“जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, ऐसी विरोधी बातें” घातक हो सकती हैं। प्रलोभन यह होता है कि हम उनसे लड़ने-झगड़ने में भटक जाएँ। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि उनसे “परे रह।” “परे रहना” शब्द का अर्थ सरल रूप से है “मुड़ जाना” या “दूर हो जाना।” जो लोग तुच्छ बातों या झूठे उपदेशों पर हमसे वाघ-विवाद करना चाहते हैं, उनके साथ बहस में उलझ जाना लाभदायक नहीं होता। ऐसी उलझन हमें हमारे मुख्य कार्य से भटका देती है। जैसा कि डी. एल. मूडी कहा करते थे, “मुख्य बात यह है कि मुख्य बात को ही मुख्य रखा जाए।”

ख. खतरा वास्तविक है (6:21क)

झूठे उपदेशों का उल्लेख करते हुए पौलुस ने आगे कहा, “कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से भटक गए हैं।” कुछ लोग जिन्हें वह जानता था, इन पंथवादियों के भ्रामक एवं चालाक तर्कों के कारण अपने विश्वास से भटक गए थे।

पंथवादियों से उलझने से बचने की पौलुस की तीमुथियुस को दी गई सलाह कोई असामान्य बात नहीं थी। रोमियों को भी प्रेरित पौलुस ने यही सलाह दी: “जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं” (रोमियों 16:17-18)। उनसे निपटने के अपने व्यापक अनुभव के कारण पौलुस जानता था कि वे बहुत चालाक और फिसलन भरे लोग थे। वे आज भी वैसे ही हैं!

शैतान मन पर आक्रमण करता है। 2 कुरिन्थियों 4:3-4 में पौलुस ने कहा, “परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों ही के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।”

सब झूठी शिक्षाओं के पीछे शैतान ही है, और वह अत्यन्त धूर्त है। वह मनुष्यों के मन को मोड़ता, विकृत करता और उलझा देता है, जब तक कि वे सबसे निरर्थक बातों को भी सत्य मानने न लगे। शैतान अपने झूठ और धोखे को इतनी सच्चाई में लपेट देता है कि वे सही और तर्कसंगत प्रतीत होते हैं; इसलिए कभी-कभी सत्य को असत्य से अलग करना कठिन हो जाता है। इसी कारण कहीं बार बुद्धिमान लोग भी शैतानी कुतर्कों को अपना लेते हैं। दुष्टात्माएँ इन असत्य बातों को फैलाती हैं और उन्हें ऐसी शक्ति देती हैं कि जो लोग उनके वश में आ जाते हैं उनके मन को बिल्कुल अंधा कर देते हैं। जब तक हम पवित्र आत्मा द्वारा विशेष रूप से सुसज्जित न हों कि शैतान की युक्तियों का सामना कर सकें, तब तक उनसे दूर रहना ही बुद्धिमानी है।

परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा नहीं करता कि हम पंथों के लोगों के साथ वाघ-विवाद में जीतें। वह चाहता है कि हम ऐसा जीवन जिएं जो उन्हें दोषी ठहराए, और उनसे ऐसा प्रेम करें कि वे परिवर्तन की इच्छा करें। पवित्र आत्मा मनुष्य के विवेक (यूहन्ना 16:7-11) और हृदय (2 कुरिन्थियों 4:6) पर कार्य करता है।

ख. विदाई का वचन (6:21ख)

“तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।” यही पौलुस का समापन वचन है। यूहन्ना 1:17 बताता है कि “अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।” तीमुथियुस के पास सत्य की बहुतायत थी। वह पुराने नियम से भली-भाँति परिचित था—उसकी माता और नानी ने इस बात को सुनिश्चित किया था। वह नये नियम से भी अच्छी तरह परिचित था (तब तक उसका अधिकांश भाग लिखा जा चुका था)—इसे पौलुस ने निश्चित किया था। प्रेरित ने तीमुथियुस को धर्मी ठहराए जाने, छुटकारे, मेल-मिलाप, पवित्रीकरण, चुने जाने और महिमा के सिद्धान्तों की शिक्षा दी थी। उसे धर्मविज्ञान, मसीह-शास्त्र, पवित्र आत्मा के अध्ययन, स्वर्गदूतों के अध्ययन, कलीसिया-शास्त्र, उद्धार-शास्त्र, बाइबल-शास्त्र और अन्तकाल-विज्ञान में अच्छी शिक्षा दी गई थी।

तीमुथियुस के पास सत्य की बहुतायत थी। उसे जिस बात की आवश्यकता थी, वह था अनुग्रह—ऐसा अनुग्रह जो उसे इफिसुस में पौलुस के प्रतिनिधि, परमेश्वर के राजदूत और सभा के मुख्य चरवाहे के रूप में दृढ़ता से खड़े रहने में समर्थ बनाए। उसे भीतर से उठने वाले उपदेश संबंधी खतरों और बाहर से आने वाले भयंकर सतावों के सामने दृढ़ खड़े रहना था। तीमुथियुस को प्रभु यीशु मसीह के उस सर्वव्यापी, सब कुछ समर्थ करने वाले और पूर्ण रूप से पर्याप्त अनुग्रह में दृढ़ होकर खड़ा रहना था।

"आमीन," पौलुस ने कहा।

"आमीन," निगरानी करने वाले परमेश्वर के सभी स्वर्गदूतों ने भी प्रतिध्वनित किया।

"आमीन," जब तीमुथियुस ने उन्हें यह पत्री पढ़कर सुनाई, तब वहाँ उपस्थित प्रत्येक विश्वास करने वाले हृदय ने अपनी सहमति प्रकट की।

“आमीन,” उस पवित्र आत्मा ने भी कहा, जिसने पौलुस की लेखनी का मार्गदर्शन किया था।

“आमीन,” सब युगों की कलीसिया कहती है। आमीन!

तीतुस पत्री का अध्ययन

लेखक की टिप्पणी

पास्टरीय पत्रियों का बाइबल में क्रम इस प्रकार है:

- 1 तीमुथियुस
- 2 तीमुथियुस
- तीतुस

हालाँकि, यह टीका लिखे जाने के समय के क्रम का अनुसरण करता है :

- 1 तीमुथियुस
- तीतुस
- 2 तीमुथियुस

इस क्रम में पुस्तकों को रखने से पाठक घटनाओं के प्रवाह को और अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता है, जो अंततः पौलुस की शहादत पर समाप्त होता है।

तीतुस का परिचय

तीतुस, जो एक अन्यजाति था और जिसे पौलुस ने मसीह के पास पहुँचाया, प्रेरित के सबसे प्रिय और विश्वासयोग्य सहयोगियों में से एक बन गया। तीतुस संभवतः सीरिया या क्रेते का निवासी था—क्रेते भूमध्य सागर का एक बड़ा द्वीप है, जो यूनान के दक्षिण और लीबिया के उत्तर में स्थित है।

पौलुस की रोम की उस निर्णायक यात्रा के दौरान क्रेते कुछ समय के लिए प्रमुख रूप से सामने आया—एक ऐसी यात्रा जो अन्ततः माल्टा द्वीप पर जहाज़ के टूटने के साथ समाप्त हुई। जैसा कि प्रेरितों 27 में वर्णित है, जहाज़ भूमध्यसागर के पूर्वी तट के सहारे चलते हुए एशिया माइनर के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित महत्वपूर्ण नगर कनिदुस तक पहुँचा। किन्तु मौसमी हवाएँ पहले ही कष्टदायक होने लगी थीं, इसलिए नाविक दक्षिण की ओर क्रेते द्वीप की तरफ मुड़ गए, जहाँ उग्र लहरों और विपरीत हवाओं से कुछ आश्रय मिलने की आशा थी। वे किसी प्रकार “शुभलंगरबारी” नामक बन्दरगाह तक पहुँच गए, जो द्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित था और जिसने तूफान से कुछ राहत प्रदान की।

किन्तु उस समय तक बार-बार आने वाले शीतकालीन तूफानों के कारण समुद्री यात्रा करना अत्यंत खतरनाक हो गया था। पौलुस, जो एक अनुभवी यात्री था और जिसे अपने पिछले जहाज़-डूबने की घटनाएँ याद थीं (2 कुरिन्थियों 11:25), ने सलाह दी कि जहाज़ वसंत ऋतु तक “शुभलंगरबारी” में ही ठहरा रहे। दुर्भाग्य से, जिस खाड़ी में जहाज़ लंगर डाले हुए था वह ठहरने के लिए अधिक सुविधाजनक स्थान नहीं था। इसलिए सूबेदार ने जहाज़ के कप्तान का पक्ष लिया, जो क्रेते के पश्चिमी छोर पर स्थित अधिक अनुकूल बंदरगाह फीनिक्स तक पहुँचने का प्रयास करना चाहता था। दक्षिण दिशा से धीरे-धीरे चलने वाली आकर्षक हवा (प्रेरितों के काम 27:13) ने मानो कप्तान के निर्णय का समर्थन किया, इसलिए यात्रा का प्रयास किया गया। परन्तु जहाज़ वहाँ तक पहुँच नहीं सका।

हम कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस जहाज़ के पिछले भाग में खड़ा शुभलंगरबारी बंदरगाह को अपनी दृष्टि से ओझल होते देख रहा था और सोच रहा था कि क्या वह फिर कभी क्रेते को देख पाएगा। निस्सन्देह उसका मिशनरी उत्साह उसे किनारे उतरकर क्रेतेवासियों को सुसमाचार सुनाने के लिए प्रेरित करता रहा होगा। वह बाद में लौटा भी, और शीघ्र ही उसे पता चला कि क्रेते सेवा करने के लिए आसान स्थान नहीं था; वहाँ के लोग छल, उग्रता और भोग-विलास के लिए प्रसिद्ध थे। पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में उपस्थित क्रेती यहूदियों (प्रेरितों 2:11) ने शायद बहुत पहले ही मसीही विश्वास को उस द्वीप तक पहुँचा दिया था।

हम नहीं जानते कि पौलुस तीतुस को कब और कहाँ मसीह के पास लेकर आया, क्योंकि यद्यपि वह पौलुस के बहुत सम्मानित सहयोगियों में से एक था, फिर भी प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीतुस का कहीं उल्लेख नहीं है। (उसका उल्लेख 2 कुरिन्थियों, गलातियों, 2 तीमुथियुस और तीतुस की पत्री में मिलता है।)

पवित्रशास्त्र में तीतुस पहली बार उस समय दिखाई देता है जब वह यरूशलेम की सभा से पहले अन्ताकिया में पौलुस के साथी के रूप में था। क्योंकि तीतुस एक अन्यजाति था, इसलिए पौलुस उसे उस सभा में एक परख के रूप में साथ ले गया। पौलुस यह देखना चाहता था कि क्या यहूदी कलीसिया बिना किसी शर्त के एक अन्यजाति मसीही को अपनी संगति में स्वीकार करेगी या नहीं (गलातियों 2:3 और प्रेरितों के काम 15 की तुलना करें)।

तीतुस की पत्नी से हमें पता चलता है कि पौलुस ने या तो तीतुस को क्रेते भेजा था या उसे वहाँ छोड़ आया था ताकि कलीसिया में उत्पन्न अव्यवस्थाओं का समाधान कर सके। तीतुस पहले ही कुरिन्थ में पौलुस के दूत के रूप में अच्छा कार्य कर चुका था। निस्सन्देह, कुरिन्थ की कलीसिया की कठिनाइयों से निपटने में जो अनुभव उसे मिला, उसने उसे क्रेते की परिस्थिति का सामना करने के योग्य बना दिया था। वह एक विश्वासयोग्य मित्र, सक्षम सहकर्मी, बुद्धिमान मध्यस्थ और एक साहसी योद्धा था।

तीतुस और तीमुथियुस दोनों ही युवा, गुणी और पौलुस के प्रिय थे; दोनों को एक से अधिक बार बड़ी लेकिन नाजुक जिम्मेदारियाँ सौंपी गई थी। परन्तु समानताएँ यहीं समाप्त हो जाती हैं। तीतुस और तीमुथियुस परस्पर भिन्नताओं का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। तीमुथियुस आधा यहूदी और आधा अन्यजाति था; वहीं तीतुस पूरी तरह से एक अन्यजाति था। पौलुस ने तीमुथियुस का खतना कराया क्योंकि वह पहले ही आधा यहूदी था और उसे पूरा यहूदी बनाने से यहूदियों के साथ कार्य करने में उसकी उपयोगिता अधिक बढ़ जाती। पौलुस ने तीतुस के साथ ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत, प्रेरित ने तीतुस के खतना न होने का उपयोग यरूशलेम की कलीसिया के सामने दृढ़ता से खड़े होने के लिए किया। उनके परस्पर स्वभाव में भी काफी अंतर था। तीमुथियुस एक संकोची स्वभाव का व्यक्ति था; तीतुस अधिक दृढ़ प्रकृति का था और भयभीत होने की संभावना कम थी। हम यह भी देखते हैं कि पौलुस प्रायः विभिन्न कलीसियाओं को लिखे अपनी पत्रियों में तीमुथियुस का नाम अपने साथ जोड़ता था, परन्तु तीतुस को कभी अपने अभिवादन में कभी सम्मिलित नहीं किया। साथ ही, प्रेरितों के काम की पुस्तक में तीमुथियुस यहाँ-वहाँ दिखाई देता है, पर तीतुस का वहाँ कहीं उल्लेख नहीं मिलता।

रोम में अपनी पहली कैद से रिहा होने के बाद पौलुस क्रेते गया। जब वह उस द्वीप पर था, तो निस्संदेह उसने सुसमाचार प्रचार, पास्टरीय सेवा और शिक्षा का कार्य किया। पौलुस वहाँ इतना समय अवश्य रहा कि क्रेते वासियों के स्वभाव के विषय में एक स्पष्ट समझ बना सके, परन्तु सम्भवतः वह इतना समय वहाँ नहीं ठहर सका कि क्रेते की कलीसियाओं को व्यवस्थित रूप से संगठित कर पाता। इसलिए उसने यह कार्य तीतुस को सौंप दिया।

तीतुस को पत्नी लिखने में पौलुस का तत्काल उद्देश्य उसे निकोपोलिस बुलाना था और यह बताना था कि अर्तेमास या तुखिकुस क्रेते में उसके स्थान पर सेवा करेंगे। पौलुस ने इस पत्नी को आगे बढ़ाते हुए इसमें स्थानीय कलीसियाओं के लिए शिक्षाएँ, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन भी शामिल किया। यद्यपि यह पत्नी छोटी है, फिर भी यह सेवकों के लिए एक प्रकार की संक्षिप्त मार्गदर्शिका है और इसमें कई महत्वपूर्ण सैद्धांतिक कथन पाए जाते हैं (जैसे 1:1-4; 3:11-14)। पत्नी जितनी संक्षिप्त है, उतनी ही विशिष्ट भी है, क्योंकि इसमें चौआलीस ऐसे शब्द पाए जाते हैं जो नये नियम में और कहीं नहीं मिलते।

पौलुस के दिनों में “तीतुस” नाम अपने आप में एक प्रभावशाली नाम था। फ्लावियन राजवंश के संस्थापक और विजयी रोमी सेनापति वेस्पासियन का भी एक पुत्र तीतुस था। वेस्पासियन को शीघ्र ही सम्राट घोषित किया जाने वाला था (ईसवीं 69), और तीतुस पहले ही प्रसिद्धि की ओर बढ़ रहा था। उसी ने (वेस्पासियन द्वारा आरम्भ किए गए) यरूशलेम के घेरे को समाप्त किया और उसकी सेना ने ईसवीं 70 में यहूदी मन्दिर को जला कर नष्ट कर दिया। ईसवीं 79 में वेसुवियस ज्वालामुखी फटा और पोम्पेई को दबा दिया। उसी वर्ष

तीतुस सम्राट बना। अगले वर्ष उसने रोम के कोलोसियम का उद्घाटन किया, जहाँ बहुत से मसीहियों को आगे चलकर मरना पड़ा।

इस प्रकार संसार के पास भी अपना एक तीतुस था, और कलीसिया के पास भी एक तीतुस था। संसार का तीतुस इतिहास की पुस्तकों में दर्ज हुआ, पर कलीसिया का तीतुस पुस्तकों की पुस्तक में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना पाया। निस्सन्देह कैसर सम्राटों की सूची में अपना नाम लिखा पाना बड़ा सम्मान था, परन्तु मेम्ने के जीवन की पुस्तक और परमेश्वर के वचन में नाम लिखा जाना उससे कहीं बढ़कर सम्मान की बात है।

रोमी तीतुस के पास अपने वैभव का एक समय था। उसके सम्मान में बनाया गया विजय-तोरण आज भी खड़ा है, परन्तु वह स्वयं अब मर चुका और चला गया है। आज कोई भी उसके इतिहास का अध्ययन इस आशा से नहीं करता कि उससे जीवन जीने की कुछ शिक्षा मिले।

दूसरी ओर, बाइबल का तीतुस भविष्य के उस दिन में अपना विजय पाएगा। आज संसार भर के लोग पौलुस द्वारा उसे लिखे गए इस छोटे से पत्र की अध्ययन करते हैं; वे उसके प्रत्येक शब्द को तौलते हैं और उसके अर्थ को खोजते हैं। रोमी तीतुस अपने कामों का हिसाब देने के लिए महान श्वेत सिंहासन के सामने खड़ा होगा। परन्तु मसीही तीतुस मसीह के न्यायासन के सामने खड़ा होगा और प्रभु का यह शब्द सुनेगा, “धन्य हे विश्वासयोग्य दास!” उसकी “चमक आकाशमण्डल की सी होगी” और “सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान” रहेगा (दानियेल 12:3)।

तीतुस की पत्री के पूरी रूपरेखा

भाग 1: परिचय (तीतुस 1:1-4)

1. पौलुस का अभिवादन (1:1क-ख)

1. पौलुस एक उपलब्ध सेवक था (तीतुस 1:1क)
2. पौलुस एक अधिकार प्राप्त सन्देशवाहक था (1:1ख)

2. पौलुस का विषय (तीतुस 1:1ग-3)

1. परमेश्वर के लोग (1:1ग-ड)

1. वे चुने हुए लोग हैं (तीतुस 1:1ग)
2. वे एक चुनौती पाए हुए लोग हैं (तीतुस 1:1घ)
3. वे एक परिवर्तित लोग हैं (1:1ड)

2. परमेश्वर का वादा (तीतुस 1:2)

1. हमारी आशा का सार (तीतुस 1:2क)
2. हमारी आशा की सुरक्षा (तीतुस 1:2ख)

3. परमेश्वर का प्रचारक (तीतुस 1:3)

1. सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर के साधन (1:3क-ख)

1. चुना हुआ पल (तीतुस 1:3क)
2. चुना हुआ तरीका (तीतुस 1:3ख)

2. सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर का जन (1:3ग-घ)

1. एक समर्पण (1:3ग)
2. एक आज्ञा (तीतुस 1:3घ)

3. पौलुस का पुत्र (तीतुस 1:4)

1. तीतुस : पौलुस का प्रिय (1:4क-ख)

1. तीतुस के मन-परिवर्तन का अनूठा तत्व (1:4क)
2. तीतुस के मन-परिवर्तन में सार्वभौमिक तत्व (1:4ख)

2. तीतुस : पौलुस द्वारा आशीषित (1:4ग-च)

1. दी गई आशीष (1:4ग-ङ)
 1. अनुग्रह : पुत्र-परमेश्वर का प्रावधान (तीतुस 1:4ग)
 2. दया : पिता-परमेश्वर की सुरक्षा (तीतुस 1:4घ)
 3. शांति : पवित्र आत्मा-परमेश्वर का परिणाम (तीतुस 1:4ङ)
2. आशीष की निश्चितता (1:4च)

भाग 2: स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों की नियुक्ति (तीतुस 1:5-9)

1. प्राचीनों को पारिवारिक पुरुष होना चाहिए (1:5-6) (तीतुस 1:5-6)

1. पौलुस का अधिकार प्रकट किया गया (1:5)

1. निर्णय (तीतुस 1:5क)
2. अव्यवस्था (तीतुस 1:5ख)
3. रोकने वाला (1:5ग)
4. प्रतिनिधि (तीतुस 1:5घ)

2. माता-पिता के अधिकार का सम्मान (तीतुस 1:6)

1. भावी प्राचीन : एक व्यक्ति के रूप में (तीतुस 1:6क)
2. भावी प्राचीन : एक सहभागी के रूप में (तीतुस 1:6ख)
3. भावी प्राचीन : एक अभिभावक के रूप में (1:6ग-घ)

1. उसके बच्चों पर गलत व्यवहार का आरोप न हो (तीतुस 1:6ग)

2. उसके बच्चे गलत व्यवहार के आदी न हों (तीतुस 1:6घ)

2. प्राचीनों को निर्दोष पुरुष होना चाहिए (तीतुस 1:7)

1. प्राचीन का पद (1:7क-ख)

1. उसकी संगत माँग (तीतुस 1:7क)
2. उसकी संगत ज़िम्मेदारी (तीतुस 1:7ख)

2. प्राचीन का चित्रण (1:7ग-छ)

1. आक्रामक न हो (तीतुस 1:7ग)
2. क्रोधी न हो (तीतुस 1:7घ)
3. मद्यपानी न हो (तीतुस 1:7ङ)
4. मारपीट करने की प्रवृत्ति न हो (तीतुस 1:7च)
5. धन-दौलत में लिप्त न हो (तीतुस 1:7छ)

3. प्राचीनों को मिलनसार होना चाहिए (तीतुस 1:8)

1. प्राचीन को क्या पसंद है (1:8क-ख)

1. उसकी दिखनेयोग्य मित्रता (तीतुस 1:8क)
2. उसकी विवेकपूर्ण मित्रता (तीतुस 1:8ख)

2. एक प्राचीन कैसे रहता है (1:8ग-च)

1. उसका सार्वजनिक जीवन (1:8ग-घ)
 1. वह मामलों पर नज़र रखना जानता है (तीतुस 1:8ग)
 2. वह बातों को परखना जानता है (तीतुस 1:8घ)
2. उसका व्यक्तिगत जीवन (1:8ङ-च)

1. वह एक साफ़ जीवन जीता है (तीतुस 1:8ड)
2. वह संयमित जीवन जीता है (तीतुस 1:8च)
4. प्राचीनों को विश्वासयोग्य पुरुष होना चाहिए (तीतुस 1:9)
 1. परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से थामे रहना (1:9क-ख)
 1. परमेश्वर के वचन पर उनका भरोसा (तीतुस 1:9क)
 2. परमेश्वर के वचन में उनका प्रशिक्षण (तीतुस 1:9ख)
 2. परमेश्वर के वचन की घोषणा करना (1:9ग-ड)
 1. उनका खरा उपदेश (तीतुस 1:9ग)
 2. उनका महत्वपूर्ण कर्तव्य (1:9घ-ड)
 1. उपदेश देना (तीतुस 1:9घ)
 2. प्रकट करना (तीतुस 1:9ड)

भाग 3: स्थानीय कलीसिया में त्रुटि का स्वभाव (तीतुस 1:10-16)

1. झूठे शिक्षकों के उद्देश्य (तीतुस 1:10-11)
 1. अपने शत्रुओं का सामना करना (तीतुस 1:10)
 1. वे क्या हैं (1:10क-ग)
 1. वे अव्यवस्थित हैं (तीतुस 1:10क)
 2. वे विवादी होते हैं (तीतुस 1:10ख)
 3. वे धोखेबाज होते हैं (तीतुस 1:10ग)
 2. वे कौन थे (तीतुस 1:10घ)
 2. अपने शत्रुओं से लड़ना (तीतुस 1:11)
 1. नियम (तीतुस 1:11क)
 2. कारण (तीतुस 1:11ख)
 3. प्रकाशन (1:11ग-घ)
 1. उनके संदेश का (तीतुस 1:11ग)

2. उनके इरादों का (तीतुस 1:11घ)
2. झूठे उपदेशकों का खतरा (तीतुस 1:12-13)
 1. पौलुस ने एक भयानक गवाही का उल्लेख किया (तीतुस 1:12)
 1. उल्लेख का स्रोत (तीतुस 1:12क)
 2. उल्लेख का सार (1:12ख-ड)
 1. क्रेतेवासी झूठे हैं (तीतुस 1:12ख)
 2. क्रेतेवासी अधर्मी हैं (तीतुस 1:12ग)
 3. क्रेतेवासी आलसी हैं (तीतुस 1:12घ)
 4. क्रेतेवासी कामातुर हैं (तीतुस 1:12ड)
 2. पौलुस ने एक सच्ची गवाही का हवाला दिया (तीतुस 1:13)
 1. क्रेतेवासियों के चरित्र का समर्थन (तीतुस 1:13क)
 2. मसीही चरित्र का दृढ़ता से पालन करवाना (तीतुस 1:13ख)
3. झूठे उपदेशकों का संदेश (तीतुस 1:14)
 1. इसकी विषय-वस्तु (1:14क-ख)
 1. शानदार यहूदी कहानियाँ (तीतुस 1:14क)
 2. झूठी यहूदी परंपराएँ (तीतुस 1:14ख)
 2. इसका उद्देश्य (तीतुस 1:14ग)
4. झूठे उपदेशकों की नैतिकता (तीतुस 1:15-16)
 1. एक विरोधाभास (तीतुस 1:15)
 1. शुद्ध व्यक्ति (तीतुस 1:15क)
 2. दूषित व्यक्ति (1:15ख-घ)
 1. उसका बाहरी दूषित दृष्टिकोण (तीतुस 1:15ख)
 2. उसके दूषित आंतरिक मूल्य (1:15ग-घ)
 1. वह मानसिक रूप से भ्रष्ट है (तीतुस 1:15ग)
 2. वह नैतिक रूप से भ्रष्ट है (तीतुस 1:15घ)

2. निष्कर्ष (तीतुस 1:16)

1. झूठे उपदेशक क्या दावा करते हैं (तीतुस 1:16क)

2. झूठे उपदेशक क्या करते हैं (1:16ख-ड)

1. परमेश्वर का इनकार (तीतुस 1:16ख)

2. भलाई का इनकार (1:16ग-ड)

1. झूठे उपदेशक घृणित होते हैं (तीतुस 1:16ग)

2. झूठे उपदेशक विद्रोही होते हैं (तीतुस 1:16घ)

3. झूठे उपदेशक निकम्मे होते हैं (तीतुस 1:16ङ)

भाग 4: स्थानीय कलीसिया में अभ्यास की आवश्यकता (तीतुस 2:1-3:11)

1. व्यक्तिगत अभ्यास (तीतुस 2:1-15)

1. कलीसिया में व्यवहार (तीतुस 2:1-10)

1. लिंग और उनका स्थान (तीतुस 2:1-8)

1. जिन्हें वर्षों का अनुभव प्राप्त है (तीतुस 2:1-3)

1. बूढ़े पुरुष (तीतुस 2:1-2)

1. सही उपदेश (तीतुस 2:1)

1. परिणामी कार्य (तीतुस 2:2)

1. वृद्ध पुरुषों की ठोस परिपक्वता
(2:2क-ग)

1. सचेत (तीतुस 2:2क)

2. गंभीर (तीतुस 2:2ख)

3. संयमी (तीतुस 2:2ग)

2. वृद्ध पुरुषों की आत्मिक परिपक्वता
(2:2घ-च)

1. परमेश्वर की ओर (तीतुस
2:2घ)

2. मनुष्य की ओर (तीतुस 2:2ड)

3. अपनी ओर (तीतुस 2:2च)

2. बूढ़ी स्त्रियाँ (तीतुस 2:3) इनके लिए प्रसिद्ध:

1. पवित्रता (तीतुस 2:3क)

2. सच्चाई (तीतुस 2:3ख)

3. संयमी (तीतुस 2:3ग)

4. शिक्षाएँ (तीतुस 2:3घ)

2. युवा लोग (तीतुस 2:4-8)

1. जवान स्त्रियाँ (तीतुस 2:4-5) वृद्ध स्त्रियों द्वारा सिखाई जाएँ कि :

1. अनुशासित रहें (तीतुस 2:4क)

2. समर्पित रहें (2:4ख-ग)

1. विवाह में (तीतुस 2:4ख)

2. मातृत्व में (तीतुस 2:4ग)

3. विवेकशील रहें (तीतुस 2:5क)

4. सभ्य बनी रहें (तीतुस 2:5ख)

5. घर-गृहस्थी से जुड़ी रहें (2:5ग-ड)

1. उन्हें घर की रखवाली करनी चाहिए (तीतुस 2:5ग)

2. उन्हें हृदय से अच्छा होना चाहिए (तीतुस 2:5घ)

3. उन्हें अपने पतियों के मार्गदर्शन में चलना चाहिए (तीतुस 2:5ड)

6. रक्षा करने वाली हों (तीतुस 2:5च)

2. जवान पुरुष (तीतुस 2:6-8)

1. उनका संयम (तीतुस 2:6)

2. उनकी सेवकाई (तीतुस 2:7क)

3. उनकी दृढ़ता (तीतुस 2:7ख)

4. उनकी गंभीरता (तीतुस 2:7ग)

5. उनकी ईमानदारी (तीतुस 2:7घ)

6. उनकी बातचीत (तीतुस 2:8)

1. निर्दोष (तीतुस 2:8क)

2. अखंडनीय (तीतुस 2:8ख)

2. सेवक और उनका स्थान (तीतुस 2:9-10)

1. उन्हें लगन के साथ सेवा करनी चाहिए (तीतुस 2:9)

1. विनम्रतापूर्वक आज्ञा का पालन करना (तीतुस 2:9क)

2. संतोषजनक तरीके से आज्ञापालन (तीतुस 2:9ख)

3. चुपचाप आज्ञापालन करना (तीतुस 2:9ग)

2. उन्हें अलग तरह से सेवा करनी चाहिए (तीतुस 2:10क)

3. उन्हें समर्पित भाव से सेवा करनी चाहिए (तीतुस 2:10ख)

4. उन्हें प्रत्यक्ष रूप से सेवा करनी चाहिए (2:10ग-घ)

1. उपदेश को ईमानदारी से सजाना (तीतुस 2:10ग)

2. उपदेश को पूरी तरह से सजाना (तीतुस 2:10घ)

2. कलीसिया में मान्यताएँ (तीतुस 2:11-15)

1. वर्तमान अनुग्रह (तीतुस 2:11-12)

1. अनुग्रह का प्रकट होना (तीतुस 2:11)

1. सर्वोच्च अनुग्रह (तीतुस 2:11क)

2. उद्धार देने वाला अनुग्रह (तीतुस 2:11ख)

3. पर्याप्त अनुग्रह (तीतुस 2:11ग)

3. अनुग्रह का आह्वान (तीतुस 2:12)

1. यह हमें क्या त्यागना सिखाता है (2:12क-ख)

1. अभक्ति (तीतुस 2:12क)
2. अपवित्रता (तीतुस 2:12ख)
2. यह हमें क्या उत्पन्न करना सिखाता है (2:12ग-ड)
 1. संयम (तीतुस 2:12ग)
 2. धर्म (तीतुस 2:12घ)
 3. भक्ति (तीतुस 2:12ङ)
2. प्रतिज्ञा की गई महिमा (तीतुस 2:13-15)
 1. भविष्यवाणी संबंधी पहलू (तीतुस 2:13)
 1. हमारी आशा की महिमा (तीतुस 2:13क)
 2. हमारी आशा की महानता (तीतुस 2:13ख)
 2. वर्तमान पहलू (तीतुस 2:14)
 1. यह कौन था (तीतुस 2:14क)
 2. यह क्या था (2:14ख-ग)
 1. उद्धार की कीमत (तीतुस 2:14ख)
 2. उद्धार की पूर्णता (तीतुस 2:14ग)
 3. यह क्यों था (2:14घ-च)
 1. हमें शुद्ध करने के लिए (तीतुस 2:14घ)
 2. हमें अपने अधिकार में लेने के लिए (तीतुस 2:14ङ)
 3. हमें सिद्ध बनाने के लिए (तीतुस 2:14च)
 3. व्यावहारिक पहलू (तीतुस 2:15)
 1. तीतुस को पौलुस का निर्देश (2:15क-ख)
 1. तीतुस का कार्य (तीतुस 2:15क)
 2. तीतुस का अधिकार (तीतुस 2:15ख)
 2. तीतुस पर पौलुस का भरोसा (तीतुस 2:15ग)
2. व्यावहारिक अभ्यास (तीतुस 3:1-11)

1. राष्ट्र की प्रजा के रूप में विश्वासियों का आचरण (तीतुस 3:1-2)

1. हमें आज्ञाकारी बनना है (तीतुस 3:1क)

2. हमें सहारा देने वाले बनना है (तीतुस 3:1ख-2)

1. हमारे कार्यों के द्वारा (तीतुस 3:1ख)

2. हमारे शब्दों के द्वारा (तीतुस 3:2क)

3. हमारे तरीकों से (3:2ख-घ)

1. हमारी कोमलता (तीतुस 3:2ख)

2. हमारा व्यवहार (तीतुस 3:2ग)

3. हमारी नम्रता (तीतुस 3:2घ)

2. प्रभु के पवित्र लोगों के रूप में विश्वासियों का आचरण (तीतुस 3:3-11)

1. याद रखना कि हम क्या थे (तीतुस 3:3-8)

1. हमारा व्यवहार (तीतुस 3:3)

1. हमारे भ्रष्ट मन (3:3क-ग)

1. हम कितने निर्बुद्धि थे (तीतुस 3:3क)

2. हम कितने अनाज्ञाकारी थे (तीतुस 3:3ख)

3. हम कितने भ्रम में पड़े थे (तीतुस 3:3ग)

2. हमारी भ्रष्ट नैतिकताएँ (3:3घ-ड)

1. हमारी दुष्ट अभिलाषाएँ (तीतुस 3:3घ)

2. हमारे सांसारिक सुख (तीतुस 3:3ड)

3. हमारे भ्रष्ट उद्देश्य (3:3ड-ज)

1. हमारा दुष्ट स्वभाव (तीतुस 3:3च)

2. हमारी बुरी इच्छाएँ (तीतुस 3:3छ)

3. हमारी बुरी नापसंदगी (तीतुस 3:3ज)

2. हमारा मन-परिवर्तन (तीतुस 3:4-6)

1. प्रकाशन (तीतुस 3:4)

1. परमेश्वर के चरित्र के बारे में (तीतुस 3:4क)
2. परमेश्वर की कृपा के बारे में (तीतुस 3:4ख)
2. क्रांति (तीतुस 3:5-6)
 1. हमारे कर्म शामिल नहीं है (तीतुस 3:5क)
 2. हमारे स्नान को स्पष्ट किया गया (3:5ख-ग)
 1. पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म (तीतुस 3:5ख)
 2. पवित्र आत्मा के द्वारा नया बनाया जाना (तीतुस 3:5ग)
 3. हमारी दुष्टता मिटा दी गई है (तीतुस 3:6)
 1. इस बदलाव का माप (तीतुस 3:6क)
 2. इस बदलाव के साधन (तीतुस 3:6ख)
3. हमारी परिपूर्णता (तीतुस 3:7)
 1. व्यवस्था सदा के लिए संतुष्ट हुई (तीतुस 3:7क)
 2. हमेशा के लिए जीवन सुनिश्चित कर दिया गया है (तीतुस 3:7ख)
4. हमारा अंगीकार (तीतुस 3:8)
 1. एक महान सत्य (तीतुस 3:8क)
 2. एक बड़ी परीक्षा (तीतुस 3:8ख)
 3. एक महान भरोसा (तीतुस 3:8ग)
2. जहाँ हम हैं वहीं डटे रहना (तीतुस 3:9-11)
 1. एक रुख जो लिया जाना है (तीतुस 3:9)
 1. एक आवश्यकता (3:9क-ग)
 1. मूर्खतापूर्ण प्रश्नों से बचें (तीतुस 3:9क)
 2. मूर्खता के विवादों से बचें (3:9ख-ग)
 1. यहूदी सूचियाँ (तीतुस 3:9ख)

2. यहूदी नियम (तीतुस 3:9ग)

2. एक कारण (तीतुस 3:9घ)

2. एक पक्ष जो लिया जाना है (तीतुस 3:10-11)

1. पाखंडी का पर्दाफ़ाश (तीतुस 3:10क)

2. पाखंडी की जाँच (तीतुस 3:10ख)

3. पाखंडी का बहिष्कार (तीतुस 3:10ग-11)

1. उसकी सार्वजनिक दोषसिद्धि (तीतुस 3:10ग)

2. उसका व्यक्तिगत दोषारोपण (तीतुस 3:11)

भाग 5: निष्कर्ष (तीतुस 3:12-15)

1. तीतुस के लिए मार्गदर्शन (तीतुस 3:12-14)

1. उसकी गतिविधियों के संबंध में (तीतुस 3:12)

1. उसे क्या करना चाहिए (तीतुस 3:12क)

2. उसे कहाँ जाना चाहिए (तीतुस 3:12ख)

2. उसकी सेवकाई के संबंध में (तीतुस 3:13-14)

1. व्यावहारिक पहलू (तीतुस 3:13)

2. प्रचार पहलू (तीतुस 3:14)

1. श्रोतागण (तीतुस 3:14क)

2. चेतावनी (तीतुस 3:14ख)

2. तीतुस के लिए अभिवादन (3:15क-ख)

1. व्यक्तिगत अभिवादन (तीतुस 3:15क)

2. पास्टरीय अभिवादन (तीतुस 3:15ख)

3. तीतुस के लिए अनुग्रह (तीतुस 3:15ग)

भाग 5.

परिचय

तीतुस 1:1-4

क. पौलुस का अभिवादन (1:1क-ख)

1. पौलुस एक उपलब्ध सेवक था (1:1क)

जैसा कि उसकी रीति थी, पौलुस ने इस पत्र को अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित किया। तुरंत उसने अपने बारे में दो प्रकार से परिचय दिया: वह “परमेश्वर का दास” था और वह “यीशु मसीह का प्रेरित” था।

“परमेश्वर का दास!” यूनानी भाषा में इसके लिए जो शब्द है, वह सामान्यतः गुलाम के लिए प्रयोग किया जाता है। यहाँ पौलुस ने अपने आप को “परमेश्वर का गुलाम” कहा है, ऐसा वर्णन जो उसने और कहीं नहीं किया। पौलुस से अधिक अपनी स्वतंत्रता को कोई महत्व नहीं देता था। वह स्वतंत्र जन्मा था, रोम का नागरिक था, और उसे इस पर गर्व था। प्रेरितों के काम 22 में, जब सूबेदार ने पौलुस को केवल एक उपद्रवी यहूदी समझकर उसे कोड़े लगाने का आदेश दिया, तब पौलुस ने कहा, “क्या यह उचित है कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए, कोड़े मारो?”

तब सूबेदार ने पलटन के सरदार को इसकी सूचना दी। पलटन के सरदार आया और बोला, “मैं ने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है।”

पौलुस ने उत्तर दिया, “मैं तो जन्म से स्वतंत्र हूँ।”

इसके अतिरिक्त, पौलुस ने अपने अन्यजाति (गैर-यहूदी) विश्वासियों को यहूदी बंधनों से मुक्त रखने के लिए काफ़ी संघर्ष किया। जब अन्यजातियों की स्वतंत्रता खतरे में पड़ी, तब उसने प्रभावशाली याकूब का भी सामना किया और यहाँ तक कि पतरस को भी डाँटा। फिर भी, जब पौलुस कैसरिया में बंदी बना और बाद में रोम में कैदी के रूप में रहा, तब उसने अपनी बेड़ियों में भी महिमा की। वह “यीशु मसीह का बंदी” था (इफिसियों 3:1)। वह नीरो का कैदी नहीं था; वह परमेश्वर का स्वेच्छा से बना हुआ दास था।

कैदखाने से ही पौलुस ने एक साम्राज्य पर शासन किया। उसका सिंहासन परमेश्वर के लोगों के हृदयों में था—रोम से लेकर अंताकिया और उससे भी आगे तक। अनेक युवा उसके पास सेवा के लिए उपस्थित रहते थे और उसके आदेश को पूरा करने के लिए तुरंत निकल पड़ते थे। जब पौलुस ने तीतुस को पत्री लिखी, तब वह फिर से स्वतंत्र था। वह जहाँ चाहता जा सकता था और जो चाहता कर सकता था। उस समय के लिए रोम की बेड़ियाँ टूट चुकी थीं, और वह स्वतंत्र था—परमेश्वर का दास बनने के लिए! पौलुस के लिए इससे बेहतर बात और कोई नहीं हो सकती थी।

जब उड़ाऊ पुत्र अन्ततः “अपने होश में आया,” तब उसके साथ भी यही हुआ। उसे लगा कि जीवन में उससे बेहतर भाग्य कोई नहीं हो सकता जितना उसके पिता के घर के सेवकों को प्राप्त था (लूका 15:17)। हम उस उड़ाऊ पुत्र की कल्पना कर सकते हैं कि वह सूअरों के झुण्ड के पास बैठा है और उदासी के साथ उस तुच्छ भोजन को देख रहा है जिसे उसे सूअरों को खिलाना था। वह इतना भूखा था कि कुतरी हुई फली की

खाल का एक टुकड़ा, मकई के छिलके, और भीगी हुई रोटी का एक टुकड़ा भी उसे खजाने के समान लग रहे थे। जब वह इस दयनीय भोजन को अपने मुँह में डाल रहा था, तभी उसे होश आया। अपनी कल्पना में उसने अपने पिता के घर के सेवकों का भोजन कक्ष देखा। उनकी मेज़ अच्छे भोजन से भरी हुई थी, और वह—जो कि पुत्र था—भूख से मर रहा था। उसने अपने आप से कहा,

“इससे तो कहीं अच्छा है कि मैं अपने पिता के सबसे छोटे सेवकों में से एक बन जाऊँ, बजाय इसके कि मैं जो बन गया हूँ—बिना बंधन के और अपनी मर्जी से जीने वाला, परन्तु दूर देश में बिल्कुल मित्रहीन और भूखा हूँ।” तब उसने घर लौटने का फैसला किया। उसने ठान लिया कि वह अपने पिता से विनती करेगा कि उसे उनके घर में एक दास के समान स्थान दे दिया जाए।

पौलुस के विचार में जीवन में इससे बड़ी बुलाहट और इससे अधिक आनंद कोई नहीं था कि वह परमेश्वर का दास बने। परमेश्वर के दास के रूप में उसने अपना पद और अपने अधिकार, अपना शरीर और अपनी आत्मा—सब कुछ समर्पित कर दिया। वह पूरी तरह परमेश्वर का हो गया था। वह वहाँ जाता जहाँ परमेश्वर उसे भेजता, वही करता जो परमेश्वर उससे कराना चाहता, और वही बनता जो परमेश्वर उसे बनाना चाहता। उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी, सिवाय इसके कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरी करे।

इस बात में, वह बिल्कुल यीशु के समान था क्योंकि महिमा का प्रभु भी पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए ही आया था—हमेशा, पूर्ण रूप से, और बिना किसी त्रुटि के (इब्रानियों 10:7)।

परमेश्वर की इच्छा के प्रति उसकी अपनी आज्ञाकारिता ही वह आधार थी जिसने पौलुस को यह अधिकार दिया कि वह तीमुथियुस को यहाँ भेजे, तीतुस को वहाँ भेजे और तुखिकुस को किसी और स्थान पर भेजे। केवल वही व्यक्ति जो आज्ञा का पालन करना सीख चुका है, आदेश देने के योग्य होता है।

इस प्रकार, जैसा कि उसने तीतुस को स्मरण दिलाया, पौलुस “परमेश्वर का दास” था। वह किसी भी प्रतिद्वंद्वी को स्वीकार नहीं करता था, किसी अस्वीकार को सहन नहीं करता था, और पीछे हटने के बारे में सोचता भी नहीं था। वह परमेश्वर का दास था—उस सृष्टिकर्ता का दास जिसने आकाशगंगाओं की रचना की, उस परमेश्वर का दास जिसकी सेवा स्वर्गदूतों की सेनाएँ करती हैं, और उस परमेश्वर का दास जो पूर्ण सामर्थ्य के साथ महिमा में सिंहासन पर विराजमान है।

वह, पौलुस, उस परमेश्वर का दास था जो सर्वज्ञानी, सर्वप्रेमी, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। पौलुस के लिए इससे बड़ा सम्मान का चिन्ह और कोई नहीं था। निश्चय ही, परमेश्वर का दास होना कहीं अधिक श्रेष्ठ है, बजाय इसके कि रोमी संसार के सिंहासन पर बैठा हुआ पाप का दास बना नीरो हो।

2. पौलुस एक अधिकार प्राप्त सन्देशवाहक था (1:1ख)

पौलुस “यीशु मसीह का प्रेरित” था। “प्रेरित” की उपाधि सुसमाचारों में केवल नौ बार ही पाई जाती है। परन्तु प्रेरितों के काम और पत्रियों में इसका व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है। प्रेरितों का समूह छोटा और विशेष था। वे ऐसे पुरुष थे जिन्हें विशेष रूप से चुना गया था, जिन्हें अद्वितीय वरदान दिए गए थे, जिन्हें महान सामर्थ्य से सशक्त किया गया था, और जिन्हें परमेश्वर की कलीसिया की स्थापना करने के लिए दैवीय रूप से भेजा गया था।

तीतुस पौलुस को व्यक्तिगत रूप से एक मित्र के रूप में और उसके कार्य के अनुसार एक प्रेरित के रूप में जानता था। उसने पौलुस को अभिषिक्त और अद्भुत सामर्थ्य के साथ प्रचार करते हुए सुना था। उसने उसे महान आश्चर्यकर्म करते हुए भी देखा था। उसने उसे कार्य करते हुए देखा था, और पौलुस द्वारा स्थापित कई कलीसियाओं का दौरा किया था तथा उसके विश्वासियों से बातचीत की थी। उसने वे पत्र भी पढ़े थे जिन्हें पौलुस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा था। जब तीतुस को उसका अपना पत्र मिला और उसने शब्द पढ़े—“पौलुस... एक प्रेरित”, तब वह समझ गया कि जो पत्र उसके हाथों में है वह केवल एक मित्रतापूर्ण संदेश नहीं है। वह बाइबल की एक नई पुस्तक थी। वह संसार का पहला व्यक्ति था जो इस पुस्तक को पढ़ने वाला था—परन्तु वह अंतिम नहीं होने वाला था!

ख. पौलुस का विषय (1:1ग-3)

अपने प्रेरितत्व के इस संक्षिप्त उल्लेख के बाद, पौलुस ने परमेश्वर के लोगों के विषय में लिखा, क्योंकि लोगों को परमेश्वर की कृपा के घेरे में लाना ही एक प्रेरित होने का मुख्य उद्देश्य था। फिर पद 2 में उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में लिखा, क्योंकि एक प्रेरित का यह विशेष अधिकार था कि वह उन अद्भुत और अनुपम प्रतिज्ञाओं को प्रकट करे, जिन पर हमारी आशा आधारित है। और क्योंकि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ मनुष्यों तक प्रचार के द्वारा पहुँचाई जाती हैं, इसलिए पौलुस ने परमेश्वर के प्रचारक के बारे में लिखा; क्योंकि वास्तव में एक प्रेरित मूल रूप से एक प्रचारक ही होता है।

1. परमेश्वर के लोग (1:1ग-ड)

अभिवादन के बाद, इस पहले पद का शेष भाग कुछ जटिल है।

पौलुस ने लिखा, “परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास और उस सत्य की पहिचान के अनुसार जो भक्ति के अनुसार है।” पौलुस प्रारम्भ में ही हमें गहरे जल में ले जाने से नहीं हिचकिचाता। हमें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर का हर संदेश बहुत सरल ही होगा। आखिरकार, परमेश्वर के विचार हमारे विचारों जैसे नहीं हैं। वे हमारे विचारों से उतने ही ऊँचे हैं जितने तारे पृथ्वी से ऊँचे हैं (यशायाह 55:8-9)। फिर भी, तीतुस 1:1 का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाएगा यदि हम इसे इस दृष्टि से समझें कि परमेश्वर के लोग चुने हुए हैं, चुनौती दिए गए हैं, और परिवर्तित किए गए हैं।

क. वे चुने हुए लोग हैं (1:1ग)

पौलुस ने यहाँ परमेश्वर के लोगों को “परमेश्वर के चुने हुए” के रूप में वर्णित किया है। परमेश्वर के दास और मसीह के प्रेरित के रूप में उसका अपना लक्ष्य परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास को बढ़ाना, सत्य के ज्ञान को बढ़ावा देना और सच्ची भक्ति को उत्पन्न करना था।

चुने जाने से संबंधित सत्य जटिल और विवादास्पद दोनों हैं। कुछ लोग यह कल्पना करते हैं कि परमेश्वर ने आदम की पतित मानव जाति को देखकर कुछ लोगों को उद्धार के लिए चुन लिया और बाकी सबको अनन्त विनाश के लिए छोड़ दिया। परन्तु यह परमेश्वर कैसा होगा?

मान लीजिए किसी व्यक्ति के घर में आग लग जाती है और उसे पता चलता है कि उसके पाँच बच्चे उस घर में फँसे हुए हैं। मान लीजिए कि उसके पास सभी को बचाने की शक्ति थी, लेकिन उसने उनमें से केवल तीन को बचाने और बाकी को जलने देने का फैसला किया। वह कैसा राक्षसी स्वभाव का होगा?

इसी प्रकार, यदि परमेश्वर भी इसी प्रकार व्यवहार करता, तो वह कैसा परमेश्वर होता? चुनाव के सिद्धांत को समझने की एक कुंजी यह है कि यह परमेश्वर के पूर्वज्ञान पर आधारित है (1 पतरस 1:2)।

दूसरी कुंजी यह है कि चुनाव और पूर्वनियति इस बात को निर्धारित करने के लिए नहीं हैं कि कौन उद्धार पाएगा, बल्कि यह उस ऊँचे और पवित्र उद्देश्य से संबंधित हैं जिसे परमेश्वर ने उन सबके लिए ठहराया है जो उद्धार पाएँगे (रोमियों 8:29-30)।

जब चरम कैल्विनवाद मंच से उठकर सामान्य विश्वासियों के बीच पहुँचता है, तो कभी-कभी इसके बहुत गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

बाइबल स्पष्ट रूप से चुनाव और चुने जाने के विषय में बोलती है। लेकिन वह उतनी ही दृढ़ता से मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा, चयन करने की शक्ति, और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के बारे में भी बताती है।

यह कहना कि परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा दी है, और साथ ही यह कहना कि हम मसीह को स्वीकार करने के विषय में अपनी इच्छा का प्रयोग ही नहीं कर सकते—यह बिल्कुल निरर्थक बात होगी।

क्या मैंने उसे इसलिए चुना क्योंकि उसने मुझे चुना? या उसने मुझे इसलिए चुना क्योंकि मैंने उसे चुना? यही इस विषय का मूल प्रश्न है। यह प्रश्न तब अधिक समझ में आता है जब हम याद रखते हैं कि परमेश्वर वर्तमान काल में निवास करता है (निर्गमन 3:14; यूहन्ना 8:38)। वह “मैं हूँ” है। जहाँ तक परमेश्वर का संबंध है, उसका हमें चुनना और हमारा मसीह को चुनना—दोनों एक ही समय में घटित हुए, उस अनन्त वर्तमान में जहाँ वह निवास करता है। परमेश्वर के लिए भूतकाल भी अभी है और भविष्य भी अभी है। समय के तीन आयामों में तो हम मनुष्य रहते हैं। जब समय का तत्व इस विषय में प्रवेश करता है, तभी जटिलताएँ पैदा होती हैं।

चुनाव और विश्वास एक ही प्रक्रिया के दो भाग हैं। यूनानी नये नियम में विश्वास को प्रकट करने के लिए दो क्रियाएँ, दो संज्ञाएँ और एक विशेषण प्रयोग किए गए हैं। प्रत्येक का अपना विशेष अर्थ और बल है, परन्तु प्रत्येक अपने संबंधित शब्दों के साथ संतुलित भी है। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “विश्वास” किया गया है वह पिस्टिस है। पवित्र आत्मा हर शब्द का प्रयोग बड़ी सटीकता के साथ करता है, और पिस्टिस भी इसका अपवाद नहीं है। इसका संबंध उस विश्वास से है जो एक जीवित सिद्धांत के रूप में परमेश्वर ने मनुष्य की आत्मा में दैवीय रूप से स्थापित किया है।

हर किसी के पास विश्वास होता है, परन्तु हर किसी के पास उद्धार देने वाला विश्वास नहीं होता। मनुष्य के सभी व्यवहार किसी न किसी प्रकार के विश्वास पर आधारित होते हैं। हम एक भी दिन बिना विश्वास का प्रयोग किए नहीं बिता सकते। जब भी हम कोई पत्र डाक में डालते हैं, हम डाक विभाग पर विश्वास करते हैं। जब भी हम बैंक में पैसा जमा करते हैं, हम उस संस्था पर विश्वास करते हैं। जब भी हम कोई दवा लेते हैं, हम डॉक्टर और दवा देने वाले पर विश्वास करते हैं। जब भी हम किसी इमारत में प्रवेश करते हैं या

किसी पुल को पार करते हैं, तो हम उस ठेकेदार, इंजीनियर और निर्माता पर विश्वास करते हैं। हम ऐसा विश्वास स्वाभाविक रूप से और अनजाने में करते हैं। हम इसके बारे में शायद ही कभी सोचते हैं। केवल तब, जब हमारे विश्वास का आधार अविश्वसनीय लगता है, तब हमें सावधान रहने की आवश्यकता का एहसास होता है।

साधारण, दैनिक जीवन का विश्वास—जिसका हम हर पल हजारों तरीकों से प्रयोग करते हैं—उद्धार देने वाला विश्वास तब बन जाता है जब हम अपना विश्वास और भरोसा प्रभु यीशु मसीह पर रखते हैं। उस विश्वास में अपने आप में कोई विशेष अंतर नहीं होता; अंतर केवल इतना है कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न और सामर्थ्य से भरपूर वातावरण में कार्य करता है। वास्तविक अंतर हमारे विश्वास के विषय में है—और वह है प्रभु यीशु मसीह!

साधारण विश्वास को उद्धार देने वाले विश्वास में बदलने की प्रक्रिया में पवित्र आत्मा अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वही हमें हमारे पाप और हमारी खोई हुई अवस्था के बारे में बोध कराता है और हमें उद्धारकर्ता के विषय में शुभ समाचार को ग्रहण करने के लिए तैयार करता है। वही हमें प्रकाशित करता है और हमारा ध्यान मसीह की ओर आकर्षित करता है। वह हर व्यक्ति को ज्योति देता है (यूहन्ना 1:9)।

साधारण स्तर पर, कोई मित्र हमारा ध्यान किसी विशेष डॉक्टर, वस्तु या सेवा की ओर दिला सकता है जिसकी हमें आवश्यकता है। हम अपने मित्र की सच्चाई और उसके विश्वास से प्रभावित हो सकते हैं। परन्तु इससे बहुत लाभ नहीं होता—जब तक कि हम वास्तव में उस डॉक्टर के पास न जाएँ, उस वस्तु को न खरीदें, या उस सेवा का उपयोग न करें। उसी समय विश्वास कार्य करना शुरू करता है।

इसी प्रकार आत्मिक स्तर पर पवित्र आत्मा हमारा ध्यान परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के पुत्र की ओर ले जाता है। वह बाधाओं को दूर करता है, हमारे सवालों का समाधान करता है, और हमें मसीह के पास ले आता है। जिस क्षण हम मसीह पर विश्वास और भरोसा करते हैं, उसी क्षण पवित्र आत्मा हममें निवास करता है। हमारा विश्वास बढ़ता जाता है, क्योंकि वह स्वयं “विश्वास की आत्मा” (2 कुरिन्थियों 4:13) के द्वारा जीवित, सामर्थ्यवान और प्रोत्साहित किया जाता है, और जब हम उसे बार-बार प्रयोग में लाते हैं तो वह और भी बढ़ता है।

ख. वे एक चुनौती पाए हुए लोग हैं (1:1घ)

सत्य हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा दिया जाता है। चुने हुए (परमेश्वर के लोगों) की एक पहचान है—“सत्य को स्वीकार करना।” परमेश्वर के लोग बाइबल पर विश्वास करते हैं। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “पहचान के अनुसार” किया गया है, उसका अर्थ “पूर्ण या गहरा ज्ञान” अथवा “भली-भाँति परिचित होना” है।

चुने हुए लोग परमेश्वर के वचन को उसी रूप में पहचानते हैं जैसा वह वास्तव में है, और वे उससे अधिक से अधिक परिचित होने के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं, क्योंकि “विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है” (रोमियों 10:17)। उन्हें यह चुनौती दी जाती है कि वे अपने विश्वास को परमेश्वर के वचन से पोषित करें।

ग. वे एक परिवर्तित लोग हैं (1:1ङ)

“भक्ति” परमेश्वर के लोगों का अंतिम लक्ष्य है। यहाँ जिस शब्द का प्रयोग हुआ है वह यूसिबेइया है, जो उस शब्द का संज्ञा रूप है जिसका अर्थ है “धार्मिक या भक्तिपूर्ण होना, भ्रष्टा, आदर और सम्मान के साथ जीवन जीना।”

स्वभाव से मनुष्य भक्ति से भरा हुआ नहीं होता। हनोक ने अपने उस पीढ़ी के विरुद्ध अभक्ति के बारे में प्रचार किया था जो तेजी से न्याय के लिए तैयार हो रही थी (यहूदा 14-15)। लेकिन, धन्यवाद की बात यह है कि मनुष्य बदला जा सकता है।

धार्मिक होने और भक्त होने में बहुत बड़ा अंतर है। एक दुष्ट मनुष्य भी धार्मिक हो सकता है। यहाँ तक कि माफिया जैसे अपराधी संगठनों के सदस्य भी कभी-कभी धार्मिक पाए गए हैं। परन्तु कोई व्यक्ति वास्तव में भक्त तभी बन सकता है जब वह मसीह को स्वीकार करे, क्योंकि “भक्ति का भेद” उसी में प्रकट हुआ है और वही हमें प्रदान किया जाता है (1 तीमुथियुस 3:16)।

वास्तव में परमेश्वर ही विश्वासियों को “सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है” प्रदान करता है (2 पतरस 1:3)।

2. परमेश्वर का वादा (1:2)

विश्वासी के पास एक ऐसी आशा होती है जो अविश्वासी के पास नहीं होती—वह है “अनन्त जीवन की आशा।” अनन्त जीवन हमारी आशा का मूल आधार है। पौलुस कहता है कि यह अनन्त जीवन वही है “जिसका प्रतिज्ञा उस परमेश्वर ने की है जो झूठ नहीं बोल सकता।”

परमेश्वर की विश्वसनीयता और सत्यता ही हमारी आशा की सुरक्षा है।

“अनन्त जीवन” के विषय में पौलुस का उल्लेख हमें उस अनादि और समय से परे अतीत में ले जाता है—अर्थात् “पृथ्वी के आरम्भ से पहले।” हम कल्पना करते हैं कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा आपस में परामर्श कर रहे हैं और सृष्टि की रचना करने का निर्णय ले रहे हैं। अपनी सर्वज्ञता में, वे जानते थे कि जब वे सृष्टि की रचना करेंगे, तब एक समय ऐसा भी आएगा जब उन्हें उद्धार के कार्य में भी हस्तक्षेप करना होगा। उन्होंने पहले से ही शैतान के पतन, मनुष्य के पतन, और उसके बाद मानव जाति के विनाशकारी पतन को जान लिया था। इसलिए उन्होंने एक उद्धार की योजना स्थापित करने का निश्चय किया—ऐसी योजना जो पतित मानव जाति को अनन्त जीवन से कम कुछ भी प्रदान नहीं करेगी।

यह योजना संसार के आरंभ से पहले ही बना ली गई थी। निश्चित रूप से, अदन की वाटिका में आदम और हव्वा सर्प के बहकावे में आ गए और पाप में पड़ गए। ईश्वरीय उद्देश्य के अनुरूप, परमेश्वर स्वयं अदन की वाटिका में उतर आया। सर्प को बुलाया गया और उसे दंडित किया गया, जबकि दोषी जोड़ा परमेश्वर के निर्णय की प्रतीक्षा में खड़ा था। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि उनका मामला शुरू करने से पहले, परमेश्वर ने उनके हृदयों को अनन्त जीवन की आशा से भर दिया। सर्प का न्याय करते हुए, उसने पवित्रशास्त्र की पहली महान भविष्यवाणी की, एक ऐसी भविष्यवाणी जिसने एक उद्धारकर्ता के आगमन की घोषणा की। उसने कहा कि “स्त्री का वंश” एक दिन उनके भयानक शत्रु को अपने पैरों तले कुचल देगा। आदम और हव्वा ने जो वास्तविक शब्द सुने, वे ये थे: “और मैं तेरे (सर्प) और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश

और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)। यह भविष्यवाणी अनन्त जीवन का बीज वचन थी— सर्प के लिए तो अनन्त विनाश जबकि उनके लिए अनन्त जीवन।

पतन से पहले, आदम और हव्वा के पास प्राकृतिक जीवन था। निस्संदेह, यदि उन्होंने पाप न किया होता तो यह अनिश्चित काल तक बना रह सकता था, लेकिन फिर भी यह प्राकृतिक जीवन ही होता। पतन के बाद उनके पास अब अनंत जीवन की एक आशा थी। अनंत जीवन की अवधारणा केवल मात्रात्मक (अंतहीन जीवन) ही नहीं है, बल्कि गुणात्मक भी है (एक नए आयाम में जीवन, जीवन जो वास्तव में जीवन है, जीवन जिसे परमेश्वर जानता है, स्वयं परमेश्वर का जीवन)। इस प्रतिज्ञा में आत्मिक जीवन, पुनरुत्थान के जीवन के साथ-साथ अनंत जीवन भी शामिल है। इसके अलावा, अनंत जीवन के साथ "एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास, जो स्वर्ग में रखी है" और "जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है" (1 पतरस 1:4, 8) भी आता है।

3. परमेश्वर का प्रचारक (1:3)

क. सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर के साधन (1:3क-ख)

(1) चुना हुआ पल (1:3क)

परमेश्वर अपने उद्देश्यों और प्रतिज्ञाओं को मनुष्यों तक दैवीय प्रकाशन के द्वारा प्रकट करता है, और वह ऐसा ठीक समय पर करता है। “ठीक समय” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द इडियोस कईरोस है जिसका अर्थ समय या अवधि से है जिसमें कुछ विशेष गुण होते हैं। यहाँ यह उन अवधियों की ओर संकेत करता है जब मानव जाति के साथ परमेश्वर के व्यवहार में परिस्थितियाँ अपने चरम पर पहुँचती हैं और एक नए युग के आगमन की घोषणा करती हैं। ठीक समय पर, परमेश्वर बोलता है और कार्य करता है, ताकि वह मानवीय मामलों पर अपने नियंत्रण को प्रदर्शित कर सके।

इस प्रकार परमेश्वर ने आदम और हव्वा से उनके पतन के बाद बात की; उसने उनके सामने उन नई परिस्थितियों को स्पष्ट किया जिनके अधीन उन्हें आगे जीवन बिताना था, और साथ ही उन्हें अनन्त जीवन की आशा भी दी। परमेश्वर ने नूह से भी इसी प्रकार बात की—उसने आने वाले क्रोध के विषय में उसे चेतावनी दी, साथ ही बच निकलने का एक मार्ग प्रदान किया, जलप्रलय में कार्य किया, और उसके बाद पृथ्वी पर शासन की एक नई व्यवस्था स्थापित की। परमेश्वर ने अब्राहम से भी इसी प्रकार बात की; उसने उसे बहुत सी जातियों का पिता बनाने का वचन दिया और उसे एक पुत्र दिया। उसने उसे मसीह की ओर संकेत किया और उसे इस्राएल जाति का पिता बनाया।

परमेश्वर ने दाऊद से भी इसी प्रकार बात की और एक ऐसा वंश स्थापित किया जो मसीह के आने तक एक हजार वर्षों तक चलता रहा। इस प्रकार बार-बार परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पितरों से बात की, विशेषकर इब्रानी लोगों के इतिहास के बड़े संकटों के दौर में। अंत में, परमेश्वर ने मसीह में और उसके प्रेरितों के द्वारा बात की।

नये नियम के पूर्ण होने के बाद से, पृथ्वी पर एक लंबी और नियमित सत्राटा छा गया। परमेश्वर ने अभी के लिए हमसे जो कुछ कहना था, वह सब कह दिया है। हमारे पास उसका वचन है, और हमें उसी में संतुष्ट रहना चाहिए।

परन्तु, “उचित समय” पर परमेश्वर फिर से बोलेगा। विचारशील लोगों ने परमेश्वर की इस लंबी, दो हजार वर्षों की चुप्पी पर आश्चर्य किया है और उसे बोलने की चुनौती दी है। कुछ लोग इससे निराश हो गए हैं और (जैसे अपने समय में राजा शाऊल ने किया) अजीब, निषिद्ध और खतरनाक द्वारों पर दस्तक दी है, इस आशा में कि उससे कोई उत्तर प्राप्त हो।

वास्तव में, इस युग में परमेश्वर की यह चुप्पी उसके महान धीरज का प्रमाण है; जब वह अंत में बोलेगा, तो वह न्याय और क्रोध में बोलेगा।

(2) चुना हुआ तरीका (1:3ख)

सामान्यतः, परमेश्वर अपने उद्देश्यों और प्रतिज्ञाओं को मनुष्यों तक मनुष्यों के द्वारा पहुँचाता है। वह नई सच्चाई प्रकट करने के लिए प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को उठाता है और उस सच्चाई को फैलाने के लिए प्रचारकों को नियुक्त करता है।

सुसमाचार में निहित सत्य अब तक की सबसे महत्वपूर्ण और अद्भुत धारणाएँ हैं। सुसमाचार के अधिकांश मूलभूत तथ्यों की भविष्यवाणी पुराने नियम में प्रकारों और भविष्यवाणियों के द्वारा पहले ही की गई थी।

नये नियम के सत्य और भी अधिक आश्चर्यजनक हैं; वे यीशु के अलौकिक जन्म के चारों ओर केन्द्रित हैं— वह परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्तित्व है, जो अनन्त, अविनाशी और स्वयं अस्तित्व रखने वाला है। उसने जन्म लेकर मानव जीवन में प्रवेश किया। वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया और मरियम नाम की एक कुँवारी से जन्मा।

नये नियम के सत्य यीशु के बिना पाप के जीवन के चारों ओर घूमते हैं; उसकी महान और अनुपम शिक्षाएँ; उसके असंख्य महान चमत्कार; उसकी प्रायश्चित मृत्यु; उसका गाड़ा जाना और कब्र में उसके शरीर का अलौकिक संरक्षण; उसका शारीरिक पुनरुत्थान; उसका स्वर्गारोहण; स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर महान महायाजक के रूप में उसकी वर्तमान सेवाकाई और उसका फिर से आना।

ये इतने चौंकाने वाले सत्य हैं कि हम अपेक्षा कर सकते थे कि परमेश्वर उन्हें प्रकट करने के लिए उतने ही अद्भुत साधनों का उपयोग करता। वह बारह पलटन स्वर्गदूतों को भेज सकता था, कि वे समस्त विरोध को दूर कर दें और यरूशलेम के मन्दिर के शिखर से, एथेंस के मार्स पहाड़ से, रोम के सभा-स्थान से, और पृथ्वी के प्रत्येक उच्च स्थान से इस सन्देश का प्रचार करें। वह एक दृढ़ आज्ञा भी प्रकट कर सकता था। परन्तु परमेश्वर की योजना भिन्न थी—उसने इन महान और अनन्त सत्यों को थोड़े से मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया, जिनमें से अधिकांश अशिक्षित और साधारण लोग थे, जो एक तुच्छ समझे जाने वाले प्रान्त और दयनीय स्थिति वाले देश से थे। उन्हें इन सत्यों को “प्रचार के द्वारा” प्रकट करना था।

यहाँ “प्रचार” के लिए अनूदित शब्द स्वयं प्रचार करने की क्रिया पर नहीं, बल्कि जो कुछ प्रचार किया जाता है उसके सार पर बल देता है। प्रचार सत्य को पहुँचाने का एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन है।

योना के प्रचार के द्वारा नीनवे नगर ने अपने आप को नम्र किया। पतरस के प्रचार के द्वारा एक ही दिन में तीन हजार आत्माओं ने उद्धार पाया। कहा जाता है कि स्कॉटलैंड की महारानी मरियम, इंग्लैंड की समस्त सेनाओं से अधिक जॉन नॉक्स के प्रचार से डरती थी। जॉन वेस्ली के प्रचार ने इंग्लैंड में जागृति की लहर पैदा कर दी और देश को फ्रांसीसी क्रांति की भयानक परिणामों से बचा लिया।

परमेश्वर ने “अपने वचन को प्रचार के द्वारा प्रकट किया है।” प्रचार! हाँ, निःसन्देह, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में किया गया प्रचार। ऐसा प्रचार अपने भीतर अलौकिक तत्व रखता है। पवित्र आत्मा पृथ्वी पर उसके परिणामों की देखभाल करता है। वही लोगों के मन, हृदय, विवेक और इच्छा में दोषी ठहराने, परिवर्तन लाने और समर्पण कराने का कार्य करता है।

ख. सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर का जन (1:3ग-घ)

(1) एक समर्पण (1:3ग)

पौलुस ने यह पहचाना कि परमेश्वर ने नये नियम के महान सत्यों को उसके हाथों में “सौंपा” है। सुसमाचार के ऐतिहासिक तथ्य मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के पास सुरक्षित थे। मसीही जीवन के व्यवहारिक पक्ष पतरस, याकूब, यूहन्ना और यहूदा को सौंपे जा सकते थे। परन्तु इन सब के धर्मवैज्ञानिक अर्थ और गहन सत्य पौलुस को सौंपे गए थे। यह बौद्धिक प्रतिभा एक साथ यहूदी रब्बी, यूनानी विद्वान और रोमी नागरिक था। इस प्रकार सुसमाचार, जो सम्पूर्ण संसार के लिए था, एक सच्चे विश्व-नागरिक को सौंपा गया।

पवित्र आत्मा की प्रेरणा और प्रकाशन के अंतर्गत, पौलुस ने विश्वास के सिद्धान्तों को दृढ़ता से स्थापित किया। उसी को पवित्र आत्मा ने मसीह के क्रूस के भेद को (देखें—रोमियों, 2 कुरिन्थियों और गलातियों), मसीह की कलीसिया के भेद को (देखें—इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों), और मसीह के आगमन के भेद को (देखें—1 और 2 थिस्सलुनीकियों) प्रकट किया।

पौलुस ने कहा, यह सब “मुझे सौंपा गया”—और यहाँ “मुझे” शब्द पर विशेष जोर दिया गया है।

(2) एक आज्ञा (1:3घ)

इस सौंपे जाने के साथ “आज्ञा” भी आई। पौलुस जानता था कि वह अधिकार के अधीन एक मनुष्य है। उसे अपनी आज्ञाएँ प्राप्त हो चुकी थीं। इसके अतिरिक्त, उसके भीतर यह विवशता थी कि हर सम्भव तरीके से उसे सौंपे गए सत्यों को प्रकट करे। उसने कहा, “यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!” (1 कुरिन्थियों 9:16)।

पौलुस ने तीतुस से अपेक्षाएँ रखीं, और तीतुस को यह जल्दी ही याद आ जाता कि पौलुस पर भी अपेक्षाएँ रखी गई थीं। उसने तीमुथियुस और तीतुस जैसे सहकर्मियों से अपेक्षाएँ इसलिए नहीं रखीं कि वह अपनी जिम्मेदारियों से बच सके, बल्कि इसलिए कि वह एक समय में एक से अधिक स्थानों पर उपस्थित नहीं हो सकता था।

यह “आज्ञा,” जिसे पौलुस ने अत्यन्त प्रभावशाली पाया, उस पर “हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर” के द्वारा रखी गई थी (तीतुस 1:3; यही उपाधि 1 तीमुथियुस 1:1; 2:3; तीतुस 2:10; 3:4; यहूदा 25 में भी मिलती है)। यह

उपाधि, जो मसीह की दैवीयता की पुष्टि करती है, सबसे पहले मरियम के स्तुति-गीत में प्रयुक्त हुई (“मेरा उद्धारकर्ता परमेश्वर,” लूका 1:47)।

“उद्धारकर्ता” शब्द यहाँ प्रभु यीशु मसीह के लिए प्रयोग किया गया है। यह कभी-कभी परमेश्वर के लिए (1 तीमुथियुस 1:1) और प्रायः मसीह के लिए (लूका 2:11; तीतुस 1:4) प्रयुक्त होता है। यह शब्द तीतुस की इस छोटी पत्री में लगभग आधा दर्जन बार आता है (तीतुस 1:3-4; 2:10, 13; 3:4, 6)।

ग. पौलुस का पुत्र (1:4)

1. तीतुस : पौलुस का प्रिय (1:4क-ख)

क. तीतुस के मन-परिवर्तन का अनूठा तत्व (1:4क)

पौलुस ने यह पत्री “तीतुस, मेरा सच्चा पुत्र” संबोधित करते हुए लिखा। “मेरा सच्चा पुत्र” का अनुवाद “मेरा निज पुत्र” भी किया जा सकता है। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद “निज/सच्चा” किया गया है, उसका अर्थ “वैध” या “वास्तविक” है।

प्रेरित पौलुस के हजारों परिवर्तित लोग थे, परन्तु बहुत ही थोड़े ऐसे थे जिन्हें वह “मेरा [विशेष जोर] सच्चा पुत्र” कहता था। तीतुस उनमें से एक था, और तीमुथियुस दूसरा। 1 तीमुथियुस 1:2 में लिखा है, “विश्वास में मेरा [विशेष बल] सच्चा पुत्र।”

तीमुथियुस और तीतुस दोनों अद्वितीय थे; पौलुस के मन और हृदय में वे उसके अन्य सभी परिवर्तित जनों से अलग स्थान रखते थे। इन दोनों युवकों और महान प्रेरित के बीच एक विशेष सह-बन्धन था। निस्संदेह, वह उनके प्रेम, निष्ठा, तत्परता, सहयोग और सहायतापूर्ण स्वभाव को अत्यन्त मूल्यवान समझता था।

ख. तीतुस के मन-परिवर्तन में सार्वभौमिक तत्व (1:4ख)

हालाँकि, तीतुस का उद्धार उसी प्रकार हुआ था जैसे किसी और का होता है—“सामान्य विश्वास के अनुसार।” यहाँ “सामान्य” के लिए प्रयुक्त शब्द कोइनोस है, जो यह दर्शाता है कि यह विश्वास सबके साथ साझा किया हुआ है।

हम सब एक ही प्रकार से उद्धार पाते हैं: “क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।” (इफिसियों 2:8-9)।

निःसंदेह, पौलुस के द्वारा मसीह के पास लाया जाना एक बड़े सम्मान की बात थी। परन्तु पौलुस ने बहुत पहले ही लोगों को अपने प्रिय कलीसियाई अगुवों पर घमण्ड करने के विरुद्ध चेतावनी दी थी (1 कुरिन्थियों 1:10-13)। उद्धारकर्ता केवल एक ही है। हमारे प्रिय सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक हमारे हृदय में सम्मान का स्थान ज़रूर रख सकते हैं, परन्तु जब हम उस एक के विषय में सोचते हैं जिसने इतनी महान कीमत देकर हमारे सामान्य उद्धार को हमारे लिए उपलब्ध कराया, तब वे सब सूर्य के सामने मोमबत्ती के समान फीके पड़ जाते हैं।

2. तीतुस : पौलुस द्वारा आशीषित (1:4ग-च)

क. दी गई आशीष (1:4ग-ड)

“अनुग्रह, दया और शान्ति” वह आशीष थी जो तीतुस को दी गई। यही आशीष पौलुस ने तीमुथियुस को भी दी थी (1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2)।

अनुग्रह शब्द हमें परमेश्वर पुत्र के प्रावधान की याद दिलाता है। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 8:9 में “हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह” के बारे में लिखा: “वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।”

“दया” शब्द हमें परमेश्वर पिता की संरक्षण देने वाली करुणा की याद दिलाता है। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 1:3 में उन्हें “दया का पिता” कहा है।

बाइबल में “दया” का अर्थ है दोषी और अयोग्य लोगों के प्रति करुणा और तरस की भावना को प्रकट करना। परमेश्वर की दया अनेक स्थानों पर बड़े प्रभावशाली रूप में प्रकट होती है (“करुणा और दया,” भजन संहिता 103:4)।

परमेश्वर की दया के पीछे उसकी सारी सामर्थ्य कार्य करती है, और उसकी करुणा के पीछे उसका पूरा दयालु स्वभाव प्रकट होता है।

घोंसले के ऊपर मँडराता हुआ उकाब परमेश्वर की दया का एक चित्र प्रस्तुत करता है, जो उसकी महान और भयानक सामर्थ्य से जुड़ी हुई है। उकाब अपनी चोंच और पंजों की शक्ति, तेज दृष्टि, बड़े पंखों के फैलाव और ऊँची व तेज उड़ान की सामर्थ्य के लिए जाना जाता है।

मूसा ने अपने मन में ऐसे ही एक उकाब के चित्र को देखा। परन्तु उसने उसमें कठोरता नहीं, बल्कि कोमलता देखी। उसने देखा कि आकाश का वह शक्तिशाली पक्षी अपने बच्चों के साथ व्यस्त है—वह अपने घोंसले को हिलाता है, अपने बच्चों के ऊपर मँडराता है, और फिर अपने पंख फैलाकर उन्हें उठाकर ले जाता है (व्यवस्थाविवरण 32:11)।

घोंसले में बैठे छोटे बच्चे उसकी तेज चोंच और चमकीली आँखों को देखते थे, फिर भी उन्हें कोई डर नहीं लगता। उनके लिए वह शक्तिशाली उकाब, जिसमें चीरने-फाड़ने की ताकत थी, केवल प्रेम से भरा हुआ था। इस प्रकार उकाब महान शक्ति और कोमल प्रेम का एक मिला-जुला चित्रण है; यही परमेश्वर पिता की सुरक्षा और दया को भी दर्शाता है।

“शान्ति” शब्द हमें पवित्र आत्मा के कार्य का परिणाम याद दिलाता है। परमेश्वर के साथ शान्ति हमारे लिए कलवरी पर खरीदी गई थी, परन्तु परमेश्वर की शान्ति—वह शान्ति जो “सब समझ से परे है” (फिलिप्पियों 4:7), वह शान्ति जो संसार नहीं दे सकता (यूहन्ना 14:27), और वह शान्ति जिसे संसार कभी छीन नहीं सकता (यूहन्ना 16:32-33)—वह हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा का फल है (गलातियों 5:22)।

पौलुस ने युवा तीतुस को क्रेते द्वीप पर अपना कार्यभार संभालते समय ऐसी ही आशीष दी थी।

ख. आशीष की निश्चितता (1:4च)

आशीष और आशीर्वाद को बोलना आसान होता है, तो तीतुस कैसे इस बात को जाने कि पौलुस के शब्द केवल एक धार्मिक कथन से बढ़कर हैं? इसमें एक आश्वासन निहित था: पौलुस ने स्पष्ट किया कि यह आशीष उसकी ओर से नहीं, बल्कि “परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की ओर से” है। पिता और पुत्र, जो ऊँचे स्वर्ग में ब्रह्माण्ड के सिंहासन पर एक साथ विराजमान हैं, और जिनके अधीन सम्पूर्ण दैवीय सामर्थ्य है, उन्होंने मिलकर यह अनुग्रह, दया और शान्ति प्रदान की है। यह बैंक में रखे बड़े धन से भी उत्तम है, स्वर्गदूतों की सेना द्वारा संरक्षित किए जाने से भी बढ़कर है, और सम्राट कैसर के महल में मित्र होने से भी श्रेष्ठ है। तीतुस पूर्ण रूप से निश्चिन्त हो सकता था।

भाग 6.

स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों की नियुक्ति

तीतुस 1:5-9

क. प्राचीनों को पारिवारिक पुरुष होना चाहिए (1:5-6)

1. पौलुस का अधिकार प्रकट किया गया (1:5)

पौलुस ने तीतुस को लिखे अपनी पत्री में प्राचीनों के विषय में उतना विस्तार से नहीं लिखा जितना उसने तीमुथियुस को लिखे अपने पहली पत्री में किया था। तीमुथियुस एक मजबूत और स्थापित व्यवस्था का सामना कर रहा था, इसलिए उसे इफिसुस में अपने अधिकार के लिए अधिक प्रेरिताई समर्थन की आवश्यकता थी, जबकि तीतुस को क्रेते में इतनी आवश्यकता नहीं थी, जहाँ स्थानीय कलीसिया कुछ हद तक अव्यवस्थित प्रतीत होती थी। संभवतः तीमुथियुस, अपने संकोची स्वभाव के कारण, अपने कार्यों के समर्थन के लिए अधिक प्रमाण चाहता था, जबकि अधिक दृढ़ स्वभाव वाले तीतुस को इसकी उतनी आवश्यकता नहीं थी। किसी भी स्थिति में, पौलुस ने तीतुस को इस विषय का केवल संक्षिप्त रूपरेखा ही दी। प्रेरित ने इन बातों पर मानो नियम स्थापित करते हुए, पहले अपने अधिकार को प्रकट करके आरंभ किया।

क. निर्णय (1:5क)

“मैं इसलिए,” पौलुस ने तीतुस को लिखा, “तुझे क्रेते में छोड़ आया था।” यह पहला संकेत है कि पौलुस और तीतुस ने उस द्वीप पर कुछ समय साथ बिताया था। उस समय के दौरान, उन्होंने वहाँ के लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया और कलीसियाओं की स्थापना की।

क्रेते द्वीप ललगभग 140 मील लंबा और 30 मील चौड़ा है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार इसका क्षेत्रफल 3,189 वर्ग मील है। यह भूमध्य सागर की एजीयन शाखा में स्थित है।

इस द्वीप पर सेवकाई करते समय, पौलुस कुछ स्थानों को देखने में विशेष रुचि रखता होगा। ऐसा ही एक स्थान था “शुभलंगरबारी” का स्थल, जहाँ उसने पहले कुछ चिंताजनक समय बिताया था। दूसरा स्थान था

फीनिक्स का बन्दरगाह, जहाँ उसका तूफान में फँसा जहाज कभी पहुँच नहीं पाया (प्रेरितों के काम 27:7-15)।

बहुत सम्भव है कि पौलुस ने अपनी सामान्य रीति के अनुसार स्थानीय आराधनालयों में अपने प्रचार कार्य की शुरुआत की हो, परन्तु इसकी संभावना नहीं लगती कि उसे वहाँ बहुत सफलता मिली हो। उस समय तक, वह यहूदियों के बीच इतना प्रसिद्ध हो चुका था कि वह किसी आराधनालय में अचानक जाकर प्रभाव नहीं जमा सकता था।

वह द्वीप पर जहाँ-जहाँ मसीही समूह मिल सकते थे, उनसे अवश्य मिला होगा। उसने घर-घर जाकर भेंट करने का कार्य पूरी लगन से किया होगा, और जहाँ कहीं लोग इकट्ठे हो सकते थे, वहाँ उसने सुसमाचार का प्रचार किया होगा। रोम में नीरो के सत्ताव के आरम्भ ने उसे यह अहसास दिलाया होगा कि उसके पास समय बहुत कम है, और इससे उसके भीतर एक नई तत्परता उत्पन्न हुई होगी।

ऐसा लगता है कि पौलुस द्वीप पर उतना समय नहीं रुका जितना वह चाहता था। इफिसुस की परिस्थितियों ने उसे चिंतित किया, मकिदुनिया उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, और वह कुरिन्थ जैसी अन्य कलीसियाओं का भी दौरा करना चाहता था। इसलिए वह मिलेतुस के लिए रवाना हुआ और क्रेते में अपने कार्य को सुदृढ़ करने के लिए तीतुस को वहीं पीछे छोड़ आया।

यहाँ "छोड़ आया" के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह किसी को अस्थायी रूप से पीछे छोड़ने का संकेत देता है। हम 2 तीमुथियुस 4:10 से जान पाते हैं कि तीतुस को स्थायी रूप से नहीं छोड़ा गया था। जब पौलुस ने 2 तीमुथियुस 4:10 लिखा, तब तीतुस दलमतिया की ओर जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने तीतुस को क्रेते में एक अस्थायी प्रेरितिक प्रतिनिधि के रूप में छोड़ा था, न कि एक स्थायी "अध्यक्ष" या "बिशप" के रूप में। यह तथ्य कि पौलुस स्थानीय कलीसियाओं की स्वतंत्रता में विश्वास करता था, और उसने तीतुस को स्थानीय कलीसियाओं में प्राचीनों को नियुक्त करने का दायित्व सौंपा था, इस बात को और मजबूत करता है कि पौलुस ने तीतुस को क्रेते में केवल कुछ समय के लिए ही छोड़ा था।

ख. अव्यवस्था (1:5ख)

पौलुस ने आगे कहा, "मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष बातों को सुधारे।" "सुधारे" शब्द नये नियम में केवल यहीं आता है और इसका अर्थ है "किसी अव्यवस्थित चीज़ को फिर से ठीक करना।" चिकित्सा लेखकों ने इस शब्द का प्रयोग टूटे हुए अंगों को ठीक करने के लिए किया था।

जब पौलुस ने क्रेते छोड़ने का फैसला किया, तो वह जानता था कि द्वीप पर उसका काम अभी पूरा नहीं हुआ है और तीतुस को ही सब कुछ ठीक करना होगा। यह कोई छोटा काम नहीं होगा। द्वीप पर कलीसियाओं के बिखरने की प्रवृत्ति संभवतः किसी और कारण से नहीं बल्कि लोगों के राष्ट्रीय चरित्र के कारण थी।

ग. रोकने वाला (1:5ग)

द्वीप पर कलीसियाओं में फैली अव्यवस्था को दूर करने के लिए, तीतुस को “हर नगर में प्राचीनों को नियुक्त करना” था। “नियुक्ति” शब्द का अनुवाद आम तौर पर “किसी को अधिकार के पद पर नियुक्त करना” होता है।

ऐसे स्थान पर जहाँ लोगों में स्वाभाविक रूप से अशांति की प्रवृत्ति थी, कलीसियाओं को व्यवस्था स्थापित करने के लिए एक दृढ़ हाथ, वास्तव में पौलुस के कद के किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी। यह तथ्य कि तीतुस पौलुस के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहा था और उसे प्राचीनों के पदग्रहण की देखरेख का अधिकार दिया गया था, संभवतः द्वीप पर पहले से ही सबको पता था। यह पत्री तीतुस को अतिरिक्त अधिकार प्रदान करता है। यदि कोई उसे चुनौती देना चाहता, तो तीतुस के पास पौलुस के हस्ताक्षर वाला एक पत्र होता, जो इस बात का दस्तावेज़ी प्रमाण होता कि वह अन्यजातियों के लिए महान प्रेरित का आधिकारिक प्रतिनिधि था।

घ. प्रतिनिधि (1:5घ)

अपने प्रतिनिधि की ओर मुड़ते हुए, पौलुस ने यह वाक्य जोड़ा, “मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।” हम कल्पना कर सकते हैं कि तीतुस पूरे द्वीप पर घूम रहा था, हर शहर में कलीसिया का पता लगा रहा था, और चुपचाप कलीसिया की देखभाल के लिए आवश्यक योग्यता वाले पुरुषों की तलाश कर रहा था। यह उस युवा व्यक्ति के लिए कोई छोटा काम नहीं था।

2. माता-पिता के अधिकार का सम्मान (1:6)

भावी प्राचीन : एक व्यक्ति के रूप में (1:6क)

पौलुस ने तीतुस को उसके कार्य में मार्गदर्शन देने के लिए कुछ सरल नियम बताए। सबसे पहले, उसे ऐसे लोगों को देखना था जो “निर्दोष” हों—ऐसे लोग जिन पर कोई दोष न लगा सके। उनका चरित्र निष्कलंक होना चाहिए था।

जब द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, तब दक्षिण वेल्स में मेरे पिता का छोटा ऑटोमोबाइल व्यवसाय लगभग दिवालिया हो चुका था। सरकार ने जितने भी निजी वाहनों पर कब्जा कर सकती थी, उन सभी को अपने नियंत्रण में ले लिया और पेट्रोल का ऐसा राशन किया कि युद्ध कार्य के अलावा सभी निजी कारों वास्तव में लगभग बंद हो गईं। मेरे पिता अपनी वर्कशॉप में इधर-उधर टहलते हुए प्रार्थना करते रहे और सोचते रहे कि क्या किया जाए।

उसी समय के आसपास, एक परिचित, जो एक बड़ी ऑटोमोबाइल किराये की कंपनी चलाता था, उनसे मिलने आया। वह जानता था कि मेरे पिता एक कुशल मैकेनिक थे। उसने कहा, “लेन, हमारे पास लगभग दो सौ कारें हैं। हम युद्ध खत्म होने तक उन्हें बदल नहीं सकते, इसलिए हमें उन्हें मरम्मत में बनाए रखना होगा। सरकार हमें पुर्जे उपलब्ध कराएगी क्योंकि हमारी कारें युद्ध कार्य के लिए किराये पर दी जाती हैं। यदि हम पुर्जे उपलब्ध कराएं तो क्या तुम हमारे लिए इंजन को रीबोर और पुनर्निर्माण कर सकते हो?” यह एक राहत की बात थी।

अगले दिन, एक इंजन मेरे पिता की वर्कशॉप में लाया गया, साथ में यह निर्देश दिए गए कि उसे खोलकर अलग किया जाए, ब्लॉक को रीबोर किया जाए, और डीलर द्वारा दिए गए नए पुर्जों के साथ उसे फिर से बनाया जाए। कुछ दिनों बाद, डीलर उस इंजन को ले गया, और लगभग एक हफ्ते तक फिर कुछ नहीं हुआ।

फिर वह डीलर वापस आया। उसने कहा, "अच्छा, लेन, मैं तुम्हें बताता हूँ कि हमने क्या किया। हम उस पुनर्निर्मित इंजन को अपनी ही वर्कशॉप में ले गए और उसे फिर से खोलकर अलग किया। हम देखना चाहते थे कि क्या तुम ईमानदार हो। हम यह जानना चाहते थे कि क्या तुमने सभी पुराने पुर्जों को नए पुर्जों से बदला है कि नहीं। हमें कई अन्य छोटी वर्कशॉप ने धोखा दिया है, लेकिन तुमने पूरी ईमानदारी दिखाई है। हम तुम्हारे पास हर हफ्ते दो या तीन इंजन लाएंगे।"

यही वह बात है जिससे सीधाई बनती है। सीधाई ही वह गुण है जिससे सभी मसीहियों का निर्माण होना चाहिए, विशेषकर उन लोगों का जो कलीसिया में प्राचीन और अगुवाई के लिए नियुक्त किए जाने वाले हैं।

ख. भावी प्राचीन : एक सहभागी के रूप में (1:6ख)

एक प्राचीन को "एक ही पत्नी का पति" होना चाहिए। "पति" के लिए प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ "एक वयस्क पुरुष" है और यह एक सम्मानित व्यक्ति होने का विचार प्रकट करता है। जब इस शब्द का उपयोग "पति" के अर्थ में किया जाता है, तो यह एक सम्मानजनक उपाधि प्रदान करता है।

यहाँ पौलुस कहता है कि एक आदर्श प्राचीन का विवाहित होना आवश्यक है। जीवन में कई ऐसे पाठ हैं जिन्हें एक अविवाहित पुरुष कभी नहीं सीख सकता। वह विवाहित पुरुषों और उनके आनंद, समस्याओं और संभावनाओं का अध्ययन तो कर सकता है, लेकिन उसे जो भी जानकारी मिलती है, वह परोक्ष होती है। वह पुस्तकें खरीद सकता है, वीडियो देख सकता है, विवाह-परामर्श सेमिनारों में भाग ले सकता है, और यहाँ तक कि विवाह में पुरुष की भूमिका पर भाषण भी दे सकता है। लेकिन यदि वह स्वयं कभी विवाहित नहीं रहा, तो वह अपने व्यक्तिगत अनुभव से कभी नहीं बोल सकता।

कुछ साल पहले, एक महिला विद्यालय की डीन ने एक लोकप्रिय पत्रिका के लिए मातृत्व पर एक लेख लिखा। उसने अपने विद्यालय से गुजरने वाली सैकड़ों छात्राओं का अवलोकन किया था, उनमें से कई से उनके घरेलू जीवन के बारे में बात की थी, और उनके विवाह के बाद भी कई स्नातकों के साथ पत्राचार बनाए रखा था। कई वर्षों में उसने अपने पास कहानियों और आँकड़ों का एक बड़ा संग्रह इकट्ठा कर लिया था। अंततः उसने अपना लेख लिखा। उसके प्रकाशित होने पर स्थानीय स्तर पर कुछ मनोरंजन अवश्य उत्पन्न हुआ, क्योंकि यद्यपि वह एक अच्छी, सक्षम और कुशल डीन थी, फिर भी वह अविवाहित थी। यदि वह स्वयं एक माँ होती, तो मातृत्व पर लिखने के लिए वह बेहतर स्थिति में होती। उत्तम तरीके से लिखे गए सिद्धांत अक्सर व्यवहार में आकर बिखर जाते हैं।

इसलिए पवित्र आत्मा यह अपेक्षा करता है कि एक प्राचीन विवाहित हो। विवाह केवल आनंद ही नहीं, बल्कि अनुशासन भी लाता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्रेम और निष्ठा का अभ्यास किया जा सकता है, जहाँ व्यक्तिगत संबंधों के पाठ सीखे जा सकते हैं, जहाँ सिद्धांतों की परीक्षा अनुभव की कसौटी पर होती है, जहाँ सीमाओं का पालन करना पड़ता है, और जहाँ नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। जो

व्यक्ति एक अच्छा पति होना नहीं सीख पाया—अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य, अच्छा पालन-पोषण करने वाला, आत्मिक अगुवा, और अपनी पत्नी से वैसे प्रेम करने वाला जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया—तो वह प्राचीन बनने के योग्य नहीं है।

कुछ लोग इस पद में तलाक के मुद्दे को शामिल कर देते हैं। इस विषय पर नये नियम में अन्य स्थानों पर चर्चा की गई है (जैसे, मत्ती 19; 1 तीमथियुस 3:2), और यहाँ इसका कोई उल्लेख नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पौलुस के मन में बहुविवाह का विषय है, क्योंकि पुराने नियम में इसे परमेश्वर द्वारा व्यापक रूप से सहन किया गया था।

ग. भावी प्राचीन : एक अभिभावक के रूप में (1:6ग-घ)

एक प्राचीन के "बच्चे विश्वासी हों, और उनमें लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो।" "विश्वासी" के लिए प्रयुक्त शब्द यह संकेत देता है कि वे बच्चे प्रभु पर विश्वास करने वाले बन चुके हैं। यदि किसी प्राचीन ने अपने बच्चों को प्रभु तक पहुँचाया है, तो उसका घर प्राचीन के सुसमाचार संबंधी पहलुओं के लिए उसका एक प्रशिक्षण-स्थल रहा है। एक व्यक्ति की गवाही और उसका उदाहरण कम से कम उसके अपने बच्चों को तो प्रभावित करना ही चाहिए।

नूह एक अच्छा उदाहरण है। वह "धार्मिकता का प्रचारक" था (2 पतरस 2:5) और उसने 120 वर्षों तक प्रचार किया। यद्यपि उसने अपने निकट परिवार के बाहर किसी का भी हृदय परिवर्तित नहीं कर पाया, फिर भी उसके परिवार के सभी आठ सदस्यों ने उसकी चेतावनियों पर ध्यान दिया और जहाज़ में चढ़कर बचाए गए। इसमें आश्चर्य नहीं कि वह एक नये युग का कुलपिता बना।

इसके विपरीत, लूत किसी को भी जीत नहीं सका। जब सदोम पर न्याय आने वाला था, तब वह अपनी विवाहित बेटियों और उनके पतियों को आने वाले क्रोध से बचने के लिए वहाँ से भागने के लिए नहीं मना सका; उन्हें लगा कि वह मज़ाक कर रहा है। लूत की पत्नी और उसकी दो अविवाहित बेटियों को तो स्वर्गदूतों द्वारा लगभग खींचकर सदोम से बाहर निकालना पड़ा। फिर भी उसकी पत्नी ने पीछे मुड़कर देखा और नाश हुई। बाद में, उसकी दो बची हुई बेटियों ने उसे दाखमधु पिलाया और उसे अपमानित अवस्था में छोड़ दिया, और वह अम्मोन और मोआब का संभावित पिता बना, जिनकी संतानें इतिहास में इस्राएल के प्रति सदा शत्रुता दिखाती रही। इसमें आश्चर्य नहीं कि, कुछ बिखरे हुए उल्लेखों को छोड़कर, उत्पत्ति 19 के बाद पवित्रशास्त्र में लूत का फिर शायद ही कहीं उल्लेख मिलता है।

इसके विपरीत, परमेश्वर ने अब्राहम के विषय में कहा, "यह जो मैं करता हूँ, उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूँ? ...क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएँगे, आज्ञा देगा" (उत्पत्ति 18:17-19)। अब्राहम के पारिवारिक जीवन की पहचान अनुशासन थी। जब अब्राहम आज्ञा देता था, तो उसके परिवार के सदस्य उसका पालन करते थे। यहाँ तक कि इश्माएल जैसा स्वभाव से विद्रोही भी उसके अधिकार के अधीन रहा (उत्पत्ति 16:11-12; 17:25)।

इसहाक के परिवार की पहचान कलह थी। निस्संदेह, इसहाक का एसाव के प्रति पक्षपात और रिबका का याकूब के प्रति पक्षपात इसके लिए कुछ हद तक जिम्मेदार थे, ठीक जैसे इसहाक की शारीरिक प्रवृत्तियाँ

और रिबका की चालाकी भी इसके लिए उत्तरदायी थे। एसाव कभी परमेश्वर की ओर कभी नहीं मुड़ा, लेकिन याकूब मुड़ा, और उसने अपना जीवन अच्छे से समाप्त किया।

याकूब के परिवार की पहचान अव्यवस्था थी। जब उसके बड़े बेटे जवान हुए, तो उन्होंने वही स्वेच्छा दिखाई जो उसने स्वयं दिखाई थी, जब तक कि परमेश्वर ने उसे यब्बोक नदी के पास उसे दीन करके उसे आशीष नहीं दी। अंत में, हालांकि, उनका भी न्याय किया गया और वे आशीषित हुए (उत्पत्ति 42-44; 49)।

एक पिता के अपने बच्चों की आत्मिक शिक्षा के लिए उत्तरदायी होने का उपदेश भजन संहिता 78:1-8 में स्पष्ट रूप से बताया गया है। कलीसिया में नियम यह है कि एक प्राचीन के बच्चे विश्वासी होने चाहिए। संभव है कि यह एक सामान्य नियम हो, न कि एक पूर्ण अपरिवर्तनीय नियम, क्योंकि अब्राहम के पास इश्माएल था, और इसहाक के पास एसाव था। इसी प्रकार व्यापक संदर्भ में, प्रभु के पास यहूदा था, और पौलुस के पास देमास था।

एक ही परिवार से एक भ्रष्ट व्यक्ति भी निकल सकता है और एक भविष्यद्वक्ता भी। यह एक बड़ा रहस्य है। यह सिद्ध करता है कि (1) परमेश्वर के कोई पोते-पोतियाँ नहीं होते, (2) मेरा परमेश्वर का संतान होना इस बात की गारंटी नहीं है कि मेरे बच्चे भी परमेश्वर की संतान होंगे, और (3) यदि किसी के एक या अधिक बच्चे सत्य के विरुद्ध विद्रोह करते हुए बड़े होते हैं, तो इसके लिए माता-पिता को अनिवार्य रूप से दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

आश्चर्य की बात है कि पुराने नियम में बहुत कम ही पिता के पुत्र धर्मी थे। एली के पुत्र इतने दुष्ट थे कि वे परमेश्वर के न्याय के अधीन मर गए; परमेश्वर ने वृद्ध याजक को अनुशासन की सबसे स्पष्ट आवश्यकताओं की उपेक्षा करने के लिए जिम्मेदार ठहराया। भविष्यद्वक्ता शमूएल के पुत्र उसके पद के योग्य नहीं थे, और आंशिक रूप से उन्हीं के कारण इस्राएल के गोत्रों ने एक राजा की मांग की। दाऊद का पारिवारिक जीवन अत्यंत दयनीय था। सुलैमान का पुत्र रहूबियाम मूर्ख था। हिजकिय्याह का पुत्र दाऊद के सिंहासन पर बैठने वाला अब तक का सबसे बुरा राजा साबित हुआ। योशिय्याह के सभी पुत्र अधर्मी थे।

कलीसिया में आदर्श नियम यह है कि एक प्राचीन के सभी बच्चे विश्वासी हों। यह आदर्श हमेशा प्राप्त न भी हो सके, तो कम से कम उसके बच्चों को "लुचपन" या "निरंकुशता" के दोषी नहीं होना चाहिए। यहाँ "दोष" शब्द न्यायिक प्रक्रिया से संबंधित है। "लुचपन" के लिए प्रयुक्त शब्द दुराचार, उड़ाऊ जीवन और फिजूलखर्ची को दर्शाता है, जो एक तजे हुए और पतित जीवन की ओर इशारा करता है।

ऐसा कोई आरोप एक प्राचीन के बच्चे पर कभी नहीं लगाया जाना चाहिए।

"निरंकुश" के रूप में अनूदित शब्द उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो नियंत्रण में रहने से इनकार करता है और अधिकार का विरोध करता है। पुराने नियम में, ऐसा निरंकुश पुत्र जो माता-पिता के अधिकार को ठुकराता था, उसे मृत्यु दंड दिया जाता था; व्यवस्थाविवरण 21:18-21 हठीले व्यवहार के प्रति परमेश्वर की घृणा को प्रकट करता है। ऐसे पुत्र का दुर्भाग्यपूर्ण पिता अपने आप ही प्राचीन बनने के लिए अयोग्य ठहर जाता है।

जब पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, तो वह इतना कठोर नहीं था। उसने केवल यह बताया कि एक प्राचीन ऐसा होना चाहिए जो "अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?" (1 तीमुथियुस 3:4-5)।

संभवतः पौलुस ने तीतुस को लिखते समय इस सामान्य नियम में कुछ और जोड़ दिया, क्योंकि क्रेतेवासियों का राष्ट्रीय स्वभाव ही निरंकुश था (तीतुस 1:10 को देखें)।

ख. प्राचीनों को निर्दोष पुरुष होना चाहिए (1:7)

1. प्राचीन का पद (1:7क-ख)

यह पद स्वयं ही किसी व्यक्ति को कलीसिया के सामान्य सदस्यों से ऊपर उठा देता है और उसे अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला बना देता है। इसलिए, पौलुस ने इस पद की संबंधित आवश्यकता का उल्लेख किया: "एक अध्यक्ष [एपिस्कोपोस] को निर्दोष होना चाहिए।"

प्रारंभिक कलीसिया में, "एपिस्कोपोस" शब्द का वह अर्थ नहीं था जो आज हमारे अंग्रेज़ी शब्द "बिशप" का है। एक बिशप केवल एक प्राचीन होता था (जैसे प्रेरितों के काम 20:17 में), और एक स्थानीय कलीसिया में जितने आवश्यक हों उतने प्राचीन हो सकते थे।

लेकिन समय बीतने के साथ, "बिशप" और "एपिस्कोपोस" शब्दों के साथ गैर-पवित्रशास्त्रीय परंपराएँ जुड़ गईं, क्योंकि मसीही जगत में एक पदानुक्रमिक संरचना विकसित होने लगी थी। बिशप (जो कई कलीसियाओं वाले प्रांतों की देखरेख करते थे) धीरे-धीरे धन, शक्ति और प्रभाव प्राप्त करने लगे, यहाँ तक कि उन्होंने कमजोर पड़ते रोमी साम्राज्य को भी छाया में कर दिया और अंततः उस पर शासन करने लगे। आज हमारे मन में "बिशप" की जो धारणा है, वह रोमन कैथोलिक चर्च से उत्पन्न हुई है, जो परमेश्वर की कलीसिया और परमेश्वर के राज्य के बीच भेद नहीं करती।

यहाँ "निर्दोष" के रूप में प्रयुक्त शब्द वही है जिसे उसने पिछले पद में भी उपयोग किया था। उसने फिर से इस तथ्य को दोहराया कि एक प्राचीन ऐसा होना चाहिए जिस पर कोई दोष न लगाया जा सके। वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसके विरुद्ध कोई आरोप न ठहराया जा सके। यही इसकी आवश्यकता है।

प्राचीन के पद के साथ एक संबंधित जिम्मेदारी भी होती है, क्योंकि प्राचीन "परमेश्वर का भण्डारी [ओइकोनोमोस]" है। "ओइकोनोमोस" शब्द मुख्य रूप से किसी घर या संपत्ति के प्रबंधन के संदर्भ में उपयोग किया जाता है। पौलुस ने इस शब्द का उपयोग इरास्तुस के लिए किया, जिसे कुरिन्थ नगर का "भण्डारी" (ओइकोनोमोस) कहा गया है (रोमियों 16:23)।

पौलुस ने इस शब्द का उपयोग तब भी किया जब उसने एक बच्चे के "संरक्षकों और प्रबंधकों [ओइकोनोमोस]" का उल्लेख किया (गलातियों 4:2)। एक प्रबंधक उस बच्चे के माता-पिता के प्रति उत्तरदायी होता था कि वह उनके बच्चे की शिक्षा, अनुशासन और विकास का ध्यान रखे।

एक प्राचीन, "परमेश्वर का भण्डारी" होने के नाते, स्थानीय कलीसिया के आत्मिक पहलुओं का प्रबंधन करने के लिए भी परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होता है। एक दिन उसे अपने कार्यों के विषय में परमेश्वर को हिसाब देना होगा।

2. प्राचीन का चित्रण (1:7ग-छ)

क. आक्रामक न हो (1:7ग)

जैसे-जैसे पौलुस आगे बढ़ता है, एक प्राचीन का चित्र स्पष्ट होने लगता है। यहाँ आवश्यक गुणों की एक श्रृंखला, यद्यपि नकारात्मक वाक्यों में व्यक्त की गई है, लेकिन इस चित्रण को और भी स्पष्ट बनाती है।

सबसे पहले, एक प्राचीन को "हठी" नहीं होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे आक्रामक स्वभाव का नहीं होना चाहिए। यहाँ "हठी" के लिए प्रयुक्त शब्द घमंडी होने या अपने ही स्वार्थ को दूसरों की कीमत पर पूरा करने की इच्छा से नियंत्रित होने का विचार प्रकट करता है।

जब एक हठी व्यक्ति किसी विषय में अपने स्वार्थ को तय कर लेता है, तो वह अहंकार के साथ अपनी इच्छा को थोपता है और उसी पर डटा रहता है। स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों की सभा में ऐसा एक भी व्यक्ति विकास के सभी प्रयासों को नष्ट कर सकता है।

ऐसा हठी व्यक्ति परमेश्वर के लोगों के समूह का संचालन करने के योग्य नहीं होता।

ख. क्रोधी न हो (1:7घ)

एक प्राचीन को कभी "क्रोधी" नहीं होना चाहिए। "क्रोधी" के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका अर्थ है "जल्द क्रोध करने वाला, गर्म मिजाज़ वाला।" आज हम कहेंगे कि ऐसा व्यक्ति "जल्दी भड़क उठने वाला" या "संवेदनशील" होता है। वह अपने क्रोध के द्वारा दूसरों को डरा-धमकाकर अपनी बात मनवाना सीख चुका होता है।

यह सत्य है कि क्रोध का भी अपना एक स्थान होता है। उदाहरण के लिए, मूसा, जो अपनी नम्रता के लिए प्रसिद्ध था, फिरौन पर इसलिए क्रोधित हुआ क्योंकि उसने बार-बार अपना वचन तोड़ा, और इस्राएल पर इसलिए क्रोधित हुआ क्योंकि उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया (गिनती 12:3; निर्गमन 11:8; 32:19)।

नये नियम का सिद्धांत इफिसियों 4:26 में बताया गया है: "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।" बाइबल में बार-बार हमें बताया गया है कि परमेश्वर "विलम्ब से कोप करनेवाला" है (भजन 103:8; 145:8; योएल 2:13; योना 4:2)। इसलिए जो व्यक्ति जल्दी क्रोधित हो उठता है, वह प्राचीन बनने के योग्य नहीं है।

ग. मद्यपानी न हो (1:7ङ)

एक प्राचीन को "पियक्कड़" नहीं होना चाहिए। यहाँ और 1 तीमथियुस 3:3 में "पियक्कड़" के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द "परोइनोस" है, जिसका अर्थ है "दाखमधु का अत्यधिक प्रेमी" या "दाखमधु को लंबे समय तक पीने वाला।" इस शब्द के पीछे का विचार ऐसा नशा है जो झगड़ालू स्वभाव की ओर ले जाता है। बाइबल मद्यपान के विरुद्ध सख्त चेतावनी देती है।

नूह का मतवाला होना, जो बाइबल में मतवालेपन का पहला वर्णित उदाहरण है, उसके निज पुत्र हाम पर सबसे बुरे परिणाम लेकर आया और उसके अन्य दो पुत्रों के अच्छे व्यवहार को बाहर लेकर आया (उत्पत्ति 9:20-29)। नूह के मामले में कुछ परिस्थितियाँ उसे कम दोषी ठहरा सकती थीं।

पवित्रशास्त्र में मतवालेपन का दूसरा उदाहरण लूत का है, और यह एक बहुत ही दुखद कहानी है। उसकी दो बची हुई बेटियों का पूर्ण नैतिक पतन ही उसके मद्यपान का कारण बना और उस भयानक घटना का कारण बना जो उत्पत्ति 19:30-38 में वर्णित है।

नये नियम में कुछ विश्वासियों का भी उल्लेख मिलता है जो प्रभु के भोज में ही मतवालेपन की अवस्था में बैठे थे (1 कुरिन्थियों 11:21)। पौलुस का समाधान यह था कि विश्वासियों को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए (इफिसियों 5:18)।

परमेश्वर मतवालेपन से इतनी घृणा करता है कि वह इसे शरीर के धिनौने पापों में एक के रूप में गिनता है (गलातियों 5:19-21) और इसे कलीसिया से बाहर करने योग्य पाप के रूप में भी बताता है (1 कुरिन्थियों 5:11)। जो व्यक्ति अपने दाखमधु के साथ लंबे समय तक रहता है, वह प्राचीन बनने के लिए पूरी तरह से अयोग्य ठहरता है।

एक प्राचीन बनने के इच्छा रखने वाले को दाखमधु के साथ नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन में अधिक समय बिताना चाहिए।

घ. मारपीट करने की प्रवृत्ति न हो (1:7च)

एक प्राचीन को "मारपीट करने वाला" नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति किसी दूसरे पर शारीरिक रूप से आक्रमण करता है, उसका स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों की सभा में कोई स्थान नहीं है। यहाँ और 1 तीमुथियुस 3:3 में "मारपीट करने वाला" के लिए प्रयुक्त शब्द एक झगड़ालू व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करता है।

"मारपीट करने वाला" वह व्यक्ति है जो जीवन में धौंस जमाकर आगे बढ़ने का आदी होता है और लड़ाई-झगड़े के द्वारा अपनी इच्छा पूरी करता है। उससे कमजोर या कम प्रभावशाली लोग उसके आगे झुक जाते हैं।

परमेश्वर का आत्मा ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं चाहता कि वह धक्का-मुक्की करते हुए कलीसिया में जिम्मेदारी के पद तक पहुँचे। इसके अतिरिक्त, "गाली देने वाला" या ऐसे ही स्वभाव का व्यक्ति भी कलीसिया से बाहर किया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:11)।

ड. धन-दौलत में लिप्त न हो (1:7ग)

चित्र को पूर्ण करते हुए, पौलुस ने कहा कि एक प्राचीन को "नीच कमाई का लोभी" नहीं होना चाहिए। व्यापार में सफल होना किसी व्यक्ति को प्राचीन बनने के योग्य नहीं बनाता। कलीसिया कोई व्यापारिक संस्था नहीं है। यह बुलाए हुए लोगों का एक समूह है, जिनकी नागरिकता स्वर्ग में है और जो पृथ्वी की वस्तुओं पर मन नहीं लगाते और उन्हें अधिक महत्व नहीं देते।

अब्राहम बहुत धनी था, फिर भी उसने अपनी सांसारिक संपत्तियों को अधिक महत्व नहीं दिया (उत्पत्ति 13:1-12)। जब परमेश्वर ने उसे पृथ्वी पर एक यात्री और परदेशी बनने के लिए बुलाया, तब उसने उसे बहुत महान प्रतिज्ञाएँ दीं: अब्राहम एक महान जाति बनेगा, उसकी संतानें तारों के समान असंख्य होंगी, और वह एक ऐसे देश का अधिकारी होगा जो अंततः नील से लेकर फरात तक फैलेगा।

परन्तु ये प्रतिज्ञाएँ वह बात नहीं थीं जो अब्राहम को प्रेरित करती थीं। उसे प्रेरित करने वाली बात एक स्वर्गीय नगर की उसकी दृष्टि थी (इब्रानियों 11:8-10)। अब्राहम इस संसार में केवल एक यात्री था, जो यहाँ से होकर गुजर रहा था।

इसलिए एक प्राचीन को धन-संपत्ति का लोभी नहीं होना चाहिए। व्यवसायी होना उसे अयोग्य नहीं बनाता, लेकिन यह उसे योग्य भी नहीं बनाता—जब तक कि वह नीच कमाई का लोभी न हो। धन के प्रति लालची होना उतना ही बुरा है जितना दाखमधु का आदी होना।

ग. प्राचीनों को मिलनसार होना चाहिए (1:8)

1. प्राचीन को क्या पसंद है (1:8क-ख)

क. उसकी दिखनेयोग्य मित्रता (1:8क)

अब पौलुस कुछ सकारात्मक गुणों की ओर ध्यान लगाता है। वह पहले लिखता है कि एक प्राचीन को "अतिथि सत्कार करनेवाला [फिलोक्सेनोस]" होना चाहिए। "फिलोक्सेनोस" एक संयुक्त शब्द है, जो "फिलोस" से, जिसका अर्थ है "प्रेम करने वाला," और "क्सेनोस" से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "अजनबी।"

मैंने अपने माता-पिता से अतिथि-सत्कार सीखा है। हमारा घर हमेशा लोगों से भरा हुआ लगता था। हमारे नगर से होकर गुजरने वाले प्रचारक भोजन के समय मेरे पिता की वर्कशॉप पर आया जाया करते थे। वे उन पर भरोसा कर सकते थे कि वे उन्हें भोजन के लिए निमंत्रण देंगे और उनकी गाड़ी में पेट्रोल भी भरवा देंगे—यहाँ तक कि जब युद्ध के दौरान भोजन और पेट्रोल दोनों पर कड़ी पाबंदी लगी थी।

मुझे नहीं पता कि मेरी माँ यह सब कैसे संभालती थी। उन्हें अपने चार भूखे बच्चों के साथ-साथ मेरे पिता, स्वयं और अपनी वृद्ध माँ को भी खाना बनाकर खिलाना होता था। फिर भी, हमने कभी अतिथि सत्कार करना नहीं छोड़ा। जब हमारे पास भोजन की कमी होती थी, तब मेरे पिता के कोई ग्राहक (जिनमें से कुछ किसान थे) आश्चर्यजनक रूप से एक दर्जन अंडे, एक मुर्गी या आलू की एक बोरी लेकर आ जाते थे।

मेरे माता-पिता के अतिथि-सत्कार के कारण हम बच्चों को कई जीवंत वार्तालाप सुनने का अवसर मिला, जो आने वाले प्रचारकों के विचारों से भरपूर होते थे। उन दिनों, बच्चों को केवल देखा जाना चाहिए था, सुना नहीं जाना चाहिए था, लेकिन सुनने पर कोई रोक नहीं थी।

मेरे पिता की तरह, एक प्राचीन को अतिथि-सत्कार का आदी होना चाहिए। अतिथि-सत्कार न केवल किसी अजनबी का स्वागत करने और मित्रता का हाथ बढ़ाने का अवसर देता है, बल्कि यह मेजबान को अतिथि की आत्मिक आवश्यकताओं की सेवा करने का भी अवसर प्रदान करता है।

निस्संदेह, अक्विला और प्रिस्किल्ला ने प्रभावशाली अपुल्लौस को अपने घर आमंत्रित किया होगा और उसे घर का बना हुआ अच्छा भोजन कराया होगा, इसके बाद उन्होंने उसके मसीही बपतिस्मा की समझ को और विस्तृत करने का प्रयास किया होगा (प्रेरितों के काम 18:24-28)।

ख. उसकी विवेकपूर्ण मित्रता (1:8ख)

एक प्राचीन को "भलाई का चाहनेवाला" भी होना चाहिए। "फिलागाथोस" शब्द, जिसका अनुवाद "भले लोगों से प्रेम करने वाला" किया गया है, को कभी-कभी "भलाई से प्रेम करने वाले" के रूप में भी अनूदित किया जाता है। किसी व्यक्ति के लिए इससे बड़ी सराहना नहीं हो सकती कि उसे भला / भली कहा जाए।

जब परमेश्वर सुलैमान के सामने प्रकट हुआ और उसे जो चाहे माँगने को कहा, तब उसने परमेश्वर से न तो धन माँगा, न सामर्थ्य, और न ही लंबी आयु; उसने परमेश्वर से बुद्धि माँगी। इसके लिए उसकी प्रशंसा की गई, परन्तु यदि वह अपने हृदय की पूरी स्थिति को जानता, तो वह इसके बजाय परमेश्वर से यह माँगता कि वह उसे भला बना दे।

भले लोग बहुत दुर्लभ होते हैं। एक प्रतिभाशाली व्यक्ति, एक महान व्यक्ति, या यहाँ तक कि एक विनम्र व्यक्ति तक को ढूँढना आसान है, लेकिन एक भला व्यक्ति मिलना कहीं अधिक कठिन है। बहुत से लोग उसकी संगति भी नहीं चाहते, क्योंकि उसकी भलाई अक्सर दूसरों को असहज कर देती है।

भलाई आत्मा का छठा फल है (गलातियों 5:22-23), फिर भी हमें शायद ही कभी ऐसा व्यक्ति मिलता है जिसने इस फल को स्पष्ट रूप से विकसित किया हो। जब हमें वास्तव में कोई भला व्यक्ति मिलता है, तो हमें तुरंत उससे मित्रता कर लेनी चाहिए। यही वह बात है जो एक प्राचीन, जो सचमुच "भलाई से प्रेम करने वाला" बनाता है।

एक प्राचीन सभी लोगों के प्रति—चाहे उनका रंग, वर्ग या स्थिति कुछ भी हो—प्रेम, गर्मजोशी और मित्रता के साथ व्यवहार करता है, परन्तु उसके हृदय और घर में भले लोगों के लिए एक विशेष स्थान होता है। वह विशेष रूप से अरिमतिया के यूसुफ और बरनबास जैसे लोगों से मित्रता करता है, जिन्हें पवित्र आत्मा ने "भला मनुष्य" कहा है (लूका 23:50; प्रेरितों के काम 11:24)।

भलाई मसीह के समान एक गुण है। हमें बताया गया है कि यीशु "भलाई करता हुआ फिरता रहा" (प्रेरितों के काम 10:38)। वह ठीक वैसे ही भला था जैसे परमेश्वर भला है। धनी युवा सरदार ने यह समझ लिया था कि यीशु भला है और उसने उसे इसी प्रकार संबोधित भी किया, लेकिन वह तुलनात्मक भलाई के संदर्भ में सोच रहा था। लेकिन यीशु ने उसे पूर्ण भलाई के संदर्भ में सोचने की चुनौती दी (मत्ती 19:16-17)।

पौलुस कहता है कि लोग किसी भले मनुष्य के लिए प्राण देने को भी तैयार हो जाते हैं (रोमियों 5:6-7), जबकि मसीह ने पापियों के लिए अपने प्राण दिए।

2. एक प्राचीन कैसे रहता है (1:8ग-च)

क. उसका सार्वजनिक जीवन (1:8ग-घ)

एक प्राचीन को "संयमी" और "न्यायी" होना चाहिए। उसे यह जानना चाहिए कि बातों को कैसे परखा जाए और कैसे तौला जाए। यहाँ "संयमी" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है "संतुलित मन वाला।" एक संयमी व्यक्ति गंभीर और ईमानदार होता है।

"न्यायी" के लिए प्रयुक्त शब्द "दिकायोस" का अर्थ है सही करना और सही होना। एक प्राचीन की सबसे बड़ी चिंता यह होनी चाहिए कि वह वही करे जो सही है। उसे बिना सोचे-समझे निर्णय नहीं लेना चाहिए और न ही सभी तथ्यों पर विचार किए बिना कार्य करना चाहिए।

उसे किसी भी विषय के दोनों पक्षों को देखना चाहिए, क्योंकि सही मार्ग हमेशा स्पष्ट नहीं होता।

सभी तथ्यों पर विचार न करने का एक उत्तम उदाहरण उस स्त्री के मामले में मिलता है जिसे व्यभिचार के आरोप में फरीसी लोग मसीह के पास लेकर आए थे (यूहन्ना 8:3-11)। ऊपर से देखने पर, यह एक बिल्कुल स्पष्ट मामला था। मूसा की व्यवस्था के अनुसार व्यभिचार के लिए मृत्यु दंड का प्रावधान था, और उस स्त्री के आरोप लगाने वालों ने यह दावा किया कि वह उसी गलत कर्म को करते हुए पकड़ी गई थी।

निस्संदेह, फरीसी इस बात से प्रसन्न थे कि उनके पास एक बड़ी भीड़ है जो उन्हें मसीह को, जैसा वे सोचते थे, एक कठिन दुविधा में डालते हुए देखेगी।

प्रभु यीशु ने उनके उद्देश्य को पहचान लिया, जो यह था कि परमेश्वर की व्यवस्था को उसके प्रेम के विरुद्ध खड़ा किया जाए। प्रभु ने इस समस्या के सामने एक स्वस्थ बुद्धि और एक ऐसा हृदय प्रस्तुत किया, जो सही काम करने के लिए उत्साह से धड़कता था। आखिरकार, कुछ परिस्थितियाँ ऐसी थीं जो विचार करने योग्य थीं। यदि इस दुखी स्त्री को "व्यभिचार करते हुए" पकड़ा गया था, तो उसका साथी कहाँ था? क्या वह भी उसी समय पकड़ा नहीं गया था? क्या मूसा की व्यवस्था उस पर भी लागू नहीं होती थी?

इसके अतिरिक्त, प्रभु व्यवस्था और उसके उद्देश्य को फरीसियों से कहीं अधिक अच्छी तरह जानता था। पुराने नियम में अनैतिकता के मामलों से संबंधित दो अलग-अलग आज्ञाएँ दी गई हैं। व्यवस्थाविवरण 22:22 में दी गई आज्ञा एक विवाहित स्त्री पर लागू होती थी।

व्यवस्थाविवरण 22:23-24 में दर्ज आज्ञा एक मंगनी की हुई युवती पर लागू होती थी। यदि वह स्त्री पाप में स्वेच्छा से सहभागी होती थी, या उन परिस्थितियों पर उसका कुछ नियंत्रण होता जिनमें उसे विवश किया गया था, तो दण्ड पत्थरवाह करके उसे मार डालना था।

गिनती 5:11-31 में दर्ज आज्ञा एक विवाहित स्त्री पर लागू होती थी और इसके लिए एक विशेष प्रक्रिया निर्धारित की गई थी। यह प्रक्रिया अत्यंत गंभीर परिस्थितियों में अपनाई जाती थी और दण्ड को परमेश्वर के हाथों में छोड़ देती थी।

यह प्रक्रिया एक धार्मिक अनुष्ठान थी जिसमें एक परीक्षा सम्मिलित थी, और यदि वह परीक्षा स्त्री को दोषी ठहराती, तो उसके ऊपर शाप उच्चारित किया जाता था। संभव है कि जब प्रभु झुककर अपनी उँगली से भूमि पर लिख रहे थे, तब उन्होंने गिनती की व्यवस्था के अनुसार आवश्यक शाप ही लिखा हो।

"व्यवस्था हमें आज्ञा देती है कि ऐसी स्त्री को पत्थरवाह किया जाए," फरीसियों ने जोर देकर कहा था। प्रभु का भूमि पर लिखना मानो यह प्रकट कर रहा था कि वह उस स्त्री के बारे में उनसे अधिक जानता था, या

कम से कम उतना तो जानता ही था जितना वे मानने को तैयार नहीं थे, क्योंकि इससे उनका ध्यान इस तथ्य की ओर गया कि इस मामले में गिनती 5:11-31 की प्रक्रिया की आवश्यकता थी।

जब फरीसी इस बात पर डटे रहे कि वह व्यवस्थाविवरण की व्यवस्था को लागू करे, तब प्रभु सीधे खड़ा हुआ और उनका सामना किया। उसने उनकी आँखों में देखकर कहा, "तुम में जो निष्पाप है, वही पहले उसको पत्थर मारे।" फिर वह फिर से झुककर भूमि पर कुछ लिखने लगा।

इस बार, शायद, उसने नाम, स्थान और तारीखें लिखीं। वह न केवल व्यवस्था को जानता था, बल्कि उन्हें भी अच्छे से जानता था; "अपने ही विवेक से दोषी ठहराए जाने पर" वे "बड़ों से लेकर छोटों तक, एक एक करके निकल गए।"

जब वह स्त्री वहाँ अकेली खड़ी रह गई, तब यीशु फिर सीधे खड़े हुए। फिर उसने उसकी ओर देखा। उसने कहा, "हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?"

उसने उत्तर दिया, "हे प्रभु, किसी ने नहीं।"

"मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता," उसने कहा, "जा, और फिर पाप न करना।" उसने यह नहीं कहा कि वह उसके पाप को दोषी नहीं ठहराता; उसने कहा कि वह उसे दोषी नहीं ठहराता। उसने उसे एक उद्धार पाई हुई स्त्री के रूप में विदा किया, जिसने यह सीख लिया था कि अनुग्रह और सत्य दोनों यीशु मसीह के द्वारा आते हैं (यूहन्ना 1:17)।

एक प्राचीन को इसी प्रकार "संयमी" और "न्यायी" होना चाहिए। उसे यीशु के समान होना चाहिए और प्रत्येक मामले को ध्यान से देखना और तौलना चाहिए।

ख. उसका व्यक्तिगत जीवन (1:8ड-च)

(1) वह एक साफ़ जीवन जीता है (1:8ड)

एक प्राचीन को "पवित्र" होना चाहिए। यहाँ "पवित्र" के लिए प्रयुक्त शब्द "होसियोस" है, जिसका उपयोग प्रेरितों के काम 2:27 में स्वयं प्रभु के लिए किया गया है: "तू अपने पवित्र जन [होसियोस] को सड़ने न देगा।"

पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग 1 थिस्सलुनीकियों 2:10 में अपने (और अपने सहकर्मियों) के व्यवहार का वर्णन करने के लिए भी किया: "तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा।"

एक प्राचीन को बुरे आचरण से शुद्ध होना चाहिए और उसे परमेश्वर की इच्छा का पालन करने वाला होना चाहिए। उसके जीवन में किसी भी प्रकार के कलंक के थोड़े से भी संदेह के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। यदि वह प्राचीन होने के बदले में धन प्राप्त करना चाहता है, या उसके मन में वासना है, या प्राचीन होने से उसके भीतर सत्ता की लालसा बढ़ती है, तो उसकी प्रभावशीलता घट जाती है। एक प्राचीन को "परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर विवेक सदा निर्दोष" रहना चाहिए- जैसा कि पौलुस ने फेलिक्स के सामने गवाही दी (प्रेरितों के काम 24:16)।

निश्चित रूप से, फेलिक्स का विवेक शुद्ध नहीं था। जब वह पौलुस का न्याय कर रहा था, तब वह दुसिल्ला के साथ एक पापमय संबंध में रह रहा था। इसके अतिरिक्त, फेलिक्स अपनी क्रूरता, विश्वासघात और रिश्वतखोरी के लिए कुख्यात था।

पवित्र आत्मा अक्सर पवित्रशास्त्र में विपरीत बातों को साथ-साथ रखता है ताकि उनके बीच का अंतर स्पष्ट प्रकट हो, और पौलुस तथा फेलिक्स इसका एक उदाहरण हैं। एक और उदाहरण उत्पत्ति 13:12 में मिलता है, जहाँ लिखा है, "अब्राम कनान देश में रहा, पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा।"

उत्पत्ति 38-39 में यहूदा के अनैतिक जीवन की कथा के बाद यूसुफ की भलाई का उदाहरण दिया गया है। 1 शमूएल 2:11-18 में हम बालक शमूएल की भलाई और एली के पुत्रों की बुराई दोनों के बारे में पढ़ते हैं।

पूरे 1 शमूएल में राजा शाऊल की दुष्टता और भी स्पष्ट दिखाई देती है, क्योंकि दाऊद की सत्यनिष्ठा उसके साथ तुलना में चमकती है। सुलैमान का पाप और भी गंभीर प्रतीत होता है, क्योंकि 1 राजा 11:1-9 में उसका वर्णन उसकी महिमा (10:23-24) के विवरण के तुरंत बाद आता है। और तीतुस की पत्नी में, कलीसिया के एक प्राचीन की पवित्रता (1:8) को क्रेतेवासियों के दयनीय चरित्र (1:12) के साथ तुलना करके दिखाया गया है।

(2) वह संयमित जीवन जीता है (1:8)

एक प्राचीन को "जितेन्द्रिय" होना चाहिए। "जितेन्द्रिय" के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इसी से संबंधित एक शब्द पौलुस के फेलिक्स के सामने दिए गए उपदेश में मिलता है। हमें बताया गया है कि पौलुस ने उससे "धार्मिकता, जितेन्द्रिय [एनक्राटेइया], और आने वाले न्याय" के विषय में बात की (प्रेरितों के काम 24:25)। इसमें आश्चर्य नहीं कि "फेलिक्स काँप उठा"; आत्म-संयम उसके जीवन में स्पष्ट रूप से अनुपस्थित था और पौलुस के जीवन में स्पष्ट रूप से उपस्थित था। पौलुस का आत्म-संयम, जो आत्मा का एक फल है (गलातियों 5:22-23), उसे अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठने में सक्षम बनाता था।

जो व्यक्ति प्राचीन बनना चाहता है, उसे अपने आप पर नियंत्रण रखना सीखना होगा। यदि वह अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख सकता, तो वह स्थानीय कलीसिया पर भी नियंत्रण नहीं रख सकता।

घ. प्राचीनों को विश्वासयोग्य पुरुष होना चाहिए (1:9)

1. परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से थामे रहना (1:9क-ख)

क. परमेश्वर के वचन पर उनका भरोसा (1:9क)

प्राचीनों की विशेषता यह है कि वे "विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहते हैं।" परमेश्वर का वचन हमारे पूर्ण विश्वास के योग्य है, क्योंकि वह "विश्वासयोग्य वचन" है। वह पूरी तरह से भरोसेमंद है। जो प्राचीन परमेश्वर के प्रेरित और त्रुटिरहित वचन को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार नहीं करता, वह इस पद को धारण करने के लिए अयोग्य है।

परन्तु केवल बाइबल की पूर्ण और शब्दशः प्रेरणा के प्रति दृढ़ रहना ही पर्याप्त नहीं है। प्राचीनों को पवित्रशास्त्र के अनुसार व्यवहार भी करना चाहिए। उन्हें उस पर पूर्ण रूप से भरोसा करना चाहिए ताकि वह उन्हें सुरक्षित रखे और जीवन की जटिलताओं में उनका मार्गदर्शन करे।

इस संदर्भ में, प्राचीन उन पायलटों के समान हैं जो घने बादलों में से होकर उड़ते हैं और दिशा का पूरा ज्ञान खो देते हैं। यदि उनके पास उपकरण न हों, तो वे बड़ी कठिनाई में पड़ जाएंगे। यदि वे अपनी अनिश्चित भावनाओं के अनुसार उड़ान भरेंगे, तो उन्हें लग सकता है कि वे सुरक्षित मार्ग पर हैं, जबकि वास्तव में वे दुर्घटना की ओर बढ़ रहे होते हैं। ऐसी स्थिति में उनके पास केवल एक ही उपाय होता है—अपने उपकरणों पर भरोसा करना। उनके उपकरण “वस्तुनिष्ठ” होते हैं, जबकि उनकी भावनाएँ “व्यक्तिनिष्ठ” होती हैं। उनके उपकरण उन्हें सही मार्ग पर बनाए रखते हैं—सही ऊँचाई पर, संतुलित स्थिति में, और उचित गति से मार्गदर्शन करते हैं।

जिस क्षण वे अपने उपकरणों को छोड़ देते हैं या उन पर विश्वास नहीं करते, उसी क्षण वे स्वयं और साथ ही उनके सभी यात्री भी खतरे में पड़ जाते हैं। प्राचीनों के लिए मार्गदर्शन का साधन परमेश्वर का वचन है। चाहे बादल कितने ही घने क्यों न हों और मार्ग कितना ही अस्पष्ट क्यों न हो जाए, उन्हें तब भी उस विशेष परिस्थित के लिए पवित्रशास्त्र जो बोलता है, उस पर भरोसा करना चाहिए।

यहोशू गिबोनियों के साथ व्यवहार करते समय परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने में असफल रहा (यहोशू 9:3-27)। यरीहो और ऐ इस्राएलियों के हाथों गिराए जा चुके थे, और गिबोन उनके आगे बढ़ने की अगली जगह थी। भयभीत गिबोनियों ने यहोशू को धोखा देकर उससे शांति की संधि कराने का निर्णय लिया।

पहले उन्होंने एक विश्वसनीय कहानी गढ़ी, फिर उसे ऐसे प्रमाणों से समर्थन दिया जो देखने में वास्तविक लगते थे। यहोशू उनके फूँदी लगे भोजन, पुराने मदिरा के मशकों और घिसे-पिटे कपड़ों को देखकर धोखा खा गया, जिन्हें उन्होंने यह विश्वास दिलाने के लिए दिखाया कि वे “दूर देश” से आए हैं। उसने शांति की संधि पर हस्ताक्षर कर दिए, और बाद में पता चला कि उनसे छल किया गया था।

यदि यहोशू ने परमेश्वर के वचन पर भरोसा किया होता, तो वह उस संधि पर कभी हस्ताक्षर नहीं करता, चाहे प्रमाण हजार गुना अधिक विश्वसनीय ही क्यों न होते। क्योंकि परमेश्वर का वचन स्पष्ट था: “तू उनसे कोई वाचा न बाँधना” (निर्गमन 23:32); “उन्हें पूरी रीति से नष्ट कर डालना; उनसे न वाचा बाँधना, और न उन पर दया करना” (व्यवस्थाविवरण 7:2)।

गिबोनियों के साथ इस संधि के विषय में परमेश्वर के वचन की बुद्धि बाद में स्पष्ट हो गई (न्यायियों 19-20)। जब यहोशू ने परमेश्वर के वचन के स्थान पर मानवीय तर्क पर भरोसा किया, तो उसने इस्राएल के साथ बड़ा अन्याय किया। उसे परमेश्वर के वचन के द्वारा मार्गदर्शन लेना चाहिए था, चाहे परिस्थितियाँ उसे विपरीत दिशा में ही क्यों न ले जा रही हों।

प्राचीनों को परमेश्वर के वचन पर पूर्ण भरोसा रखना चाहिए। उनका कार्य यह है कि वे किसी भी परिस्थिति में पवित्रशास्त्र पर अमल करें—न कि आधुनिक मनोविज्ञान, मानवीय दर्शन या वैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करें।

उदाहरण के लिए, जब बाइबल युवतियों से कहती है कि वे "घर का ध्यान रखने वाली" हों (तीतुस 2:5), तो यह सलाह कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने और करियर बनाने के पक्ष में दिए जाने वाले सभी मानवीय तर्कों से अधिक मूल्यवान है। जब बाइबल कहती है कि हत्यारों को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए (उत्पत्ति 9:6; रोमियों 13:4), तो यह सलाह आधुनिक समाजशास्त्रियों की सलाह से कहीं बेहतर है।

जब बाइबल विश्वासियों को हर प्रकार की नैतिक और धार्मिक बुराई से अलग रहने के लिए कहती है (2 कुरिन्थियों 6:14-18), तो यह सलाह समझौता करने वालों की राय से कहीं अधिक उत्तम है।

ख. परमेश्वर के वचन में उनका प्रशिक्षण (1:9ख)

एक प्राचीन को पवित्रशास्त्र पर वैसे ही भरोसा करना चाहिए "जो धर्मोपदेश के अनुसार है।" यहाँ "धर्मोपदेश" के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह नये नियम में लगभग तीस बार आता है और लगभग हर स्थान पर उसका अनुवाद केवल इस स्थान को छोड़कर "शिक्षा" या "उपदेश" के रूप में किया गया है। इसलिए एक प्राचीन को परमेश्वर के वचन में भली-भांति शिक्षित होना चाहिए, और उसे उन लोगों को, जो उसकी निगरानी में हैं, शुद्ध शिक्षा देने में सक्षम होना चाहिए।

आजकल ऐसे प्राचीनों को पाना असामान्य नहीं है जो लगभग हर विषय में तो अच्छी शिक्षा रखते हैं, परन्तु बाइबल के विषय में नहीं। बहुत से लोग संगीत, गणित या चिकित्सा में निपुणता प्राप्त करने के लिए वर्षों तक परिश्रम करते हैं, परन्तु बाइबल अध्ययन के लिए सप्ताह में आधे घंटे से भी कम समय देना पर्याप्त समझते हैं।

पौलुस अपेक्षा करता है कि किसी व्यक्ति को प्राचीन बनने की अनुमति देने से पहले वह परमेश्वर के वचन के ज्ञान को प्राप्त करने में इससे कहीं अधिक समय लगाए। एक उत्तम बाइबल शिक्षक बनने के लिए किसी व्यक्ति को सेमिनरी की डिग्री की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन उसे बाइबल का गहराई से अध्ययन करने में बहुत समय और परिश्रम अवश्य लगाना चाहिए।

2. परमेश्वर के वचन की घोषणा करना (1:9ग-ड)

क. उनका खरा उपदेश (1:9ग)

पौलुस परमेश्वर के वचन से संबंधित आवश्यकताओं को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। उसने इस बात पर बल दिया कि प्राचीन "खरी शिक्षा" सिखाने में सक्षम हों। "शिक्षा" के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में इक्कीस बार और पास्टरीय पत्रियों में पंद्रह बार आता है। जब इस शब्द का उपयोग होता है, तो इसमें क्रिया का विचार प्रमुख होता है; इसलिए तीतुस 1:9ग में पौलुस के मन में सिखाने की क्रिया ही थी। एक प्राचीन को न केवल शुद्ध सिद्धांत के प्रति समर्पित होना चाहिए, बल्कि उसे इनको सिखाना भी चाहिए।

कोई भी आंदोलन जो सिद्धांत को कम महत्व देता है, उस पर संदेह करना चाहिए। एक सही प्रकार से कार्य करने वाली स्थानीय कलीसिया में, प्राचीन शुद्ध शिक्षा को बहुत महत्व देते हैं। यह आरंभिक कलीसिया की एक मुख्य विशेषता थी। नये विश्वासियों ने "प्रेरितों से शिक्षा पाना" जारी रखा (प्रेरितों के काम 2:42)।

अंत के दिनों में, पौलुस ने चेतावनी दी कि लोग "दुष्टात्माओं की शिक्षाओं" पर ध्यान देंगे और "खरा उपदेश न सह सकेंगे" (1 तीमुथियुस 4:1; 2 तीमुथियुस 4:3)। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जो लोग

प्रभु में हम पर अधिकार रखते हैं, वे परमेश्वर के वचन के प्रति सच्चे हों और उसे बिना किसी मिलावट के सिखाने में उत्साही हों।

ख. उनका महत्वपूर्ण कर्तव्य (1:9घ-ड)

"खरी शिक्षा" के द्वारा प्राचीनों को "उपदेश देना और विरोधियों का मुँह भी बन्द करना" आना चाहिए। पौलुस यहाँ कहता है कि प्राचीनों का महत्वपूर्ण कर्तव्य यह है कि वे उपदेश के द्वारा उत्साहित करें और सत्य को प्रकट करें। यहाँ "उपदेश दे" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है "अलग बुलाना, निवेदन करना, विनती करना, चेतावनी देना।" उपदेश (प्रोत्साहन) स्वभाव से भविष्य की ओर उन्मुख होता है; यह भविष्य पर नज़रें बनाए रखता है।

"मुँह बंद करना" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है किसी को उनके अपराध के विषय में बोध कराना, जिससे अंततः यह उसे अंगीकार की ओर ले जाता है। इस प्रकार उसका पाप प्रकट हो जाता है।

"विरोधियों" के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है "जो विरोध करते हैं।" इस शब्द का नया नियम में पहला प्रयोग लूका 2:34 में मिलता है, जहाँ वृद्ध शिमौन ने नवजात मसीह को अपनी बाँहों में लेकर भविष्यवाणी की: "देख वह... एक ऐसा चिह्न होने के लिये ठहराया गया है, जिसके विरोध में बातें की जाएँगी।"

ऐसे लोग हमेशा रहे हैं जो मसीह का विरोध करते हैं। एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित प्राचीन, जो परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ्य में परमेश्वर के वचन की सेवा करता है, ऐसे विरोधी लोगों के मुँह को बंद करने में सक्षम होना चाहिए।

इन पदों में दिए गए नये नियम के प्राचीनों की योग्यताओं का स्तर वास्तव में बहुत ऊँचा है। यदि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया का संचालन ऐसे लोगों के समूह द्वारा किया जाए जो इन मानकों पर खरे उतरते हों, तो न तो उपदेश से संबंधित त्रुटि सिर उठा पाएगी, न ही अनैतिकता टिक पाएगी, और अविश्वासी कलीसिया को देखकर आश्चर्य में पड़ जाएंगे—ऐसी संस्था जिसे आज बहुत से लोग तुच्छ समझते हैं। यदि परमेश्वर का वचन आत्मा और सत्य में सिखाया जाए, तो बहुत से लोग सभाओं में आने लगेंगे, लोग उद्धार पाएंगे, और विश्वासियों को इस ज्ञान में सुरक्षा का अनुभव होगा कि उनके चरवाहे मसीह के समान हैं। कलीसिया निरंतर जागृति की अवस्था में आगे बढ़ते रहेंगी।

भाग 7. स्थानीय कलीसिया में त्रुटि का स्वभाव

तीतुस 1:10-16

क. झूठे शिक्षकों के उद्देश्य (1:10-11)

1. अपने शत्रुओं का सामना करना (1:10)

क. वे क्या हैं (1:10क-ग)

(1) वे अव्यवस्थित हैं (1:10क)

एक प्राचीन का एक कार्य यह भी है कि वह उन लोगों से निपटे जो कलीसिया में झूठी शिक्षाएँ लेकर आते हैं। तीतुस 1:10 में, पौलुस ऐसे झूठे शिक्षकों को “निरंकुश” के रूप में संबोधित करता है। यहाँ “निरंकुश” के लिए प्रयुक्त शब्द अनुपोतक्तोस है, वही शब्द जो 1:6 में अनाज्ञाकारी बच्चों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। झूठे शिक्षक अधिकार को मानने से इनकार करते हैं।

मूसा को भी ऐसे निरंकुश लोगों का सामना करना पड़ा, जैसे कि जब कोरह, दातान और अबीराम ने उसका विरोध किया। उन्होंने मूसा के नेतृत्व और हारून के याजक के पद को अस्वीकार कर दिया। कोरह मूसा का चचेरा भाई था। वह और उसके दो विद्रोही साथी मिलापवाले तंबू के दक्षिण दिशा में डेरा डाले हुए थे (गिनती 2:10; 3:29), परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने पूरे शिविर में बहुत से लोगों को अपने साथ मिला लिया था।

पवित्र आत्मा ने दो बार यह दर्ज किया है कि वे “मूसा और हारून के विरुद्ध” थे (गिनती 16:3, 41, 42)। पुराने नियम के समय में, ऐसे निरंकुश व्यवहार के लिए तुरंत दंड दिया जाता था। नया नियम का दृष्टिकोण अधिक धीरजवान हो सकता है, परन्तु यह उतना ही अब भी स्पष्ट है: परमेश्वर निरंकुश लोगों के विरुद्ध है।

जैसा जंगल में इस्राएल के साथ था, वैसा ही संसार में कलीसिया के साथ भी है। पौलुस ने बहुत से निरंकुश लोगों को उठते और प्रेरिताई तथा पास्टरीय अधिकार को चुनौती देते हुए देखा था।

(2) वे विवादी होते हैं (1:10ख)

झूठे शिक्षक अक्सर “बकवादी” (माताइओलोगोस) भी होते हैं। यह यूनानी शब्द संकेत करता है कि वे निरर्थक बातें करते हैं। निस्संदेह, आज धर्म, दर्शनशास्त्र और विज्ञान के नाम पर बहुत सी निरर्थक बातें सिखाई जाती हैं।

सभी पंथ निरर्थक बातें करते हैं। जैसे कि ‘क्रिश्चियन साइंस’ यह कहता है कि दर्द नश्वर मन की एक भूल है—यह निरर्थक है, जैसा कि कमर पर एक बलदार लात जल्दी ही इसे सिद्ध कर देती है। इसी प्रकार “मॉर्मोनवाद” यह सिखाता है कि हम अपने प्रयासों से ईश्वर बन सकते हैं—यह भी निरर्थक है, उतना ही पुराना जितना कि शैतान का हवा से उत्पत्ति की पुस्तक में अदन की वाटिका में बोला गया झूठ। और यह सिखाना—जैसा कि बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म, और नए युग के अनुयायी करते हैं—कि हम बार-बार अलग-अलग जीवनो में पुनर्जन्म लेते हैं, यह भी निरर्थक है, जैसा कि उन लोगों के दावों से स्पष्ट होता है जो कहते हैं कि वे किसी पिछले जीवन में नेपोलियन बोनापार्ट या मिकी माउस थे।

जो लोग ऐसी अविवेकपूर्ण धार्मिक भ्रांतियों को स्वीकार करते हैं, वे अक्सर अपने विश्वास के बारे में बहुत मुखर होते हैं। वे विवाद करने वाले बन जाते हैं। केवल स्वयं किसी भटके हुए विचार को अपनाकर संतुष्ट नहीं होते, बल्कि वे लगातार उन लोगों के साथ बहस करने का प्रयास करते हैं जिनमें उनसे अधिक समझ होती है।

सच्चे विश्वास को छोड़कर शैतान के किसी झूठ को अपनाने के बाद, वे उन लोगों से वाद-विवाद करना चाहते हैं जो सत्य को थामे रहते हैं। विवाद करने वाले यह तर्क देते हैं कि सही गलत है, सत्य त्रुटि है, और

प्रकाश अंधकार है। और अक्सर वे ऐसे जोश, उत्साह और दृढ़ विश्वास के साथ तर्क करते हैं, जैसा उन्होंने कभी सत्य के लिए नहीं दिखाया था, जबकि वे उससे परिचित थे।

(3) वे धोखेबाज़ होते हैं (1:10ग)

झूठे शिक्षक “धोखा देने वाले” होते हैं। यह यूनानी शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इसका क्रिया रूप गलातियों 6:3 में मिलता है: “क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।” यहाँ इस क्रिया का अर्थ है “अपने मन को धोखा देना, कल्पनाओं के द्वारा स्वयं को बहकाना।”

झूठे शिक्षक आत्माओं को धोखा देने वाले होते हैं। पतरस कहता है कि “वे चंचल मनवालों को फुसला लेते हैं” (2 पतरस 2:14)। शैतान ने हव्वा को भी बहकाया, और उसने यह दिखाया कि वह सत्य से डगमगा रही थी, क्योंकि उसने परमेश्वर के वचन को बड़ी लापरवाही के साथ प्रस्तुत किया था। (उसने दो पदों में तीन बार उसे गलत तरीके से बताया—दो बार परमेश्वर के कहे में से घटाया और एक बार उसमें कुछ जोड़ दिया।)

ख. वे कौन थे (1:10घ)

पौलुस जिन झूठे शिक्षकों का वर्णन करता है, वे “विशेष करके खतना वालों में से” थे। इसका अर्थ यह है कि प्रारंभिक कलीसिया में अधिकांश धोखा देने वाले और विद्रोही लोग यहूदी पृष्ठभूमि के थे। यहूदी रीति पर चलने वाले मसीही पौलुस के सबसे जिदी, कठिन और लगातार विरोध करने वाले थे।

वे उसके पीछे-पीछे चलते रहते थे, उसके विश्वासियों को भटकाते थे, उसके प्रेरिताई पर आक्रमण करते थे, उसके अधिकार को चुनौती देते थे, उसकी शिक्षा को कमजोर करते थे, और सुसमाचार को बिगाड़ देते थे। वे इस बात पर बल देते थे कि अन्यजातियों को मसीही बनने के लिए पहले यहूदी बनना होगा—उन्हें खतना करवाना चाहिए, सब्त का पालन करना चाहिए, अशुद्ध मांस खाने से बचना चाहिए, मूसा की व्यवस्था का पालन करना चाहिए, रब्बियों की शिक्षाओं को मानना चाहिए, और यरूशलेम की “माता” कलीसिया के अधिकार को स्वीकार करना चाहिए। संक्षेप में, ये झूठे उपदेशक दरअसल मसीही विश्वास को एक और यहूदी पंथ में बदल देना चाहते थे।

2. अपने शत्रुओं से लड़ना (1:11)

क. नियम (1:11क)

पौलुस ऐसा व्यक्ति नहीं था जो चुपचाप खड़ा रहे जबकि उसकी कलीसियाओं को इस प्रकार बिगाड़ा जा रहा हो। उसने तीतुस से कहा कि वह झूठे उपदेशकों का सामना करे। उसने कहा, “इनका मुँह बंद करना चाहिए।” दूसरे शब्दों में, “उन्हें चुप कराया जाना चाहिए।”

“बंद” किए जाने के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “लगाम लगाना” या “मुँह पर रोक लगाना।” इसका संज्ञा रूप पानी की पाइप में रोकने के लिए लगाए जाने वाले ढक्कन के लिए प्रयोग होता है।

आजकल हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के इतने आधीन हो गए हैं कि हम लगभग हर बात को सहन करने लगे हैं। मनोभाव यह है, “यद्यपि मैं तुम्हारी बात से घृणा करता हूँ, फिर भी मैं तुम्हारे उस बात को कहने के अधिकार के लिए अपने प्राण देने को भी तैयार हूँ।”

बाइबल—जो सभी सच्ची स्वतंत्रताओं की महान समर्थक है—यह अच्छी तरह जानती है कि लोगों को सत्य, नैतिकता और शालीनता के बंधनों के बिना जो कुछ वे चाहें कहने और सिखाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। आधुनिक समाज में बहुत सी घृणित घटनाएँ और हिंसा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दुरुपयोग और प्रसार माध्यम की अनियंत्रित स्वतंत्रता से उत्पन्न होती है।

जब पौलुस ने कहा कि जो लोग स्पष्ट रूप से गलत उपदेश देते हैं उनके मुँह बंद किए जाने चाहिए, तो वह शायद “अमेरिकी दृष्टिकोण” के अनुसार न लगे, परन्तु वह मसीही दृष्टिकोण के विरुद्ध नहीं था। उसने यह बात पवित्र आत्मा की प्रेरणा से कही थी।

शैतान के प्रचारकों के मुँह कम से कम परमेश्वर के लोगों की सभाओं में दो तरीकों से बंद किए जा सकते हैं।

(1) झूठे उपदेशकों को व्यक्तिगत रूप से खंडन और डांटा जा सकता है, और सार्वजनिक रूप से उन्हें चेतावनी दी जा सकती है कि आगे किसी भी झूठे उपदेश को सहन नहीं किया जाएगा।

(2) यदि पहला तरीका असफल हो जाए, तो उन्हें कलीसिया से बहिष्कृत किया जा सकता है; उन्हें बाहर निकालना उन्हें वहाँ वापस भेज देता है जहाँ वे वास्तव में हैं— अर्थात् शैतान के क्षेत्र में, जहाँ वे दैवीय अनुशासन के समक्ष होते हैं। किसी न किसी तरह से, उनकी आवाज़ को शांत करना आवश्यक है। यही पवित्रशास्त्र का नियम है।

ख. कारण (1:11ख)

इस नियम का कारण यह है कि झूठे उपदेशक “घर के घर बिगाड़ देते हैं।” यहाँ “बिगाड़ना” शब्द का अर्थ है “उलट देना, नष्ट कर देना।” “घर” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द ओइकोस है, जिसका अर्थ है “परिवार, घराना।”

मॉर्मोनवादियों और यहोवा-साक्षियों जैसे पंथों का पसंदीदा तरीका यह होता है कि वे घरों में प्रवेश करते हैं, अपने मेज़बानों की अतिथि-सेवा का लाभ उठाते हैं, और असावधान लोगों को भटका देते हैं।

ग. प्रकाशन (1:11ग-घ)

पौलुस झूठे उपदेशकों के संदेश और उनके उद्देश्यों की ओर संकेत करता है: “ये लोग नीच कमाई के लिये अनुचित बातें सिखाते हैं।” धन कमाने के लिए वे ऐसी शिक्षाएँ देते हैं जिन्हें सिखाने का उन्हें कोई अधिकार या अनुमति नहीं है।

स्पष्ट रूप से, अन्यजातियों की कलीसियाएँ झूठे भ्रमणशील शिक्षकों से काफी परेशान थीं। ये फूट डालने वाले लोग अपनी यहूदी पहचान, व्यवस्था के प्रति अपने उत्साह, यीशु के जीवन और शिक्षाओं के प्रत्यक्ष ज्ञान, तथा पतरस, याकूब और यरूशलेम की कलीसियाओं के प्राचीनों के साथ अपने व्यक्तिगत परिचय

का लाभ उठाते थे। कुछ यहूदी तो यरूशलेम की कलीसिया के प्रमुख सदस्यों से प्रशंसापत्र और पत्र भी साथ लेकर चलते थे। वे पुराने नियम के संबंध में अन्यजातियों की अज्ञानता और उसके नये नियम के प्रति पूर्ण अधीनता का फायदा उठाते थे।

पौलुस ने गलातिया से लेकर यरूशलेम तक ऐसे विरोधियों के साथ संघर्ष किया था। उसने अपनी कई पत्रियों में—विशेषकर गलातियों, इब्रानियों, रोमियों और 2 कुरिन्थियों में—उन्हें और उनके विघटनकारी शिक्षाओं को कठोरता से निंदा की। तथापि, ये पंथवादी चतुर और प्रभावशाली थे, और अपने लिए अनुयायियों के साथ-साथ आर्थिक आधार भी बनाने के लिए दृढ़ निश्चयी थे।

ख. झूठे उपदेशकों का खतरा (1:12-13)

अब पौलुस ने विशेष रूप से क्रेतेवासियों पर ध्यान केंद्रित किया। क्रेते के यहूदी पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में उपस्थित थे और उन्होंने पतरस का प्रचार सुना था (प्रेरितों के काम 2:11)। निःसंदेह, उनमें से कुछ ने विश्वास भी किया होगा और सुसमाचार को अपने द्वीप तक ले गए होंगे। यहूदी होने के कारण, वे विशेष रूप से यहूदी मत की शिक्षाओं के प्रति अधिक प्रभावित हो सकते थे। ऐसा भी प्रतीत होता है कि उनमें से कुछ कलीसिया को फिर से यहूदी व्यवस्था के अधीन लाने के आंदोलन में सक्रिय थे।

1. पौलुस ने एक भयानक गवाही का उल्लेख किया (1:12)

इस पद में सामान्य रूप से क्रेतेवासियों का एक अपमानजनक वर्णन पाया जाता है। सभी जातियाँ अपनी-अपनी राष्ट्रीय विशेषताएँ विकसित करती हैं। उदाहरण के लिए, वेल्श लोग अपने गायन के लिए जाने जाते हैं। जर्मन लोग अपनी सूक्ष्मता और व्यवस्थित जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध हैं। प्राचीन अशशूरी अपनी क्रूरता के लिए जाने जाते थे। अमेरिकियों को उनकी उदारता के लिए जाना जाता है।

क्रेतेवासियों को उनके भ्रष्ट आचरण के लिए जाना जाता था। लिबी, पोलीबियस और प्लूटार्क सभी क्रेतेवासियों के लोभ और बेईमानी के बारे में गवाही देते हैं। लियोनिदास ने एक बार पूछा था - “क्या कभी कोई सच्चा क्रेतेवासियों रहा है?”

पौलुस के यहाँ कहे गए शब्दों को समझने के लिए हमें क्रेतेवासियों और उनकी पृष्ठभूमि के बारे में जानना आवश्यक है। उनका द्वीप सबसे पहले एशिया माइनर के निकट के लोगों द्वारा बसाया गया था। यूरोप की पहली महत्वपूर्ण सभ्यता (मिनोअन सभ्यता) क्रेते द्वीप पर ही प्रारंभ हुई। इसका नाम राजा मिनोस के नाम पर रखा गया, जो यूनानी दंतकथाओं के अनुसार, ज़्यूस और यूरोपा का पुत्र था। कथाएँ उसे एक महान साम्राज्य का शासक और विधि-निर्माता, साथ ही एक क्रूर विजेता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। कहा जाता है कि उसने एथेंस को जीत लिया था और हर वर्ष सात लड़कों और सात लड़कियों को मिनोटौर के लिए बलिदान के रूप में देने की मांग करता था।

मिनोटौर एक पौराणिक प्राणी था, जिसका शरीर मनुष्य का और सिर बैल का-सा था। यूनानी पौराणिक कथाओं के अनुसार, राजा मिनोस ने इस प्राणी को एक भूलभुलैया में रखा था, जहाँ से कोई भी बाहर नहीं निकल सकता था। किन्तु एथेंस के थीसियस ने अंततः मिनोटौर को मार डाला और मिनोस की पुत्री एरियाड्ने द्वारा दिए गए धागे का अनुसरण करते हुए उस भूलभुलैया से बाहर निकल आया। क्रेते के

क्नोस्सोस में स्थित राजमहल में इतने सारे मार्ग और गलियारे थे कि वह उस प्रसिद्ध भूलभुलैया के समान प्रतीत होता था। पौलुस और तीतुस द्वारा उस द्वीप पर जाने से पहले निःसंदेह, पौलुस इन सभी कथाओं से अच्छी तरह से परिचित था।

मिनोअन काल के दौरान, क्रेतेवासियों ने कला, वास्तुकला और यांत्रिकी में उल्लेखनीय प्रगति कर ली थी। उन्होंने विशाल आँगनों से घिरे भव्य महल बनाए, सुंदर मिट्टी के बर्तन और आभूषण बनाए, लेखन की एक प्रणाली विकसित की, और गणित के क्षेत्र में भी काफी उन्नति की। किन्तु यह प्रगति आगे जारी नहीं रही।

रोमनों ने 68 ईसा पूर्व में क्रेते पर आक्रमण किया और दो वर्ष बाद उसे अपने बढ़ते हुए साम्राज्य का एक प्रांत बना लिया। रोमनों ने क्रेतेवासियों को बलपूर्वक अपने विशाल रोमी संसार में सम्मिलित कर लिया, परन्तु लोग स्वयं संकीर्ण और अलग-थलग ही बने रहे।

द्वीपों में रहने वाले लोग सामान्यतः अपनी प्रबल राष्ट्रीय विशेषताएँ विकसित कर लेते हैं।

क. उल्लेख का स्रोत (1:12क)

जब तक पौलुस और तीतुस उस द्वीप पर पहुँचे, तब तक क्रेतेवासियों का स्वभाव पूरी तरह स्थापित हो चुका था और वह प्राचीन लेखकों की आलोचनात्मक टिप्पणियों का विषय बन गया था। उनकी टिप्पणियाँ पौलुस के स्पष्ट कथन की पुष्टि करती हैं: “उन्हीं में से एक जन ने, जो उन्हीं का भविष्यद्वक्ता है, कहा है, “क्रेती लोग सदा झूठे, दुष्ट पशु, और आलसी पेटू होते हैं।” (तीतुस 1:12)। सामान्यतः यह माना जाता है कि यह “भविष्यद्वक्ता” (संभवतः किसी प्रकार का याजक) एपिमेनिदेस था (659 ईसा पूर्व में जन्मा), जो सोलोन का समकालीन था और फाइस्टोस या क्नोस्सोस का निवासी था।

ख. उल्लेख का सार (1:12ख-ड)

(1) क्रेतेवासी झूठे हैं (1:12ख)

एपिमेनिदेस के इस उल्लेख का सार चार भागों में है। पहला, क्रेतेवासियों “सदा झूठे” थे। तीतुस 1:12 में “सदा” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “लगातार, नियमित रूप से।” क्रेतेवासियों के बीच झूठ बोलना एक नियमित आदत थी। क्रेतेवासियों की झूठ बोलने की प्रवृत्ति इतनी प्रसिद्ध थी कि वह यूनानी भाषा में भी आ गई, क्योंकि जिस क्रिया का पौलुस ने उपयोग किया है उसका शाब्दिक अर्थ है “क्रेतेवासियों की तरह झूठ बोलना।”

क्रेतेवासी स्वभाव और व्यवहार दोनों ही प्रकार से झूठे थे। साथ ही, वे स्वयं भी झूठों के प्रति संवेदनशील थे और इस कारण वे यहूदी मत के अनुयायियों के लिए आसान शिकार बन जाते थे। यहूदी मत के अनुयायी “क्रेतेवासियों के साथ क्रेतेवासियों जैसा व्यवहार करते थे”—अर्थात् वे धोखा देने वालों को ही धोखा देते थे। पौलुस अच्छी तरह समझता था कि तीतुस किन परिस्थितियों का सामना कर रहा था।

झूठ हमेशा चरित्र को नष्ट करता है, लेकिन सत्य इसके असर को मिटाने वाला एक प्रभावशाली उपचार है। परमेश्वर के सत्य की सीधी धार से बढ़कर झूठ और झूठ बोलने वालों की कुटिलता को कोई और चीज़ प्रकट नहीं कर सकता। तीतुस के पास पवित्र आत्मा से प्रेरित सत्य था जो क्रेतेवासियों और यहूदी मत के अनुयायियों, दोनों के झूठ का सामना करने के लिए मौजूद था।

(2) क्रेतेवासी अधर्मी हैं (1:12ग)

क्रेतेवासियों को समुद्री डाकू और जहाज़ों को नष्ट करने वाले के रूप में वर्णित किया गया है। वे क्रूर, अविवेकी और लूटने वाले लोग थे। उनके अपने “भविष्यवक्ता” ने कहा, “क्रेतेवासियों सदा... बुरे पशु हैं।”

यहाँ “पशु” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “जंगली पशु।” “बुरे” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द काकोस है, जिसका अर्थ है “स्वभाव से भ्रष्ट, प्रकृति से बुरा।” यह किसी व्यक्ति के दुष्ट स्वभाव और इच्छाओं को दर्शाता है, न कि केवल उसके बुरे कार्यों को। इन दोनों शब्दों “बुरे पशु” को एक साथ लेने पर, क्रेतेवासियों का चित्र ऐसे लोगों के रूप में प्रस्तुत होता है जो पूरी तरह से व्यवस्था-विहीन और अनियंत्रित स्वभाव के थे। उनका व्यवहार जंगली जानवरों के समान था।

(3) क्रेतेवासी आलसी हैं (1:12घ)

क्रेतेवासी लोग “आलसी” भी थे। यहाँ “आलसी” के लिए प्रयुक्त शब्द आर्गोस है, जो नये नियम में आठ बार आता है और किंग जेम्स अनुवाद में सामान्यतः “निकम्मा” या “निष्क्रिय” के रूप में अनूदित किया गया है। यह शब्द निष्क्रियता को दर्शाता है और फलहीन एवं उजड़ी अवस्था के साथ जुड़ा हुआ है।

(4) क्रेतेवासी कामातुर हैं (1:12ङ)

पौलुस के उल्लेख से क्रेते द्वीप सुसमाचार के लिए एक कठोर एवं अनुपजाऊ भूमि जैसा प्रतीत होता है। यह अनुग्रह का एक अद्भुत चमत्कार मात्र ही था कि उस द्वीप पर एक कलीसिया अस्तित्व में थी।

आश्चर्य की बात नहीं कि यहूदीमतवादी और अन्य झूठे शिक्षक क्रेते में किसी अन्य प्रकार की “फसल” उगा सके; क्योंकि झाड़ियाँ तो लगभग कहीं भी उग जाती हैं।

इस भयानक गवाही का अंत यह कहकर होता है कि क्रेतेवासी “आलसी पेटू” हैं। “पेटू” के लिए प्रयुक्त शब्द वही है जिससे अंग्रेज़ी के शब्द गैस्ट्रिक और गैस्ट्राइटिस निकले हैं। यहाँ यह शब्द अलंकारिक रूप से लोभ या अति-भोजन को दर्शाने के लिए उपयोग किया गया है। सरल शब्दों में, क्रेतेवासी “आलसी भोगी” थे। वूएस्ट का विचार था कि यह यूनानी शब्द अत्यधिक मोटापे की ओर भी इशारा करता है।

इस पद में दिए गए चार प्रकार के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि क्रेते के लोग एक अप्रिय समूह हैं और क्रेते एक निराशाजनक सेवाक्षेत्र जैसा लगता है। फिर भी, सुसमाचार लोगों को बदलने में विशेष सामर्थ्य रखता है। उदाहरण के लिए, कुरिन्थ के अविश्वासी लोगों के विषय में ज़रा विचार करें।

1 कुरिन्थियों 6:9-11 में, पौलुस ने उनका अत्यन्त अप्रिय वर्णन प्रस्तुत किया और फिर कहा, “और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।” इसी प्रकार, इफिसियों 2:1-6 विश्वासियों के जीवन में हुए महान परिवर्तन को प्रकट करता है। जिस परमेश्वर ने कुरिन्थियों और इफिसियों को उद्धार का उपहार देकर बदल दिया, वही क्रेतेवासियों के लिए भी ऐसा कर सकता था। तीतुस एक कठिन परिस्थिति का सामना कर रहा था, परन्तु यह बिल्कुल भी निराशाजनक नहीं था।

2. पौलुस ने एक सच्ची गवाही का हवाला दिया (1:13)

क. क्रेतेवासियों के चरित्र का समर्थन (1:13क)

पौलुस स्वयं जानता था कि क्रेते के लोग कैसे थे, इसलिए वह एपिमेनिदेस से असहमत नहीं हो सकता था। प्रेरित ने कहा, "यह गवाही सत्य है।" यद्यपि एपिमेनिदेस ने यह बात सैकड़ों वर्ष पहले कही थी, फिर भी क्रेते के लोगों के चरित्र के बारे में उसका मूल्यांकन पौलुस के समय में भी सही सिद्ध हुआ।

पीढ़ी दर पीढ़ी, क्रेते के लोगों का चरित्र वैसा ही बना रहा। यूनानी दर्शन उस द्वीप में आया, परन्तु उसने क्रेते के लोगों को नहीं बदला। रोमी व्यवस्था इन दुष्ट लोगों पर लागू की गई, पर उसने उनके हृदय को नहीं बदला। फिर सुसमाचार आया और वहाँ सफल हुआ जहाँ मिनोअन धर्म, यूनानी दर्शन और रोमी शासन सभी असफल रहे थे। पर अब यहूदी पंथ के अनुयायी अपने नियमों, रीति-रिवाजों और प्रतिबंधों के साथ उस कार्य को बिगाड़ने वाले थे, जिसे अनुग्रह ने किया था।

ख. मसीही चरित्र का दृढ़ता से पालन करवाना (1:13ख)

क्योंकि कुछ क्रेते के लोग यहूदी पंथ की झूठी शिक्षा के प्रभाव में आ रहे थे, इसलिए पौलुस ने तीतुस से कहा, "इसलिये उन्हें कड़ाई से चेतावनी दिया कर कि वे विश्वास में पक्के (स्वस्थ) हो जाएँ।" प्रेरित को उन क्रेते के मसीहियों के उद्धार पर संदेह नहीं था, जिनकी सेवा तीतुस कर रहा था। परन्तु वे अपने स्वाभाविक झुकाव—झूठ बोलने, अधर्म, आलस्य और वासना—की ओर अधिक झुके हुए दिख रहे थे, इसलिए पौलुस ने समझा कि हल्की आपत्ति पर्याप्त नहीं होगी। एक कड़ी, प्रेरिताई अधिकार की फटकार उनके लिए आवश्यक थी। क्रेते के मसीही इस खतरे में थे कि वे यहूदी व्यवस्था के बंधन में फँस जाएँ और अपने उन व्यवहारों की ओर लौट जाएँ, जो उनके उद्धार में आने के दिनों से पहले की पहचान हुआ करता था।

यहाँ "चेतावनी" के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसमें डांटने और दोषी ठहराने—दोनों ही अर्थ हैं। तीतुस को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में रहते हुए अधिकार के साथ क्रेते के लोगों को डाँटना था, ताकि उनमें पाप का बोध हो और यह उन्हें अंगीकार की ओर अगुवाई करें। "कड़ाई से" के लिए प्रयुक्त शब्द एक ऐसी संक्षिप्त, तीव्र और निर्णायक फटकार की ओर संकेत देता है, जो काटने वाली और पीड़ा देने वाली हो।

बहुत से लोग मसीहियत को कोमलता के साथ जोड़ते हैं—संभवतः इसलिए कि लोकप्रिय बच्चों का भजन "कोमल यीशु" अक्सर मसीही माताओं द्वारा लोरी के रूप में गाया जाता था:

कोमल यीशु,

विनम्र और सौम्य,

एक छोटे बच्चे को देखो;

मेरी सरलता पर दया करो,

मुझे अपने पास आने दो।

—चार्ल्स वेस्ली

ये शब्द प्रभु यीशु के विषय में पूरी तरह गलत धारणा प्रस्तुत करते हैं। निस्संदेह वह नम्र और दीन था (मत्ती 11:29), क्योंकि नम्रता का अर्थ है - नियंत्रित शक्ति; परन्तु वह कभी भी कोमल नहीं था। “यह अत्यंत खेद की बात है,” जे. बी. फिलिप्स ने कहा, “कि ‘बच्चे’ शब्द के साथ भजन के लिए उपयुक्त लय वाले शब्द बहुत ही कम हैं।” [4]

एक कोमल यीशु की धारणा पूरी तरह से गलत है। पवित्रशास्त्र प्रकट करता है कि कई अवसरों पर अपने उसने क्रोध को भी प्रकट किया (मरकुस 3:5) और उसने एक कोड़ा लेकर मन्दिर से सड़ाफों को बाहर निकाल दिया (यूहन्ना 2:13-17)। उसने अपने समय के धार्मिक यहूदी अगुवों को कपटी, नरक की सन्तान, मूर्ख, और “साँपों की सन्तान” (मत्ती 12:34) कहकर धिक्कारा, और कहा कि वे अन्धे, अशुद्ध और अधर्म से भरे हुए हैं। वे भली-भाँति जानता था कि धार्मिक व्यवस्था के लोग उसे मार डालने के लिए षडयंत्र रच रहे हैं, फिर भी वह अपनी बातों में निडर बना रहा।

पौलुस भी किसी प्रकार से कोमल नहीं था। जब आवश्यकता पड़ी, तो उसने पतरस का “सबके सामने” सामना किया (गलातियों 2:11-14) और वह याकूब (प्रेरितों के काम 15) जैसे प्रभावशाली व्यक्ति से भी भयभीत नहीं हुआ (जैसा पतरस हुआ था)। तीतुस अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानता था कि उपदेशों के मामले में पौलुस पूरे यरूशलेम की कलीसिया का सामना करने के लिए तैयार रहता था। उसने वहाँ की यहूदी-मत की व्यवस्था को चुनौती दी थी कि वे उससे तीतुस का खतना करवाने की कोशिश करें, जो एक अन्यजाति था। यरूशलेम के प्रेरित और भविष्यद्वक्ता यह कहने के लिए तो तैयार थे कि वे इस उपदेश को स्वीकार करते हैं कि अन्यजातियों पर खतना का कोई बन्धन नहीं है; परन्तु पौलुस ने उन्हें परखा। वास्तव में, उसने मानो कहा, “अच्छा! यह मेरा मित्र और मेरे द्वारा प्रभु में आया है, जिसका नाम तीतुस है। यह एक खतनारहित अन्यजाति है। इसे अपने घरों में और प्रभु भोज में अपने साथ बैठने के लिए आमंत्रित करो।”

जब महायाजक हनन्याह ने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे पौलुस के मुँह पर मारें, तो पौलुस ने उसे “चूना फिरी हुई भीत” कहा (प्रेरितों के काम 23:3)। यह सच है कि जब उसे पता चला कि हनन्याह कौन है, तो पौलुस ने क्षमा माँगी (यद्यपि उसमें थोड़ी व्यंग्य की झलक भी थी), परन्तु कोई भी पौलुस को कोमल नहीं कह सकता।

“उन्हें कड़ाई से चेतावनी दिया कर,” पौलुस ने तीतुस को सलाह दी। जो लोग परमेश्वर के लोगों के विश्वास को बिगाड़ना चाहते हैं, उनके साथ किसी प्रकार की नरमी बरतने की कोई गुंजाइश नहीं है—चाहे वे पौलुस के समय के व्यवस्था-वादी झूठे उपदेशक हों या आज के तथाकथित उदारवादी लोग।

पौलुस ने उन लोगों को डाँटने का कारण भी बताया जो यहूदी-पंथ की बातें सुन रहे थे: “कि वे विश्वास में पक्के हो जाएँ।” प्रेरित का उद्देश्य केवल झूठे उपदेशकों के साथ वाद-विवाद में जीतना नहीं था। वह चाहता था कि जो विश्वासी धोखा खा गए थे और पीछे हटने की अवस्था में थे, वे फिर से सही मार्ग पर लौट आएँ। वह चाहता था कि वे अपनी आत्मिक स्वास्थ्य को फिर से प्राप्त करें। जो आवश्यक था, वह केवल ऊपर-ऊपर का उपचार या पट्टी बाँधना नहीं, बल्कि एक शल्य-चिकित्सा करनी थी।

स्पष्ट है कि पौलुस को विश्वास था कि तीतुस में वह नैतिक और आत्मिक दृढ़ता है कि वह उसके निर्देशों का पालन कर सके। यह कोई छोटा कार्य नहीं था। वे झूठे शिक्षक एक शक्तिशाली समूह थे और अपने

विषय में बहुत आत्मविश्वासी थे; और क्रेते के लोग स्वयं भी स्वभाव से बड़े कठिन थे। एक युवा व्यक्ति तीतुस से यह अपेक्षा करना कि वह एक तरफ तो इन झूठे उपदेशकों का सामना करे और दूसरी ओर शारीरिक और झगड़ालू स्वाभाव के क्रेते के लोगों का सामना करे—यह वास्तव में एक बड़ी जिम्मेदारी थी। पौलुस की आज्ञा को पूरा करने के लिए तीतुस को एक बड़े साहस, आत्मिक धैर्य और बाइबल के गहरे ज्ञान की आवश्यकता थी।

ग. झूठे उपदेशकों का संदेश (1:14)

1. इसकी विषय-वस्तु (1:14क-ख)

क. शानदार यहूदी कहानियाँ (1:14क)

यरूशलेम से आए हुए दूतों के पास व्यापार करने के लिए दो प्रकार की बातें थीं। पहली चीज़ जिसे वे मसीहियों के बीच फैलाने का प्रयास करते थे, वह थी “यहूदियों की कथा कहानियाँ।” ये कहानियाँ अपोक्रीफा, तल्मूद और कब्बाला में पाई जाती थीं। पौलुस स्वयं इन कथाओं को सुनते हुए पला-बढ़ा था, इसलिए वह अच्छी तरह से जानता था कि ये कितनी बेमतलब की होती हैं। उनमें से कुछ का उपयोग किसी नैतिक सिद्धांत को समझाने के लिए किया जा सकता था, परन्तु आत्मिक पोषण के स्रोत के रूप में वे पूरी तरह बेकार थीं। उनका अध्ययन करना केवल समय की बर्बादी था। आखिरकार, परमेश्वर ने अपने वचन में सभी आवश्यक बातों के विषय में पूरी और अंतिम रूप से कह दिया है, तो फिर क्यों इन गढ़ी हुई कथाओं में उलझना की ज़रूरत है? बाइबल में इतनी सच्चाई है कि वह मनुष्य के मन और हृदय को अनंत काल तक व्यस्त रख सकती है, तो फिर किसी को क्यों इन यहूदियों द्वारा गढ़ी हुई कहानियों की अंधी गलियों में भटकने की आवश्यकता है?

नया नियम दर्शाता है कि पौलुस की कलीसियाओं में यहूदी ढोंगियों का प्रवेश व्यापक रूप से फैल चुका था। पौलुस को उनके झूठे उपदेशों का सामना केवल क्रेते में ही नहीं, बल्कि गलातिया, अन्ताकिया, कुरिन्थ और कुलुस्से में भी करना पड़ा। उसी समय के आसपास जब पौलुस तीतुस को क्रेते में इस समस्या से निपटने के लिए प्रेरित कर रहा था, वह तीमुथियुस को भी लिख रहा था कि वह इफिसुस में यहूदियों द्वारा गढ़ी हुई कहानियों के विरुद्ध दृढ़ता से खड़ा रहे (1 तीमुथियुस 1:4)।

ख. झूठी यहूदी परंपराएँ (1:14ख)

यरूशलेम से आए दूत, अपने निरर्थक प्रमाण-पत्रों से सुसज्जित होकर, दूसरी बात भी फैलाते थे: झूठे यहूदी परम्पराएँ, जिन्हें पौलुस ने “मनुष्यों की आज्ञाएँ” कहा। “आज्ञाएँ” के लिए प्रयुक्त शब्द उन बातों को दर्शाता है जो थोप दी जाती हैं—निर्देश, आदेश, और नैतिक व धार्मिक नियम। ऐसी “आज्ञाओं” के प्रचार में जो बात आपत्तिजनक और अनुचित थी, वह यह थी कि वे केवल मनुष्यों द्वारा बनाए गए आदेश थे।

यहूदी लोग बाइबल के पुराने नियम की आज्ञाओं को उन लोगों पर थोपने में कुशल थे, जिनके लिए वे कभी निर्धारित ही नहीं की गई थीं। इसके सबसे स्पष्ट उदाहरण मूसा की व्यवस्था से सम्बन्धित नियम हैं—जैसे खतना, सब्त, भोजन-संबंधी नियम, उपवास, पर्व और पशु-बलि। इन औपचारिक व्यवस्थाओं का पालन करने की आवश्यकता कलवरी पर समाप्त हो गई थी। इन्हें मसीहियों पर थोपना किसी भी तरीके से उचित

नहीं था, क्योंकि इन आदेशों का नये नियम में कोई वैध स्थान नहीं था। क्योंकि ऐसी व्यवस्थाएँ एक बीते हुए युग से सम्बन्ध रखती थीं, इसलिए वे यहूदी मसीहियों पर भी लागू नहीं होती थीं।

यहूदी लोग उन बातों को भी गढ़ने में बहुत सक्रिय और रूचि रखते थे जिन्हें वे दैवीय आदेश बताते थे। रब्बियों के अनुसार, परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा को दो प्रकार की व्यवस्थाएँ दी थीं। एक लिखित व्यवस्था थी, जिसे वे तोराह कहते थे, और दूसरी मौखिक व्यवस्था थी, जिसमें लगातार बढ़ती हुई रचनाएँ, मत, निर्णय, व्याख्याएँ, चर्चाएँ और परम्पराएँ शामिल थीं। इन परम्पराओं का यह बढ़ता हुआ संग्रह आगे चलकर तल्मूद के रूप में विकसित हुआ। स्वयं प्रभु ने इन परम्पराओं को मनुष्यों की उत्पत्ति का बताकर अस्वीकार किया और उन्हें पूरी तरह निरर्थक बताते हुए उसे सिरे से नकार दिया था (मत्ती 15:1-12)।

रब्बी लोग “बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में न पकाना” (व्यवस्थाविवरण 14:21) जैसी आज्ञा पर महीनों तक बहस करते रहते थे। उन्होंने अपनी चर्चाओं से अनगिनत पृष्ठ भर दिए, रसोई के दैनिक कामों के लिए नियमों की लंबी सूची बना दी, और खाना बनाना एक कठिन काम बना दिया। इसी प्रकार, वे यह भी लगातार चर्चा करते रहते थे कि सब्त के दिन क्या “काम” कहलाता है (निर्गमन 20:8-11)। उन्होंने असंख्य छोटे-छोटे नियम बना दिए, जिन्हें यदि गंभीरता से लिया जाए, तो सब्त का पालन एक बुरा-स्वप्न बन जाता—जबकि परमेश्वर का उद्देश्य था कि वह विश्राम, मनन और शांति का समय हो। प्रभु ने यहूदी धार्मिक अगुवों को इस बात के लिए कठोरता से डाँटा कि वे परमेश्वर के लोगों पर ऐसे बोझ डालते हैं (मत्ती 23:1-4)। जबकि, उन्होंने स्वयं अपने सब्त पालन में इन नियमों के अधीन होना स्वीकार नहीं किया।

यरूशलेम की सभा में, जो कलीसिया में अन्यजातियों की स्थिति का निर्णय करने के लिए बुलाई गई थी, पतरस ने इस बात का विरोध किया कि “चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं” (प्रेरितों के काम 15:10)। इस सभा ने एक बार और सदा के लिए व्यवस्था से स्वतंत्रता के सिद्धांत की पुष्टि की। फिर भी, यरूशलेम और पलिस्तीन से आए दूत अन्यजाति संसार में विश्वासियों पर इस भारी और निरर्थक जूए को डालने का प्रयास करते रहे। पौलुस इस बात से बहुत क्रोधित था और उसने तीतुस को यह समझाने का प्रयास किया कि ऐसे सभी मनुष्यों द्वारा बनाए गए नियमों और व्यवस्थाओं के प्रति दृढ़ नफरत और तिरस्कार होना चाहिए।

2. इसका उद्देश्य (1:14ग)

इन झूठे उपदेशों का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट था। उनकी गढ़ी हुई कथाएँ और आदेश लोगों को “सत्य से भटका देने” के लिए थे। “भटक जाना” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “अपने आप को दूर कर लेना।” यहाँ यह शब्द यह दर्शाता है कि ये झूठे उपदेशक स्वयं ही सत्य से दूर हो चुके थे। अर्थात्, ये कहानियाँ और आज्ञाएँ ऐसे लोगों से आई थीं जिन्होंने सत्य के मार्ग को छोड़ दिया था। ऐसा मनुष्य जो जान-बूझकर प्रकट और ज्ञात सत्य से मुड़ जाता है, उससे अधिक कपटी कोई नहीं होता।

हम सब ऐसे लोगों से मिले हैं जो सत्य को स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं। वे उस रोगी के समान हैं जो यह मानने से इनकार करता है कि उसे कैंसर है और शल्य-चिकित्सा या किसी अन्य निर्धारित उपचार को स्वीकार नहीं करता। डॉक्टर के पास एक्स-रे और बायोप्सी के प्रमाण होते हैं, फिर भी वह रोगी विश्वास नहीं करता और सड़क-छाप डॉक्टरों तथा नकली इलाजों की तलाश करता है।

जो लोग सत्य को स्वीकार नहीं करते, वे उस व्यक्ति के समान भी हैं जो सही आर्थिक सलाह को अनदेखा करता है। उसका व्यापारी मित्र उसे समझाता है कि वह कुछ विशेष शेयर न खरीदे, क्योंकि वह कंपनी दिवालिया होने के कगार पर है। उस कंपनी का पहले अच्छा रिकॉर्ड और प्रतिष्ठा रही थी, परन्तु व्यापारी के पास बैलेंस शीट और गोपनीय रिपोर्टें थीं जो उसकी सलाह को सिद्ध करती थीं।

फिर भी उसका मित्र सत्य को मानने से इनकार करता है और स्टॉक-ब्रोकर की आशावादी बातों पर विश्वास करके निवेश कर देता है—और अंततः अपने ही विनाश का कारण बनता है।

बाइबल हमें परमेश्वर के बारे में, स्वयं हमारे बारे में, और पाप तथा उद्धार के विषय में सत्य बताती है। क्योंकि इसकी कुछ सच्चाइयाँ प्राकृतिक मन और शारीरिक मन—दोनों को अप्रिय लगती हैं, इसलिए कुछ लोग उनसे मुँह मोड़ लेते हैं और मनुष्यों की गढ़ी हुई कहानियों और नियमों पर ध्यान देने लगते हैं।

दोहरे तरीके से अन्धे हो जाने के कारण, वे शैतान के दूत बन जाते हैं—अंधों के अंधे अगुवे, जो स्वयं भी धोखा खाए हुए हैं और दूसरों को भी धोखा देते हैं।

यह एक प्रसिद्ध तथ्य है कि जो लोग गलत मार्ग पर चलने के लिए समर्पित होते हैं, वे दूसरों को भी उसी मार्ग पर ले जाना चाहते हैं जिसे उन्होंने चुना है। जो लोग सद्गुण के मार्ग को छोड़ देते हैं, वे दूसरों को भी भटकाने का प्रयास करते हैं। जो व्यक्ति शराब पीता है, वह सामान्यतः ऐसे साथियों को पसंद करता है जो उसके साथ शराब पीएँ। जो लोग धार्मिक त्रुटि को अपनाते हैं, वे दूसरों को भी उसी गलत रास्ते पर ले जाना चाहते हैं। यीशु ने कहा, “हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो” (मत्ती 23:15)। पंथी लोग केवल स्वयं भटक जाने से संतुष्ट नहीं होते; वे जितनों को संभव हो सके, उतनों को भी अपने साथ भटका देना चाहते हैं।

घ. झूठे उपदेशकों की नैतिकता (1:15-16)

1. एक विरोधाभास (1:15)

क. शुद्ध व्यक्ति (1:15क)

अब पौलुस झूठी शिक्षा के व्यावहारिक परिणामों की तुलना सच्ची पवित्रशास्त्रीय शिक्षा के परिणामों से करता है। उसने कहा, “शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तुएँ शुद्ध हैं।” यहाँ “शुद्ध” के लिए मूल रूप से जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह “कथारोस” है, जिसका अर्थ है “शुद्ध किया हुआ” या “स्वच्छ और स्वस्थ।” शुद्ध होने का अर्थ है पवित्र होना, अशुद्धता से मुक्त होना, निष्कलंक और बिना किसी दोष के होना। नैतिक दृष्टि से, “कथारोस” का सम्बन्ध भ्रष्ट इच्छाओं और उनसे उत्पन्न होने वाले दोष से मुक्त होने से है।

एक अर्थ में, शुद्ध मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ अपनी ही पवित्रता के कारण संसार की भ्रष्टता और धिनौनेपन से सुरक्षित रहते हैं। उनकी आन्तरिक पवित्रता अशुद्धता को दूर कर देती है। वे अपने मन और हृदय में अशुद्ध विचारों को ठहरने नहीं देते, और अशुद्ध संगति, कहानियों, पुस्तकों, फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों से दूर रहते हैं।

क्योंकि पवित्र आत्मा उनके हृदयों में राज्य करता है, वे जब अशुद्धता प्रवेश करती है तो उससे घृणा करते हैं और शुद्धि के लिए कलवरी की ओर दौड़ते हैं। जैसे सूर्य की किरणें गंदे काँच से होकर भी अछूती निकल जाती हैं, वैसे ही वे भोर की तरह उज्ज्वल और निष्कलंक बने रहते हैं। उनके मन “जो जो बातें पवित्र है” (फिलिप्पियों 4:8) उन्हीं बातों पर लगे रहते हैं।

जब कोई अशुद्ध मन वाला व्यक्ति श्रेष्ठगीत को पढ़ता है, तो उसके मन में अशुद्ध विचार उत्पन्न होते हैं; परन्तु जब कोई शुद्ध मन वाला व्यक्ति इस दैवीय प्रेरणा से प्रेरित, परमेश्वर-श्वसित प्रेमगीत को पढ़ता है, तो वह उसमें मसीह को देखता है। श्रेष्ठगीत दो भिन्न व्यक्तियों को प्रस्तुत करता है: शूलेमी स्त्री, जिसकी भावनाएँ उसके प्रिय से जुड़ी हुई हैं—एक चरवाहा, जो हमें मसीह की याद दिलाता है; और सुलैमान, जो इस संसार का एक राजकुमार है, जो धन, बुद्धि और वैभव से सुसज्जित है। वह शूलेमी को आकर्षित करने का निश्चय करता है। [5]

अपनी पवित्रता से सुसज्जित और सुरक्षित होकर, शूलेमी स्त्री इस कहानी में बिना किसी अशुद्धता के आगे बढ़ती है। वह सुलैमान के सबसे साहसी और निर्लज्ज प्रयासों को भी ठुकरा देती है। वास्तव में, सुलैमान स्वयं स्वीकार करता है कि वह उससे भय खाता है (श्रेष्ठगीत 6:4), और उसकी पवित्रता की भी कद्र करता है (श्रेष्ठगीत 6:9)।

उसकी चापलूसी, छिपे हुए संकेतों और वादों के प्रति उसका उत्तर अत्यन्त उत्तम है: वह उसे उस एक की याद दिलाती है, जिसे वह पहले ही अपना हृदय दे चुकी है। वह कहती है, “मैं अपने प्रिय की हूँ, और उसकी इच्छा मेरी ओर रहती है” (श्रेष्ठगीत 7:10)। और वहीं बात समाप्त हो जाती है! सुलैमान निराश होकर रह जाता है और उसे अपनी अन्य स्त्रियों से ही संतोष करना पड़ता है। “हज़ार में से एक स्त्री” (सभोपदेशक 7:26-28), जिसे सुलैमान ने अपनी हज़ार पत्नियों और रखैलों के बीच व्यर्थ खोजा, उसे बहुत देर से पाया। अपनी वासना के कारण, उसने उसे पाने से पहले ही खो दिया।

ख. दूषित व्यक्ति (1:15ख-घ)

(1) उसका बाहरी दूषित दृष्टिकोण (1:15ख)

पौलुस आगे लिखता है, “पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं।” अशुद्ध लोग निंदा करने वाले होते हैं। वे सोचते हैं कि हर व्यक्ति की कोई न कोई कीमत होती है, और सब लोग उतने ही अशुद्ध हैं जितने वे स्वयं हैं। उनकी आँखें वासनापूर्ण होती हैं, उनकी भाषा गन्दी होती है, उनके कान अश्लील बातों को सुनने के लिए तत्पर रहते हैं, और उनके विचार भ्रष्ट होते हैं। एक सुन्दर युवती को वे पतन की ओर धकेलना चाहते हैं। एक निर्दोष बालक को वे दूषित करना चाहते हैं। एक छोटे बच्चे का वे दुरुपयोग करना चाहते हैं।

वे दलालों, अश्लीलता फैलाने वालों और विकृत आचरण करने वालों की प्रशंसा करते हैं। उनका जीवन वासना से पूर्ण रूप से सड़े हुए होते हैं।

सदोम के लोगों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं था। वे बयान से बाहर गन्दे और भ्रष्ट थे। लूत कभी भी वास्तव में सदोम में अपने आप को घर जैसा अनुभव नहीं कर पाया (2 पतरस 2:7-8)। सदोम के लोगों की दुष्ट

जीवन-शैली के विरुद्ध उसके विरोध ने केवल नगर के लोगों की शत्रुता को और अधिक भड़का दिया था। अन्ततः, परमेश्वर ने स्वयं हस्तक्षेप करने और सदोम को सदा के लिए एक उदाहरण बनाने का निश्चय किया।

आग के न्याय के कुछ ही घंटे पहले, दो स्वर्गदूत लूत के पास आए (उत्पत्ति 19)। वे लूत और सदोम के लोगों को उत्तम पुरुषों के समान प्रतीत हुए। उन्हें देखते ही सदोमियों की विकृत वासनाएँ भड़क उठीं।

आधी रात तक, सदोम के लोग लूत के घर के बाहर इकट्ठा होते रहे। उन्होंने उसके दरवाज़े को काफी बल से खटखटाया और माँग की कि वह अपने अतिथियों को बाहर लाए और उनके हवाले कर दे। लूत भयभीत हो उठा, परन्तु उसके इनकार ने उनकी वासना की आग को और अधिक भड़का दिया। उसके द्वार पर खड़े उन भ्रष्ट लोगों के लिए कुछ भी शुद्ध या पवित्र नहीं था। वे उन दोनों पुरुषों को चाहते थे और जो भी उनके मार्ग में आता, उसे कुचल देने के लिए तैयार थे। स्वर्ग की निष्कलंक उपस्थिति से आए दो प्रकाशमय स्वर्गदूत अभी-अभी सदोम में पहुँचे थे—और सदोम के लोग उन्हें भी अपवित्र करना चाहते थे।

जैसा पौलुस ने कहा, “जो अशुद्ध और अविश्वासी हैं, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है।”

पौलुस के शब्दों के अनुसार, क्रेते के कुछ झूठे शिक्षकों ने न केवल सही शिक्षा को, बल्कि नैतिकता को भी छोड़ दिया था। आज तथाकथित कलीसिया में ऐसे कई लोग पाए जाते हैं जो समलैंगिक आचरण में लिप्त हैं। कुछ कलीसियाओं ने तो उन्हें सेवकाई के लिए अभिषेक भी कर दिया है।

सुलैमान उस व्यक्ति का उदाहरण है जो वासना के कारण भ्रष्ट हो गया। किसी को भी जीवन में उससे बेहतर शुरुआत नहीं मिली थी। वह एक साम्राज्य का उत्तराधिकारी था, उसके पिता दाऊद था, और दाऊद के महान भजनों से उसे शिक्षा मिली थी।

जब परमेश्वर ने सुलैमान से मुलाकात की, तो उसने स्वर्ग से मिलने वाला ज्ञान माँगा और उसे प्राप्त भी हुआ। उसने अच्छी शुरुआत की। उसने मन्दिर का निर्माण कराया और इस्राएल को महानता के मार्ग पर स्थापित किया। परन्तु दुःख की बात है कि अपने जीवन के अंत तक पहुँचने से पहले ही उसने अपने जीवन को नष्ट कर लिया।

सुलैमान की वासना बढ़ती ही गई, यहाँ तक कि उसका हरम किसी भी अन्यजाति राजा के हरम की बराबरी करने लगा। कोई भी स्त्री उसकी दृष्टि से सुरक्षित नहीं थी; उसकी दृष्टि एक शुद्ध स्त्री को भी अपवित्र अनुभव कराती थी, जैसा कि शूलेमी स्त्री ने अनुभव किया।

जब सुलैमान ने इस आत्मिक विचारों वाली ग्रामीण युवती पर अपने अवांछित आकर्षण को प्रकट किया, तो उसकी चापलूसी और कल्पनाओं ने शर्म की हद पार कर दी। परन्तु वह उसके प्रलोभन और प्रशंसा के पुल से मोहित नहीं हुई। जब वह उसकी शारीरिक सुन्दरता का वर्णन करने लगा (श्रेष्ठगीत 7:1-9), तब उसने अपने से दूर परन्तु शीघ्र आने वाले प्रिय के विचारों में शरण ले ली।

स्त्रियाँ सुलैमान के पतन का कारण बनीं। उसने अपनी वासना को वैध बनाने के लिए सैकड़ों स्त्रियों से विवाह किया। उसने एक स्थानीय वेश्या के व्यवहार में लगभग अशोभनीय रुचि ली और दार्शनिक, परन्तु लगभग अपराधपूर्ण रुचि के साथ यह देखा कि एक युवक उसके द्वार तक कैसे पहुँचता है (देखें नीतिवचन 7)। [6]

हम यह सोच सकते हैं कि सुलैमान उस विशेष वेश्या के बारे में इतना कैसे जानता था, उसने उस युवक को रोकने के लिए किसी को क्यों नहीं भेजा, और उसने उस स्त्री पर व्यवस्था का पूरा दण्ड क्यों नहीं लागू किया। सुलैमान भ्रष्ट हो गया था और अब उसके मन में शुद्ध विचारों का शासन नहीं रहा था। जो प्रकाश उसमें था, वह अन्धकार में बदल चुका था, और वह अन्धकार कितना भयानक था (मत्ती 6:23)।

अपने पतन, वासनाओं और मूर्तिपूजा के कारण उसने अपने जीवन के अंत तक आते-आते यरूशलेम को लगभग बेबीलोन जैसा बना दिया। पौलुस ने तीतुस को ऐसे लोगों से सावधान रहने की चेतावनी दी।

(2) उसके दूषित आंतरिक मूल्य (1:15ग-घ)

वे पंथी मानसिक और नैतिक—दोनों रूपों में भ्रष्ट हो चुके थे। पौलुस ने कहा, “उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।” उस व्यक्ति के लिए बहुत कम आशा रह जाती है, जो प्रकट सत्य से मुँह मोड़कर झूठी शिक्षाओं में शरण लेता है और अनैतिक जीवन में डूब जाता है। उसके विचार और उसका विवेक विकृत हो जाते हैं। वह स्वयं को यह विश्वास दिला देता है कि गलत ही सही है और त्रुटि ही सत्य है।

ऐसा व्यक्ति इस खतरे में है कि उसे उसके भ्रमों और कल्पनाओं के कारण पवित्र आत्मा द्वारा छोड़ दिया जाए।

2. निष्कर्ष (1:16)

क. झूठे उपदेशक क्या दावा करते हैं (1:16क)

झूठे उपदेशक “कहते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं।” वे अक्सर सेमिनरी और बाइबल कॉलेजों में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होते हैं। वे प्रमुख उपदेशक पदों पर होते हैं। वे मिशन बोर्डों में बैठते हैं। वे कलीसिया और उसकी संस्थाओं के प्राचीन, डीकन, और अधिकारी बन जाते हैं।

वे दावा करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं। परन्तु वास्तव में वे तथाकथित उदारवादी बन जाते हैं, जो विश्वास के हर मुख्य सिद्धांत का इनकार करते हैं; व्यवस्था-वादी, जो नये नियम के अनुग्रह के स्थान पर पुराने नियम की व्यवस्था को स्थापित करना चाहते हैं; वामपंथी, जो उद्धार देने वाले सुसमाचार के स्थान पर सामाजिक सुसमाचार को सर्वोपरी रखना चाहते हैं; और स्वेच्छाचारी, जो दुष्टता को उचित ठहराकर और अनैतिकता को बढ़ावा देकर समाज की नैतिक नींव को कमजोर करते हैं। वे कहते तो हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, परन्तु परमेश्वर उन्हें नहीं जानता (मत्ती 7:15-23)।

ख. झूठे उपदेशक क्या करते हैं (1:16ख-ड)

(1) परमेश्वर का इनकार (1:16ख)

वे दावा तो करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, परन्तु उनके काम परमेश्वर का इनकार करते हैं। पौलुस ने लिखा, “वे अपने कामों से उसका इनकार करते हैं।” यहाँ “इनकार” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “अरनेओमाई” है, जिसका अर्थ है “विरोध करना” या “खंडन करना।” झूठे शिक्षकों के कहने और करने में विरोधाभास होता है; उनका व्यवहार उनके विश्वास के दावे के विपरीत होता है। यदि वे वास्तव में

परमेश्वर को जानते, तो वे बाइबल को उसके सीधे अर्थ में स्वीकार करते और उसके उपदेशों तथा आज्ञाओं को अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करते।

एक युवा प्रथम-वर्ष का धर्मशास्त्र का छात्र मुझे अपने सेमिनरी के एक शिक्षक के बारे में बता रहा था। उस व्यक्ति की कक्षा के प्रारम्भिक शब्द सीधे और स्पष्ट थे: “उत्पत्ति की पहली ग्यारह अध्याय केवल मिथ्या हैं,” उसने कहा। (वास्तव में वे पूरी बाइबल की नींव हैं!) [7]

संभवतः, वह परमेश्वर में विश्वास करने का दावा करता था; अन्यथा, वह सेमिनरी में पढ़ा ही नहीं रहा होता। अपनी कक्षा के पहले ही शब्दों में उसने बाइबल का इनकार कर दिया और स्वयं को एक ढोंगी, भेड़ की खाल में भेड़िया, और एक छल करने वाले के रूप में प्रकट कर दिया।

ऐसा विचार रखने वाला एक ईमानदार व्यक्ति पद छोड़ देता और किसी अन्य प्रकार से अपनी जीविका कमाता। आखिरकार, जो युवा उस सेमिनरी में प्रवेश लेते हैं, वे अपने समय और धन को विश्वास में बढ़ने के लिए लगाते हैं। वे यह अपेक्षा नहीं करते कि एक अविश्वासी प्राध्यापक, जिसने डिग्रियाँ तो प्राप्त की हैं परन्तु परमेश्वर के वचन के विषय में एक आत्मा से सिखाए गए साधारण सेवक से भी कम जानता है, उनके विश्वास को नष्ट कर दे। ऐसे लोगों का सेवकाई के लिए प्रशिक्षण ले रहे व्यक्तियों को आत्मा को नष्ट करने वाली शिक्षाएँ देते रहना, एक “अशुद्ध” मन और विवेक को प्रकट करता है।

यहाँ “अशुद्ध” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “दागदार, दूषित, प्रदूषित” या “रोगग्रस्त।” निस्संदेह, केवल वही व्यक्ति, जिसका मन और विवेक रोगग्रस्त हो, वर्षों तक तथाकथित “उच्च आलोचना” के पुराने और असत्य उपदेशों के द्वारा बाइबल को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करता रहेगा, और इस प्रकार उन उत्साही युवाओं के विश्वास को कमजोर करता रहेगा, जो मसीही सेवकाई के बुलावे का उत्तर देकर आए हैं।

(2) भलाई का इनकार (1:16ग-ड)

झूठे शिक्षकों का कार्य वास्तव में भलाई का इनकार करने के समान है। पौलुस ने उन पर तीन और आरोप लगाए। पहला, वे घृणित हैं। “घृणित” के लिए पौलुस ने “बदेल्तुकोस” शब्द का प्रयोग किया। इसका अर्थ “स्पष्ट रूप से नीच” या “घृणा के योग्य वस्तु” भी हो सकता है।

पौलुस झूठे शिक्षकों को एक प्रकार के भय और घृणा की दृष्टि से देखता था। शरीर के पाप बुरे होते हैं, पर वे केवल शरीर को नष्ट करते हैं; परन्तु परमेश्वर के प्रकट सत्य के विरुद्ध किए गए पाप आत्मा को नष्ट कर देते हैं।

दूसरा, झूठे शिक्षक विद्रोही या “आज्ञा न मानने वाले” होते हैं। यहाँ “आज्ञा न मानने वाले” के लिए प्रयुक्त शब्द परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा के हठपूर्वक तिरस्कार को दर्शाता है। यह शब्द इस बात को भी प्रकट करता है कि उनमें समझाने से मान जाने की इच्छा नहीं होती। उदारवादी धर्मशास्त्रियों और पंथियों के साथ मुद्दों पर चर्चा करने का बहुत कम लाभ होता है। उनके कुछ अनुयायी अब भी पहुँच में हो सकते हैं, परन्तु जो लोग झूठी शिक्षा के लिए समर्पित होते हैं, वे सामान्य रूप से अपने अविश्वास में दृढ़ बने रहते हैं (इब्रानियों 6:4-8)।

तीसरा, झूठे शिक्षक निकम्मे या अयोग्य होते हैं। पौलुस ने उनका वर्णन इस प्रकार किया कि वे “किसी अच्छे काम के योग्य नहीं” हैं। यहाँ “योग्य नहीं” के लिए प्रयुक्त शब्द “अदोकिमोस” है, जिसका प्रयोग मुख्य रूप से धातुओं की जाँच के संदर्भ में किया जाता है।

जब झूठे शिक्षकों की जाँच की जाती है कि क्या वे वास्तव में कोई भलाई कर रहे हैं, तो वे कपटी के रूप में उजागर होते हैं। परमेश्वर ने उन्हें परखा है और उन्हें अस्वीकार कर दिया है।

जब हम पौलुस के उस वर्णन को पढ़ते हैं, जिसमें उसने उस त्रुटि का विवरण दिया है जिसका सामना तीतुस को क्रेते में करना था, तो हमें यह समझ में आता है कि त्रुटि और असत्य के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता।

भाग 8.

स्थानीय कलीसिया में अभ्यास की आवश्यकता

तीतुस 2:1-3:11

क. व्यक्तिगत अभ्यास (2:1-15)

1. कलीसिया में व्यवहार (2:1-10)

उपदेश से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के बाद, पौलुस अब व्यावहारिक मुद्दों की ओर मुड़ता है। वह स्थानीय कलीसिया की संगति में विभिन्न भूमिकाओं और लोगों को एक-दूसरे के प्रति किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, इस पर चर्चा करता है।

क. लिंग और उनका स्थान (2:1-8)

(1) जिन्हें वर्षों का अनुभव प्राप्त है (2:1-3)

(क) बूढ़े पुरुष (2:1-2)

i. सही उपदेश (2:1)

पौलुस ने झूठे उपदेशकों को पूरी तरह उजागर कर दिया था और उनका खंडन भी किया, फिर भी वे मौजूद थे, और उनकी छाया अभी भी कुछ हृदयों और घरों पर बनी हुई थी। इसलिए पौलुस ने तीतुस को फिर से बोलने के लिए प्रेरित किया: “पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।” वह चाहता था कि तीतुस स्पष्ट रूप से अलग दिखाई दे, ऐसा व्यक्ति जो इन झूठे शिक्षकों के विरोध में खड़ा हो। उसे अपनी आवाज़ बुलंद करनी थी।

तीतुस को केवल झूठे शिक्षकों को कलीसिया से निकालना ही पर्याप्त नहीं था; उसे क्रेते के विश्वासियों को यह भी सिखाना था कि क्या विश्वास करें और कैसे आचरण करें। निस्संदेह, तीतुस ने पौलुस की शिक्षाओं को, जैसा कि उसकी पत्रियों में प्रकट और स्थापित किया गया है, स्मरण कर लिया था। अब तीतुस को

क्रेतेवासियों को उन सत्यों की शिक्षा देनी थी जो पौलुस के रोम, कुरिन्थ, गलातिया, इफिसुस, कुलुस्से और थिस्सलुनीके के नाम लिखे गए पत्रियों में निहित हैं। उसे पुराने नियम की शिक्षा भी उसी प्रकार देनी थी जैसे पौलुस ने दी—अर्थात् कलवरी के प्रकाश में।

ii. परिणामी कार्य (2:2)

क. वृद्ध पुरुषों की ठोस परिपक्वता (2:2क-ग)

मसीही चरित्र और व्यवहार का सही उपदेश के साथ होना आवश्यक है। कलीसिया के वृद्ध पुरुषों को सही उपदेश के परिणामों को प्रदर्शित करने में अगुवाई करनी चाहिए। तीतुस को यह सिखाना था कि "बूढ़े पुरुष सचेत और गम्भीर और संयमी हों।"

यहाँ "सचेत" के रूप में अनूदित शब्द का शाब्दिक अर्थ है "नशे से मुक्त।" मद्यपान किसी भी मसीही गवाही को सबसे तेज़ी से नष्ट कर देता है। वर्षों पहले, मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जो एक प्रसिद्ध विश्वासयोग्य, सफल व्यवसायी और सम्मानित कलीसिया अगुवा था। अपने व्यवसाय से सेवानिवृत्ति के बाद, वह ऊब गया और उसके पास समय भारी लगने लगा। एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन उसने अपने मन को हल्का करने के लिए शराब पी ली; एक वर्ष के भीतर वह एक आदतन शराबी बन गया। उसने अपनी गवाही खो दी, कलीसिया जाना छोड़ दिया, अपनी बाइबल को त्याग दिया, और अंततः अपने जीवन का अंत शराब की बोतल के साथ किया। पौलुस ने ऐसी असचेत अवस्था के विरुद्ध चेतावनी दी है।

"गंभीर" के रूप में अनूदित शब्द सेम्नोस है, जिसका अर्थ है "परिपक्व, आदरणीय, प्रतिष्ठित।" वृद्ध पुरुष, जिन्होंने जीवन के बहुत से अनुभव देखे हैं, सामान्यतः उसके दुःखों के साथ-साथ उसकी खुशियों का भी अनुभव कर चुके होते हैं। इसलिए वे पहले की अपेक्षा अधिक "गंभीर" हो जाते हैं। जब युवा लोग सलाह लेने के लिए वृद्ध लोगों के पास आते हैं, तो वे गंभीर सलाह ही चाहते हैं।

एबेनेज़र स्कूज के मन-परिवर्तन की अगले सुबह, वह अपने कमरे में उछल-कूद कर रहा था और एक स्कूल के लड़के की तरह बहुत प्रसन्न था। लेकिन उसने शीघ्र ही सीख लिया कि अपनी नई मिली खुशी को व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए कैसे उपयोग करना है। दिन समाप्त होने से पहले, वही स्कूज—जो उज्ज्वल रूप से परिवर्तित तो था, परन्तु अधिक गंभीर भी—अपने अत्यंत उपेक्षित भतीजे, गरीब बॉब क्रैचिट, और टाइनी टिम का अभिवादन कर रहा था। यह एक नया उदार, और साथ ही आनंदित स्कूज था, जिसने उन दो परोपकारी व्यक्तियों का स्वागत किया, जिनके साथ उसने एक दिन पहले रूखा व्यवहार किया था।

"संयमी" के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ है "सही सोच वाला, बुद्धिमान, सूझबूझ रखने वाला, विवेकी।" ऐसे वृद्ध पुरुष दूसरों को झूठे शिक्षकों से दूर रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इस अंश में सुसमाचार की जीवनियों को बदलने की सामर्थ्य का कितना महान प्रमाण निहित है। जो लोग पहले सामान्य क्रेते लोगों की तरह थे—निपुण झूठे, लुटेरे जंगली पशु, और आलसी पेटू—वे बदल चुके थे। अब लोग उनकी संयमिता, गंभीरता और परमेश्वर-भरी सामान्य समझ के माध्यम से उनमें मसीह को चमकते हुए देख सकते थे।

ख. वृद्ध पुरुषों की आत्मिक परिपक्वता (2:2घ-च)

1. परमेश्वर की ओर (2:2घ)

तीतुस को यह भी सिखाना था कि “वृद्ध पुरुष... विश्वास में पक्के हों।” “विश्वास” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द के साथ निश्चित पदबंध यह दर्शाता है कि पौलुस यहाँ उस विश्वास की बात कर रहा था—अर्थात् मसीही शिक्षा के महान समूह की। यदि ये वृद्ध पुरुष विश्वास में दृढ़ होते, तो यह परमेश्वर के प्रति उनकी परिपक्वता को प्रकट करता।

वृद्ध भाइयों के जीवन में मापी जा सकने वाली आत्मिक उन्नति स्पष्ट दिखाई देनी चाहिए। युवा विश्वासियों को परमेश्वर की बातों में शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए उनकी ओर देखना चाहिए। केवल आयु अपने आप में आत्मिक परिपक्वता की कोई गारंटी नहीं है। वह तो कई वर्षों तक दिन-प्रतिदिन परमेश्वर के साथ चलने से आती है।

2. मनुष्य की ओर (2:2ङ)

वृद्ध पुरुषों का चरित्र “प्रेम” के द्वारा भी पहचाना जाना चाहिए। यह शब्द प्रेम के सर्वोच्च प्रकार की ओर संकेत करता है—ऐसा प्रेम जो अधिकारों या परिस्थितियों की परवाह किए बिना अपने आप प्रकट होता है। यह परमेश्वर के अनुरूप एक प्रेम है। जो लोग इस प्रकार का प्रेम दिखाते हैं, उन्होंने मनुष्य की ओर आत्मिक परिपक्वता विकसित कर ली है।

मसीहियत का सार ही प्रेम है। परमेश्वर के विषय में सबसे महान प्रकाशन यह है कि “परमेश्वर प्रेम है” (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रभु यीशु देहधारी परमेश्वर था और इसलिए देहधारी प्रेम भी था। पौलुस का महान प्रेम-गीत, 1 कुरिन्थियों 13, को प्रभु यीशु के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में एक गीत के रूप में देखा जा सकता है। “प्रेम” शब्द के स्थान पर “मसीह” शब्द रखकर उस अध्याय (1 कुरि. 13) को फिर से पढ़िए। यह हमारे सामने यीशु का एक सिद्ध चित्र प्रस्तुत करता है।

प्रेम अन्य लोगों तक पहुँचता है। यह इस बात की कोई सीमा नहीं रखता कि वह दूसरों के लिए कितना सह सकता है। यह कभी विश्वास करना या आशा रखना नहीं छोड़ता। इसे संसार की सबसे महान वस्तु कहा गया है। जब सब कुछ असफल हो जाता है, तब भी प्रेम बना रहता है। यह सभी अन्य भावनाओं से अधिक विजयी है, तारों से भी अधिक अजर-अमर है, और ब्रह्मांड से भी अधिक स्थायी है। यह परमेश्वर के हृदय से जीवन की धारा के समान बहता है। हम अपने जीवन में इस प्रेम को जितना प्रकट करते हैं, वही माप है कि हम अनुग्रह में कितने बढ़े हैं और परमेश्वर के ज्ञान में कितनी उन्नति की है।

3. अपनी ओर (2:2च)

इसके अतिरिक्त, कलीसिया के वृद्ध पुरुषों का चरित्र “धीरज” के द्वारा भी पहचाना जाना चाहिए। यह आंतरिक गुण परिपक्वता की एक और अभिव्यक्ति है। यहाँ “धीरज” के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ है “धैर्यपूर्ण सहनशीलता”—ऐसा धीरज जो परीक्षाओं के बीच विकसित होता है। युवा चाहते हैं कि कार्य तुरंत हो जाए, परन्तु उम्र के साथ यह समझ आती है कि प्रतीक्षा करना सीखना आवश्यक है।

नये नियम में इस यूनानी शब्द “धीरज” का पहला उल्लेख बोनवाले के दृष्टान्त (लूका 8:15) की कहानी में मिलता है। प्रकृति की महान पुस्तक हमें बार-बार बताती है कि परमेश्वर को उतावली में नहीं पाया जा

सकता। ऋतुओं के आने-जाने में समय लगता है। एक बीज को फूल बनने में समय लगता है। एक पौधे को अंकुरित होने, फूलने और फल लाने में समय लगता है। एक बच्चे को बड़ा होने में समय लगता है। वृद्ध लोग अक्सर चाहते हैं कि समय धीमा हो जाए, क्योंकि साल बहुत तेजी से बीत जाते हैं; जबकि बच्चे चाहते हैं कि समय तेज़ी से बीते।

धन्य है वह परिपक्व होता हुआ विश्वासी जिसने धैर्य सीख लिया है, क्योंकि प्रार्थना के प्रति परमेश्वर का सबसे सामान्य उत्तर “हाँ” या “नहीं” नहीं, बल्कि “प्रतीक्षा करो” होता है। अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई और पवित्र शास्त्र के कैनन में इसलिए सम्मिलित की गई कि वह हमें सिखाए कि हम धीरज के साथ परमेश्वर के बोलने और कार्य करने की प्रतीक्षा करें।

अब्राहम की अधीरता ही इश्माएल को संसार में लेकर आया, और उसके साथ ऐसी समस्याएँ भी आई जो आज तक बनी हुई हैं (उत्पत्ति 16)। अधीरता के कारण शाऊल ने अपना राज्य खो दिया (1 शमूएल 13)। इसके विपरीत, युवा दाऊद ने कष्टों के माध्यम से धीरज धरना सीख लिया था, इसलिए उसने सब अपने हाथ में नहीं लिया, बल्कि परमेश्वर के द्वारा उसे राज्य दिए जाने की धीरज के साथ प्रतीक्षा की (1 शमूएल 14-16; 2 शमूएल 2:4; 5:3)।

उन वृद्ध विश्वासियों से मिलना कितना सुखद होता है, जिन्होंने धीरज के साथ अपने प्राण को वश में रखना सीख लिया है। (याकूब 1:3-4; लूका 21:19)! उथल-पुथल से भरे क्रेते द्वीप पर प्रेम, विश्वास और धीरज से परिपूर्ण वृद्ध पुरुषों को देखना निश्चय ही एक दुर्लभ और सुंदर अनुभव रहा होगा। आज के संसार में भी यह एक दुर्लभ और सुंदर अनुभव ही है।

(ख) बूढ़ी स्त्रियाँ (2:3) इनके लिए प्रसिद्ध :

i. पवित्रता (2:3क)

पवित्र आत्मा कलीसिया की वृद्ध बहनों में पवित्रता को विकसित करना चाहता है। पौलुस ने तीतुस से कहा कि वह “वृद्ध स्त्रियों” को भी यह सिखाए कि “उनका चाल-चलन पवित्र लोगों-सा हो।” प्रेरित यह संकेत देता है कि जैसे-जैसे स्त्रियाँ आयु में बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उन्हें आत्मिकता में भी परिपक्व होना चाहिए।

“बूढ़ी स्त्रियाँ” के रूप में अनूदित शब्द प्रेस्बुटिस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। “चाल-चलन” के रूप में अनूदित शब्द भी केवल यहीं प्रयुक्त हुआ है और इसका अर्थ आचरण या व्यवहारिक तरीके से है। एक स्त्री का चलना-फिरना, उसके चेहरे के हाव-भाव, वह क्या कहती है या क्या नहीं कहती, और उसके मन तथा शरीर का सामान्य दृष्टिकोण—ये सभी “चाल-चलन” में सम्मिलित हैं।

और पौलुस ने विश्वास में परिपक्व स्त्रियों से क्या अपेक्षा की कि वे अपने व्यवहार और व्यक्तित्व के द्वारा क्या प्रकट करें? पवित्रता! “पवित्र लोगों-सा” के रूप में अनूदित शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका अर्थ है “भ्रष्टापूर्ण।” वृद्ध मसीही स्त्रियों का आचरण उनके जीवन की सच्ची पवित्रता को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

ii. सच्चाई (2:3ख)

पवित्र आत्मा वृद्ध स्त्रियों में सच्चाई को भी विकसित करना चाहता है। उन्हें “दोष लगाने वाली” नहीं होना चाहिए। “दोष लगाने वाली” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह डायबोलोस है, जो नये नियम में अड़तीस बार आता है और सामान्य रूप से “शैतान” के रूप में अनूदित किया गया है। इन में से चौतीस बार यह शैतान के लिए ही प्रयोग हुआ है। एक बार यह उस विश्वासघाती यहूदा के लिए प्रयोग हुआ है, जो शैतान का दूत बन गया था (यूहन्ना 6:70)। इसलिए स्पष्ट है कि निंदा करना शैतान का काम है। “डायबोलोस” शब्द का अर्थ है - वाणी के द्वारा किया गया आक्रमण।। स्थानीय कलीसिया में एकता को नष्ट करने के लिए इससे अधिक विनाशकारी कुछ नहीं हो सकता कि कुछ वृद्ध स्त्रियाँ संगति के विभिन्न लोगों के विरुद्ध निंदात्मक बातें फैलाएँ।

iii. संयमी (2:3ग)

इसके अतिरिक्त, पवित्र आत्मा वृद्ध स्त्रियों में संयम भी विकसित करना चाहता है। पौलुस कहता है कि उन्हें “पियक्कड़” नहीं होना चाहिए। अपने पास्टरीय पत्रियों में पौलुस ने कितनी ही बार नशे के पाप का उल्लेख किया है! स्पष्ट है कि प्रारंभिक कलीसिया में यह बहुत सामान्य पाप था। बाइबल स्पष्ट रूप से दाखरस के उपयोग को पूरी तरह निषिद्ध नहीं करती, परन्तु यह नशे को अवश्य निषिद्ध करती है। और यह भी एक उपदेश के रूप में बताती है कि हमें उन बातों से दूर रहना चाहिए जो कमजोर विश्वासियों के ठोकर खाने का कारण बन सकती हैं (रोमियों 14:21; 1 कुरिन्थियों 8:9)। यह उपदेश ही विश्वासियों के लिए मद्यपान के उपयोग को बहुत सीमित कर देता है, या वास्तव में उसे निषिद्ध ही कर देता है।

iv. शिक्षाएँ (2:3घ)

इसके अलावा, वृद्ध महिलाओं को उनकी शिक्षाओं के लिए भी पहचाना जाना चाहिए; अर्थात् वे “अच्छी बातें सिखानेवाली [कालोदिदास्कालोस]” हों—केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि अपने जीवन के उदाहरण से भी आदर्श बनें। यहाँ सार्वजनिक शिक्षा देने का कोई संकेत नहीं है। संभव है कि पौलुस के मन में उस प्रकार की शिक्षा थी जैसी अक्विला और प्रिस्किल्ला ने दी थी, जिन्होंने अपुल्लोस को व्यक्तिगत रूप से सिखाया था (प्रेरितों के काम 18:24-28)।

यह पद कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका के विषय में पौलुस की अन्य शिक्षाओं का विरोध नहीं करता (1 कुरिन्थियों 11:5; 14:34; 1 तीमुथियुस 2:12-15)। कुरिन्थ की स्थिति में “भाषाओं” का प्रयोग और कलीसिया में पूर्ण अव्यवस्था शामिल थी। जिन परिस्थितियों में एक स्त्री शिक्षा दे सकती है, वे 1 कुरिन्थियों 11:5 में स्पष्ट की गई हैं। उसकी शिक्षा का सीमा-क्षेत्र तीतुस 2:4-5 में बताया गया है।

(2) युवा लोग(2:4-8)

(क) जवान स्त्रियाँ (2:4-5) वृद्ध स्त्रियों द्वारा सिखाई जाएँ कि :

i. अनुशासित रहें (2:4क)

वृद्ध स्त्रियाँ “अच्छी बातें सिखानेवाली” (2:3) के रूप में अपनी सही भूमिका निभाती हैं, जब वे जवान स्त्रियों को उदाहरण और उत्साह के साथ यह सिखाती हैं कि वे मसीही समुदाय की उपयोगी सदस्य कैसे बनें। उदाहरण के लिए, वृद्ध महिलाएँ (गृहिणियाँ) युवतियों को अनुशासित होना सिखा सकती हैं। जैसे

पौलुस ने कहा, “वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें” (2:4)। यहाँ उसने एक यूनानी शब्द का उपयोग किया है जिसका अर्थ है “मन को संयमित करना” या “किसी को अपने होश में लाना।” इसमें सुधार, अनुशासन और संयम बरतने के विचार सम्मिलित हैं।

यह निर्देश क्रेते की युवतियों के लिए विशेष रूप से आवश्यक था, क्योंकि उनके राष्ट्रीय स्वभाव में अनुशासनहीनता की भावना प्रमुख रूप से थी। प्रभु यीशु का अनुग्रह और पवित्र आत्मा का निवास मसीही युवतियों के लिए अनुशासित जीवन की माँग करता है। निश्चय ही, यदि वृद्ध स्त्रियाँ युवतियों को “संयमी” होना सिखाना चाहती हैं, तो उन्हें स्वयं भी अनुशासित जीवन जीना होगा।

ii. समर्पित रहें (2:4ख-ग)

कलीसिया की वृद्ध महिलाओं को चाहिए कि वे युवतियों को अपने परिवारों के प्रति समर्पित रहना सिखाएँ। पौलुस ने कहा कि युवा विवाहित स्त्रियों को “अपने पतियों से प्रेम करना” सिखाया जाए। “पति से प्रेम करना” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह फिलान्द्रोस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। फिलान्द्रोस का अर्थ कोमल स्नेह है। अधिकांश विवाहों में तनाव और दबाव आते हैं, इसलिए हमें अपने पारिवारिक संबंधों में प्रेम को प्रमुख बनाए रखने के लिए प्रयास करना चाहिए।

ये छोटे से कुछ शब्द—“मैं तुमसे प्रेम करता/करती हूँ”—एक दंपति को अनेक तूफानी परिस्थितियों से पार निकाल सकते हैं। जैसा किसी ने कहा है, “मैं कर्ता हूँ, तुम कर्म हो, और उनके बीच कुछ और नहीं केवल प्रेम है।” प्रेम चेहरे के भाव, आवाज़ के स्वर और हाथ के स्पर्श में दिखाई देता है। प्रेम के साथ स्वेच्छा से, आनंदपूर्वक सेवा करने का भाव और व्यक्तिगत देखभाल की भावना जुड़ी होती है। ऐसा प्रेम स्वर्ग में बना हुआ एक अनमोल उपहार है, जो पृथ्वी के सभी दुःखों के लिए मरहम है, और जब सब कुछ असफल हो जाए, तब भी एक निश्चित समाधान है।

पौलुस आगे जोड़ता है कि जवान स्त्रियों को “अपने बच्चों से प्रीति रखना” सिखाया जाना चाहिए। सभी माताएँ अपने बच्चों से प्रेम नहीं करतीं, और सभी माताएँ अपने सभी बच्चों से एक समान और निष्पक्ष रूप से प्रेम नहीं करतीं। प्रलोभन यह होता है कि किसी एक को अपना विशेष प्रिय बना लिया जाता है। कभी-कभी किसी माता-पिता का एक कम प्रिय बच्चा भी होता है, विशेषकर जब वह बच्चा विद्रोही स्वभाव का हो और अपनी माता के धैर्य की अत्यधिक परीक्षा लेता हो।

पौलुस ने भिन्न स्वभावों, कठिन परिस्थितियों या मानवीय कमजोरियों के लिए कोई छूट नहीं दी है। उसने संकेत दिया कि जो माताएँ अपने बच्चों से प्रेम नहीं करतीं, उन्हें प्रेम करना सिखाया जाना चाहिए। ऐसी शिक्षा प्रायः बुद्धिमान, मातृत्वपूर्ण और आत्मिक रूप से परिपक्व वृद्ध स्त्रियों द्वारा दी जा सकती है। उनका ज्ञान, उनका अनुभव और परमेश्वर के साथ उनका जीवन उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे युवा स्त्रियों को सिखाएँ कि जब परिस्थितियाँ बिगड़ जाएँ तो उसे कैसे संभालें। हम अक्सर प्रेम को केवल एक भावना के रूप में जानते हैं, परन्तु बाइबल इसकी आज्ञा देती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि एक इच्छा और निर्णय का विषय भी है।

iii. विवेकशील रहें (2:5क)

इसके अतिरिक्त, वृद्ध महिलाएँ युवतियों को यह भी सिखा सकती हैं कि वे कैसे "संयमी" बनें। "संयमी" के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ "समझदार, आत्म-संयम रखने वाली" होता है।

अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण करते समय अपनी ओर से कई मूर्खतापूर्ण काम कर बैठते हैं। वे कभी उन्हें बहुत अधिक लाड़-प्यार करते हैं या बहुत कठोर अनुशासन में रखते हैं। वे कभी धमकी देते हैं और फिर अपने कहे अनुसार कार्य नहीं करते। वे अपने वायदों को तोड़ देते हैं। वे पक्षपात करते हैं या किसी एक का पक्ष ले लेते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि फिर भी बच्चे उस परिस्थिति से बच निकलते हैं और समाज के उपयोगी सदस्य तथा मसीह की देह के कार्यशील अंग बन जाते हैं।

पुराने नियम में मूर्ख माता-पिता का एक प्रसिद्ध उदाहरण इसहाक और रिबका की कहानी में मिलता है। इसहाक शांत स्वभाव का, आसानी से प्रभावित होने वाला, और अपने बाद के वर्षों में शारीरिक प्रवृत्तियों में लिप्त और आत्म-भोगी हो गया था। उसका पुत्र एसाव बहुत पहले से सीख चुका था कि वह अपने पिता से अपनी इच्छाएँ कैसे पूरी करवा सकता है। दूसरी ओर, रिबका दृढ़ निश्चयी और कठोर सोच रखने वाली थी। उसके साथ एक बार बड़ा धोखा हुआ था, और उसने उसे कभी नहीं भुलाया (उत्पत्ति 26:6-11)। वह भी इसहाक की कमजोरियों का लाभ उठाना जानती थी और सच बोलने के मामले में हमेशा सावधान नहीं रहती थी। इसके अतिरिक्त, उसके मन में अपने चतुर और चालाक छोटे पुत्र याकूब के लिए विशेष स्नेह था।

रिबका को एक बुद्धिमान वृद्ध स्त्री की आवश्यकता थी जो उसे सलाह दे सके और सिखाए। यह बहुत खेद की बात है कि वह अपनी सास को कभी नहीं जान पाई, क्योंकि सारा ने भी ऐसे ही कठिन पारिवारिक परिस्थितियों का सामना एक बार नहीं, बल्कि दो बार किया था (उत्पत्ति 12:10-20; 20:1-18)। फिर भी उसने अपने पति का उच्च सम्मान करना नहीं छोड़ा (1 पतरस 3:6)। सारा रिबका को यह सिखा सकती थी कि उन परिस्थितियों में कैसे समझदार और आत्म-संयमी बना जाए।

युवा माताओं के लिए यह बहुत बड़ा लाभ है कि उन्हें सिखाने और सलाह देने के लिए कोई बुद्धिमान और भक्त वृद्ध स्त्रियाँ हों। प्रचार और पास्टरीय परामर्श का अपना स्थान होता है, परन्तु कुछ समस्याएँ और दबाव ऐसे होते हैं जो केवल तभी बेहतर तरीके से हल होते हैं जब स्त्रियाँ खुद स्त्रियों से बात करती हैं।

iv. सभ्य बनी रहें (2:5ख)

पौलुस ने यह भी कहा कि वृद्ध स्त्रियाँ युवा स्त्रियों को शुद्ध रहना सिखा सकती हैं—अर्थात् "पतिव्रता" होना। "पतिव्रता" के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह हाग्नोस है, जिसका अर्थ है "शुद्ध और पवित्र, शारीरिक वासनाओं से मुक्त।" आज पवित्रता मानो प्रचलन से बाहर हो गई है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ "एडल्ट" फ़िल्में, अनैतिकता का खुला प्रदर्शन, और उग्र विचारधाराएँ सामान्य होती जा रही हैं। यह तथाकथित "नई नैतिकता" का युग है, जो अपने स्वयं के विचारों और मानवतावाद पर आधारित है। यह नई नैतिकता वास्तव में पुरानी अनैतिकता ही है, जिसे अब खुले रूप से मीडिया, स्कूलों, न्यायालयों और अक्सर सरकार द्वारा भी स्वीकार किया जा रहा है। अश्लील पुस्तकें, बच्चों के साथ दुराचार, संगठित अपराध, नशीले पदार्थों का दुरुपयोग, और अंधकारमय गुप्त शक्तियों की निरर्थक खोज—ये सब हमारे समाज की पहचान बन गए हैं। नैतिकता और सामान्य शिष्टता के अधिकांश पुराने मानक लगभग समाप्त हो चुके हैं। हमने अपनी

कक्षाओं से बाइबल को और दस आज्ञाओं को न्यायालयों से लगभग पूरी तरह से हटा दिया है। संसार के बुरे और भोग-विलास से भरे मार्गों के अनुसार ढलने का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

पहले से कहीं अधिक, युवतियों को ऐसी वृद्ध महिलाओं के संतुलित मार्गदर्शन की आवश्यकता है, जो एक अलग, अधिक सभ्य और अधिक अनुशासित समय को याद करती हैं। नाओमी ऐसी ही एक स्त्री थी। उसने अपनी युवा बहू, रूत पर गहरा प्रभाव डाला। रूत का पालन-पोषण मोआब में एक अन्यजाति के रूप में हुआ था—एक ऐसा राष्ट्र जिसका इतिहास बहुत खराब था और जो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन शापित गिना जाता था (उत्पत्ति 19:30-38; व्यवस्थाविवरण 23:3)। फिर भी, जब बोअज़ ने पहली बार रूत से भेंट की और उससे बात की, तो उसने कहा, “क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री है” (रूत 3:11)। बाइबल में रूत ही एकमात्र ऐसी स्त्री है जिसे विशेष रूप से “भली स्त्री” कहा गया है। इस प्रशंसा का पूरा अर्थ बाद में सुलैमान ने विस्तार से बताया (नीतिवचन 31:10-31)।

रूत ने अपने अच्छे और आदर्श जीवन का तरीका कहाँ से सीखा था? संभव है कि उसने यह सब अपनी सास से ही सीखा हो। नाओमी ने अपने जीवन की कठिन और कड़वी परिस्थितियों से बहुत कुछ सीखा था। जब वह फिर से प्रभु की ओर लौटी, तब उसकी समझदारी भरी और परमेश्वर के प्रति भक्तिपूर्ण सलाह ने उन घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनके परिणामस्वरूप रूत का विवाह बोअज़ से हुआ।

धन्य है वह युवती जो अपने पहनावे और आचरण के विषय में एक परमेश्वर-भक्त वृद्ध महिला की सलाह को मानती है, और जो जीवन के नियम के रूप में पवित्रता को उसके उच्च और पवित्र अर्थों सहित अपनाती है।

v. घर-गृहस्थी से जुड़ी रहें (2:5ग-ड)

क. उन्हें घर की देखभाल करनी चाहिए (2:5ग)

वृद्ध स्त्रियाँ कलीसिया की जवान स्त्रियों को यह भी सिखा सकती हैं कि वे “घर का कारबार करनेवाली [ओइकूर्गोस]” कैसे बनें। इस यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है “घर में काम करने वाली।” कुछ विद्वान मानते हैं कि पौलुस ने ओइकूरोस शब्द का प्रयोग किया था, जिसका अर्थ है “घर की देखभाल करना” या “घर की रखवाली करना।” दोनों ही स्थितियों में विचार यह है कि स्त्री की भूमिका घर में होती है।

आज की समाज व्यवस्था स्त्रियों को करियर बनाने के लिए प्रेरित करती है, और उन पर कार्यक्षेत्र में जाने का बहुत दबाव डाला जाता है। कई विवाह इसलिए टूट जाते हैं क्योंकि काम करने वाली पत्नियाँ अपने पतियों से असंतुष्ट और स्वतंत्र हो जाती हैं। कामकाजी माताओं को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और उनके परिवार भी प्रभावित होते हैं। कई बच्चे इसलिए भटक गए क्योंकि जब उन्हें घर पर अपनी माँ की आवश्यकता थी, तब उनकी माँ काम पर चली जाती थीं। अब वे दिन नहीं रहे जब संयुक्त परिवार होता था, जहाँ एक नई पत्नी और माँ को अपने माता-पिता, सास-ससुर, भाई-बहनों का सहारा मिलता था, और बच्चे दादा-दादी, चाचा-चाची, मामा-मामी और रिश्तेदारों के बीच बड़े होते थे, जो एक-दूसरे के परिवारों में सहायक भूमिका निभाते थे।

आधुनिक जीवन के दबावों के बावजूद, बाइबल की शिक्षा ही सर्वोत्तम है क्योंकि वह सर्वोच्च बुद्धि पर आधारित है। पत्नियों को “घर का कारबार करने वाली” होने की जो शिक्षा दी गई है, वही मसीही पत्नियों और माताओं के लिए आदर्श होना चाहिए। उनके कार्य भले ही किसी बड़ी कंपनी के उत्पादन विभाग का संचालन करने जितने आकर्षक न लगें, या कॉलेज में युवाओं को मनोविज्ञान पढ़ाने जितने रोचक न हों।

परन्तु, अनन्तता के दृष्टिकोण से देखें तो “घर का कारबार करने वाली” की भूमिका कहीं अधिक मूल्यवान है। सुसन्ना वेस्ली को उन सभी स्त्रियों के लिए एक आदर्श माना जा सकता है, जो घर पर रहकर अपने बच्चों को परमेश्वर के लिए तैयार करती हैं। वह उन्नीस बच्चों की माता थीं। उसे अच्छी शिक्षा प्राप्त थी और उसके सिद्धांत काफ़ी दृढ़ थे। उन्होंने अपने बच्चों को व्यक्तिगत रूप से और लगन के साथ घर पर ही शिक्षा दी। उनकी भक्ति, समर्पण और मसीही चरित्र उनके बच्चों में साफ़ दिखाई देती थी। उन्होंने संसार पर जो प्रभाव डाला, उसे इस जीवन में पूरी तरह नहीं जाना जा सकता। जैसे अम्राम और योकेबेद के साधारण घर से मूसा, हारून और मरियम निकले, वैसे ही सुसन्ना वेस्ली के घर से जॉन और चार्ल्स वेस्ली निकले, और उनके साथ मथोडिस्ट जागृति भी आई।

परमेश्वर के वचन के अनुसार, स्त्री को “इधर उधर काम में फँसना” नहीं चाहिए (1 राजा 20:40)। यदि वह ऐसा करती है, तो एक दिन उसे यह एहसास हो सकता है कि उसके बच्चे उससे दूर हो गए हैं और संसार ने उन्हें अपने वश में कर लिया है।

ख. उन्हें हृदय से अच्छा होना चाहिए (2:5घ)

वृद्ध स्त्रियाँ युवा स्त्रियों को “भली” होना भी सिखा सकती हैं। “भली” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह अगाथोस है, जिसका संबंध चरित्र की भलाई से है और उस भलाई के लाभकारी प्रभावों से भी है। कभी-कभी यह शब्द परमेश्वर की पूर्ण और मूलभूत भलाई को वर्णित करने के लिए भी प्रयोग होता है। इस शब्द में दयालुता का भाव भी शामिल है, और साथ ही कोमल स्वभाव का विचार भी सम्मिलित है। इसलिए अगाथोस का एक अर्थ “दयालु हृदय वाली” भी है।

एक स्त्री की भूमिका यह है कि वह अपने घर को बाहरी संसार में पाए जाने वाले कठोरता, निर्दयता, क्रूरता और बुराई से एक सुरक्षित आश्रय बनाए। उसके पति को अक्सर काम की दुनिया में बुराई का सामना करना पड़ता है। उसके बच्चों को स्कूल में उससे संघर्ष करना पड़ता है। जब पति और बच्चे घर लौटें, तो घर उन्हें स्वर्ग के एक छोटे से हिस्से के समान प्रतीत होना चाहिए।

योकेबेद—अम्राम की पत्नी और हारून, मरियम और मूसा की माता—ने अपने परिवार के लिए ऐसा ही एक आश्रय तैयार किया था। उसके नाम का अर्थ है “परमेश्वर मेरी महिमा है।” वह अपने घर में ऐसे चलती-फिरती थी मानो स्वयं शेकीना महिमा का बादल हो। योकेबेद ने गोशेन के उस दास-निवास, जिसमें वह रहती थी, उसे वास्तव में एक पवित्र स्थान में बदल दिया था।

जब मूसा—जो इब्रानी लोगों का महान छुड़ानेवाला था—अपने नब्बेवां भजन को लिखने का कार्य पूरा कर रहा होगा, तब संभव है कि उसने अपनी माता को स्मरण किया हो। उसने लिखा, “हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रकट हो” (भजन 90:17)। उसने उस शोभा को अपनी माता के चेहरे में देखा था। “परमेश्वर मेरी महिमा है”—यह उसका नाम था, और “परमेश्वर मेरी महिमा है”—यही उसका स्वभाव भी

था। उसके चेहरे की चमक और उसके अनुग्रह की महिमा कभी उससे अलग नहीं हुई, और उसकी स्मृति कभी मूसा के मन से धूमिल नहीं हुई। फिरौन के महलों की सारी चमक-दमक, मिस्र की शिक्षा, और राजकीय संरक्षण के सभी अवसर भी योकेबेद के प्रभाव पर विजय नहीं पा सके। परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखें, तो यही पत्नी और माता होने की महिमा है। इसकी तुलना किसी और बात से नहीं की जा सकती।

ग. उन्हें अपने पतियों के मार्गदर्शन में चलना चाहिए (2:5ड)

वृद्ध महिलाएँ इन जवान स्त्रियों को यह भी सिखा सकती हैं कि वे “अपने-अपने पति के अधीन रहनेवाली” हों। “अधीन” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह एक सैनिक शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “अधीनता में रहना।” परमेश्वर व्यवस्था का परमेश्वर है। अधिकार की रेखाएँ नये नियम में स्पष्ट रूप से निर्धारित की गई हैं। चाहे घर हो, राष्ट्र हो या कलीसिया—इन व्यवस्थाओं के साथ छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए।

“लेकिन आप मेरे पति को नहीं जानते,” कुछ पत्नियाँ दुःख भरे स्वर में कहती हैं। हो सकता है हम न जानते हों, परन्तु परमेश्वर जानता है—और यही सबसे महत्वपूर्ण है। ये नियम हमारे नहीं हैं; ये प्रेरित पौलुस के भी नहीं हैं। ये परमेश्वर के नियम हैं, और इन्हें बदला नहीं जाना चाहिए।

फिर से इसहाक और रिबका के मामले पर ध्यान दें। रिबका अपने पति की आधीनता में चलने की आदत में नहीं थी, क्योंकि उसके पति का प्रेम बहुत पहले से ही उसके प्रति नहीं, बल्कि उसके खाने-पीने की इच्छा की ओर झुक गया था (उत्पत्ति 24:67; 27:4)। जब उसने पाया कि इसहाक कुछ ऐसा करने जा रहा है जो शारीरिक, सांसारिक, बिल्कुल गलत और आत्मिक रूप से विनाशकारी था, तब उसने भी उसी प्रकार सांसारिक, शारीरिक, गलत और आत्मिक रूप से विनाशकारी तरीके से प्रतिक्रिया की। इसहाक और रिबका दोनों जानते थे कि पैतृक-आशीष परमेश्वर द्वारा याकूब को दी जानी ठहराई गई थी (उत्पत्ति 25:23-26)। फिर भी इसहाक उसे एसाव को देने के लिए दृढ़ निश्चयी था। जैसे ही रिबका को यह बात समझ में आई, उसने मामले को अपने हाथ में ले लिया। उसने अपने प्रिय पुत्र याकूब को छल करने का मार्ग सिखाया। इसके परिणाम अत्यंत दुःखद और विनाशकारी साबित हुए।

अंत में, इसहाक की आँखें उसके अपने गलत काम के प्रति खुल गईं। उसने यह स्वीकार किया कि आशीष याकूब की ही है और अपने प्रिय पुत्र एसाव को खुश करने के लिए उसने अपना निर्णय बदलने से इनकार कर दिया। एसाव ने याकूब की हत्या करने की धमकी दी, इसलिए याकूब को घर से भागना पड़ा। अपनी माँ की सलाह पर, याकूब दूर पद्मनाराम की ओर गया, ताकि वह अपने लालची और चालाक मामा लाबान के साथ अपनी “सफलता” को आजमाए—और वहाँ उसने अत्यंत कठिन और दुःखभरे बीस वर्ष बिताए।

“इसलिये अब, हे मेरे पुत्र,” रिबका ने कहा, “मेरी सुन और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा; और थोड़े दिन तक, अर्थात् जब तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब तक उसी के पास रहना” (उत्पत्ति 27:43-44)। वे “कुछ दिन” लंबे और दुःखद समय में बदल गए। और जहाँ तक रिबका का प्रश्न है, उसने अपने प्रिय पुत्र का चेहरा फिर कभी नहीं देखा। यदि वह अपने पति की अधीनता में रहती और जन्मसिद्ध अधिकार के विषय को सरल और आत्मिक तरीके से उसके सामने रखती, तो उसकी कहानी का अंत कुछ और ही होता।

vi. रक्षा करने वाली हों (2:5च)

अंत में, वृद्ध महिलाएँ युवतियों को यह भी सिखा सकती हैं कि वे परमेश्वर के वचन का उसके विरोधियों के विरुद्ध कैसे बचाव करें। स्त्रियों को पवित्र शास्त्र का पालन करना चाहिए, “ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए।” उन्हें भी, पुरुषों की तरह, ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे अविश्वासियों को परमेश्वर के वचन की बुराई करने का कोई अवसर मिल जाए।

जब परमेश्वर का वचन किसी विषय पर बोलता है—चाहे वह आत्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक या सांसारिक हो—तो वह सर्वोच्च अधिकार, अगम्य बुद्धि और अटल प्रेम के साथ बोलता है। उसके उपदेशों को स्वीकार करना चाहिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए, और उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना चाहिए।

(ख) जवान पुरुष (2:6-8)

i. उनका संयम (2:6)

अब पौलुस तीतुस को जवान पुरुषों के विषय में कुछ निर्देश देता है। उसे सबसे पहले उन्हें यह समझाना था कि वे “संयमी” हों। इस यूनानी शब्द का अर्थ है “आत्म-संयम रखना, शुद्ध मन वाला होना।” जवान पुरुषों को जीवन को गंभीरता से लेना चाहिए।

दाऊद एक “संयमी” युवा पुरुष का उदाहरण है। जब वह युद्धभूमि में अपने बड़े भाइयों के लिए भोजन लेकर आया, तो उसने उस दानव के बारे में, इस्राएल की स्थिति के बारे में, और उस प्रतिफल के बारे में सुना जो राजा ने उस व्यक्ति को देने का वायदा किया था जो घाटी में जाकर उस गोलियत नामक दानव को मार गिराएगा। दाऊद के उत्सुक प्रश्नों का उसके बड़े भाई की ओर से सामान्य तिरस्कार और अपमान के साथ जवाब मिला। परन्तु एलीआब की डाँट यह दिखाती है कि वह अपने छोटे भाई को कितना कम जानता था, क्योंकि अगले ही पल दाऊद स्वयं उस दानव से लड़ने के लिए आगे बढ़ गया।

दाऊद घमण्ड नहीं कर रहा था; वह वास्तव में बहुत “संयमी” था। वह पहले ही अपने भेड़ों के झुंड की रक्षा करते हुए एक सिंह और एक भालू को मार चुका था, और वह पहले से ही इतना आत्मिक रूप से परिपक्व था कि भजन 23 जैसा गीत लिख सकता था। दाऊद ने जीवन को गंभीरता से लिया और उसकी कठिन परिस्थितियों का सामना परमेश्वर के साथ मिलकर किया, जैसा कि गोलियत के घमण्ड और निन्दा के जवाब में उसके शब्दों से स्पष्ट होता है: “दाऊद ने पलिशती से कहा, “तू तो तलवार और भाला और साँग लिये हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा... इसलिये कि संग्राम तो यहोवा का है” (1 शमूएल 17:45-47)। दाऊद को प्रेरित करने वाली बात हल्कापन नहीं, बल्कि विश्वास था।

ii. उनकी सेवकाई (2:7क)

कलीसिया के जवान पुरुष अपनी सेवकाई के लिए पहचाने जाने चाहिए। क्रेते द्वीप पर आत्मिक स्थिति कमजोर थी और नैतिक वातावरण भी खराब था, इसलिए तीतुस को स्वयं उदाहरण बनकर मार्ग दिखाना था। उसे सब बातों में “अपने आप को भले कामों का नमूना” बनना था। “नमूना” के लिए जो शब्द प्रयोग

हुआ है, वह टुपोस है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द “टाइप” निकला है। “टाइप” दैवीय योजना के अनुसार प्रस्तुत एक उदाहरण है।

पुराना नियम ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है। उदाहरण के लिए, यूसुफ मसीह का एक प्रतीक था। यूसुफ अपने पिता का सबसे प्रिय पुत्र था। उसे अपने ही सम्बन्धियों, अर्थात् इस्राएलियों के द्वारा घृणा किया गया। उन्होंने उसे गुलाम के मूल्य पर बेच दिया, और उसे दूसरों के पापों के कारण कष्ट सहना पड़ा। अंततः, उसे फिरौन के दाहिने हाथ पर ऊँचा स्थान दिया गया और उसे ऐसा नाम मिला जो सब नामों से बड़ा था, जिसके सामने हर घुटने को टिकना था। इन सब बातों में वह मसीह का एक चित्र, एक प्रतिरूप, एक नमूना था।

पुराना नियम ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है। बलिदान और पर्व ऐसे प्रतीक हैं जो नए नियम के सत्यों को प्रकट करते हैं। मिलापवाला तम्बू और मन्दिर उन वास्तविकताओं को दर्शाते हैं जो पुराने नियम में पूरी तरह प्रकट नहीं हुए थे। अब्राहम और इसहाक, दाऊद और योनातान, रूत और बोअज़, सुलैमान और शेबा की रानी, मूसा और यहोशू, और हारून और मल्कीसेदेक—ये सभी जोड़ियाँ ऐसे ही अनूठे प्रतिरूप हैं।

उसी प्रकार, तीतुस को भी ऐसा ही एक प्रतिरूप बनना था। अन्य जवान पुरुषों को उसके हर बात में भलाई करने के निरंतर समर्पण को देखकर अच्छे कामों के लिए प्रेरित होना था।

iii. उनकी दृढ़ता (2:7ख)

जवान पुरुषों को शुद्ध उपदेश के लिए भी पहचाना जाना चाहिए: “तेरे उपदेश में सफाई पाई जाए।” यहाँ “पाई जाए” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है “प्रस्तुत करना, प्रदान करना, देना।” “सफाई” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह अदियाफथोरिया है, जिसका अर्थ है “किसी भी मिलावट या भ्रष्टता से रहित।”

फिर से हम देखते हैं कि पौलुस खरे उपदेश पर कितना जोर देता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सत्य के प्रति पूरी निष्ठा रखे। युवा पुरुष, वृद्धों की तुलना में, नई और अजीब शिक्षाओं के प्रभाव में जल्दी आ सकते हैं, जबकि वृद्ध लोग वर्षों के अध्ययन, मनन और चर्चा के बाद अपनी मान्यताओं और विचारधाराओं तक पहुँचते हैं। ऐसी कीमत पर प्राप्त किया गया सत्य अधिक मूल्यवान होता है, बजाय उस सत्य के जो केवल किसी “साझा करने” के सत्र में यूँही सहज से मिल जाती है। नीतिवचन 23:23 कहता है, “सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं।” पौलुस ने सभी युवा पुरुषों को प्रोत्साहित किया कि वे आरम्भ से ही शुद्ध शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करने में आगे बढ़ें।

iv. उनकी गंभीरता (2:7ग)

इसके अतिरिक्त, जवान पुरुषों को अपनी “गंभीरता” के लिए भी पहचाना जाना चाहिए। “गंभीरता” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है “आदर के योग्य, गरिमा।” यह गुण सामान्य रूप से युवावस्था की अपेक्षा अधिकतर वृद्धावस्था से जोड़ा जाता है।

पौलुस का मानना था कि हल्केपन और मज़ाक की प्रवृत्ति का बाइबल की शिक्षा में कोई स्थान नहीं है। जिन विषयों से पवित्रशास्त्र संबंधित है—पाप और मृत्यु, समय और अनन्तता, स्वर्ग और नरक, मसीह और

कलवरी—वे इतने गंभीर हैं कि उन्हें हल्के ढंग से नहीं लिया जा सकता। हम कहीं नहीं पढ़ते कि यीशु हँसा (यद्यपि संभव है कि वह हँसा हो क्योंकि वह पूर्ण मनुष्य था), परन्तु हम तीन बार पढ़ते हैं कि वह रोया।

v. उनकी ईमानदारी (2:7घ)

कलीसिया के जवान पुरुषों को उनकी “खराई” के लिए भी पहचाना जाना चाहिए। “खराई” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह अपथार्सिया है। पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग इफिसियों 6:24 में भी किया है, जहाँ इसका अनुवाद “सच्चाई” किया गया है, और रोमियों 2:7 में, जहाँ इसका अनुवाद “अमरता” किया गया है, परन्तु इसका अर्थ अधिक सही रूप में “अविनाशी” है। अपथार्सिया शब्द के साथ महिमा, आदर और अनन्त जीवन के विचार जुड़े हुए हैं। यह शब्द बार-बार उस महान पद्यांश में भी आता है जहाँ पौलुस विश्वासियों के पुनरुत्थान की देह के बारे में बताता है—जो एक अविनाशी देह है (1 कुरिन्थियों 15:42, 50, 53, 54)।

पौलुस अपने युवा पुरुषों से बहुत अपेक्षा रखता था। उनकी खराई इतनी स्पष्ट होनी चाहिए कि वह साफ दिखाई दे। एक भ्रष्ट संसार में रहते हुए भी, उन्हें आने वाले संसार के गुणों को प्रकट करना था। ऐसे शरीर में रहते हुए जो भ्रष्ट होने के अधीन है, उन्हें अविनाशी जीवन के गुणों को दिखाना था।

vi. उनकी बातचीत (2:8)

क. निर्दोष (2:8क)

जवान पुरुषों के विषय में अपने निर्देशों को समाप्त करते हुए, पौलुस ने उनमें “ऐसी सफाई पाई जाने” की अपेक्षा की “कि कोई उसे बुरा न कह सके।” “सफाई” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह नये नियम में बारह से अधिक बार आता है और सामान्यतः “पूर्ण” या “स्वस्थ” के अर्थ में अनूदित किया जाता है। यह आमतौर से शारीरिक स्वास्थ्य के संदर्भ में उपयोग होता है, परन्तु यहाँ इसे हमारी वाणी पर लागू किया गया है। पौलुस के मन में अभी भी उपदेश का विषय ही था। यद्यपि हर प्रकार की वाणी दोषरहित होनी चाहिए, परन्तु जब परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी जाती है, तब बोलने वाले को विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि वह ऐसा कुछ न कहे जिसका गलत अर्थ निकाला जा सके।

ख. अखंडनीय (2:8ख)

एक शिक्षक के वचन ऐसे होने चाहिए कि उनका खण्डन न किया जा सके, “जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।” उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सत्य में इतना दृढ़ हो, परमेश्वर के अटल वचन पर इतना आधारित हो, कि जो लोग उसके उपदेश में दोष निकालने या कमियाँ ढूँढने आएँ, वे अंततः लज्जित होकर पीछे हटने के लिए मजबूर हो जाएँ।

मुझे अपने एक मित्र की गवाही याद आती है, जो अब प्रभु में सो गए हैं। अपने मन-परिवर्तन से पहले वह नास्तिक भी था और साम्यवादी भी। एक दिन उसने देखा कि उसके घर के पास एक खाली मैदान में सुसमाचार का तम्बू लगाया गया है, और उसने तब वहाँ उपद्रव करने के इरादे से सभा में जाने का निश्चय किया। उसने एक योजना बनाई: वह प्रचारक को बोलना शुरू करने देगा, और फिर खड़ा होकर उसका विरोध करेगा।

जो व्यक्ति उन सभाओं का संचालन कर रहा था (जिसे मैं भी जानता था), वह एक विनम्र सज्जन था—ऐसा व्यक्ति जिसे देखकर कोई सोच सकता था कि वह किसी स्थानीय बैंक का प्रबंधक या गाँव का डॉक्टर होगा। उसका संभावित विरोधी तीक्ष्ण बुद्धि वाला था और वाद-विवाद में एक कठिन प्रतिद्वंद्वी के रूप में जाना जाता था। क्योंकि वह बाइबल के विरुद्ध नास्तिक तर्कों में निपुण था, उसे पूरा विश्वास था कि वह प्रचारक उसके सामने टिक नहीं पाएगा।

इसके अलावा, वह शारीरिक रूप से भी बहुत मजबूत था—एक पहलवान जैसा दिखने वाला व्यक्ति। यदि कोई उसे बलपूर्वक हटाने की कोशिश करता, तो वह उसे लड़ाई शुरू करने का अवसर मानता। उसने ठान लिया था कि वह उस प्रचारक को मूर्ख साबित करेगा और सभा को बिगाड़ देगा।

नगर के लोगों ने उस नास्तिक की योजना के बारे में अफवाहें सुनीं और कुछ मनोरंजन देखने की आशा से सभा में गए। उन्होंने सोचा कि प्रचारक के लिए आज एक आश्चर्य इंतज़ार कर रहा है। लेकिन अंत में हुआ यह कि आश्चर्य तो उसी व्यक्ति को हुआ जो उपद्रव करने आया था!

उस रात दिया गया संदेश अच्छी तरह तैयार किया गया था और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया था, और सुसमाचार की तर्कसंगतता ने उस नास्तिक को, उसकी इच्छा के विरुद्ध ही, रोक लिया। वह स्वयं को अपनी सीट से जैसे चिपका हुआ महसूस कर रहा था और उठकर उपद्रव करने में असमर्थ था। उसके साथियों ने उसे संकेत दिया कि अब कुछ करे; लेकिन वह बैठा रहा और सुनता रहा—हालाँकि उसने अपने आप से वादा किया कि बाद में वह उपदेशक की अच्छी तरह आलोचना करेगा।

जब सभा समाप्त हुई, तो वह बड़ा आदमी, जो अब संदेश के प्रभाव में नहीं था, लड़ाई करने के इरादे से आगे बढ़ा। उसने अपने नास्तिक तर्क और वे चतुर दलीलें प्रस्तुत कीं, जिन्हें वह पहले बहुत प्रभावी मानता था। लेकिन उसके आश्चर्य के लिए, उस नम्र स्वभाव के उपदेशक ने ये सब पहले ही सुन रखी थीं और हर एक का उत्तर देना जानता था। वह उपद्रवी अब बहुत ही “सही और दृढ़ वचन” के सामने खड़ा था। परमेश्वर के वचन के तर्क ने उसे निरुत्तर कर दिया और वह उसमें कोई भी त्रुटि नहीं निकाल सका। सभा समाप्त होने से पहले ही उपदेशक ने अपने विरोधी को मसीह तक पहुँचा दिया, और वह पूर्व नास्तिक मेरे द्वारा जाने गए सबसे योग्य शिक्षक-सुसमाचार प्रचारकों में से एक बन गया।

पौलुस चाहता था कि उसके जवान सेवक उसी दृढ़ उपदेशक के समान बनें। वह चाहता था कि वे अपने आप में एक आदर्श जीवन, असाधारण योग्यता, और वाणी की उत्तमता विकसित करें।

ख. सेवक और उनका स्थान (2:9-10)

(1) उन्हें लगन के साथ सेवा करनी चाहिए (2:9)

(क) विनम्रतापूर्वक आज्ञा का पालन करना (2:9क)

अब पौलुस कलीसिया में दासों के स्थान की ओर ध्यान देता है और कुछ बुनियादी विशेषताओं को स्पष्ट करता है जो नये जन्म पाए हुए सेवकों में होनी चाहिए। सबसे पहले, उन्हें अधीन रहने वाला होना चाहिए। उसने तीतुस से कहा कि वह “दासों को समझाए कि अपने-अपने स्वामी के अधीन रहें।” यहाँ “दास” के लिए जो शब्द अनुवाद किया गया है वह “दूलोस” है, जिसका अर्थ है “गुलाम।”

रोमी साम्राज्य में गुलामों के पास कोई नागरिक अधिकार नहीं थे। एक क्रूर स्वामी बिना किसी दंड के भय के दास को यातना दे सकता था और यहाँ तक कि उसे मार भी डाल सकता था। यदि किसी दास का स्वामी अच्छा भी होता, जो उसकी योग्यताओं की सराहना करता, उसे पसंद करता, शायद उससे प्रेम भी करता, तब भी वह दास दास ही रहता था। यदि वह दयालु स्वामी मर जाता, तो दास को बेचा जा सकता था। उसे किसी अत्याचारी के द्वारा खरीदा जा सकता था। उसे अपमानजनक कार्य करने के लिए लगाया जा सकता था। उसके पास कोई अन्य उपाय नहीं होता था। दासता गहराई से जड़ जमाए हुए थी। नये नियम में दासप्रथा की व्यवस्था पर एकमात्र प्रहार प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से किया गया है—और वह भी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से—जिसे पौलुस ने फिलेमोन के नाम अपनी पत्री में किया।

एक दास (या हमारे आधुनिक संसार में, एक सेवक या कर्मचारी) को अपने स्वामी के “अधीन” रहना चाहिए। “अधीन” वही शब्द है जिसका उपयोग 2:5 में किया गया है, जहाँ पौलुस ने पत्नी को अपने पति की आज्ञा मानने के लिए कहा था। सक्रिय रूप में, यह शब्द सेना में एक उच्च अधिकारी द्वारा अपने निम्न अधिकारी को आदेश देने के लिए प्रयोग होता था। ऐसी स्थिति में तुरंत और प्रसन्नता के साथ उस आज्ञा को पालन करने की अपेक्षा की जाती है। पौलुस चाहता था कि सेवक वही करें जो उनसे कहा जाए, चाहे उनके स्वामी अच्छे हों या बुरे। इस विषय में उसने विश्वास करने वाले और अविश्वासी स्वामियों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया।

(ख) संतोषजनक तरीके से आज्ञापालन (2:9ख)

नया जन्म पाए हुए सेवकों को अपने स्वामियों को “भली रीति से प्रसन्न करना” चाहिए। “प्रसन्न रखें” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है वह “युआरेस्टोस” है, जो ऐसी सेवा का वर्णन करता है जो ग्रहणयोग्य हो या ऐसा व्यवहार जो परमेश्वर को भाता हो।

सेवक-स्वामी संबंध के प्रति पौलुस का सामान्य दृष्टिकोण इफिसियों 6:5-8 और कुलुस्सियों 3:22-24 में भी वर्णित है। मानव स्वामी चित्र से धीरे-धीरे हट जाता है, और उसके स्थान पर प्रभु यीशु स्वयं आ जाते हैं, जिसकी वास्तव में सेवा की जा रही है। यदि हम उसे वैसी सेवा दें जिसके वह योग्य हैं, तो मानव स्वामी को अपने आप ही सर्वोत्तम सेवा प्राप्त होगी। एक मसीही कर्मचारी को वेतन सूची में सबसे अधिक परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, और तत्पर व्यक्ति के रूप में होना चाहिए।

यूसुफ ने पोतीफर और कारागृह के हाकिम, दोनों की अत्यंत उत्तम रीति से सेवा की (उत्पत्ति 39:1-6, 21-23)। परमेश्वर ने यूसुफ को सम्मानित किया, जैसे वह उन सबका सम्मान करेगा जो अपनी अधीनता की स्थिति को किसी दासता का रूप नहीं, बल्कि सेवा के अवसर के रूप में देखते हैं। ऐसा मनोभाव न केवल आत्मिक होता है, बल्कि बुद्धिमानी भरा भी होता है।

(ग) चुपचाप आज्ञापालन करना (2:9ग)

सेवकों को आज्ञा माननी चाहिए और कभी “उलटकर जवाब” नहीं देना चाहिए। “उलटकर जवाब” के लिए जो शब्द अनुवाद किया गया है, उसका अर्थ है “विरोध में बोलना” या “प्रतिवाद करना।” यहाँ यह शब्द स्वामी (या नियोक्ता या अधिकारी) की इच्छा के प्रति प्रकट या छिपे हुए विरोध और किसी भी ताड़ना के प्रति अधीरता को दर्शाता है। इस निर्देश के पीछे हम एक ऐसे सेवक की झलक देखते हैं जो कुछ करने

को कहे जाने पर मन ही मन बड़बड़ाता है, या एक ऐसा कर्मचारी जो अपने हाव-भाव या इशारों से रूखा और असंतुष्ट मनोभाव दिखाता है। ऐसे व्यवहार से नियोक्ता को मसीह के पास लाना तो बिल्कुल भी संभव नहीं होगा।

(2) उन्हें अलग तरह से सेवा करनी चाहिए (2:10क)

एक मसीही सेवक को “चोरी चालाकी” (नोस्फिज़ोमाई) का दोषी नहीं होना चाहिए। यह यूनानी शब्द “हल्की उँगलियों वाला होना” अर्थात् चोरी की प्रवृत्ति रखने को दर्शाता है। इसका प्रयोग हनन्याह और सफीरा के संदर्भ में किया गया था, जिन्होंने अपनी संपत्ति बेचकर यह आभास दिया कि वे पूरी राशि कलीसिया को दे रहे हैं, जबकि वास्तव में उन्होंने धन का कुछ भाग “अपने पास रख लिया” (नोस्फिज़ोमाई)। इस प्रकार चोरी करके उन्होंने परमेश्वर को लूटा, और अपनी दुष्टता के कारण उसी दिन मारे गए (प्रेरितों के काम 5:1-10)।

सेप्टुआजिन्ट में “नोस्फिज़ोमाई” शब्द का प्रयोग आकान द्वारा यरीहो की घेराबंदी और लूट के समय थोड़ी-सी लूट की वस्तु चुराकर अपने पास रखने के संदर्भ में किया गया है (यहोशू 7:1)। परमेश्वर की प्रजा की आगे बढ़ने की यात्रा इस अत्यन्त बेईमानी से की गई चोरी के कारण रुक गई, और जैसे हनन्याह और सफीरा के साथ हुआ था, वैसे ही यह आकान की मृत्यु का कारण बना, जो परमेश्वर के न्याय के अंतर्गत हुआ। परमेश्वर चोरी को बहुत गंभीरता से देखता है, क्योंकि यह चरित्र को नष्ट कर देती है और जब विश्वासी चोरी करते हुए पकड़ा जाता है, तो यह उसकी गवाही को भी बिगाड़ देती है।

आज के समय में यह बिल्कुल असामान्य नहीं है कि कर्मचारी अपने नियोक्ताओं से छोटी-मोटी चोरी करते हों। सामान्य रूप से जो वस्तुएँ ली जाती हैं वे छोटी होती हैं—जैसे डाक टिकट, पेन, लिफाफे, स्टेशनरी—परन्तु एक वर्ष के दौरान इस छोटी चोरी से होने वाला नुकसान काफी बड़ी राशि बन सकता है। परमेश्वर की दृष्टि में चोरी, चोरी ही है। कर्मचारी अक्सर तरह-तरह के मानसिक तर्कों से अपने इस व्यवहार को उचित ठहराने की कोशिश करते हैं—जैसे साबुन की टिकिया, कोई औज़ार, या थोड़े पैसे ले लेना—परन्तु परमेश्वर उनके इन तर्कों से प्रभावित नहीं होता। किसी भी मसीही को ऐसे व्यवहार का दोषी नहीं होना चाहिए। उसका विवेक शुद्ध होना चाहिए।

पौलुस के समय के रोमी साम्राज्य में दासों के बीच चोरी करना एक सामान्य बात थी। यद्यपि दासों के पास जीवन की कुछ आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त करने का कोई अन्य साधन नहीं था, फिर भी बाइबल स्वामियों से चोरी करने की इस प्रथा का विरोध करती है।

हम पहले ही पोतीफर के घर में यूसुफ की सेवा की गुणवत्ता पर मनन कर चुके हैं। उस व्यक्ति ने शीघ्र ही सीख लिया था कि वह यूसुफ पर पूर्ण रूप से भरोसा कर सकता है। “सुन,” यूसुफ कह सकता था, “जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है” (उत्पत्ति 39:8)। यद्यपि वह एक दास था, फिर भी यूसुफ भ्रष्ट नहीं था। वह अन्य दासों से भिन्न था। इसी प्रकार, एक मसीही कर्मचारी को अपने अविश्वासी और चोरी करने वाले सहकर्मियों से अलग होना चाहिए।

(3) उन्हें समर्पित भाव से सेवा करनी चाहिए (2:10ख)

चोरी करने के बजाय, एक मसीही सेवक को “सब प्रकार से पूरे विश्वासी” होने चाहिए। “विश्वासी” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है वह “पिस्टिस” है, जिसमें विश्वास और विश्वासयोग्यता दोनों के विचार समाहित हैं। एक विश्वासयोग्य कार्यकर्ता अपने नियोक्ता के सर्वोत्तम हितों का ध्यान रखेगा और अपने समय तथा प्रतिभाओं का सर्वोत्तम उपयोग करेगा। कर्तव्य के प्रति उसकी ईमानदार निष्ठा स्पष्ट दिखाई देनी चाहिए, यहाँ तक कि अपने नियोक्ता की अनुपस्थिति में भी।

फिर से, यूसुफ पुराने नियम का एक उत्तम उदाहरण है। नये नियम में हमारे पास उनेसिमुस का उदाहरण है, जो एक भागा हुआ दास था। पौलुस ने उसे मसीह के पास पहुँचाया और फिर उस रूपांतरित व्यक्ति को उसके स्वामी के पास वापस भेज दिया, जिसकी वह अब “सब प्रकार से पूरे विश्वासी” होकर सेवा करेगा।।

(4) उन्हें प्रत्यक्ष रूप से सेवा करनी है (2:10ग-घ)

सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर रहने वाले लोग भी सुसमाचार के जीवित गवाह बन सकते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में, वे मसीही संदेश के अच्छे प्रचारक बन सकते हैं। यदि वे प्रत्यक्ष रूप से अच्छी सेवा करते हैं, तो वे “सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा” बढ़ाते हैं। “शोभा बढ़ाएं” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है उसका अर्थ है “आभूषण से सजाना।” अंग्रेज़ी शब्द “कॉस्मेटिक” भी इसी यूनानी शब्द से निकला है।

रोमी दासता की व्यवस्था अत्यंत हानिकारक थी; दासों को संपत्ति की वस्तुओं के समान समझा जाता था, यहाँ तक कि समाज के भीतर असंतोष निरंतर उबलता रहता था। दास-स्वामी, जो निरंतर किसी व्यापक दास विद्रोह के भय में रहते थे, अनाज्ञाकारिता को रोकने के लिए कठोर उपायों का प्रयोग करते थे। जब भागे हुए दास पकड़े जाते, तो उन्हें सामान्य रूप से क्रूस पर चढ़ा दिया जाता था। क्रूर स्वामियों को अपने दासों को आतंकित करने के तरीकों में किसी प्रकार की कोई रोक-टोक नहीं होती थी। वे भयंकर कोड़ों का खुलकर प्रयोग करते थे। एक दास-स्वामी तो उन दासों को, जो उसे अप्रसन्न करते थे, एक तालाब में फेंक देता था, जहाँ भूखी मछलियाँ उन पर टूट पड़ती और टुकड़े-टुकड़े कर देती थीं।

इस अन्याय और अत्याचार के वातावरण में सुसमाचार ने वहाँ प्रवेश किया। कई सारे दास मसीह के लिए जीते गए। वास्तव में, पौलुस के समय में मसीहियों का एक बड़ा भाग दासों का ही था। पौलुस ने उन्हें संगठित होकर आंदोलन करने के लिए कभी प्रेरित नहीं किया। इसके बजाय, उसने उन्हें यह सिखाया कि वे मसीह के समान जीवन जीएँ, विश्वासयोग्यता के साथ और पूर्ण रूप से “सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाएँ।

2. कलीसिया में मान्यताएँ (2:11-15)

क. वर्तमान अनुग्रह (2:11-12)

(1) अनुग्रह का प्रकट होना (2:11)

(क) सर्वोच्च अनुग्रह (2:11क)

अब पौलुस उस उपदेश की अपनी व्याख्या को और अधिक स्पष्ट करता है, जिसे सेवकों को अपने जीवन से शोभित करना था। उसने अनुग्रह के तीन पहलुओं के बारे में लिखा। पहला, यह सार्वभौमिक अनुग्रह है—

“परमेश्वर का अनुग्रह।” क्योंकि यह परमेश्वर से उत्पन्न होता है, इसलिए पृथ्वी पर या अधोलोक में कोई भी शक्ति इसे विफल नहीं कर सकती। यह सृष्टि के अनन्त सृष्टिकर्ता के हृदय से प्रवाहित होता है।

समय के आरम्भ होने से बहुत पहले, और परमेश्वर द्वारा झुककर आदम को मिटटी से बनाने से पहले ही अनुग्रह परमेश्वर के हृदय में राज्य कर रहा था। जब पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने अनन्तकाल की परामर्श सभा में ब्रह्मांड की सृष्टि करने का निर्णय लिया, तब वे जानते थे कि यदि वे सृष्टि में कार्य करेंगे, तो वह समय भी आएगा जब उन्हें उद्धार के कार्य में भी शामिल होना पड़ेगा। अनुग्रह इसकी मांग करता था।

समय के साथ, परमेश्वर की बुद्धि और सामर्थ्य सृष्टि में प्रकट की गई, और उसका प्रेम तथा अनुग्रह उद्धार में प्रकट किया गया। एक विस्मित ब्रह्मांड अब परमेश्वर के सार्वभौमिक अनुग्रह की असीम सम्पत्ति पर आश्चर्य करता है।

(ख) उद्धार देने वाला अनुग्रह (2:11ख)

परमेश्वर का सार्वभौमिक अनुग्रह “उद्धार का कारण है।” अनुग्रह का अर्थ है बिना किसी योग्यता के मिली हुई परमेश्वर की कृपा—ऐसी चीज़ पाना जिसके हम लायक नहीं हैं। वास्तव में, हम जिस योग्य हैं वह है हमारे पाप के अनुसार हमें मिलने वाला दण्ड। हमारा पाप सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के विरुद्ध एक विद्रोह है। उसकी सर्वव्यापकता उसे हमारे हर गलत काम के स्थान पर उपस्थित करती है। उसकी सर्वज्ञता उसे हमारे हर विचार, शब्द और कर्म (और उनके सभी परिणामों) के बारे में पूरी तरह से अवगत कराती है।

उसकी सर्वसामर्थ्य हर प्रकार के विरोध को परास्त कर सकती है।

फिर भी, केवल अपना क्रोध हम पर उण्डेल देने के बजाय, परमेश्वर अपने अनुग्रह की ओर हमें ले चलता है। वह हमारे पाप को अनदेखा करने का प्रस्ताव नहीं करता, क्योंकि ऐसा करना उसकी पवित्रता के विरुद्ध होगा। और वह केवल हमें क्षमा ही नहीं देता; वह हमें पूर्ण रूप से धर्मी भी ठहराता है। वह हमें धर्मी घोषित करता है। वह दया और अनुग्रह के एक कार्य द्वारा हमारे पापों को अपनी स्मृति से पूर्ण रूप से हटा देता है।

सम्पूर्ण बाइबल में घोषित उद्धार की योजना प्रतिस्थापन के सिद्धांत पर आधारित है। परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के अनुसार माँगी गई सर्वोच्च सज़ा—अपनी उपस्थिति से अनन्तकाल का बहिष्कार और आग की झील में डालना—निर्धारित की; परन्तु फिर उसने स्वयं ही पाप का दण्ड अपने ऊपर उठा लिया। कलवरी पर परमेश्वर का पुत्र हमारे स्थान पर मरा और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपना अनन्त जीवन अर्पित कर दिया। परमेश्वर का उद्धार देने वाला अनुग्रह ऐसा ही है।

(ग) पर्याप्त अनुग्रह (2:11ग)

परमेश्वर का बचाने वाला अनुग्रह हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी पर्याप्त है, क्योंकि यह “सब मनुष्यों पर प्रकट है।” आदम के पतन के बाद उसके वंशावली में जन्म लेने वाला कोई भी पुरुष, स्त्री, लड़का या लड़की इस “इतने बड़े उद्धार” (इब्रानियों 2:3) से बाहर नहीं है। फिर भी, यह हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रभावी तभी होता है जब इसे स्वीकार किया जाए। फिर भी, यह बिना किसी शर्त और बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों के लिए उपलब्ध है।

परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार के प्रस्ताव की सार्वभौमिकता पवित्रशास्त्र के अनेक पदों के द्वारा प्रमाणित होती है। यूहन्ना 3:16 में हम पढ़ते हैं कि “परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए”। और रोमियों 10:13 में हम पढ़ते हैं कि “जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा”।

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने अपने आत्मा को संसार में भेजा है ताकि वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय के साथ अपने तरीके से और अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करे। यूहन्ना उस ज्योति का उल्लेख करता है जो “हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी” (यूहन्ना 1:9)। सभी लोग उस ज्योति का जवाब नहीं देते, परन्तु सभी उसके संपर्क में आते हैं।

(2) अनुग्रह का आह्वान (2:12)

(क) यह हमें क्या त्यागना सिखाता है (2:12क-ख)

i. अभक्ति (2:12क)

जब हमारा हृदय परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह से भर जाता है, तब वही अनुग्रह हमें अभक्ति का त्याग करना सिखाता है। यहाँ पौलुस “अभक्ति से मन फेरने” की बात करता है। “मन फेरने” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह अर्नेओमाई है, जो नये नियम में इकतीस बार पाया जाता है। इसका अर्थ है “अस्वीकार करना” या “त्याग देना।” दूसरे शब्दों में, विश्वासियों को सिखाया जाता है कि वे अपने हृदय की जन्मजात अभक्ति के विरुद्ध खड़े हों—अभक्ति को अपने आप को प्रकट करने का अधिकार न दें और हममें निवास करने वाले परमेश्वर के आत्मा के अधीन हो जाएँ। उद्धार पाने से पहले, हम अपने अभक्ति को प्रकट करते हैं (जैसा कि यहूदा 15 में है), परन्तु उद्धार के बाद, हम धार्मिकता को प्रकट करते हैं। “अभक्ति से मन फेरना” सच्चे रूपांतरण की कसौटी है (2 कुरिन्थियों 5:17)।

जॉन न्यूटन ने ऐसा ही एक रूपांतरण को अनुभव किया था। उसने समुद्र में एक अभक्ति का जीवन बिताया और इतना गिर गया कि एक समय वह एक दास का दास बनकर रह गया। वह लगातार परमेश्वर से दूर भागता रहा, परन्तु उसके प्रियजनों की प्रार्थनाएँ लगातार उसका पीछा करती रहीं। अंततः परमेश्वर ने उसे पकड़ लिया और समुद्र में भयंकर तूफान के दौरान जहाज़ के डगमगाते डेक पर उसे उद्धार प्राप्त हुआ। वह तुरंत रूपांतरित हो गया। वह सुसमाचार का एक आशीषित और प्रिय सेवक बन गया और वह कभी इस बात को नहीं भूला कि वह परमेश्वर के अनुग्रह का कितना ऋणी है। आभारी हृदय से भरकर उसने यह अमर गीत लिखा, “अद्भुत अनुग्रह”:

अद्भुत अनुग्रह! कितनी मधुर ध्वनि है—

जिसने मुझ जैसे दुखी को बचाया!

मैं कभी खोया हुआ था, अब मिल गया हूँ,

मैं अंधा था, अब देख सकता हूँ।

यह अनुग्रह ही था जिसने मेरे मन को भय करना सिखाया,

और अनुग्रह ही ने मेरे भय को दूर किया;

वह अनुग्रह कितना अनमोल था

जिस घड़ी मैंने पहली बार विश्वास किया।

ii. अपवित्रता (2:12ख)

बचाने वाला अनुग्रह हमें अपवित्रता का भी त्याग करना सिखाता है। इसलिए यहाँ पौलुस “सांसारिक अभिलाषाओं” का इनकार करने की बात करता है। जब परमेश्वर का अनुग्रह हमें मिलता है, तो वह तुरंत हमें यहाँ से महिमा में नहीं ले जाता। वह हमें इस पापमय संसार में ही रहने देता है, ताकि हम अनुग्रह में बढ़ते रहें और परमेश्वर के ज्ञान में उन्नति करते जाएं (कुलुस्सियों 1:10)।

एक विश्वासी के जीवन का हर क्षेत्र परमेश्वर के अगम्य अनुग्रह से घिरा होता है। उसका अनुग्रह विश्वासियों को उन कष्टों का सामना करने में समर्थ बनाता है जो असहनीय प्रतीत होते हैं (2 कुरिन्थियों 12:7-10)। यह उद्धार पाये हुए हृदय को सिखाता है कि वह प्रभु के कार्य में मदद करने के लिए उदारता से दे (2 कुरिन्थियों 9:6-7)। यह उसकी बातचीत को प्रभावशाली बनाता है (कुलुस्सियों 4:6) और उसके हृदय में गीत भर देता है (कुलुस्सियों 3:16)। यह उसे परमेश्वर की सेवा करने की सामर्थ्य प्रदान करता है (इब्रानियों 12:28)।

परमेश्वर का अनुग्रह विश्वासियों को यह भी सिखाता है कि वे संसार की अभिलाषाओं से मन फेर लें, क्योंकि यह संसार परमेश्वर के अनुग्रह का शत्रु है (याकूब 4:4)। यह संसार पापियों के लिए शैतान का अड्डा और पवित्र जनों के लिए उसका प्रलोभन है। इसी संसार ने हमारे प्रिय उद्धारकर्ता को मार डाला, और कैन के दिनों से ही यह धर्मी लोगों को सताता आ रहा है। यह किसी विश्वासी से उसके उद्धार को नहीं छीन सकता, परन्तु यह उससे उसकी शान्ति, आश्वासन और आनन्द को छीन सकता है; यह उसके गवाही और उसके प्रतिफल को भी छीन सकता है।

(ख) यह हमें क्या उत्पन्न करना सिखाता है (2:12ग-ड)

बचाने वाला अनुग्रह हमें यह सिखाता है कि “इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन” बिताना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें अपने जीवन में गंभीरता, भलाई और परमेश्वर-भक्ति को प्रकट करना चाहिए।

“संयम” के रूप में अनूदित शब्द उस गंभीरता की ओर संकेत करता है जो हमारे जीवन में होनी चाहिए। “संयम से जीवन जीने” के बुलाहट इस बात का आह्वान है कि हम अपने हृदय की स्वाभाविक वासनाओं और इच्छाओं पर आत्म-नियंत्रण रखें, ताकि हम यीशु के समान बन सकें।

यहाँ “धर्म से” शब्द मनुष्यों के प्रति भलाई करने के आह्वान को दर्शाता है। हमें हर समय, हर कीमत पर और हर परिस्थिति में वही करना है जो सही और उचित है। हमें वह करना चाहिए जिसका हम वचन देते हैं, चाहे वह कठिन और असुविधाजनक ही क्यों न हो—क्योंकि अपना वचन निभाना सही और उचित है। सामाजिक, यौन, सांसारिक और आत्मिक विषयों में हमें जो सही है उसके पक्ष में खड़ा होना है—चाहे वह घर में, कलीसिया में और संसार में कहीं भी क्यों न हो। परमेश्वर का अनुग्रह हमें ऐसा करना सिखाता है।

“भक्ति” शब्द परमेश्वर के प्रति श्रद्धा की भावना रखने को प्रकट करता है। हमें “इस युग में” यीशु के समान बनना है। यहाँ “युग” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका तात्पर्य इस “संसार” से है। इसलिए “यह युग” इस वर्तमान संसार को दर्शाता है, और उस व्यवस्था को भी जो मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के विरोध में संगठित की गई है—ऐसा संसार जहाँ अधर्मी लोग अपनी वासनाओं, अपनी खोई हुई दशा और अपनी व्यवस्था-हीनता को अपने कर्मों से प्रकट करते हैं।

पुराने नियम में इस अर्थ के उदाहरण में मिस्र सर्वोपरी हैं, जो इस संसार की संस्कृति का प्रतीक है; अशूर, जो इस संसार की क्रूरता का प्रतिनिधित्व करता है; और बेबीलोन, जो इस संसार के पंथों का स्रोत है। एक विश्वासी जब “संयम, धर्म और भक्ति” के साथ जीवन जीने का प्रयास करता है तो यह संसार—अपने घमण्ड और पक्षपात, अपने सुख-विलास और मनोरंजन, अपने नियमों और सिद्धांतों, अपनी नीतियों, अपनी वासनाओं और अपनी धारणाओं के साथ—उस मसीही को चुनौती देता है।

जिसे पौलुस ने “इस युग में” कहा, वह दरअसल आने वाले संसार के ठीक विपरीत है, जो एक मसीही की मंज़िल और घर है। इस संसार में हमें अब्राहम के समान परदेशी और यात्री बनकर रहना है (उत्पत्ति 23:4)।

ख. प्रतिज्ञा की गई महिमा (2:13-15)

(1) भविष्यवाणी संबंधी पहलू (2:13)

(क) हमारी आशा की महिमा (2:13क)

जब पौलुस ने पद 11 में लिखा कि “परमेश्वर का अनुग्रह... प्रकट है,” तो संभव है कि वह मसीह के प्रथम आगमन की ओर संकेत कर रहा था। जब यीशु आया, तब परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य के रूप में देहधारी हुआ। यूहन्ना ने इसे स्मरण करते हुए कहा, “वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा” (यूहन्ना 1:14)। अनुग्रह, सत्य और महिमा यीशु के हर कार्य, वचन और जीवन में स्पष्ट दिखाई देते थे।

परन्तु जब पौलुस ने तीतुस 2:13 को लिखा, तब वह हमारा ध्यान प्रभु के दूसरे आगमन की ओर आकर्षित कर रहा था। उसने कहा कि हमें “उस धन्य आशा” और “महिमा के प्रकट होने” की प्रतीक्षा करनी चाहिए, जो प्रभु यीशु के दो भविष्य में होने वाले आगमन की ओर संकेत करते हैं—एक, बादलों में आकर अपनी दुल्हन को लेने के लिए; और दूसरा, पृथ्वी पर आकर युद्ध का अन्त करने के लिए। पहले वह हमें अपने पास लेने के लिए आएगा, और फिर वह पृथ्वी पर आकर हजार वर्षों तक राज्य करेगा।

हम इन दोनों घटनाओं की प्रतीक्षा करते हैं, विशेषकर पहली की। यही कलीसिया की “धन्य आशा” है। हमें निश्चय है कि हम उस समय से बच निकलेंगे जब इस विद्रोही पृथ्वी पर परमेश्वर का क्रोध उड़ोला जाएगा, जैसा कि जैतून पर्वत के उपदेश (मत्ती 24) और प्रकाशितवाक्य में स्पष्ट रूप से बताया गया है।

तीतुस 2:13 में “बाट जोहने” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग हुआ है, वह प्रोस्टेखोमाई है, जिसका अर्थ है “अपेक्षा रखना।” लूका ने इस शब्द का उपयोग वृद्ध विधवा हन्ना की गतिविधि का वर्णन करते हुए किया, जिसने शिशु मसीह को देखकर उसके विषय में उन सब से कहा जो उसकी प्रतीक्षा [प्रोस्टेखोमाई] कर रहे थे। इसी प्रकार, यह शब्द उस व्यक्ति के समान भी है जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा [प्रोस्टेखोमाई]

करता है कि वह विवाह से कब लौटेगा (लूका 12:36)। और मरकुस ने इस शब्द का उपयोग अरिमत्तिया के यूसुफ के हृदय में भरी हुई आशा का वर्णन करते हुए किया, जो “परमेश्वर के राज्य की बाट जोह [प्रोस्डेखोमाई] रहा था” (मरकुस 15:43)।

पवित्रशास्त्र के अनेक पद हमें “धन्य आशा” की उत्सुकता और गंभीरता से उसकी प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। प्रभु ने स्वयं कलवरी जाने से कुछ समय पहले अपने चेलों से इसका उल्लेख किया (यूहन्ना 14:1-3)। यूहन्ना बताता है कि इस आशा का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होना चाहिए (1 यूहन्ना 3:2-3)। पौलुस हमें उठा लिए जाने की घटना का चरण-दर-चरण क्रम बताता है। वह “समयों और ऋतुओं” की पृष्ठभूमि बताता है और समझाता है कि यह घटना कलीसिया को आने वाले क्रोध से कैसे बचाएगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-18; 5:1-9)। वह यह भी वर्णन करता है कि प्रभु के लौटने पर हमारी देह में अद्भुत रूपान्तरण होगा (1 कुरिन्थियों 15), और उस विजयी गीत का भी उल्लेख करता है जो पुनुरुत्थान पाए हुए संतों और उन लोगों द्वारा गाया जाएगा जो उस महान घटना के समय जीवित होंगे (1 कुरिन्थियों 15:55)।

पुराने नियम की रूपकात्मक शिक्षा में हनोक उन मसीहियों का एक पूर्व-चित्रण है जिन्हें उस दिन उठा लिया जाएगा, क्योंकि वह परमेश्वर के क्रोध के अधर्मी प्रलय-पूर्व संसार पर आने से पहले ही उठा लिया गया था। नूह प्रकाशितवाक्य 7 के मुहर लगाए हुए विश्वासियों का एक पूर्व-चित्रण है, क्योंकि वह जलप्रलय के न्याय से सुरक्षित निकलकर उस नये संसार में पहुँचा जो उंडेले गए क्रोध के पार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जैसे ही मेघारोहण की घटना घटित होगी, महाक्लेश रूपी न्याय आरम्भ हो जाएंगे। संकट लगातार बढ़ते जाएंगे जब तक कि हरमगिदोन का युद्ध न हो जाए, जब प्रभु सामर्थ्य और महिमा के साथ उठा लिए गए पवित्रों और स्वर्गदूतों की सेनाओं के साथ वापस लौटेगा। यही वह “महिमा का प्रकट होना” है जिसका उल्लेख पौलुस ने तीतुस 2:13 में किया है और जिसका विस्तार से वर्णन मत्ती रचित सुसमाचार (मत्ती 24:29-31) और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 19:11-20:3) में मिलता है।

(ख) हमारी आशा की महानता (2:13ख)

जो सामर्थ्य और महिमा के साथ प्रकट होगा, वह “महान परमेश्वर और हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह” है। संसार उसे “महान” नहीं मानता; वह अब भी “मनुष्यों द्वारा तुच्छ जाना और त्यागा हुआ” है (यशायाह 53:3)। उसका सुंदर नाम शाप के रूप में लिया जाता है और उसे उन घिनौने शब्दों के साथ जोड़ा जाता है जो अविश्वासी मन और हृदय की गहराइयों से निकलते हैं। परन्तु विश्वासियों के लिए वह “महान परमेश्वर और हमारा उद्धारकर्ता” है, और “यीशु मसीह” नाम हमारे प्राणों के लिए मधुर संगीत के समान है। ये दोनों वाक्यांश एक ही व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं। यहाँ हमें मसीह की दैवीयता का स्पष्ट प्रमाण मिलता है: जो “महान परमेश्वर” है वही “हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह” भी है।

(2) वर्तमान पहलू (2:14)

(क) यह कौन था (2:14क)

हम पढ़ते हैं कि यीशु मसीह ने “हमारे लिए अपने आप को दे दिया।” जो आने वाला है, वह पहले भी यहाँ आ चुका है। दो हजार वर्ष पहले वह अनन्तता से समय में आया, अपने मेघधनुष से धिरे सिंहासन से उतरकर

स्वर्ग के उच्च स्थानों को छोड़कर, बैतलहम में एक शिशु के रूप में यहाँ इस पृथ्वी पर आया। वह मरने के लिए आया था; यह तथ्य संसार की उत्पत्ति से पहले ही ठहराया जा चुका था।

इतिहास का सबसे अद्भुत तथ्य यह है कि परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति—जिसकी स्वर्गदूत आराधना करते थे, जो इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है—मरने के लिए आया, और वह “हमारे लिए” मरा। परन्तु यह बात इस भेद को और भी गहरा कर देती है। उसने अपने आप को आदम की गिरी हुई वंशावली के लिए, अत्यन्त पापी मनुष्यों के लिए, मिट्टी से बने प्राणियों के लिए, और उन लोगों के लिए दे दिया जो भय और रक्तपात से जुड़ी कथाओं में वर्णित भयंकर पापों को करने में सक्षम हैं।

आज यदि हम अपने ही हृदय के भीतर झाँकें, उसके भेदों को बाहर निकालें, और उसकी वासनाओं तथा छल-कपट को देखें, तो हम इस सत्य की चौंका देने वाली प्रकृति को समझ पाएँगे: उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया।

(ख) यह क्या था (2:14ख-ग)

i. उद्धार की कीमत (2:14ख)

पौलुस ने लिखा कि प्रभु यीशु हमारे लिए मरा “ताकि वह हमें छुड़ा ले।” जो उद्धार हमारे लिए उपलब्ध किया गया, वह वास्तव में बहुत महँगा था। “छुड़ा ले” शब्द हमें उस कीमत की याद दिलाता है, क्योंकि इसका अर्थ है “मूल्य देकर स्वतंत्र करना।” प्रभु यीशु इस संसार के दास-बाज़ार में उतरे और अनन्त मूल्य चुकाकर उसने हमें खरीद लिया। पहला पतरस 1:18-19 हमें उस महान मूल्य की याद दिलाता है जो चुकाया गया: “तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान् वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।”

छुटकारा एक बहुत ही महँगा कार्य है। इसी कारण छुड़ानेवाले कुटुम्बी बोअज़ का परिचय पवित्रशास्त्र में सबसे पहले “एक बड़ा धनी” व्यक्ति के रूप में दिया गया है (रूत 2:1)। और इसी कारण छिपे हुए धन के दृष्टान्त और मोती के दृष्टान्त—दोनों में प्रभु यीशु को उस व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है जिसने उस मूल्यवान वस्तु को प्राप्त करने के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाई—एक कहानी में छुड़ाया हुआ इस्राएल और दूसरी में छुड़ाई हुई कलीसिया है (मत्ती 13:44-46)।

ii. उद्धार की पूर्णता (2:14ग)

हम “हर प्रकार के अधर्म से” छुड़ाए गए हैं। जब प्रभु यीशु ने क्रूस पर हमारे सभी पापों को उठा लिया, तब हमारा सारा अधर्म उस पर डाल दिया गया। जैसा कि भजन लिखने वाले ने कहा है,

हमारे सारे पाप यीशु पर डाल दिए गए,

यीशु ने उन्हें क्रूस पर उठा लिया;

परमेश्वर, जो उन्हें जानता था, ने उन्हें उस पर डाल दिया,

और विश्वास करके, मैं अब मुक्त हूँ!

यूनानी नये नियम में पाप का वर्णन करने के लिए लगभग दो दर्जन शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस समृद्ध शब्दावली के विभिन्न शब्द मनुष्य के पतित स्वभाव में पाई जाने वाली बुराई के हर प्रकार के रूप और मोड़ को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, तीतुस 2:14 में “अधर्म” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह अनोमिया है, जिसका अर्थ है “व्यवस्था-रहित।” यह मानव जाति की दुष्टता और सामान्य अधार्मिकता को प्रकट करता है। अनोमिया का अनुवाद कभी-कभी “अपराध” या “उल्लंघन” के रूप में भी किया जाता है, जिससे व्यवस्था को तोड़ने पर बल दिया जाता है। पाप परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है (रोमियों 7:7)।

(ग) यह क्यों था (2:14घ-च)

i. हमें शुद्ध करने के लिए (2:14घ)

उद्धारकर्ता का इसमें तीन गुना उद्देश्य था। पहला, प्रभु यीशु ने कलवरी पर हमारा स्थान ले लिया ताकि वह हमें “शुद्ध” करे। यहाँ “शुद्ध” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है “साफ करना” या “पवित्र करना।” यह हमें उस सुनार या चाँदी के कारीगर की तस्वीर याद दिलाता है जो बहुमूल्य धातुओं से अशुद्धियों को निकालता है, या उस स्त्री की जो रसोई के बर्तन से दाग या मैल को साफ करती है।

इस शुद्धिकरण को पूरा करने में परमेश्वर के उद्धार की प्रभावशीलता यरूशलेम की सभा में पतरस के शब्दों से स्पष्ट होती है: “मन के जाँचनेवाले परमेश्वर ने उनको [अन्यजातीय विश्वासियों को] भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी; और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उन में कुछ भेद न रखा” (प्रेरितों के काम 15:8-9)। यह वास्तव में शुभ समाचार है! उसने हमें इतना शुद्ध बना दिया है कि हम उसके साथ रह सकें और जहाँ वह बैठा है, वहाँ उसकी उस महिमामय पवित्र उपस्थिति के प्रकाश में बैठ सकें।

ii. हमें अपने अधिकार में लेने के लिए (2:14ड)

उसके तीन गुना उद्देश्य का दूसरा भाग यह था कि वह उन्हें अपने लिए “एक विशेष जाति” ठहराए। “ऐसी जाति” के लिए मूल रूप से जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह पेरीउसियोस है, जो केवल यहीं पाया जाता है। यह परमेश्वर के लोगों को उसकी अपनी प्रजा, अर्थात् उसकी अपनी निज संपत्ति के रूप में दर्शाता है। इसलिए विश्वासियों को विशेष रूप से और स्पष्ट रूप से उसका ही माना गया है। हम उसकी अपनी प्रजा हैं और सब अन्य लोगों से अलग ठहराए गए हैं।

कलीसिया मसीह की अनूठी संपत्ति है। प्रत्येक विश्वासी, एक अर्थ में, उसकी अपनी पूँजी है। हम सब उसी के हैं, जैसे ब्रह्मांड में कोई अन्य प्राणी हमारे समान उसके नहीं हैं। यह सत्य हमारी आत्माओं से कितना गहराई से बात करनी चाहिए! हम उसकी विशेष और बहुमूल्य संपत्ति हैं।

iii. हमें सिद्ध बनाने के लिए (2:14च)

उसके उद्देश्य का तीसरा भाग यह था कि वह हमें “भले-भले कामों में सरगर्म” बनाए। पौलुस के समय में सरगर्म (ज़ीलॉट) एक ऐसे दल के सदस्य थे, जिन्होंने यहूदियों और रोम के बीच हुए युद्ध में कट्टरपंथी भूमिका निभाई थी। यह युद्ध तब तक आरम्भ हो चुका था जब पौलुस ने तीतुस को यह पत्र लिखी। वे सरगर्म तो

थे, परन्तु गलत उद्देश्य के लिए। परन्तु प्रभु यीशु के भी अपने सरगर्म लोग हैं, जो भले काम करने में उत्साही होते हैं।

यहाँ “सरगर्म” के लिए जो यूनानी शब्द प्रयोग हुआ है, उसका शाब्दिक अर्थ है “एक उत्साही व्यक्ति।” पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग अपने मन-परिवर्तन से पहले यहूदी परंपराओं के प्रति अपने उत्साह का वर्णन करने के लिए किया था (गलातियों 1:14)। यरूशलेम की कलीसिया के अगुवे याकूब ने भी इसी शब्द का उपयोग करते हुए पौलुस से उन हजारों यहूदी विश्वासियों के विषय में कहा जो अब भी “व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं” थे (प्रेरितों के काम 21:20)। हमें भी उतनी ही लगन के साथ भले काम करने में समर्पित होना चाहिए, क्योंकि हम प्रभु के उन सब कार्यों के लिए आभारी हैं जो उसने हमारे लिए किये हैं।

(3) व्यावहारिक पहलू (2:15)

(क) तीतुस को पौलुस का निर्देश (2:15क-ख)

पौलुस ने अपने सहकर्मी को आज्ञा दी, “पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह।।” प्रभु के पहले आगमन और उसके दूसरे आगमन से संबंधित इन महान सत्यों के प्रकाश में, तीतुस क्रेतेवासियों के राष्ट्रीय स्वभाव के साथ समझौता नहीं कर सकता था। उसे दिए गए पूरे अधिकार के साथ, उसे परमेश्वर के लोगों को प्रेरित करना था कि वे शारीरिकता और सांसारिकता से दूर रहें और मसीह के समान जीवन जीएँ। जब आवश्यक हो, तो उसे उन्हें ताड़ना देकर सुधारना भी चाहिए था।

हम युवा तीतुस को अपने संदेश के साथ घर-घर जाते हुए देख सकते हैं। हम कल्पना कर सकते हैं कि वह किसी भोजनालय में प्रवेश करता है, स्थानीय व्यापारियों के एक समूह के सामने बैठता है, और उनके साथ सुसमाचार बांटता है। हम उसे मंच पर खड़े होकर पौलुस की सबसे नई पत्री को उठाते हुए भी देख सकते हैं। यह पत्री उसी के नाम लिखा गया है! वह बार-बार परमेश्वर के अनुग्रह, “धन्य आशा” की निकटता, और उसके बाद होने वाले “महिमा के प्रकट होने” के अद्वितीय शब्दों को पढ़ता है।

तीतुस इस संक्षिप्त पास्टरीय पत्री में दिए गए संक्षिप्त कथनों को कलीसियाई पत्रियों की विस्तृत शिक्षाओं के साथ अधिक स्पष्ट करता हुआ जाता है। वह इस महान सत्य पर जोर देता है कि हर एक विश्वासी—चाहे वह क्रेतेवासी हो या कुरिन्थी, इब्रानी हो या यूनानी, सीरियाई हो या सामरी, फिलिप्पी हो या पाम्फिलिया का—सभी मसीह की विशेष संपत्ति है, और इस कारण उसे उसी के अनुसार जीवन जीना चाहिए। तीतुस को पौलुस की इस आज्ञा का पालन करना था कि वह क्रेतेवासियों को इन बातों की याद दिलाता रहे और उन्हें कभी “इन बातों” को भूलने न दे।

(ख) तीतुस पर पौलुस का भरोसा (2:15ग)

“कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए,” पौलुस ने आगे कहा। “तुच्छ जानने” के लिए जो शब्द यहाँ प्रयोग हुआ है, वह नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका शाब्दिक अर्थ है “किसी बात के चारों ओर सोचते रहना” या “अपने मन में उसे बार-बार उलटना-पलटना।” इस तथ्य के बावजूद कि पौलुस ने तीतुस को नियुक्त किया था, कि तीतुस को प्रेरिताई अधिकार सौंपा गया था, और कि यह पत्री उसे अतिरिक्त अधिकार देता था, फिर भी कुछ लोग उसके अधिकार का उपहास करेंगे और उसे महत्वहीन समझेंगे।

तीतुस को लोगों को ऐसा करने की अनुमति नहीं देनी थी। वह उस विशेष समय में उस विशेष स्थान के लिए परमेश्वर की ओर से चुना हुआ व्यक्ति था। पौलुस चाहता था कि वह इस सत्य को याद रखे और यह सुनिश्चित करे कि वह ऐसा कोई कार्य न करे जिससे किसी को उसे तुच्छ समझने का अवसर मिले।

ख. व्यावहारिक अभ्यास (3:1-11)

1. राष्ट्र की प्रजा के रूप में विश्वासियों का आचरण (3:1-2)

क. हमें आज्ञाकारी बनना है (3:1क)

जिस देश में विश्वासी रहते हैं, उन्हें अपने नागरिक होने के साथ आने वाली जिम्मेदारियों को स्वीकार करना चाहिए। उन्हें स्थापित अधिकारियों के अधीन रहना है। पौलुस ने तीतुस को निर्देश दिया कि वह क्रेते के विश्वासियों से कहे कि उन्हें व्यवस्था का पालन करने वाला होना चाहिए। उसने कहा, “लोगों को सुधि दिला कि हाकिमों और अधिकारियों के अधीन रहें, और उनकी आज्ञा मानें।”

स्वभाव और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप, क्रेते के लोग विद्रोही और अधिकार के प्रति विरोधी मानसिकता रखने वाले लोग थे। परन्तु मसीही क्रेतेवासियों को सरकारी अधिकार को पहचानना सीखना था—यद्यपि उस समय रोमी साम्राज्य संसार पर शासन कर रहा था और वह नीरो के नियंत्रण में था, जो इतिहास के सबसे दुष्ट अत्याचारी सम्राटों में से एक था।

“अधीन रहें” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह एक सैनिक शब्द है, जिसका उपयोग पौलुस पहले भी स्त्रियों और दासों के संबंध में कर चुका है (2:5, 9)। यहाँ इस शब्द के प्रयोग से यह संकेत मिलता है कि क्रेते के मसीहियों को स्वयं अपनी इच्छा से अपने आप को रोमी सरकार के प्रतिनिधियों के अधीन और उनके अधिकार के अधीन रखना था।

नये नियम में अन्य स्थानों पर (इफिसियों 6:12), “प्रधानताएँ और अधिकार” शब्द शैतान के राज्य करने वाले अधिकारों के लिए प्रयोग होते हैं—वे गिरे हुए स्वर्गदूत जो इस संसार को अपने भयानक अधिपति के अधीन रखते हैं। परन्तु यहाँ इन शब्दों का प्रयोग एक भिन्न अर्थ में किया गया है। “हाकिम” वे राज्य के प्रमुख थे, अर्थात् वे कानूनी रूप से स्थापित अधिकारी जो रोमी सरकार का प्रतिनिधित्व करते थे। “अधिकारी” वे लोग थे जिन्हें अधिकार सौंपा गया था और जिन्हें इसलिए व्यवस्था को बनाए रखने और लागू करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त था।।

जैसा कि वह सदा करता था, पौलुस ने इस बात पर जोर दिया कि मसीही लोगों को क़ानून के द्वारा स्थापित अधिकार के अधीन रहना चाहिए। “क्या?” सांसारिक लोग कहेंगे, “नीरो जैसे व्यक्ति के अधीन रहें? सताव को चुपचाप सह लें?” परन्तु कलीसिया ने तीन सौ वर्षों तक ऐसा ही किया, और अपने शत्रुओं के बावजूद उन्नति करती रही। “अधीन रहो!”—पौलुस मानो यही कह रहा था। उसने स्वयं दिखाया कि अधीनता में कैसे रहना है। वह सदा अधीन रहा, यहाँ तक कि मृत्यु तक भी।

ख. हमें सहारा देने वाले बनना है (3:1ख-2)

(1) हमारे कार्यों के द्वारा (3:1ख)

विश्वासियों के रूप में, “हर एक अच्छे काम के लिये तैयार” रहकर हमें अपने ऊपर शासन करने वाले अधिकारियों का समर्थन करना चाहिए। यदि पौलुस इस विषय पर बार-बार जोर देता हुआ लगता है, तो इसका कारण यह है कि भले काम उद्धार का स्पष्ट परिणाम हैं। इस विषय में वह और याकूब एक समान सहमत थे (याकूब 2:14-26)। मसीहियों को उन सब प्रयासों का समर्थन करना चाहिए जो अधिकार में बैठे लोग नागरिकों की स्थिति सुधारने के लिए करते हैं। मसीहियों को उन लोगों में सबसे आगे होना चाहिए जो गरीबों, बीमारों, विकलांगों, वंचितों और बंधनों में जकड़े हुए लोगों की सेवा करते हैं।

नामधारी कलीसिया का एक बड़ा भाग उद्धार के साधन के रूप में अच्छे कामों पर बल देता है, परन्तु यह बल पवित्रशास्त्र (इफिसियों 2:8-9) के बिल्कुल विपरीत है। कुछ लोग अच्छे कार्यों को महत्व देने में हास्यास्पद हद तक चले गए हैं। वे सिखाते हैं कि विश्वासियों के अच्छे काम मसीह के भले कामों में जोड़ दिए जाते हैं और इस प्रकार एक आत्मिक भंडार बनता है, जिससे कलीसिया पापमोचन-पत्र प्रदान कर सकती है। एक समय ऐसा था जब इन पापमोचन-पत्रों को पूरे यूरोप में खुलेआम बेचा जाता था ताकि पोप के खजाने को भरा जा सके। इन्हें खरीदने वालों को पाप करने की छूट मिल जाती थी। इस अधर्मी व्यवहार ने सुधार आंदोलन को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वयं को उदारवादी कहने वालों द्वारा प्रचारित “सामाजिक सुसमाचार” की प्रतिक्रिया में, कुछ सुसमाचारवादी अच्छे कार्यों के महत्व को कम कर देते हैं। परन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि यीशु “भलाई करते हुए फिरता रहा” (प्रेरितों के काम 10:38)। कुछ मसीही संस्थाओं ने यीशु के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए, साल्वेशन आर्मी गरीबों और वंचितों तक पहुँचती है। इंग्लैंड के ब्रिस्टल के जॉर्ज म्यूलर ने अनाथालयों के माध्यम से संसार की सराहना प्राप्त की। असभ्य जातियों के बीच काम करने वाले मिशनरियों ने पारंपरिक रूप से सुसमाचार प्रचार के साथ-साथ अस्पतालों और विद्यालयों की स्थापना करके शरीर, मन और आत्मा—तीनों की सेवा की है।

(2) हमारे शब्दों के द्वारा (3:2क)

विश्वासियों के रूप में हम “किसी को बदनाम न करें।” यह स्पष्ट है कि मसीहियों को एक-दूसरे या अन्य लोगों के विषय में बुरा नहीं बोलना चाहिए। मसीहियों को लोगों की उस सामान्य प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए जिसमें वे शासकों पर अपने शब्दों से आक्रमण करते हैं, भले ही एक लोकतांत्रिक समाज में ऐसे खुले तौर से बोलना सामान्य माना जाता है।

जब पौलुस ने तीतुस को लिखा, तब नीरो काफ़ी अत्याचार कर रहा था। सताए जा रहे मसीहियों के लिए उसके विषय में बुरा बोलना या बदनाम करना स्वाभाविक था। परन्तु यह मसीह का उदाहरण नहीं था। उसने अपने सताने वालों के विरुद्ध कभी बुरा नहीं कहा। हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। जब उसे अपमानित किया गया और यहूदियों तथा अन्यजातियों द्वारा झूठे आरोप लगाए गए, तब भी वह मौन रहा। उसने महायाजक की झूठी गवाही को अनदेखा किया। उसने हेरोदेस से कुछ नहीं कहा। जब यीशु ने पीलातुस से बात की, तो उसने प्रेम के साथ बात की, ताकि उसके विवेक को स्पर्श कर सके।

पौलुस के जीवन में भी यही बात दिखाई देती है। केवल एक बार उसने किसी अधिकारी के विरुद्ध कठोर शब्द कहे, और जब उसे पता चला कि वह किसके विषय में कह रहा था, तो उसने तुरंत माफी माँगी—हालाँकि उसमें थोड़ी व्यंग्य की झलक भी थी (प्रेरितों के काम 23:2-5)।

(3) हमारे तरीकों से (3:2ख-घ)

(क) हमारी कोमलता (3:2ख)

अपने सह-कर्मियों के साथ व्यवहार करते समय, विशेषकर जो अधिकार के पदों पर हैं, हमें नम्रता प्रदर्शित करनी चाहिए। जैसा कि पौलुस ने कहा, विश्वासियों को “झगड़ालू” नहीं होना चाहिए। निस्संदेह, उसके शब्दों का चयन क्रेते के लड़ाकू स्वभाव को दर्शाता है। “झगड़ालू न हो” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग हुआ है, वह अमाखोस है, जिसका अर्थ है “कोमल होना” या “लड़ाई न करने वाला।” कलीसिया में या कहीं और भी झगड़े के लिए कोई स्थान नहीं है।

पौलुस एक योद्धा था, परन्तु वह झगड़ालू नहीं था। उसने सत्य के लिए दृढ़ता से स्थिर खड़ा होना सीखा था, चाहे उसमें प्रमुख व्यक्ति ही क्यों न शामिल हों, जैसा कि पतरस और याकूब ने अनुभव किया। फिर भी पौलुस हमेशा एक उत्तम सज्जन ही बना रहा। जब फेस्तुस ने असभ्यता के भाव से यह कह दिया कि पौलुस पागल है, तब भी पौलुस ने तीखी प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, ‘हे महामहिम् फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूँ’ (प्रेरितों के काम 26:25)। प्रेरित ने अपने उदाहरण से हमें सिखाया कि जब हम किसी से असहमत होते हैं, तो हमें असभ्य होने की आवश्यकता नहीं होती।

(ख) हमारा व्यवहार (3:2ग)

हमें अपने आचरण में “कोमल स्वभाव” रखना चाहिए। याकूब के अनुसार, कोमलता आत्मिक बुद्धि के गुणों में से एक है (याकूब 3:17)। यहाँ पौलुस जिस यूनानी शब्द का प्रयोग करता है, उसके कई अर्थ हैं, जिनमें “न्यायपूर्ण” और “संयमी होना” भी शामिल हैं। यह संकेत करता है कि हमें वही करना चाहिए जो उचित और शोभनीय हो, और हमें परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना चाहिए। हमें यह नहीं पता होता कि कोई व्यक्ति किन दबावों से जूझ रहा है, किन स्वभाविक कमजोरियों को उसे जीतना है, या उसके पृष्ठभूमि और पालन-पोषण में कैसी कमियाँ रही हैं; इसलिए हमें दूसरों के लिए स्थान देना चाहिए और समझदारी दिखानी चाहिए।

निस्संदेह, नीरो के अत्यन्त दोषपूर्ण चरित्र के विकास में कुछ परिस्थितियाँ रही होंगी। पौलुस कभी उसे बदनाम नहीं करता, न ही उसकी निन्दा करता है, और न ही उसके विषय में कोई नकारात्मक संकेत देता है। वह उस व्यक्ति पर कैसे आक्रमण कर सकता था या उसे वचन से अपमानित कर सकता था, जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहा था?

(ग) हमारी नम्रता (3:2घ)

पौलुस ने आगे कहा कि हमें “सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ” रहना चाहिए। कितना व्यापक अर्थपूर्ण कथन है! नम्रता ऐसा गुण नहीं है जिसे हम बहुत सराहते हैं, सम्भवतः इसलिए कि हम इसे कमजोरी

समझ लेते हैं। परन्तु मूसा और प्रभु यीशु दोनों ही नम्र और दीन थे (गिनती 12:3; मत्ती 11:29)। कोई भी उन्हें कमजोर नहीं कह सकता! यीशु ने कहा कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे (मत्ती 5:5)।

यहाँ “नम्रता” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह ऐसा शब्द है जो ट्रेंच के अनुसार “आत्मा में भीतर से उत्पन्न होने वाले अनुग्रह” को दर्शाता है। नम्रता एक ऐसे विलक्षण पौधे के समान है जिसे पवित्र आत्मा विश्वासी की आत्मा में उगाता है। नम्रता एक आत्मिक प्रवृत्ति है जो हमें परमेश्वर की इच्छा के अधीन नम्रतापूर्वक समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। यही गुण हमें अपने सह-मनुष्यों—यहाँ तक कि बुरे लोगों—का भी धैर्य के साथ सामना करने योग्य बनाता है। नम्र व्यक्ति आसानी से क्रोधित नहीं होता, चाहे उसमें मूसा के समान झट क्रोध करने वाला स्वभाव ही क्यों न हो।

नम्र होना महान सामर्थ्य की मांग करता है। अपनी सामर्थ्य के कारण ही प्रभु यीशु हन्ना, कैफा, हेरोदेस और पीलातुस की भारी उकसावे का सामना कर सका और एक बार भी उसने अपनी आवाज ऊँची नहीं की। वह शांत और विनम्र बना रहा; और यद्यपि वह स्वर्गदूतों की बारह सेनाएँ बुला सकता था, फिर भी उसने मौन धारण किया। जैसा कि एक कवि ने वर्णन किया है,

नम्रता और पराजय से,

उसने वस्त्र और मुकुट जीता;

खुद कुचले जाकर भी

अपने सभी शत्रुओं को पैरों तले रौंद दिया।

2. प्रभु के पवित्र लोगों के रूप में विश्वासियों का आचरण (3:3-11)

प्रभु के पवित्र जनों के रूप में, हमारे ऊपर और भी ऊँची और पवित्र जिम्मेदारियाँ हैं जिन्हें हमें पूरा करना है। पौलुस ने इन जिम्मेदारियों पर चर्चा की, परन्तु उससे पहले उसने हमें यह स्मरण दिलाया कि मसीह से मिलने से पहले हम खुद क्या थे।

क. याद रखना कि हम क्या थे (3:3-8)

(1) हमारा व्यवहार (3:3)

(क) हमारे भ्रष्ट मन (3:3क-ग)

i. हम कितने निर्बुद्धि थे (3:3क)

अपने आप को भी शामिल करते हुए, पौलुस ने कहा, “क्योंकि हम भी पहले निर्बुद्धि थे।” प्रेरित कभी इस बात को नहीं भूला था कि वह पहले कैसा व्यक्ति था और वह मसीह में सत्य के प्रति कितना दृढ़ता से अंधा बना रहा था।

यहाँ “निर्बुद्धि” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वही शब्द पवित्र आत्मा ने रोमियों 1:14 में अन्यजातियों की बुद्धिहीनता को दर्शाने के लिए उपयोग किया है। प्रभु ने भी इस शब्द का प्रयोग तब किया जब उसने इम्मारुस के मार्ग पर दो संदेह करने वाले चेलों को फटकार लगाई थी (लूका 24:25)। “अविवेकी” इसका

उचित अनुवाद होगा। तीतुस 3:3 के संदर्भ से स्पष्ट होता है कि यहाँ यह यूनानी शब्द उन लोगों का वर्णन करता है जो अपनी वासनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाते।

अविश्वासी लोग अक्सर अपने अविश्वास में स्वयं को चतुर समझते हैं। वे अपनी मूर्खतापूर्ण दर्शनशास्त्र, झूठे सिद्धांतों और शैतान से प्रेरित भ्रमों का प्रदर्शन करते हैं और अपने आप को बुद्धिमान समझकर अपनी सराहना करते हैं। परन्तु परमेश्वर उन्हें मूर्ख कहता है।

ii. हम कितने अनाज्ञाकारी थे (3:3ख)

हम भी मसीह में आने से पहले “आज्ञा न मानने वाले [अपेइथेस]” थे। पौलुस ने अपेइथेस शब्द का प्रयोग पहले भी 1:16 में किया था। “अनाज्ञाकारी होना” इसका उचित अनुवाद है। यह शब्द सुधार के प्रति अनिच्छा रखने को दर्शाता है, ऐसी स्थिति जो अंत में विद्रोह में बदल जाती है। अक्सर, किसी व्यक्ति द्वारा सुसमाचार का तिरस्कार करना केवल उसके जानबूझकर और हठीली जिद के कारण होता है। थोमा ने इस व्यवहार को तब प्रकट किया जब वह ऊपरी कोठरी में प्रभु के पुनरुत्थान के बाद उनके बीच प्रकट होने के अवसर पर अनुपस्थित था, और उसने अन्य चेलों की एकमत गवाही को अस्वीकार कर दिया और तब तक विश्वास करने से इनकार किया जब तक कि विशेष रूप से उसके लिए कोई प्रमाण न दिया जाए।

iii. हम कितने भ्रम में पड़े थे (3:3ग)

पौलुस ने हमें आगे स्मरण दिलाया कि हम पहले “भ्रम में पड़े हुए” थे। यही एक अविश्वासी की स्वाभाविक अवस्था होती है। इस पृथ्वी पर पहला पाप हव्वा द्वारा किया गया, जिसे शैतान ने बहका दिया (1 तीमुथियुस 2:14)। उसकी योजना यह थी कि वह उसे परमेश्वर के वचन को छोड़ने के लिए उकसाए, जो उसके छल के विरुद्ध उसकी एकमात्र सुरक्षा कवच था। शैतान ने हव्वा के मन में संदेह बोने से शुरुआत की: “क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा...?” फिर उसने इनकार को जारी किया: “तुम निश्चय न मरोगे।” अंत में उसने भ्रम उत्पन्न किया: “तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।” हव्वा शैतान के इस झूठ में पड़ गई। परिणामस्वरूप, वह सीधे पाप में गिर गई।

भ्रम शैतान का सबसे प्रिय तरीका है, जिसके द्वारा वह अविश्वासियों को उनकी खोई हुई अवस्था में बनाए रखता है, और यही उसका मुख्य उपाय है जिससे वह छुड़ाए हुएों को सत्य से भटका देता है। वह हर प्रकार के झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44), परन्तु वह अपने आप को ज्योतिर्मय दूत के समान भी प्रकट कर सकता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। वह मनुष्यों के मन को सत्य के प्रति अन्धा कर देता है (2 कुरिन्थियों 3:14; 4:4), जैसा कि पौलुस भली-भाँति जानता था, क्योंकि अपने मन-परिवर्तन से पहले वह स्वयं भी शैतान द्वारा अन्धा कर दिया गया था (प्रेरितों के काम 26:9)।

(ख) हमारी भ्रष्ट नैतिकताएँ (3:3घ-ड)

अविश्वासी लोग मानसिक रूप से ही नहीं, बल्कि नैतिक रूप से भी भ्रष्ट होते हैं। हमारी पूर्व की दुष्ट वासनाओं और सांसारिक सुख-विलासिता की याद दिलाते हुए, पौलुस ने कहा कि हम “विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे।” यहाँ “दासत्व में थे” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है,

वह गुलामी की अवस्था को दर्शाता है। यीशु ने कहा, “जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास (गुलाम) है” (यूहन्ना 8:34)।

तीतुस 3:3 में “अभिलाषाओं” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग हुआ है, वह एपिथुमिया है, जिसका अर्थ है एक प्रबल इच्छा—चाहे वह अच्छी हो या बुरी हो। नये नियम में एपिथुमिया आम तौर से बुरी इच्छा के अर्थ में प्रयुक्त होता है, और यहाँ भी यही अर्थ प्रतीत होता है। प्राचीन अंग्रेज़ी शब्द “डाइवर्स” यूनानी शब्द पोइकिलोस का अनुवाद है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “बहुरंगी” या “अनेक प्रकार के।” यहाँ यह शब्द “कई प्रकार की” अभिलाषाओं को दर्शाता है। शैतान के पास बुरी वासनाओं का मानो एक विशाल भंडार उपलब्ध है, जिनमें मनुष्य आसानी से लिप्त हो सकता है।

यहाँ “सुख-विलास” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह नये नियम में सदा बुरे अर्थ में ही इस्तेमाल होता है। यह स्वाभाविक, पापमय इच्छाओं की तृप्ति को दर्शाता है। प्रभु यीशु ने ऐसे सांसारिक सुखों की तुलना उन काँटों से की है जो किसी अच्छे विश्वासी के हृदय में परमेश्वर के वचन को दबा देते हैं (लूका 8:14)। बहुत से लोग अपने सुख-विलास के प्रति प्रेम के कारण उद्धार से वंचित रह गए हैं। पौलुस ने अत्यधिक सुख-विलास को अंतिम दिनों के प्रमुख लक्षणों में से एक के रूप में बताया है (2 तीमुथियुस 3:4)।

(ग) हमारे भ्रष्ट उद्देश्य (3:3-च)

i. हमारा दुष्ट स्वभाव (3:3च)

मसीह को ग्रहण करने से पहले, हम “बैरभाव में जीवन व्यतीत करते थे।” यहाँ “व्यतीत करते थे” शब्द का अनुवाद केवल यहीं और 1 तीमुथियुस 2:2 में किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है “समय गुजारना, अपना जीवन व्यतीत करना।” “बैरभाव” शब्द का अनुवाद काकिया है, जो दुष्ट चरित्र को दर्शाता है और दुष्टता, भ्रष्टा और दुर्भावना के विचारों को अभिव्यक्त करता है। परमेश्वर की दृष्टि में, नये जन्म से रहित एक मनुष्य के हृदय का स्वभाव ऐसा ही होता है।

बैरभाव दूसरों को नुकसान पहुँचाने की एक इच्छा है। यह एक ऐसे साँप के समान है जो हमारे हृदय में कुंडली मारकर पड़ा रहता है, और इसे तुरंत सक्रिय करने के लिए बहुत अधिक उकसावे की आवश्यकता नहीं होती।

ii. हमारी बुरी इच्छाएँ (3:3-ग)

पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि हम भी “डाह” में जीवन बिताते थे। डाह लगभग हमेशा पौलुस की पापों की सूचियों में अपना स्थान बना लेता है (रोमियों 1:29; गलातियों 5:21; 1 तीमुथियुस 6:4)। तीतुस 3:3 में जिस शब्द का अनुवाद “डाह” किया गया है, वह फथोनोस है। यह उस भयानक असंतोष की भावना को दर्शाता है जिसे हम तब महसूस करने में सक्षम होते हैं जब किसी और को प्राथमिकता दी जाती है, सम्मानित किया जाता है, पदोन्नति दी जाती है, या उसकी प्रशंसा की जाती है। डाह ने ही धार्मिक अगुवों को प्रेरित किया कि वे यीशु को पीलातुस के हाथों सौंप दें और यह माँग करें कि उसे मृत्युदण्ड दिया जाए—और पीलातुस जानता था कि उनकी प्रेरक भावना क्या थी (मत्ती 27:18)। डाह का यह साँप बैरभाव का जुड़वाँ है। वे दोनों एक बुरी जोड़ी बनाते हैं।

iii. हमारी बुरी नापसंदगी (3:3ज)

नया जन्म पाने से पहले के दिनों में हम अक्सर “घृणित” थे। जिस शब्द का अनुवाद “घृणित” किया गया है, वह केवल यहीं पाया जाता है। यह किसी ऐसी वस्तु का चित्र प्रस्तुत करता है जो अत्यन्त घिनौना हो।

बिना नया जन्म पाए हुए मनुष्य के हृदय घृणा से भरा रहता है। परिणामस्वरूप, लोगों का एक-दूसरे से घृणा करना बिल्कुल भी असामान्य बात नहीं है। घृणा से भरा हुआ हृदय किसी भी प्रकार की दुष्टता करने में सक्षम होता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर ने कहा, “मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है” (यिर्मयाह 17:9)। केवल वही उस दुष्टता की गहराई को माप सकता है जिसके लिए यह सक्षम है।

(2) हमारा मन-परिवर्तन (3:4-6)

(क) प्रकाशन (3:4)

पवित्रशास्त्र कहता है, “पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रकट हुआ।” आह, कितना ही धन्य शब्द है “पर”! कितनी बार यह हमारे बचाव के लिए आता है! जैसे उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में (लूका 15:20, 22), “पर” वह छोटा किवाड़ है जिस पर बड़े-बड़े विषय घूम जाते हैं। यहाँ यह परमेश्वर के स्वभाव और उसकी करुणा के प्रगटीकरण का परिचय देता है।

जब हम पाप की कीचड़ और गंदगी में पड़े हुए थे और उन बुराइयों में डूबे हुए थे जिनका वर्णन पौलुस ने अभी-अभी किया है, तभी अचानक “हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर” प्रकट हुआ! पौलुस का मन-परिवर्तन भी ऐसा ही था। उद्धार पाए जाने से पहले वह क्रोधित, भ्रम में पड़ा हुआ, द्वेषपूर्ण, कामुक और घृणा से भरा हुआ था। हम उसे तेज़ी से दमिश्क की ओर बढ़ते हुए देख सकते हैं। वह अपने मंजिल तक पहुँचने और वहाँ की कलीसिया को नष्ट करने के लिए इतना उतावला था कि उसने दोपहर के विश्राम की सामान्य प्रथा को भी तुच्छ समझा। लेकिन अचानक उसका मार्ग रुक गया। दोपहर के सूर्य से भी अधिक तेज़ एक प्रकाश ने उसे चकाचौंध कर दिया, और स्वर्ग से एक आवाज़ उसके कानों में गूँज उठी। पौलुस ने स्वर्गारोहित मसीह के वे गंभीर तलाशते हुए शब्द सुने। हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम वहाँ उस पर प्रकट हुआ। तरसुस का शाऊल अब मर चुका था, और प्रेरित पौलुस अपनी कब्र से जी उठा था।

मसीही कलीसिया का इतिहास ऐसे परिवर्तन की अनेक कहानियों से भरा हुआ है, परन्तु नये नियम में केवल कुछ ही विशेष मन-परिवर्तन की घटनाएँ दर्ज की गई हैं। प्रेरितों के काम (अध्याय 8-10) में शाऊल, कूशी खोजे और कुरनेलियुस के जीवन-परिवर्तन के अनुभवों का वर्णन मिलता है—जो मानव जाति के तीन वंशीय प्रमुखों शेम, हाम और येपेत के वंशजों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लेकिन यह पुस्तक हमें ऐसी घटनाओं का लगातार विवरण नहीं देती। इतिहास इस कमी को हजारों असंख्य कहानियों से भर देता है, जो हमारे चेहरों और व्यक्तित्वों की तरह ही विविध हैं। उनमें से हर एक परमेश्वर के अनुग्रह की धूप में चमकता हुआ एक अनोखा हीरा है, जो उसकी अनन्त महिमा को प्रकट करता है। हालाँकि, हमारा विश्वास गवाहियों और गीतों पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए।

परमेश्वर अपने समय में स्वयं को प्रकट करता है। पहले, वह अविश्वासी व्यक्ति को अपनी राह पर चलने देता है, अपने मन के मुताबिक करने की अनुमति देता है और अपनी बात कहने देता है। परमेश्वर उसे अपनी

पूरी तरह खोई हुई अवस्था का एहसास करने देता है और उसे ऐसी स्थिति में ले आता है जहाँ वह अपने आप से हार मान लेता है। इस सत्य का उदाहरण हमें लूका 15 में उड़ाऊ पुत्र की कहानी में दिखाई देता है। पश्चाताप करने वाले उस उड़ाऊ पुत्र और उसके कठोर बड़े भाई के बीच कितना बड़ा अंतर था, जो कभी भी अपने आप से हार मानने की स्थिति तक नहीं पहुँचा। “पर जब,” जैसा कि पौलुस ने तीतुस 3:4 में कहा है, परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है। वह तो पूरे समय वहाँ था, परन्तु पहचाना नहीं गया था।

“प्रकट हुआ” शब्द उस मूल शब्द से आया है जिसका अर्थ है “चमकना।” जब परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है, तब अंत में यह धुंध को चीरकर प्रकाश प्रकट करता है। इसी प्रकार, उत्पत्ति 1 में सूर्य, चन्द्रमा और तारे “आदि में” ही बनाए गए थे। परन्तु चौथे दिन तक वे अपने पूरे वैभव के साथ प्रकट नहीं हुए, कि वे शासन करें और प्रकाश दें (उत्पत्ति 1:14-19)। परमेश्वर ने उस अंधकार, अव्यवस्था और उजाड़ अवस्था को दूर करने के लिए कार्य करना आरम्भ किया जो वहाँ मौजूद था। फिर सूर्य प्रकट हुआ, और चन्द्रमा तथा तारे दिखाई देने लगे। वे तो पहले से ही वहाँ थे।

मानवीय आत्मा के साथ परमेश्वर के मार्ग भी उतने ही बुद्धिमान और समझदारीपूर्ण होते हैं। जब परमेश्वर अपने उत्तम समय और रीति से प्रभुतापूर्वक हस्तक्षेप करता है, तब वह घटनाओं को होने देता है। फिर, जब परिस्थितियाँ अनुकूल हो जाती हैं, तब उसकी भलाई और अनुग्रह का पूर्ण प्रकाशन होता है।

(ख) क्रांति (3:5-6)

“उसके बाद” जो होता है, वह आत्मा में एक पूर्ण क्रांति से कम नहीं होता। “पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं” (2 कुरिन्थियों 5:17)।

i. हमारे कर्म शामिल नहीं हैं (3:5क)

हमेशा की तरह, परमेश्वर एक योजना के अनुसार कार्य करता है। मन-परिवर्तन के लिए उसकी योजना में किसी भी मानवीय प्रयास, अच्छे कामों या विशेष योग्यता का कोई स्थान नहीं है। पौलुस कहता है कि हमने जो उद्धार पाया है “यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए।” यह सत्य संसार के सभी झूठे धर्मों को अस्वीकार कर देता है। उदाहरण के लिए, कैथोलिक सिद्धांत मानव योग्यता पर आधारित है। इसी प्रकार सभी कर्मों पर आधारित पंथ भी हैं। परमेश्वर हमारे कामों को स्वीकार नहीं करता, और इसका बहुत सरल कारण है—“कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं” (रोमियों 3:10-19)।

कभी-कभी हम अपने आप को अच्छा समझने लगते हैं, जब हम अपने आप की तुलना उन लोगों से करते हैं जो अनैतिक, भद्दी भाषा बोलने वाले, दुष्ट स्वभाव के या पूरी तरह बेईमान होते हैं। परन्तु इस प्रकार की भलाई में बदलाव होते रहते हैं। लेकिन परमेश्वर का मापदण्ड केवल मसीह है। उसकी पारदर्शी भलाई उसके प्रत्येक विचार और प्रत्येक कार्य में दिखाई देती थी। जिस पल उसने बैतलहम की चरनी में पहली सांस ली, उस क्षण से लेकर जब उसने कलवरी की पहाड़ी पर अपनी आत्मा सौंप दी, तब तक लोगों ने उसमें केवल निष्कलंक भलाई ही देखी। हमारी काल्पनिक धार्मिकता मसीह की प्रज्वलित पवित्रता की तुलना में कुछ भी नहीं है। इसलिए यशायाह ने अपने आप को अशुद्ध स्वीकार किया (यशायाह 6:1-5), और पतरस ने अपने आप को पापी माना (लूका 5:8)।

अपनी पुस्तक के तीन अध्यायों में अय्यूब ने लगभग 195 बार “मैं”, “मुझे” और “मेरा” जैसे सर्वनामों का प्रयोग करते हुए स्वयं अपनी ही धार्मिकता का बखान किया, परन्तु जब उसका परमेश्वर के सामने आमना-सामना हुआ, तो उसका स्वर बिल्कुल बदल गया। उसने कहा, “देख, मैं तो तुच्छ हूँ” (अय्यूब 40:4)।

ii. हमारे स्नान को स्पष्ट किया गया (3:5ख-ग)

क. पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म (3:5ख)

हम परमेश्वर के पूर्ण सिद्धता के मानदण्ड पर कभी खरे नहीं उतर सकते, इसलिए हमें अत्यन्त आवश्यकता है कि हम शुद्ध किए जाएँ। पौलुस ने लिखा, “अपनी दया के अनुसार” परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया है। इन शब्दों के साथ कितने गहरे और समृद्ध विचार प्रस्तुत किए गए हैं!

हमारा पापी स्वभाव, जो हमें आदम से विरासत में मिला है, इतना घिनौना और इतनी गहराई से जड़ जमा चुका है कि परमेश्वर की दया के बिना हमारे लिए कोई आशा नहीं है। परमेश्वर की दया का वर्णन योना से बेहतर किसी ने नहीं किया। उसने कहा, “मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है” (योना 4:2)। जिस समय योना ने परमेश्वर के चरित्र का यह अद्भुत वर्णन किया, उसी समय वह इस कारण क्रोधित हो उठा कि परमेश्वर ने नीनवे पर दया की और उसे नष्ट नहीं किया, जैसा कि योना चाहता था। परमेश्वर की दया का गुण इस बात से प्रकट होता है कि उसने योना की उस बुरी भावना के लिए उसे दण्डित नहीं किया। इसके विपरीत, उसने उसी से उसकी पुस्तक लिखने को प्रेरित किया।

हमारे उद्धार का स्रोत हमारी नैतिकता में नहीं है, जिसे परमेश्वर व्यर्थ मानता है, बल्कि उसकी दया में निहित है। हमारा उद्धार पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर किया जाता है।

परमेश्वर की दृष्टि में हम इतने अशुद्ध हैं कि एक पूर्ण स्नान की आवश्यकता है—“नए जन्म का स्नान।” “स्नान” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द लौत्रोन उस शब्द से आया है जिसका अर्थ है “नहाना” या “पूरा स्नान करना।” हमारे शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर होने के लिए बनाए गए थे, और हमारी आत्मा उसके निवास स्थान होने के लिए नियुक्त थी। परन्तु जब पाप संसार में आया, तब पवित्र आत्मा उन्हें छोड़कर चला गया, और जिसके परिणामस्वरूप आदम तथा उसकी सारी सन्तान आत्मिक रूप से मृत हो गई। इससे पहले कि पवित्र आत्मा फिर से अपने मन्दिर और पवित्र स्थान में आए, एक सम्पूर्ण शुद्धिकरण की आवश्यकता है। उस शुद्धिकरण का साधन मसीह का लहू है (1 यूहन्ना 1:6-2:2)।

जब “स्नान” का कार्य हो जाता है, तब “नए जन्म” का कार्य संभव होता है। “नए जन्म” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द पालिंगेनेसिया है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है—पालिन (“फिर से”) और जेनेसिस (“जन्म”)। इसलिए नए जन्म का अर्थ है फिर से जन्म लेना।

जैसा कि उत्पत्ति की पुस्तक में दिखाया गया है, यह प्रक्रिया - जन्म, पतन और फिर नया जन्म को दर्शाता है। नए जन्म में, पवित्र आत्मा शुद्ध किए गए विश्वासी की देह में फिर से आकर उसके आत्मा को जीवित करता है, क्योंकि परमेश्वर की सदैव यही इच्छा थी कि वह मनुष्य में निवास करे और मनुष्य की आत्मा उसमें निवास करने वाले पवित्र आत्मा के साथ तालमेल में कार्य करे।

ख. पवित्र आत्मा के द्वारा नया बनाया जाना (3:5ग)

इसके बाद पौलुस आगे बढ़ता है। वह एक ऐसे शब्द का प्रयोग करता है जो कैनोस (“नया”) और अना (“फिर से”) से मिलकर बना है—“नया बनाया जाना।” “पवित्र आत्मा के द्वारा नया बनाया जाना” नया जन्म पाए हुए विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के निरन्तर कार्य को दर्शाता है।

पुराने नियम में, इस प्रक्रिया को मिलापवाले तंबू की व्यवस्था के द्वारा प्रतीकात्मक रूप से सिखाया गया था। तम्बू के एक छोर पर अपनी सारी अशुद्धता और खोई हुई अवस्था के साथ पापी खड़ा था। दूसरे छोर पर, परमपवित्र स्थान में, परमेश्वर अपनी महान पवित्रता और महिमा में सिंहासन पर विराजमान था। पापी और पवित्र परमेश्वर के बीच पीतल की एक वेदी और पीतल की हौदी रखा हुआ था। जब पापी परमेश्वर की ओर अपने पहले कुछ कदम बढ़ाता था, तब वह पीतल की वेदी के सामने आता था और उसे यह सीख मिलती थी कि उसे पाप से पूर्ण और गहरा शुद्धिकरण चाहिए। उसे एक बलिदान लाना पड़ता था और उसका लहू बहाना पड़ता था। मसीह के लहू से कम कोई भी चीज हमें पाप से पूरी तरह शुद्ध नहीं कर सकती।

पीतल की वेदी के पास आने के बाद, वह व्यक्ति आगे बढ़ता था। इसके बाद वह पीतल की हौदी के पास आता था। यह चमकाए हुए पीतल के दर्पणों से बना हुआ था, और इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि एक विश्वासी भी बिना अशुद्ध हुए एक कदम नहीं चल सकता। उस हौदी में पानी होता था ताकि प्रकट हुई अशुद्धता को धोया जा सके। इस प्रकार विश्वासी को यह सिखाया जाता था कि पाप से उसके मूलभूत शुद्धिकरण के अतिरिक्त उसे बार-बार होने वाले शुद्धिकरण की भी आवश्यकता है। मसीह का कार्य हमारे मूलभूत शुद्धिकरण को सुनिश्चित करता है, और परमेश्वर का वचन (जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित, प्रकाशित और लागू किया जाता है) हमें पाप से निरन्तर शुद्ध करता रहता है (इफिसियों 5:26)।

एक अन्य संदर्भ में, पौलुस ने कुरिन्थियों को स्मरण दिलाया कि “यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है” (2 कुरिन्थियों 4:16)।

यद्यपि एक व्यक्ति का शारीरिक शरीर धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है, फिर भी “नया मनुष्य,” अर्थात् नया स्वभाव, प्रतिदिन आत्मिक सामर्थ्य से नया और तरोताज़ा किया जाता है।

iii. हमारी दुष्टता मिटा दी गई है (3:6)

विश्वासी वास्तव में मसीह में एक नया मनुष्य है। पौलुस कहता है कि पुरानी बातें बीत गई हैं और सब कुछ नया हो गया है (2 कुरिन्थियों 5:17)। इस बदलाव की मात्रा “अधिकार से” शब्द द्वारा प्रकट होती है। इस बदलाव का साधन है “हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह।”

यदि क्रेतेवासियों, कुरिन्थियों या कुलुस्सियों से यह कहा जाता कि वे मसीह के समान बनें, परन्तु उन्हें मसीह के समान बनने का साधन ही न दिया जाता, तो उससे क्या लाभ होता?

“नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ” “जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकार से उंडेला” (तीतुस 3:5-6)। इन पदों में जो चित्र प्रस्तुत किया गया है वह ऐसे जल का है जिसे अधिकार से उंडेला जा रहा हो। विश्वासियों के पास पवित्र आत्मा में जीवित जल का एक विशाल भण्डार है; वह इसे कभी न रुकने वाले झरने के समान उंडेलता रहता है। प्रभु यीशु ने इस स्रोत

का उल्लेख यूहन्ना 7:37-39 में किया है, और इसका चित्रण यहजेकेल के उस दर्शन में मिलता है जिसमें परमेश्वर के मन्दिर से एक नदी का सोता बहता हुआ दिखाई देता है (यहेजकेल 47:1-12)।

पवित्र आत्मा का यह अधिकारी से उंडेला जाना हमें “हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा” प्राप्त होता है, जिनके हम इस सारे अनुग्रह के लिए कर्जदार हैं (यूहन्ना 14:16-17, 26; 15:26-27; 16:7-15)।

मसीही जीवन एक अलौकिक जीवन है। मसीह का जीवन हमें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रदान किया जाता है, जो हम में वास करता है, हमें परिपूर्ण करता है, हमारा अभिषेक करता है और हमारे द्वारा प्रवाहित होता है।

नये नियम में, परमेश्वर के आत्मा को दिए गए विभिन्न नाम और उपाधियाँ हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि वह कैसा है। उसे सत्य का आत्मा कहा गया है (यूहन्ना 14:17), पवित्रता का आत्मा (रोमियों 1:4), जीवन का आत्मा (रोमियों 8:2), विश्वास का आत्मा (2 कुरिन्थियों 4:13), बुद्धि का आत्मा (इफिसियों 1:17), सामर्थ्य का आत्मा, प्रेम का आत्मा और संयम का आत्मा (2 तीमुथियुस 1:7), अनुग्रह का आत्मा (इब्रानियों 10:29), और महिमा का आत्मा (1 पतरस 4:14) कहा गया है। क्योंकि पवित्र आत्मा की ये विशेषताएं प्रभु यीशु की भी विशेषताएं हैं, और क्योंकि उद्धार में परमेश्वर का महान उद्देश्य हमें उसके पुत्र के अनुरूप बनाना है, इसलिए हमें मसीह के द्वारा पवित्र आत्मा को अधिकारी से प्रदान किया गया है।

(3) हमारी परिपूर्णता (3:7)

(क) व्यवस्था सदा के लिए संतुष्ट हुई (3:7क)

अब पौलुस भविष्य की ओर दृष्टि करता है। वह लिखता है कि हम “उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराए गए।” “धर्मी ठहराए जाने” के लिए प्रयुक्त शब्द एक न्यायिक शब्द है, जिसका अर्थ है “व्यवस्था के सामने धर्मी घोषित किया जाना।” व्यवस्था का किसी धर्मी ठहराए गए व्यक्ति पर कोई दावा नहीं होता। धर्मी ठहराया जाना क्षमा से भी बढ़कर है। जिस व्यक्ति का दोष सिद्ध हो चुका हो, उसे जिसे ठेस पहुँची है वह क्षमा कर सकता है, पर अपराध की याद बनी रहती है। परन्तु जो व्यक्ति धर्मी ठहराया गया है, वह दोषमुक्त ठहराया गया है; उसके विरुद्ध किसी भी अपराध का कोई उल्लेख नहीं रहता। परमेश्वर का महान उद्धार विश्वासियों को धर्मी ठहराता है। हमारे पापों का लेखा परमेश्वर की स्मृति से सदा के लिए मिटा दिया जाता है (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12; 10:16-17)। परमेश्वर की व्यवस्था संतुष्ट हो चुकी है; अब उसके पास हमारे विरुद्ध कोई मामला बकाया नहीं रहता।

(ख) हमेशा के लिए जीवन सुनिश्चित कर दिया गया है (3:7ख)

इसके अतिरिक्त, हमें परमेश्वर की प्रसन्नता में “अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस” ठहराया गया है। “आशा” शब्द, जो भविष्य की ओर संकेत करता है, हमारा ध्यान उस “धन्य आशा” की ओर ले जाता है जिसकी याद पौलुस पहले ही तीतुस को दिला चुका था (तीतुस 2:13)। क्योंकि हमारे विरुद्ध लगाए गए सभी आरोप न्यायालय से निरस्त कर दिए गए हैं (रोमियों 8:33-34), इसलिए अब हम अनन्त जीवन — अर्थात् स्वयं परमेश्वर के जीवन के वारिस हैं।

इसमें आश्चर्य नहीं कि पवित्र आत्मा इब्रानियों 7:25 में हमें बताता है कि हमने “पूरा पूरा उद्धार” पाया है (या जैसा किसी ने सुंदर ढंग से इसका वर्णन किया है, “सबसे निचली अवस्था से लेकर सबसे उत्तम अवस्था

तक”)। जब हम यह सोचते हैं कि उन अविश्वास करने वाले इस्राएलियों के साथ क्या हुआ, तब हम इस सत्य में और भी अधिक आनन्दित हो सकते हैं: मसीह का तिरस्कार करने वाले यहूदियों पर परमेश्वर का “भयानक प्रकोप” आ पड़ा है (1 थिस्सलुनीकियों 2:14-16)।

(4) हमारा अंगीकार (3:8)

पौलुस ने तीतुस को एक महान सत्य की याद दिलाई: “यह बात सच है, और मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले।” जिन “बातों” का पौलुस यहाँ उल्लेख कर रहा था, वे ऐसे महान सत्य हैं जिन्हें प्रेरित ने अभी अभी कहा—कि परमेश्वर हमें पूरी तरह, स्वतंत्र रूप से और सदा के लिए बदल देता है।

कभी-कभी हम अपनी बाइबल को इतनी लापरवाही और सामान्य तरीके से पढ़ते हैं कि ये महान सच्चाइयाँ लगभग बिना ध्यान दिए ही हमारे पास से निकल जाती हैं। हमें चाहिए कि हम उन्हें बार-बार दोहराएँ, उन पर मनन करें और उन्हें अपने जीवन में अपनाएँ। ये सच्चाइयाँ तारों के समान हैं; हम उन्हें मुश्किल से ही ध्यान देते हैं। हम बस इतना जानते हैं कि वे विशाल आकाशीय पिंड हैं, जो अत्यधिक गति से बहुत दूर तक यात्रा कर रहे हैं। लेकिन अधिकतर समय तारे “बस वहीं होते हैं।” यदि हमें उन्हें हजार वर्षों में केवल एक बार देखने की अनुमति मिलती, तो उनका दिखाई देना एक वैश्विक घटना बन जाती। लोग उस दिन को अपने कैलेंडर में चिन्हित करते, सारी रात जागकर उन्हें देखते, और उनके बारे में बात करना कभी बंद नहीं करते। लेकिन क्योंकि तारे “बस वहीं हैं,” इसलिए वे अधिकतर अनदेखे रह जाते हैं।

इसी प्रकार, सुसमाचार की सच्चाइयाँ भी “बस वहीं” हैं। मान लीजिए कि वे स्थायी रूप में लिखी ही न गई होतीं, न ही हमारी अपनी भाषा में अनूदित होतीं, और हमें हर समय आसानी से उपलब्ध न होतीं।

सोचिए, यदि हमें उन्हें जीवन में केवल एक बार पढ़ने का अवसर मिलता (और वह भी बिना किसी प्रति के)! तब हम उस विशेष क्षण की कितनी बेसब्री से प्रतीक्षा करते! हम अपनी स्मरण शक्ति को कितना प्रशिक्षित करते कि उन सच्चाइयों को पकड़े रहे सकें! हम अपने मन में उन्हें कितना संजोकर रखते, उनके बारे में बातें करते, और उन पर आश्चर्य करते!

क्योंकि विश्वासी इन महान सत्यों को लापरवाही के साथ यही साधारण मान लेते हैं और उन्हें समझने, ग्रहण करने और अपने जीवन में लागू करने में असफल रहते हैं, इसलिए पौलुस ने बल देकर कहा कि इन बातों को लगातार दृढ़ता से कहा जाए। सुसमाचार केवल कोई कल्पना या पुरानी कहानी नहीं है; “ये बातें” पूरी तरह से सत्य हैं। हमें इनके बारे में बोलना कभी बंद नहीं करना चाहिए, क्योंकि हमारे चारों ओर ऐसे लोग हैं जिन्होंने इन्हें कभी नहीं सुना, और क्योंकि हमारी अपनी स्मृति भी बहुत धोखा देने वाली है। जैसा कि एक भजन लिखने वाले ने कहा है,

मुझे यह कहानी बार-बार सुनाओ,

क्योंकि मैं इतनी जल्दी भूल जाता हूँ;

जैसे सुबह की ओस

दोपहर तक अदृश्य हो जाती है।[6]

तीतुस 3:8 में “दृढ़ता से बोले” के लिए जो यूनानी शब्द प्रयोग हुआ है, वह “डायबेबैओमाइ” है, जिसका अर्थ है “मजबूती से प्रमाणित करना, विश्वास के साथ उसकी पुष्टि करना।” हमें इन परिभाषाओं के द्वारा प्रेरित किया जाता है कि हम गहरे जमे हुए अविश्वास के सामने भी उद्धार के सत्यों को साहस के साथ घोषित करें। हम उन्हें पूरे आश्वासन के साथ कह सकते हैं, क्योंकि हम किसी वैज्ञानिक सिद्धांत, विवादास्पद दर्शन, या धार्मिक मत की बात नहीं कर रहे हैं। हम उस सत्य की बात कर रहे हैं जो परमेश्वर के सिंहासन के समान अटल और अनंत है।

पौलुस ने तीतुस को एक महान परीक्षा की भी याद दिलाई: “कि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें।” हम सेवा करने के लिए बचाए गए हैं; नहीं तो जिस पल हमने विश्वास किया, उसी पल परमेश्वर हमें स्वर्ग में अपने पास बुला लेता। परमेश्वर ने विश्वासियों को यहाँ इसीलिए बचा कर रखा है कि वे अच्छे काम करें।

तीतुस 3:5 में, पौलुस ने अभी अभी यह घोषित किया है कि उद्धार “कामों के द्वारा नहीं” है। अब हम यहाँ देखते हैं कि हमें “भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान” रखना चाहिए। पौलुस अपने आप का विरोध नहीं कर रहा था। अच्छे काम उद्धार पाने का साधन नहीं हैं, परन्तु वे उद्धार के प्रकट होने के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। जैसे ही तारसुस का शाऊल बचाया गया, उसने कहा, “हे प्रभु, तू मुझसे क्या चाहता है कि मैं करूँ?” (प्रेरितों के काम 9:6)।

यकीनन, नया जन्म न पाए हुए मनुष्य के अच्छे कामों और विश्वासी के अच्छे कामों के बीच बहुत बड़ा अंतर होता है। एक उद्धार न पाए हुए व्यक्ति के अच्छे काम उसके पापी स्वभाव से दूषित होते हैं। बहुत से लोग दावा करते हैं कि उन्होंने अपना सर्वोत्तम किया है। किसी ने भी वास्तव में अपना सर्वोत्तम नहीं किया। अक्सर उसका उद्देश्य गलत होता है, या यदि वह प्रयास करता तो और अधिक कर सकता था। संभव है कि उसके काम केवल औपचारिक रूप से किए जाते हों और उनमें प्रेम की कमी हो। या फिर उसके काम शरीर के अनुसार किए जाते हों ताकि उसे भीतर से संतुष्टि मिले, या किसी अन्य छिपे हुए उद्देश्य के लिए किए जाते हों। अक्सर, उसके काम आत्मसंतोष, घमंड और आत्म-प्रशंसा को उत्पन्न करते हैं। यही बात अक्सर एक शारीरिक विश्वासी के कामों के बारे में भी सत्य होती है (रोमियों 7)। जो लोग शरीर के अनुसार भले काम करते हैं, उन तक सुसमाचार के साथ पहुँचना अक्सर उन लोगों की अपेक्षा अधिक कठिन होता है जो स्वयं को पापी मानते हैं (लूका 18:9-14)।

एक भक्त विश्वासी के अच्छे काम बिल्कुल अलग होते हैं। वे प्रभु के अच्छे कामों के स्वभाव में सहभागी होते हैं। पतरस ने ऐसे कामों के स्रोत की ओर संकेत किया जब उसने कहा, “यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए” (प्रेरितों के काम 2:22)। पौलुस के मन में भी इसी प्रकार का विचार रहा होगा जब उसने लिखा, “डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ; क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है” (फिलिप्पियों 2:12-13)।

फिर भी, विश्वासी को अच्छे कामों में “लगे रहना” आवश्यक है। यहाँ “लगे रहने” के रूप में अनूदित शब्द मूल रूप से उस शब्द से लिया गया है जिसका प्रयोग सामान्यतः “अध्यक्षता करना” या “शासन करना”

के अर्थ में किया जाता है। यहाँ इसका अर्थ है कि हमें अपने अच्छे कामों पर ध्यान देना चाहिए। बहुत बार ऐसा होता है कि हम किसी काम को शुरू तो करते हैं लेकिन बाद में उससे थककर उसे छोड़ देते हैं। यह पवित्र आत्मा का तरीका नहीं है। हम परिणामों की कमी के कारण निराश हो सकते हैं, लेकिन पवित्र आत्मा कभी थकता नहीं और हमेशा परिणाम उत्पन्न करता है।

यहाँ पौलुस की तीतुस को तीसरी याद दिलाने वाली बात एक महान भरोसे के बारे में है: “ये बातें भली और मनुष्यों के लाभ की हैं,” प्रेरित ने लिखा। सत्य हमें सौंपा गया है, और हमारे आसपास के लोगों के प्रति हमारा यह कर्तव्य है कि हम “इन बातों” के विषय में बात करें और दूसरों पर मसीही विश्वास की व्यावहारिकता का प्रभाव डालें।

ख. जहाँ हम हैं वहीं डटे रहना (3:9-11)

(1) एक रुख जो लिया जाना है (3:9)

(क) एक आवश्यकता (3:9क-ग)

i. मूर्खतापूर्ण प्रश्नों से बचें (3:9क)

अपने दृढ़ दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि “मूर्खता के प्रश्नों से बचना।” मूर्खतापूर्ण प्रश्न शैतान की पसंदीदा चालों में से एक हैं, जिनसे वह हमें भटका देता है। हमसे ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे, “कैन को उसकी पत्नी कहाँ से मिली?” या “क्या अन्यजाति लोग नाश हो जाते हैं?” या “परमेश्वर कष्ट क्यों होने देता है?” या “परमेश्वर शैतान को नष्ट क्यों नहीं करता?”

ये प्रश्न सही भी हो सकते हैं, लेकिन अक्सर ये ध्यान भटकाने वाली बातें होती हैं, जिनका उद्देश्य निष्फल चर्चा में उलझाना और असुविधाजनक सत्य से दूर ले जाना होता है। ऐसा व्यक्ति जो इस प्रकार के टालमटोल करने वाले तर्क उठाता है, यह समझ चुका होता है कि ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने से पहले मुख्य विषय तक पहुँचने के लिए अक्सर काफी भूमिका बाँधनी पड़ती है। वह चाहता है कि विरोधी लोग मुद्दे तक पहुँचने में समय लगाएँ, क्योंकि उसका उद्देश्य उत्तर पाना नहीं, बल्कि विषय को उलझाना होता है। जो लोग पूछते हैं, “क्या परमेश्वर ने महामारी के जीवाणु को बनाया?” या “प्रेम के परमेश्वर ने चूहे को मारने से पहले बिल्ली को उसके साथ खेलने की प्रवृत्ति क्यों दी?”—उनके लिए बिल्कुल तर्कसंगत उत्तर हैं। हालाँकि ऐसे प्रश्न अक्सर झगड़ा उत्पन्न करते हैं, इसलिए हमें उनसे बचना चाहिए।

हमें “जो कोई [हम] से [हमारी] आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहें” (1 पतरस 3:15)। हमें यह जानना चाहिए कि हम क्या विश्वास करते हैं और क्यों करते हैं। हमें संशयवादियों और अविश्वासियों द्वारा पूछे गए कठिन प्रश्नों के उत्तर भी जानने चाहिए। परन्तु हम “मूर्खतापूर्ण विवादों” का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं हैं।

ii. मूर्खता के विवादों से बचें (3:9ख-ग)

क. यहूदी सूचियाँ (3:9ख)

दूसरी आवश्यकता यह है कि मूर्खतापूर्ण और निरर्थक विवादों से बचा जाए। पौलुस के मन में विशेष रूप से अपने समय के अविश्वासी यहूदियों की तर्क-वितर्क करने की प्रवृत्ति थी, इसलिए उसने तीतुस से कहा कि वह “वंशावलियों” से बचा रहे।

वंशावलियों का निश्चित रूप से अपना एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। पहला इतिहास की शुरुआत के नौ अध्यायों के नामों की एक सूची दी गई है। नया नियम भी एक वंशावली से आरम्भ होता है। उत्पत्ति की पुस्तक में नामों की कई महत्वपूर्ण सूचियाँ हमें आदम से लेकर अब्राहम, इसहाक, याकूब और बारह कुल-पुरुषों तक ले जाती हैं। ये वंशावलियाँ महत्वपूर्ण हैं और परमेश्वर द्वारा प्रेरित पवित्र शास्त्र का भाग हैं।

कभी-कभी इन वंशावलियों से जुड़ी कुछ समस्याएँ भी दिखाई देती हैं, परन्तु अधिकांश समस्याओं का समाधान परिश्रमी बाइबल विद्वानों द्वारा कर लिया गया है। उदाहरण के लिए, 1 इतिहास 2:13-17 यह संकेत देता है कि यिशै के सात पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं, जबकि 1 शमूएल 16:5-12 यह दर्शाता है कि दाऊद यिशै का आठवाँ पुत्र था। इस प्रतीत होने वाले विरोधाभास के कई संभावित स्पष्टीकरण हैं। सम्भव है कि दाऊद के अभिषेक के तुरंत बाद यिशै के किसी एक पुत्र की मृत्यु हो गई हो। यह भी सम्भव है कि कोई एक पुत्र उसके किसी दासी का पुत्र रहा हो और इसलिए उसे वंशावली में न गिना गया हो। या फिर किसी पुत्र की बिना संतान के मृत्यु हो गई हो और इस कारण वह वंशावली में शामिल न किया गया हो। यह भी ध्यान देने योग्य है कि 1 शमूएल ऐतिहासिक घटनाओं को दर्ज करता है, जबकि 1 इतिहास वंशावलियों को प्रस्तुत करता है; इसलिए दोनों का दृष्टिकोण भिन्न है।

एक और स्पष्ट समस्या यह है कि मत्ती के सुसमाचार में प्रभु के पूर्वजों की सूची में कुछ प्रमुख नाम अनुपस्थित हैं; उदाहरण के लिए अहज़्याह (2 राजा 8:25; 2 इतिहास 22:1-9), योआश जिसे कभी-कभी यहोआश भी कहा जाता है (2 राजा 11:2-12, 21; 2 इतिहास 24:1-25), अमस्याह (2 राजा 14:8-20; 2 इतिहास 24:1-25), और यहोयाकीम (2 राजा 23:36-24:6; 2 इतिहास 36:5-8)। इसका स्पष्टीकरण यह है कि यहूदी लोग वंशावली में परिवार के हर सदस्य का नाम शामिल करना हमेशा आवश्यक नहीं समझते थे। मत्ती 1:1 में, लेखक ने केवल तीन नामों का उल्लेख करके अपने उद्देश्य को पूरा किया; उसका उद्देश्य नासरत के यीशु को दाऊद से जोड़ना था, जो इब्रानी राजवंश का संस्थापक था।

लूका की वंशावली मत्ती की वंशावली से भिन्न है, क्योंकि उसका उद्देश्य अलग है। लूका के सुसमाचार ने प्रभु की वंशावली को मरियम से होकर दिखाया, ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि वह स्त्री का वायदा किया गया वंश है (उत्पत्ति 3:15)। लूका ने अपनी वंशावली को आदम तक पहुँचाया (लूका 3:38), ताकि यह दर्शाया जा सके कि यीशु केवल इब्रानी परिवार के ही नहीं, बल्कि सारी मानवजाति का भी सदस्य है।

जब हम पवित्र शास्त्र की वंशावलियों का अध्ययन करते हैं, तो भिन्नताएँ और चुनौतियाँ हमारे सामने आती हैं, और गंभीर बाइबल विद्यार्थियों के लिए उनका समाधान करना उचित है। परन्तु जब पौलुस ने तीतुस से यहूदी वंशावलियों से बचने के लिए कहा, तो उसका आशय इस प्रकार की गंभीर खोज से नहीं था। संभव है कि वह फिलो की रूपकात्मक व्याख्याओं के विषय में सोच रहा था। (फिलो, जो व्याख्याशास्त्र की एक कट्टर प्रणाली का जनक था, बहुत से यहूदियों द्वारा अत्यधिक सराहा जाता था।) या फिर पौलुस उन रब्बियों के विषय में सोच रहा होगा, जो वंशावलियों को कहानियों और काल्पनिक बातों से भर देते थे, या उन कुछ यहूदियों के बारे में, जो वंशावलियों का उपयोग अपनी जाति और धर्म के घमण्ड को बढ़ाने और

अन्यजातियों पर अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए करते थे। तीतुस को ऐसे व्यर्थ प्रयासों में अपना समय नष्ट नहीं करना था।

ख. यहूदी नियम (3:9ग)

तीतुस को “विरोध और झगड़ों से जो व्यवस्था के विषय में हों,” उनसे भी बचना था। यहाँ “विरोध” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “कलह, वाद-विवाद और संघर्ष।” कुरिन्थुस की कलीसिया में बहुत अधिक झगड़े हो रहे थे (1 कुरिन्थियों 1:11), और स्पष्ट है कि क्रेते की कलीसिया में भी ऐसा ही हो रहा था।

जिस शब्द का अनुवाद “झगड़ों” (लड़ाइयाँ) किया गया है, वह नये नियम में सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है। यहूदी लोग मूसा की व्यवस्था और मौखिक व्यवस्था (अर्थात् अंतहीन रब्बी परंपराएँ और वे अतिरिक्त बातें जो मूसा की व्यवस्था में जोड़ दी गई थीं) की रक्षा करने में बहुत अधिक उग्र हो सकते थे। संभव है कि पौलुस ने यह पूर्वानुमान लगाया हो कि यदि यरूशलेम का पतन हो जाए, तो निर्वासित यहूदियों के लिए रब्बी परंपराएँ पहले से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएँगी।

यहूदियों के इतिहास का सबसे बड़ा संकटकाल निकट आ रहा था। रोमी सेना व्यवस्थित रूप से यहूदियों के देश में आगे बढ़ रही थी और उसके नगरों को खंडहर बना रही थी। कुछ ही वर्षों में यरूशलेम रोमी अधिकार में आने वाला था, और आराधनालय जले हुए पत्थरों का ढेर बनने वाला था। तब यहूदियों के लिए औपचारिक व्यवस्था (धार्मिक विधियों) का पालन करना संभव नहीं रहता। वे रब्बियों की व्याख्या के अनुसार व्यवस्था में शरण लेते, और तोराह की अपेक्षा तल्मूद को अधिक महत्व मिलने लगता। यहूदी संसार और अधिक यहूदी बनता जाएगा—लगातार संकीर्ण, आत्म-केंद्रित, संदेहपूर्ण, रक्षात्मक, और दुनिया के बाकी हिस्सों से अलग-थलग होता हुआ। समय के साथ तल्मूद ही उनका आसरा और उनका जीवन बन जाता।

इसके अतिरिक्त, सताव की लहरें संघर्ष कर रहे यहूदी बस्तियों के चारों ओर रब्बी परंपराओं के बंधनों को और भी दृढ़ कर रही थीं।

पौलुस, जो स्वयं एक प्रशिक्षित रब्बी था, इतना दूरदर्शी था कि आने वाली बातों को पहले ही देख चुका था। उसने तीतुस को निर्देश दिया कि वह यहूदियों के सभी वाद-विवाद और व्यवस्था के विषय में होने वाले झगड़ों से दूर रहे। वास्तव में, सुसमाचार हमें व्यवस्था से एक प्रणाली के रूप में तो स्वतंत्र करता है, परन्तु उसे एक मानक के रूप में समाप्त नहीं करता। पौलुस ने इस सत्य को पहचाना और अपनी पत्रियों में इस विषय पर बार-बार चर्चा की। यरूशलेम के प्रेरितों ने भी इस सत्य को समझा (प्रेरितों के काम 15), परन्तु उतनी स्पष्टता से नहीं जितनी पौलुस ने समझा था।

(ख) एक कारण (3:9घ)

यहूदी वंशावलियों और व्यवस्थाओं पर झगड़ा करने से बचना चाहिए, “क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं।” यहाँ “निष्फल” शब्द का अर्थ है “बिना किसी लाभ के, किसी उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति न करने वाला।” “व्यर्थ” के लिए प्रयुक्त शब्द मत्तेओस है, जिसका अर्थ है “फलहीन” या “परिणामरहित।” यह शब्द मूर्तिपूजा

के संदर्भ में (प्रेरितों के काम 14:15), यूनानी दर्शन के संदर्भ में (1 कुरिन्थियों 3:20), और उदारवादी धर्मविज्ञान के संदर्भ में (1 कुरिन्थियों 15:17) प्रयुक्त हुआ है।

पौलुस से बेहतर कोई नहीं जानता था कि इस तरह का झगड़ा कितना निरर्थक था। आखिरकार, वह स्वयं एक रब्बी रह चुका था, और वह प्रसिद्ध गमलीएल का शिष्य था (प्रेरितों के काम 22:3), जो और भी प्रसिद्ध हिल्लेल का पौत्र था, जिसने यहूदियों के बीच एक प्रसिद्ध विचारधारा की स्थापना की थी।

पौलुस कभी इन बातों पर काफी घमण्ड करता था, पर अब नहीं करता (फिलिप्पियों 3:1-11)। क्योंकि प्रेम ने व्यवस्था का स्थान ले लिया था, मसीह ने मत-प्रणाली का स्थान ले लिया था, और नये नियम का सत्य पुराने नियम के सत्य पर छा गया था—तो फिर मसीह को अस्वीकार करने वाले यहूदियों के साथ उनकी परंपरागत बातों या रीति-रिवाजों पर क्यों वाद-विवाद किया जाए?

(2) एक पक्ष जो लिया जाना है (3:10-11)

(क) पाखंडी का पर्दाफाश (3:10क)

पौलुस ने अब अपना ध्यान “पाखंडी मनुष्य” के मामले की ओर लगाया। “पाखंडी” के लिए प्रयुक्त मूल यूनानी शब्द हैरेटिकोस है, जो नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इस शब्द की जड़ में “चयन” या जान-बूझकर चुनी गई राय का भाव निहित है। पाखंडी वह व्यक्ति है जो सही बाइबिलीय उपदेशों को अस्वीकार करके अन्य विचारों को अपनाता है। ऐसे स्वेच्छाचारी विचार कलीसिया में गुटबंदी और विभाजन उत्पन्न करते हैं।

पौलुस, पतरस और यूहन्ना पाखंडियों से भली-भांति परिचित थे। उनमें से कुछ ने पुनरुत्थान का इनकार किया था (2 तीमुथियुस 2:17-18), कुछ ने स्वयं प्रभु का इनकार किया था (2 पतरस 2:1), और कुछ को तो “शैतान की सभा” का बताया गया है (प्रकाशित वाक्य 2:9)।

कलीसिया का इतिहास ऐसे बहुत से लोगों का विवरण देता है और बताता है कि उन्होंने कितना बड़ा नुकसान पहुँचाया है। यह नुकसान आज भी जारी है, क्योंकि आज भी संसार में अनेक ऐसे पाखंडी लोग मौजूद हैं।

(ख) पाखंडी की जाँच (3:10ख)

“एक दो बार समझा-बुझाकर” यह पद्यांश उन दो प्रकार की जाँच या समझाने की प्रक्रिया को दर्शाता है, जो एक पाखंडी को दी जानी चाहिए। “समझा-बुझाकर” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द नौथेसिया है। इसका संबंध वचन के द्वारा प्रशिक्षण या समझाने से है। जिस व्यक्ति का मन झूठे उपदेश से प्रभावित हो गया हो, उसे परमेश्वर के सत्य वचन के द्वारा ही सुधारा जाना चाहिए।

जिस प्रकार एक निर्माणकर्ता दीवार की सीधई जाँचने के लिए “प्लम्ब लाइन और लेवल” का उपयोग करता है, उसी प्रकार कलीसिया के प्राचीनों को परमेश्वर के वचन की सीधई को उस भाई के पाखंडी विचारों और तरीकों पर लागू करना चाहिए, जो अपनी ही टेढ़ी-मेढ़ी और विभाजन उत्पन्न करने वाली सोच में उलझा हुआ है। प्राचीनों को चाहिए कि जब तक वह कलीसिया में है, वे उसे दो बार समझाएँ और

सुधारने का प्रयास करें। उसे हर संभव अवसर दिया जाना चाहिए कि वह अपनी गलती को पहचाने और अपने विधर्मी विचारों से पश्चाताप करके लौट आए।

(ग) पाखंडी का बहिष्कार (3:10ग-11)

पौलुस ने तीतुस से कहा कि जो पाखंडी मन फिराने से इनकार करे, उससे “अलग” हो जाएं (3:10)। उसे कलीसिया के सामने लाया जाए और उसके खतरनाक तथा विभाजनकारी उपदेशों के कारण उसे बाहर निकाल दिया जाए। यही उसकी सार्वजनिक दोषसिद्धि है।

इसके पश्चात उसका व्यक्तिगत दोष सिद्ध होता है। इसी की ओर संकेत करते हुए पौलुस ने लिखा, “यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर पाप करता रहता है।”

“भटक गया” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द एक्स्ट्रेफोमाई है, जो केवल यहीं पाया जाता है। इसका अर्थ है “विकृत हो जाना” या “पूरी तरह बदल जाना।” एक पाखंडी के स्वभाव में नैतिक रूप से एक टेढ़ापन होता है।

यहाँ “पाप करता रहता है” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “लक्ष्य से चूक जाना” या “सही मार्ग से भटक जाना।” यह परमेश्वर के विरुद्ध पाप के विषय में इस्तेमाल होता है। एक पाखंडी जानता है कि वह पाप कर रहा है, इसलिए वह “अपने आप को दोषी ठहराता है [ऑटो-कटाक्रीटोस]।” यह यूनानी शब्द, जो केवल यहीं प्रयुक्त हुआ है, शाब्दिक रूप से यह अर्थ देता है कि “वह स्वयं अपने को दोषी ठहराता है, क्योंकि वह भली-भांति जानता है कि वह गलत कर रहा है।” आत्म-दोषारोपण, व्यवस्था या कलीसिया के प्राचीनों द्वारा दिए गए किसी भी दंड से अधिक भारी दोषारोपण होता है। इसलिए आश्चर्य नहीं कि एक पाखंडी को कलीसिया से बाहर कर दिया जाना चाहिए।

एक ऐसा व्यक्ति जिसके स्वभाव में नैतिक विकृति हो और जो इसे जानता भी हो, जो झूठे उपदेश को अपनाए हुए हैं और उसमें बना रहता है, उसका कलीसिया की संगति में कोई स्थान नहीं है।

भाग 9.

निष्कर्ष

तीतुस 3:12-15

क. तीतुस के लिए मार्गदर्शन (3:12-14)

1. उसकी गतिविधियों के संबंध में (3:12)

पौलुस की पत्री लगभग पूरी हो चुकी थी, केवल कुछ अंतिम निर्देश और अभिवादन शेष रह गए थे। तीतुस 3:12 में दिए गए निर्देश इस बात से संबंधित थे कि उसे क्या करना है और कहाँ जाना है:

“जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुखिकुस को भेजूँ तो मेरे पास निकुपुलिस आने का प्रयत्न करना, क्योंकि मैं ने वहीं जाड़ा काटने का निश्चय किया है।”

संभवतः पौलुस यह पत्री मिलेतुस से लिख रहा था। जब वह मिलेतुस में था, तब उसने तीमुथियुस को इफिसुस में सेवा करने के लिए भेजा, ताकि वह स्वयं जाकर उस कलीसिया की बढ़ती समस्याओं का समाधान कर सके। ऐसा लगता है कि पौलुस मिलेतुस से त्रौआस गया, जहाँ से उसने तीमुथियुस को लिखा कि वह इफिसुस में उसके आने की अपेक्षा करे। परन्तु लगता है कि पौलुस पहले मकिदुनिया चला गया। संभव है कि इफिसुस की उसकी यात्रा कुरिन्थ में उत्पन्न एक और संकट के समाचार के कारण और अधिक विलंबित हो गई। ऐसा भी प्रतीत होता है कि कुरिन्थ जाने से पहले उसने तीमुथियुस को बुलाया और उसे प्रेमपूर्वक विदा किया। उस समय नीरो के अत्याचार भयंकर रूप से चल रहे थे, और पौलुस के मन में आने वाली बातों को लेकर गहरी चिंता थी। तीमुथियुस आया और चला गया, और फिर पौलुस कुरिन्थ के लिए रवाना हुआ। कुरिन्थ, निकुपुलिस नगर से अधिक दूर नहीं था, जिसका उल्लेख इस पद में किया गया है।

हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि पौलुस वास्तव में निकुपुलिस पहुँचा या नहीं। कुछ विद्वानों का मानना है कि उसे कुरिन्थ में ही गिरफ्तार कर लिया गया था। (वहाँ उसके बहुत से यहूदी शत्रु थे, जो उसे रोमियों के हाथों सौंपने में प्रसन्न होते।) यह भी संभव है कि पौलुस निकुपुलिस पहुँचा हो, जहाँ उसने शीतकाल बिताने की योजना बनाई थी। निकुपुलिस लेपिरुस में अपोलोनिया के निकट स्थित था, जो ब्रुन्दिसियम के सामने वाला एक बन्दरगाह था। निकुपुलिस, जो रोम जाने के मार्ग पर स्थित था, दलमतिया में सेवकाई के लिए बहुत उपयुक्त स्थान था—एक ऐसा क्षेत्र जिसमें पौलुस की विशेष रुचि थी। निकुपुलिस नाम का अर्थ है “विजय का नगर।” इसे कैसर ऑगस्टस ने एक्वियम में अन्तोनी और क्लियोपात्रा पर अपनी नौसैनिक विजय की स्मृति में बनवाया था।

जब पौलुस मिलेतुस में था और तीतुस को अपने अंतिम निर्देश लिख रहा था, तब वह पहले ही यह निर्णय कर चुका था कि क्रेते का कार्य तुखिकुस या अरतिमास को सौंप देगा। पौलुस ने तीतुस के लिए पास के प्रान्त दलमतिया में एक नया कार्य निर्धारित किया था (2 तीमुथियुस 4:10)। अरतिमास का नाम यहाँ एक बार संक्षेप में प्रकट होता है और फिर इतिहास के अंधकार में खो जाता है। फिर भी, हम अनुमान लगा सकते हैं कि पौलुस ने अरतिमास को क्रेते भेजा, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि उसने तुखिकुस को किसी और कार्य के लिए भेजा—इफिसुस में तीमुथियुस की जगह लेने के लिए (2 तीमुथियुस 4:12)। इस प्रकार, यद्यपि परिस्थितियाँ कठिन होती जा रही थीं और अंधकार घिरता जा रहा था, फिर भी पौलुस लगातार सेवाकार्य बाँट रहा था और अपनी योजना बना रहा था। उसने खतरे के संकेतों को अनदेखा किया और अपने मिशन को रोकने के विचार को अस्वीकार कर दिया। वह अपने संकल्प पर अटल बना रहा और आगे बढ़ता रहा, जब तक कि परमेश्वर ने अंततः उसे अपने पास नहीं बुला लिया।

जहाँ तक तीतुस का संबंध है, उसे क्रेते को तब छोड़ना था जब उसका स्थान लेने वाला व्यक्ति आ जाए। तब तक वह प्रेरिताई पत्र लगभग वह सब कुछ पूरा कर चुका होगा, जो किया जा सकता था। अरतिमास जैसा कोई व्यक्ति कार्यभार संभाल सकता था। तीतुस को पौलुस के पास जाना था।

तीतुस ने वास्तव में क्रेते को छोड़ दिया, परन्तु जब वह निकुपुलिस की ओर जा रहा था, तब तक पौलुस को गिरफ्तार कर लिया गया। पौलुस की यात्रा के दिन अब समाप्त हो चुके थे। वास्तव में, उसके पृथ्वी पर रहने के दिन गिने-चुने रह गए थे।

2. उसकी सेवकाई के संबंध में (3:13-14)

क. व्यावहारिक पहलू (3:13)

मिलेतुस से लिखे गए अपने पत्रों में पौलुस ने तीतुस को यह भी निर्देश दिया कि “जेनास व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुँचा दे, और देख कि उन्हें किसी वस्तु की घटी न होने पाए।” पौलुस का पुराना मित्र अपुल्लोस अब भी भूमध्यसागर के क्षेत्रों में यात्रा कर रहा था, और अपने प्रभाव तथा बोलने की अच्छी शैली के द्वारा मसीह के कार्य को आगे बढ़ा रहा था। पौलुस की तरह वह भी रोमी विरोध से विस्मित तो था, परन्तु हतोत्साहित नहीं हुआ था। स्पष्ट है कि क्रेते अपुल्लोस की यात्रा का एक पड़ाव था।

जेनास, अरतिमास की तरह, पवित्र शास्त्र में केवल एक बार ही उल्लिखित होता है। उसके बारे में हम केवल इतना जानते हैं कि वह एक व्यवस्थापक था। हम यह नहीं जानते कि वह यहूदी था या अन्यजाति, एक रोमी पक्ष का वकील था या यहूदी शास्त्री। परन्तु वह क्रेते द्वीप पर था, और स्वर्ण-वाणी बोलने वाले अपुल्लोस के साथ संगति में रहकर स्पष्ट रूप से सुसमाचार के प्रचार में काफी सक्रिय था।

प्रारम्भिक कलीसिया में यह एक सामान्य रीति थी कि विश्वासी लोग अतिथियों और यात्रा करने वाले प्रचारकों की पूरे मन से सहायता करते थे। मुख्य मार्गों पर सरायें होती थीं, और यात्रियों को ठहरने के स्थान के बारे में सुझाव, स्थानीय परिस्थितियों की जानकारी, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के उत्तम मार्ग के बारे में सलाह, और उन मसीहियों के नाम और पते भी बताते थे, जिनसे रास्ते में संपर्क किया जा सकता था। विश्वासी लोग कभी-कभी यात्रियों के साथ कुछ दूरी तक चले भी जाते थे और जितना हो सके, उन्हें धन, आवश्यक सामग्री और परिचय-पत्र भी देते थे। इसी अभ्यास के अनुसार, तीतुस को यह सुनिश्चित करना था कि जेनास और अपुल्लोस की यात्रा के लिए किसी भी बात की कमी न रहे।

ख. प्रचार पहलू (3:14)

जेनास और अपुल्लोस की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए, तीतुस क्रेते वासियों के लिए एक उदाहरण बनता। उसे अपनी उदारता और अतिथि-सत्कार को छिपाकर नहीं रखना था। उसे एक बार फिर स्थानीय कलीसिया में प्रचार करना था और समझाना था कि मसीह की देह के सदस्य एक-दूसरे की सेवा करें, जैसे उसने जेनास और अपुल्लोस की सेवा की थी। यह उसका अंतिम संदेश होता, इससे पहले कि वह अपनी एक लंबी यात्रा पर निकलता—एक ऐसी यात्रा जिसमें उसे भी दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ने वाली थी। रास्ते में मसीही संपर्कों की आवश्यकता बढ़ती जा रही थी, क्योंकि राजनीतिक परिस्थितियाँ ऐसी होती जा रही थीं कि एक विश्वासी और सक्रिय मसीही कार्यकर्ता के रूप में पहचाना जाना दिन-प्रतिदिन अधिक खतरनाक होता जा रहा था।

निश्चित रूप से, पौलुस चाहता था कि “वे (क्रेतेवासी) निष्फल न रहें।” वह इस बात के प्रति उत्सुक था कि सभी विश्वासी फलवन्त बनें (रोमियों 1:13)।

ख. तीतुस के लिए अभिवादन (3:15क-ख)

1. व्यक्तिगत अभिवादन (3:15क)

“मेरे सब साथियों का तुझे नमस्कार,” पौलुस ने तीतुस को लिखा। तीतुस हमारे लिए तीमुथियुस जितना प्रसिद्ध नहीं है, परन्तु बहुत सम्भव है कि वह पश्चिमी एशिया माइनर, मकिदुनिया और यूनान की कलीसियाओं में अच्छे से पहचाना जाता था। वह पौलुस के उज्ज्वल युवा सेवकों में से एक और उसके विश्वसनीय दूतों में गिना जाता था।

जब पौलुस ने ये अभिवादन भेजे, उस समय उसके साथ कौन-कौन था, यह हम नहीं जानते। यह समाचार कि प्रेरित उस क्षेत्र में था—मिलेतुस इफिसुस से अधिक दूर नहीं था—तेजी से और व्यापक रूप से फैल गया होगा, और निस्संदेह लोग लगातार उससे मिलने आते-जाते रहे होंगे। और पौलुस के आसपास हमेशा युवा प्रशिक्षुओं का एक बड़ा समूह रहता था।

मुख्य भूमि की कलीसियाओं से आए अभिवादन तीतुस के हृदय को उत्साहित करते होंगे। ऐसे अभिवादन मसीह की देह की महानता और एकता को एक बार फिर स्मरण दिलाते थे। उन दिनों मसीहियत और कलीसियाओं के बीच संबंध बहुत ही व्यक्तिगत और घनिष्ठ हुआ करते थे।

2. पास्टरीय अभिवादन (3:15ख)

पौलुस ने अपने पास्टरीय अभिवादन भी जोड़े: “जो विश्वास के कारण हम से प्रीति रखते हैं, उनको नमस्कार।” क्रेते में अपने अल्प समय के दौरान, पौलुस ने वहाँ के लोगों के साथ एक गर्मजोशी भरे और व्यक्तिगत संबंध बनाए थे। निस्संदेह, वह उनकी कलीसियाओं में गया था, उनके घरों में रहा था, उनके कार्यस्थलों में समय बिताया था, उनके खेतों पर गया था और उनके साथ मछली पकड़ने भी गया था। उनमें से कुछ को वह मसीह के पास लाया था। पौलुस ने उनके लिए पवित्रशास्त्र खोला और उन्हें परमेश्वर के वचन से अद्भुत सत्य सिखाए। उसने अपने अभिवादन केवल उन्हें भेजे जो उससे प्रेम रखते थे; जो उससे प्रेम नहीं रखते थे, उन्हें उसने अनदेखा किया। अपने अभिवादन के साथ, उसने उन लोगों की ओर से भी अभिवादन भेजा जो “विश्वास” में थे। विश्वास ही उन सबको एक बनाए रखने वाला माध्यम था, जो प्रभु से प्रेम रखते थे।

ग. तीतुस के लिए अनुग्रह (3:15ग)

पौलुस ने इस पत्री का समापन इन शब्दों के साथ किया: “तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।” वास्तव में कितनी अधिक अनुग्रह की आवश्यकता थी—उद्धार और पवित्रीकरण के लिए अनुग्रह; शैतान के झूठ, शरीर की अभिलाषाओं और संसार के आकर्षण पर विजय पाने के लिए अनुग्रह; स्वभाव की कमियों, प्रकृति की दुर्बलताओं और राष्ट्रीय विशेषताओं को बदलने के लिए अनुग्रह; बाहर से आने वाले विरोध और भीतर से होने वाले भ्रष्ट प्रभावों का सामना करने के लिए अनुग्रह; संस्कृति, चरित्र और मतभेदों को पार करने के लिए अनुग्रह; प्रेरिताई अधिकार, परमेश्वर के वचन और निवास करने वाले पवित्र आत्मा के अधीन रहने के लिए अनुग्रह; मसीह के समान बनने, निस्वार्थ बनने और अधिक प्रेम करने के लिए अनुग्रह; उन्नति को संभालने और विपत्ति का सामना करने के लिए अनुग्रह; एक अन्यजातीय संसार में बढ़ती शत्रुता का सामना करने के लिए अनुग्रह; जीने के लिए और मरने के लिए अनुग्रह!

“तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन!”

तीमुथियुस के नाम दूसरी पत्री का परिचय

पौलुस पहले ही नौ कलीसियाई पत्रियाँ, एक सामान्य पत्री (इब्रानियों) और तीन व्यक्तिगत पत्रियाँ लिख चुका था। अब वह अपनी अंतिम पत्री लिख रहा था। हम कारागृह में एक ऐसे वृद्ध व्यक्ति को देखते हैं, जो अपने प्रिय सहयोगी, तीमुथियुस को एक स्नेहपूर्ण, विश्वास से भरी और साहसिक विदाई पत्र लिख रहा है। पत्री के अंत में अंतिम “आमीन” कहने के बाद, प्रेरित अपनी कलम हमेशा के लिए रख देने वाला था।“

यह पत्री अब 2 तीमुथियुस के नाम से जानी जाती है। इसके 83 पद हम सबके लिए पौलुस के अंतिम शब्द हैं। अब हम जब तक महिमा में न पहुँच जाते, तब तक उससे फिर नहीं सुनेंगे। इस बीच, हम पौलुस की शिक्षाओं पर मनन कर सकते हैं—जो उसकी पत्रियों में सुरक्षित हैं—मसीह के क्रूस, मसीह की कलीसिया, और मसीह के पुनः आगमन के विषय में। उसकी शिक्षा कितनी गहरी समझ वाली है! कितनी भविष्यद्वाणीय! कितनी व्यवहारिक! और कितनी व्यक्तिगत! आइए, अब हम पौलुस के इन प्रसिद्ध अंतिम शब्दों से जो वह हमसे कहना चाहता है, उसका पूरा लाभ उठाएँ।

जब पौलुस ने 2 तीमुथियुस लिखा, तब वह हल्की नज़रबंदी में नहीं था। अब वह रोम में एक दोषियों के लिए बने कालकोठरी में था— जो भूमि के अन्दर एक भयानक गड्ढा होता था, जहाँ बिस्तर के लिए कुछ बासी तिनके और सोने के लिए एक कठोर चबूतरा हुआ करता था। वह स्थान सीलन से भरा, अंधकारमय और चूहों से भरा हुआ होता था। पौलुस वहाँ पर बिल्कुल अकेला और ठंड से पीड़ित था। उस पर मृत्यु-दण्ड की सजा सुनाई जा चुकी थी। वह जानता था कि वह शीघ्र ही मरने वाला है, परन्तु यह नहीं जानता था कि उसकी रोमी नागरिकता उसे मृत्युदण्ड से बचा पाएगी या नहीं। पौलुस ने नीरो का चेहरा देखा था जो पूरी तरह से घृणित, उपहासपूर्ण, दुर्बल, और पतन तथा विनाश के सभी चिन्हों से भरा हुआ था। अब वह यीशु का चेहरा देखने की प्रतीक्षा कर रहा था—जो हर तरह से बयान से बाहर सुंदर है।

पौलुस के अंतिम शब्द थोड़े से थे, परन्तु अत्यन्त गंभीर और महत्वपूर्ण थे। जल्लाद की कुल्हाड़ी की छाया इस पत्री के प्रत्येक पृष्ठ पर दिखाई देती है। यह अशुभ छाया इस पत्री को रंगत करती है और इसे अत्यन्त रोचक बना देती है।

जल्लाद! इससे मुझे अपने स्कूल के अवकाश के समय खेले जाने वाले एक खेल की याद आती है। उस खेल की अपनी ही एक भयानकता और लय थी। वह एक नर्सरी कविता थी, परन्तु फिर भी उसमें डर समाया हुआ था। अधिकांश पुरानी नर्सरी कविता कुछ हद तक क्रूर होते ही हैं। ज़रा सोचिए—हंप्टी डंप्टी का चकनाचूर हो जाना, जैक और जिल का पहाड़ी से गिर पड़ना, और तीन अंधे चूहों का किसान की पत्नी और उसके चाकू से भागना। या फिर “सिंग ए सॉन्ग ऑफ़ सिक्सपेंस” को याद कीजिए, जिसमें बगीचे में काम करने वाली बेचारी दासी उस काले पक्षी से डरकर भाग रही है, जो गुम्मद से निकलकर उसकी नाक नोचने की कोशिश कर रहा था।

जिस खेल को हम खेलते थे, उसमें एक लड़का और एक लड़की आमने-सामने खड़े होते थे और उनके बीच थोड़ा सा स्थान होता था। वे एक-दूसरे के हाथ पकड़कर उन्हें ऊपर-नीचे, मानो काटने की क्रिया के रूप में हिलाते थे। बाकी बच्चे पंक्ति में खड़े हो जाते थे और जैसे ही नर्सरी कविता गाया जाता, वे “कुल्हाड़ी जैसे हाथों” के बीच से गुजरते थे। जब प्रत्येक बच्चा उस स्थान में प्रवेश करता, तो “कुल्हाड़ी जैसे हाथ” नीचे

किए जाते और फिर उसे निकलने देने के लिए ऊपर उठा दिए जाते। साथ में जो गीत गाया जाता था, वह लंदन की घंटियों के बारे में था—ओल्ड बेली की घंटियाँ, बो की बड़ी घंटी, स्टेपनी और शोरडिच की घंटियाँ। हालाँकि, जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ता गया, उस गीत में एक नया स्वर शामिल होने लगा:

एक बड़ी मोमबत्ती आ रही है

तुम्हारे बिस्तर तक पहुँचाने को रोशनी देने के लिए;

एक बड़ी तलवार आ रही है...

बच्चों को पता था कि आगे क्या होने वाला है। वे जल्दी-जल्दी उस जगह से निकल जाते थे, क्योंकि वे पकड़े जाना नहीं चाहते थे। जैसे-जैसे संकट का समय निकट आता गया, कई छोटे-छोटे पैरों की दौड़-भाग तेज हो जाती थी, और गीत में और भी शब्द जोड़ दिए जाते थे:

यहाँ एक मोमबत्ती है

तुम्हारे बिस्तर तक पहुँचाने को रोशनी देने के लिए;

और एक तलवार आ रही है

तुम्हारा सिर काटने के लिए।

"कुल्हाड़ी जैसे हाथ" नीचे गिरते रहे, हर बच्चे को पल भर के लिए फँसाते रहे, और फिर ऊपर उठ गए, जिससे एक और बच निकला। लेकिन फिर आखिरी वार हुआ:

यहाँ एक बड़ी तलवार आ रही है

काटने! काटने! काटने! काटने के लिए!

तुम्हारा सिर काट देने के लिए!

जब वे शब्द गाए जाते थे, तब "कुल्हाड़ी जैसे हाथ" नीचे आते और फिर ऊपर नहीं उठते थे। जो बच्चा पकड़ा जाता था, वह उस खेल से बाहर हो जाता था।

अब कल्पना कीजिए कि पौलुस अपनी उस कालकोठरी में बैठा है और शैतान उसे सताने की कोशिश कर रहा है। शैतान उसके कानों में फुसफुसाता है, "पौलुस, एक बड़ी तलवार आ रही है— काट! काट! काटने के लिए! तुम्हारा सिर काटने के लिए!"

यदि शैतान उसे डराना चाहता था, तो उसने गलत व्यक्ति को चुना था।

शैतान कभी भी पौलुस को डरा नहीं सका। बहुत पहले ही पौलुस ने अपने आप को "वध होने वाली भेड़" (रोमियों 8:36) मान लिया था। वर्षों से वह पुनरुत्थान के जीवन में चल रहा था (रोमियों 6:4)। न तो नीरो, न मृत्यु, और न ही स्वयं शैतान पौलुस को डरा पाए थे। उस कारागृह में जल्लाद की कुल्हाड़ी की छाया पौलुस पर अवश्य पड़ी, परन्तु उसने उसकी रीढ़ में सिहरन पैदा नहीं की। इसके विपरीत, इसने उसे याद दिलाया कि उसके पास कहने के लिए कुछ अंतिम शब्द शेष हैं जो वह तीमुथियुस को लिखेगा।

पौलुस ने अपनी कलम को स्याही में डुबोई। उसे क्या लिखना चाहिए? (यदि हम उसकी जगह होते, तो क्या लिखते?) उसने निश्चय किया कि वह तीमुथियुस के संकल्प को दृढ़ करने का प्रयास करेगा।

2 तीमुथियुस की पूरी रूपरेखा

भाग 1: परिचय (2 तीमु 1:1-2)

1. पौलुस और उसकी स्थिति (2 तीमु 1:1)
 1. उसकी स्थिति की घोषणा (2 तीमु 1:1क)
 2. उसकी स्थिति का वर्णन (2 तीमु 1:1ख)
2. पौलुस और उसका पुत्र (2 तीमु 1:2)
 1. तीमुथियुस अत्यन्त प्रिय था (2 तीमु 1:2क)
 2. तीमुथियुस दैवीय रूप से आशीषित था (2 तीमु 1:2ख)

भाग 2: वर्तमान परीक्षाएँ (2 तीमु 1:3-2:26)

1. तीमुथियुस की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ: अतीत (2 तीमु 1:3-18)
 1. उसके विश्वास को विकसित करना (2 तीमु 1:3-6)
 1. तीमुथियुस के पारिवारिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए (2 तीमु 1:3-5)
 1. पौलुस ने क्या प्रकट किया (2 तीमु. 1:3)
 1. पौलुस का निजी जीवन (1:3क-ग)
 1. उसकी सहभागिता (2 तीमु. 1:3क)
 2. उसका अभिषेक (2 तीमु. 1:3ख)
 3. उसका विवेक (2 तीमु. 1:3ग)
 2. पौलुस का प्रार्थना जीवन (1:3घ-च)
 1. उसकी प्रार्थनाएँ निरंतर थीं (2 तीमु. 1:3घ)
 2. उसकी प्रार्थनाएँ व्यक्तिगत थीं (2 तीमु. 1:3ङ)

3. उसकी प्रार्थनाएँ नियमित थीं (2 तीमु. 1:3च)
2. पौलुस ने क्या इच्छा की (2 तीमु. 1:4)
 1. उसकी इच्छा की महानता (2 तीमु. 1:4क)
 2. उसकी इच्छा का लक्ष्य (2 तीमु. 1:4ख)
3. पौलुस ने क्या वर्णन किया (2 तीमु. 1:5)
 1. तीमुथियुस के विश्वास की वास्तविकता (2 तीमु. 1:5क)
 2. तीमुथियुस के विश्वास की जड़ें (2 तीमु. 1:5ख)
 3. तीमुथियुस के विश्वास का सुदृढ़ीकरण (2 तीमु. 1:5ग)
2. तीमुथियुस के औपचारिक बुलाहट के संदर्भ में (2 तीमु. 1:6)
 1. कुछ स्मरण करने योग्य (2 तीमु. 1:6क)
 2. कुछ पुनः प्रज्वलित करने योग्य (1:6ख-ग)
 1. प्रतिरोपित वरदान (2 तीमु. 1:6ख)
 2. दिया गया वरदान (2 तीमु. 1:6ग)
2. उसके भय को दूर करना (2 तीमु. 1:7-18)
 1. प्रोत्साहन (2 तीमु. 1:7-11)
 1. परमेश्वर के आत्मा को स्मरण करो (2 तीमु. 1:7)
 1. दास बनाने वाली आत्मा (2 तीमु. 1:7क)
 2. मुक्ति देने वाला आत्मा (1:7ख-घ)
 1. गतिशील सामर्थ्य द्वारा नियंत्रित इच्छाशक्ति (2 तीमु. 1:7ख)
 2. दैवीय प्रेम द्वारा नियंत्रित हृदय (2 तीमु. 1:7ग)
 3. अनुशासित विचारों द्वारा नियंत्रित मन (2 तीमु. 1:7घ)
 2. परमेश्वर के पुत्र को स्मरण करो (2 तीमु. 1:8-10)
 1. चुनाव (2 तीमु. 1:8)
 1. लज्जित न हो (1:8क-ख)

1. सुसमाचार की गवाही से, जो अब संकट में है (2 तीमु. 1:8क)

2. महान शिक्षक से, जो अब कैद में है (2 तीमु. 1:8ख)

2. डर मत (1:8ग-घ)

1. प्रेरिताई याचना (2 तीमु. 1:8ग)

2. उपलब्ध सामर्थ्य (2 तीमु. 1:8घ)

2. चुनौती (2 तीमु. 1:9-10)

1. हमारा मन-परिवर्तन (2 तीमु. 1:9क)

2. हमारी बुलाहट (2 तीमु. 1:9ख-10)

1. यह एक पवित्र बुलाहट है (2 तीमु. 1:9ख)

2. यह एक उच्च बुलाहट है (2 तीमु. 1:9ग-10)

1. विरोधाभास (2 तीमु. 1:9ग)

2. अवधारणा (2 तीमु. 1:9घ-10)

1. महान संकल्प (1:9घ-च)

1. क्या हुआ था
(1:9घ-ड)

1. (2 तीमु.
1) परमेश्वर
का सर्वोच्च
शासन (2
तीमु.1:9घ)

2. (2 तीमु.
2) परमेश्वर
का
अतुलनीय
शासन (2
तीमु.1:9ड)

2. यह कब घटित
हुआ (2 तीमु. 1:9च)

2. महान प्रकाशन (2 तीमु.1:10)

1. (क) इसका केंद्रबिंदु (2 तीमु.1:10क)

2. (ख) इसकी विशेषताएँ (1:10ख-ड) (2 तीमु. 1)

1. मसीह द्वारा शत्रु का सम्पूर्ण नाश कर दिया गया (2 तीमु. 1:10ख) (2 तीमु. 2)

2. मसीह के द्वारा भविष्य पूर्ण रूप से प्रज्वलित है (1:10ग-ड)

1. (i) मसीह में नया जीवन (2 तीमु. 1:10ग)

2. (ii) मसीह के समान नया स्वरूप (1:10 घ-ड)

3. परमेश्वर के सेवक को याद रखें (2 तीमु 1:11)

2. उदाहरण (2 तीमु 1:12-18)

1. उल्लेखनीय उदाहरण (2 तीमु. 1:12-14)

1. पौलुस का सताव (1:12क-ख)

1. वह इससे मुक्त नहीं था (2 तीमु. 1:12क)
2. वह इससे भयभीत नहीं था (2 तीमु. 1:12ख)

2. पौलुस का निश्चय (1:12ग-घ)

1. प्रभु की वास्तविकता के बारे में उसका आश्वासन (2 तीमु. 1:12ग)
2. प्रभु की विश्वसनीयता के बारे में उसका आश्वासन (2 तीमु. 1:12घ)

3. पौलुस की दृढ़ता (2 तीमु. 1:13-14)

1. तीमुथियुस उस सुसमाचार के प्रति ज़िम्मेदार था जो उसे सौंपा गया था (2 तीमु. 1:13)

1. इसका पौलुस-आधारित स्रोत (2 तीमु. 1:13क)

2. इसका मूल स्रोत (2 तीमु. 1:13ख)

2. तीमुथियुस उस वरदान के लिए ज़िम्मेदार था जो उसे सौंपा गया था (2 तीमु. 1:14)

1. यह दिया गया था (2 तीमु. 1:14क)

2. इसकी रक्षा की जानी थी (2 तीमु. 1:14ख)

2. नकारात्मक उदाहरण (2 तीमु. 1:15) पौलुस को इन्होंने त्याग दिया था :

1. एक प्रमुख प्रांत ने (2 तीमु. 1:15क)

2. दो व्यक्तियों ने (2 तीमु. 1:15ख)

3. उत्तम उदाहरण (2 तीमु. 1:16-18)

1. उनेसिफुरुस एक प्रिय व्यक्ति था (2 तीमु. 1:16)

1. पौलुस ने उसके घराने को याद किया (1:16क)
2. पौलुस ने उसकी सहायता को याद किया (1:16ख-ग)

1. उसका भौतिक योगदान (2 तीमु. 1:16ख)
2. उसका नैतिक साहस (2 तीमु. 1:16ग)
2. उनेसिफुरुस एक साहसी व्यक्ति था (2 तीमु. 1:17)
 1. उसका परिश्रम उल्लेखनीय था (2 तीमु. 1:17क)
 2. उसे उसके परिश्रम का फल मिला (2 तीमु. 1:17ख)
3. उनेसिफुरुस एक आशीषित व्यक्ति था (2 तीमु. 1:18)
 1. पौलुस ने ही उसके लिए क्या प्रार्थना की (1:18क)
 2. पौलुस ने उसके बारे में क्या याद रखा (1:18ख)
2. तीमुथियुस की पास्टरीय संबंधी ज़िम्मेदारियाँ: वर्तमान (2:1-26)
 1. तीमुथियुस को एक भण्डारी होना था (2 तीमु. 2:1-2)
 1. उसे क्या निश्चय करना चाहिए (2 तीमु. 2:1)
 2. उसे क्या याद रखना चाहिए (2 तीमु. 2:2क)
 3. उसे क्या उत्पन्न करना चाहिए (2:2ख-ग)
 1. विस्तार से (2 तीमु. 2:2ख)
 2. उदाहरण से (2 तीमु. 2:2ग)
 2. तीमुथियुस को एक सैनिक बनना था (2 तीमु. 2:3-4)
 1. धीरज के साथ (2 तीमु. 2:3)
 2. बिना उलझन के (2 तीमु. 2:4)
 1. उसका कर्तव्य (2 तीमु. 2:4क)
 2. उसका अलगाव (2 तीमु. 2:4ख)
 3. उसकी इच्छा (2 तीमु. 2:4ग)
 3. तीमुथियुस को सफल होना था (2 तीमु. 2:5-7)
 1. सफलता की परीक्षा—योद्धा (2 तीमु. 2:5)
 1. प्रतियोगिता (2 तीमु. 2:5क)
 2. मुकुट (2 तीमु. 2:5ख)
 3. कसौटी (2 तीमु. 2:5ग)
 2. सफलता का स्वाद—किसान (2 तीमु. 2:6-7)

1. ग्रहण किया हुआ सत्य (2 तीमु. 2:6)
 1. किसान का परिश्रम (2 तीमु. 2:6क)
 2. किसान की विजय (2 तीमु. 2:6ख)
2. सत्य पर विचार (2 तीमु. 2:7)
 1. पौलुस की विनती (2 तीमु. 2:7क)
 2. पौलुस की प्रार्थना (2 तीमु. 2:7ख)
4. तीमुथियुस को कष्ट सहना था (2 तीमु. 2:8-13)
 1. मसीह की विजय (2 तीमु. 2:8)
 1. उसकी राजकीय महिमा (2 तीमु. 2:8क)
 2. उसका पुनरुत्थान (2 तीमु. 2:8ख)
 2. मसीहियों का क्लेश (2 तीमु. 2:9-13)
 1. पौलुस के भयानक कष्ट (2 तीमु. 2:9-10)
 1. उसने उनका वर्णन कैसे किया (2 तीमु. 2:9)
 1. डंक (2 तीमु. 2:9क)
 2. कलंक (2 तीमु. 2:9ख)
 3. गीत (2 तीमु. 2:9ग)
 2. उसने उन्हें कैसे खारिज किया (2 तीमु. 2:10)
 1. उसने क्या सहा (2 तीमु. 2:10क)
 2. उसने क्यों सहा (2:10ख-ग)
 1. परमेश्वर के लोगों की रक्षा के लिए (2:10ख)
 1. परमेश्वर के लोगों को दिखाने के लिए (2:10ग)
 2. पौलुस के विश्वासयोग्य कथन (2 तीमु. 2:11-13)
 1. हमारे निर्णय (2 तीमु 2:11-12)
 1. अधर में मृत्यु (2 तीमु 2:11)
 2. अधर में धीरज (2 तीमु 2:12क)
 3. अधर में इनकार (2 तीमु 2:12ख)

2. हमारे संदेह (2 तीमु 2:13)
5. तीमुथियुस को एक विद्यार्थी बनना था (2 तीमु 2:14-19)
 1. ढाँचा (2 तीमु 2:14)
 1. किसे जगाया जाना चाहिए (2 तीमु. 2:14क)
 2. किन बातों से बचना चाहिए (2 तीमु. 2:14ख)
 2. केंद्रबिंदु (2 तीमु. 2:15)
 1. अध्ययन में परिश्रम (2 तीमु. 2:15क)
 2. विद्यार्थी द्वारा अनुशासन (2 तीमु. 2:15ख)
 3. पवित्रशास्त्र को ठीक रीति से विभाजित करना (2 तीमु. 2:15ग)
 3. झूठ (2 तीमु. 2:16-18)
 1. तस्वीर (2 तीमु. 2:16-17क)
 1. त्रुटि का आगमन (2 तीमु. 2:16क)
 2. त्रुटि का बढ़ना (2 तीमु. 2:16ख-17क)
 1. यह गतिशील था (2 तीमु. 2:16ख)
 2. यह घातक था (2 तीमु. 2:17क)
 2. झूठे प्रचारक (2 तीमु. 2:17ख-18)
 1. प्रमुख अगुवे (2 तीमु. 2:17ख-18क)
 2. प्रमुख झूठ (2 तीमु. 2:18ख)
 4. नींव (2 तीमु. 2:19)
 1. नींव सुरक्षित थी (2 तीमु. 2:19क)
 2. नींव पवित्रशास्त्रीय था (2:19ख-ग)
 1. प्रकट सत्य (2 तीमु. 2:19ख)
 2. प्रकट परीक्षा (2 तीमु. 2:19ग)
6. तीमुथियुस को एक सेवक बनना था (2 तीमु. 2:20-26)
 1. सेवा का मानदंड (2 तीमु. 2:20)
 1. बर्तन और उनका मूल्य (2:20क-ख)
 1. कुछ महंगे होते हैं (2 तीमु. 2:20क)

2. कुछ सामान्य होते हैं (2 तीमु. 2:20ख)
2. पात्र और उनके कार्य (2:20ग-घ)
 1. कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं (2 तीमु. 2:20ग)
 2. कुछ अपमानजनक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं (2 तीमु. 2:20घ)
2. सेवा की शर्त (2 तीमु. 2:21-23)
 1. अनिवार्यता (2 तीमु. 2:21)
 1. परमेश्वर एक शुद्ध पात्र चाहता है (2 तीमु. 2:21क)
 2. परमेश्वर एक पवित्र पात्र चाहता है (2 तीमु. 2:21ख)
 3. परमेश्वर एक आज्ञाकारी पात्र चाहता है (2 तीमु. 2:21ग)
 2. एक विधि (2 तीमु. 2:22क)
 3. एक कदम बढ़ाना (2:22ख-ग)
 1. सही मार्ग पर (2 तीमु. 2:22ख)
 2. सही लोगों के साथ (2 तीमु. 2:22ग)
 4. एक आदेश (2 तीमु. 2:23)
 1. एक विस्मय (2 तीमु. 2:23क)
 2. एक स्पष्टीकरण (2 तीमु. 2:23ख)
3. सेवा का चरित्र (2 तीमु. 2:24-26)
 1. विरोध से निपटना (2 तीमु. 2:24-25ख)
 1. मसीही सेवा से किन बातों को बाहर रखा जाना चाहिए (2 तीमु. 2:24क)
 2. मसीही सेवा में क्या प्रदर्शित किया जाना चाहिए (2 तीमु. 2:24ख-25ख)
 1. सही मनोभाव (2:24ख-घ)
 1. प्रभु के सेवक को कठोर नहीं होना चाहिए (2 तीमु. 2:24ख)
 2. प्रभु के सेवक को संकोच नहीं करना चाहिए (2 तीमु. 2:24ग)

3. प्रभु के सेवक को उतावली नहीं करनी चाहिए (2 तीमु. 2:24घ)

2. सही प्रयास (2:25क-ख)

1. प्रभु के सेवक को नम्रता से बोलना चाहिए (2 तीमु. 2:25क)

2. प्रभु के सेवक को अर्थपूर्ण ढंग से बोलना चाहिए (2 तीमु. 2:25ख)

2. अवसर का सही उपयोग करना (2 तीमु. 2:25ग-26)

1. अविश्वासी के लिए पश्चात्ताप की आवश्यकता (2 तीमु. 2:25ग)

2. अविश्वासी के लिए उद्धार की आवश्यकता (2 तीमु. 2:26)

भाग 3: संभावित परीक्षाएँ (2 तीमु. 3:1-4:18)

1. महा-धर्मत्याग के दिन का आगमन (2 तीमु. 3:1-4:5)

1. कुछ विनाशकारी जड़ों का खुलासा (2 तीमु. 3:1-3क)

1. अंतिम दिनों का संकेत (2 तीमु. 3:1)

2. अंतिम दिनों का सचित्र वर्णन (2 तीमु. 3:2-3क)

1. अंतिम दिनों के बारे में निराशाजनक तथ्य (3:2क-ख)

1. स्वार्थ (2 तीमु. 3:2क)

2. धन का लोभ (2 तीमु. 3:2ख)

2. अंतिम दिनों की भयानक मूर्खताएँ (3:2ग-ड)

1. घमंड से भरे हुए आत्म-केन्द्रित स्वभाव (2 तीमु. 3:2ग)

2. घमंड से भरे हुए मानव-केन्द्रित स्वभाव (2 तीमु. 3:2घ)

3. घमंड से भरे हुए ईश्वर-केन्द्रित स्वभाव (2 तीमु. 3:2ङ)

3. अंतिम दिनों में बिखरते परिवार (2 तीमु. 3:2च)

4. अंतिम दिनों की विशिष्ट विशेषताएँ (3:2छ-ज)

1. कृतघ्न (2 तीमु. 3:2छ)

2. अपवित्र (2 तीमु. 3:2ज)

5. अंतिम दिनों में मृत भावनाएँ (2 तीमु. 3:3क)
2. कुछ घातक फलों का पर्दाफ़ाश (2 तीमु. 3:3ख-4:5)
 1. अंतिम दिनों की नैतिकता (2 तीमु. 3:3ख-4क)
 1. लोगों की धोखेबाज़ी (3:3ख-ग)
 2. लोगों का स्वभाव (3:3घ-ड)
 1. असंयमी (2 तीमु. 3:3घ)
 2. असहनशील (2 तीमु. 3:3ड)
 3. लोगों का तिरस्कार (2 तीमु. 3:3च)
 4. लोगों का कपट (2 तीमु. 3:4क)
 2. अंतिम दिनों की मानसिकता (2 तीमु. 3:4ख-9)
 1. तिरस्कार करने वाले उन्मादी लोग होंगे (3:4ख-ग)
 1. नशेड़ी (2 तीमु. 3:4ख)
 2. घमंडी (2 तीमु. 3:4ग)
 2. भौतिकवादी सोच वाले लोग होंगे (2 तीमु. 3:4घ)
 3. पाखंडी नैतिकतावादी होंगे (2 तीमु. 3:5)
 1. जो प्रकट हुआ है (2 तीमु. 3:5क)
 2. जो ज़रूरी है (2 तीमु. 3:5ख)
 4. लुभानेवाले लुटेरे होंगे (2 तीमु. 3:6)
 1. उनकी खोज (2 तीमु. 3:6क)
 2. उनका शिकार (2 तीमु. 3:6ख)
 5. उस समय वहाँ परिष्कृत मूर्ख होंगे (2 तीमु. 3:7-9)
 1. सत्य के प्रति उनकी निरर्थक खोज (2 तीमु. 3:7)
 2. सत्य के साथ उनका घातक संघर्ष (2 तीमु. 3:8-9)
 1. एक उदाहरण (2 तीमु. 3:8क)
 2. एक स्पष्टीकरण (3:8ख-ग)
 1. तथ्यों के प्रति उनका अंधापन (2 तीमु. 3:8ख)

2. विश्वास के प्रति उनका अंधापन (2 तीमु. 3:8ग)
3. एक पर्दाफाश (2 तीमु. 3:9)
 1. उन्हें उनके मार्ग में रोक दिया जाएगा (2 तीमु. 3:9क)
 2. उनकी शक्ति छीन ली जाएगी (2 तीमु. 3:9ख)
3. अंतिम दिनों की दुर्भावना (2 तीमु. 3:10-13)
 1. पौलुस का संसार (2 तीमु. 3:10-11)
 1. उसकी शिक्षा (2 तीमु. 3:10क)
 2. उसकी गवाही (3:10ख-छ)
 1. पौलुस के जीवन का आदर्श (2 तीमु. 3:10ख)
 2. पौलुस के जीवन का उद्देश्य (2 तीमु. 3:10ग)
 3. पौलुस के जीवन की प्राथमिकताएँ (3:10घ-च)
 1. परमेश्वर की ओर (2 तीमु. 3:10घ)
 2. स्वयं की ओर (2 तीमु. 3:10ङ)
 3. मनुष्य की ओर (2 तीमु. 3:10च)
 4. पौलुस के जीवन का धैर्य (2 तीमु. 3:10छ)
 3. उसके कष्ट (2 तीमु. 3:11क)
 4. उसकी विजय (2 तीमु. 3:11ख)
 2. पौलुस की चेतावनी (2 तीमु. 3:12-13)
 1. संसार की बड़ी घृणा (2 तीमु. 3:12)
 2. संसार का बढ़ता पतन (2 तीमु. 3:13)
4. अंतिम दिनों के लिए संदेश (2 तीमु. 3:14-17)
 1. प्रोत्साहन का एक वचन (2 तीमु. 3:14-15)
 1. संकल्प (2 तीमु. 3:14)
 1. पवित्रशास्त्र में निरन्तरता का आग्रह (2 तीमु. 3:14क)
 2. पवित्रशास्त्र पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया (2 तीमु. 3:14ख)

2. स्मरण (2 तीमु. 3:15)
 1. तीमुथियुस का बचपन (2 तीमु. 3:15क)
 2. तीमुथियुस की बाइबल (2 तीमु. 3:15ख)
2. स्पष्टीकरण का एक वचन (2 तीमु. 3:16-17)
 1. बाइबल और उसकी प्रेरणा (2 तीमु. 3:16क)
 2. बाइबल और उसकी जानकारी (2 तीमु. 3:16ख)
 3. बाइबल और उसकी शिक्षा (2 तीमु. 3:16ग)
 4. बाइबल और उसका उद्देश्य (2 तीमु. 3:17)
5. अंतिम दिनों का मनुष्य (2 तीमु. 4:1-5)
 1. तीमुथियुस को आदेश (2 तीमु. 4:1-4)
 1. गवाह (2 तीमु. 4:1)
 1. जीवित परमेश्वर (2 तीमु. 4:1क)
 2. प्रभु मसीह (2 तीमु. 4:1ख)
 2. कार्य (2 तीमु. 4:2)
 1. प्रचार करना (2 तीमु. 4:2क)
 2. दृढ़ बने रहना (2 तीमु. 4:2ख)
 3. जाँच करना (4:2ग-घ)
 1. उलाहना देकर (2 तीमु. 4:2ग)
 2. डाँटने द्वारा समझाकर (2 तीमु. 4:2घ)
 4. विनती करना (4:2ङ-च)
 1. प्रेमपूर्वक (2 तीमु. 4:2ङ)
 2. निष्ठापूर्वक (2 तीमु. 4:2च)
 3. चेतावनी (2 तीमु. 4:3-4)
 1. निकट आ रहा समय (2 तीमु. 4:3क)
 2. त्यागा हुआ सत्य (2 तीमु. 4:3ख-4)
 1. लोगों की अभिलाषाएँ (2 तीमु. 4:3ख)
 2. वे झूठ जिन पर लोग ध्यान देंगे (2 तीमु. 4:4)

2. तीमथियुस को चुनौती (2 तीमु. 4:5)
 1. सतर्क रहो (2 तीमु. 4:5क)
 2. साहसिक बनो (2 तीमु. 4:5ख)
 3. बहुमुखी बनो (2 तीमु. 4:5ग)
 4. विजयी बनो (2 तीमु. 4:5घ)
2. महान प्रेरित की मृत्यु का निकट आना (2 तीमु. 4:6-18)
 1. पौलुस की आशा (2 तीमु. 4:6-8)
 1. जब मृत्यु उसके सामने थी (2 तीमु. 4:6-7)
 1. अंतिम संकट (2 तीमु. 4:6क)
 2. अंतिम यात्रा (2 तीमु. 4:6ख)
 3. अंतिम न्याय (2 तीमु. 4:7)
 1. अच्छी जीत, पौलुस! (2 तीमु. 4:7क)
 2. अच्छा दौड़ा, पौलुस! (2 तीमु. 4:7ख)
 3. बहुत बढ़िया, पौलुस! (2 तीमु. 4:7ग)
 2. जब मृत्यु उसके पीछे खड़ी थी (2 तीमु. 4:8)
 1. पौलुस के लिए मुकुट का एक दिन (2 तीमु. 4:8क)
 2. सभी के लिए एक महत्वपूर्ण दिन (2 तीमु. 4:8ख)
 2. पौलुस के संघर्ष (2 तीमु. 4:9-15)
 1. उसकी विनती (2 तीमु. 4:9)
 2. उसकी दुर्दशा (2 तीमु. 4:10-15)
 1. उसके मित्र (2 तीमु. 4:10-13)
 1. भगोड़ा—देमास (2 तीमु. 4:10क)
 2. विदा हो चुके लोग—क्रेसकेंस और तीतुस (4:10ख-ग)
 1. पौलुस का नामित मित्र—क्रेसकेंस (2 तीमु. 4:10ख)
 2. पौलुस का प्रसिद्ध मित्र—तीतुस (2 तीमु. 4:10ग)
 3. वैद्य—लूका (2 तीमु. 4:11क)
 4. शिष्य—मरकुस (2 तीमु. 4:11ख)

5. भेजा हुआ—तुखिकुस (2 तीमु. 4:12)
6. भरोसा करने योग्य —करपुस (2 तीमु. 4:13)
 1. पौलुस की धारणा (2 तीमु. 4:13क)
 2. पौलुस का दावा (2 तीमु. 4:13ख)
2. उसका शत्रु—सिकंदर (2 तीमु. 4:14-15)
 1. एक शैतानी व्यक्ति (2 तीमु. 4:14क)
 2. एक बर्बाद व्यक्ति (2 तीमु. 4:14ख)
 3. एक खतरनाक व्यक्ति (2 तीमु. 4:15)
3. पौलुस का शौर्य (2 तीमु. 4:16-18)
 1. पौलुस का अकेलापन (2 तीमु. 4:16)
 1. उसके मित्रों द्वारा उसका त्यागा जाना (2 तीमु. 4:16क)
 2. उसके मित्रों के लिए उसकी ओर से क्षमादान (2 तीमु. 4:16ख)
 2. पौलुस का प्रभु (2 तीमु. 4:17-18)
 1. प्रभु की सजीव उपस्थिति (2 तीमु. 4:17क)
 2. प्रभु की विजयी उपस्थिति (2 तीमु. 4:17ख)
 3. प्रभु की आश्चस्त करने वाली उपस्थिति (2 तीमु. 4:17ग)
 4. प्रभु की नियंत्रणकारी उपस्थिति (2 तीमु. 4:17घ)
 5. प्रभु की निरंतर उपस्थिति (2 तीमु. 4:18)
 1. पौलुस को राजा से बचाने के लिए (2 तीमु. 4:18क)
 2. पौलुस को राज्य के लिए सुरक्षित रखने के लिए (4:18ख-ग)
 1. एक सर्वश्रेष्ठ आशीष (2 तीमु. 4:18ख)
 2. समाप्ति का आशीर्वाद (2 तीमु. 4:18ग)

भाग 4: निष्कर्ष (2 तीमु. 4:19-22)

1. अभिवादन (2 तीमु. 4:19-20)
 1. टिप्पणियाँ (2 तीमु. 4:19)
 1. कुछ स्मरण किए गए सहायक (2 तीमु. 4:19क)

2. कुछ स्मरण किए गए घराने (2 तीमु. 4:19ख)
2. समाचार (2 तीमु. 4:20)
 1. इरास्तुस का निवास (2 तीमु. 4:20क)
 2. त्रुफिमस की बीमारी (2 तीमु. 4:20ख)
2. एक विनती (2 तीमु. 4:21क)
3. एक अतिरिक्त भाग (2 तीमु. 4:21ख-22)
 1. अंतिम अभिवादन (2 तीमु. 4:21ख)
 2. एक उपयुक्त विदाई (2 तीमु. 4:22क)
 3. विदाई का उपहार (2 तीमु. 4:22ख)

भाग 10. प्रस्तावना

तीमुथियुस 1:1-2

क. पौलुस और उसकी स्थिति (1:1)

हम में से बहुतों के कुछ पसंदीदा लेखक होते हैं। हम प्रकाशकों से कहते हैं कि वे हमारा नाम अपने पास दर्ज करके रखें और जैसे ही उनकी नई पुस्तकें प्रकाशित हों, हमें भेज दें। इसी प्रकार, प्रारंभिक कलीसिया के विश्वासियों ने भी निश्चय ही उत्सुकता से पौलुस द्वारा लिखे गए एक और प्रेरित पत्र की प्रतीक्षा की होगी, और वे 2 तीमुथियुस के प्रकाशित होने पर बहुत प्रसन्न हुए होंगे। उन्हें यह एहसास नहीं था कि यह उत्तम रचना उसकी अंतिम पत्र होने जा रही है। वे फिर कभी किसी अधिकृत पत्र पर पौलुस के हस्ताक्षर नहीं देख पाएंगे।

संभवतः लूका ही वह व्यक्ति था जिसने पौलुस को वह कलम दी थी, जिससे उसने इस पत्र पर अपना नाम लिखा। यह भी संभव है कि लूका ही पौलुस का लेखक (सहायक) रहा हो, जिसने उसके द्वारा बोले गए शब्दों को ज्यों का त्यों लिख लिया—वे शब्द जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से कहे गए थे।

1. उसकी स्थिति की घोषणा (1:1क)

पौलुस ने यह घोषित करते हुए आरंभ किया: “पौलुस, मसीह यीशु का प्रेरित।” तीमुथियुस को पौलुस के अपने प्रेरितिक अधिकार की याद दिलाने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु अन्य लोगों को इस पदवी के साथ जुड़ी चेतावनी की आवश्यकता हो सकती थी। यह पत्र इफिसुस की कलीसिया में पढ़ा जाने वाला था, और इसकी प्रतियाँ बिना किसी देरी के स्मरना, पिरगमुन, लौदीकिया, कुलुस्से और उस क्षेत्र की अन्य कलीसियाओं में भेजी जानी थीं।

इन कलीसियाओं के मसीही निश्चय ही नीरो से भयभीत थे। परन्तु पौलुस, यीशु मसीह का प्रेरित होने के नाते, किसी भी कैसर से अधिक सामर्थ्य रखता था। मसीह का “जंजीरों में जकड़े राजदूत” होने के कारण, पौलुस उस अन्यायपूर्ण मृत्यु-दण्ड की प्रतीक्षा शांति से कर रहा था जो उसके विरुद्ध पारित किया गया था। कलीसियाओं और विश्वासियों को, चाहे वे किसी भी समय या स्थान पर रहते हों, यह स्मरण रखना चाहिए कि पौलुस “यीशु मसीह का प्रेरित” था।

पौलुस को यह भी याद रहा होगा कि मसीह ने भी एक अन्यायपूर्ण मृत्युदण्ड सहा था। रोम ने उसके साथ अपनी पूरी कठोरता दिखाई थी। रोमी राज्यपाल पीलातुस यीशु के सामने कांप उठा, फिर भी उसने यहूदियों द्वारा रची गई उस साजिश में उनका साथ दिया। झूठे आरोप, डाह से प्रेरित अभियोग—पीलातुस ने सब कुछ सुना और उसे निर्दोष ठहराया। फिर भी उसने निर्दयतापूर्वक अपने सैनिकों को आदेश दिया कि उसे कोड़े मारें और क्रूस पर चढ़ाएँ। क्रब को बंद किए जाने के बाद उस पर रोम की मुहर लगा दी गई। इस प्रकार, पीलातुस ने उस मामले को अपनी ओर से समाप्त कर दिया। यीशु मर चुका था—और बात समाप्त हो चुकी थी—सिवाय एक बात के: तीन दिन बाद, वह मरे हुए लोगों में से फिर जी उठा!

2. उसकी स्थिति का वर्णन (1:1ख)

पौलुस ने अपने आप को एक प्रेरित के रूप में इस प्रकार वर्णित किया: “उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है।” पौलुस के मृत्यु-दण्ड के आदेश पर नीरो के हस्ताक्षर भले ही रहे हों, क्योंकि वही उसे मृत्यु के लिए भेजने वाला था। नीरो ने सोचा होगा, “अच्छा हुआ, उससे छुटकारा मिला।” परन्तु वह गलत था! उसने वास्तव में उस महान वृद्ध प्रेरित को महिमा में पहुँचा दिया था। जल्लाद की कुल्हाड़ी ने पौलुस को इस संसार से विदा किया और उसे प्रभु की उपस्थिति में पहुँचा दिया। इसके अलावा, पौलुस का नाम सबके मनो के प्रिय स्मृतियों में सदा जीवित रहेगा, जबकि नीरो का नाम बदनामी में जाना जाएगा।

लगभग तीस वर्ष पहले, जी उठा मसीह पौलुस के जीवन में दाखिल होता है, जब दमिश्क के मार्ग पर उन दोनों का आमना-सामना हुआ। वह जीवन—स्वयं परमेश्वर का जीवन—जो पौलुस के प्राण में उड़ेल गया था, अब भी उसके अस्तित्व के हर एक अंग में प्रवाहित हो रहा था। मसीह में नया जीवन! उस नए जीवन ने उसे पूरी तरह बदल दिया था। उसी ने पौलुस को, जो मानो असमय जन्मे हुए व्यक्ति के समान था, एक महान प्रेरित बनने योग्य बनाया। नीरो इस सत्य को बदल नहीं सकता था।

पौलुस “परमेश्वर की इच्छा से” प्रेरित बना था। उसे प्रेरित बनाने वाला न तो पतरस था, न याकूब और न ही यूहन्ना था। न यरूशलेम की कलीसिया, न अन्ताकिया की कलीसिया, न ही प्रिय बरनबास या प्रिय सीलास ने पौलुस को प्रेरित बनाया था। वह तो जी उठे मसीह द्वारा प्रेरित ठहराया गया था! परमेश्वर की इच्छा यह थी कि यह व्यक्ति, जिसने नवजात कलीसिया को इतनी कठोरता से सताया था, एक प्रेरित नियुक्त किया जाए। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “इच्छा” किया गया है, वह दृढ़ निश्चय की बजाय चाह पर अधिक बल देता है।

परमेश्वर की इच्छा सदा अपने उद्देश्य को पूरा करती है! इस प्रकार शाऊल, अब पौलुस बन गया; महान शत्रु, अब एक महान राजदूत बन गया।

ख. पौलुस और उसका पुत्र (1:2)

1. तीमुथियुस अत्यन्त प्रिय था (1:2क)

पौलुस ने यह पत्री “प्रिय पुत्र तीमुथियुस” को संबोधित करते हुए लिखा। जहाँ तक हम जानते हैं, पौलुस का अपना कोई पुत्र नहीं था। उसने तीमुथियुस को विश्वास में अपना पुत्र मान लिया था।

तीमुथियुस की माता यूनीके यहूदी थी, और उसका पिता यूनानी था। यूनीके और तीमुथियुस की नानी लोइस—दोनों ही भक्त स्त्रियाँ थीं—जिन्होंने परमेश्वर के वचन में उसके प्रारंभिक शिक्षा का मार्गदर्शन किया।

पौलुस और तीमुथियुस पहली बार लुस्त्रा में मिले (प्रेरितों के काम 16:1)। जब प्रेरित ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान गलातिया का पुनः दौरा किया, तब तीमुथियुस उसके समूह में शामिल हो गया। उस युवक की उस क्षेत्र की कलीसिया के प्राचीनों द्वारा अच्छी सिफारिश की गई थी (प्रेरितों के काम 16:2)। वह पौलुस के साथ त्रोआस, फिलिप्पी, थिस्सलुनीके और बिरीया तक गया। जब पौलुस को बिरीया छोड़ने के लिए विवश किया गया, तब तीमुथियुस वहीं रुका रहा, जब तक कि प्रेरित ने उसे एथेंस में बुला न लिया (प्रेरितों के काम 17:14-15)। पौलुस ने फिर उसे थिस्सलुनीके भेजा ताकि वह वहाँ की नई कलीसिया की उन्नति में सहायता करे (1 थिस्सलुनीकियों 3:1-2)। इसके बाद तीमुथियुस फिर से पौलुस के साथ कुरिन्थ में मिला (प्रेरितों के काम 18:1, 5; 1 थिस्सलुनीकियों 3:6)।

इसके बाद हम तीमुथियुस को इफिसुस में पाते हैं। जब कुरिन्थ की कलीसिया में समस्या उत्पन्न हुई और एक प्रेरितिक दूत की आवश्यकता महसूस हुई, तब पौलुस ने उसे इफिसुस से कुरिन्थ भेजा। बाद में तीमुथियुस मकिदुनिया में पौलुस से आ मिला। कुरिन्थ से जो समाचार तीमुथियुस लेकर आया, उसी ने पौलुस को 2 कुरिन्थियों लिखने के लिए प्रेरित किया। पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के अंत में तीमुथियुस कुछ दूर तक उसके साथ यरूशलेम गया, और बाद में प्रेरित की पहली कैद के दौरान रोम में भी उसके साथ जुड़ गया। तीमुथियुस और लूका पौलुस के सबसे स्थायी साथी थे। इब्रानियों 13:23 से हमें यह भी पता चलता है कि तीमुथियुस ने स्वयं भी कुछ समय के लिए कारावास सहा था।

पौलुस के कारागृह से मुक्त होने के बाद, उसने तीमुथियुस को फिर से इफिसुस भेज दिया। जब 2 तीमुथियुस लिखा गया, तब तीमुथियुस वहीं पर था। पारंपरिक इतिहास के अनुसार, पौलुस की मृत्यु के बाद तीमुथियुस इफिसुस लौट आया और वहीं नेरवा या दोमितियन के समय में, मसीह के लिए शहीद हुआ। यदि यह विचार सत्य है, तो अपने बाद के वर्षों में तीमुथियुस प्रेरित यूहन्ना का सहकर्मी भी रहा होगा, जिसने इफिसुस को अपना गृह-निवास बनाया था।

जब पौलुस 2 तीमुथियुस लिख रहा था, तब निश्चय ही वह उन अनेक अनुभवों को याद कर रहा होगा जो उसने और तीमुथियुस ने रोमी जगत के रास्तों और पगडंडियों पर साथ-साथ बिताए थे, और उन अनेक यात्राओं को भी जो उन्होंने जहाज़ पर साथ की थीं। उन्होंने एक के बाद एक नगरों में सुसमाचार के साथ प्रवेश किया था। उन्होंने विपत्तियों, आनंद और विजय—सब कुछ साथ-साथ अनुभव किया था। पौलुस अपनी आँखों के सामने तीमुथियुस का चेहरा ले आया—अपने पुत्र का चेहरा, अपने प्रिय पुत्र का, अपने अत्यन्त प्रिय पुत्र का चेहरा।

2. तीमुथियुस दैवीय रूप से आशीषित था (1:2ख)

एक बार फिर, पौलुस ने उस विशेष त्रयी का उपयोग किया जिसे उसने अपने व्यक्तिगत मित्रों को लिखे गए पत्रों के लिए सुरक्षित रखा था। “परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।”

“अनुग्रह,” जो परमेश्वर की बुद्धि से प्रवाहित होता है, हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर ने हमारे सभी पापों का समाधान करने के लिये “एक उपाय ठहराया” है। अपनी बुद्धि में, उसने उद्धार की योजना बनाई। उसने ऐसा मार्ग निकाला कि उसका उद्धार उन लोगों के लिये भी कार्य करे जो पूर्णतः पाप के अधीन हैं और अपने आप को बचाने के लिये कुछ भी करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं। उद्धार मनुष्य के प्रयास पर आधारित नहीं हो सकता था, क्योंकि पाप हमारे सबसे अच्छे कामों को भी दूषित कर देता है। उद्धार मनुष्य की चतुराई पर भी आधारित नहीं हो सकता था, क्योंकि परमेश्वर के विषय में सोचते समय पापी मनुष्य अक्सर मूर्ख ही सिद्ध होते हैं। उद्धार मनुष्य की साधन-संसाधन पर भी निर्भर नहीं हो सकता था, क्योंकि मनुष्य सिद्ध धार्मिकता उत्पन्न करने में असमर्थ है। परमेश्वर की बुद्धि ने समस्या का समाधान इस प्रकार किया कि उद्धार को उसके अनुग्रह पर निर्भर बना दिया। अनुग्रह ही कुंजी है।

“दया,” जो परमेश्वर के प्रेम से प्रवाहित होती है, हमें यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर हमारे सभी भय को शांत कर सकता है। जब पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, उस समय मसीही समुदाय में भयानक रूप से भय व्याप्त था। रोम में जो कुछ हो रहा था, उसकी खबर हर हृदय को आतंकित कर देती थी। मसीहियों को अखाड़े में फाड़-फाड़ कर हिंसक जंगली पशुओं के सामने डाल दिया जाता था। विश्वासियों को तारकोल में भिगोकर आग लगा दी जाती थी ताकि नीरो के बगीचों में रात के उत्सवों के लिए प्रकाश हो सके। मसीहियों को फसल की तरह काटा जा रहा था। उन्हें कोड़े मारे जाते थे, उनका उपहास किया जाता था, और उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाता था। नीरो में दया नहीं थी, परन्तु परमेश्वर दया से परिपूर्ण है और उसने उस मेम्ने के लिए भी हवा को नरम और सहनीय बना दिया, जिसके ऊन कट चुके थे और जो ठंड की मार सहने में असमर्थ था। नीरो के रोम में सताए गए उन मसीहियों के साथ चाहे जो भी हुआ हो, परमेश्वर उनके हर एक परीक्षा का सामना करने के लिए आवश्यक सामर्थ्य अवश्य प्रदान करता था और करेगा। उसने निकासी का एक मार्ग खोलने की प्रतिज्ञा की है (1 कुरिन्थियों 10:13; रोमियों 8:35-39)।

“शान्ति” परमेश्वर की सामर्थ्य से प्रवाहित होती है। यह शब्द हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर हमारे सभी शत्रुओं को वश में कर सकता है। वही है जो सीमा रेखा खींचता है, और जब वह ऐसा करता है, तो कोई भी नीरो उसका विरोध नहीं कर सकता। जब पौलुस ने 2 तीमुथियुस लिखा, उस समय नीरो का सताव अपनी चरम पर था और मसीही काफ़ी भयभीत थे। एक मसीही होना अत्यन्त खतरनाक था—उन्हें सार्वजनिक रूप से रोम में आग लगाने का दोषी ठहराया जा रहा था। उन्हें अनन्तता के दृष्टिकोण की आवश्यकता थी—वही दृष्टिकोण जिससे सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र लिखा गया है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बाइबल नीरो को अनदेखा करती है। उसमें न तो उस व्यक्ति का उल्लेख है और न ही उसके कार्यों का। नीरो की शैतानी दुष्टता का वर्णन करना रोमी इतिहासकार टैकिटस के लिए छोड़ दिया गया। फिर भी, इसमें एक प्रकार का काव्यात्मक न्याय दिखाई देता है कि जिस महीने पौलुस को मृत्यु-दण्ड दिया गया (जून, सन् 68 ई.), उसी महीने नीरो ने अपना गला काटकर आत्महत्या कर ली।

इस प्रकार पौलुस ने अपने प्रिय पुत्र को उस अनुग्रह, दया और शांति में लपेट दिया, जो “परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से” प्राप्त होती है।

भाग 11.

वर्तमान परीक्षाएँ

तीमुथियुस 1:3-2:26

क. तीमुथियुस की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ: अतीत (1:3-18)

1. उसके विश्वास को विकसित करना (1:3-6)

क. तीमुथियुस के पारिवारिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए (1:3-5)

(1) पौलुस ने क्या प्रकट किया (1:3)

(क) पौलुस का निजी जीवन (1:3क-ग)

i. उसकी सहभागिता (1:3क)

तीमुथियुस को उसके विश्वास में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु, पौलुस ने उसे अपने जीवन की व्यक्तिगत स्थिति की कुछ झलकियाँ दीं। सबसे पहले, उसने परमेश्वर के साथ अपनी व्यक्तिगत संगति के बारे में लिखा। इस तथ्य के बावजूद कि पौलुस अपनी ठंडी और दुर्गंध से भरी कोठरी में जंजीरों से बंधा हुआ था और लगभग सभी ने उसे छोड़ दिया था, वह विजयी था। यहाँ वह अपनी परिस्थितियों का ज़रा भी उल्लेख नहीं करता। इसके बजाय वह कहता है, “मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।”

पौलुस जीवित परमेश्वर के साथ संपर्क में था—वह जो इस ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता और तारणहार है; जिसने प्रभु यीशु के रूप में समय में प्रवेश किया; जिसने मृत्यु और उसकी सारी शक्तियों पर जय प्राप्त की; और जो पदार्थ, स्थान और समय के सभी तत्वों को नियंत्रित करता है। रोमी सेना की सारी टुकड़ियाँ भी ऐसे परमेश्वर के साथ पौलुस की संगति को बाधित नहीं कर सकती थीं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि वह कह सका, “मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।”

ii. उसका अभिषेक (1:3ख)

पौलुस आगे कहता है, “जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर...करता हूँ।” वह अपनी आत्मिक जड़ों को उस समय से भी पहले तक ले जा सकता था जब वह पहली बार दमिश्क के मार्ग पर मसीह से मिला था, क्योंकि वह मसीह में “जगत की उत्पत्ति से पहले” चुन लिया गया था (इफिसियों 1:4)। जब परमेश्वर ने हनन्याह को नए मन-परिवर्तित शाऊल से मिलने के लिए भेजा और हनन्याह ने आपत्ति की, तब परमेश्वर ने उससे कहा कि उसका यह पूर्व शत्रु “उसका चुना हुआ पात्र” है (प्रेरितों के काम 9:15)। पौलुस जानता था कि वह अपनी माता के गर्भ से ही सुसमाचार के लिए अलग किया गया था (गलातियों 1:15)।

परमेश्वर ने उस विशेष परिवार को चुना जिसमें पौलुस का जन्म होना था। वह एक प्रभावशाली यहूदी परिवार था, जिसमें यूनानी प्रभाव (हेलनवाद) और पारंपरिक इब्रानी जीवन-शैली का सुंदर संतुलन था।

तीमुथियुस की तरह, पौलुस का पालन-पोषण भी पवित्रशास्त्र के साथ हुआ था। उसके वंश में विश्वासियों की कई पीढ़ियाँ थीं; वह अपनी जड़ों को बिन्यामीन तक, जो उस गोत्र का पिता था, और उसके द्वारा अब्राहम तक, और इस प्रकार नूह और स्वयं आदम तक खोज सकता था।

पौलुस ने 2 तीमुथियुस 1:3 में अपनी यहूदी विरासत को स्वीकार किया। वह इसके लिए आभारी था, क्योंकि इसने उसे उस समय के लिए तैयार किया था जब वह कलीसिया का महान धर्मविज्ञान-शास्त्री बनने वाला था। कलीसिया के प्रारंभिक दिनों में, पौलुस ही वह व्यक्ति था जिसके पास पुराना नियम पवित्र शास्त्रों को कलवरी के प्रकाश में समझने की पृष्ठभूमि, प्रशिक्षण और क्षमता मौजूद थी। फिर परमेश्वर के आत्मा के मार्गदर्शन में, उसने पुराने नियम से मसीह, कलवरी और कलीसिया के महान सत्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया, जो उसकी पत्रियों में भरे हुए हैं। परिणामस्वरूप, सारा संसार उसके प्रति ऋणी है।

कैसर के सैनिक, अंधकारमय कारागृह और लोहे की जंजीरें एक क्षण के लिए भी पौलुस के बुलाहट और समर्पण की उच्च भावना को कम नहीं कर सकीं। इसकी जड़ें दमिश्क के मार्ग पर मसीह के साथ हुए उसकी मुठभेड़ में थीं। उसका समर्पण तुरंत और अटल था—“हे प्रभु! तू मुझ से क्या चाहता है कि मैं करूँ?” अगले लगभग तीस वर्षों तक यह बिना रुके चलता रहा। उसने प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर और शिक्षक के रूप में सक्रिय मसीही सेवकाई की थी। उसका समर्पण तब तक बना रहा, जब तक कि जल्लाद की कुल्हाड़ी ने उसके सिर को उसके शरीर से अलग नहीं कर दिया और उस महान प्रेरित को अनन्त युगों तक अपने प्रभु की सेवा करने के लिए स्वर्गीय महिमा में नहीं पहुँचा दिया।

iii. उसका विवेक (1:3ग)

पौलुस ने तीमुथियुस को अपने व्यक्तिगत जीवन की एक और झलक दी। उसने कहा कि उसने परमेश्वर की सेवा “शुद्ध विवेक” के साथ की है। पौलुस ने फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा के सामने उतनी ही सच्चाई और ईमानदारी से गवाही दी, जितनी उसने अन्य किसी के सामने दी थी। यहाँ तक कि जब उसे नीरो के सामने भी खड़ा होना पड़ा, तब भी वह साहसी और खरा बना रहा।

वह इफिसुस के प्राचीनों से (प्रेरितों के काम 20:26, 31) कह सकता था कि उसका विवेक शुद्ध है: “इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ... क्योंकि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर हर एक को चित्तौनी देना न छोड़ा।” उसने आगे यह भी जोड़ा, “मैं ने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी कीं” (प्रेरितों के काम 20:33-34)। जब तीमुथियुस ने यह पद इफिसुस की कलीसिया में पढ़ा होगा, तो प्राचीनों ने निस्संदेह सिर हिलाकर सहमति जताई होगी। वे अच्छी तरह जानते थे कि जब पौलुस “शुद्ध विवेक” की बात करता है, तो उसका क्या अर्थ है।

(ख) पौलुस का प्रार्थना जीवन (1:3घ-च)

i. उसकी प्रार्थनाएँ निरंतर थीं (1:3घ)

पौलुस भी “हमारी ही तरह के स्वभाव का मनुष्य” था, जैसा याकूब ने एलिय्याह के विषय में लिखा है। और एलिय्याह की तरह, पौलुस भी प्रार्थना करता था (याकूब 5:17)। वह जानता था कि प्रार्थना कैसे करनी है। जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से कहा, “निरंतर प्रार्थना में लगे रहो” (1 थिस्सलुनीकियों 5:17), तो वह उन्हें वही करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था, जो वह स्वयं करता था। कभी-कभी उसके विचार ऊपर उठकर आनंद के आँगनों तक पहुँच जाते थे। वह अपने आप को आत्मा में मानो ब्रह्मांड के दरबार में पाता था। वहाँ वह स्तुति और आराधना में अपना हृदय उडेल देता था। और कभी-कभी कोई समाचार, कोई घटना, या किसी आवश्यकता अथवा किसी नाम का उल्लेख ही पौलुस को प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर देता था।

प्रार्थना के विषय में हर बात उसके लिए उपयोगी थी। जब उसकी कोठरी में सैनिक बदले जाते थे, तब वह प्रार्थना करता था। जब उसे रूखी रोटी का टुकड़ा और बेस्वाद पानी दिया जाता था, तब भी वह प्रार्थना करता था। जब लूका किसी कार्य से बाहर जाता था, तब भी पौलुस प्रार्थना करता था। रात के पहरों में वह अपने विस्तृत प्रार्थना-पुस्तक के पन्नों पर दर्ज नगरों, कलीसियाओं और व्यक्तियों को स्मरण करता और उनके लिए प्रार्थना करता था। वह नीरो और उसकी यहूदी पत्नी के लिए भी प्रार्थना करना नहीं भूलता था, साथ ही रोमी महासभा के सदस्यों के लिए और उस जल्लाद के लिए भी, जो अपनी कुल्हाड़ी तेज कर रहा था, अपनी प्रार्थना में याद करता था। आखिरकार, पौलुस ने स्वयं तीमुथियुस को सिखाया था कि “विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ... राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त” (1 तीमुथियुस 2:1-2)।

ii. उसकी प्रार्थनाएँ व्यक्तिगत थीं (1:3ड)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, “मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूँ।” वह कितनी बार उस नाम—तीमुथियुस—को प्रभु के सामने लाता होगा! वह उसके अत्यन्त प्रिय पुत्र का नाम था। हम मानो प्रेरित को यह कहते हुए सुन सकते हैं, “और अब, प्रभु, मुझे अब अपने मित्र तीमुथियुस के विषय में आपसे कुछ बातें करनी हैं।”

प्रार्थना में, पौलुस तीमुथियुस के व्यक्तित्व, उसके वरदानों, उसकी सेवकाई, उसके सहारे की आवश्यकता, उसकी कमजोरियों, उसकी शक्तियों, उसकी विश्वासयोग्यता और उसके प्रेम का स्मरण करता था। निस्संदेह, पौलुस की हर प्रार्थना-सूची में तीमुथियुस का नाम सबसे ऊपर होता था।

iii. उसकी प्रार्थनाएँ नियमित थीं (1:3च)

पौलुस तीमुथियुस के लिए “रात-दिन” प्रार्थना करता था। संभवतः पौलुस ने दिन और रात में ऐसे निश्चित समय निर्धारित कर रखे थे, जब वह रुककर एकाग्र होकर प्रार्थना करता था। संभव है कि दानिय्येल की तरह, पौलुस भी दिन में तीन बार प्रार्थना करता रहा हो, और दानिय्येल की ही तरह वह इसे छिपाकर नहीं करता था (दानिय्येल 6:10)।

या संभव है कि पौलुस ने अपनी नियमित प्रार्थनाओं का समय मंदिर में होने वाली दैनिक बलियों के समय के साथ मिला रखा हो। दिन-प्रतिदिन याजक समय के अनुसार अपनी बलियाँ चढ़ाते थे।

वे सुबह छह बजे होमबलि से आरंभ करते थे। नौ बजे अन्नबलि दी जाती थी; दोपहर बारह बजे मेलबलि; दोपहर तीन बजे पापबलि; और शाम छह बजे दोषबलि चढ़ाई जाती थी।

हम यह नहीं जानते कि पौलुस ने अपनी प्रार्थना के समय को किस प्रकार व्यवस्थित किया था, परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ निरंतर संपर्क में बना रहता था।

(2) पौलुस ने क्या इच्छा की (1:4)

पौलुस की निरंतर प्रार्थनाओं में से एक यह थी कि वह फिर से तीमुथियुस को देख सके। प्रेरित ने लिखा, “तेरे आँसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूँ कि आनन्द से भर जाऊँ।” पौलुस का हृदय वस्तुओं से नहीं, बल्कि लोगों से प्रभावित होता था।

जब पौलुस ने तीतुस को क्रेते में छोड़ा, तब वह मिलेतुस गया और फिर त्रोआस पहुँचा, वहाँ से इफिसुस जाकर तीमुथियुस से मिलने का उसका विचार था। परन्तु इसकी बजाय, पौलुस ने तीमुथियुस को एक पत्री लिखी और मकिदुनिया चला गया। वहाँ, पौलुस यह निर्णय करने के लिए ठहर गया कि क्या उसे कुरिन्थुस जाना चाहिए ताकि वहाँ की कलीसिया में उत्पन्न नए संकट से निपट सके। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने तीमुथियुस को इफिसुस से मकिदुनिया बुलाया, और यह पद संभवतः उनके उसी मुलाकात की ओर संकेत करता है। जब तीमुथियुस इफिसुस लौट आया और पौलुस कुरिन्थ चला गया, तब उनका बिछड़ना बहुत हृदयस्पर्शी था। दोनों ही समझ रहे होंगे कि पौलुस के दिन गिने-चुने रह गए हैं। आखिर, नीरो कब तक ऐसे प्रभावशाली अगुवे को स्वतंत्र रहने देता, जो उन “अपराधियों” के लिए कार्य कर रहा था, जिन पर रोम में आग लगाने का आरोप लगाया गया था? विशेषकर तीमुथियुस का हृदय टूट गया होगा, क्योंकि वह उस व्यक्ति को खोने वाला था जो उसके लिए हर प्रकार से एक पिता से भी बढ़कर था।

जिस बात का उन्हें भय था, वही हुआ। नीरो के जासूसों ने पौलुस का पता लगा लिया। रोमी अधिकारियों ने उसे पकड़ लिया और निश्चय ही उस पर मसीही समुदाय का अगुवा होने का आरोप लगाया, जिन्हें अधिकारी आग लगाने वाले समझते थे। अब उसकी रोमी नागरिकता उसके लिए अधिक सहायक नहीं रही। उसे शीघ्रता से रोम ले जाया गया और तुरंत उस पर मुकदमा चलाया गया—संभवतः स्वयं नीरो के सामने उसे पेश किया गया। पौलुस अन्यजाति-मसीहियों का प्रमुख अगुवा माना जाता था। नीरो कम-से-कम उसे देखने के लिए उत्सुक अवश्य रहा होगा, चाहे केवल उसका उपहास करने और उसे धमकाने के लिए ही क्यों न हो।

अब पौलुस दोषियों की कोठरी में था, और जब उसने यह पत्री लिखी, तब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि उसके दिन गिने-चुने रह गये हैं।

वह अपने प्रिय तीमुथियुस को एक बार फिर देखने की इच्छा रखता था।

(3) पौलुस ने क्या वर्णन किया (1:5)

(क) तीमुथियुस के विश्वास की वास्तविकता (1:5क)

2 तीमुथियुस में हर स्थान पर पौलुस बढ़ते हुए खतरे के सामने तीमुथियुस के संकल्प को दृढ़ करने के लिए हर संभव प्रयास करता है। कलीसिया अपने इतिहास के एक नए चरण में प्रवेश कर रही थी। प्रेरितों के बाद

का समय (प्रकाशितवाक्य 2:1-7) अब सताव के समय (प्रकाशितवाक्य 2:8-11) में परिवर्तित हो रहा था। अगले तीन सौ वर्षों तक, मसीहियों को दस विभिन्न कैसरों के अधीन भयंकर सताव का सामना करना पड़ा था। सहिष्णुता का युग समाप्त हो चुका था, और क्लेश का युग आरंभ हो चुका था। रोमी संसार के पूरे क्षेत्र में मसीही समुदाय के सामने कठोर परिवर्तन और भयानक खतरे उपस्थित थे।

अब तीमुथियुस को सताव के बीच स्वयं दृढ़ होकर खड़ा होना था। पौलुस लगातार उसे साहसी बनने के लिए प्रोत्साहित करता रहा।

उसने तीमुथियुस के विश्वास की वास्तविकता की सराहना की: “मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है” (1:5)। तीमुथियुस का विश्वास पौलुस को आनंद से भर देता था (1:4)।

पद 1:5 में “निष्कपट” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह हुपोक्रिसिस (“कपट” या “पाखंड”) का नकारात्मक विशेषण रूप है। तीमुथियुस न तो दिखावा कर रहा था और न ही कोई अभिनय कर रहा था। पौलुस इतना वृद्ध और अनुभवी विश्वासी था कि वह किसी भी बनावटी बात से धोखा नहीं खा सकता था। वह इस बात से प्रसन्न था कि तीमुथियुस का विश्वास सच्चा था, क्योंकि केवल वास्तविक विश्वास ही—जो परदे के भीतर स्थिर किया गया है (इब्रानियों 6:19) — कलीसिया पर टूटने वाले तूफान का सामना कर सकता था।

पुराने नियम की व्यवस्था को परिभाषित करते हुए, पौलुस ने लिखा, “आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।” प्रेम सभी आज्ञाओं की जड़ है, और अच्छा विवेक उसका फल है। इनके बीच में “निष्कपट विश्वास” है, जो परमेश्वर के वचन के अधिकार, उसकी त्रुटिहीनता और उसकी प्रेरणा को स्वीकार करता है, जैसा कि परमेश्वर की आज्ञाओं में प्रकट होता है। विश्वास परमेश्वर की बुद्धि, प्रेम और सामर्थ्य पर अपना भरोसा रखता है और यह स्मरण रखता है कि उसकी आज्ञाएँ ही हमें सामर्थ्य देने वाली हैं।

(ख) तीमुथियुस के विश्वास की जड़ें (1:5ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण दिलाया, “तेरे उस निष्कपट विश्वास की ... जो पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में था।” यहाँ “में था” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “किसी स्थान में वैसे रहना जैसे कोई अपने घर में रहता है।” निष्कपट विश्वास ने तीमुथियुस की माता और नानी के हृदयों में अपना निवास पाया था। वह वहाँ अपने घर जैसा अनुभव करता था।

नये नियम में “दादा” शब्द का प्रयोग नहीं मिलता, यद्यपि उसका विचार बाइबल में अवश्य पाया जाता है। उदाहरण के लिए, अब्राहम याकूब का दादा था, और अहीतोपेल बतशेबा का दादा था। “नानी” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह केवल इसी स्थान पर पाया जाता है।

नानियों की व्यवस्था परमेश्वर की एक अद्भुत रचना है— जो मानव जाति के कल्याण के लिए स्वर्ग से उत्पन्न एक विचार है। लोइस का उदाहरण हमें दिखाता है कि एक नानी कैसी होनी चाहिए—ऐसी जो अपने बच्चों और अपने बच्चों के बच्चों के हृदयों को इस प्रकार तैयार करे कि सच्चा विश्वास उनके हृदयों में भी अपना निवास बना सके।

लोइस और यूनीके—दोनों के नाम यूनानी थे, परन्तु वे यहूदी स्त्रियाँ थीं और एशिया में मसीह पर विश्वास करने वालों में सबसे पहली थीं। तीमुथियुस के पिता के बारे में हम इतना ही जानते हैं कि वह एक अन्यजाति था (प्रेरितों के काम 16:1)। संभवतः यही कारण था कि तीमुथियुस का खतना नहीं हुआ था। हेलेनवादी यहूदी होने के कारण, लोइस और यूनीके इन बातों के विषय में यहूदिया और यरूशलेम के कठोर इब्रानी लोगों की अपेक्षा अधिक उदार विचार रखती थीं। तीमुथियुस का पिता अन्यजाति था, परन्तु वह संभवतः उदारवादी सोच का व्यक्ति था, क्योंकि उसने अपनी पत्नी और सास को तीमुथियुस को पवित्र शास्त्र सिखाने से नहीं रोका। या फिर यह भी संभव है कि तीमुथियुस का पिता उसके बचपन में ही मर गया हो। किसी भी स्थिति में, पौलुस उसके लिए एक पिता के समान बन गया।

लोइस और यूनीके का उल्लेख तीमुथियुस के विचारों को मानो पंख दे देता होगा। उसके मन में वर्षों की परतें मानो हट जातीं। वह फिर से अपने बचपन के घर—लुस्त्रा—में पहुँच जाता होगा। वह अपने मन में फिर से देखता कि कैसे पौलुस और बरनबास बड़े उत्साह और प्रभावी ढंग से नगर में प्रवेश कर रहे थे। वह उस लँगड़े व्यक्ति के चंगे होने, भीड़ के जय-जयकार करने, और मिशनरियों को देवता ठहराने के प्रयास को याद करता होगा। उसे यह भी स्मरण आया होगा कि बाद में पौलुस को मार डालने का प्रयास किया गया था। तीमुथियुस को यह भी याद आता कि पौलुस के प्रचार के द्वारा कई लोगों ने उद्धार पाया—उनमें वह स्वयं, उसकी माता और उसकी नानी भी शामिल थे। उसे यह भी स्मरण रहा होगा कि पौलुस सताव से अनजान नहीं था। जिस दिन से तीमुथियुस उसे जानता था, उसी दिन से उसने खतरे और मृत्यु का सामना करने का साहस दिखाया था।

तीमुथियुस के विचार फिर उस पत्नी की ओर लौट आते जो उसके हाथ में थी। तीमुथियुस की जड़ों का उल्लेख करके, पौलुस उसके विश्वास को मजबूत करना चाहता था ताकि वह बढ़ते हुए सताव का सामना कर सके। उधर, रोम की उस उदास कारागृह में, पौलुस का अपना विश्वास प्रज्वलित हो रहा था। यदि उसे मरना ही था, तो वह एक साहसी मनुष्य की तरह मरेगा—हाँ, एक शहीद की तरह। वह परमेश्वर के एक प्रेरित के योग्य यहाँ से प्रस्थान करेगा।

(ग) तीमुथियुस के विश्वास का सुदृढ़ीकरण (1:5ग)

पौलुस ने आगे कहा, “और मुझे निश्चय है कि [वही विश्वास] तुझ में भी है।” तीमुथियुस की माता और नानी का विश्वास अब तीमुथियुस का भी विश्वास बन गया था। पौलुस पर हुए आक्रमण के बाद, लुस्त्रा में उस विश्वासयोग्य परिवार के लिए नव-रोपित कलीसिया और अन्य नए विश्वासियों के साथ खुले रूप से जुड़ना आसान नहीं रहा होगा। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही उस छोटी कलीसिया को संदेहभरी दृष्टि से देखते होंगे। उनकी भीतर ही भीतर जलती हुई विरोध की भावना को केवल मसीहियों की गवाही, विश्वास और भले काम ही शांत कर सकते थे। फिर भी, तीमुथियुस विश्वास में बढ़ता गया। जब पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान लुस्त्रा लौटा, तब कलीसिया के प्राचीनों ने तीमुथियुस की सिफारिश एक बहुत ही आशाजनक युवक के रूप में की। पौलुस को यूहन्ना मरकुस के स्थान पर किसी की आवश्यकता थी, परन्तु वह सावधान भी था कि कहीं वह दूसरी बार गलती न कर बैठे। फिर भी, शीघ्र ही वह प्राचीनों से सहमत हो गया—तीमुथियुस मिशन क्षेत्र के कार्य के लिए तैयार था।

ख. तीमुथियुस के औपचारिक बुलाहट के संदर्भ में (1:6)

तीमुथियुस को उसके विश्वास में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु, पौलुस ने उसे उसके औपचारिक बुलाहट की याद दिलाई:

“इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्ज्वलित कर दे।”

पौलुस और बरनबास को संसार में सुसमाचार प्रचार के कार्य के लिए “हाथ रखने” के द्वारा औपचारिक रूप से नियुक्त किया गया था (प्रेरितों के काम 13:1-3)। यह कार्य अन्ताकिया की कलीसिया की सहभागिता और समर्थन का प्रतीक था। यूहन्ना मरकुस इस प्रकार औपचारिक रूप से इस कार्य से नहीं जुड़ा था (प्रेरितों के काम 13:5)। पौलुस ने यह सुनिश्चित किया कि जब तीमुथियुस मिशनरी दल में शामिल हुआ, तो वह भी “हाथ रखने” के द्वारा परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के सामने औपचारिक रूप से इस सेवा से जुड़ जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि उसी समय पवित्र आत्मा, जो आत्मिक वरदानों का दाता है (1 कुरिन्थियों 12:7-11), ने उस युवक को एक विशेष आत्मिक वरदान भी प्रदान किया। पौलुस द्वारा उसे दिए गए कार्यों से यह स्पष्ट होता है कि तीमुथियुस का वरदान एक पास्टर-शिक्षक का था (इफिसियों 4:11-12)।

पौलुस को ऐसा लगता था कि कहीं तीमुथियुस अपने वरदान की उपेक्षा न कर दे, इसलिए उसने उसे प्रोत्साहित किया कि वह परमेश्वर के वरदान को “प्रज्ज्वलित कर दे।” इस दृष्टि से आत्मिक वरदान अन्य वरदानों से भिन्न नहीं हैं। उन्हें विकसित करना, अभ्यास में लाना और उपयोग करना आवश्यक है। जिस व्यक्ति में किसी वाद्य यंत्र को बजाने की प्रतिभा होती है, उसे संगीत के नियमों को सीखना और निरंतर अभ्यास करना पड़ता है। जो व्यक्ति खेलों में स्वाभाविक रूप से अच्छा होता है, उसे भी खेल के नियमों को समझना और प्रशिक्षण लेना आवश्यक होता है। इसी प्रकार, जिस व्यक्ति को आत्मिक वरदान मिला है, उसे भी अनुभव के विद्यालय में उसे निखारना और चमकाना पड़ता है।

“प्रज्ज्वलित करने” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका शाब्दिक अर्थ है “आग को फिर से भड़काना।” जो कोई भी अंगीठी या चूल्हे को जानता है, वह समझता है कि आग को देखभाल की आवश्यकता होती है।

जब प्रारंभिक लौ धीमी पड़ जाती है, तो लकड़ियों या कोयलों को हिलाना पड़ता है ताकि उनमें हवा पहुँच सके और आग फिर से प्रज्ज्वलित हो उठे। इस शब्द का यूनानी रूप सेप्टुआजिन्ट में भी पाया जाता है, जहाँ बूढ़े याकूब के उदास मन के फिर से जीवित हो उठने का वर्णन है, जब उसे विश्वास हो गया कि उसका पुत्र यूसुफ जीवित है (उत्पत्ति 45:27)। संभवतः पौलुस की गिरफ्तारी और पूरे कलीसिया पर छाए भयानक संकटों के कारण तीमुथियुस इतना निराश हो गया था कि वह अपने कर्तव्यों और अपने वरदान के उपयोग की उपेक्षा करने लगा था। 2 तीमुथियुस 1:7 भी इस संभावना को और अधिक बल देता है।

2. उसके भय को दूर करना (1:7-18)

क. प्रोत्साहन (1:7-11)

(1) परमेश्वर के आत्मा को स्मरण करो (1:7)

पौलुस ने तीमुथियुस को अपने भय को दूर करने और अपने विश्वास को विकसित करने के लिए बुलाया। उसने उसे यह स्मरण दिलाया कि परमेश्वर का आत्मा सदा उसके साथ है, जो उसकी चिंताओं और भय का एक सशक्त संतुलन है।

(क) दास बनाने वाली आत्मा (1:7क)

पौलुस ने यह पहचाना कि “परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी।” शैतान और उसके दूत ही ऐसे हैं जो मसीहियों को भय के द्वारा निष्क्रिय करने का प्रयास करते हैं। पतरस भी भय के कारण कमजोर पड़ गया था, जब वह महायाजक के आँगन में खड़ा था और बार-बार उस प्रभु को जानने से इनकार कर रहा था, जो उसी समय अपने जीवन के लिए मुकद्दमे का सामना कर रहा था (लूका 22:54-62)। पुराने नियम में, राजा शाऊल भी गोलियत को देखकर भय से भर उठा था (1 शमूएल 17:4-11), और अब्राहम भी भय के कारण अपनी पत्नी के विषय में सत्य को छिपाने लगा था (उत्पत्ति 12:11-13)।

ऐसी आशंका परमेश्वर की ओर से नहीं आती। यह शत्रु के हाथ में एक शक्तिशाली हथियार है, परन्तु इसे पराजित किया जा सकता है।

जब पौलुस ने यह पत्री लिखी, उस समय मसीही जगत में भय छाया हुआ था, परन्तु शहीदों की बढ़ती हुई सूची यह दर्शाती है कि भय पर विजय पाई जा सकती है। बंधन में डालने वाली आत्मा को स्वतंत्रता देने वाले आत्मा के द्वारा पराजित किया जा सकता है।

(ख) मुक्ति देने वाला आत्मा (1:7ख-घ)

i. गतिशील सामर्थ्य द्वारा नियंत्रित इच्छाशक्ति (1:7ख)

भय पर विजय पाने के उपाय में पहला तत्व “सामर्थ्य” है। हमें “सामर्थ्य, प्रेम और संयम की आत्मा” दी गई है। परमेश्वर कभी निर्दयी नहीं हो सकता। यहाँ “सामर्थ्य” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह परमेश्वर की पूर्ण, असीम और असीमित सामर्थ्य की ओर संकेत करता है।

यीशु ने पीलातुस से कहा, “यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता” (यूहन्ना 19:11)। पीलातुस के पास अपने आप में कोई भी अधिकार नहीं था; वह केवल वही कर सकता था जो परमेश्वर ने उसे करने की अनुमति दी थी, क्योंकि परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ कार्य कर रहा था। परमेश्वर क्यों नीरो और हिटलर जैसे अत्याचारियों को पृथ्वी पर उत्पात मचाने की अनुमति देता है, यह एक रहस्य है, जो पूर्ण रूप से स्वर्ग में ही प्रकट होगा, जब पुस्तकें खोली जाएंगी और पूरी कहानी सामने आएगी। फिर भी परमेश्वर सर्व संप्रभु है, चाहे मनुष्य—जैसे कि फिरौन—अंत तक उसका विरोध ही क्यों न करें।

ii. दैवीय प्रेम द्वारा नियंत्रित हृदय (1:7ग)

भय पर विजय पाने के उपाय का दूसरा तत्व प्रेम है। जिस हृदय पर दैवीय प्रेम का नियंत्रण होता है, उसमें परमेश्वर के प्रेम का सजीव अनुभव होता है—“जो संसार की सबसे महान वस्तु है”—और साथ ही अपने शत्रुओं के प्रति भी सच्चा प्रेम होता है। यीशु ने कहा, “परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो” (मत्ती 5:44)।

ऐसा ही “सिद्ध प्रेम” है जो “भय को दूर कर देता है” (1 यूहन्ना 4:18)। क्योंकि प्रभु यीशु के पास सिद्ध प्रेम था, वह शैतान और गोलगोथा का सामना बिना किसी भय के कर सका। उसने हन्ना और कैफा से प्रेम किया। उसने हेरोदेस अन्तिपास और हाकिम पीलातुस से प्रेम किया। उसने उस सैनिक से प्रेम किया जिसने उसे कोड़े लगाए और उस व्यक्ति से भी जिसने उसे क्रूस पर कीलों से जड़ दिया था। उसने खोए हुए यहूदा से और उस मरते हुए डाकू से भी प्रेम किया जो उसे शाप दे रहा था।

यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता से प्रेम किया और जानता था कि उसका पिता भी उससे प्रेम करता है—यहाँ तक कि जब कलवरी की भयानक घड़ी में व्यवस्था का श्राप उस पर आ पड़ा था। प्रभु जानता था कि परमेश्वर का प्रेम उसे अंत तक संभाले रखेगा और सब कुछ भलाई के लिए है, चाहे उस समय ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था।

iii. अनुशासित विचारों द्वारा नियंत्रित मन (1:7घ)

भय पर विजय पाने के उपाय का तीसरा तत्व “एक संयमित मन” है।

यह यूनानी शब्द केवल इसी स्थान पर पाया जाता है और इसका अर्थ है अनुशासन और आत्म-संयम।

हर एक विश्वासी के मन को पवित्र आत्मा के नियंत्रण और परमेश्वर के वचन के अधिकार के अधीन लाया जाना चाहिए। उग्र, भटके हुए और दुष्ट विचारों को नियंत्रित करना आवश्यक होता है। पौलुस के समय में, जब नीरो की क्रूरताओं की खबरें मसीहियों के मन को भयभीत कर रही थीं, तब उनके भयभीत विचारों का सामना इस सत्य से किया जाना चाहिए था कि परमेश्वर कभी कोई गलती नहीं कर सकता।

इसलिए तीमुथियुस को अपने आप को संभालना था, अपने भय को क्रूस पर ले जाना था, जहाँ वे क्रूसित किए जा सकते थे। इससे परमेश्वर की सामर्थ्य, प्रेम और बुद्धि उसके हृदय और मन पर राज्य कर सकते थे। इसी प्रकार जेफ्री बुल ने भी अपने अपने भय पर विजय पाई, जिसे एक साम्यवादी चीनी कारागृह शिविर में प्रतिदिन मानसिक यातना और भय का सामना करना पड़ा। जब उसे घंटों तक कठोर फर्श पर बिल्कुल स्थिर बैठने के लिए मजबूर किया जाता था, और एक पहरेदार उसकी हर छोटी-सी हरकत पर निगाह रखता था, तब बुल अपने मन में एक शांत स्थान में चला जाता था—अपने हृदय की गहराई में—जहाँ वह उस प्रभु की भलाई, विश्वासयोग्यता, बुद्धि, प्रेम और सामर्थ्य में विश्राम पाता था, जिसने उसके लिए प्राण दिए और जो अब परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है।

(2) परमेश्वर के पुत्र को स्मरण करो (1:8-10)

(क) चुनाव (1:8)

i. लज्जित न हो (1:8क-ख)

क. सुसमाचार की गवाही, जो अब संकट में है (1:8क)

पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया, “इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो,।” वह गवाही संकट के मध्य घिरी हुई थी क्योंकि शैतान अपनी समस्त नरकीय सेनाओं को युद्ध में झोंक रहा था। नीरो का सत्ताव तो केवल आरंभिक आक्रमण था। बाद में दोमितिअन, कोम्मोदुस,

डेसियुस, सेवेरुस और डायोक्लेशियन ने भी भयंकर आक्रमण किए। मसीहियों को अखाड़ों में मार डाला जाता था और अखाड़े के प्रवेश द्वार पर सूर्य देवता की मूर्ति के सामने उन्हें जीवित जला दिया जाता था।

डायोक्लेशियन का सताव तो उसके सभी पूर्व सतानेवालों से भी अधिक भयानक था। मसीहियों को समाप्त करने और पवित्र शास्त्र की हर प्रति को खोज-खोज कर जलाने के लिए हर संभव प्रयास किया गया।

जब पौलुस ने यह लिखा, उस समय मसीहियों के पास कोई शांति नहीं थी; और आने वाले लगभग तीन सौ वर्षों तक उन्हें वास्तविक शांति नहीं मिलने वाली थी। यह तीमुथियुस और अन्य विश्वासियों के लिए प्रभु की गवाही से लज्जित होने का समय नहीं था, न ही अपने प्रकाश को किसी पैमाने के नीचे छिपाने का समय था। यह समय था कि वे दानियेल की तरह साहस दिखाएं और यह सत्य प्रकट करें कि यीशु ही प्रभु है।

तीमुथियुस को प्रेम की आत्मा द्वारा नियंत्रित होना था। उसकी रीढ़ को सामर्थ्य के आत्मा द्वारा दृढ़ किया जाना था। उसे आने वाली कठिनाइयों और क्लेशों का निडर होकर सामना करना था।

निश्चय ही, वह भयानक परिस्थितियों के संपर्क में आएगा! एक कलीसिया के अगुवे के रूप में, वह पहले से ही एक चिन्हित व्यक्ति था। पौलुस ने उसे प्रोत्साहित किया कि वह अपने ध्वज को ऊँचा रखे और प्रभु में तथा उसकी सामर्थ्य के बल में दृढ़ बने रहे (इफिसियों 6:10)। स्वर्गदूतों की सेनाएँ उसके चारों ओर डेरा डाले हुए थीं। वह तब तक नहीं मर सकता था, जब तक कि परमेश्वर का कार्य उसके जीवन में पूरा न हो जाए।

ख. महान शिक्षक के बारे में, जो अब कैद में है (1:8ख)

तीमुथियुस को पौलुस से भी लज्जित नहीं होना था। निस्संदेह, कैसर के जासूस जानते थे कि तीमुथियुस पौलुस का निकट साथी है। पौलुस का कोई भी साथी शीघ्र ही कैसर की काली सूची में अपना नाम पा सकता था। कुछ विश्वासियों ने, अपनी जान बचाने की आशा में, पहले ही प्रेरित से दूरी बनानी शुरू कर दी थी। निश्चय ही, तीमुथियुस ऐसा कायर नहीं रहा होगा। नहीं! तीमुथियुस पौलुस का मित्र था—उसे इसे सम्मान के चिन्ह के रूप में धारण करना चाहिए। उससे भी बढ़कर, तीमुथियुस पौलुस का प्रिय पुत्र था।

तीमुथियुस को अपने आप को नहेम्याह के मनोभाव से सुसज्जित करना चाहिए, जिसने अपने शत्रुओं के सामने यह साहसिक उत्तर दिया: “क्या मुझ जैसा मनुष्य भागे?” (नहेम्याह 6:11)। कदापि नहीं!

ii. डर मत (1:8ग-घ)

प्रेरित की इस विनती पर ध्यान दीजिए: “सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठा।” बाइबल के समय में किसी ने भी उस बात का प्रचार नहीं किया जिसे आज के सुख-सुविधा भरे युग में “समृद्धि का सुसमाचार” कहा जाता है। यह झूठा सुसमाचार “नाम लो और पा लो” की सोच को बढ़ावा देता है। यह कहता है कि स्वास्थ्य और धन प्रत्येक विश्वासी का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह पूरा विचार नये नियम, व्यक्तिगत अनुभव और कलीसिया के इतिहास—तीनों से बिल्कुल भिन्न है। समृद्धि का सुसमाचार इस बात को न समझ पाने पर आधारित है कि पुराने नियम की आशीष और नये नियम की आशीष में क्या अंतर है; इस्राएल राष्ट्र और परमेश्वर की कलीसिया में क्या अंतर है; तथा परमेश्वर की पृथ्वी से संबंधित प्रजा और उसकी स्वर्गीय प्रजा

में क्या अंतर है। नया नियम इस संसार में क्लेश का वायदा करता है (यूहन्ना 16:33)। एक भजन लेखक ने इस सत्य को समझते हुए पूछा:

क्या मुझे आकाश में ले जाया जाना चाहिए

सुखद फूलों की क्यारियों पर,

जबकि दूसरे पुरस्कार जीतने के लिए संघर्ष करते रहे

और तूफानी समुद्रों में तैरते रहे?[1]

जिस समय से पौलुस ने मसीह को जाना, उस समय से लेकर जब उसने तीमुथियुस को यह पत्री लिखी, तब तक उसने अनेक कष्टों का सामना किया—गरीबी, खतरे, संघर्ष, कोड़े, पत्थरवाह, कारावास, सताव, अस्वस्थता और बच निकलने की घटनाएँ। उसका दुर्बल शरीर मानो एक अभिलेख था, जिस पर जंजीरों और कोड़ों के निशानों द्वारा उन सब कष्टों को अंकित किया गया था, जो एक व्यक्ति को सहने पड़ सकते हैं यदि वह मसीह से बैर रखने वाले संसार में मसीह के लिए जीवन जीना चाहता है। निस्संदेह, तीमुथियुस ने कई बार पौलुस की पीठ पर उन घावों और निशानों को देखा होगा—जो इस बात का सशक्त प्रमाण थे कि “सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठाने” का क्या अर्थ हो सकता है।

तीमुथियुस के भय को दूर करने के लिये पौलुस ने उसे उपलब्ध सामर्थ्य की याद दिलाई। तीमुथियुस को शत्रु की शक्ति का सामना अपनी ताकत से नहीं करना था—और न ही हमें ऐसा करना है। जब शैतान “गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए” (1 पतरस 5:8), तब हम उसका सामना “परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार” कर सकते हैं (2 तीमुथियुस 1:8)।

यहाँ “सामर्थ्य” के लिए फिर वही शब्द डूनामिस प्रयोग किया गया है। यहाँ यह हमारे परमेश्वर की अनंत सामर्थ्य की ओर संकेत करता है—वह जो आकाशगंगाओं को अंतरिक्ष में कर सकता है और एक छोटे से परमाणु में इतनी ऊर्जा समाहित कर सकता है कि एक द्वीप को नष्ट कर दे। यह सामर्थ्य हमेशा हमें शत्रु से तुरंत छुड़ाने के लिए प्रकट नहीं होती, क्योंकि उस समय परमेश्वर के अन्य उद्देश्य भी हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य हमें गिरने से बचाने के लिए सदा उपलब्ध रहती है—यहाँ तक कि भय के बीच में भी। उसकी सामर्थ्य हमें हर बार तूफान से निकाल नहीं सकती, परन्तु वह हमें उसके बीच से निकालकर और अधिक दृढ़ बनाती है (इब्रानियों 11:33-40)।

2 तीमुथियुस 1:8 में क्लेश के विषय में पौलुस के शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के नहीं थे जो किसी सुरक्षित और आरामदायक स्थान में बैठा हो। यह उन शब्दों का वर्णन था जो उसने एक डरावने और गंदी कोठरी से लिखे थे। उसकी जंजीरों की खनखनाहट उसकी आवाज़ के साथ मिलती थी, जब वह इन शब्दों को लिखवा रहा था। पौलुस केवल सिद्धांत की बात नहीं कर रहा था। वह उस सत्य को अपने व्यक्तिगत, विजयी और महिमामय अनुभव के आधार पर लिख रहा था।

(ख) चुनौती (1:9-10)

i. हमारा मन-परिवर्तन (1:9क)

पौलुस ने अपनी विनती के आधार को और अधिक व्यापक किया। उसने तीमुथियुस को उसके मन-परिवर्तन और बुलाहट की याद दिलाई। वह परमेश्वर, जो स्थान और समय के सभी तत्वों को नियंत्रित करता है, वही है “जिसने हमें उद्धार दिया है।”

यीशु ने एक बार शास्त्रियों से पूछा कि क्या कहना सहज है—“तेरे पाप क्षमा हुए” या “उठ, और चल फिर” (मत्ती 9:5)? उन्होंने अभी-अभी देखा था कि लोग एक लकवे के मारे हुए मनुष्य को, जो खाट पर पड़ा था, यीशु के पास लाया गया था। उस बीमार व्यक्ति से प्रभु के सबसे पहले शब्द थे, “हे पुत्र, ढाढ़स बाँध; तेरे पाप क्षमा हुए।” शास्त्रियों की तुरंत प्रतिक्रिया यह थी, “यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।” तब यीशु ने उनसे यह प्रश्न किया था। फिर यह सिद्ध करने के लिए कि वह पापों को क्षमा भी कर सकता है और रोगों को चंगा भी कर सकता है, उसने उसी क्षण उस बीमार व्यक्ति को, जो उसके सामने पड़ा था, बिल्कुल भला-चंगा कर दिया।

प्रश्न फिर भी बना रहता है—सहज क्या है? रोग को चंगा करने के लिए, यीशु को केवल एक वचन ही कहना काफ़ी था; परन्तु पापों को क्षमा करने के लिए, उसे दुख सहना था। कोढ़ी को शुद्ध करने, मरे हुएों को जिलाने और तूफान को शांत करने के लिए, उसे केवल आदेश देना होता था; परन्तु पापों की क्षमा के लिए, उसे कलवरी जाना पड़ा। चंगाई देने की सामर्थ्य केवल सामर्थ्य का विषय था; परन्तु क्षमा करने की सामर्थ्य पीड़ा का विषय था—क्रूस पर मृत्यु की भयानक यातना और उससे भी अधिक भयानक पीड़ा, जब उन अंधकारमय घड़ियों में वह हमारे लिए “पाप ठहराया गया” और परमेश्वर से अलगाव का अनुभव किया गया।

पौलुस ने प्रभावशाली रूप से तीमुथियुस से कहा, “परमेश्वर ने पहले ही सबसे कठिन काम कर दिया है—उसने तुझे उद्धार दिया है! फिर छोटी बातों की क्यों चिंता करना—नीरो और उसके जैसे लोगों की घृणा और क्रूरता की क्यों चिंता करना? यदि परमेश्वर तुझे शहादत से नहीं बचाता, तो इसका कारण यह नहीं कि वह बचा नहीं सकता, बल्कि इसलिए कि वह तुझे अग्निमय रथ में अपने घर ले जाने के लिए एक उच्च उद्देश्य रखता है।” इस प्रकार पौलुस ने सब बातों को सही दृष्टिकोण में रख दिया।

ii. हमारी बुलाहट (1:9ख-10)

क. यह एक पवित्र बुलाहट है (1:9ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ने “हमें पवित्र बुलाहट से बुलाया है।” हमें पवित्र होना है! “पवित्र बनो,” परमेश्वर ने कहा, “क्योंकि मैं पवित्र हूँ” (1 पतरस 1:16)।

कल्पना कीजिए—पौलुस, जो एक पवित्र बुलाहट वाला मनुष्य है, नीरो के सामने आमने-सामने खड़ा है। यह दृश्य किसी चित्रकार के लिए कितना प्रभावशाली विषय होता! सम्राट अपने सिंहासन पर आलस्य से बैठा है, उसके चारों ओर चापलूस दरबारी हैं, जो उसकी नकल करते और उसकी झूठी प्रशंसा करते रहते हैं। सैनिक अपने चेहरों पर कठोर भाव लिए, मूर्तियों की तरह स्थिर खड़े हैं—उनके हथियार म्यान में हैं, परन्तु तैयार हैं। नीरो के चेहरे पर पतन और भ्रष्टता के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते हैं, और उसके होंठों पर एक उपहासपूर्ण मुस्कान है। उसके सिर पर जैतून का मुकुट है, और हाथ में राजदण्ड लेकर वह उपहास करते हुए पौलुस की ओर संकेत कर रहा है।

नीरो पापों से लदा हुआ है। वह अपनी ही माता की हत्या के लिए जाना जाता है। उसके पशु सरीखे दुर्गुणों की चर्चा पूरे रोम में कुख्यात है, और उसके हाथ अनेक मसीहियों के लहू से रंगे हुए हैं। और वहाँ दूसरी ओर, उस भव्य कक्ष की सारी शोभा के बीच पौलुस खड़ा है। उसकी आँखों ने यीशु के मुख को देखा है। अब वह नीरो की ओर देख रहा है। उसका जीवन, जो कष्टों द्वारा महान बनाया गया है, अब भी “परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ा” रहा है (तीतुस 2:10)। सम्मानपूर्ण, गंभीर और निडर होकर, वह कैसर की आत्मा से बात करने के लिए उतना ही तैयार है, जितना वह पहले राजा अग्रिप्पा की आत्मा से बात कर चुका था—बस नीरो उसे एक अवसर प्रदान कर दे। ये दोनों पुरुष, नीरो और पौलुस, एक दूसरे से कितने भिन्न हैं।

मसीहियों को अविश्वासियों से भिन्न होने के लिए बुलाया गया है। उन्हें एक पवित्र बुलाहट के साथ बुलाया गया है। तीमुथियुस भी बुलाया गया था, जैसे पौलुस बुलाया गया था। पौलुस ने उसे प्रेरित किया कि वह एक अलग जीवन जीकर संसार की दुष्टता को प्रकट करे। उसे पवित्रता को प्रकट करना था। अपने छोटे से स्थान में, उसे उतना ही विशिष्ट होना था जितना पौलुस वहाँ खड़ा था—भलाई से परिपूर्ण और चुपचाप बुराई को दोषी ठहराते हुए। उसे एक शब्द भी कहने की आवश्यकता नहीं थी; पवित्रता उससे झलकती थी, और हम निश्चय कर सकते हैं कि नीरो उससे घृणा करता था और उससे डरता भी था।

ख. यह एक उच्च बुलाहट है (1:9ग-10)

1. विरोधाभास (1:9ग)

परमेश्वर ने हमें पवित्रता के लिए बुलाया है, परन्तु “हमारे कामों के अनुसार नहीं।” हमारी पवित्र बुलाहट हमारे प्रयासों पर आधारित नहीं है। पौलुस तीमुथियुस को यह नहीं कह रहा था कि वह दाँत भींचकर, अपने जबड़े कसकर, इस दुष्ट संसार में परमेश्वर के लिए डटकर खड़ा हो जाए। वह यह भी नहीं कह रहा था कि तीमुथियुस अपनी सामर्थ्य या अपने संकल्प के बल पर पवित्र बने।

संसार ने संन्यासियों, भिक्षुओं, विचित्र तपस्वियों और पूर्वी “पवित्र पुरुषों” को बहुत देखा है। सिमयोन स्टाइलाइट्स (सन् 390–459) का उदाहरण ध्यान में आता है, जो अपने अद्भुत तप के लिए प्रसिद्ध था। उसने अपने आप को कष्ट देने के अनेक उपाय अपनाए, और उसके उपवास के कार्य लगभग अविश्वसनीय थे। एक बार उसने पूरे उपवास के समय के लिए स्वयं को एक मठ में दीवार के भीतर बंद करवा लिया। बाद में वह मठ के पास एक पहाड़ी पर चला गया और एक खंभे पर बैठने लगा। उसने अपने गले में एक भारी लोहे का कड़ा डाल लिया और अपने आप को उस खंभे से जंजीर से बाँध लिया। प्रारम्भ में वह खंभा लगभग छह फीट ऊँचा था, परन्तु समय के साथ उसने उसकी ऊँचाई बढ़ाते-बढ़ाते उसे बहुत अधिक ऊँचा बना दिया। उसके शिष्यों को सीढ़ी लगाकर उसके पास जाना पड़ता था और उसे थोड़ा-बहुत भोजन देना पड़ता था, जिसे वह स्वीकार करता था। तीस कठोर सीरियाई सर्दियों और तीस झुलसाती गर्मियों के दौरान—बिना हवा, वर्षा, धूप या पाले से किसी भी प्रकार की सुरक्षा के—सिमयोन उसी खंभे पर बैठा रहा। और रोमी कलीसिया ने उसे संत घोषित कर दिया।

यह निश्चित रूप से उस तरह की “पवित्रता” नहीं है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है। सिमयोन का वह खंभा केवल आत्म-अनुशासन, कट्टरता और पवित्रता की एक गलत धारणा का स्मारक था। ऐसा

तपस्वी जीवन मनुष्य के अपने प्रयासों का अत्यधिक रूप है। भिक्षु मार्टिन लूथर भी इसी मार्ग पर आगे बढ़ रहा था, जब परमेश्वर ने उससे भेंट की और उसे सच्चे सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा।

2. अवधारणा (1:9द-10)

(i) महान संकल्प (1:9द-च)

(क) क्या हुआ था (1:9द-इ)

परमेश्वर के पास हमें पवित्र बनाने की एक उत्तम योजना है। वह प्रत्येक विश्वासी को स्वयं प्रभु की पवित्रता प्रदान करता है। परमेश्वर हमें पवित्र होने के लिए बुलाता है जो उस “उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।” “उद्देश्य” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “जो किसी के सामने रखा गया है।” इसका लैटिन समकक्ष प्रोपोसिटुम है, जिससे हमारा अंग्रेज़ी शब्द “प्रस्ताव” निकला है।

परमेश्वर ने यह ठाना है कि वह विश्वासियों को पवित्र बनाए। और इसे पूरा करने का साधन उसका अद्भुत अनुग्रह है। इसलिए हम अपनी आदमिक स्वभाव की दुष्टता के बावजूद, अपने स्वयं के प्रयासों और संकल्प के द्वारा पवित्र नहीं बनते। हम पवित्र इसलिए बनते हैं क्योंकि परमेश्वर, जिसने हमें पवित्र बनाने का निश्चय किया है, हमें मसीह के लहू से शुद्ध करता है और अपने पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर निवास करता है।

(ख) यह कब घटित हुआ (1:9फ)

परमेश्वर का अनुग्रह “जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।” मनुष्य का पतन परमेश्वर के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। हमें छुड़ाने, मेलमिलाप कराने और नया जन्म देने का निर्णय कोई बाद में सोचा गया विचार नहीं था, न ही यह पतन के प्रभाव को पलटने का कोई मजबूरी में किया गया प्रयास था। अनुग्रह की आवश्यकता पहले ही देखी जा चुकी थी और आदम के पतन से पहले ही उसकी व्यवस्था कर ली गई थी।

जब ग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित भी नहीं किया गया था, तब ही परमेश्वर ने यह निश्चय कर लिया था कि वह अंतरिक्ष के एक विशेष ग्रह पर और समय के एक निश्चित क्षण पर कार्य करेगा, ताकि आदम की पतित मानव जाति के लिए उद्धार को उपलब्ध कराए। उन्हें स्वयं मनुष्यों को पवित्र बनाना होगा।

तीमुथियुस की बुलाहट एक पवित्र बुलाहट थी। परमेश्वर ने उसे पवित्र बनाने का निश्चय किया था। परमेश्वर ने बुलाया था, और तीमुथियुस ने उस बुलाहट को स्वीकार किया था। अब इस प्रक्रिया को पलटने का कोई मार्ग नहीं था, न ही तीमुथियुस के लिए अपनी पवित्र बुलाहट से पीछे हटने का कोई विकल्प था। इसी ज्ञान से उसे अपने साहस को दृढ़ता प्रदान करना था! तीमुथियुस को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं थी। वह अब किसी ऐसे कार्य का भाग बन चुका था जो रोमी साम्राज्य या किसी भी सांसारिक शक्ति से कहीं बढ़कर था। और ऐसा ही हमारे साथ भी है।

(ii) महान प्रकाशन (1:10)

(क) इसका केंद्रबिंदु (1:10क)

पौलुस ने यह समझाने के बाद कि सनातन काल में परमेश्वर की योजना मनुष्य की पतित अवस्था के संबंध में कुछ स्थायी और अद्भुत करने की थी, उसने तीमुथियुस से कहा कि यह उद्देश्य “अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ है।”

पुराने नियम में परमेश्वर की योजना के संकेत अवश्य मिलते हैं, परन्तु मसीह के आगमन ने उसे पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दिया।

मसीह का पृथ्वी पर आगमन ने सब कुछ सदा के लिए बदल दिया। परमेश्वर का पुत्र, जो मनुष्य का पुत्र बना, मानो हमारे ग्रह पर बाहरी दुनिया से आया। शैतान का संसार पर जो अधिकार था, वह तोड़ दिया गया या “लूट लिया गया।” उसकी शक्ति पराजित हो गई (कुलुस्सियों 2:15)। कलवरी ने उसके लिए पूर्ण पराजय का संकेत दिया। अब उसकी कार्य करने की सामर्थ्य बहुत सीमित हो गई है और वह परमेश्वर की अनुमति के अधीन है—जैसा कि अय्यूब के जीवन में देखा गया। वास्तव में, अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध शैतान की गतिविधियों के रहस्य पर बहुत प्रकाश डालती है (अय्यूब 1:6-12; 2:1-8)।

जब मसीह पृथ्वी पर प्रकट हुआ, तब शैतान को घृणा और विरोध भड़काने की अनुमति दी गई—यहाँ तक कि उसने उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने की योजना भी बनाई। तब से शैतान को कलीसिया का विरोध करने, उसे सताने और संसार में अशांति फैलाने की अनुमति दी गई है, परन्तु केवल उतनी ही सीमा तक, जितनी उसकी गतिविधियाँ परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्यों—खोए हुएों को अनुग्रह देने और अपने नाम की महिमा प्रकट करने—के साथ मेल खाती हैं।

मसीह का दूसरा आगमन शैतान का सदा के लिए अन्त कर देगा। वह उस दिन को भली-भाँति जानता है और उस दिन से डरता भी है।

(ख) इसकी विशेषताएँ (1:10ख-ड)

(1) मसीह द्वारा शत्रु का सम्पूर्ण नाश कर दिया गया (1:10ख)

मनुष्य के विरुद्ध अपने युद्ध में शैतान का सबसे भयानक हथियार मृत्यु है। परन्तु यीशु ने “मृत्यु का नाश कर दिया है।” इब्रानियों 2:14-15 में समझाया गया है: “इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह (मसीह) आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले।” मृत्यु अंतिम शत्रु है। “उसे अंत के लिए छोड़ दो!” यह एक बुद्धिमानी भरी सलाह है। जब समय आता है, तब परमेश्वर मरने के लिए भी अनुग्रह देता है।

जब मसीह कब्र से विजयी होकर लौटा, तब उसने विजयी घोषणा की, “मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं” (प्रकाशितवाक्य 1:18)। मसीहियों के लिए, कब्र का भय अब समाप्त हो गया है। मृत्यु अब जीवन का द्वार बन गई है; हम तुरंत “देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहने” लगते हैं (2 कुरिन्थियों 5:8)। हम “मसीह के साथ रहने के लिए” यहाँ से प्रस्थान करते हैं, “क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है” (फिलिप्पियों 1:23)।

पौलुस क्या कर रहा था? वह तीमुथियुस के संकल्प को दृढ़ कर रहा था। ऐसी सच्चाईयों के प्रकाश में, नीरो और उसके जैसे लोग पूरी तरह महत्वहीन बन जाते हैं।

(2) मसीह के द्वारा भविष्य पूर्ण रूप से प्रज्वलित है (1:10ग-ड)

यीशु ने न केवल मृत्यु का नाश किया, बल्कि “जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।” उसने हमारे मृत्यु के समय को देखने के दृष्टिकोण को स्थायी रूप से बदल दिया। अंधकार के स्थान पर प्रकाश आ गया है, और मृत्यु के स्थान को जीवन ने ले लिया है। मृत्यु के विषय में जो कुछ भी भयानक है, उसे उसकी कब्र पर विजय के प्रकाश में देखना चाहिए। यहाँ तक कि मृत्यु की घड़ी में भी, हम अनन्त जीवन की उज्ज्वल सच्चाईयों से प्रकाशित हो सकते हैं।

शहीदों ने तो आग की लपटों के बीच भी विजय के गीत गाए हैं। पहला शहीद स्तिफनुस ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा और यीशु को खड़े हुए देखा, जो उसका स्वागत करने के लिए तैयार था (प्रेरितों के काम 7:56)। और भी अनेक मरते हुए विश्वासियों ने गवाही दी है कि जब वे स्वर्ग की ओर बढ़ रहे थे, तब उनके दर्शन में अद्भुत प्रकाश और सुंदरता भर गई थी। डी. एल. मूडी का मृत्यु का अनुभव भी बड़ा अद्भुत था। अपनी मृत्यु-शय्या के पास खड़े लोगों से उन्होंने बताया कि वह क्या देख रहा है। उन्होंने कहा, “यह कितना सुंदर है! परमेश्वर मुझे बुला रहा है, और मुझे जाना है।” उसने अपने उन दो नाती-पोतों की झलक भी देखी, जो बचपन में ही मर गए थे, और उनके नाम लेकर पुकारा: “मैं आइरीन और ड्वाइट को देख सकता हूँ,” उन्होंने कहा। इसके थोड़ी ही देर बाद, वह आनन्दपूर्वक उस पार चला गया।

(3) परमेश्वर के सेवक को याद रखें (1:11)

तीमुथियुस के भय को दूर करने के उद्देश्य से, पौलुस ने उसे परमेश्वर के आत्मा और परमेश्वर के पुत्र की याद दिलाई। अब वह एक अंतिम स्मरण दिलाता है। पौलुस तीमुथियुस से आग्रह करता है कि वह उसे याद रखे। यदि तीमुथियुस को प्रोत्साहन के लिए किसी दृश्यमान और स्पर्श योग्य स्रोत की आवश्यकता हो, तो वह अपने विश्वास के प्रिय पिता को स्मरण करे, जिसने उसे प्रभु की मृत्यु पर विजय के विषय में सिखाया था।

पौलुस ने तीमुथियुस को विश्वास के महान सत्यों की ओर संकेत किया। उसने कहा, “जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।” ठीक इसी कारण—कि वह एक प्रचारक, प्रेरित और उपदेशक था—पौलुस ने अपने आप को रोम की कालकोठरी में पाया। अपने वरदानों और योग्यताओं के साथ, वह व्यापार में जा सकता था। वह बहुत धन कमा सकता था। वह भूमध्यसागर के किसी द्वीप पर सुरक्षित और सुखी जीवन जी सकता था। परन्तु इसके स्थान पर, वह अन्यजातियों को मसीह तक पहुँचाने की अपनी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। वह तब भी सच्चा रहेगा जब वह नीरो के सामने खड़ा होगा। और उससे भी बढ़कर—वह निडर होकर उस पीड़ित मनुष्य को मसीह के पास लाने का प्रयास करेगा, जैसे उसने कई वर्ष पहले तीमुथियुस की आत्मा को मसीह के पास लाने का प्रयास किया था।

पौलुस अपनी कोठरी की पहरेदारी करने वाले हर एक सैनिक को मसीह के लिए जीतने का प्रयास करेगा। वह उस जल्लाद तक को भी पहुँचने की कोशिश करेगा, जिसे उसका सिर काटने के लिए नियुक्त किया गया था। वह मृत्यु के द्वार तक भी एक प्रचारक, प्रेरित और अन्यजातियों का शिक्षक बना रहेगा, क्योंकि परमेश्वर

ने उसे इसी के लिए नियुक्त किया था, और जिन सच्चाईयों का उसे प्रचार और शिक्षा देनी थी, वे संसार के सबसे महान सत्य थे।

अब तीमुथियुस को भी वही करना था। इस युद्ध में कोई छुट्टी नहीं है। एक बार जब हम भर्ती हो जाते हैं, तो मृत्यु तक भर्ती रहते हैं। देर-सवेर मृत्यु तो आनी ही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जब वह आए, तब हम अपने स्थान पर डटे हुए पाए जाएँ। हमारे लिए मृत्यु का अर्थ है—जीवन, अमरता और प्रकाश!

ख. उदाहरण (1:12-18)

(1) उल्लेखनीय उदाहरण (1:12-14)

(क) पौलुस का सताव (1:12क-ख)

अब प्रोत्साहन उदाहरण का रूप ले लेता है। अपने आप को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने के बाद, पौलुस अपने विषय में आगे भी बोलता रहा, क्योंकि उसने काफ़ी सताव सहा था।

वह एक प्रेरित होने के कारण सताव से मुक्त नहीं था, और न ही वह उससे तनिक भी भयभीत था। उसने लिखा, “इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं।” ये शब्द तीमुथियुस को स्पष्ट रूप से स्मरण दिलाते हैं कि पौलुस उससे कहीं अधिक कठिन परिस्थिति में था। तीमुथियुस स्वतंत्र था और कष्ट नहीं उठा रहा था, जबकि पौलुस बन्दीगृह में था और उस पर मृत्यु-दण्ड सुनाया जा चुका था।

पौलुस अपनी परिस्थितियों से व्याकुल हो सकता था। वह यह पूछ सकता था, “एक प्रचारक, प्रेरित और अन्यजातियों का उपदेशक होने का क्या यही मेरे विश्वासयोग्य सेवकाई का प्रतिफल है? क्या परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य सेवकों को ऐसा ही प्रतिफल देता है? क्या वह उन्हें शेरों के सामने छोड़ देता है?” नहीं! पौलुस ने कहा कि वह “लजाता नहीं।”

यहाँ “लजाता” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग किया गया है, वह एपाइस्कुनोमई है—वही प्रबल शब्द जिसे पौलुस ने रोमियों से कहते समय प्रयोग किया था कि वह “क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता” (रोमियों 1:16)। 2 तीमुथियुस 1:12 में एपाइस्कुनोमई का तात्पर्य “अपनी आशा में निराश होना” भी हो सकता है।

लेकिन पौलुस निराश नहीं था। वह जानता था कि परमेश्वर के प्रतिफल इस पृथ्वी पर नहीं दिए जाते। यदि वह शहीद होता—और लगभग निश्चित था कि वह अवश्य शहीद होगा—तो यह केवल उसके अन्य प्रतिफलों के साथ एक शहीद का मुकुट और जोड़ देता, जिसकी उसे आशा थी। वह इस बात से विचलित नहीं था कि परिस्थितियाँ इस प्रकार घटित हुई; उसने इस संसार में इससे बेहतर की अपेक्षा भी नहीं की थी (रोमियों 8:36; 2 कुरिन्थियों 11:23-33)। वह जानता था कि प्रभु ने उसे कभी निराश नहीं किया।

(ख) पौलुस का निश्चय (1:12ग-घ)

i. प्रभु की वास्तविकता के बारे में उसका आश्वासन (1:12ग)

“क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ,” पौलुस ने तीमुथियुस से कहा। यीशु का उसका पहला दर्शन किसी भी मनुष्य के लिए अत्यन्त प्रभावशाली था! दमिश्क के मार्ग पर उसने “स्वर्ग से प्रभु”

को देखा और उसके बाद वह सदा उसे उसी रूप में सोचता रहा (1 कुरिन्थियों 15:47)। पौलुस ने उसके हाथों में कीलों के निशान देखे थे, और उसने उसकी आवाज़ सुनी थी, जो कह रही थी, “मैं यीशु हूँ” (प्रेरितों के काम 22:8)। पौलुस की पहली गिरफ्तारी के कुछ समय बाद, प्रभु फिर उसके सामने प्रकट हुआ। उसने कहा, “हे पौलुस, ढाढ़स बाँध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी” (प्रेरितों के काम 23:11)।

पौलुस उन सत्यों की वास्तविकता को जानता था जिनका वह प्रचार करता था। उसके मन में उनके विषय में कभी कोई संदेह नहीं था, क्योंकि उसने यीशु से भेंट की थी—वह जो सर्व मनोहर है, दस हजारों में श्रेष्ठ है, जिसकी स्वर्गदूत आराधना करते हैं, वह “महिमा का राजा” है। उसी पहली, जीवन-परिवर्तन करने वाले, स्वर्ग में उठाए गए प्रभु के साथ हुए उसकी मुलाकात की स्मृति ने उसे सबसे तीव्र विरोध के बीच संभाले रखा।

ii. प्रभु की विश्वसनीयता के बारे में उसका आश्वासन (1:12घ)

पौलुस ने आगे कहा, “और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।” “मेरी धरोहर” इस वाक्य में एक निक्षेप या पूँजी का विचार सम्मिलित है—जैसे कोई धन बैंक में जमा करता है। पौलुस स्वर्ग के खजाने में अपनी धरोहर को जमा कर रहा था।

पौलुस ने कभी भी “उस दिन” को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया। वह सदा उस आने वाले दिन को अपने ध्यान में बनाए रखता था, जब विश्वासी मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होंगे और अपने शरीर में किए गए कामों के अनुसार प्रतिफल पाएँगे (1 कुरिन्थियों 3:12-15)। परमेश्वर हमें अपने अनुग्रह से उद्धार प्रदान करता है, और इसके लिए हमें सदा आभारी रहना हैं—अन्यथा कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाता। परन्तु वह प्रतिफल अनुग्रह से नहीं देता। प्रतिफल कमाने पड़ते हैं।

हालाँकि, केवल विश्वासयोग्य सेवा के लिए प्रतिफल पाने का विचार ही पौलुस को प्रेरित नहीं करता था। उसे यह विचार प्रेरित करती थी कि वह स्वयं यीशु से प्रतिफल पाएगा—उसके मुख से “हे धन्य दास!” सुनेगा। पौलुस को स्तिफनुस की विजयी मृत्यु की स्मृति से भी प्रेरणा मिलती थी। कितना अद्भुत अनुभव रहा होगा स्तिफनुस के लिए, जब उसने महिमा के प्रभु को, स्वर्गदूतों की सेनाओं से घिरे हुए, अपने स्वागत के लिए खड़े हुए देखा था! मानो वह कह रहा हो, “हे धन्य दास, स्तिफनुस!”

पौलुस भी स्वर्ग में उसी प्रकार का महिमामय प्रवेश चाहता था। नीरो के क्रूर सताव उसके पीछे लगे हुए थे, परन्तु वे उसे और आगे बढ़ाने का ही कार्य कर रहे थे। मार्ग के अंत में, स्वर्ग के फाटक उसके लिए चौड़े खुले होंगे, और गवाहों का एक बड़ा समूह उसे बुला रहा होगा। यीशु उसके लिए उसके योग्य प्रतिफलों के साथ प्रतीक्षा कर रहा होगा।

(ग) पौलुस की दृढ़ता (1:13-14)

i. तीमुथियुस उस सुसमाचार के प्रति ज़िम्मेदार था जो उसे सौंपा गया था (1:13)

क. इसका पौलुस-आधारित स्रोत (1:13क)

पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस स्वर्ग के खजाने में अपनी धरोहर जमा करता रहे, ताकि समय आने पर वह भी अच्छा प्रतिफल पाए। इसलिए प्रेरित ने उससे कहा, “जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।”

यहाँ “आदर्श” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका तात्पर्य है “रूपरेखा, खाका, नमूना” है। उदाहरण के लिए, एक रूपरेखा एक मार्गदर्शक होती है—एक ढाँचा, जिस पर पूरा संदेश निर्मित किया जाता है। तीमुथियुस इतने समय तक पौलुस के साथ रहा था कि उसने उसके उपदेशों के मुख्य बिंदुओं और सीमाओं को भली-भाँति समझ लिया था। निस्संदेह, तीमुथियुस पौलुस की अधिकांश रूपरेखाएँ कंठस्थ जानता था।

ख. इसका मूल स्रोत (1:13ख)

सुसमाचार अपनी सबसे सरल रूपरेखा में मसीह यीशु, विश्वास और प्रेम के बारे में है। दूसरे शब्दों में, यह एक व्यक्ति, एक दृढ़ विश्वास और एक उत्साह के विषय में है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे अद्भुत व्यक्ति है—सम्पूर्ण ब्रह्मांड में सबसे महान। सुसमाचार उसके आगमन, उसके चरित्र, उसकी सेवकाई, उसके क्रूस, उसकी विजय, उसके राज्याभिषेक और उसके पुनः आगमन के विषय में है। यह विश्वास वही है जिसका उल्लेख पौलुस ने किया है (1:12)। यह एक दृढ़ विश्वास है कि मसीह में केन्द्रित सभी महान सच्चाइयाँ पूर्ण रूप से भरोसेमंद हैं। ऐसा विश्वास पूर्ण और अडिग समर्पण की माँग करता है। साथ ही, एक ऐसा उत्साह भी है—“इतना अद्भुत, इतना दैवीय”—जो हमें अपने आलिंगन में ले लेता है और हमें अपनी प्रबल लहर पर सवार करके स्वर्णिम तट की ओर ले जाता है, और मार्ग में दूसरों के प्रति प्रेम से भर देता है। यही वह सुसमाचार था जो तीमुथियुस को सौंपा गया था। उसे प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने विश्वास पर छाया डालने नहीं देना चाहिए था।

ii. तीमुथियुस उस वरदान के लिए ज़िम्मेदार था जो उसे सौंपा गया था (1:14)

अब पौलुस तीमुथियुस के वरदान की ओर आता है। यह उसे दिया गया था, और उसे उसकी रखवाली भी करनी थी: “और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।” “जो हम में बसा हुआ है” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ “निक्षेप” है। यही शब्द 1:12 में भी प्रयोग किया गया है, जहाँ इसका अनुवाद “जो मैंने उसे सौंपा है” किया गया है। “रखवाली कर” के लिए प्रयुक्त शब्द भी यहाँ और 1:12 दोनों में एक ही है।

पौलुस ने अपने निवेश ऐसी जगह किए थे जहाँ वे सुरक्षित रखे जाएँगे। तीमुथियुस को भी ऐसा ही करना था, और यह भी स्मरण रखना था कि जिस पर पौलुस ने भरोसा किया था, उसी ने तीमुथियुस को भी एक विश्वास सौंपा है। जो धरोहर तीमुथियुस को सौंपी गई थी, वह सत्य था। उसे इस मूल्यवान और पवित्र धरोहर की “रखवाली” करनी थी, परन्तु उससे यह अपेक्षा नहीं की गई थी कि वह इसे अपनी ही शक्ति से संभालेगा। उसके पास पवित्र आत्मा था, जो उसे इस विश्वास के प्रति सच्चा बनाए रखेगा। ऐसे समय में, जब सताव से बचने के लिए लोग मसीह में प्रकट सत्य का इनकार करने का मार्ग चुन सकते थे, तीमुथियुस को इस प्रकार के विश्वासघात का विचार भी अपने मन में आने नहीं देना था।

(2) नकारात्मक उदाहरण (1:15)

तीमुथियुस के भय को दूर करने के लिए, पौलुस ने स्वयं को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। और एक विरोधाभास दिखाने के लिए, उसने अपने त्यागे जाने का नकारात्मक उदाहरण भी सामने रखा।

संकट की घड़ी में एक प्रमुख प्रान्त ने उसे छोड़ दिया था। उसने कहा, “तू जानता है कि आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं।” यहाँ “आसिया” से अभिप्राय एशिया के रोमी अधिकार के प्रान्तों से है, जिसमें मूसिया, लूदिया, फ्रूगिया का अधिकांश भाग, कारिया, एजियन समुद्र के तटीय क्षेत्र और तटवर्ती द्वीप सम्मिलित थे। इफिसुस, वे नगर जिनका उल्लेख यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य (अध्याय 1-2) में किया है, साथ ही कुलुस्से और हियरापुलिस—ये सब “आसिया” के अंतर्गत आते थे। इस प्रकार, उस महान प्रेरित का त्याग व्यापक और बड़े स्तर पर हुआ था। यह निस्संदेह उसके हृदय को तोड़ देने वाला रहा होगा।

हमें शेक्सपियर के नाटक जूलियस सीज़र में कैसर के अंतिम संस्कार पर मार्क एंटनी के प्रसिद्ध भाषण की याद आती है। एंटनी ने उस महान रोमी के मृत शरीर और उन घावों की ओर संकेत किया, जो विभिन्न षड्यंत्रकारियों ने उसे दिए थे। उसने कहा,

देखो! इसी जगह कैसियस का खंजर घुसा था:

देखो ईर्ष्यालु कैस्का ने कैसा घाव किया था।

फिर, कैसर के सबसे करीबी दोस्त ब्रूटस द्वारा किए गए घाव की ओर इशारा करते हुए, मार्क एंटनी ने आगे कहा,

इसके माध्यम से प्रिय ब्रूटस ने छुरा घोंपा

और, जैसे ही उसने अपना शापित लोहा निकाला,

देखो, कैसर का खून कैसे उसके पीछे-पीछे बह रहा था,

जैसे दरवाज़ों से बाहर निकल रहा हो, यह तय करने के लिए कि

ब्रूटस ने इतनी बेरहमी से दस्तक दी थी या नहीं;

क्योंकि ब्रूटस, जैसा कि आप जानते हैं, कैसर का दूत था:

हे देवताओं, न्याय करो, कैसर उससे कितना प्यार करता था!

यह सबसे निर्दयी घाव था।[3]

“आसियावाले सब मुझ से फिर गए हैं,” पौलुस ने लिखा। निश्चय ही, उसके लिए यह “सबसे निर्दयी आघात” था। जब वह यह पत्री लिख रहा था, तो मानो उसकी आवाज़ में गहरा करुण भाव सुनाई देता है। उसने एशिया माइनर में अपना कुछ सर्वोत्तम कार्य किया था, यद्यपि वहाँ की कलीसियाओं में वर्षों से उपदेश संबंधी अशांति बनी हुई थी। यहूदियों ने उसके विश्वासियों को भटकाने के लिए हर संभव प्रयास किया था। प्रारंभिक ग्नॉस्टिकवाद उस क्षेत्र में फैल रहा था, और संसार के उस भाग में पौलुस की सेवा को कमजोर किया जा रहा था। यहाँ तक कि जब पौलुस यह लिख रहा था, तब भी तीमुथियुस इफिसुस में इस बढ़ती हुई लहर को रोकने का प्रयास कर रहा था।

निस्संदेह, सभी लोग “फिर नहीं गए थे,” परंतु उस क्षेत्र की सभी कलीसियाओं में कुछ लोग अलग हो रहे थे, और उनकी संख्या लगातार बढ़ रही थी। संभवतः, पौलुस की कैद ने उसके शत्रुओं को उसके और उसकी शिक्षाओं के विरुद्ध बढ़ते हुए आक्रमण करने के लिए साहस दिया था। निस्संदेह, नीरो के हाथों एक अपराधी के रूप में उसकी निकट आने वाली मृत्यु ने भी कुछ विश्वासियों के हृदय में भय उत्पन्न कर दिया था। अपनी सुरक्षा के लिए उन्होंने अपने और पौलुस के बीच दूरी बना लेने का निर्णय किया। ऐसी कायरता ने प्रेरित को आश्चर्यचकित नहीं किया, परंतु इससे वह निराश अवश्य हुआ। उसने बड़ी कोमलता से तीमुथियुस को इन बातों की याद दिलाई। उसका उद्देश्य अपने युवा मित्र की निष्ठा को दृढ़ करने के लिए दिए गए तर्कों को और अधिक प्रभावशाली बनाना था।

“फूगिलुस और हिरमुगिनेस” नाम के दो व्यक्ति उन लोगों में थे जिन्होंने पौलुस को छोड़ दिया था। जो हजारों लोग उससे मुँह मोड़ रहे थे, उनमें ये दो व्यक्ति विशेष रूप से अलग दिखाई देते थे। स्पष्ट है कि तीमुथियुस उन्हें अच्छी तरह जानता था, परंतु हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते। पौलुस ने दया और प्रेम के कारण उनके मामले को उजागर नहीं किया। फिर भी ऐसा लगता है कि उनकी अविश्वासयोग्यता ने उसे विशेष रूप से काफ़ी आहत किया था। संभव है कि एक समय वे पौलुस की विशेष चिंता करते रहे हों। शायद, प्रभु का इनकार करने से पहले पतरस की तरह, उन्होंने भी यह प्रतिज्ञा की हो कि यदि सब लोग उसे छोड़ दें, तो भी वे कभी नहीं छोड़ेंगे।

या संभव है कि वे किसी ऐसे गुट के अगुवा थे, जो अपने साथ बहुत से अन्य लोगों को भी ले गए। हम नहीं जानते, परंतु पौलुस जानता था, प्रभु जानता था, और तीमुथियुस भी जानता था। हम 2 तीमुथियुस 1:15 की पंक्तियों के बीच से यह बात समझ सकते हैं। वास्तव में, पौलुस ने तीमुथियुस से मानो यह कहा, “निश्चय ही तुम फूगिलुस और हिरमुगिनेस के समान दल में शामिल होना नहीं चाहोगे।”

(3) उत्तम उदाहरण (1:16-18)

(क) उनेसिफुरुस एक प्रिय व्यक्ति था (1:16)

अब पौलुस कुछ पदों को उनेसिफुरुस के विषय में समर्पित करता है, जो उसके लिए अपना सब कुछ जोखिम में डालने को तैयार व्यक्ति था। प्रेरित ने लिखा, “उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे।” “घराने” का उल्लेख, स्वयं उनेसिफुरुस की बजाय, यह संकेत देता है कि वह पहले ही सताव का शिकार हो चुका था।

“क्योंकि उसने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया,” पौलुस ने कहा। ऐसा प्रतीत होता है कि कई बार यह क्रूस का साहसी सिपाही बाज़ार जाकर पौलुस के लिए आवश्यक वस्तुएँ लाता था और फिर उन्हें कारागृह में पहुँचाने का अवसर ढूँढ़ता था। जिस शब्द का अनुवाद “जी को ठंडा किया” किया गया है, उसका शाब्दिक अर्थ है “फिर से ताज़ा करना।” संभवतः उनेसिफुरुस प्रेरित के लिए ताज़ा फल और पेय पदार्थ लाता था, जिससे उसे राहत और सुकून मिलता था।

पौलुस ने आगे कहा, “और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ।” जिस मूल शब्द का अनुवाद “जंजीर” किया गया है, वह “हलुसिस” है, जिसका अर्थ “हथकड़ी” होता है। निस्संदेह, पौलुस के मन में उस जंजीर का विचार रहा होगा, जिससे वह चौबीसों घंटे एक रोमी सैनिक के साथ जकड़ा रहता था। उनेसिफुरुस का

पौलुस की कोठरी में सामान पहुँचाना साहस का काम था, क्योंकि पौलुस से बँधे सभी सैनिक मित्र स्वभाव के नहीं थे। इसमें जोखिम भी था, क्योंकि किसी कैदी के साथ जकड़े रहना एक कठिन और थकाने वाला कार्य था, जिसमें हर गतिविधि उसी के तालमेल के साथ करनी पड़ती थी। कुछ सैनिक संभवतः नीरो के उस झूठ पर विश्वास करते थे कि मसीही—जिनमें पौलुस प्रमुख था—ने रोम में आग लगाई थी; संभव है कि उनमें से कुछ ने उस आग में अपने प्रियजनों को खोया भी हो। संभवतः कुछ पहरेदार जासूस का भी काम करते थे और पौलुस की बातचीत तथा उससे मिलने आने वालों के नाम अधिकारियों को बताते थे। उनेसिफुरुस ने ऐसी बातों से भयभीत होने से इनकार किया। पौलुस ने प्रार्थना की कि “प्रभु दया करे” और “उनेसिफुरुस के घराने” की रक्षा करे।

(ख) उनेसिफुरुस एक साहसी व्यक्ति था (1:17)

“पर जब वह रोम में आया,” पौलुस ने लिखा, “तो बड़े यत्न से ढूँढ़कर मुझ से भेंट की।” रोम के इलाकों में—बाज़ारों में, सभा-स्थलों में, सैनिक छावनियों में, धनी लोगों के निवास क्षेत्रों में, न्यायालयों में, और दयनीय दास-निवासों में—पौलुस के ठिकाने के बारे में पूछताछ करते हुए घूमना एक अत्यंत जोखिम भरा काम था। स्पष्ट है कि अधिकारी इस प्रसिद्ध कैदी की गिरफ्तारी, मुकदमे और कारावास की बात को दबा रहे थे; संभवतः उन्हें भय था कि पौलुस या उसके अनुयायी कोई दंगा भड़का सकते हैं। फिर भी, उनेसिफुरुस ने साहसपूर्वक, “बड़े यत्न से,” पौलुस को ढूँढ़ निकाला।

जिस मूल शब्द का अनुवाद “बड़े यत्न से” किया गया है, वह “स्पूदायोस” (अर्थात् “उत्साही”) से आया है, जिसका अर्थ है “शीघ्रता से,” और यह कर्तव्य से बढ़कर किए गए परिश्रम को दर्शाता है। उनेसिफुरुस से कम दृढ़ निश्चयी कोई भी व्यक्ति हार मानकर कह देता, “कम से कम मैंने कोशिश तो की!” परंतु वह ढूँढ़ता ही रहा, और उसकी मेहनत सफल हुई। पौलुस ने कहा, “मुझ से भेंट की।” वह क्या ही शानदार मुलाकात रही होगी! फिर एक दिन ऐसा आया जब उनेसिफुरुस नहीं आया। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपने साहस और प्रेम की अंतिम कीमत चुका दी थी।

(ग) उनेसिफुरुस एक आशीषित व्यक्ति था (1:18)

पौलुस की उनेसिफुरुस के लिए की गई प्रार्थना पर ध्यान दें: “प्रभु करे कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो।” वह चाहता था कि उनेसिफुरुस को स्वर्ग में उसका प्रतिफल मिलता हुआ देखे। पौलुस अपने मित्र के उदार और निरंतर सहयोग को याद करता था। उसने तीमुथियुस से कहा, “और जो जो सेवा उसने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भाँति जानता है।” स्पष्ट है कि उनेसिफुरुस इफिसुस में रहता था, जहाँ उस समय तीमुथियुस मंडली में पासबानी कर रहा था।

जिस मूल शब्द का अनुवाद “भली-भाँति” किया गया है, वह “बेल्टियोन” है, जिसका अर्थ है “अधिक बेहतर।” वास्तव में, पौलुस तीमुथियुस से यह कह रहा था, “इस प्रिय भाई ने इफिसुस में मेरे लिए जो कुछ किया, उसे तू मुझसे भी अधिक बेहतर रीति से जानता है।”

“अब,” पौलुस आगे कहता है, “या तो तुम फूगिलुस और हिरमुगिनेस के समान बनोगे और मेरी जंजीर से भयभीत हो जाओगे, या तुम उनेसिफुरुस के समान बनोगे।”

ख. तीमुथियुस की पास्टरीय संबंधी जिम्मेदारियाँ: वर्तमान (2:1-26)

1. तीमुथियुस को एक भण्डारी होना था (2:1-2)

पौलुस ने तीमुथियुस को एक पास्टर के रूप में उसकी बड़ी जिम्मेदारियों की याद दिलाई। उससे बहुत अपेक्षा की गई थी।

एक दिन स्वर्ग में पुस्तकें खोली जाएँगी, और हम सब के साथ वह भी, इस बात के लिए उत्तरदायी ठहराया जाएगा कि उसने अपनी योग्यताओं, अवसरों और जिम्मेदारियों के साथ क्या किया।

जब मैं युवा था, तब मैं एक बड़े कनाडाई बैंक की एक शाखा में काम करता था। बैंक के कार्य के दौरान, जब मैं और अन्य कर्मचारी ग्राहकों के साथ व्यस्त रहते थे, तो हमारी मेज़ पर कागज़ात का ढेर लग जाता था। जब आखिरी ग्राहक चला जाता था, तो मानो राहत की एक स्पष्ट साँस सुनाई देती थी। हम अपने कोट उतार देते थे और अपनी टाई ढीली कर लेते थे। कॉफी की सुगंध वातावरण में भर जाती थी, और हम जमा हुए कामों के ढेर को निपटाने में लग जाते थे। नकदी गिनी जानी थी, खातों को व्यवस्थित करना होता था, पत्र-व्यवहार के ढेर को संभालना होता था, और एकत्रित धन को तिजोरी में सुरक्षित रखना होता था।

लगभग साल में एक बार, यह नियमित कार्य अचानक बाधित हो जाता था। हम दरवाज़े पर दस्तक सुनते थे, और कोई यह तीखी टिप्पणी करता था कि कोई देर से आया ग्राहक सोचता है कि वह समय के बाद भी लेन-देन कर सकता है। फिर एक और दस्तक होती थी। कोई दरवाज़ा खोलने जाता—और वहाँ आधा दर्जन बैंक परीक्षक खड़े मिलते! वे गिद्धों की तरह कैशियरों पर टूट पड़ते, तिजोरी में घुस जाते, और उसके अंदरूनी विभागों की चाबियाँ माँगते। अगले एक सप्ताह तक, वे हर चीज़ की बारीकी से जाँच-पड़ताल करते। वे सारी नकदी गिनते, सभी दस्तावेज़ों और निक्षेपों की जाँच करते, पिछले वर्ष के हर लेन-देन की समीक्षा करते, और विस्तृत रिपोर्ट तैयार करते। उनका एक ही उद्देश्य था—हमें यह स्मरण कराना कि हम दूसरों के धन के भण्डारी हैं, और जो कुछ हम उस के साथ करते हैं, उसके उपयोग के लिए हम पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं।

तीमुथियुस एक भण्डारी था। एक दिन उसे अपने भण्डारीपन के लिए उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

क. उसे क्या निश्चय करना चाहिए (2:1)

भण्डारीपन के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है, इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा, “इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “बलवन्त हो” किया गया है, उसका शाब्दिक अर्थ है “भीतर से, मजबूत होना।” यह आत्मा और उद्देश्य की दृढ़ता का भाव व्यक्त करता है। यही शब्द प्रेरितों के काम 9:22 में स्वयं पौलुस के लिए भी प्रयोग किया गया है। वहाँ हम पढ़ते हैं कि अपने अद्भुत मन-परिवर्तन के थोड़े ही समय बाद, “परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे-देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुँह बन्द करता रहा।” पौलुस का संकल्प इतना प्रबल था कि “यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा” (प्रेरितों के काम 9:23)। अब पौलुस अपने “पुत्र” में भी ऐसा ही दृढ़ संकल्प देखना चाहता

था। तीमुथियुस को मजबूत होना आवश्यक था। यह निर्बल होने का समय नहीं था। उसके पास परमेश्वर के असीम अनुग्रह के सभी साधन उपलब्ध थे, जिनसे वह सामर्थ्य प्राप्त कर सकता था।

2 तीमुथियुस 2:1 में जिस मूल शब्द का अनुवाद “पुत्र” किया गया है, वह “टेक्नोन” है, जिसमें कोमलता का भाव निहित है। इसका अर्थ “संतान” है, और यह उसके पर्यायवाची “हुइओस” से भिन्न है, जो संबंध के स्वरूप पर बल देता है; जबकि “टेक्नोन” जन्म के तथ्य पर जोर देता है। प्रेरित चाहता था कि तीमुथियुस उस क्षण को स्मरण करे जब उसने उद्धार पाया था और विश्वास में पौलुस की “संतान” बना था।

ख. उसे क्या याद रखना चाहिए (2:2क)

तीमुथियुस को यह स्मरण रखना था कि पौलुस ने उसे क्या सिखाया था: “और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं।”

इन “बातों” में पूरे नये नियम का पवित्रशास्त्र सम्मिलित था। तीमुथियुस ने सुसमाचार के अधिकांश महान सत्य सीधे पौलुस के अपने मुख से सुने थे। इस बात के “बहुत से गवाह” थे कि पौलुस ने काफ़ी उत्साह के साथ तीमुथियुस को अपना शिष्य बनाया था। यदि अब यह युवा पीछे हट जाता, तो पौलुस सार्वजनिक रूप से लज्जित होता।

पौलुस को पवित्र आत्मा ने शिक्षा दी, उसका मार्गदर्शन किया और उसे प्रेरित किया। उसने स्वयं जीवित हुए मसीह को देखा था। यरूशलेम की कई यात्राओं के दौरान उसने पतरस, यूहन्ना और अन्य प्रमुख जनों से मसीह के जीवन के विवरणों के विषय में प्रश्न किए थे।

पौलुस ने पुराने नियम के अपने व्यापक ज्ञान को कलवरी के क्रूस पर मसीह की मृत्यु के प्रकाश में परखा और अपने विश्वासों को परिष्कृत किया। उसने उदारता से अपना ज्ञान, समझ और बुद्धि तीमुथियुस के मन में उंडेल दिया। और तीमुथियुस ने भी यह सब पूरी तरह ग्रहण कर लिया। पौलुस अपने शिष्य की समझ से इतना संतुष्ट था कि कई अवसरों पर, जब उसने पवित्र आत्मा से प्रेरित पत्र लिखे, तो उसने अपने इस युवा सहकर्मी को बुलाकर उसे अपने साथ पत्री पर हस्ताक्षर करने के लिए भी आमंत्रित किया।

तीमुथियुस ने जो कुछ पौलुस से सीखा था, वह केवल धर्मविज्ञान नहीं था। पौलुस ने उस सत्य को अपने जीवन में जीकर दिखाया था। वह वास्तव में “उस अनुग्रह में जो मसीह यीशु में है, बलवन्त” था।

तीमुथियुस फिलिप्पी में पौलुस के साथ था, जब पौलुस और सीलास दोनों को पीटा गया, कारागृह में डाल दिया गया, भीतर की कोठरी में बंद किया गया, और उनके पाँव बेड़ियों में जकड़ दिए गए थे। पौलुस अपने रोमी नागरिक होने का दावा करके इस क्रूर व्यवहार से आसानी से बच सकता था, परंतु तब भीड़ अपना क्रोध तीमुथियुस पर निकालती। इस खतरे से तीमुथियुस की रक्षा करके, पौलुस ने अपनी दृढ़ता प्रकट की। इसी सामर्थ्य ने पौलुस और सीलास को उनकी कोठरी में भजन गाने के योग्य बनाया, और उसी के द्वारा उन्होंने कारागृह के हाकिम और उसके परिवार को मसीह में जीत लिया (प्रेरितों के काम 16:16-34)।

अब पौलुस एक ऐसे कारागृह में था जो फिलिप्पी के बंदीगृह से कहीं अधिक भयानक था। वह एक कहीं अधिक गंभीर आरोप और एक कहीं अधिक भयानक न्यायाधीश का सामना कर रहा था। फिर भी वह दृढ़

बना रहा। उसका एकमात्र भय यह था कि उसका युवा शिष्य, जिसमें उसने अपने जीवन का इतना कुछ उंडेल दिया था, कहीं दबाव और सताव के सामने टूट न जाए।

ग. उसे क्या पुनः उत्पन्न करना चाहिए (2:2ख-ग)

जिस प्रकार पौलुस ने अपने आप को तीमुथियुस में उंडेल दिया था, उसी प्रकार तीमुथियुस को भी अपने आप को दूसरों में उंडेलना था। वे लोग, बदले में, आगे बढ़ती हुई पीढ़ियों के शिष्यों में अपने आप को उंडेल सकते थे। इस प्रकार उसे विस्तृत रूप से पुनरुत्पन्न करना था (“उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे”)। साथ ही उसे उदाहरण के द्वारा भी पुनरुत्पन्न करना था (“जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों”)। पौलुस उसके लिए जो कुछ था, तीमुथियुस को भी दूसरों के लिए वही बनना था।

इस पद में हमें कलीसिया की उन्नति के लिए पवित्र आत्मा का सिद्धांत मिलता है—वही सिद्धांत जिसे पौलुस ने अपनाया। पौलुस ने कोई चालाक उपाय नहीं अपनाया। उसे ऐसे किसी प्रतियोगिता की आवश्यकता नहीं थी जिसमें अधिक से अधिक लोगों को लाने वाले को इनाम दिया जाए। उसने न तो यरूशलेम की मुफ्त यात्राएँ दीं और न ही रोम के भ्रमण की व्यवस्था की। उसने न ऊँट बाँटे और न कोई आकर्षक वस्तुएँ बाँटीं। उसने एक कलीसिया को दूसरी कलीसिया से विश्वासियों और बपतिस्मों की संख्या में प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। वह ऐसे उपायों को तुच्छ समझता था। पौलुस ने लोगों को एक-एक करके कलीसिया में जोड़ा। उसकी विधि मसीह की विधि के समान थी। प्रभु ने अपने आप को बारह जनों में उंडेल दिया, और जब वे पवित्र आत्मा से भर उठे, तो उन्होंने अपने आप को दूसरों में उंडेल दिया।

2. तीमुथियुस को एक सैनिक बनना था (2:3-4)

क. धीरज के साथ (2:3)

पौलुस ने आगे कहा, “मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुःख उठा।”

जब मैं अठारह वर्ष का था, मुझे ब्रिटिश सेना में भर्ती किया गया। प्रशिक्षण शिविर में हम नए रंगरूटों को “कठिनाइयों को सहना” सिखाकर सैनिक बनाया जाता था। अधिकारियों ने हमारे भीतर सेना के अनुशासन और आज्ञाकारिता के सिद्धांतों को स्थापित किया।

हमने घंटों की ड्रिल, अंतहीन परेड, लंबी दूरी के कदम-ताल, निरंतर दबाव, बेस्वाद खाना, पहरेदारी, कठोर अधिकारियों का व्यवहार, फटकार, और प्रतिकूल मौसम का सामना किया। यह पूरी प्रक्रिया हमें कठोर और मजबूत बनाने के लिए थी।

पौलुस के समय के रोमी सैनिक संसार के सबसे कठोर, अनुशासित और माहिर सैनिक थे। पौलुस उनमें से बहुतों को जानता था, और उनका उदाहरण उसके मन में था जब उसने तीमुथियुस को याद दिलाया कि वह “यीशु मसीह का एक सैनिक” है। जिस क्षण उसने मसीह को स्वीकार किया, उसी क्षण वह उस सेना में भर्ती हो गया था। उसे “कठिनाइयों को सहना” सीखना था। एक अच्छा सैनिक किसी कठिन कार्य या खतरनाक परिस्थिति का सामना करने से नहीं डरता और पीछे नहीं हटता। वह जानता है कि उसका जीवन अर्पित करने योग्य है, और आवश्यकता पड़ने पर उसे इसको समर्पित करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जिस शब्द का अनुवाद “कठिनाइयों को सहना” किया गया है, उसका शाब्दिक अर्थ है “बुराई सहना, कष्ट उठाना, दुःख सहना।”

परमेश्वर उन लोगों को, जो मसीही बनते हैं, विभिन्न लाभों का आकर्षक विवरण देने वाली पुस्तिकाएँ नहीं देता। इसके विपरीत, वह उन्हें सैनिकों के रूप में भर्ती करता है और उन्हें एक ऐसे युद्ध में भाग लेने के लिए बुलाता है जो उनकी मृत्यु तक या प्रभु के लौटने तक समाप्त नहीं होगा। जब पौलुस यह लिख रहा था, तब वह स्वयं एक संघर्ष करता हुआ योद्धा था, एक युद्धबंदी जो मृत्यु दंड का सामना कर रहा था। वह अंत तक विश्वासयोग्य बना रहने वाला था, और वह चाहता था कि तीमुथियुस में भी उतनी ही सहनशीलता हो जितनी उसमें थी।

ख. बिना उलझन के (2:4)

(1) उसका कर्तव्य (2:4क)

तीमुथियुस सक्रिय सेवा में था और मसीही जगत की एक महत्वपूर्ण चौकी पर तैनात था। इफिसुस एक महत्वपूर्ण मार्ग पर स्थित था, और उस नगर की कलीसिया सुसमाचार प्रचार का एक प्रमुख केंद्र थी। यह सम्मान का स्थान था, और तीमुथियुस वहाँ पौलुस के चुने हुए प्रतिनिधि के रूप में तैनात था। “युद्ध करने वाले व्यक्ति” के लिए किसी भी प्रकार के समझौते या समर्पण का कोई स्थान नहीं हो सकता था।

(2) उसका अलगाव (2:4ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को यह स्पष्ट कर दिया कि कोई भी सैनिक “अपने आप को संसार के कामों में नहीं फँसाता।”

मुझे फिर से ब्रिटिश सेना में अपनी सेवा की याद आती है। जब मैं भर्ती हुआ, तो मुझे एक वर्दी, भोजन का सामान और एक बंदूक दी गई। भर्ती के अगले दिन मुझे अपने नागरिक कपड़ों के लिए एक गत्ते का डिब्बा दिया गया, जिन्हें पैक करके घर भेज दिया जाना था। अब मैं सेना में था! मुझे अपने नागरिक जीवन के कई अधिकारों और स्वतंत्रताओं को त्यागना पड़ा। अब मैं बैंकिंग में अपना करियर जारी नहीं रख सकता था, अपने घर की कलीसिया में नियमित रूप से नहीं जा सकता था, घर पर नहीं रह सकता था, अपने प्रिय खेल में भाग नहीं ले सकता था, और न ही अपनी इच्छा से कहीं आ-जा सकता था। मैं राजनीति में भी केवल सीमित रुचि ही रख सकता था। मैं एक सैनिक था, और इस नाते मुझे अपने आप को हर उस चीज़ से मुक्त रखना था जो मुझे अधिकारियों के आदेशों का पालन करने के लिए उपलब्ध रहने में बाधा डाल सकती थी।

एक साधारण नागरिक स्वतंत्र होता है। वह अपने निर्णय स्वयं ले सकता है, अपने समय का उपयोग अपनी इच्छा के अनुसार कर सकता है, और खेल, शिक्षा, व्यापार या राजनीति में सम्मिलित हो सकता है। परंतु एक सैनिक ऐसा नहीं कर सकता। वह किसी भी ऐसी बात में अपने आप को नहीं उलझा सकता जो उसके कर्तव्य में बाधा डाल सकती हो। वह अपने अधिकारी से यह नहीं कह सकता, “क्षमा कीजिए, महोदय, मैं कल जहाज़ पर सवार नहीं हो सकता। मैं एक बड़े व्यापारिक समझौते पर काम कर रहा हूँ, और वह पहले आता है।”

तो अधिकारी उत्तर देगा, “सैनिक, अब तुम सेना में हो। तुम्हें कल उस जहाज़ पर होना ही होगा, नहीं तो मैं ऐसा करूँगा कि तुम चाहोगे कि काश तुम वहाँ होते और पछताना पड़ेगा!”

जनरल डगलस मैकआर्थर ने उलझाव के परिणामों का सामना किया। वह एक अमेरिकी युद्ध नायक थे और कई बातों के लिए स्मरण किए जाते हैं, विशेषकर उस दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए जो उन्होंने फिलीपींस के लोगों से की थी जब जापानियों ने उनके देश पर अधिकार कर लिया था: “मैं लौटूँगा!” द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, उन्होंने अमेरिकी प्रमुख युद्धपोत पर जापानियों के आत्मसमर्पण को स्वीकार किया। उन्हें कोरियाई युद्ध में संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं के कमांडर के रूप में भी याद किया जाता है। परंतु उन्हें सबसे अधिक इस बात के लिए याद किया जाता है कि जब उन्होंने राजनीति में उलझकर राष्ट्रपति ट्रूमैन की विदेश नीति का विरोध करने का प्रयास किया, तो उन्हें पद से हटा दिया गया।

तीमुथियुस को उलझनों से दूर रहना था। उससे यह अपेक्षा नहीं की गई थी कि वह दास-प्रथा, सताव और अन्य सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए रैलियाँ और प्रदर्शन आयोजित करे। इस युग में संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्य सामाजिक की अपेक्षा आत्मिक हैं। यदि पर्याप्त लोग अपने पापों से उद्धार पा लें, तो सामाजिक सुधार अपने आप ही उसके परिणामस्वरूप हो जाएंगे। पिछले दो हजार वर्षों के इतिहास में परमेश्वर ने इसी प्रकार कार्य किया है।

उदाहरण के लिए, अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड की दयनीय सामाजिक परिस्थितियों के विषय में विचार कीजिए। उच्च स्थानों पर भ्रष्टाचार और अपराध, समाज के अन्य सभी स्तरों पर व्याप्त दुर्व्यसनों और हिंसा के साथ-साथ चल रहे थे। कलीसिया भौतिकवादी और आत्मिक रूप से मृत हो चुकी थी। वह उपहास का विषय बन गई थी और उसमें अधिकार तथा सामर्थ्य का अभाव था। एक घमंडी अभिजात वर्ग आम लोगों के अधिकारों और आकांक्षाओं को कुचल रहा था। फ्रांस की परिस्थितियाँ भी बहुत समान थीं। वहाँ एक क्रांति हुई जिसने गिलोटिन (बड़े सिर काटने का यंत्र) और आतंक के शासन को जन्म दिया। इंग्लैंड भी प्रभावित हुआ, परन्तु क्रांति के द्वारा नहीं बल्कि आत्मिक जागृति के द्वारा। वेस्ली बंधुओं और मथोडिस्ट जागृति ने समाज में व्यापक शुद्धिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। इतिहास भर में, सच्ची आत्मिक जागृतियों ने सामाजिक परिवर्तन को जन्म दिया है।

(3) उसकी इच्छा (2:4ग)

एक सैनिक को उलझनों से दूर रहना चाहिए ताकि “अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे।” जिस शब्द का अनुवाद “अपने भरती करनेवाले” किया गया है, उसका सरल अर्थ है “जिसने सिपाही बनाया है।” प्रभु ने तीमुथियुस में कुछ महान गुण देखे थे और उसे अपने कार्य के लिए चुन लिया था। इसलिए तीमुथियुस को उस प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयास करना था, जिसने उसे इस विश्वासयोग्य उत्तरदायित्व के स्थान पर रखा था।

यहाँ “प्रसन्न” शब्द का प्रयोग सेप्टुआजेंट में उत्पत्ति 5:22 में हनोक के जीवन का वर्णन करने के लिए किया गया है। वहाँ लिखा है, “हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा।” नये नियम में भी हनोक के विषय में यही भाव मिलता है: “हनोक... ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है” (इब्रानियों 11:5)। इसलिए तीमुथियुस को इस संसार के “हनोक” के समान जीवन जीने की चुनौती दी गई थी। हनोक, जो एक मूर्तिपूजक और अशुद्ध

समाज के बीच परमेश्वर की ओर खड़े रहने वाला व्यक्ति था, उसे स्वर्गारोहण के द्वारा प्रतिफल दिया गया। यदि तीमुथियुस भी ऐसा ही जीवन जीएगा, तो वह निश्चित हो सकता था कि उसे भी स्वर्गीय प्रतिफल अवश्य प्राप्त होगा।

3. तीमुथियुस को सफल होना था (2:5-7)

क. सफलता की परीक्षा—योद्धा (2:5)

अब पौलुस हमारे ध्यान को छावनी से हटाकर अखाड़े की ओर ले जाता है। उसने लिखा, “फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।” उसके मन में सार्वजनिक खेलों का की एक तस्वीर थी, जिनमें प्रतियोगी अपनी पूरी शक्ति लगाकर विभिन्न खेलों में विजयी होने का प्रयास करते थे। जिस शब्द का अनुवाद “अखाड़े में लड़नेवाला” किया गया है, वह यूनानी शब्द से आया है, जिससे हमें अंग्रेजी शब्द “एथलीट” मिलता है। संभवतः पौलुस के मन में यूनानी अखाड़ों में होने वाली कुश्ती और मुक्केबाजी की प्रतियोगिताएँ थीं। तीमुथियुस की तुलना एक योद्धा से करते हुए, पौलुस ने प्रतियोगिता, मुकुट और नियम—इन तीनों का चित्र प्रस्तुत किया।

पौलुस के दिनों में, खिलाड़ी का लक्ष्य एक मुकुट, जंगली जैतून या लारैल (या कभी-कभी ओक, आइवी, अजमोद, या मर्टल के पेड़ों) के पत्तों का एक मुकुट जीतना था। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “मुकुट पहनाया जाना” किया गया है, वह उस मुकुट को दर्शाता है जो सार्वजनिक सेवा के सम्मान के रूप में, सैनिक उपलब्धियों की पहचान के रूप में, या वैवाहिक आनंद अथवा ओलंपिक खेलों में विजय के प्रतीक के रूप में दिया जाता था। इसी शब्द का प्रयोग उस काँटों के मुकुट के लिए भी किया गया है, जिसे सैनिकों ने निंदा करते हुए उद्धारकर्ता के सिर पर रखा था, और उसी मुकुट के लिए भी, जिसे पाने की आशा पौलुस अपने पृथ्वी पर जीवन के अंत के बाद हमेशा करता था।

तीमुथियुस पहले ही अखाड़े में उतर चुका था। अब पीछे हटने का कोई उपाय नहीं था। उसे या तो लड़ना था या फिर लज्जा का सामना करना था, इसलिए उसके लिए पूरी शक्ति से विजय प्राप्त करने का प्रयास करना ही उचित था। खिलाड़ी अपने सम्मान के मुकुट को जीतने के लिए पूरा प्रयास करते थे। ओलंपिक खेलों के लिए प्रशिक्षण एक गंभीर कार्य था। खिलाड़ी वास्तविक प्रतियोगिता से दस महीने पहले ही प्रशिक्षण में लग जाते थे। वे सामान्य जीवन से अलग रखे जाते थे, कठोर आहार का पालन करते थे, और अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए कठोर अभ्यास और व्यायाम करते थे।

सबसे बढ़कर, खिलाड़ियों को नियमों का पालन करना आवश्यक था। अन्यथा, अपने सारे प्रयासों के बावजूद, वे अयोग्य ठहरा दिए जाते थे। इसी प्रकार, तीमुथियुस को भी “विधि के अनुसार” लड़ना था। उसे नये नियम में निर्धारित मसीही जीवन के सभी सिद्धांतों का पालन करना था। उसे मसीह के समान बनना था। उसे अपने शरीर की शक्ति में नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में लड़ना था।

ख. सफलता का स्वाद—किसान (2:6-7)

(1) ग्रहण किया हुआ सत्य (2:6)

जिस प्रकार खिलाड़ी को विभिन्न खेलों के नियमों का पालन करना होता है, उसी प्रकार किसान को भी प्रकृति के नियमों के अनुसार अपना काम करना होगा। यदि वह अपने परिश्रम का फल चखना चाहता है, तो उसे समय पर हल चलाना, बोना, खेती करना और कटाई करनी होगी।

किसान का परिश्रम सबसे पहले आता है। खेत या दाख की बारी में काम कभी समाप्त नहीं होता, और किसान के कार्य के घंटे बहुत लंबे होते हैं।

निस्संदेह, पौलुस ने अपनी यात्राओं में अनेक खेतों का दौरा किया होगा। हम प्रायः उसे नगरों के वातावरण में ही सोचते हैं, क्योंकि उसकी योजना रोमी संसार के प्रमुख जनसंख्या केंद्रों—जैसे तरसुस, अन्ताकिया, कुरिन्थ, एथेंस, इफिसुस, रोम और यरूशलेम—में सुसमाचार प्रचार करने की थी। उसकी मिशनरी यात्राएँ उसे उसके समय के महान नगरों तक ले गईं। फिर भी, उसने छोटे बाज़ार वाले नगरों में भी पर्याप्त समय बिताया होगा। उसके बहुत से विश्वासी संभवतः किसान रहे होंगे। पौलुस उनके काम में गहरी रुचि लेता होगा, जैसे वह सुनारों, बुनकरों और नाविकों के काम में रुचि लेता था। संभव है कि उसके कुछ किसान मित्रों ने उसे अपने यहाँ ठहराया भी होगा, और अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार, पौलुस भोर होते ही अपने मेज़बानों के साथ उठकर खेतों में चला जाता होगा, और उनके साथ हल चलाता, कुदाल चलाता और खेत को समतल करने का औज़ार से काम करता होगा। पौलुस कभी भी कठिन परिश्रम से नहीं डरता था।

इसलिए जब पौलुस ने 2:6 में “परिश्रम करने वाले किसान” का उदाहरण दिया, तो वह अच्छी तरह जानता था कि वह क्या कह रहा है। यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “किसान” किया गया है, उसका अर्थ है “भूमि जोतने वाला।” जिस शब्द का अनुवाद “परिश्रम करता है” किया गया है, उसमें कड़ी मेहनत करने और थक जाने का भाव निहित है। हम समझ सकते हैं कि कई बार खेतों में एक दिन का काम करने के बाद पौलुस पूरी तरह थक जाता होगा।

एक विश्वासी भी उस किसान के समान है, क्योंकि उसका कार्य कभी समाप्त नहीं होता। खेतों को जोतना और समतल करना होता है, बीज बोना होता है, मिट्टी में खाद डालनी होती है और उसे खरपतवार से बचाकर रखना होता है, पौधों को हानिकारक कीड़ों से बचाना और उन्हें पानी देना होता है, और बाड़ों को भी ठीक स्थिति में बनाए रखना होता है। कटाई के समय, फसलों को काटना, छाँटना और खलिहानों में इकट्ठा करना होता है। पौलुस के समय में यह सब कठिन परिश्रम हाथों से किया जाता था; न उनके पास ट्रैक्टर थे, न मशीनों से चलने वाले हार्वेस्टर, और न ही श्रम-बचाने वाले अन्य आधुनिक साधन। किसान को मुर्गे के बाँग देने से पहले ही उठना पड़ता था, और उसका परिश्रम सूर्यास्त के बाद ही समाप्त होता था। पौलुस ने अपने इस युवा मित्र को याद दिलाया कि उसने हल पर हाथ रख दिया है, और अब वह पीछे मुड़कर नहीं देख सकता था।

परिश्रम के बाद किसान की विजय की बारी आती है: “फल का अंश पहले उसे मिलना चाहिए।” स्वाद उसके परिश्रम का प्रतिफल होता है। यहाँ जो सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, वह पूरे पवित्रशास्त्र में सिखाया गया है—परिश्रम और प्रतिफल का सिद्धांत। आत्माओं को जीतने वाला उस फल का स्वाद तब चखता है जब कोई व्यक्ति उसकी सेवकाई के द्वारा मसीह को ग्रहण करता है। एक पास्टर उस फल का अनुभव तब करता है जब कोई युवा, जिसे उसने सिखाया और तैयार किया है, अपने जीवन को पूर्ण कालीन मसीही

सेवकाई के लिए—चाहे देश में या विदेश में—समर्पित करता है। पूर्ण भोज तो उस “मुकुट के दिन” में प्रकट होगा, जो शीघ्र आने वाला है।

(2) सत्य पर विचार (2:7)

“जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे,” पौलुस ने विनती की, “और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा।” “ध्यान दे” का अर्थ है “मन से समझना” या “गहराई से विचार करना।” पौलुस तीमुथियुस को चुनौती दे रहा था कि वह 2:1-6 में दिए गए उदाहरणों पर मनन करे, उन्हें गहराई से सोचे, और उनके सभी अर्थों को अपने मन में स्पष्ट करे। पौलुस की प्रार्थना थी कि प्रभु तीमुथियुस को ऐसा करने में सहायता दे।

तीमुथियुस को सबसे पहले यह समझने के लिए मनन करना था कि एक भण्डारी होना अपने आप में क्या अर्थ रखता है। परमेश्वर ने उसे प्रतिभाएँ, सत्य और अद्भुत अवसर सौंपे थे। कलीसिया के इतिहास में बहुत कम लोग यह कह सकते थे कि उन्हें सबसे महान प्रेरितों में से एक के द्वारा शिष्यत्व दिया गया था। तीमुथियुस को नहीं चाहिए—वह ऐसा करने का साहस भी न करे—कि वह उस बड़े निवेश को व्यर्थ गँवा दे, जो पौलुस ने उस पर समय, शिक्षा और प्रशिक्षण के रूप में किया था। उसे देमास के समान अपने प्रशिक्षण को त्यागना नहीं था। तीमुथियुस को एक कर्तव्यनिष्ठ भण्डारी बनना था।

तीमुथियुस को एक अनुशासित सैनिक भी बनना था, क्योंकि साम्राज्य ने कलीसिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। पीड़ितों की सूची पहले ही बहुत लंबी हो चुकी थी। स्वयं रोम इस संघर्ष का सबसे भयानक क्षेत्र बन गया था। प्रभु के लोगों को प्रतिदिन सबसे भयानक मृत्यु का सामना करने के लिए बुलाया जा रहा था। पौलुस स्वयं एक युद्धबंदी था। उससे पूछताछ हो चुकी थी, और उसे पूरा विश्वास था कि उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा। उसने अपनी जंजीर खनकाई और तीमुथियुस को चुनौती दी, “कायर मत बनो। युद्ध की घड़ी में पीछे मत हटो। तुम्हें तुम्हारे आदेश मिल चुके हैं। यदि एक साधारण सैनिक अपने परिवार और मित्रों, स्थान और भविष्य को छोड़कर आगे की पंक्ति में कठिनाइयों को सह सकता है, तो निश्चय ही तुम, हे तीमुथियुस, मसीह के सैनिक होकर अपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोड़ सकते।”

पौलुस तीमुथियुस को एक दृढ़ निश्चयी योद्धा बनने की चुनौती भी दे रहा था। एक ओलंपिक मुक्केबाज़ या पहलवान अपने एक ही लक्ष्य के लिए सब कुछ अधीन कर देता था—अखाड़े में विजय प्राप्त करना। वह अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखता था, अपने शरीर को वश में करता था, अपने प्रतिद्वंद्वियों की सहनशक्ति और शैली का अध्ययन करता था, अनेक उचित सुखों और मनोरंजनों का त्याग करता था, और उस निर्णायक घड़ी के लिए अपने आप को कठोर बनाता था जब उसे अकेले अपने विरोधी का सामना करना होता था। इस कठोर प्रशिक्षण के पीछे उस मुकुट को जीतना ही एकमात्र प्रबल इच्छा होती थी। तीमुथियुस इससे कम कैसे कर सकता था? क्या उसके पास पौलुस का साहसिक उदाहरण नहीं था जो उसे प्रेरित करने के लिए काफ़ी था? क्या पौलुस ने कुरिन्थियों से यह नहीं कहा था, “परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27)? हर प्रकार के खतरे, कठिनाई और निराशा के बीच, तीमुथियुस को दृढ़ निश्चय के साथ विजय प्राप्त करने का प्रयास करना था।

इस पद में अंतिम चुनौती यह थी कि तीमुथियुस एक परिश्रमी किसान बने। किसान लंबे समय तक डटे रहने के लिए समर्पित होता है; वह शीघ्र परिणामों की अपेक्षा नहीं करता। तीमुथियुस को किसान के धैर्य और कठोर परिश्रम पर मनन करना था।

4. तीमुथियुस को कष्ट सहना था (2:8-13)

क. मसीह की विजय (2:8)

(1) उसकी राजकीय महिमा (2:8क)

पौलुस तीमुथियुस को ऐसे अनेक उदाहरण दे सकता था, परंतु उसने उसे सीधे सबसे महान उदाहरण की ओर इशारा किया—प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और उसके कार्य की ओर। पौलुस ने लिखा, “यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ।”

व्याख्याकारों ने इस पर काफी विचार किया है कि पौलुस ने यहाँ दाऊद का उल्लेख क्यों किया। संभव है इसलिए कि दाऊद एक उत्तम भण्डारी था। अपने जीवन के अंत के निकट, दाऊद ने एक विशाल धनराशि एकत्र करने में स्वयं को लगा दिया (1 इतिहास 22); वह असीम संपत्ति का विश्वासयोग्य भण्डारी बना और अंततः उसे मंदिर के निर्माण के लिए सुलैमान को सौंप दिया। दाऊद एक प्रसिद्ध सैनिक और महान योद्धा भी था। उसने अकेले ही पलिशती दानव को मार डाला था। उसने इस्राएल की सेनाओं का नेतृत्व करते हुए एक के बाद एक विजय प्राप्त की और राष्ट्र के सभी शत्रुओं, यहाँ तक कि शक्तिशाली पलिशतियों को भी परास्त किया। इसके अतिरिक्त, दाऊद एक सफल किसान भी था—एक चरवाहे के रूप में उसने अपने झुंड की रक्षा के लिए अपने प्राणों को जोखिम में डाला और एक सिंह तथा एक भालू का सामना किया। आगे चलकर वह इस्राएल का महान चरवाहा बन गया। उसने चरवाहे होने की इस धारणा को राजगद्दी तक पहुँचाया, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ समझ सकें कि परमेश्वर का आदर्श राजा सदैव अपने लोगों का एक पास्टर होना चाहिए।

प्रभु यीशु, जो “दाऊद के वंश से” थे, उसने दाऊद के इन गुणों को आत्मिक स्तर पर पूर्णता तक पहुँचा दिया। वह परमेश्वर के अनुग्रह, भलाई और महिमा का कितना अद्भुत भण्डारी था! मसीह में हम भण्डारीपन का एक सिद्ध उदाहरण देख पाते हैं। जो परमेश्वर ने कहा, वही यीशु ने कहा। जो परमेश्वर ने किया, वही यीशु ने किया। जो परमेश्वर था, वही यीशु था। वह परमेश्वर की महानता का एक पूर्ण और विश्वासयोग्य संरक्षक था।

प्रभु यीशु कितना महान योद्धा था! वह शैतान के राज्य की नींव को हिला देने, उसकी शक्ति को तोड़ डालने और उसके कार्यों को नष्ट करने के लिए आया था। दुष्टात्माएँ उसके सामने भाग जाती थीं। रोग और मृत्यु को उसमें उनका सामना करने वाला प्रतिद्वंद्वी मिला। शैतान उसे एक क्षण के लिए भी उसके उद्देश्य से भटका न सका। अंततः, मसीह ने क्रूस पर शत्रु की सारी शक्ति पर विजय प्राप्त की—ठीक उसी क्षण जब शैतान ने सोचा था कि वह जीत गया है (कुलुस्सियों 2:15)!

मसीह किसी भी किसान से अधिक धीरजवान था। वह कभी जल्दी में नहीं था और कभी अधीर नहीं हुआ। जब उसके मित्रों ने मूर्खतापूर्ण बातें कही या कीं, तो उसने उन्हें नम्रता और धैर्य के साथ सुधारा।

आरंभ से ही वह जानता था कि वह ऐसी फसल के लिए हल चला रहा है और बीज बो रहा है, जिसे पकने में हजारों वर्ष लगेंगे। सदियों से वह अपने पिता के सिंहासन पर बैठा है, “और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की पीढ़ी बनें” (इब्रानियों 10:13)। धीरे-धीरे बीज मिट्टी में अंकुरित होता है। धीरे-धीरे कोमल अंकुर निकलते हैं। धीरे-धीरे तना बढ़ता है और पत्तियाँ फैलती हैं। धीरे-धीरे फूल प्रकट होते हैं। धीरे-धीरे फल बनता है। एक किसान के समान महान धीरज और संकल्प के समान ही, प्रभु यीशु अपने पिता परमेश्वर की योजनाओं के फल के पकने की प्रतीक्षा करता है, जिसे परिपक्व होने में समय लगता है।

पौलुस अपने लक्ष्य में बिल्कुल सही था। यीशु ने उन गुणों को पूर्ण रूप से प्रकट किया, जिनका उदाहरण पहले दाऊद में देखा गया था। तीमुथियुस को इन बातों पर मनन करना था, और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

(2) उसका पुनरुत्थान (2:8ख)

पौलुस ने आगे कहा, “यीशु मसीह... मरे हुआं में से जी उठा।” यहाँ ऐसा लगता है कि पौलुस तीमुथियुस को उसके स्वाभाविक भय के विरुद्ध और अधिक दृढ़ कर रहा है—वह भय जो संभवतः उसके मन को भर लेने की धमकी दे रहा था: गिरफ्तार किए जाने का भय, न्यायालय में खड़ा किए जाने का भय, और एक भयानक मृत्यु का सामना करने के लिए ले जाए जाने का भय।

प्रभु यीशु ने इतना बड़ा मूल्य चुकाया था। उसके साथ भयानक बातें हुईं। उसे एक मित्र ने धोखा दिया था, उस पर झूठे आरोप लगाए गए, और उसे अन्यायपूर्वक दोषी ठहराया गया। उसका उपहास किया गया और उसे मारा-पीटा गया, उसे कोड़े लगाए गए, उसे कलवरी के पहाड़ तक घसीटा गया, और अंततः उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। परंतु—और यही पौलुस का मुख्य बिंदु था—मसीह “मरे हुआं में से जी उठा।” वह जीवित है! वह स्वर्ग में उठा लिया गया है, और परमेश्वर के दाहिनी ओर, सर्वोच्च अधिकार के स्थान पर विराजमान है। वह अब हमारे लिए हमारे महान महायाजक के रूप में सेवा कर रहा है। मृत्यु किसी भी प्रकार से अंत नहीं है। तीमुथियुस को यह स्मरण रखना चाहिए।

पौलुस ने उन लोगों के विषय में लिखा जो झूठे सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे। पौलुस का सुसमाचार—सच्चा सुसमाचार, एकमात्र वास्तविक सुसमाचार—प्रभु के पुनरुत्थान के सत्य से सदा के लिए जुड़ा हुआ है। जब पौलुस ने यरूशलेम में अपने सुसमाचार का प्रचार किया, तो उस पर भीड़ टूट पड़ी। जब उसने एथेंस में प्रचार किया, तो उसका उपहास उड़ाया गया। जब उसने रोम में प्रचार किया, तो उसे शहीद कर दिया गया। फिर भी वह उससे बिल्कुल भी लज्जित नहीं था (रोमियों 1:14-16)। वह उतनी ही तत्परता से नीरो के सामने प्रचार करने के लिए तैयार था, जितनी कैफा, फेलिक्स, फेस्टुस, अग्रिप्पा या किसी और के सामने खड़ा था। पौलुस इसे “मेरे सुसमाचार के अनुसार” कह सकता था, क्योंकि उसकी समस्त महिमा में यह उसपर प्रकट किया गया था और उसे सौंपा गया था (गलातियों 1:15-17)। इसका सर्वोत्तम वर्णन रोमियों की पत्रों में मिलता है। हम इस धर्मविज्ञानी उत्कृष्ट रचना को निश्चित रूप से “पौलुस रचित सुसमाचार” कह सकते हैं।

ख. मसीहियों का क्लेश (2:9-13)

(1) पौलुस के भयानक कष्ट (2:9-10)

(क) उसने उनका वर्णन कैसे किया (2:9)

i. डंक (2:9क)

तीमुथियुस अच्छी तरह जानता था कि पौलुस कोई कायर नहीं था। जब पौलुस ने उसे कष्टों का सामना करने की चुनौती दी, तो वह केवल वही करने को कह रहा था जिसके लिए वह स्वयं तैयार था। पौलुस ने अपने कष्टों का वर्णन करते हुए कहा, “मैं दुःख उठाता हूँ।” उसने वही शब्द प्रयोग किया जो उसने पद 3 में किया था, जहाँ उसने तीमुथियुस को “मेरे साथ दुःख उठाने” के लिए प्रेरित किया था। पौलुस अत्यंत कठोर परिस्थितियों के मध्य कैद में था और केवल इसलिए इतनी दयनीय दशा में था क्योंकि वह सुसमाचार का प्रचार करता था।

वह अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे नीरो की दुष्टता से कोई सुरक्षा नहीं थी, जो किसी भी प्रकार की बुराई करने में सक्षम था और पौलुस को सार्वजनिक उदाहरण बनाने में उसका स्वार्थ भी था। नीरो मसीहियों से — उनके धर्मी जीवन, उनके अडिग उपदेशों और मृत्यु के समय उनकी निर्भीकता के कारण घृणा करता था। वह उन्हें पृथ्वी का कूड़ा-करकट समझता था। पौलुस को रिहाई की कोई आशा नहीं थी। उसे यातना, अखाड़े में फेंके जाने, क्रूस पर चढ़ाए जाने, या अंग-भंग किए जाने का सामना करना पड़ सकता था। जहाँ तक पौलुस जानता था, उसके कष्ट तो अभी शुरू ही हुए थे; फिर भी, वह अपने “दुःख” का सामना साहस और दृढ़ता के साथ कर रहा था।

ii. कलंक (2:9ख)

पौलुस ने “कुकर्मी के समान, यहाँ तक कि कैद में भी” दुःख उठाया।” जिस मूल शब्द का उसने “कुकर्मी” के लिए प्रयोग किया, वह “काकोउर्गोस” है, जिसका अर्थ है “अपराधी” या “दुष्ट कर्म करने वाला।” यह शब्द केवल यहाँ और लूका 23 में पाया जाता है, जहाँ यह उन लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है जिन्हें मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था।

काकोउर्गोस, ओइकाकोस (“बुराई”) और एर्गोन (“काम”) से मिलकर बना है। “काकोस” शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जो अपने स्वभाव की गहराई तक भ्रष्ट और बुरा हो—अर्थात् पूरी तरह से कुकर्मी।

पौलुस ने “अपराधियों के संग गिना गया” की लज्जा को महसूस किया, परंतु वह जानता था कि संसार ने यही बात यीशु के साथ भी की थी (यशायाह 53:12)। पौलुस उन सबसे धर्मी मनुष्यों में से एक था जो कभी इस पृथ्वी पर जीवित रहे हैं। उसे अवश्य ही इस बात से घोर पीड़ा हुई होगी कि उसे रोम की सड़कों से होते हुए कारागृह तक ऐसे व्यक्ति के रूप में ले जाया गया जो घोर पापों और कुकर्मी में लिप्त हो। उसकी बेड़ियाँ केवल उसके हाथों को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को भी कष्ट दे रही होंगी। फिर भी, वह इन अंधकारमय परिस्थितियों से ऊपर उठ गया और यहाँ उनका उल्लेख केवल इस बात के प्रमाण के रूप में किया कि वह तीमुथियुस से वही अपेक्षा कर रहा था जो वह स्वयं से करता था।

iii. गीत (2:9ग)

यद्यपि पौलुस “कष्ट” की पीड़ा और कलंक सह रहा था, फिर भी वह विजयी रूप से कह सकता था, “परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नहीं” है। उसके विचार गीत के पंखों पर उड़ सकते थे, क्योंकि चाहे उसके साथ कुछ भी हो, परमेश्वर का वचन संसार में स्वतंत्र रूप से फैल चुका था। संसार के सभी नीरो के सारे आदेश भी इस सत्य को कभी बदल नहीं सकते थे।

न तो पृथ्वी पर और न ही नरक में कोई शक्ति परमेश्वर के वचन को अपने कैद में रख सकती है। कभी-कभी परमेश्वर के सेवक दबा दिए जाते हैं, या यहाँ तक कि मृत्यु के द्वारा चुप भी करा दिए जाते हैं, परन्तु परमेश्वर का वचन फिर भी गूँजता रहता है। डायोक्लेटियन ने साम्राज्य में हर बाइबल को नष्ट करने का बड़ा प्रयास किया, परन्तु वह असफल रहा। वोल्टेयर ने एक बार घोषणा की थी कि वह बाइबल को मिटा देगा। परन्तु कुछ ही समय बाद वोल्टेयर मर गया और दफनाया गया, और उसका घर जिनेवा बाइबल सोसाइटी द्वारा खरीद लिया गया और बाइबल के अनेक संस्करणों को रखने के स्थान के रूप में उपयोग किया गया। सदियों तक, पोपशाही ने लोगों से बाइबल को दूर रखने के लिए कठोर संघर्ष किया। प्रारम्भिक अनुवादकों और सुधारकों ने पवित्रशास्त्र को छापने और प्रचारित करने के लिए भारी कीमत चुकाई; उन्हें कैद किया गया, बदनाम किया गया, सताया गया, और यहाँ तक कि आग में जला दिया गया। फिर भी, रोम का संघर्ष व्यर्थ रहा; परमेश्वर का वचन विजयी हुआ। बाइबल संसार की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है और अब हजारों भाषाओं में तथा विभिन्न संस्करणों में प्रकाशित की जा रही है।

“परमेश्वर का वचन कैद नहीं” - यह जीवित वचन है! यह “जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और प्राण और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता [कृटोकोस, “आलोचक”] है” (इब्रानियों 4:12)। मनुष्य परमेश्वर के वचन का इनकार कर सकते हैं। वे उस पर संदेह कर सकते हैं, उसका तिरस्कार कर सकते हैं, उसकी निंदा कर सकते हैं और उसे तोड़-मरोड़ सकते हैं, फिर भी यह वचन उनके सबसे भीतरी स्थानों तक प्रवेश कर जाता है, जहाँ वह पाप, धार्मिकता और आने वाले न्याय के विषय में एक बोध उत्पन्न करता है। परमेश्वर का वचन अविनाशी बीज है। उसमें परमेश्वर का जीवन विद्यमान है (1 पतरस 1:23)। एक बार जब यह बीज किसी मनुष्य के हृदय में बो दिया जाता है, तो वह वहाँ बना रहता है, जब तक कि विश्वास की पहली किरण उसे अंकुरित करके जीवन्त न कर दे।

(ख) उसने उन्हें कैसे खारिज किया (2:10)

i. उसने क्या सहा (2:10क)

पौलुस ने अपने कष्टों को अनन्तकाल के प्रकाश में लगभग उल्लेख करने योग्य भी नहीं समझा, फिर भी उसने उनका संक्षेप में उल्लेख किया। उसने लिखा, “इस कारण मैं...सब कुछ सहता हूँ।”

उसने अपने दुःखों और इस तथ्य के बीच एक सीधे संबंध को पहचाना कि वह परमेश्वर का वह उपकरण था, जिसके द्वारा परमेश्वर का वचन संसार में स्वतंत्र रूप से फैलाया गया—यहाँ तक कि वह नये नियम के आधे भाग का लेखक भी बना। शैतान ने पतरस को गेहूँ की तरह फटकने की इच्छा की थी (लूका 22:31)। तो फिर शैतान पौलुस को अपने हाथ में लेने की कितनी अधिक इच्छा रखता होगा (2 कुरिन्थियों 12:7)! अब शैतान ने मानो पौलुस को वहीं पहुँचा दिया था जहाँ वह चाहता था—नीरो के सबसे भयानक कालकोठरी

में, मृत्यु दंड का सामना करते हुए, और केवल अपनी मृत्यु के समय और तरीके की प्रतीक्षा करते हुए। फिर भी, पौलुस उस परिस्थिति के योग्य सिद्ध हुआ। मानो वह कह रहा हो, “चाहे कुछ भी हो, मैं उसे सह सकता हूँ।”

ii. उसने क्यों सहा (2:10ख-ग)

उन कारणों को और अधिक स्पष्ट करते हुए, पौलुस ने कहा कि “मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएँ।” यह ज्ञान कि उसकी सेवकाई के द्वारा लोग उद्धार पा रहे थे और उसके उदाहरण से वे दृढ़ हो रहे थे, उन भयानक परिस्थितियों में पौलुस को स्थिर बनाए रखने में सहायक था। वह “हमारी ही तरह के स्वभाव का मनुष्य” था (याकूब 5:17) और भय से रहित नहीं था। वह यातना के आतंक और पीड़ा को भली-भांति जानता था। उसकी पीठ पर अनेक कोड़ों के निशान अब भी मौजूद थे। और उसकी कल्पना इतनी प्रबल थी कि वह उन भयानकताओं को भी सोच सकता था जो आगे उसके लिए हो सकती थीं।

परंतु वहाँ, पूरे अन्यजातीय रोमी जगत में, परमेश्वर के चुने हुए लोग — अर्थात् उसके बुलाए हुए जन मौजूद थे। वे परमेश्वर द्वारा अलग किए गए थे ताकि और अधिक लोगों के उद्धार के उपकरण बन सकें। शैतान इस बढ़ती हुई प्रगति को रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था। यदि लाखों मसीही मार डाले जाते, तो उनकी जगह लेने के लिए और भी अधिक लोग उठ खड़े होते। परमेश्वर स्वर्ग में पहले से ही उनके नाम जानता था। एक अर्थ में, वे चुने हुए थे, और तीमुथियुस भी उनमें से एक था। उसके अपने भी कई मन-परिवर्तित लोग और शिष्य थे, और उन शिष्यों के अपने शिष्य थे (2 तीमुथियुस 2:1-2)। उद्धार पाए हुए लोगों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही थी, और विश्वास लगातार फैलता जा रहा था।

यह “चुने हुए लोगों के लिए” भी उतना ही था जितना मसीह के कारण, कि पौलुस ने अपना सिर ऊँचा रखा। पूरा मसीही जगत और अन्यजातीय जगत यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था कि वह, जो अन्यजातियों का महान प्रेरित था, परीक्षा के समय कैसे स्थिर रहता है। पौलुस दृढ़ निश्चय कर चुका था कि वह अंत तक विश्वासयोग्यता से अपनी दौड़ पूरी करेगा।

(2) पौलुस के विश्वासयोग्य कथन (2:11-13)

(क) हमारे निर्णय (2:11-12)

i. अधर में मृत्यु (2:11)

पास्टरीय पत्रियों में पाँच “विश्वासयोग्य” या “सत्य” कथन पाए जाते हैं (1 तीमुथियुस 1:15; 3:1; 4:9; 2 तीमुथियुस 2:11-13; तीतुस 3:8)। यहाँ जो कथन है, वह इस प्रकार आरम्भ होता है: “यह बात सच है, कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएँगे भी।” यह कोई काल्पनिक “यदि” नहीं है। यह पूर्ण हुई स्थिति का “यदि” है। यहाँ यह मान लिया गया है कि यह एक वास्तविक तथ्य है। इसलिए इस वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: “क्योंकि हम उसके साथ मर गए हैं।” यहाँ प्रयुक्त काल भूतकाल की एक घटना को दर्शाता है, न कि वर्तमान स्थिति को।

यह पद स्पष्ट करता है कि पौलुस मृत्यु का सामना इतनी शांति से क्यों कर सकता था—वह पहले ही “मर चुका” था (रोमियों 6:1–11 को देखें)! प्रभु यीशु न केवल हमारे लिए मरा, बल्कि हमारे स्थान पर भी मरा। परमेश्वर की दृष्टि में, जब यीशु मरा, तो हम भी उसमें मर गए। जब वह गाड़ा गया, तो हम भी उसके साथ गाड़े गए। जब वह जी उठा, तो हम भी उसके साथ जी उठे। उसमें, प्रत्येक विश्वास करने वाला पहले ही मृत्यु और गाड़े जाने के अनुभव से होकर गुजर चुका है और अब पुनरुत्थान के जीवन में खड़ा है। इसलिए शारीरिक मृत्यु का क्षण केवल थोड़े समय की एक घटना मात्र है।

हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि पौलुस ने यह सत्य पहले ही तीमुथियुस को सिखाया था। अब वह उसे स्मरण दिलाता है कि विश्वास करने वाले को मृत्यु से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। सबसे बुरा तो पहले ही बीत चुका है। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस रोमियों 8:35–37 में निहित सिद्धांत को याद रखे:

“कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? 36जैसा लिखा है, “तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।’ परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।”

पौलुस ने ये शब्द रोम के मसीहियों को लिखे थे। अब वही रोमी मसीही नीरो और सताव के सभी भयानक साधनों से भयभीत थे।

ये वचन हम पर भी समान रूप से लागू होते हैं। हमारे निर्णय इस सत्य से प्रभावित होने चाहिए कि मसीह ने स्वयं मृत्यु को ही एक घातक आघात दे दिया है।

ii. अधर में धीरज (2:12क)

पौलुस आगे कहता है, “यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके

साथ राज्य भी करेंगे।” यह “यदि” भी पिछले पद के समान ही है। निस्संदेह, मसीहियों को इस संसार में कष्ट सहने के लिए बुलाया गया है। हम उन सामान्य दुखों और आपदाओं से मुक्त नहीं हैं जो यहाँ लोगों पर आती हैं। इसके अतिरिक्त, हम शैतान की सक्रिय दुष्टता (जैसा हम अय्यूब की पुस्तक से सीखते हैं) और उस संसार की घृणा का भी सामना करते हैं जो मसीही जीवन-शैली और दृष्टिकोण को तुच्छ समझता है।

यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “धीरज से सहना” किया गया है, वही शब्द 2:10 में “सहना” के रूप में अनूदित हुआ है। इसका अर्थ है “धैर्य रखना, दृढ़ बने रहना,” और यह कष्टों के बीच साहसपूर्वक स्थिर रहने के भाव को प्रकट करता है।

दुःख सहने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रतिफल पर हमारी दृष्टि स्थिर करने के लिए, पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि हम “राज्य भी करेंगे।” इस यूनानी शब्द का तात्पर्य है “राजा के समान राज्य करना।” पौलुस उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था जब वह स्वयं राज्य करेगा (4:8)—और नीरो तब तक मर चुका होगा।

इस पद की शिक्षा के पीछे, हम मसीह के न्यायासन की छाया को देख सकते हैं, जहाँ परमेश्वर के सभी लोग अपने जीवन के परिणामों का सामना करेंगे (रोमियों 14:10)। और उस न्यायासन के आगे, हम सहस्राब्दी

राज्य की झलक भी देख सकते हैं, जिसमें सभी विश्वास करने वाले स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ राज्य करेंगे।

प्रतिफल कमाने पड़ते हैं। मसीह के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता, उसके प्रति हमारा प्रेम, पिता की इच्छा के प्रति हमारा समर्पण, और हमारे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के साथ हमारा सहयोग—ये सभी बातें निर्धारित करेंगी कि न्यायासन पर हमें कैसी डाँट या प्रतिफल मिलेगा। सहस्राब्दी राज्य में हमारी स्थिति, अधिकार और महत्व भी वहीं निर्धारित किए जाएँगे। हमें अपने कष्टों को न्यायासन के प्रकाश में देखना चाहिए।

iii. अधर में इनकार (2:12ख)

मसीह के न्यायासन पर जय-जयकार के साथ आँसू भी होंगे, क्योंकि “यदि हम उसका इनकार करेंगे, तो वह भी हमारा इनकार करेगा।”

यहाँ महान श्वेत सिंहासन का उल्लेख नहीं है। वहाँ पापियों को खड़ा किया जाएगा, प्रकट किया जाएगा, दोषी ठहराया जाएगा, और आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:11–15)।

यहाँ संदर्भ मसीह के न्यायासन का है, जहाँ परमेश्वर के लोगों का मूल्यांकन किया जाएगा, उन्हें चेतावनी दी जाएगी, और उन्हें प्रतिफल दिया जाएगा। जिनकी आत्माएँ तो बच गई हैं, पर जिनका जीवन व्यर्थ गया है, वे सहस्राब्दी राज्य में हानि उठाएँगे (1 कुरिन्थियों 3:12–15)।

2 तीमुथियुस 2:12 यह नहीं सिखाता कि परमेश्वर हमें अपने संतानों के रूप में पूर्णतः अस्वीकार कर देगा। पतरस ने शपथ खाकर और अपशब्दों के साथ प्रभु का इनकार किया था; फिर भी प्रभु ने उसे खोजा, पुनः स्थापित किया, और उसे महान रूप से इस्तेमाल किया (मत्ती 26:69–75; लूका 24:34; प्रेरितों के काम 2)। यहाँ “इनकार” का संबंध उद्धार से नहीं, बल्कि प्रतिफलों से है, और उद्धार तथा प्रतिफल एक समान नहीं हैं।

हमारे निर्णय परिस्थितियों से—चाहे वे भय उत्पन्न करने वाली हों या रोमांचक—प्रभावित नहीं होने चाहिए, बल्कि प्रभु के आगमन की प्रतिज्ञा, मसीह के न्यायासन की निश्चितता, और इस सत्य से प्रभावित होने चाहिए कि आत्मिक रूप से हम पहले ही मृत्यु के पार खड़े हैं।

(ख) हमारे संदेह (2:13)

पौलुस आगे कहता है, “यदि हम अविश्वासी भी हों, तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इनकार नहीं कर सकता।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “अविश्वासी” किया गया है, वह विश्वासियों की अविश्वासयोग्यता को दर्शाता है। दुःख की बात है कि विश्वास करने वाले ही कई बार अविश्वासी हो जाते हैं; पौलुस 4:10 में देमास का उदाहरण देता है। पौलुस नहीं चाहता था कि तीमुथियुस भी अविश्वासयोग्य बन जाए।

जब हम प्रभु को निराश भी करते हैं, तब भी वह अपने वचन और अपने स्वभाव के प्रति सच्चा बना रहता है और हमारे साथ अपने व्यवहार में विश्वासयोग्य रहता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना मरकुस के साथ उसके व्यवहार पर ध्यान दें, जिसने पिरगा में प्रभु को निराश किया था (प्रेरितों के काम 13:13)। पौलुस ने मरकुस

के इस पीछे हटने को गहराई से महसूस किया (प्रेरितों के काम 15:36-41), परंतु प्रभु ने उसे त्याग नहीं दिया। उसने बरनाबास, पतरस और अन्य विश्वासियों का उपयोग करके मरकुस को फिर से उपयोगी सेवा में लौटा दिया (2 तीमुथियुस 4:11)। तीमुथियुस इस घटना से भली-भांति परिचित था।

5. तीमुथियुस को एक विद्यार्थी बनना था (2:14-19)

क. ढाँचा (2:14)

पौलुस सीधे तीमुथियुस के अपने ही मामले की ओर संकेत करता है। उसने उसे स्मरण दिलाया कि उसे इफिसुस में कुछ अनुशासनहीन विश्वासियों का सामना करना था। अपने कर्तव्यों पर ध्यान देने से तीमुथियुस अपने भय से ध्यान हटा सकेगा। पौलुस ने लिखा, “इन बातों की सुधि उन्हें दिला और प्रभु के सामने चिता दे कि शब्दों पर तर्क-वितर्क न किया करें, जिनसे कुछ लाभ नहीं होता वरन् सुननेवाले बिगड़ जाते हैं।”

कलीसिया के बाहर से आने वाले सभी खतरों के बावजूद, कलीसिया के भीतर “शब्दों पर तर्क-वितर्क” चल रहे थे। शैतान बाहर भी सक्रिय था और भीतर भी। निस्संदेह, नीरो जैसे सामान्य शत्रु के सामने कलीसिया को एकजुट होना चाहिए था। परंतु इसके विपरीत, कलीसिया के सदस्य बेकार की बातों पर आपस में भिड़ रहे थे, महत्वहीन मुद्दों पर झगड़ रहे थे। उन्हें जीवन और मृत्यु, समय और अनन्तता, न्याय और प्रतिफल—इन “बातों” पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए था, जिनके बारे में पौलुस अभी लिख रहा था—न कि शब्दों के तर्क-वितर्क में उलझना चाहिए था। जिस शब्द का अनुवाद “शब्दों पर तर्क-वितर्क” किया गया है, उसमें लड़ने, झगड़ने और बहस करने का भाव निहित है।

इफिसुस में होने वाले ये तीखे विवाद किसी भी प्रकार से लाभदायक नहीं थे। इन झगड़ों से किसी का भला नहीं हो रहा था। पौलुस ने कहा कि यह “जिनसे कुछ लाभ नहीं होता” है। इसके अतिरिक्त, यह विनाशकारी भी था। इस विचार को व्यक्त करने के लिए पौलुस ने उस शब्द का प्रयोग किया है जिससे अंग्रेज़ी शब्द “कैटास्ट्रोफी” बना है। इसका अर्थ है “उलट देना” या “नष्ट कर देना।” मूल भाषा में यह एक सजीव चित्र प्रस्तुत करता है—मानो हल बार-बार मिट्टी को उलट-पुलट रहा हो। इन महत्वहीन बातों पर होने वाले झगड़ों के कारण कुछ विश्वासियों का जीवन ही उलट-पुलट हो रहा था। पौलुस ने तीमुथियुस को इस स्थिति का सामना करने और उसे ठीक करने के लिए प्रेरित किया।

ख. केंद्रबिंदु (2:15)

(1) अध्ययन में परिश्रम (2:15क)

अब पौलुस तीमुथियुस को और अधिक लगन, सुव्यवस्थित और गहराई के साथ बाइबल अध्ययन करने के लिए प्रेरित करता है। वह आरम्भ करता है, “अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य...काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर।” यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “प्रयत्न कर” किया गया है, उसका अर्थ है “परिश्रमी बन” या “लगन से प्रयास कर।” इसमें शीघ्रता से कार्य करने और पूरी शक्ति लगाकर प्रयास करने का भाव निहित है।

कभी-कभी लोग, जिन्होंने केवल एक-दो उपदेश सुने हों, या किसी मसीही पत्रिका में कुछ लेख पढ़े हों, या संडे स्कूल की पुस्तिका के कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए हों, या कोई पत्राचार पाठ्यक्रम किया हो—अपने आप

को पवित्रशास्त्र का विशेषज्ञ समझने लगते हैं। अक्सर, जो लोग बाइबल की किसी एक शिक्षा में अत्यधिक प्रभावित हो जाते हैं, वे अनुभवी बाइबल शिक्षकों को भी चुनौती देने लगते हैं, विशेषकर उन बातों पर जिनसे वे असहमत होते हैं। बाइबल शायद एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसके विषय में लोग अपने आप को विशेषज्ञ मान लेते हैं, जबकि वास्तव में उसकी शिक्षाओं का उनका ज्ञान बहुत ही सीमित होता है।

एक चिकित्सक बनने के लिए सात वर्षों का गहन प्रशिक्षण आवश्यक होता है, और चिकित्सा के किसी विशेष क्षेत्र में माहिर होने के लिए अतिरिक्त तीन या चार वर्षों का समय लगता है। इसके बाद भी, अपने क्षेत्र में नवीन प्रगति से अवगत रहने के लिए उसे जीवन भर निरंतर अध्ययन करना पड़ता है। चिकित्सा के रहस्य उन अनन्त सत्यों की तुलना में बहुत कम गहरे हैं जो परमेश्वर के वचन में निहित हैं। शिक्षित इथियोपियाई अधिकारी पवित्रशास्त्र पढ़ तो सकता था, पर उसने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि वह जो पढ़ रहा है उसे समझ नहीं पा रहा है, और उसने यह भी माना कि उसे उसके अर्थ को समझाने के लिए किसी की आवश्यकता है (प्रेरितों के काम 8:30-31)।

बाइबल एक विशाल पुस्तक है जिसमें अनेक विषय समाहित हैं। यह लगभग पंद्रह सौ वर्षों की अवधि में लिखी गई है। इसे लगभग चालीस व्यक्तियों ने अलग अलग समयों में लिखा, जो विभिन्न पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों और जीवन के क्षेत्रों से थे—ऐसे लोग जिन्हें परमेश्वर ने अपने आत्मा से प्रेरित किया कि वे इसके अविनाशी सत्यों को लिखें। उन्होंने पूर्व में बाबुल से लेकर पश्चिम में रोम तक विभिन्न स्थानों में इसे लिखा। बाइबल का भूगोल, इतिहास और भाषाएँ ही ऐसे विषय हैं जिनके लिए वर्षों के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है। हर्मेन्यूटिक्स—अर्थात् बाइबल की व्याख्या करने का विज्ञान—अपने आप में एक स्वतंत्र विषय है। इसके नियमों और सिद्धांतों का उल्लंघन बिना परिणाम के नहीं किया जा सकता। इसमें आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने तीमुथियुस को अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया!

कोई व्यक्ति केवल वाहन चलाने की पुस्तिका पढ़कर एक कुशल मोटर मैकेनिक नहीं बन जाता। इसी प्रकार, कोई व्यक्ति जूनियर कॉलेज में एक-दो पाठ्यक्रम लेकर गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, परमाणु भौतिक विज्ञानी, जैव-रसायनज्ञ, इतिहासकार या कलाकार नहीं बन जाता। किसी भी विषय में माहिर बनने के लिए व्यक्ति को अध्ययन करना ही पड़ता है; और यदि उसे पवित्र शास्त्र के विषय में अधिकारपूर्वक बोलना है, तो इसकी और भी अधिक आवश्यकता होती है।

लगन के साथ अध्ययन करने के लिए समय, समर्पण और कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। केवल ऐसे अध्ययन के द्वारा ही पवित्रशास्त्र का विद्यार्थी “अपने आप को परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य ठहरा” सकता है। जिस शब्द का अनुवाद “ठहराना” किया गया है, उसका अर्थ है “प्रस्तुत करना।” यहाँ भाव यह है कि व्यक्ति ऐसी स्थिति में हो जहाँ पवित्रशास्त्र के एक परिश्रमी विद्यार्थी के रूप में उसकी योग्यता और मूल्य प्रकट हो। संभव है कि पौलुस के मन में मसीह का न्यायासन रहा होगा। यहाँ “ग्रहणयोग्य” के लिए प्रयुक्त शब्द “डोकीमोस” है, जिसका उपयोग उन सिद्धांतों और धातुओं के लिए किया जाता था जिन्हें आग में परखकर उनकी शुद्धता और मूल्य सिद्ध किया जाता था।

(2) विद्यार्थी द्वारा अनुशासन (2:15ख)

पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस अपने आप को प्रभु के सामने “ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए।” जिस शब्द का अनुवाद “काम करने वाला” या “मज़दूर” किया गया है, वह साधारण रूप से खेत में काम करने वाले श्रमिक के लिए प्रयोग होता है। बाइबल अध्ययन, यदि सही ढंग से किया जाए, तो बहुत कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है क्योंकि इसका क्षेत्र काफी विशाल है, मुद्दे गहन हैं, और मतभेद अनेक और विविध हैं।

उपदेश संबंधी अध्ययन को सुविधाजनक बनाने के लिए इसे कई शाखाओं में विभाजित किया जाता है। सबसे पहली और प्रमुख शाखा है - थियोलॉजी (धर्मविज्ञान), जिसमें परमेश्वर के स्वभाव, गुणों, चरित्र और नामों का अध्ययन किया जाता है। इसके बाद आती है क्रिस्टोलॉजी (ख्रीष्टशास्त्र), जिसमें मसीह की दैवीयता, पूर्व-अस्तित्व, गुण, देहधारण, जीवन, शिक्षाएँ, क्रूस पर चढ़ाया जाना, दफनाया जाना, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और दूसरा आगमन शामिल हैं। फिर “न्यूमेटोलॉजी” है, जिसमें पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य तथा उसके उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए लोगों के साथ संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार महत्वपूर्ण है “बीब्लियोलॉजी”, जिसमें बाइबल के दैवीय और मानवीय लेखन, उसकी प्रेरणा, उसकी त्रुटि-रहितता, उसकी अचूकता, उसके अधिकार, उसकी रचना और उसके संरक्षण का अध्ययन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त “एंजेलोलॉजी” भी है, जो स्वर्गदूतों का अध्ययन है। इस शाखा में शैतान और उसके अधिकार क्षेत्र, दुष्टात्माओं का संसार, और आत्मिक जगत का मानव जाति के साथ संबंध जैसे विषय शामिल होते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण शाखा है “सोटेरियोलॉजी”, जिसमें पूरे पवित्रशास्त्र में प्रकट किए गए उद्धार का अध्ययन समाहित होता है। इसी प्रकार “एस्कैटोलॉजी” भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें अंतिम समय, मसीह का दूसरा आगमन और परमेश्वर की अनन्त योजनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार यह क्षेत्र अत्यंत विशाल है, और विद्यार्थी को एक सच्चे “परिश्रम करनेवाले” के समान होना आवश्यक है।

इस कार्य की कठिनाई इस कारण और बढ़ जाती है कि उपदेश संबंधी अध्ययन की प्रत्येक शाखा विभिन्न मतों और विचारधाराओं के लिए एक युद्धभूमि बन गई है। उदाहरण के लिए, अति-कैल्विनवादी और आर्मिनियन परमेश्वर की सर्वोच्चता बनाम मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के विषय में, तथा अनन्त सुरक्षा बनाम इस संभावना के विषय में कि परमेश्वर के संतान अपना उद्धार खो सकते हैं—इन मुद्दों पर आमने-सामने टकराते हैं।

भविष्यवाणी का विद्यार्थी हर स्थान पर मतभेद पाता है। क्या मसीह का दूसरा आगमन महाक्लेश से पहले होगा, उसके मध्य में, या उसके बाद होगा? क्या मसीह का राज्य पूर्व-सहस्राब्दी होगा, उत्तर-सहस्राब्दी होगा, या असहस्राब्दी होगा? क्या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या शाब्दिक रूप से की जानी चाहिए या प्रतीकात्मक रूप से? क्या मसीह-विरोधी यहूदी होगा या अन्यजाति में से कोई होगा?

इसी प्रकार, “न्यूमेटोलॉजी” में भी मतभेद पाए जाते हैं। तथाकथित “करिश्माई” लोग मानते हैं कि पवित्र आत्मा के सभी वरदान आज भी विद्यमान हैं, जबकि अन्य लोग अस्थायी चिन्हात्मक वरदानों और स्थायी आत्मिक वरदानों के बीच भेद करते हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के कार्य के विषय में भी व्यापक मतभेद पाए जाते हैं।

स्थिति को और अधिक जटिल बना देने वाले लोग “उदारवादी धर्मविज्ञानी” हैं, जो पवित्रशास्त्र को काट-छाँट कर बदल देते हैं। वे अलौकिक बातों का इनकार करते हैं, विशेषकर पवित्रशास्त्र की दैवीय प्रेरणा और उसकी त्रुटि-रहितता को नकार देते हैं। वे बाइबल को केवल एक मानवीय पुस्तक के स्तर तक घटाना चाहते हैं, मसीह को बुद्ध के समान उसके स्तर पर लाना चाहते हैं, उद्धार के सुसमाचार को अच्छे कार्यों के सामाजिक सुसमाचार में बदलना चाहते हैं, और मसीही विश्वास को हिन्दू धर्म और इस्लाम के समान स्तर पर एक और धर्म के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इन सब भ्रमों के साथ कैथोलिक मत भी जुड़ जाता है, जो अपने मत-सिद्धांतों को बाइबल में जोड़ता है, और वे पंथ भी जो विभिन्न तरीकों से व्यवस्थित रूप से पवित्र शास्त्र के सत्य का इनकार और विकृत करते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बाइबल के विद्यार्थी को “काम करनेवाला” बनने के लिए बुलाया गया है। यदि उसे सत्य की स्पष्ट समझ तक पहुँचने के मार्ग में बाधा डालने वाली बंद गलियों की भूलभुलैया से होकर अपने विचारों के द्वारा रास्ता बनाना है, तो उसके सामने एक कठिन कार्य है।

(3) पवित्रशास्त्र को ठीक रीति से विभाजित करना (2:15ग)

“सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना” - यह वाक्यांश पवित्रशास्त्र की सही व्याख्या और उचित विभाजन की ओर संकेत करता है। यहाँ पौलुस के मन में क्या था? एक विचार यह है कि वह एक राजमिस्त्री के बारे में सोच रहा था, जो पत्थर को सीधा और सही काटना जानता है ताकि वह भवन में अपने उचित स्थान पर ठीक से बैठ सके। दूसरा विचार यह है कि वह इस बात पर जोर दे रहा था कि परमेश्वर के सत्य को प्रस्तुत करते समय हमें सीधा मार्ग अपनाना चाहिए और किसी व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए उससे विचलित नहीं होना चाहिए। निस्संदेह रूप से, उसका आशय यह था कि हमें परमेश्वर के सत्य को पूरी ईमानदारी, पूर्णता और स्पष्टता के साथ संभालना चाहिए। पवित्रशास्त्र का अध्ययन और उसका प्रचार करते समय हमें सीधी और सटीक “हल की रेखा” खींचनी चाहिए।

सत्य के वचन को ठीक रीति से विभाजित करने के लिए हमारे पास एक सुसंगत “व्याख्यात्मक पद्धति” (हर्मेन्यूटिक) होनी चाहिए। हमें बाइबल की व्याख्या रूपकात्मक नहीं, बल्कि शाब्दिक रूप से करनी चाहिए; साथ ही उसके मूल हिब्रू भाषा और यूनानी भाषा को ध्यान में रखते हुए, तथा उसके उत्पन्न होने की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि के अनुसार उचित विचार करना चाहिए। हमें विभिन्न युगों, मनुष्यों पर आने वाले विभिन्न प्रकार के न्याय, दो अलग-अलग पुनरुत्थानों, हमारी स्थिति और अवस्था, इस्राएल और कलीसिया, कलीसिया और राज्य, तथा परमेश्वर के राज्य और स्वर्ग के राज्य के बीच के स्पष्ट भेदों को भी ध्यान में रखना चाहिए। अर्थात्, जहाँ परमेश्वर ने भेद किया है, वहाँ हमें भी भेद करना चाहिए। हमें अलंकारिक भाषा, प्रकार और प्रतीकों, घटनाओं के कालक्रम, प्रत्येक पुस्तक की संरचना, पवित्रशास्त्र की एकता, तथा नामों और स्थानों के महत्व पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि हम इन सिद्धांतों का पालन करें, तो हमारे अध्ययन से पाठ की एक पर्याप्त, व्यापक, सुसंगत और सही व्याख्या प्रकट होगी।

“ठीक रीति से काम में लाने” के इस पूरे कार्य में हमें दूसरों की सहायता को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को शिक्षकों का वरदान दिया है। प्रतिभाशाली और परमेश्वर-भक्त व्यक्तियों का

प्रचार और लेखन अत्यंत मूल्यवान हो सकता है—बशर्ते हम उन्हें बिरीया के लोगों की तरह सावधानी के साथ सुनें और पढ़ें (प्रेरितों के काम 17:10-11)।

परिश्रमी विद्यार्थी उपयोगी पुस्तकों का एक निरंतर बढ़ता हुआ संग्रह तैयार करता है, जिसमें टीकाएँ, शब्दकोश, विश्वकोश, एटलस, इतिहास, जीवनियाँ, व्यवस्थित धर्मविज्ञान, तुलनात्मक धर्म और पंथों पर लिखी पुस्तकें, शब्द-अध्ययन, और यहाँ तक कि उत्तम साहित्य भी शामिल होगा। वह अपने अध्ययन को अनेक विषयों तक विस्तृत करेगा, जैसे पुरातत्व, भूगोल, इतिहास, खगोलशास्त्र, प्रतिरक्षात्मक तर्क (अपोलोजेटिक्स), और विभिन्न भाषाएँ। वह पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और पुस्तकों के व्यापक अध्ययन से उदाहरणात्मक सामग्री एकत्र करके अपने अभिलेखों को भरता जाएगा। वह पुस्तकालयों से जुड़ेगा, विभिन्न पत्रिकाओं की सदस्यता लेगा, व्याख्यानों में भाग लेगा, और विशेषज्ञों से परामर्श करेगा। संक्षेप में, परिश्रमी विद्यार्थी लगन के साथ परिश्रम करेगा। वह “सत्य के वचन” में अपने मन को डुबोते हुए अपनी नोटबुक को भरता जाएगा।

जब द्वितीय विश्व युद्ध के नगाड़े थम गए और लोग शांति की तलाश में आशा से भर गए, तो उन्हें जल्द ही पता चला कि उनके सपने दरअसल बुरे सपने में बदल गए हैं। सोवियत संघ ने दुनिया को साम्यवादी बनाने के लिए एक वैश्विक प्रयास शुरू कर दिया। लोहे का परदा गिर गया और पूर्वी यूरोप को एक तरह से निगल लिया गया। शीत युद्ध शुरू हो चुका था।

सर विंस्टन चर्चिल हैरान रह गए। उन्हें लगा कि बाइबल में ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो शांति के खतरनाक रास्तों पर अपने लोगों का मार्गदर्शन करने के उनके मार्ग पर प्रकाश डाल सकती हैं। लेकिन इन बातों पर प्रकाश डालने के लिए वह किसे पा सकते थे?

गहन पृष्ठताछ के बाद, उन्होंने हैरोल्ड सेंट जॉन नामक एक पूर्व मिशनरी को चुना, जो एक प्रतिभाशाली बाइबल शिक्षक थे और भविष्यवाणी संबंधी वचन में निपुण थे। दोनों की भेंट की व्यवस्था की गई। दिन के अधिकांश समय तक, वह महान राजनेता परमेश्वर के एक उत्कृष्ट सेवक के चरणों में बैठा रहा, जबकि वह महान बाइबल शिक्षक उसे पवित्रशास्त्र के माध्यम से समझाता रहा।

दिन के अंत में जब दोनों व्यक्ति विदा हुए, तो चर्चिल ने अपने नए मित्र से कहा, “मिस्टर सेंट जॉन, मैं बाइबल के आपके ज्ञान के लिए आधी दुनिया आपको देने को तैयार हूँ।” मिस्टर सेंट जॉन ने इस प्रशंसा को नम्रता पूर्वक स्वीकार किया और शांति से कहा, “सर, मैंने इसे पाने के लिए पूरी दुनिया त्याग दी है।”

ग. झूठ (2:16-18)

(1) तस्वीर (2:16-17क)

(क) त्रुटि का आगमन (2:16क)

तीमुथियुस को अपने बाइबल अध्ययन में आगे बढ़ते रहने का एक कारण यह भी था कि “फाड़ डालने वाले भेड़िये” इफिसुस में आ गए थे, जैसा कि पौलुस पहले ही जानता था कि यह होगा (प्रेरितों के काम 20:17, 29-31)। ये लोग “अशुद्ध बकवाद” में बढ़ते जाते थे। जिस शब्द का अनुवाद “अशुद्ध” किया गया है, वह उस दहलीज़ के समान है जिस पर हर कोई चलता है—अर्थात् जो पवित्र नहीं है, सामान्य और

अपवित्र है। यह उन लोगों का वर्णन करता है जिनमें परमेश्वर के प्रति कोई आदर नहीं होता। “बकवास” का अर्थ है “निरर्थक बातों की चर्चा करना।” यह ऐसे शब्दों को दर्शाता है जो भीतर से खाली होते हैं और जो अंततः बुराई को जन्म देते हैं। पौलुस ने इन दोनों शब्दों का प्रयोग अपनी पहले की पत्नी में भी किया था (1 तीमुथियुस 1:9; 6:20), इससे ऐसा प्रतीत होता है कि तीमुथियुस ने या तो इस समस्या के बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं किया था, या फिर वह इसे संभालने में सफल नहीं हुआ था।

पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस उन लोगों से “बचा रह” जो इस खतरनाक बातचीत में लगे हुए थे। “बचा रह” के लिए जो शब्द यहाँ प्रयोग किया गया है, वह प्रेरितों के काम 25:7 में भी मिलता है, जहाँ इसका अनुवाद “चारों ओर खड़े होना” किया गया है और यह उन लोगों के लिए प्रयोग हुआ है जो फेस्तुस के दरबार के चारों ओर खड़े होकर पौलुस के विरुद्ध अनेक झूठे आरोप लगा रहे थे। यूहन्ना 11:42 में भी यह शब्द उन लोगों के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है जो लाज़र की कब्र के चारों ओर खड़े थे। यहाँ पौलुस के प्रयोग में इसका अर्थ है, “किसी से बचने के लिए जानबूझकर मुड़ जाना।” प्रेरित ने तीमुथियुस को स्पष्ट रूप से यह कहा कि वह उन लोगों से जानबूझकर मुँह मोड़ ले जो “अशुद्ध बकवाद” में लगे रहते हैं।

(ख) त्रुटि का बढ़ना (2:16ख-17क)

पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी कि ऐसे लोग “और भी अभक्ति में बढ़ते जाएँगे, और उनका वचन सड़े घाव की तरह फैलता जाएगा।” पौलुस ने स्पष्ट रूप से पहले ही देख लिया था कि उनका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता जाएगा। वह प्रभु की भेद भरे दृष्टान्तों (मत्ती 13) से जानता था कि मसीहियत (कुछ लोगों की आशावादी धर्मविज्ञानी सोच के विपरीत) पूरे संसार को परिवर्तित नहीं करने वाला है। “बढ़ते जाएँगे” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह एक लोहार के उस कार्य का चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें वह ताप के लाल हुए धातु के टुकड़े को पीट-पीटकर फैलाता, पतला करता या लंबा करता है। पौलुस जानता था कि ये झूठे शिक्षक लोगों को सत्य से और दूर ले जाएँगे और इस प्रकार अधिक से अधिक अभक्ति फैलाएँगे। क्योंकि तीमुथियुस उन्हें चुप नहीं करा सकता था, इसलिए बेहतर था कि वह उन्हें प्रकट करे।

“सड़े घाव” शब्द का अनुवाद गैंग्रेना शब्द से हुआ है, जिससे हमारा अंग्रेजी शब्द गैंग्रीन बना है। “सड़े घाव” एक फैलता हुआ नासूर होता है जो पीड़ा देता है, जिसका अगर अंग-विच्छेदन द्वारा तीव्र उपचार नहीं किया गया, तो मृत्यु तक हो सकती है। पौलुस कह रहा था कि इफिसुस के कुछ लोग स्थानीय कलीसिया में उस ‘गैंग्रीन’ (नासूर) की तरह थे।

(2) झूठे प्रचारक (2:17ख-18)

पौलुस ने इफिसुस में दो प्रमुख झूठे उपदेशकों के नाम बताए: हुमिनयुस और फिलेतुस। फिलेतुस के बारे में हमें कुछ जानकारी नहीं है, परन्तु हुमिनयुस से हम पहले मिल चुके हैं। वह उन्हीं लोगों में से एक था जिसे पौलुस ने शैतान को सौंप दिया था ताकि वह परमेश्वर की निन्दा करना न सीखे (1 तीमुथियुस 1:20)। स्पष्ट है कि हुमिनयुस ने अपना पाठ नहीं सीखा, क्योंकि अब वह और फिलेतुस मिलकर विश्वासियों के पुनरुत्थान के विषय में झूठी शिक्षा दे रहे थे। उनका मुख्य झूठ यह था कि “पुनरुत्थान हो चुका है” (2 तीमुथियुस 2:18)।

हमें यह नहीं बताया गया है कि ये विधर्मी लोग कैसे लोगों को यह विश्वास दिलाने में सफल हुए कि गलत सही है, कि भूल ही सत्य है, और कि पुनरुत्थान (जो एक भविष्य की घटना है) पहले ही हो चुका है। सम्भवतः उन्होंने पुनरुत्थान को आत्मिक अर्थ देकर, पौलुस की शिक्षा को विकृत किया होगा, जैसे कि रोमियों 6:4 और इफिसियों 2:1 में लिखा है। किसी भी स्थिति में, हुमिनयुस और फिलेतुस विश्वासियों से महत्वपूर्ण सत्य छीन रहे थे (जैसा कि वे लोग आज भी करते हैं जो पुराने नियम का केवल रूपक अर्थ निकालते हैं)। पौलुस के समय में ही वे कुछ लोगों के विश्वास को उलट देने में सफल हो चुके थे।

घ. नींव (2:19)

“तौभी,” पौलुस ने लिखा, “परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है।” कुछ लोगों के भटक जाने के बावजूद, पौलुस स्वयं स्थिर बना रहा, क्योंकि उसकी नींव सुरक्षित थी।

कलीसिया, जो मसीह के कार्य, परमेश्वर के वचन, और पवित्र आत्मा की गवाही पर दृढ़ता से स्थापित है, उसे न तो भीतर के शत्रु गिरा सकते हैं और न ही कोई बाहरी शत्रु उसे कभी गिरा सकता है। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था: “इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे” (मत्ती 16:18)। कलीसिया ठोस चट्टान पर बनी है, इसलिए आंधियों को आने दो! हवाएँ चलने दो! लहरों को उठने और गरजने दो, लेकिन यह स्थिर बनी रहेगी (मत्ती 7:24-27)!

एक सामान्य देखने वाले को ऐसा लग सकता था कि पौलुस का परिश्रम व्यर्थ हो गया है। पृथ्वी का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य कलीसिया को नष्ट करने के लिए अपनी सारी शक्ति के साथ उठ खड़ा हुआ था; एक ऐसा आक्रमण आरम्भ हो चुका था जो तीन सौ वर्षों तक चलता रहा। स्वयं पौलुस मृत्यु-दण्ड के अधीन एक बन्दी था। उसके बहुत से मित्र, विश्वास में आए लोग और शिष्य उसे छोड़ के जा रहे थे। जिन प्रान्तों में उसने अनेक कलीसियाएँ स्थापित की थीं, वे सब उसके विरुद्ध हो रहे थे। यहाँ तक कि विश्वासयोग्य तीमुथियुस को भी निरन्तर उत्साहित करने की आवश्यकता महसूस हो रही थी। फिर भी पौलुस कभी विचलित नहीं हुआ, क्योंकि वह अन्त के समय की ओर देख रहा था। वह जानता था कि परमेश्वर अब भी सिंहासन पर विराजमान है और नींव पक्की एवं सुरक्षित है। वह नींव इसलिए सुरक्षित थी क्योंकि वह पवित्र शास्त्र पर स्थापित थी।

इसलिए पौलुस तीमुथियुस को उसके बाइबल की ओर वापस ले गया। उसने उससे कहा, “प्रभु अपनों को पहिचानता है” (2 तीमुथियुस 2:19)। सम्भव है कि वह गिनती 16 और कोरह, दातान, और अबीराम की घटना की ओर संकेत कर रहा था। जब पुराने नियम के इन धर्मत्यागियों ने मूसा और हारून के अधिकार को गिराने का प्रयास किया, तब परमेश्वर ने पहले दोषियों को उन लोगों से अलग किया जो वास्तव में उसके लोग थे—प्रभु अपनों को पहिचानता है (गिनती 16:1-40)—और फिर उसने न्याय के द्वारा अपनी सामर्थ्य प्रकट की।

प्रभु ने स्वयं भविष्यवाणी की थी कि गेहूँ के बीच जंगली बीज भी उगेंगे (मत्ती 13:24-30)। हमारा काम यह नहीं है कि हम उन जंगली बीजों को उखाड़ने का प्रयास करें। यह कार्य अन्त के दिनों में स्वर्गदूतों द्वारा किया जाएगा। प्रभु सच्चे गेहूँ को पहिचानता है, वह अपने प्रत्येक जन को जानता है, जैसे यूसुफ अपने प्रत्येक भाई को पहिचानता था (उत्पत्ति 42:7)। हमारा कार्य यह सुनिश्चित करना है कि हम “अधर्म से बचा रहे।”

6. तीमुथियुस को एक सेवक बनना था (2:20-26)

क. सेवा का मानदंड (2:20)

सार्वभौमिक कलीसिया, जो “उनसे बनी है जो उसके हैं,” वह निर्दोष और अपराजित है। परन्तु स्थानीय कलीसिया सिद्धता से बहुत दूर है। दोनों का वर्णन प्रभु ने मत्ती के सुसमाचार में किया है। उन्होंने सार्वभौमिक कलीसिया का उल्लेख मत्ती 16 में किया, जहाँ उसे चट्टान पर स्थापित और अपराजित बताया गया है। उसने स्थानीय कलीसिया और उसके कार्यों का उल्लेख मत्ती 18 में किया। इन कार्यों में विश्वासियों को छोटे बच्चों के समान ग्रहण करना, भटके हुए लोगों को जो भेड़ों के समान भटक जाते हैं पुनः बहाल करना, और भाइयों के बीच मेल-मिलाप कराना शामिल है। यह अध्याय स्थानीय कलीसिया को सुधारात्मक सेवकाई की आवश्यकता में दर्शाता है। कुछ सदस्यों को पुनर्स्थापित करने की, जबकि कुछ को कलीसिया से बाहर निकालने की आवश्यकता थी। जब प्रभु ने यह बातें कहीं, तब सार्वभौमिक कलीसिया और स्थानीय कलीसिया दोनों भविष्य की बातें थीं, परन्तु उसने इन प्रारम्भिक उल्लेखों में इस विषय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया।

2 तीमुथियुस 2:20 में, पौलुस स्थानीय कलीसिया को एक “बड़े घर” के रूप में देखता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के बर्तन रखे होते हैं। यह अपनी संगति में उद्धार पाए हुए और बिना उद्धार के लोगों का मिश्रण एकत्रित करता है। उनमें से कुछ कलीसिया में ही पले-बढ़े होते हैं और उन्होंने “कनान की भाषा” बोलना सीख लिया है। उनके पास सिर में ज्ञान तो है, परन्तु हृदय में कुछ नहीं है। उन्होंने बपतिस्मा तो लिया है, सदस्यता प्राप्त की है, और सेवकाई के अवसरों में लगाए गए हैं, परन्तु वास्तव में उन्होंने कभी उद्धार नहीं पाया होता। अन्य लोगों ने सम्भवतः किसी अत्यधिक उत्साही सुसमाचार प्रचारक के प्रयासों या किसी भावनात्मक अपील के प्रभाव में मन- परिवर्तन का अंगीकार तो किया होता है,, परन्तु उन्होंने मसीह में नये जीवन का कोई प्रमाण कभी नहीं दिखाया होता।

किसी न किसी प्रकार ऐसे लोग कलीसिया में आ जाते हैं और यहाँ तक कि मंच तक भी पहुँच जाते हैं या सेवक का पद भी ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु अपने हृदय में वे मसीह के लिए अजनबी ही बने रहते हैं। उनकी सोच सांसारिक होती है, उनकी प्रतिक्रियाएँ प्राकृतिक मनुष्य जैसी होती हैं, और उनकी सेवा दोषपूर्ण होती है। वे शिक्षित, सुसंस्कृत, योग्य और समाज के सफल सदस्य हो सकते हैं, परन्तु कलीसिया में परमेश्वर की दृष्टि में वे “निरादर के पात्र” गिने जाते हैं, क्योंकि वे प्रभु को नहीं जानते (मत्ती 7:21-23)।

घर में कुछ बर्तन मूल्यवान होते हैं और कुछ साधारण। ठीक उसी प्रकार कलीसिया में भी ऐसा ही होता है। कुछ सदस्य शुद्ध सोने के समान होते हैं। वे सर्वोत्तम प्रकार की सेवा करते हैं, और उनका चरित्र और विश्वासयोग्यता बहुत मूल्यवान होती है। अन्य विश्वासी चाँदी के बर्तन के समान होते हैं। वे भी असली धातु के बने होते हैं, परन्तु सोने की उत्कृष्टता तक नहीं पहुँचते। जो लोग नया जन्म नहीं पाए होते, वे साधारण मिट्टी के बने होते हैं; वे मिट्टी के बर्तन हैं। अन्य अविश्वासी लोग काठ के बर्तन के समान होते हैं। मिट्टी के बर्तन ऐसे लोगों की सेवा को दर्शाते हैं जिन्होंने नया जन्म नहीं पाया है। काठ के बर्तन उस सेवा को दर्शाते हैं जो मनुष्य के बनाए हुए काम पर आधारित होती है। ऐसी सेवा में मानवीय स्वभाव और मानवीय प्रयास की ही छाप होती है।

आत्मिक विश्वासियों द्वारा किया गया कार्य सर्वोच्च स्तर का होता है। इसके विपरीत, भले इरादों वाले परन्तु नया जन्म न पाए हुए कलीसिया के सदस्यों द्वारा किया गया कार्य कम सराहनीय होते हैं। जिस प्रकार मिट्टी का बर्तन टूट सकता है और काठ का बर्तन टूट-फूट सकता है, उसी प्रकार अविश्वासियों की सेवा भी शीघ्र ही अपनी कमियाँ प्रकट कर देती है। हुमिनयुस, सिकन्दर, और फिलेतुस मिट्टी और लकड़ी के बर्तनों के उदाहरण हैं। जबकि तीमुथियुस और तीतुस सोने और चाँदी के बर्तनों के सर्वोच्च उदाहरण हैं।

मिस्र से परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के साथ जो “मिश्रित भीड़” निकली थी, वह निरन्तर भ्रम, विवाद और शिकायत का कारण बनी रही (निर्गमन 12:38; गिनती 11:4)। इसी प्रकार, कलीसिया में भी अविश्वासी सदस्य निरन्तर परेशानी का स्रोत बने रहते हैं। सोचिए कि उदारवादी धर्मविज्ञानियों या घमण्डी और सांसारिक पेशेवर याजकों और सेवकों के द्वारा कलीसिया को कितना नुकसान पहुँचाया गया है। चाहे उन्हें अपने साथियों से कितना भी सम्मान और प्रशंसा मिले, फिर भी वे “निरादर के पात्र” ही होते हैं और अन्ततः वैसे ही प्रकट भी किए जाएंगे।

ख. सेवा की शर्त (2:21-23)

(1) अनिवार्यता (2:21)

(क) परमेश्वर एक शुद्ध पात्र चाहता है (2:21क)

तीमुथियुस को इफिसुस की कलीसिया में “निरादर के पात्रों” से अपने आप को अलग करना था। पौलुस पहले ही उसे हुमिनयुस और फिलेतुस जैसे लोगों से “दूर रहने” के लिए कह चुका था, और उनसे भी जिनकी व्यर्थ और विवाद उत्पन्न करने वाली बातें कलीसिया को विचलित कर रही थीं (2:16-17)। अब प्रेरित ने तीमुथियुस से कहा कि वह “अपने आप को इन से शुद्ध करे।” “शुद्ध करना” के लिए जो शब्द यहाँ प्रयोग किया गया है, वह नये नियम में केवल दो स्थानों पर ही मिलता है—यहाँ पर और 1 कुरिन्थियों 5:7 में। ऐसे लोगों से पूर्णतः अलग हुए बिना, तीमुथियुस स्वयं एक शुद्ध पात्र कभी नहीं बन सकता था।

(ख) परमेश्वर एक पवित्र पात्र चाहता है (2:21ख)

एक मसीही को “आदर का पात्र, पवित्र किया हुआ, और स्वामी के उपयोग के काम” आने योग्य होना चाहिए। स्थानीय कलीसिया में जो कुछ सेवा के नाम पर होता है, उसका बहुत भाग शारीरिक और सांसारिक होता है, क्योंकि वह या तो अविश्वासी सदस्यों द्वारा किया जाता है या शारीरिक मसीहियों द्वारा। इसमें हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। मत्ती 13 के भेदपूर्वक दृष्टान्त हर ओर दिखाई देने वाली असफलता की भविष्यवाणी करते हैं। तथापि, परमेश्वर के पास सदा अपने सोने और चाँदी के पात्र होते हैं, जैसे पुराने नियम में इस्राएल में हमेशा एक विश्वासयोग्य ‘बचा हुआ अवशेष’ रहता था। उदाहरण के लिए बोअज़ को देखें, जो रूत का छुड़ानेवाला-कुटुम्बी था, या एलिय्याह के समय के वे सात हज़ार लोग जिन्होंने बाल के सामने घुटने नहीं टेके, या वह विशिष्ट समूह जो भविष्यद्वक्ताओं की श्रेणी में गिने जाते थे।

2 तीमुथियुस 2:21 में “आदर” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह कलीसिया में परमेश्वर के सोने और चाँदी के पात्रों के मूल्य को दर्शाता है। “पवित्र” शब्द का अर्थ है कि वे परमेश्वर के लिए अलग किए

गए हैं। “काम आएगा” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “लाभदायक, उपयोगी।” पौलुस ने इसी शब्द का प्रयोग उनेसिमुस के मन-परिवर्तन के बाद उसके लिए किया था (फिलेमोन 11)।

(ग) परमेश्वर एक आज्ञाकारी पात्र चाहता है (2:21ग)

एक आज्ञाकारी पात्र वह है जो “हर एक भले काम के लिए तैयार होगा।” परमेश्वर का कार्य विशाल और विविध प्रकार का है। यह कार्य स्वर्ग के नीचे हर राष्ट्र में और संसार भर की असंख्य भाषाओं और बोलियों में ऐसे आज्ञाकारी पात्रों के द्वारा किया जा रहा है। परमेश्वर का कार्य आत्मिक सेवकाइयों को भी सम्मिलित करता है, जिनके लिए आत्मिक वरदानों का प्रयोग आवश्यक है। साथ ही इसमें सामाजिक सेवकाइयाँ भी शामिल हैं—दयालुता और करुणा के कार्य—जैसे उन मिशनरियों के कार्य जिन्होंने कुछ रोगियों के लिए बस्तियाँ स्थापित कीं, विद्यालय खोले, अनाथालय बनाए, गरीबों और दुर्बलों की सहायता की, अस्पताल और आश्रय-गृह बनाए, और त्यागे हुए लोगों, मद्यपानियों और नशा करने वालों तक अपनी पहुँच बनाई। ये सभी सेवकाइयाँ कलीसिया के कार्य का ही भाग हैं (मत्ती 5:16)।

(2) एक विधि (2:22क)

एक उपयोगी पात्र बनने के लिए हमें “जवानी की अभिलाषाओं से भागना” होगा। यही वह मार्ग है जिससे परमेश्वर के सेवक एक अशुद्ध और कामुक समाज में अपने आप को दूषित होने से बचा सकते हैं। हम या तो अपनी शारीरिक अभिलाषाओं को बढ़ावा दे सकते हैं या उनसे दूर भाग सकते हैं। हमें “शैतान का सामना करने” के लिए कहा गया है (याकूब 4:7), जबकि यहाँ जवानी की अभिलाषाओं से भागने के लिए कहा गया है। बाइबल का एक प्रसिद्ध उदाहरण यूसुफ है, जो पोतीपर की पत्नी के द्वारा प्रलोभित किए जाने पर उसके पास से भाग गया (उत्पत्ति 39:7-12)। दो लोग जिन्होंने भागने के स्थान पर प्रलोभन में पड़ गए, वे थे - दाऊद, जो बतशेबा के प्रति आकर्षित होकर प्रलोभन में पड़ गया (2 शमूएल 11:1-5), और शिमशोन, जो दलीला के द्वारा बहकाया गया (न्यायियों 16:4-21)। इन दोनों घटनाओं को बाइबल में विस्तार से इसलिए लिखा गया है ताकि हमें अपनी अभिलाषाओं में लिप्त होने के विरुद्ध एक कड़ी चेतावनी मिल सके। हमें अपने और उन सब बातों के बीच जितनी सम्भव हो उतनी दूरी रखनी चाहिए जो हमारी अभिलाषाओं को भड़का सकती हैं। यही परमेश्वर की विधि है—और इससे बेहतर कोई अन्य उपाय नहीं है।

(3) एक कदम बढ़ाना (2:22ख-ग)

(क) सही मार्ग पर (2:22ख)

हमें केवल भागना नहीं है, बल्कि “धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेलमिलाप का पीछा” करना है। ये परमेश्वर के महान ध्वजा-वाहक हैं जो हमारे स्तर को निर्धारित करते हैं। अपने ध्वज ऊँचे उठाए हुए वे हमारे आगे-आगे चलते हैं, और हमें उनके पीछे चलना है।

“धार्मिकता” मनुष्यों के प्रति प्रकट होती है। इसका सम्बन्ध सही होने और सही कार्य करने से है। “विश्वास” परमेश्वर की ओर होता है। इसका सम्बन्ध परमेश्वर, उसके वचन, उसकी इच्छा, और सबसे बढ़कर उसी पर भरोसा करने से है। “प्रेम” बाहर की ओर बढ़ता है। यही वह बात है जिसने परमेश्वर को स्वर्ग से एक खोई हुई और नष्ट संसार की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। प्रेम ही वह कारण है जिससे विश्वासी उन

लोगों तक पहुँचता है जिन्हें उद्धारकर्ता की अत्यन्त आवश्यकता है। “शान्ति” भीतर की अवस्था है। शान्ति का अर्थ है कि युद्ध समाप्त हो गया है। परमेश्वर की शान्ति विश्वासी के हृदय में राज्य करती है, जिससे वह जीवन की परिस्थितियों का सामना स्थिर मन से कर सकता है।

(ख) सही लोगों के साथ (2:22ग)

विश्वासियों को उन लोगों के साथ चलना है “जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं।” हम अकेले नहीं हैं। संसार के हर भाग से और समाज के हर स्तर से असंख्य लोग शुद्ध हृदय से प्रभु को पुकार चुके हैं।

वे भी शरीर की अभिलाषाओं से भाग रहे हैं। उन्होंने भी संसार के अभिलाषाओं पर विजय पाई है और शैतान के झूठ को अच्छे से पहचान लिया है। और जब हम सब स्वर्ग की ओर और अपने घर की ओर बढ़ते हैं, तब हम “लाखों स्वर्गदूतों” द्वारा सुरक्षित रहते हैं और “पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं,” उनके द्वारा उत्साहित किए और सराहे जाते हैं (इब्रानियों 12:22-23)।

पौलुस का मन अवश्य ही गीत में उमड़ पड़ा होगा जब उसने उन विश्वासियों के बारे में सोचा जो सच्चे सोने और चाँदी के पात्र थे, जिनके मन शुद्ध थे। उसका हृदय अवश्य ही भावविभोर हुआ होगा जब उसने रोम के उन साहसी मसीहियों के विषय में सोचा, जो विश्वास का इनकार करने की अपेक्षा भयानक मृत्यु के साथ मरना अधिक उचित समझते थे। अप्रत्यक्ष रूप से उसने तीमुथियुस को स्मरण दिलाया कि हुमिनयुस और फिलेतुस की अशुद्ध संगति में जाने वालों के बावजूद वह अच्छी संगति में है।

(4) एक आदेश (2:23)

सेवा की एक और शर्त प्रस्तुत करते हुए, पौलुस ने लिखा, “मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रह, क्योंकि तू जानता है कि इनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं।” “मूर्खता” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “मन्दबुद्धि, बेवकूफ,” और यह ऐसे मूल शब्द से निकला है जिसका अर्थ है “मूर्खता करना।” “अविद्या” शब्द उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो शिक्षा से रहित या बिना सिखाया हुआ है। तीमुथियुस को विचारशील लोगों के प्रश्नों से नहीं बचना था, बल्कि उसे उन लोगों के प्रश्नों का उत्तर देने से बचना था जो तुच्छ बातों में उलझे रहते थे और मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछते थे। यहाँ “अलग रह” का अर्थ है “इनकार करना।” तीमुथियुस को ऐसे व्यर्थ प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार करना था, क्योंकि वे झगड़े उत्पन्न करते हैं। ऐसे विवादों में उलझना हमारी सेवकाई का भाग नहीं है।

ग. सेवा का चरित्र (2:24-26)

(1) विरोध से निपटना (2:24-25ख)

(क) मसीही सेवा से किन बातों को बाहर रखा जाना चाहिए (2:24क)

पौलुस आगे कहता है, “प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए।” यह नियम स्वाभाविक रूप से उन लोगों के संदर्भ के बाद आता है जो मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछते हैं, क्योंकि पद 23 और 24 में समान मूल के शब्द प्रयोग किए गए हैं। “झगड़े” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह लड़ाई-झगड़े और विवाद को दर्शाता है, और “झगड़ालू” का अर्थ है “लड़नेवाला।”

आगे आने वाले शब्द मसीह का पूर्ण वर्णन करते हैं, जो परमेश्वर का अद्वितीय सेवक हैं, जिसके आने की भविष्यवाणी बहुत पहले ही कर दी गई थी। प्रभु यीशु के पृथ्वी पर आने से सैकड़ों वर्ष पहले, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने उसे परमेश्वर के सेवक के रूप में वर्णित किया था (यशायाह 42:1-3; मत्ती 12:17-21)। परमेश्वर ने कहा, “मेरे दास को देखो... न वह चिल्लाएगा और न ऊँचे शब्द से बोलेगा।” मत्ती में दिया गया यह हवाला (पवित्र आत्मा की प्रेरणा से जोड़े गए शब्दों सहित) उस घटना के बाद आता है जब उसने सूखे हाथ वाले एक व्यक्ति को चंगा किया। जब फरीसियों ने प्रभु को सब्त के दिन यह चमत्कार करते देखा, तो वे तुरंत बाहर जाकर उसको मार डालने की योजना बनाने लगे। प्रभु यीशु शान्तिपूर्वक वहाँ से हट गया। बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उसने उनके सब बीमारों को चंगा किया। अपनी लोकप्रियता और सफलता का लाभ उठाने की बजाय, उसने लोगों को आज्ञा दी कि वे उनके बारे में या उनके कार्यों के बारे में प्रचार न करें। प्रभु यीशु, जो परमेश्वर का सिद्ध दास था, वह हमेशा विवादों से दूर ही रहा। वे लोगों से झगड़ा करने नहीं आया था, बल्कि उनसे प्रेम करने और उन्हें उद्धार देने आया था।

(ख) मसीही सेवा में क्या प्रदर्शित किया जाना चाहिए (2:24ख-25ख)

i. सही मनोभाव (2:24ख-घ)

क. प्रभु के सेवक को कठोर नहीं होना चाहिए (2:24ख)

झगड़ालू होने के स्थान पर, प्रभु के दास को “सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील” होना चाहिए। “कोमल” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “नम्र, विनम्र और मिलनसार।” यह शब्द उस धाई के लिए प्रयोग किया जाता था जो शरारती बच्चों के साथ भी कोमलता से व्यवहार करती है, या उस शिक्षक के लिए जो विद्रोही विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करता है।

यशायाह 42:3 परमेश्वर के सिद्ध सेवक के बारे में कहता है कि वह “कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा।” कुचला हुआ नरकट उस वस्तु का चित्र है जो कभी भी किसी काम की नहीं थी; और टिमटिमाती हुई बत्ती उस वस्तु का चित्रण है जो अब किसी काम की नहीं रही। प्रभु यीशु ने यशायाह की इस भविष्यवाणी को पूरा किया, क्योंकि उसने सबके साथ कोमलता के साथ व्यवहार किया। सोचिए, वह कुँए पर स्त्री के साथ कितने दयालु था, मार्था और मरियम के साथ, अपने चेलों के साथ, और यहाँ तक कि पीलातुस के साथ भी उसने कोमलता का व्यवहार ही किया। प्रभु के दास को ऐसी ही कोमलता को विकसित करना चाहिए; उसे कभी कठोर नहीं होना चाहिए।

ख. प्रभु के सेवक को संकोच नहीं करना चाहिए (2:24ग)

संकोची होने के स्थान पर, प्रभु के दास को “शिक्षा में निपुण” होना चाहिए। उसे हर एक से जो उससे उसके आशा के विषय में पूछे, “उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार” रहना चाहिए (1 पतरस 3:15), जैसे एज़ा मूसा की व्यवस्था में “निपुण शास्त्री” था।

“दिदाक्तिकोस” का अर्थ है “शिक्षा में निपुण।” प्रभु यीशु सब से महान शिक्षक था। पहाड़ी उपदेश में उसकी शिक्षा के विषय में मत्ती ने लिखा, “भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई, क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान

नहीं परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था” (मत्ती 7:28-29)। प्रभु का दास, जो परमेश्वर के आत्मा द्वारा सिखाया गया है, उसे भी उसी प्रकार शिक्षा देने में निपुण होना चाहिए।

ग. प्रभु के सेवक को उतावली नहीं करनी चाहिए (2:24घ)

उतावली करने के स्थान पर, प्रभु के दास को “सहनशील” होना चाहिए। प्रभु यीशु कभी भी उतावले नहीं था। उसका यह शांत और धैर्यपूर्ण स्वभाव यहूदियों के झोपड़ियों के पर्व के समय की एक घटना में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है (यूहन्ना 7:2-10)। प्रभु के अविश्वासी भाइयों ने उसे सलाह दी—“यहाँ से यहूदिया को जा। यदि तू यह काम करता है, तो अपने आप को जगत पर प्रकट कर।” तब उसने स्पष्ट रूप से उनको उत्तर दिया, “मेरा समय अभी तक नहीं आया है।” फिर उसने कहा, “तुम लोग जाओ।” “जाओ” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह एक विशेष शब्द है, जिसका अर्थ है कि वे दूसरों के साथ एक दल के रूप में जाएँ। जब उसके हस्तक्षेप करने वाले भाई वहाँ से आगे बढ़ गए, तब प्रभु बाद में स्वयं चुपचाप अकेले ही वहाँ चला गया।

प्रभु के धीरज का एक और उदाहरण यूहन्ना 11:6 में मिलता है। जब उसे पता चला कि लाज़र बीमार है, तब भी वह “जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया।” यीशु के मन में केवल लाज़र को चंगा करने से भी बड़ा एक चमत्कार था, इसलिए उसने उतावली नहीं की, बल्कि वहीं ठहरा रहा जब तक कि लाज़र की मृत्यु न हो गई।

धैर्यवान होने के साथ-साथ, प्रभु के पास समय की पूर्ण समझ भी थी। जब उसकी माता ने काना के विवाह में उत्पन्न हुए संकट के विषय में उससे कुछ करने के लिए कहा, तब उसने उत्तर दिया, “अभी मेरा समय नहीं आया” (यूहन्ना 2:4)।

यूहन्ना ने इस रहस्यमय “समय” का अन्य स्थानों पर भी उल्लेख किया है (यूहन्ना 7:30; 8:20)। फिर उसने लिखा कि जब प्रभु का अन्तिम फसह निकट आया, तो “यीशु ने जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची है” (यूहन्ना 13:1)। मसीह परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के सिद्धांत पर अपना जीवन जीता था।

प्रभु के दास को भी यही समझ होना आवश्यक है कि परमेश्वर का समय पूर्ण रूप से सिद्ध होता है। विश्वासी उतावला होने का जोखिम नहीं उठा सकता। उसे दाऊद के साथ कहना चाहिए, “मेरे दिन तेरे हाथ में हैं” (भजन 31:15)। दाऊद ने परमेश्वर की प्रतीक्षा की; इसलिए वह अपने हाथों में मामला लेने से रुका रहा (1 शमूएल 26)।

ii. सही प्रयास (2:25क-ख)

प्रभु के दास को चाहिए कि “वह विरोधियों को नम्रता से समझाए” जो अपने ही विरोध में खड़े हैं। जब हम यूहन्ना के सुसमाचार में प्रभु और उनके विरोधियों के बीच हुए संवाद को पढ़ते हैं, तो हम उसके नम्र स्वभाव से अत्यन्त प्रभावित होते हैं। उसने अपने ही इस वचन का पालन किया: “धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे” (मत्ती 5:5; साथ ही 11:29 को भी देखें)। उसने कभी वाद-विवाद नहीं किया, कभी क्रोध में अपनी आवाज़ ऊँची नहीं उठाई, और कभी अपना धैर्य नहीं खोया।

साथ ही, उसने अपने विरोधियों को उनके भयानक व्यवहार और लज्जापूर्ण आरोपों के साथ कभी भी यूँ ही नहीं जाने दिया। वे अक्सर दुर्भावनापूर्ण होते थे, और उसने उनके अभद्र व्यवहार को फटकारा, परन्तु यह सब उन्होंने शान्त और समझदारी के साथ किया। उसने कभी उनका उपहास नहीं उड़ाया और न ही उन्हें अपशब्द कहे। उसने उनके कठिन और चालाकी भरे प्रश्नों का उत्तर सच्चाई और निडरता से दिया लेकिन वह भी बड़ी शान्ति के साथ। उसने उन्हें कड़वे सत्य को भी बड़े साहस के साथ सिखाया, परन्तु वह हमेशा शान्त, संयमित और विनम्र बना रहा। प्रभु के दास को भी यही करने का प्रयास करना चाहिए।

(2) अवसर का सही उपयोग करना (2:25ग-26)

(क) अविश्वासी के लिए पश्चात्ताप की आवश्यकता (2:25ग)

पौलुस ने इस पद्यांश का समापन इस बात पर बल देते हुए किया कि प्रभु के दास को बड़े धीरज से लोगों के साथ व्यवहार करना चाहिए, इस आशा में कि “क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें।” पौलुस के मन में संभवतः अभी भी हुमिनयुस, फिलेतुस, और वे लोग थे जो उन विरोधियों का पक्ष ले रहे थे। दरअसल, वे एक गम्भीर आत्मिक खतरे में थे।

मन फिराव का सम्बन्ध मन के परिवर्तन से है। नया जन्म हृदय के परिवर्तन से सम्बन्ध रखता है। मेल-मिलाप इच्छा के परिवर्तन से सम्बन्ध रखता है। परमेश्वर की ओर मन फिराव और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास, एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं (प्रेरितों के काम 20:21)।

नये नियम में मन फिराव के लिए दो मुख्य शब्द प्रयोग किए गए हैं। एक का अर्थ है “पछताना।” इसका सम्बन्ध उस खेद से है जो हमें तब होता है जब हम किसी पाप में पकड़े जाते हैं। इसमें हम सबके सामने उजागर हो जाने के कारण होने वाले अप्रिय परिणामों के विषय में अधिक चिन्तित होते हैं, न कि गहरे पश्चात्ताप की आवश्यकता के विषय में। यह शब्द यहूदा के सम्बन्ध में प्रयोग किया गया है (मत्ती 27:3)।

दूसरे शब्द का अर्थ है कि अपने मन को अच्छे के लिए बदलना। इसका परिणाम यह होता है कि हम अपने पाप को छोड़ देते हैं। यह परमेश्वर की ओर सच्चे मन फिराव को दर्शाता है। यहाँ इस शब्द का प्रयोग यह बताता है कि मन फिराव लाने का कार्य पवित्र आत्मा करता है।

आखिरकार, पवित्र आत्मा का मनुष्य के हृदय में पहला महान कार्य यही है कि वह पाप, धार्मिकता और आने वाले न्याय के विषय में बोध कराता है (यूहन्ना 16:8-11)। इस प्रकार पवित्र आत्मा जीवन देता है, विवेक को जागृत करता है, और ऐसी स्थिति उत्पन्न करता है जिसमें मन फिराव सम्भव और प्रभावशाली हो जाता है। जब पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति को मन फिराव की ओर ले जा रहा होता है, तो “सत्य की पहिचान” स्वाभाविक रूप से उसके बाद आती है। “ज्ञान” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, वह सही और अनुभव से प्राप्त ज्ञान को दर्शाता है। मन फिराने वाला व्यक्ति इसी प्रकार सत्य की पहिचान प्राप्त करता है।

(ख) अविश्वासी के लिए उद्धार की आवश्यकता (2:26)

मन फिराव आवश्यक है कि वे “इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएँ।” बाइबल के विद्वान मानते हैं कि यह पद कुछ कठिन है, क्योंकि अन्त में आए “उसने” और

“उसकी” के संकेत स्पष्ट नहीं हैं। फिर भी, इस पद के शेष भाग में कोई कठिनाई नहीं है। पापी मनुष्य शैतान के बन्दी होते हैं, और वे उसके द्वारा फँसाए गए हैं। उन्हें छुड़ाए जाने की आवश्यकता है, और यह छुटकारा कुछ हद तक स्वयं उन पर भी निर्भर करता है।

मन फिराव की जड़ मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा और नैतिक उत्तरदायित्व में निहित होती है। पिछले पद में इसका संतुलित सत्य दिया गया है कि मन फिराव परमेश्वर देता है—यह इस प्रक्रिया का दैवीय पक्ष है।

“सचेत होकर” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ यह भी हो सकता है, “वे होश में आएँ [और इस प्रकार बचाए जाएँ]।” ठीक यही बात उड़ाऊ पुत्र के साथ हुई थी। “जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, ‘मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ’” (लूका 15:17-19)। वह अपने आपे में आया; फिर वह पिता के पास गया। पुत्र ने स्वयं अपनी इच्छा से यह निर्णय लिया। पिता उसे मिलने दौड़कर आया, परन्तु उसके पीछे दौड़ा नहीं।

इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है, “वे फिर से होश में आ जाएँ।” इसका संकेत यह है कि पापी ऐसा व्यवहार करता है जैसे कोई मदहोश व्यक्ति, जो अपनी समझ-बूझ खो चुका हो। बाइबल के अनुसार उसके व्यवहार का कारण आत्मिक है, न कि मनोवैज्ञानिक; इसलिए उसका उपचार भी आत्मिक रूप से ही होना चाहिए, न कि केवल मनोवैज्ञानिक ढंग से। मनोविज्ञान लक्षणों से सम्बन्ध रखता है, जबकि बाइबल कारणों से सम्बन्ध रखती है। कोई भी उपचार पद्धति, चाहे वह कितनी ही उन्नत क्यों न हो, तब तक सफल नहीं हो सकती यदि वह “पाप और मृत्यु की व्यवस्था” की अनदेखी करता है (रोमियों 8:2)। आधुनिक मनुष्य के लिए हिंसा और अपराध की बढ़ती समस्याओं को दूर करना कठिन होने का एक कारण यह है कि उसे यह विश्वास दिला दिया गया है कि इन समस्याओं का कारण और समाधान केवल मनो-सामाजिक है। परन्तु वास्तविक कारण कहीं अधिक गहरा है, और समाधान भी कहीं अधिक उत्तम है—जब पाप के प्रश्न का सामना किया जाता है और पापी को परमेश्वर के अनुग्रह से मसीह के द्वारा उद्धार के ज्ञान में लाया जाता है।

जो लोग अपने आप को सम्भाल नहीं पाए हैं, वे “शैतान के फन्दे” में फँसे हुए हैं। “फन्दा” के लिए जो शब्द प्रयोग किया गया है, उसका अर्थ है “जाल,” और यह उन प्रलोभनों की ओर संकेत करता है जिनका उपयोग शैतान लोगों को पकड़ने के लिए करता है। हुमिनयुस और फिलेतुस ऐसे लोगों के प्रमुख उदाहरण थे, जो शैतान के फन्दे में फँस गए थे और झूठी शिक्षा फैलाकर कलीसिया में अशान्ति उत्पन्न कर रहे थे तथा कुछ लोगों के विश्वास को उलट रहे थे। हुमिनयुस और सिकन्दर नामक व्यक्ति (संभवतः 2 तीमुथियुस 4:14 का ठठेरा) न केवल शैतान के फन्दे में फँसे थे, बल्कि उन्हें औपचारिक रूप से उसके हवाले भी कर दिया गया था ताकि वे निन्दा करना न सीखें (1 तीमुथियुस 1:20)। अब तक इन लोगों के बहिष्कार का परिणाम यह प्रतीत होता है कि उनकी विद्रोह की भावना और भी अधिक तीव्र हो गई थी।

अब हमें 2 तीमुथियुस 2:26 के कठिन भाग पर विचार करना चाहिए: “उसकी इच्छा पूरी करने के” द्वारा बन्दी बनाए गए हैं। एक विचार यह है कि “उस” और “उसकी” दोनों सर्वनाम एक ही व्यक्ति के लिए नहीं हैं—“उस” से अभिप्राय सेवक से है, और “उसकी” से अभिप्राय परमेश्वर से है। इस व्याख्या के अनुसार, शैतान उन लोगों को उकसाता है जिन्हें उसने फँसा रखा है, और जो स्थानीय कलीसिया में अधिकार में हैं,

ताकि परमेश्वर उन्हें मन फिराव न दे सके, और ताकि परमेश्वर के दास द्वारा बन्दी बनाए जाने के बाद वे फन्दे से निकलकर परमेश्वर की इच्छा पूरी न कर सकें।

एक अन्य विचार यह है कि “उस” और “उसकी” दोनों एक ही व्यक्ति, अर्थात् शैतान, की ओर संकेत करते हैं। इस व्याख्या के अनुसार, जो लोग शैतान के द्वारा पकड़े गए और गुलाम बना लिए गए हैं, वे उसकी इच्छा के अनुसार उसके द्वारा बन्दी बनाकर ले जाए जाते हैं।

एक व्याख्याकार ने लिखा, “पौलुस इस समय इस बात पर जोर दे रहा था कि ये बन्दी अपने ही इच्छाशक्ति से वंचित हो गए हैं और किसी दूसरे [अर्थात् शैतान] की इच्छा के अधीन कर दिए गए हैं।” इस व्याख्याकार का निष्कर्ष है कि परमेश्वर ऐसे बन्दियों को मन फिराव दे सकता है, ताकि वे सत्य का ज्ञान प्राप्त करें, और फिर अपने आप को शैतान के फन्दे से छुड़ा सकें—उसके द्वारा बन्दी बनाए जाने और उसकी इच्छा के अधीन होने के बाद [6]।

चाहे कौन-सा भी विचार सही हो, यह सत्य बना रहता है कि बन्दियों को छुड़ाए जाने की आवश्यकता है।

भाग 12

संभावित परीक्षाएँ

2 तीमुथियुस 3:1-4:18

जब पौलुस अपनी पत्नी लिख रहा था, उस समय जो भयानक सताव हो रहा था, उसने स्वाभाविक रूप से उसके विचारों को अन्त समय की घटनाओं की ओर मोड़ दिया। उसने पहले ही देख लिया था कि उसके समय में कलीसिया के सदस्यों के बीच जो पतन हो रहा था, वह उन अन्तिम दिनों में होने वाले व्यापक धर्मत्याग की तुलना में कुछ भी नहीं होगा, जो कलीसिया की एक विशेषता बन जाएगा।

क. महा-धर्मत्याग के दिन का आगमन (3:1-4:5)

1. कुछ विनाशकारी जड़ों का खुलासा (3:1-3क)

क. अन्तिम दिनों का संकेत (3:1)

पौलुस ने आगे तीमुथियुस से कहा, “पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे।” उनके बहुत से समकालीन लोगों को ऐसा लगता होगा कि अन्तिम दिन पहले ही आ गए हैं, और उन दिनों से अधिक भयानक समय और कोई नहीं हो सकता, जब नीरो अपनी वासना में चूर होकर बहुत अधिक अत्याचार कर रहा था। लेकिन, पौलुस अपनी बाइबल को इससे कहीं अधिक अच्छी तरह जानता था।

यह सत्य है कि प्रभु ने कहा था, “संसार में तुम्हें क्लेश होता है” (यूहन्ना 16:33), परन्तु उसने एक बड़े क्लेश के विषय में भी कहा था (मत्ती 24:15-22), और उस समय का यह सताव उस महाक्लेश के समान नहीं था। इसके अतिरिक्त, महाक्लेश “याकूब के संकट का समय” होना था (यिर्मयाह 30:7), जबकि नीरो यहूदियों को नहीं, बल्कि मसीहियों को सता रहा था।

पौलुस यह भी जानता था कि कलीसिया को मसीह-विरोधी के आने से पहले उठा लिया जाएगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-5:11; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-12)। जब मसीह-विरोधी आएगा, तो वह यहूदियों के साथ सात वर्ष की सन्धि करेगा, साढ़े तीन वर्ष के बाद वह उस संधि को तोड़ देगा, फिर पुनर्निर्मित यहूदी मन्दिर पर अधिकार कर लेगा, उस मन्दिर में अपनी मूर्ति स्थापित करेगा, और इसके बाद यहूदियों के विरुद्ध भयानक आर्थिक और राजनीतिक उत्पीड़न आरम्भ करेगा (दानियेल 9:24-27; 11:31; 12:11)। इसी समय, अन्यजातियों में से जो लोग 1,44,000 गवाहों के प्रचार के द्वारा उद्धार पाएँगे, वे लाखों की संख्या में मार डाले जाएँगे (प्रकाशितवाक्य 7)।

सताव एक बात है; महाक्लेश कुछ और होगा। जिन दिनों में पौलुस लिख रहा था वे निश्चित रूप से कठिन थे, परन्तु वे अन्तिम दिन नहीं थे।

ख. अंतिम दिनों का सचित्र वर्णन (3:2-3क)

(1) अंतिम दिनों के बारे में निराशाजनक तथ्य (3:2क-ख)

(क) स्वार्थ (3:2क)

अंतिम दिनों में, "मनुष्य स्वार्थी होंगे।" स्वयं के प्रति प्रेम अनियंत्रित हो जाएगा।

बच्चे जन्म से ही अपने हृदय में आत्म-प्रेम को दृढ़ता से स्थापित किए रहते हैं। उनके प्रारम्भिक शब्दों में से एक होता है—“मेरा” — “मेरी गेंद!”, “मेरी चम्मच!”, “मेरी गुड़िया!” एक स्वस्थ समाज आत्म-मुग्धता और आत्म-इच्छा पर नियंत्रण लगाता है। माता-पिता बच्चों को आज्ञा मानना, चीजों को बाँटना, अपनी बारी का इंतज़ार करना, और दूसरों के बारे में सोचना आदि सिखाते हैं। विद्यालयों को माता-पिता के अधिकार और अनुशासन को सुदृढ़ करना चाहिए, और सरकार को भी कानून के माध्यम से विद्रोह को नियंत्रित करना चाहिए।

हालाँकि, पहले के समय में जो अनुशासन प्रचलित था, उसका बहुत हिस्सा आज हमारे समय में छोड़ दिया गया है। मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ता, हस्तक्षेप और दखल की बड़ी शक्तियों के साथ, उन माता-पिता को भयभीत करते हैं जो पुराने तरीकों और साधनों को अपनाते हैं। कई क्षेत्रों में शारीरिक दंड देना अपराध माना जाता है। कुछ वर्गों में बच्चों के क्रोध के दौरे को रोकना भी गलत समझा जाता है—कहा जाता है कि ऐसा करने से बच्चों में हीनभावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं! इस प्रकार, एक बच्चे को इस विश्वास के साथ बड़ा होने दिया जाता है कि उसकी हर इच्छा पूरी होनी चाहिए, उसकी इच्छा ही कानून है, और संसार उस पर जीवन-निर्वाह का ऋणी है। एक ऐसी पीढ़ी, जिसे आत्म-अनुशासन नहीं सिखाया गया, अपनी सभी वासनाओं की पूर्ति की मांग करती है और उन सभी बातों का उपहास उड़ाती है जिन्हें कभी पवित्र माना जाता था।

(ख) धन का लोभ (3:2ख)

अन्तिम दिनों में मनुष्य अत्यधिक लोभी भी होंगे। बेंजामिन फ्रैंकलिन का यह कथन—“नाशता करने के लिए कर्ज़ लेने से अच्छा है कि बिना भोजन किए ही सो जाओ”—आज अधिकांश लोगों को मूर्खतापूर्ण लगता है। कुछ लोग क्रेडिट कार्ड रखते हैं और उनका उपयोग ऐसे करते हैं मानो उनके पास अनन्त धन का स्रोत

हों। अमेरिकी लोग ऋणदाताओं के प्रति अरबों डॉलर के कर्ज में डूबे हुए हैं, और देश का राष्ट्रीय ऋण तथा व्यापार असंतुलन अत्यन्त विशाल है।

एक सर्वेक्षण से पता चला है कि कॉलेज के विद्यार्थी इस देश के भविष्य के विषय में निराशावादी हैं, परन्तु वे यह निश्चय कर चुके हैं कि यदि उन्हें डूबना ही है, तो वे शान के साथ डूबेंगे। इस स्थिति की तुलना डूबते हुए टाइटेनिक जहाज़ पर सवार होकर प्रथम श्रेणी के केबिन के लिए संघर्ष करने से की गई।

मेहनत करने, बचत करने और नकद भुगतान करने का पुराना विचार अब बहुत कम ही समझदारी भरा विकल्प माना जाता है। कॉलेज से निकलने वाले बहुत से युवा यह अपेक्षा रखते हैं कि वे शुरुआत ही एक बड़े घर, एक शानदार कार, ऊँचे वेतन, समुद्र तट पर एक भवन और एक जहाज के साथ करेंगे। वे इन धन के प्रतीकों को प्राप्त करने के लिए कर्ज में पूरी तरह डूब जाने के लिए भी तैयार रहते हैं।

(2) अंतिम दिनों की भयानक मूर्खताएँ (3:2ग-ड)

(क) घमंड से भरे हुए आत्म-केन्द्रित स्वभाव (3:2ग)

पौलुस ने पहले ही देख लिया था कि अन्तिम दिनों में लोगों का अहंकार अत्यन्त बढ़ जाएगा। उसने कहा कि वे “डींगमार” होंगे। जिस शब्द का अनुवाद “डींगमार” किया गया है, उसका अर्थ है “देश भर में भटकने वाला।” इसे “आवारा” या “अकड़कर चलने वाला” भी कहा जा सकता है।

बीटल्स, जो समाज के नायकों की सूची में बहुत ऊपर थे, घूमने वाले गायक-वादकों का एक समूह था जिसने हमारे वर्तमान ईश्वर-विहीन संस्कृति के लिए मार्ग तैयार किया। उन्होंने एक बार बड़े अहंकार से कहा था कि वे यीशु मसीह से भी अधिक लोकप्रिय हैं।

अपने संगीत उत्तराधिकारियों के मुकाबले बीटल्स अधिक नरम स्वभाव के और हल्के थे, जो व्यभिचार और समलैंगिकता का महिमामंडन करते हैं; वासना और विद्रोह को बढ़ावा देते हैं; मद्यपान, अश्लील भाषा, अनैतिकता और नशे के उपयोग की प्रशंसा करते हैं; और घृणा, हत्या तथा हिंसा से भरे गीत गाते हैं।

अंत समय के विनाशकारी स्वरूप में जिस बड़े हुए अहंकार को पौलुस ने एक प्रमुख घटक के रूप में पूर्व देखा था, वह आज पहले से ही प्रकट है।

(ख) घमंड से भरे हुए मानव-केन्द्रित स्वभाव (3:2घ)

पौलुस ने कहा कि मनुष्य “अभिमानी” होंगे। यहाँ “अभिमानी” शब्द उन लोगों का वर्णन करता है जो अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं। बाइबल में यह शब्द हमेशा नकारात्मक अर्थ में प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है “अहंकारी, घमण्डी, तिरस्कार करने वाला।”

ऊँचे पदों पर बैठे लोग प्रायः दैवीय बातों और अन्य लोगों के प्रति घोर तिरस्कार के भावना रखते हैं। हिटलर इसका एक उत्तम उदाहरण है। जब उसने पूर्ण सत्ता प्राप्त कर ली, तो जर्मनी में कोई भी उसका विरोध करने का साहस नहीं करता था। मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ चारों ओर से घेर रही थीं, जर्मनी को व्यवस्थित रूप से खंडहर में बदला जा रहा था, और पूर्ण पराजय उसके सामने स्पष्ट थी, फिर भी हिटलर अपने बंकर में चिल्लाता और क्रोधित होता रहा, अपने जनरलों को धमकाता रहा और सबको तुच्छ समझता रहा। जो कोई

भी ऐसी बात कहता या करता जिसे हिटलर अपनी प्रतिभा का अपमान समझता, उसके लिए विपत्ति निश्चित थी। उसका अहंकार अत्यधिक फूला हुआ था।

हिटलर और स्टालिन जैसे लोग, जो अपनी ही महिमा के भव्य विचारों में मदहोश थे, समय के साथ और भी अधिक बुरे होते जाएंगे। हम और क्या अपेक्षा कर सकते हैं? चाहे हमारे बच्चे योग्य हों या न हों, हम उन्हें अपने शिक्षा-प्रणालियों के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं, उन्हें स्नातक बना देते हैं, और समाज में इस भावना के साथ छोड़ देते हैं कि वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। (हम युवाओं को असफल अंक देने का साहस नहीं करते; कहीं उनमें किसी प्रकार की हीनभावना न विकसित हो जाए!) जब वे कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, तो वे शुरुआत ही शीर्ष स्थान से करने की अपेक्षा रखते हैं।

जब वे लोग, जो वास्तव में योग्य नहीं हैं, अंततः वास्तविक संसार का सामना करते हैं, तो क्या होता है? वे तब चकित रह जाते हैं जब उन्हें पता चलता है कि उनकी समझ की कमी, सही अंग्रेज़ी बोलने में असमर्थता, सरल मानसिक गणना न कर पाना, अनुशासन का पालन न करना, आदेश मानने में असमर्थता और परिश्रमी न होना—इन सबको स्वीकार नहीं किया जाता। तिरस्कार उनके घमण्ड को ठेस पहुँचाती है, इसलिए उनमें से कुछ लोग नशे और शराब की ओर मुड़ जाते हैं और अपराध की अंधेरी दुनिया में अपनी स्वीकृति की खोज करते हैं। अन्य लोग ऐसे वातावरण में स्वीकृति तलाशते हैं जहाँ वैकल्पिक जीवन-शैलियों को स्वीकार किया जाता है और जहाँ उनके बड़े-चढ़े अहंकार को दूसरों के प्रति अकड़ भरे तिरस्कार में बदल दिया जाता है।

(ग) घमंड से भरे हुए ईश्वर-केन्द्रित स्वभाव (3:2ड)

अन्तिम दिनों में मनुष्य “निन्दक” भी होंगे। यूनानी शब्द का अर्थ हर प्रकार की निन्दात्मक, अपमानजनक और गाली-गलौज भरी वाणी से है, विशेषकर परमेश्वर और पवित्र बातों के विरुद्ध बुरा बोलना।

आज पश्चिमी संसार में यहूदी-मसीही नैतिकता पर निरन्तर आक्रमण हो रहा है। लोग मसीह के विरुद्ध सबसे भयानक बातें कहने या लिखने में बिल्कुल भी संकोच नहीं करते। टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले बहुत से कार्यक्रम अश्लील भाषा से दूषित हैं। प्रभु यीशु मसीह के पवित्र और सुन्दर नामों का उपयोग आम तौर पर गाली के रूप में किया जाता है, विशेषकर लोकप्रिय पुस्तकों और फिल्मों में। परमेश्वर का नाम उन सबसे घिनौने शब्दों के साथ जोड़ा जाता है, जो एक अपरिवर्तित मन की गंदगी से निकालते हैं। एक समय था जब सबसे हल्के अपशब्द भी पुस्तकों, टीवी कार्यक्रमों या फिल्मों में स्वीकार नहीं किए जाते थे। अब लेखक मानो अपनी पुस्तकों और पटकथाओं के पन्ने-दर-पन्ने आपत्तिजनक शब्दों से भरने में आनंद लेते हैं।

यह सारी दुष्टता एक तरह से तैयारी का कार्य कर रही है। यह उस मसीह-विरोधी के आने का मार्ग तैयार कर रहा है, जिसके विषय में हम पढ़ते हैं, “बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया। उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुँह खोला कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे” (प्रकाशितवाक्य 13:5-6)।

(3) अंतिम दिनों में बिखरते परिवार (3:2च)

अन्तिम दिनों में बच्चे अपने “माता-पिता की आज्ञा टालने वाले” होंगे। पौलुस ने अंत के दिनों की एक विशेषता के रूप में माता-पिता के अधिकार के पूर्ण पतन को पहले ही देख लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि हम अन्तिम दिनों के निकट पहुँच रहे हैं, क्योंकि माता-पिता के अधिकार का विरोध अब महामारी की तरह फैल गया है। ऐसा विरोध उन मानववादी और स्वतंत्रतावादी विचारों के कारण बढ़ावा पाता है, जिन्हें ऊँचे पदों पर बैठे बहुत से लोग बढ़ावा देते हैं। कई मामलों में, माता-पिता के अधिकार का पतन स्वयं माता-पिता के पापपूर्ण और भोग-विलासपूर्ण जीवन के कारण और भी बढ़ जाता है। उनमें से बहुतों ने तो अपने बच्चों के लिए आदर्श होना भी बहुत पहले ही छोड़ दिया है।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बच्चे माता-पिता की आज्ञा नहीं मानते। अठारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते एक सामान्य बच्चा लगभग बाईस हजार घंटे टेलीविजन देखने में बिता देता है—जो कि उसके स्कूल में बिताए गए समय से भी कहीं अधिक है। टेलीविजन के माध्यम से वह कल्पना, हिंसा, यौन, मद्यपान और अश्लीलता की निरन्तर और योजनाबद्ध सामग्री से प्रभावित होता है। आजकल हास्य कार्यक्रम भी माता-पिता के अधिकार का मज़ाक उड़ाते हैं और परिवार के पिता को अक्सर किसी प्रकार के हास्य पात्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। विद्यालयों ने भी घर के युगों-पुराने मानकों—जैसे कि यौनाचार, नैतिकता और अनुशासन—को चुनौती देकर अवज्ञा को बढ़ावा दिया है।

टाइम पत्रिका ने, हमारे देश में फैलती हुई युवाओं की अपराध-लहर का विश्लेषण करते हुए, व्यापक अराजकता का वर्णन किया और यह घोषित किया, “ऐसा प्रतीत होता है कि एक नया, निर्दयी, परिवर्तित किशोर जन्म ले चुका है, और आज अमेरिका में उससे अधिक भयानक कोई और नहीं है।” इस स्थिति के लिए न्यायालय भी काफी हद तक उत्तरदायी हैं। कुछ न्यायाधीश ऐसे व्यवहार करते हैं मानो कोई बुरा बच्चा होता ही नहीं है। न्यायालयों के कारण माता-पिता के अधिकार इतने कमबल कर दिए गए हैं कि अब बच्चे अपने ही माता-पिता पर मुकदमा कर सकते हैं।

विद्यालयों में भी अक्सर बच्चों को उनके माता-पिता की जानकारी के बिना गर्भनिरोधक साधन दिए जाते हैं और उनके लिए गर्भपात की व्यवस्था की जाती है। कई राज्यों में किशोरों को घर से भाग जाने का अधिकार भी मान्यता प्राप्त है। कुछ विधि-निर्माता यह भी समर्थन करते हैं कि बच्चों को जहाँ चाहें रहने और जो चाहें करने का अधिकार दिया जाए, और यदि माता-पिता विरोध करें तो उन अधिकारों की रक्षा के लिए उन्हें कानूनी संरक्षण भी प्रदान की जाए। ऐसा लगता है कि हम उन “कठिन समयों” तक पहुँच चुके हैं, जिनके विषय में पौलुस ने बहुत पहले ही लिखा था। कुछ राज्यों में, यदि माता-पिता पर शारीरिक दंड देने का संदेह भी हो, तो अचानक पुलिस और सामाजिक कार्यकर्ता उनके घर में प्रवेश कर जाते हैं, उनके बच्चों को उनसे छीन लेते हैं और उन्हें पालक-गृहों में भेज दिया जाता है।

(4) अंतिम दिनों की विशिष्ट विशेषताएँ (3:2छ-ज)

(क) कृतघ्न (3:2छ)

अन्तिम दिनों में लोग “कृतघ्न” (अखारिस्तोस) भी होंगे। यह यूनानी शब्द, जिसका अर्थ “अकृतज्ञ” या “धन्यवाद न करने वाला” है, नये नियम में केवल यहाँ और लूका 6:35 में पाया जाता है, जहाँ प्रभु कहता है कि परमेश्वर “उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है।”

2 तीमुथियुस 3:2 में “कृतघ्न” शब्द का “माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले” के साथ रखा जाना यह संकेत देता है कि अकृतज्ञता का आरम्भ घर से ही होता है। एक समय था जब बच्चों को स्वाभाविक रूप से “कृपया” और “धन्यवाद” कहना सिखाया जाता था, परन्तु आज के बच्चे बहुत कम ही स्वेच्छा से धन्यवाद व्यक्त करते सुनाई देते हैं।

पौलुस ने रोमियों 1:21 में पाप पर अपने महान विचार-विमर्श में अकृतज्ञता को दोषी ठहराने वाले पापों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया। उसका स्वयं का कृतज्ञता का भाव (रोमियों 1:8) इसके विपरीत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परमेश्वर के अपने विषय में प्रकट किए गए प्रकाशन के प्रति अकृतज्ञता ही मनुष्य को मूर्तिपूजा, वासना और अधर्म की ओर ले जाती है। अन्त में, ये भयानक पाप इस बात का कारण बनते हैं कि परमेश्वर लोगों को अश्लीलता, विकृति और उसके परिणामस्वरूप न्याय के लिए छोड़ देता है (रोमियों 1:21-28)।

(ख) अपवित्र (3:2ज)

अन्तिम दिनों की एक और विशेषता यह है कि लोग “अपवित्र” होंगे। यहाँ “अपवित्र” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त यूनानी शब्द “अनोसियोस” है, जिसका अर्थ है “अशुद्ध” या “अधार्मिक।”

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हमने पारम्परिक नैतिक और धार्मिक मूल्यों के पतन और लगभग हर चीज़ के अपवित्रीकरण को देखा है। यह पतन अचानक, तीव्र, अप्रत्याशित और व्यापक था। मूल्यों की इस बड़ी गिरावट के साथ पश्चिमी दुनिया में नैतिक, अच्छे और मसीही बातों पर लगातार और बड़े पैमाने पर हमला हुआ है। इस आक्रमण का बहुत भाग सोवियत साम्यवादियों से प्रेरित था, जिन्होंने अपनी वैश्विक विजय की योजनाओं को पूरा करने के लिए पश्चिमी समाज को भीतर से सड़ा देने का प्रयास किया। इस आक्रमण को एक ऐसी उपसंस्कृति ने भी बढ़ावा दिया जो रॉक संगीत, नशा-यौन-गूढ़ जीवनशैली, उग्र शांतिवाद और स्थापित व्यवस्था को गिराने के लिए समर्पित थी।

यह उपसंस्कृति बड़ी संख्या में लोगों को, विशेषकर कॉलेज के छात्रों और युवाओं को, संगठित करने में सक्षम रही, जो जुलूस निकालने, नारे लगाने, सामूहिक प्रदर्शनों में भाग लेने, विशाल सभाओं में उपस्थित होने और सामान्य अव्यवस्था में शामिल होने के लिए तैयार थे। अधिकारियों ने या तो इस आंदोलन से निपटने में असमर्थता दिखाई या इच्छा नहीं दिखाई, और अधिकांशतः उसके आगे झुक गए। अब वे अस्त-व्यस्त, गंदी भाषा बोलने वाले, दाढ़ी वाले और लंबे बालों वाले हिप्पी व्यवसायिक सूट पहनकर सरकार के गलियारों में प्रवेश कर चुके हैं। वे अपने कार्यक्रमों (समलैंगिक अधिकार, गर्भपात, और अश्लीलता तथा नैतिक पतन को बढ़ावा देने की स्वतंत्रता) को अब भी कांग्रेस और न्यायालयों के माध्यम से आगे बढ़ाने के लिए उतने ही दृढ़ संकल्पित हैं।

कला गैलरियों और संग्रहालयों में व्यापक अपवित्रता देखी जाती है, जहाँ “कलाकार” ऐसे कार्य प्रदर्शित करते हैं जो वास्तव में कैनवास पर उकेरे गए क्रोध के फटकार से अधिक कुछ नहीं होते। आकारहीन पत्थरों के ढेर को “मूर्ति” के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, और उलझे हुए तथा मुड़े-तुड़े लोहे के ढाँचे भी “शिल्प” कहलाए जाते हैं, जो ऐसे प्रतीत होते हैं मानो किसी लोहे के कबाड़खाने में बम विस्फोट के बाद वहाँ से उठाए गए हों।

‘राष्ट्रीय कला निधि’ अपने करदाताओं के धन को उन कलाकारों को देता है जो अश्लील और घृणित चित्र बनाते हैं, जिनमें मसीह को विकृत रूप में प्रस्तुत किया जाता है। फिल्म उद्योग ने हिंसा, लत, स्पष्ट यौन क्रिया, आत्मपीड़न, विकृति और बाल अश्लीलता को अपनी अभिव्यक्ति के प्रमुख साधनों के रूप में अपना लिया है, और उसने “द लास्ट टेम्पटेशन ऑफ क्राइस्ट” जैसी निन्दात्मक फिल्में बनाई हैं, जिनमें परमेश्वर के प्रिय पुत्र को स्त्रियों के पीछे भागने वाला और यहूदा इस्करियोती को नायक के रूप में दिखाया गया है। जैसे-जैसे हम अन्तिम दिनों के निकट पहुँचते जा रहे हैं, वैसे वैसे समाज अधिकाधिक अपवित्र होता जा रहा है।

(5) अंतिम दिनों में मृत भावनाएँ (3:3क)

महान पतन के एक और घातक मूल को प्रकट करते हुए, पौलुस ने कहा कि अन्तिम दिनों में मनुष्य “दयारहित” होंगे। यह वाक्यांश यूनानी मूल शब्द “अस्तोर्गोस” का अनुवाद है, जो स्नेह के सामान्य यूनानी शब्द का नकारात्मक रूप है। माता-पिता और बच्चों के बीच का प्रेम स्वाभाविक होता है, परन्तु अन्तिम दिनों में पारिवारिक जीवन का पूर्ण विघटन देखा जाएगा। पौलुस ने ऐसी पीढ़ी की कल्पना की थी जो सामान्य पारिवारिक जीवन के परस्पर सहभागिता के आनंद को नहीं पहचानती होगी।

हमारे समाज में, दोष-रहित तलाक कानून उच्च तलाक दर को बढ़ावा देते हैं। 1960 के दशक की सांस्कृतिक क्रांति तक, अधिकांश परिवार तनाव और दबाव के बावजूद साथ बने रहते थे, परन्तु अब विवाह कमजोर हो चुके हैं और आसानी से टूट जाते हैं। बहुत से जोड़े विवाह को पूरी तरह त्याग देते हैं और परमेश्वर के नियमों या एक स्वस्थ समाज के मानकों की परवाह किए बिना साथ रहने लगते हैं।

तलाक से सबसे अधिक पीड़ा बच्चों को होती है। उन्हें अक्सर माता-पिता के बीच इधर-उधर भेजा जाता है, दादा-दादी या नाना-नानी के पास छोड़ दिया जाता है, या उन्हें अधिकांश समय अकेला ही छोड़ दिया जाता है। कभी-कभी बच्चों को अपने हाल पर छोड़ दिया जाता है जब माँ उनके पालन-पोषण के लिए काम करने को मजबूर होती है या पिता को गुज़ारा भत्ता देने के लिए अतिरिक्त काम करना पड़ता है। कभी-कभी बच्चे अपने माता-पिता के बीच चल रहे संघर्ष के केंद्र में फँस जाते हैं। जब माता-पिता पुनः विवाह करते हैं या बिना विवाह के साथ रहने लगते हैं, तो पहले विवाह से हुए बच्चे अपने आप को अनचाहा, शोषित या पीड़ित महसूस करते हैं।

पारिवारिक जीवन के विघटन का एक और उदाहरण ब्राज़ील में देखा जाता है, जहाँ बहुत से लोग बड़े शहरों के किनारे बसे झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों में अत्यन्त गरीबी में जीवन बिताते हैं। इन बस्तियों में छोटे-छोटे बच्चों को अक्सर उनके माता-पिता द्वारा त्याग दिया जाता है और उन्हें शहर की सड़कों पर भटकने और स्वयं अपना जीवन चलाने के लिए यहीं छोड़ दिया जाता है। ऐसे बच्चों के साथ शहरों में अक्सर बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। वे या तो कम आयु में ही मृत्यु का शिकार हो जाते हैं या उन गिरोहों का हिस्सा बन जाते हैं जो उसी समाज का शोषण करते हैं जिसने उन्हें पीड़ा पहुंचाई होती है।

हमारे अपने देश के कई भीतरी शहर गुंडों के गिरोहों से त्रस्त हैं। कभी-कभी किशोर अपराधियों के समूह बुजुर्ग पुरुषों और महिलाओं को पीटते हैं, लूटते हैं, घायल करते हैं और यहाँ तक कि हत्या तक कर देते

हैं। कुछ गिरोह नए सदस्य को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक वह किसी की हत्या करके स्वयं को साबित न कर दे।

ऐसे युवक “दयारहित” होते हैं। वे उसी पीढ़ी के समान दिखाई देते हैं जिसकी कल्पना पौलुस ने की थी।

2. कुछ घातक फलों का पर्दाफाश (3:3ख-4:5)

क. अंतिम दिनों की नैतिकता (3:3ख-4क)

(1) लोगों की धोखेबाजी (3:3ख-ग)

अन्तिम दिनों में मनुष्य “क्षमारहित” (अस्पोंडोस) होंगे। यह यूनानी शब्द एक नकारात्मक उपसर्ग और एक ऐसे शब्द से मिलकर बना है जिसका अर्थ “अर्घ” या “देवताओं को अर्पित किया जाने वाला पेय” है। आम तौर पर किसी औपचारिक संधि के समय अर्घ बलि चढ़ाई जाती थी। इस शब्द का नकारात्मक रूप उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था जो संधि करने से इनकार करते थे या जिन्हें मनाया नहीं जा सकता था। रोमियों 1:31 में इसका अनुवाद “मयारहित” या “निर्दय” के रूप में किया गया है। ऐसे लोग काफी कठोर और जिद्दी होते हैं; वे झुकते नहीं हैं। “अस्पोंडोस” का अर्थ उन लोगों से भी हो सकता है जो अपने वचनों के प्रति सच्चे नहीं होते, अर्थात् जो अपने वायदों को तोड़ देते हैं।

हिटलर ऐसा ही एक व्यक्ति था, जो अपनी घृणा में बिल्कुल निर्दयी और जिद्दी था। जब जर्मनी आग की लपटों में जल रहा था और सोवियत टैंक बर्लिन के बाहरी क्षेत्रों में प्रवेश कर रहे थे, तब भी वह अपने शत्रुओं को गालियाँ देता रहा, यहूदियों के विरुद्ध बोलता रहा, अपने जनरलों और जर्मन जनता के विरुद्ध क्रोधित होकर चिल्लाता रहा, और छोटे-छोटे लड़कों को रूसियों से लड़ने के लिए मोर्चे पर भेजता रहा।

एक तानाशाह के रूप में अपने पूरे कार्यकाल के दौरान, हिटलर ऐसे कठोर और जिद्दी लोगों से घिरा हुआ था, जिन्होंने यूरोप के यहूदियों के संहार और विश्व विजय के उसके संकल्प का समर्थन किया। गोएब्बेल्स और स्ट्राइखर दिन-रात जर्मन लोगों के सामने यहूदी जाति की हीनता का प्रचार करते रहे। हिमलर निर्दयता से लोगों को यातना शिविरों तक ले जाने वाली रेलगाड़ियों को लगातार चलवाता रहा।

अधिकृत पोलैंड के गवर्नर-जनरल हांस फ्रैंक ने अपनी डायरी में ट्रेब्लिंका, ऑशविट्ज़ और अन्य विनाशकारी शिविरों में यहूदियों के साथ किए गए व्यवहार का वर्णन किया। (इस डायरी का उपयोग नूर्नबर्ग मुकदमे में उसके विरुद्ध किया गया था।) जब पीड़ितों को प्रक्रिया से गुजारा जाता था, तो उन्हें अपने कपड़े और जूते उतारने के लिए मजबूर किया जाता था। फिर उन्हें मृत्यु-कक्षों में ठूँस दिया जाता था, पहले महिलाओं और बच्चों को भेजा जाता था। छोटे बच्चों को तो बस अंदर फेंक दिया जाता था। फ्रैंक की मानसिकता तब प्रकट होती है जब वह लिखता है, “हमने 12,00,000 यहूदियों को भूख से मरने की सज़ा दी—इस बात को केवल संक्षेप में ही उल्लिखित किया जाना चाहिए। यह तो स्वाभाविक सी बात है.... हमारे लिए यहूदी अत्यन्त गंभीर समस्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।”

मसीह-विरोधी भी ऐसा ही होगा—निर्दयी, कठोर और क्षमा रहित —एक संधि तोड़ने वाला।

अन्तिम दिनों में लोगों की छल-कपटपूर्ण प्रवृत्ति का आगे वर्णन करते हुए, पौलुस ने लिखा कि वे झूठे “दोष लगाने वाले” (डायबोलोस) होंगे। “डायबोलोस,” जो शैतान का यूनानी नाम है, का अर्थ है “निंदा करने वाला, विरोधी या झूठा आरोप लगाने वाला।”

मसीह-विरोधी मैकियावेली की कपटपूर्ण आत्मा और दर्शनशास्त्र को अपने में आत्मसात करेगा। जब मैकियावेली की पुस्तक द प्रिंस प्रकाशित हुई, तो पोप क्लेमेंट सप्तम ने उसकी प्रशंसा ऐसे की मानो वह कोई प्रेरित हो—और निस्संदेह वह इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से प्रेरित थी (इफिसियों 6:12 को देखें)। हेनरी अष्टम का निर्दयी सेवक थॉमस क्रॉमवेल ने द प्रिंस को अपनी बाइबल बना लिया। कैथरीन दे मेडिसी, जो सेंट बार्थोलोम्यू दिवस के नरसंहार के लिए उत्तरदायी थी, ने भी उसी पुस्तक से प्रेरणा ली। फिलिप द्वितीय ने इसे पढ़ा और इससे प्रेरित होकर इंग्लैंड की रानी एलिज़ाबेथ की हत्या कराने की साज़िश रची। लुई सोलहवें की कपटपूर्ण नीतियाँ भी इसी पुस्तक से प्रेरित थीं। यह नेपोलियन का स्थायी साथी और उसका मुख्य राजनीतिक सलाहकार था।

एक और धोखेबाज़, एडॉल्फ हिटलर, मैकियावेली का बहुत बड़ा प्रशंसक था। वह नीत्शे की भी प्रशंसा करता था, जिसने महामानव, अर्थात् मसीह-विरोधी की बात की थी। अपनी पुस्तक माइन काम्फ में हिटलर ने लिखा कि झूठ जितना बड़ा होता है, उसके विश्वास किए जाने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। इसी प्रकार साम्यवादी भी छल-कपट के माहिर बन गए थे। निन्दा करना उनके प्रमुख हथियारों में से एक था और आज भी वैसा ही है।

कई वर्ष पहले, इंटेलिजेंस डाइजेस्ट ने एक ऐसे अपराध संगठन के अस्तित्व के बारे में चेतावनी दी थी जो कई सरकारों से भी बड़ा है। उस पत्रिका ने दावा किया कि इस संगठन की जड़ें हर बड़े शहर में फैली हुई हैं, यह विश्व के नशे और बुरे कामों के व्यापार के पीछे छिपी शक्ति है, और इसके कुछ अगुवे समाज में उच्च पदों पर आसीन, बाहरी रूप से आकर्षक और सभ्य दिखाई देने वाले लोग हैं। यह संगठन अपने रहस्यों को प्रकट करने वालों को नष्ट करने के लिए निन्दा और संकेतात्मक आरोपों का उपयोग करता था।

जब मसीह-विरोधी आएगा, तब वह “छल को बढ़ावा देगा” (दानिय्येल 8:25)। उसका आगमन “सब प्रकार के धोखे के साथ” होगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:10)—अर्थात् हर प्रकार के छल-कपट के साथ। वह, मानो जन्मजात ही, शैतान की भाषा बोलेगा, जो झूठ का पिता है। उस भाषा की शैली (अर्थात् झूठ) का उपयोग करते हुए, मसीह-विरोधी लोगों को धोखा देगा, निन्दा करेगा, झूठे आरोप लगाएगा और “छल को बढ़ावा देगा” (दानिय्येल 8:25)।

(2) लोगों का स्वभाव (3: 3घ-ड)

(क) असंयमी (3:3घ)

अन्तिम दिनों में लोग अत्यंत असंयमी और असहनशील होंगे। यहाँ “असंयमी” के लिए प्रयुक्त शब्द का शाब्दिक अर्थ है “शक्ति के बिना” और व्यापक अर्थ में “अपने ऊपर कोई नियंत्रण न रखने वाला।” इसका लैटिन रूप “इम्पोटेन्स” है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द “इम्पोटेंट” निकला है। इस प्रकार “असंयमी” शब्द यह विचार प्रकट करता है कि व्यक्ति अपनी वासनाओं और इच्छाओं पर नियंत्रण रखने में असमर्थ है।

आधुनिक समाज में हम हर प्रकार के दुर्गुणों को खुली छूट दिए जाने के कई उदाहरण देखते हैं। जो लोग पहले गली-कूचों में छिपकर चलते थे, अपनी लज्जा को छिपाते थे और अपनी विकृत वासनाओं को गुप्त रूप से पूरा करते थे, वे अब खुलेआम अपनी लज्जा का प्रदर्शन करते हैं। नारे लगाते हुए और बैनर लहराते हुए वे मुख्य सड़कों पर जूलूस निकालते हैं, दर्शकों द्वारा उनका उत्साहवर्धन किया जाता है और सरकारों द्वारा उनका समर्थन किया जाता है।

पौलुस ने स्पष्ट रूप से उस समय को पहले ही देख लिया था जब लोग अपनी वासनाओं को रोकने का कोई दिखावा भी नहीं करेंगे। मसीह-विरोधी “पाप का पुरुष” (2 थिस्सलुनीकियों 2:3) के रूप में ऐसे ही अपरिवर्तित लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। वह पाप के प्रति उदार होगा, उसे बढ़ावा देगा, और वास्तव में स्वयं उसी का वास्तविक रूप होगा। वह लोगों से कहेगा कि जो स्वाभाविक लगे वही करो, अपनी इच्छाओं को पूरा करो, स्वयं को व्यक्त करो, और अपने सभी संकोचों तथा यहूदी-मसीही नैतिकता के अनुशासन और सिद्धांतों को त्याग दो। मसीह-विरोधी लोगों को उनके विवेक और नैतिक बन्धनों से “मुक्त” कर देगा।

हमारा समाज पहले ही मसीह-विरोधी के आगमन के लिए मार्ग तैयार कर रहा है। गर्भपात और समलैंगिकता के समर्थक ऊँचे पदों पर मौजूद हैं। इच्छामृत्यु अपनी वैधता के लिए संघर्ष कर रही है। जो लोग अश्लीलता से प्रेम करते हैं, वेश्यावृत्ति और स्वतंत्र यौन संबंधों को बढ़ावा देते हैं, और नशीली दवाओं के अनियंत्रित उपयोग को वैध बनाने के पक्ष में हैं, उनके लिए शक्तिशाली और प्रभावशाली आवाज़ें उठाने वाले लोग भी मिल जाते हैं। केवल पवित्र आत्मा की उपस्थिति और जीवित कलीसिया, जो परमेश्वर द्वारा स्थापित एक रोक के रूप में कार्य करती है, इस दुष्टता की पूरी बाढ़ को रोककर रखे हुए हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:6-7)।

(ख) असहनशील (3:3ड)

“कठोर” के रूप में अनूदित शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है और इसका अर्थ है “अनियंत्रित, निर्दयी, जंगली।” यह हमें एक विशाल, निर्मम अपराध संगठन की याद दिलाता है, जो नशे और दुष्कर्मों का व्यापार करता है, जिसमें कोई दया नहीं होती, जो किसी प्रतिद्वन्द्वी को सहन नहीं करता, किसी कानून का सम्मान नहीं करता और किसी सरकार से नहीं डरता। यह शब्द दानियेल के “अन्यजातियों के शासन” के दर्शन की भी याद दिलाता है (दानियेल 7:11-8:12)।

हम उन आतंकवादी नेटवर्कों के बारे में भी सोचते सकते हैं जो समय-समय पर हमारे ऊपर अराजकता फैलाते हैं। विवेक से रहित होकर, आतंकवादी कारों और इमारतों में बम विस्फोट करते हैं, यात्री विमानों को उड़ा देते हैं और निर्दोष लोगों को बंधक बना लेते हैं। जापान में, आतंकवादियों ने भीड़भाड़ के समय रेल स्टेशनों पर यात्रियों पर “नर्व गैस” का प्रयोग किया है। कई वर्षों तक सोवियत संघ ने ऐसे अंतरराष्ट्रीय अपराधियों की गतिविधियों को प्रायोजित किया, उन्हें वित्तीय सहायता दी और उनसे लाभ उठाया। सोवियत शासन ने उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रशिक्षित किया, उन्नत हथियार उपलब्ध कराए, उन्हें शरण दी और उनका उत्साहवर्धन किया। सोवियत संघ के विघटन के बाद यह भय बढ़ गया कि आतंकवादी रूसी परमाणु हथियार प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। ईरान, सीरिया, लीबिया और सूडान जैसे देश आज भी आतंकवाद को प्रोत्साहित करते हैं।

टाइम पत्रिका ने एक समय अनुमान लगाया था कि विश्व में कम से कम 140 आतंकवादी समूह सक्रिय हैं। इन समूहों में फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के गुट, हमास और अन्य यहूदी-विरोधी तथा इस्राएल-विरोधी दल, और आयरिश रिपब्लिकन आर्मी भी शामिल हैं। 11 सितम्बर 2001 को इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका पर किए गए हमलों ने आतंकवाद के एक नए अध्याय की शुरुआत कर दी। संयुक्त राज्य अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणा की है, लेकिन अल-कायदा के कार्यकर्ता पकड़ में आने से बचते रहे हैं। मध्य पूर्व में आत्मघाती हमलावरों के कारण भयानक घटनाएँ लगभग दैनिक घटना बन चुकी हैं। व्यापक विनाश के हथियार भी दुष्ट राष्ट्रों के पास उपलब्ध हैं और वे आतंकवादियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले हथियार बन सकते हैं।

ऐसे क्रूर, जंगली, अनियंत्रित और निर्दयी लोग हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि अन्तिम समय निकट है। वे आने वाले मसीह-विरोधी के लिए तैयार उपकरण हैं।

(3) लोगों का तिरस्कार (3:3च)

अन्तिम दिनों में मनुष्य “भले के बैरी” होंगे। पौलुस के समय में भी मसीहियों को तुच्छ समझा जाता था, और आज भी बहुत से लोग उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

तीन सौ वर्षों तक प्रारम्भिक कलीसिया ने संसार की निन्दा, अपमान, घृणा और सताव को सहा। मसीहियों को इसलिए तुच्छ समझा जाता था क्योंकि वे भले थे। उन्होंने यीशु के इन वचनों पर दृढ़ता से खड़े रहने का निश्चय किया था: “धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।” (मत्ती 5:11-12)। जैसे-जैसे एक के बाद एक अत्याचारी ‘कैसर’ आते और जाते रहे, और कलीसिया बार-बार अपने अशुद्ध तत्वों से शुद्ध होती रही, तब लोगों ने ध्यान देना शुरू किया। संसार के प्रचार, निन्दा और झूठ के बावजूद, जब लोगों ने देखा कि मसीही भले हैं और उनका परमेश्वर भी भला है—जो रोम के मूर्तिपूजक देवताओं की तरह घृणित और प्रतिशोधी नहीं है—तो बहुत से अन्यजाति लोग मसीह की ओर आकर्षित हुए।

सताव ने कलीसिया को शुद्ध बनाए रखा। तीन सौ वर्षों तक कलीसिया अपराजित रही। यद्यपि मसीहियों को तुच्छ समझा गया, तिरस्कार किया गया और सताया गया, फिर भी वे मसीह के प्रति सच्चे बने रहे। कलीसिया संसार में थी—वह भी एक अत्यन्त शत्रुतापूर्ण संसार में—फिर भी मसीही, सरल शब्दों में कहें तो, भले ही थे। वे अत्यन्त अत्याचारी शासन के प्रति भी अधीन रहने वाले लोग थे।

फिर संसार कलीसिया के अंदर प्रवेश कर गया। जो कार्य दस अत्याचारी कैसर तीन शताब्दियों में नहीं कर सके, वह संरक्षण देने वाले कॉन्स्टैन्टाइन ने अपने एक ही शासनकाल में कर दिखाया। उसके शासनकाल में कलीसिया ने आत्मिक सामर्थ्य के बदले सांसारिक शक्ति का सौदा कर लिया। वह राजनीतिक बन गई, संसार के दर्शनशास्त्र के अनुसार अपने आप को ढाल दिया, और उसे सांसारिक वैभव और शक्ति का स्वाद लग गया। कलीसिया की शिक्षाएँ भ्रष्ट हो गईं और कई नये उपदेश गढ़े गए। मूर्तिपूजा ने जड़ पकड़ ली, क्योंकि अन्यजातियों के देवताओं को नये नाम देकर कलीसिया के “संतों” के समूह में शामिल कर लिया

गया। संसार का हाथ थामते हुए, कलीसिया यह भूल गई कि वही हाथ यीशु के लहू और असंख्य शहीदों के रक्त से रंजित हुआ था। कलीसिया एक राज्य बन गई और पृथ्वी के राष्ट्रों पर शासन करने लगी।

आज का संसार भी उतना ही तिरस्कारपूर्ण और मूर्तिपूजक है जितना पौलुस के समय का संसार था। प्रभु ने चेतावनी दी थी कि अन्तिम दिन नूह के दिनों के समान होंगे। नूह एक ऐसे समाज में रहता था जो अत्यन्त भ्रष्ट था, जहाँ उनके “मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है” (उत्पत्ति 6:5)। प्रभु ने यह भी कहा कि अन्तिम दिन लूत के दिनों के समान होंगे, जो एक विकृत समाज में रहता था (उत्पत्ति 19 को देखें)। सदोम के दुष्ट लोग लूत को तुच्छ समझते थे। यहाँ तक कि जब उन्हें नष्ट करने के लिए आग और गंधक तैयार हो रहे थे, तब भी वे उस धर्मी व्यक्ति के घर के सामने इकट्ठा होकर अपने “अधिकारों” की माँग कर रहे थे।

दुनिया में नैतिक पतन के अन्य रूप भी कार्य कर रहे हैं। लाखों जोड़े बिना विवाह के साथ रह रहे हैं। न्यू यॉर्कर पत्रिका के एक कार्टून में यह दिखाया गया है कि हमारा समाज कितना ढीला हो गया है। उसमें पुरानी पीढ़ी की दो महिलाएँ बैठक कक्ष के सोफे पर बैठी हुई दिखाई गई हैं। उनमें से एक दूसरी से कहती है, “नहीं, नहीं, फ्रैंक और ग्लोरिया शादीशुदा हैं, पर साथ नहीं रहते। जॉर्ज और जूडी साथ रहते हैं, पर शादीशुदा नहीं हैं।”

तलाक इतना सामान्य हो गया है कि आज जन्म लेने वाले लगभग आधे बच्चों को अपने बचपन का एक महत्वपूर्ण भाग “एकल अभिभावक” परिवारों में बिताने की अपेक्षा करनी पड़ती है। हमारे न्यायालय अमेरिका के सार्वजनिक विद्यालयों की कक्षाओं से बाइबल को हटाते जा रहे हैं। सार्वजनिक भवनों की दीवारों पर दस आज्ञाओं (जो हमारे समाज में नैतिकता का पारंपरिक आधार रही हैं) को प्रदर्शित करना निषिद्ध कर दिया गया है। विद्यालयों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में प्रार्थना निरन्तर विरोध का सामना कर रही है। सार्वजनिक स्थानों पर यीशु के जन्म से संबंधित “चरनी दृश्य” स्थापित करने की अनुमति नहीं दी जाती। इसके विपरीत, एक संघीय न्यायालय के निर्णय ने एक प्रदर्शक के उस अधिकार को मान्यता दी कि वह ऐसी फिल्म दिखा सकता है जिसमें क्रूरता, वेश्यावृत्ति, अपराध और समलैंगिकता को प्रदर्शित किया गया हो।

“भले होने” के विचार का क्या हुआ? बहुत से लोगों के लिए यह विचार अब केवल एक हास्यास्पद शब्द बनकर रह गया है। हमने एक ऐसी पीढ़ी को जन्म दिया है जो “भले के बैरी” हैं।

(4) लोगों का कपट (3:4क)

अन्तिम दिनों की अन्य विशेषता यह है कि तब मनुष्य “विश्वासघाती” होंगे। यहाँ प्रयुक्त शब्द लगभग एक उपाधि के रूप में यहूदा इस्करियोती के लिए भी प्रयोग किया गया है (लूका 6:16)। इतिहास में सदा ही विश्वासघाती रहे हैं—यीशु के साथ उसका यहूदा था और दाऊद के साथ उसका अहीतोपेल था। किन्तु हमारे समय में विश्वासघात मानो महामारी बन गया है। फासीवाद और साम्यवाद जैसी राजनीतिक व्यवस्थाओं ने यह सीख लिया है कि कैसे लाखों लोगों को दंगे करने, बदलाव की माँग करने और अपने देश को विदेशी शक्तियों के हाथों बेचने के लिए उकसाया जाए।

स्पेनिश गृहयुद्ध के दौरान, जनरल मोला ने घोषणा की थी कि वह मैड्रिड पर कब्ज़ा कर लेगा क्योंकि उसके पास शहर के बाहर चार सेनाओं के स्तंभ थे और शहर के भीतर सहानुभूति रखने वालों का एक “पाँचवाँ स्तंभ” भी था। संसार ने “पाँचवाँ स्तंभ” इस वाक्यांश को तुरंत अपना लिया, क्योंकि यह समाज में बढ़ते हुए विश्वासघात के अभूतपूर्व स्तर को व्यक्त करता था। द्वितीय विश्व युद्ध में, क्विसलिंग नामक एक नॉर्वेजियन ने अपने देश को जर्मनी के हाथों बेच दिया। उसके बाद, विश्वासघातियों को प्रायः “क्विसलिंग” कहा जाने लगा। इसी प्रकार, हिटलर ऑस्ट्रिया में विजयी रूप से प्रवेश कर सका क्योंकि वहाँ के हजारों नाज़ी समर्थकों ने उसके लिए मार्ग तैयार कर दिया था।

फासीवादी शैली का विश्वासघात उस विश्वासघात के सामने फीका पड़ गया जिसे सोवियत साम्यवादियों ने प्रायोजित किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अमेरिकी विश्वासघातियों ने परमाणु रहस्य रूस को सौंप दिए। एक फ्रांसीसी जासूसी गिरोह ने रूस को उन्नत मिराज-2000 लड़ाकू विमानों और नाटो की रक्षा रणनीतियों की जानकारी दी। अमेरिकी औद्योगिक तकनीकों की चोरी की गई ताकि सोवियत अपनी युद्ध मशीन को चला सकें। जर्मन चांसलर के कार्यालय में एक सचिव पूर्वी जर्मनी का जासूस निकला। एक स्विस् जनरल ने स्वीकार किया कि उसने रक्षा संबंधी रहस्य मॉस्को के एजेंटों को दिए थे। ब्रिटेन ने एक समय में जासूसी के आरोप में सौ से अधिक सोवियत राजनयिकों को निष्कासित कर दिया था। एक पूर्व सीआईए एजेंट ने एक महत्वपूर्ण तकनीकी पुस्तिका रूस को बेच दिया। ये उस विश्वासघात के केवल कुछ ही उदाहरण हैं, जो हमारे समय में सामान्य बात बन गया है।

ख. अंतिम दिनों की मानसिकता (3:4ख-9)

(1) तिरस्कार करने वाले उन्मादी लोग होंगे (3:4ख-ग)

अन्तिम दिनों में, मनुष्य “ढीठ और घमण्डी” होंगे। “ढीठ” के रूप में अनूदित शब्द का शाब्दिक अर्थ है “आगे गिर पड़ना” या “अंधाधुंध दौड़ना।” यह उतावले, अविवेकी और लापरवाह व्यवहार को दर्शाता है। यही शब्द इफिसुस के नगर के मंत्री ने प्रयोग किया था जब उसने दंगाइयों से कहा कि वे कुछ भी “सोचे-विचारे कुछ” न करें, क्योंकि वे पहले ही इतना कर चुके थे कि उनके विरुद्ध जाँच हो सकती थी (प्रेरितों के काम 19:36)। 2 तीमुथियुस 3:4 में “घमण्डी” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “तुफोओ” है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “धुँ से भर देना” या “कोहरे में लपेट देना।” “घमण्डी” होने का अर्थ अहंकारी और दूसरों के प्रति असह्य होना है।

शायद हमारे आधुनिक संसार में इन यूनानी शब्दों का इससे बेहतर उदाहरण कहीं और नहीं मिलता, जितना कि लाखों लोगों के उस लापरवाह और अंधाधुंध झुकाव में, जिसमें वे नशीले पदार्थों का सेवन करने और ड्रग-संस्कृति में डूबने लगे हैं। आज लोग “गांजे” पर सिगरेट से भी अधिक धन खर्च कर रहे हैं। लाखों लोग नियमित रूप से इसका सेवन करते हैं, जबकि बढ़ते हुए चिकित्सीय प्रमाण यह दिखाते हैं कि यह नशा शरीर की संक्रमण से लड़ने वाली श्वेत रक्त कोशिकाओं, फेफड़ों, प्रजनन तंत्र और मस्तिष्क पर आक्रमण करता है और उनपर विपरीत प्रभाव डालता है। आज जो इसकी किस्म बाज़ार में उपलब्ध हैं (जैसे कैनाबिस या भारतीय भांग), वे उन पदार्थों से सात गुना अधिक शक्तिशाली हैं जो उस समय उपयोग में थे जब गांजा पहली बार लोकप्रिय हुआ था।

नशेड़ी केवल गांजे से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह आगे बढ़कर अन्य अत्यन्त खतरनाक नशीली दवाईयों को भी आजमाने लगता है। पीसीपी, जिसे अक्सर “एंजल डस्ट” कहा जाता है, व्यक्ति को भ्रमित कर देता है और उसे एक अलग-सी दुनिया में खोया हुआ महसूस कराता है। कोकीन बहुत सूक्ष्म प्रभाव डालती है। यह तेजी से असर करती है और तीव्र, जीवंत और उत्तेजक अनुभव उत्पन्न करती है, परन्तु धीरे-धीरे सेवन करने वाले के व्यक्तित्व को बदल देती है। यह केन्द्रीय तंत्रिका पर एक शक्तिशाली उत्तेजक के रूप में कार्य करती है, जिससे भ्रम उत्पन्न होते हैं, और इसके बाद अवसाद तथा मतिभ्रम भी हो सकते हैं। ‘हेरोइन’, जो सम्भवतः सभी नशों में सबसे घातक है, मॉर्फिन से बनी होती है। यह आनंद और राहत का अनुभव देती है, और इसका प्रभाव कई घंटों तक रह सकता है। यह अत्यधिक लत लगाने वाली होती है, और इसे छोड़ने के लक्षण बहुत गंभीर होते हैं। फिर भी, इसे छोड़ने के बजाय लोग अपनी आदत को पूरा करने के लिए अपराध का सहारा लेते हैं। जो लोग अपने शरीर और आत्मा को नशे के हवाले कर देते हैं, वे दरअसल धुंध में घिरे हुए होते हैं।

(2) भौतिकवादी सोच वाले लोग होंगे (3:4घ)

अन्तिम दिनों में मनुष्य “परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले” होंगे। आज भी परमेश्वर की बातों को उपेक्षा की नज़रों से देखा जाता है। एक समय था जब रविवार को सब्त का दिन या अधिक सही रूप में प्रभु का दिन कहा जाता था, और उसे आराधना के लिए अलग रखा जाता था। दुकानें बंद रहती थीं, सार्वजनिक परिवहन सीमित रूप से चलते थे, और मनोरंजन तथा खेल-कूद के स्थान बंद रहते थे। परन्तु अब वे दिन समाप्त हो चुके हैं। आज रविवार खेल-कूद और घूमने-फिरने का दिन बन गया है।

हम एक ऐसे राष्ट्र बन गए हैं जो सुख-विलास की खोज में लगा हुआ है। वास्तव में, अमेरिका में मनोरंजन और सुख-साधनों की एक विस्फोटक वृद्धि हुई है। इस देश में मनोरंजन का व्यवसाय निरन्तर बढ़ता जा रहा है। मनोरंजन, खेल-कूद के उपकरण, खेल प्रतियोगिताएँ, छुट्टियाँ, विदेश यात्राएँ, समुद्र तट के घर, ग्रामीण मकान, स्विमिंग पूल, नावें, कैपर, स्नोमोबाइल, रेडियो, टेलीविजन आदि पर लगातार अधिक धन खर्च किया जा रहा है।

एक अनुमान के अनुसार, लोग केवल मनोरंजन की खोज में ही हर वर्ष सैकड़ों अरब मील यात्रा करते हैं। दर्शक खेलों में भारी भीड़ उमड़ती है। जुआ घर लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं। राष्ट्रीय उद्यानों में भी लाखों लोग पहुँचते हैं। डिज़नी वर्ल्ड और सिक्स फ्लैग्स जैसे थीम पार्कों में भी अत्यधिक भीड़ जुटती है। लोग “चीखने वाली मशीनों” और “दिमाग घुमा देने वाली सवारी” पर चढ़ते हैं ताकि वे उन रोलर कोस्टरों का रोमांच अनुभव कर सकें जो उन्हें एक के बाद एक घुमावों में घुमाते हैं और भूमिगत सुरंगों में तेजी से ले जाते हैं। ऐसे ही एक रोलर कोस्टर की ऊँचाई अस्सी फीट से भी अधिक होती है; वह लगभग सीधे दस मंज़िल ऊपर चढ़ता है और फिर यात्रियों को उल्टा घुमाते हुए लगभग “सिक्स जी” की शक्ति के साथ घुमाता है।

वीडियो गेम अब लोकप्रिय समय बिताने के साधन के रूप में लगभग टेलीविजन की बराबरी कर रहे हैं। हर वर्ष लोग घर के बाहर ऐसे खेलों पर अपने अरबों रुपये और अनगिनत घंटे खर्च कर देते हैं।

इस बीच, लोग परमेश्वर की बातों की उपेक्षा करते जा रहे हैं। जब सर्वोच्च न्यायालय ने देश के विद्यालयों की कक्षाओं से बाइबल और प्रार्थना को हटा दिया तो बहुत से लोग चुपचाप खड़े होकर तमाशा देखते रहे। अनेक लोगों ने उन असंख्य अजन्मे बच्चों की पुकार को अनसुना कर दिया जो सरकारी स्वीकृति प्राप्त गर्भपात केंद्रों में नष्ट किए जा रहे हैं। कई लोगों ने तब भी चुप्पी साध ली जब संयुक्त राज्य अमेरिका के एक राष्ट्रपति ने अपनी प्रभावशाली स्थिति का उपयोग घोर अनैतिकता के पक्ष में किया और व्हाइट हाउस तथा अन्य स्थानों पर उसके अनैतिक आचरण को नज़रअंदाज़ किया गया। लोग ऐसी फिल्में और टीवी कार्यक्रम देखते हैं जिनमें प्रचारकों को कमजोर या मूर्ख के रूप में दिखाया जाता है; पिताओं को अयोग्य या हास्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है; अश्लीलता, विकृति और वेश्यावृत्ति को वैकल्पिक जीवन-शैली के रूप में दिखाया जाता है; और हिंसा को सफलता प्राप्त करने का साधन बताया जाता है।

अमेरिका में आज भी बहुत से लोग रविवार को कलीसिया जाना आवश्यक समझते हैं। वहाँ बहुत सी अच्छी कलीसियाएँ हैं, जिनमें अनेक बड़े “मेगाचर्च” भी शामिल हैं। परन्तु अधिकांश लोगों का समर्पण केवल कलीसिया में उपस्थिति तक ही सीमित रहती है। जो लोग स्वयं को कलीसिया का हिस्सा कहते हैं, उनमें से एक बड़ा वर्ग अपने धर्मविज्ञान में उदारवादी, अपने कार्यों में निर्जीव, और अपने प्रभाव में हानिकारक हो गया है। टेलीविजन प्रचारक घोटालों के बावजूद लोगों को आकर्षित करते रहते हैं, परन्तु वे जो सिखाते हैं वह अक्सर सतही, भौतिकवादी और उपदेश की दृष्टि से अस्थिर होता है। सामान्य लोग कलीसिया को नज़रअंदाज़ कर देते हैं या जब वह आज के मुद्दों पर बोलती है तो उसे आक्रोश में आकर “धार्मिक दक्षिणपंथ” कहकर टाल देते हैं। वे उदारवादी विचारधारा को अधिक आसानी से स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वह मानववादी जीवन-दृष्टिकोण को समर्थन देती है। और कलीसिया ने भी बहुत हद तक अपनी आत्मिक अधिकार के साथ बोलने की क्षमता को समझौते के द्वारा खो दिया है।

लोग कंधे उचकाते हैं, परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं और धन तथा सुख-विलास के पीछे दौड़ते हैं। अमेरिका के “प्यूरीटन संस्थापक” मानो किसी और ही ग्रह के लोग लगते हैं। वे इस देश में बाइबल के आधार पर एक राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से आए थे। उन्होंने परमेश्वर में अपने विश्वास को देश के सिक्कों पर अंकित किया और उसे संविधान में भी स्थापित किया। उनके महान शैक्षिक संस्थान भी बाइबल पर दृढ़ता से आधारित थे। आज बहुत से लोगों के मन में इन स्वतंत्रता के संस्थापकों का कोई महत्व ही नहीं रह गया है। इसके स्थान पर आज के नायक नवीनतम बेसबॉल खिलाड़ी, फुटबॉल सितारे, फिल्म अभिनेत्रियाँ और रॉक कलाकार बन गए हैं।

(3) पाखंडी नैतिकतावादी होंगे (3:5)

(क) जो प्रकट हुआ है (3:5 क)

अन्तिम दिनों में ऐसे लोग होंगे जो “भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।” यहाँ “भेष” का अर्थ है “बाहरी दिखावा” और “भक्ति” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त यूनानी शब्द “यूसेबिया” है, जिसका अर्थ है “धार्मिक या श्रद्धालु होना।” पौलुस जिन लोगों की बात कर रहा है, उनके पास केवल धर्म का एक बाहरी आडंबर है।

यहाँ “शक्ति” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “डूनामिस” है, जो सुसमाचार में निहित उस सामर्थ्य को दर्शाता है जो जीवनों को बदल देती है—वही सामर्थ्य जो प्रभु ने मृतकों में से जी उठने में प्रकट किया (रोमियों 1:4, 16)। पौलुस जिन बाहरी रूप से धार्मिक लोगों का वर्णन करता है, वे वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा रूपांतरित नहीं हुए हैं। वे कलीसिया तो जाते हैं और धर्म के रीति-रिवाजों को निभाते भी हैं, परन्तु वे अपने कथनों के अनुसार जीवन नहीं बिताते। उनका आचरण उनके दिखावे को झूठा सिद्ध करता है।

(ख) जो ज़रूरी है (3:5ख)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, “ऐसों से परे रहना।” हमें ऐसे धर्म का दिखावा करने वाले लोगों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि उनकी स्थिति निराशाजनक होती है। यह सब आधुनिक सोच के बिल्कुल विपरीत है, जो समझौते को बढ़ावा देती है। आज हमें यह प्रोत्साहित किया जाता है कि जो कोई भी स्वयं को धार्मिक कहता है, उसके साथ मिलकर चलें। बल सार्वभौमिक एकता पर दिया जाता है। पौलुस ने पहले ही देख लिया था कि यह प्रवृत्ति अन्तिम समय की एक विशेषता होगी और इसलिए उसने इसके विरुद्ध चेतावनी दी थी। जो मसीही अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य को जानते हैं, उन्हें ऐसे लोगों से अलग रहना चाहिए जो उस सामर्थ्य को नहीं मानते—चाहे वे कुछ भी दावा क्यों न करें और चाहे “परे रहने” का बाइबल का सिद्धांत आज प्रचलन में न भी हो।

(4) लुभाने वाले लुटेरे होंगे (3:6)

अन्तिम दिनों में बहकाने वाले लुटेरे अपने शिकार की तलाश में होंगे, विशेषकर अपरिपक्व स्त्रियों की। पौलुस ने चेतावनी दी कि ये वे लोग हैं जो “घरों में दबे पाँव घुस आते हैं, और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं।” यहाँ “घुस आना” शब्द का अर्थ है “चालाकी से अपने आप को भीतर प्रवेश करा लेना।” यह उन लोगों का चित्र प्रस्तुत करता है जो अनजान लोगों के घरों में धीरे-धीरे घुसपैठ कर लेते हैं—वे धोखे, चालाकी और झूठे बहानों से भीतर प्रवेश करते हैं। “दुर्बल स्त्रियाँ” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त यूनानी शब्द “गुनाइकेरियन” है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “भोली स्त्रियाँ।” यह एक तिरस्कारपूर्ण रूप है, जो अपरिपक्वता को दर्शाता है। ऐसी अपरिपक्व स्त्रियाँ चालाक शिक्षकों के लिए आसान लक्ष्य बन जाती हैं।

यहाँ जिस शब्द का अनुवाद “वश में कर लेना” किया गया है, वह ऐसे शिक्षकों के प्रति अपनी इच्छा और विवेक का अंधे रूप से समर्पण करने को दर्शाता है। इससे सम्बन्धित एक अन्य शब्द का अनुवाद “युद्धबंदी बना लेना” भी किया जा सकता है। पौलुस यहाँ पूर्णतः असहाय और निष्क्रिय अवस्था का एक चित्र प्रस्तुत करता है। “दबी” शब्द का अर्थ है एक के ऊपर एक चीज़ों का ढेर लग जाना। इन लोगों के शिकार अपराधबोध के भारी बोझ से दबे होंगे, सम्भवतः इसलिए कि वे “हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश” में हैं। “वश में” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “चलाना” या “प्रेरित करना।” “हर प्रकार” के लिए मूल यूनानी शब्द “पोइकिलोस” है, जिसका अर्थ है “अनेक प्रकार का” या “रंग-बिरंगा।” और “अभिलाषाओं” के लिए मूल शब्द “एपिथुमिया” है, जिसका अर्थ है “प्रबल इच्छाएँ या लालसाएँ।” अर्थात्, ये बहकाने वाले लोग उन वासनाओं और अभिलाषाओं को उभारते हैं जो सामान्यतः सभी मनुष्यों में पाई जाती हैं।

क्या ही एक स्पष्ट चित्रण है! ऐसे बेईमान और चालाक शिक्षक अपरिपक्व स्त्रियों के घरों में धीरे-धीरे प्रवेश कर जाते हैं, जो अपनी अभिलाषाओं और लालसाओं के कारण आसानी से उनका शिकार बन जाती हैं। उपदेशक और शिक्षक उन्हें दिए गए विश्वास का दुरुपयोग करते हैं और अपनी ही मंडली के लोगों को बहकाते हैं। पौलुस ने देखा था कि अन्तिम दिनों में कलीसिया में इस प्रकार की गतिविधियाँ व्यापक हो जाँगी। यह पहले ही सामान्य रूप से व्यापक हो चुका है। अनेक मामलों में ऐसे बहकाने वाले लोगों का न तो न्याय किया जाता है और न ही उन्हें कलीसिया से अलग किया जाता है। इसके स्थान पर उनके दुष्ट आचरण को उनकी व्यक्तित्व, लोकप्रियता या प्रभाव के कारण छिपा दिया जाता है। यदि कभी दोषी व्यक्ति को पद छोड़ने के लिए मजबूर भी किया जाता है, तो वह या तो कलीसिया को विभाजित करके पास ही नई कलीसिया शुरू कर देता है या किसी दूसरी कलीसिया में चला जाता है, जहाँ वह फिर से वही कार्य दोहराता है।

(5) उस समय वहाँ परिष्कृत मूर्ख होंगे (3:7-9)

(क) सत्य के प्रति उनकी निरर्थक खोज (3:7)

इन धार्मिक शिकारी लोगों के पीड़ित स्त्रियाँ “सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहिचान तक कभी नहीं पहुँचतीं।” ऐसी स्त्रियों को अपने जाल में फँसाने के लिए ये बहकाने वाले उनकी अधिक ज्ञान पाने की इच्छा का लाभ उठाते हैं। वास्तव में ये स्त्रियाँ सत्य के ज्ञान को नहीं चाहतीं, क्योंकि वह उन्हें पाप के प्रति दोषी ठहराएगा और पश्चाताप की माँग करेगा। वे अधिक से अधिक केवल बौद्धिक ज्ञान चाहती हैं, और कभी-कभी तो केवल उत्तेजित करने वाली नई-नई बातें ही चाहती हैं। पौलुस ऐसी स्त्रियों का वर्णन कर रहा था जिनके विचार “धर्म” (विशेषकर विचित्र प्रकार के धर्म) से आसानी से प्रभावित हो जाते हैं, जिनका विवेक वास्तविक या काल्पनिक पापों से दबा होता है, जिनकी समझ उनकी “अपरिपक्वता” के कारण सीमित होती है, और जिनकी कमजोरी उन्हें बहकाने वाले कलीसियाई अगुवों का आसान शिकार बना देती है।

कलीसिया का इतिहास उन लोगों के कई उदाहरण देता है जो ऐसे व्यक्तियों के शिकार बने, जिन्होंने पवित्र होने का दिखावा किया। रूसी धर्मगुरु, रासपुटिन स्त्रियों को बहकाने वाला एक कुख्यात व्यक्ति था। जोसेफ स्मिथ ने एक ऐसे धर्म की स्थापना की जो बहुविवाह पर आधारित था, यद्यपि आज के मॉर्मन इसे नकारने का प्रयास करते हैं; ब्रिघम यंग की अनेक पत्नियाँ थीं, और टाइम पत्रिका ने यह भी कहा कि मॉर्मन अब भी बहुविवाह का अभ्यास करते हैं। ब्रांच डेविडियन्स के पूर्व अगुवे डेविड कोरेश ने अपनी मंडली के विवाहित पुरुषों को यह विश्वास दिला दिया था कि केवल वही उनकी पत्नियों का पति होने का अधिकार रखता है। ऐसे धार्मिक अगुवों के दुष्कर्मों और उनके दुखद शिकारों की सूची बहुत लंबी है और आगे भी बढ़ती ही जा सकती है।

(ख) सत्य के साथ उनका घातक संघर्ष (3:8-9)

i. एक उदाहरण (3:8क)

पौलुस ने इन झूठे उपदेशकों को वास्तव में शैतान के सेवक के रूप में देखा और उनकी तुलना “यन्त्रेस और यम्ब्रेस” से की। सम्भवतः पौलुस ने ये नाम यहूदियों की मौखिक या लिखित परम्पराओं से लिए, जिनसे वह

एक प्रशिक्षित रब्बी होने के नाते भली-भाँति परिचित था। या फिर, पवित्र आत्मा की प्रत्यक्ष प्रेरणा से प्रेरित होकर उसने उन दो मिस्री जादूगरों के नाम बताए, जिन्होंने मूसा का विरोध किया और फिरौन को धोखा दिया। किसी भी स्थिति में, उन्होंने “मूसा का विरोध किया।” यहाँ “विरोध किया” शब्द का अर्थ है “अपने आप को विरोध में खड़ा करना” या “प्रतिरोध करना।” यही शब्द पौलुस और बरनबास के उस प्रसंग में भी प्रयोग हुआ है, जब इलिमास जादूगर ने उनका विरोध किया और हाकिम (सिरगियुस पौलुस) को विश्वास करने से दूर करने का प्रयास किया (प्रेरितों के काम 13:8)। इलिमास को तुरन्त और प्रभावशाली रीति से प्रेरित पौलुस द्वारा दण्डित किया गया।

जब मूसा पहली बार फिरौन के सामने उपस्थित हुआ, तब उसने परमेश्वर की यह मांग प्रकट की कि फिरौन इब्रानी दासों को छोड़ दे। मूसा ने अपने प्रमाण प्रस्तुत किए; उसने हारून से कहा कि अपनी लाठी भूमि पर डाल दे। जब उसने ऐसा किया, तो वह लाठी साँप बन गई। मिस्र के जादूगरों ने भी शैतानी शक्ति और अपनी गुप्त कलाओं के द्वारा इस चमत्कार की नकल कर ली। परन्तु हारून का साँप तुरंत मिस्रियों के साँपों को निगल गया। लेकिन इसके फलस्वरूप, फिरौन का हृदय और भी अधिक कठोर हो गया (निर्गमन 7:9-13)।

अगले दिन मूसा ने फिरौन का फिर से सामना किया, इस बार नील नदी के किनारे पर। मूसा ने जल को लहू में बदल दिया, और फिर से जादूगरों ने अपनी जादुई शक्तियों से इस चमत्कार की नकल कर ली। एक बार फिर फिरौन का हृदय कठोर हो गया (निर्गमन 7:14-24)।

अगले टकराव में, मूसा ने मिस्र की भूमि को मेंढकों से भर दिया। जादूगरों ने भी वैसा ही किया। प्रभु ने कुछ समय के लिए राहत दी, परन्तु फिरौन ने एक बार फिर अपना हृदय कठोर कर लिया (निर्गमन 7:25-8:15)।

अगली विपत्ति बिना किसी चेतावनी के आई। देश की धूल कुटकियाँ बन गई और वे हर जगह फैल गई। इस बार जादूगर इस चमत्कार की नकल नहीं कर सके और उन्होंने फिरौन के सामने अंगीकार किया कि “यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।” परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी; फिरौन का हृदय पहले ही कठोर हो चुका था (निर्गमन 8:16-19)।

पौलुस ने इस ऐतिहासिक घटना का उपयोग एक उदाहरण के रूप में किया। वे दो मिस्री जादूगर अन्तकाल के झूठे शिक्षकों के उस दृढ़ निश्चय का प्रतीक हैं, जो परमेश्वर का विरोध करेंगे। उनके अनुयायियों के मन भी उसी प्रकार कठोर हो जाएँगे जैसे फिरौन का हृदय कठोर हुआ था। ये झूठे शिक्षक अन्तिम महान पतन के अग्रदूत होंगे, जिसका नेतृत्व वह पशु अर्थात् मसीह-विरोधी करेगा। वह और उसका साथी धोखेबाज़—झूठा भविष्यद्वक्ता—झूठे चमत्कारों के द्वारा संसार को भ्रमाँगे (प्रकाशितवाक्य 13; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9)।

ii. एक स्पष्टीकरण (3:8ख-ग)

अन्तिम समय के झूठे उपदेशक तथ्यों और विश्वास दोनों के प्रति अंधे होंगे। वे “सत्य का विरोध करते हैं; ये ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं।”

आज मसीही जगत के अनेक मंचों और बहुत से चरम सेमिनरी विद्यालयों की कक्षाओं में ऐसे ही लोग बैठे हैं। वे स्वयं को उदारवादी या “मध्यमार्गी” होने पर गर्व करते हैं, परन्तु वास्तव में वे परमेश्वर के सत्य के

प्रति अंधे हैं और अपना समय विश्वास को नकारने में लगाते हैं। वे पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता, मसीह की दैवीयता और कलीसिया के अन्य मूल सिद्धांतों का इनकार करते हैं। वे उन लोगों के विश्वास को नष्ट करने का प्रयास करते हैं जो उनकी देखरेख में हैं। इन झूठे शिक्षकों के प्रभाव में आने वाले लोग सेमिनरी से ऐसे निकलते हैं मानो उनकी बाइबल तथाकथित “उच्च आलोचना” के सिद्धांतों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दी गई हो। वे ऐसा सामाजिक सुसमाचार प्रचार करते हैं जिसमें पाप के प्रति दोषी ठहराने की कोई सामर्थ्य नहीं होती। वे लोगों को मसीह में जीवन-परिवर्तन करने वाले विश्वास की ओर ले जाने में पूरी तरह असमर्थ होते हैं। लोग उनकी कलीसियाओं में रोटी माँगने आते हैं, और उन्हें पत्थर दिया जाता है। जब वे अंडा माँगते हैं, तो उन्हें बिच्छू दिया जाता है। जब वे मछली माँगते हैं, तो उन्हें साँप दिया जाता है (मत्ती 7:9-10)।

अन्तिम दिनों में झूठे उपदेशकों के मन विकृत और पूरी तरह भ्रष्ट हो जाएँगे। “भ्रष्ट” के लिए प्रयुक्त शब्द केवल यहाँ और 2 पतरस 2:12 में पाया जाता है। वहाँ, अन्तिम दिनों के धर्मत्यागियों का वर्णन करते हुए, पतरस कहता है कि वे “अपनी सड़ाहट में आप ही सड़ जाएँगे।”

“निकम्मे” या “अयोग्य” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “अडोकिमोस” है, जिसका अर्थ है “जो परीक्षा में स्थिर न हो।” यह शब्द मुख्यतः नकली धातुओं के लिए प्रयोग किया जाता था, परन्तु यहाँ यह ऐसे लोगों के लिए है जिनकी नैतिक समझ विकृत हो चुकी है और जिनके मन अपनी ही कल्पनाओं से धुँधले हो गए हैं। वे विश्वास के प्रति विश्वासघाती होते हैं। वे बाइबल के सत्य और शब्दों के साथ खेलते हैं। यद्यपि इन झूठे उपदेशकों में से कुछ मसीही घरों में पले-बढ़े होते हैं, फिर भी उन्होंने सत्य को अस्वीकार कर दिया होता है।

एक प्रसिद्ध आधुनिक तांत्रिक ने खुद को महान पशु, या पशु 666, कहा और खुद को “पृथ्वी का सबसे दुष्ट व्यक्ति” बताया। वह एक अंग्रेज था, परन्तु अपने आप को कुख्यात बोर्जिया पोप, अलेक्जेंडर षष्ठम का अवतार मानता था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उसने संयुक्त राज्य अमेरिका में समय बिताया, जहाँ उसने ब्रिटेन-विरोधी प्रचार किया। वह अत्यन्त अनैतिक व्यक्ति था और एक जर्मन गुप्त समाज की गतिविधियों में गहराई से शामिल था। उसके बहुत से अनुयायी थे और उसके पास असाधारण प्रभावशाली शक्तियाँ थीं। वह एक पंथ का अगुवा और पूरी तरह दुष्ट व्यक्ति था, और मसीह-विरोधी का अग्रदूत कहा जा सकता है। 1947 में उसके अन्तिम संस्कार पर उसकी एक अश्लील कविता पढ़ी गई, जिसमें उसने अपने आप को एक देवता के रूप में प्रस्तुत किया था।

यह झूठा उपदेशक एक मसीही परिवार से आया था! उसका पालन-पोषण ऐसे विश्वासियों के बीच हुआ था जो पवित्रशास्त्र की प्रेरणा, मसीह की दैवीयता, बाइबल के महान उद्धार संबंधी सत्यों और विश्वास के द्वारा उद्धार में दृढ़ थे। इस दुष्ट व्यक्ति को सत्य सिखाया गया था, परन्तु उसने उसे अस्वीकार कर दिया। उसका मन भ्रष्ट हो गया था, और वह “विश्वास के विषय में निकम्मा” ठहराया गया था।

iii. एक पर्दाफाश (3:9)

अन्तिम दिनों में झूठे शिक्षक अपने मार्ग में रोक दिए जाएँगे और उनकी शक्ति छीन ली जाएगी। पौलुस ने लिखा, “वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रकट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी।” दूसरे शब्दों में, वे कपटी और धोखेबाज़ के रूप में सबके सामने प्रकट किए

जाएँगे, जैसे यन्त्रेस और यम्ब्रेस हुए थे। उन मिस्री जादूगरों को एक सीमा तक सफलता मिली, परन्तु उसके बाद वे पूरी तरह रुक गए और आगे बढ़ नहीं सके।

आज धर्मत्याग की लहरें बढ़ती जा रही हैं। संकटपूर्ण समय हमारे द्वार तक आ पहुँचे हैं, और वे और भी अधिक गंभीर होते जाएँगे। शीघ्र ही यह धारा पूर्ण बाढ़ का रूप ले लेगी और अपने किनारों को तोड़ देगी, जब भ्रम और छल की विभिन्न धाराएँ मिलकर मुख्य प्रवाह को और भी प्रबल बना देंगी। घटनाओं का यह प्रवाह अब सबको अपने साथ बहाता हुआ पाप के पुरुष के आगमन की ओर ले जा रहा है।

ग. अंतिम दिनों की दुर्भावना (3:10-13)

(1) पौलुस का संसार (3:10-11)

अन्तिम दिनों को लाने वाली मसीह-विरोधी शक्तियाँ प्रेरितों के समय में ही कलीसिया के विरुद्ध सक्रिय हो चुकी थीं।

शैतान ने प्रारम्भिक कलीसिया के विरुद्ध अपनी सारी शक्तियाँ लगा दीं। उसने मसीही उपदेशों को विकृत और तोड़-मरोड़ देने का प्रयास किया, परन्तु प्रेरितों की पत्रियों की श्रृंखला ने उसके छल को झूठा सिद्ध कर दिया। उसके पास कोई नई चाल नहीं है। आधुनिक पंथ केवल पुराने विधर्मों के नए रूप मात्र हैं।

शैतान ने विश्वासियों को नैतिक रूप से बहकाने का भी प्रयास किया, परन्तु यहूदा के पतन (जिसकी भविष्यवाणी भजन संहिता 41:9 में की गई थी) को छोड़कर उसे कोई विशेष सफलता नहीं मिली। जहाँ तक धन और सत्ता की लालसा तथा सामान्य अनैतिकता की बात है, प्रारम्भिक कलीसिया ने ऐसे लोगों को समझाया और जो पश्चात्ताप नहीं करते थे, उन्हें कलीसिया से अलग कर दिया।

शैतान ने सताव, धमकी और भय का भी सहारा लिया, परन्तु विजयी कलीसिया ने उसका सामना निर्भीकता से किया। वह जितना भी चतुर, शक्तिशाली और निरन्तर प्रयत्नशील क्यों न था, फिर भी शैतान पवित्र आत्मा के सामने टिक नहीं सका।

वह निरन्तर प्रयास करता रहता है; उसके पास कोई और विकल्प नहीं है, परन्तु पवित्र आत्मा उसके हर कदम का उत्तर देता है। हम हमेशा यह नहीं देख पाते कि पवित्र आत्मा कैसे या कब कार्य करता है, परन्तु वह अवश्य कार्य करता है। जब हम स्वर्ग में पहुँचेंगे और पूरी कहानी का दूसरा पक्ष जानेंगे, तब हम बड़े आश्चर्य और प्रशंसा से भर जाएँगे (जैसा कि यूहन्ना ने प्रकाशित वाक्य 17:6 में अनुभव किया था)। जब अन्तिम दिन पूरी तरह आ जाएँगे, तब कलीसिया उठा ली जाएगी और पवित्र आत्मा बुराई को रोके रखना बन्द कर देगा। शैतान अवसर का लाभ उठाएगा और सोचेगा कि उसने विजय पा ली है। परन्तु शीघ्र ही उसे यह पता चल जाएगा कि वह हमेशा के लिए पराजित हो चुका है।

पौलुस के समय में शैतान का कलीसिया के प्रति विरोध अत्यन्त हिंसक था। वास्तव में, आरम्भ से ही कलीसिया के विरुद्ध हिंसा की जाती रही थी (प्रेरितों के काम 5:33-42)। पौलुस स्वयं (अपने अपरिवर्तित दिनों में) कभी हिंसा का प्रबल समर्थक था (प्रेरितों के काम 8:1-3)। अब मसीहियों का सताव साम्राज्य की आधिकारिक कानून बन चुका था।

(क) उसकी शिक्षा (3:10क)

अब पौलुस ने अपने युवा सहयोगी के संकल्प को दृढ़ करने का प्रयास फिर से शुरू किया। उसने तीमुथियुस को अपनी शिक्षा की याद दिलाई: “परन्तु तू ने उपदेश.. में मेरा साथ दिया।” यहाँ “साथ दिया” का अर्थ है “पूरी तरह से अनुसरण करना।” यह शिष्यत्व का भाव प्रकट करता है—अर्थात् किसी के जीवन और उदाहरण के अनुसार स्वयं को पूरी तरह ढाल लेना। पौलुस को तीमुथियुस की निष्ठा की अपेक्षा करने का पूरा अधिकार था, क्योंकि उसने प्रारम्भ से ही अपने आप को पूरी तरह तीमुथियुस के जीवन में उंडेल दिया था।

“तू” सर्वनाम यहाँ विशेष रूप से बल देने के लिए प्रयोग किया गया है। बरनबास आया और चला गया। देमास आया और चला गया। परन्तु तीमुथियुस स्थिर बना रहा। वह प्रारम्भ से ही विशेष था। पौलुस उसे पुत्र के समान प्रेम करता था और उसने उसे शिक्षा दी और प्रशिक्षित किया था। शीघ्र ही पौलुस भी चले जाने वाला था। तब सुसमाचार के ध्वज को ऊँचा उठाए रखने की जिम्मेदारी तीमुथियुस पर होगी।

इफिसुस इसके लिए एक उत्तम स्थान था। वहाँ की कलीसिया पौलुस की श्रेष्ठ कलीसियाओं में से एक थी। उसने इफिसुस के मसीहियों को अपने महानतम पत्रियों में से एक लिखा था। उनके परमेश्वर द्वारा नियुक्त प्राचीनों को पौलुस ने बड़ी गंभीरता से संबोधित किया था (प्रेरितों के काम 20), और प्रेरित यूहन्ना भी इफिसुस की कलीसिया की संगति में सम्मिलित होने वाला था। शैतान, उस रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कलीसिया की सामर्थ्य को भली-भाँति समझते हुए, उस पर आक्रमण कर रहा था। तीमुथियुस को डगमगाना नहीं था—वह डगमगा नहीं सकता था। पौलुस की सारी शिक्षा का संरक्षक होने के नाते, तीमुथियुस को उस शिक्षा को दृढ़ता से बनाए रखना था, उन धोखेबाजों के विरोध में जो अन्य तरह के उपदेश सिखाने का प्रयास कर रहे थे। पौलुस की चिंता उसके शब्दों में स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

(ख) उसकी गवाही (3:10ख-छ)

तीमुथियुस पौलुस के “चालचलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज” के साथ-साथ उसके उपदेश को भी जानता था। वह युवक जानता था कि पौलुस जो उपदेश देता था, उसका पालन भी करता था।

i. पौलुस के जीवन का आदर्श (3:10ख)

तीमुथियुस ने पौलुस के जीवन की शैली या “चाल-चलन” को प्रत्यक्ष रूप से जाना था। “चालचलन” के लिए अनूदित शब्द नये नियम में केवल यहीं पाया जाता है। इसका उचित अर्थ में अनुवाद “मेरी जीवन शैली” या “मेरा जीवन-आचरण” भी किया जा सकता है। स्पष्टता से कहें तो यह शब्द एक प्रकार के उपदेश को दर्शाता है। पौलुस ने अपने उपदेश को अपने जीवन में प्रकट किया। जो कुछ वह प्रचार करता था, वही उसके जीवन में दिखाई देता था।

ii. पौलुस के जीवन का उद्देश्य (3:10ग)

तीमुथियुस पौलुस की “मनसा” को भी जानता था। “मनसा” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “प्रोथेसिस” है। पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग 1:9 में भी किया था, जहाँ वह बताता है कि परमेश्वर का हमें बचाने और बुलाने का एक अनन्त उद्देश्य है—जो संसार की सृष्टि से पहले ही उसके मन में स्थापित था। पौलुस का उद्देश्य परमेश्वर के उद्देश्य के साथ पूरी तरह मेल खाता था। दमिश्क के मार्ग पर मसीह से मिलने के क्षण से

ही उसमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का एकनिष्ठ दृढ़ निश्चय था। हम पौलुस की यात्रा को दमिश्क, जंगल, फिर दमिश्क, किलिकिया, यरूशलेम, अन्ताकिया, गलातिया, यूरोप और रोम तक देख सकते हैं। उसके संकल्प में कहीं कोई डगमगाहट नहीं दिखाई देती—न मन में कोई संदेह, न कोई विरोधाभासी इच्छाएँ। पौलुस का अटल निश्चय यही था कि वह अपने जीवन में परमेश्वर की भली, भावनी और सिद्ध इच्छा अनुभव से को पूरा होने दे (रोमियों 12:2)।

तीमुथियुस को भी एक मनसा रखना आवश्यक था। उसे दानिय्येल की तरह यह निश्चय करना था कि वह अपने स्पष्ट कर्तव्य से कभी नहीं डगमगाएगा (दानिय्येल 1:8)।

iii. पौलुस के जीवन की प्राथमिकताएँ (3:10घ-च)

पौलुस की प्राथमिकताएँ तीन प्रकार की थीं, और तीमुथियुस उनसे अच्छी तरह से परिचित था। पहला था “विश्वास,” जो परमेश्वर की ओर केंद्रित था। पौलुस का उस जीवित प्रभु पर पूर्ण भरोसा था, जिससे वह दमिश्क के मार्ग पर इतने अद्भुत तरीके से मिला था। अपने मन-परिवर्तन के बाद उसने पूरे पुराने नियम का गहराई से अध्ययन किया। उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। पुराने नियम में प्रत्यक्ष भविष्यवाणियों में जिस मसीह की घोषणा की गई थी और जो संकेतों और प्रतीकों के द्वारा दर्शाया गया था, वही मसीह कलवरी का मसीह था।

वह हाल के इतिहास का मसीह था। वह पवित्र आत्मा से गर्भित हुआ और कुंवारी मरियम से बैतलहम में जन्मा था। वह नासरत में पला-बढ़ा। उसने वायदा किए हुए देश में दान से लेकर बेशेबा तक अपने आप को प्रकट किया। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया, वह जी उठा, और अब स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान है। वह परमेश्वर का मसीह है। वह परमेश्वर का पुत्र है। वह मनुष्य का पुत्र है। वह भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा है। वह सर्वश्रेष्ठ रूप से मनोहर है और दस हज़ारों में भी सबसे श्रेष्ठ है। वह स्त्री का वंश, अब्राहम का वंश और दाऊद का वंश है। वह अनन्त, असृजित और स्वयं-अस्तित्व में है—परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्तित्व, अनादि और अनंत परमेश्वर है। पुराने नियम का यहोवा ही नये नियम का यीशु है! पौलुस का उस पर विश्वास एक क्षण के लिए भी कभी नहीं डगमगाया।

पौलुस की परमेश्वर की ओर व्यक्तिगत प्राथमिकता यह थी कि वह इस यीशु को अपने हृदय में प्रभु के रूप में स्थापित करे और उस पर बिना किसी संदेह के पूर्ण विश्वास रखे। प्रेरित का यह विश्वास निश्चय ही तीमुथियुस के जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ गया होगा।

पौलुस की दूसरी प्राथमिकता “धीरज” थी, जो स्वयं की ओर केंद्रित थी। “धीरज” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “मक्रोथुमिया” है, जिसका अर्थ है “सहनशीलता” या “धैर्य”। यह दो शब्दों से मिलकर बना है—“मक्रोस” (लंबा) और “थुमोस” (क्रोध या स्वभाव)। पौलुस क्रोधी नहीं था, क्योंकि उसने धीरज का अभ्यास किया था और धैर्य रखना सीख लिया था।

पौलुस बहुत कुछ सह सकता था। वह उतावला नहीं था, जैसा कि कुरिन्थुस की कलीसिया के साथ उसके व्यवहार से स्पष्ट होता है। उस कलीसिया में विरोधी दल कट्टर, संगठित और काफी प्रबल थे। उसके शत्रुओं के आक्रमण तिरस्कारपूर्ण, अपमानजनक और व्यक्तिगत होते थे, और उनकी कुछ शिक्षाएँ विधर्मी और भटकाने वाली थीं। फिर भी पौलुस का धीरज बड़ा अद्भुत था। उसने कुरिन्थियों को बार-बार पत्रियाँ

लिखी। वह स्वयं उनके पास गया, उसने तीमुथियुस और तीतुस को उनके पास भेजा, उनके लिए प्रार्थना की और उनसे विनती की। पौलुस के पास एक प्रेरित के रूप में चमत्कार करने की सामर्थ्य भी थी। वह किसी व्यक्ति को अन्धा कर सकता था, जैसा कि प्रेरितों के काम 13:6-12 में उसने किया। वह लोगों को शैतान के हाथ में भी सौंप सकता था। वह कुरिन्थुस जाकर अपने शत्रुओं को दण्ड दे सकता था। परन्तु उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

पौलुस की तीसरी प्राथमिकता “प्रेम” था, जो मनुष्यों की ओर केंद्रित थी। “प्रेम” के लिए प्रयुक्त शब्द परमेश्वर के उस प्रेम को दर्शाता है जो पवित्र आत्मा के द्वारा पौलुस के हृदय में उंडेला गया था। यही प्रेम था जिसने पौलुस के न्याय के हाथ को रोके रखा, ताकि वह अपने शत्रुओं पर किसी तरह का दण्ड न लाए।

1 कुरिन्थियों 13 में प्रेम पर लिखी गई पौलुस की कविता की प्रत्येक पंक्ति उसके अपने हृदय और जीवन में झलकती थी। खोई हुई आत्माओं के प्रति उसका प्रेम उसे नदियों, समुद्रों और देशों के पार ले गया, ताकि वह उन्हें खोज सके। इफिसुस के प्राचीन उसके इस अटूट जुनून को बहुत अच्छी तरह से पहचानते थे (प्रेरितों के काम 20:20-26)। प्रभु के लोगों के प्रति भी उसका प्रेम अटूट था। वह चाहता था कि सब लोग मसीह के आशीष की पूर्णता में प्रवेश करें। और मनुष्यों के प्रति उसके प्रेम से भी ऊपर था उसका प्रेम उस मनुष्य—मसीह यीशु—के प्रति, जिसने उसे अंधकार के राज्य से निकालकर ज्योति के राज्य में पहुँचाया और उसके प्राण को आनन्द से भर दिया।

तीमुथियुस पौलुस के जीवन की गवाही से भली-भाँति परिचित था, क्योंकि वह प्रेरित के साथ अनेक मीलों तक चला था, उसके कष्टों को साझा किया था और उसकी कृपा का भागीदार बना था। निस्संदेह, पौलुस ने उसे अपने अनेक अनुभवों की कहानियाँ सुनाई होंगी, जो यहाँ लिखी नहीं गईं, परन्तु आने वाले उस महिमामय दिन में, जब प्रतिफल दिया जाएगा, उनका स्मरण किया जाएगा।

iv. पौलुस के जीवन का धैर्य (3:10)

निस्संदेह, तीमुथियुस ने पौलुस की “सहनशीलता” को भी देखा होगा। यूनानी शब्द का अर्थ है “दबाव के नीचे टिके रहना।” सहनशीलता एक ऐसा पौधा है जिसे उगाना कठिन होता है; यह धीरे-धीरे विकसित होता है और परीक्षाओं के बीच सबसे अच्छा बढ़ता है (याकूब 1:3)। जब पौलुस ने 2 तीमुथियुस में सहनशीलता के बारे में लिखा, तब वह अपने जीवन की सबसे कठोर परीक्षा से गुजर रहा था।

पौलुस का संसार अब एक अंधेरी और नम कोठरी तक सिमट गया था। वह पहले भी अनेक कठिन परिस्थितियों में रहा था, परन्तु इस बार उसे पता था कि उसके दिन गिने हुए हैं। वह जीवन की छोटी-छोटी सुविधाओं से भी वंचित था, फिर भी उसने न तो कभी कोई चिंता की और न ही किसी पर क्रोध किया। उसने अपनी परिस्थिति को शांत विश्वास के साथ स्वीकार किया कि परमेश्वर अब भी सिंहासन पर विराजमान है। वह हर दिन को प्रभु के छिदे हुए हाथ से मिला हुआ मानकर जीता था। अब पवित्र आत्मा उसके मन में धैर्य उत्पन्न कर रहा था (कुलुस्सियों 1:11)।

पौलुस की सहनशीलता उसके अनुग्रह में वृद्धि और उसके चरित्र की परिपक्वता का चिन्ह था। जब हम उसकी अंतिम पत्री, 2 तीमुथियुस को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि उसी धैर्य की झलक उसके तीमुथियुस को लिखने और उसे समझाने के तरीके में भी दिखाई देती है। हमें वहाँ कोई उतावले शब्द या दबाव डालने

वाले आग्रह नहीं मिलते—केवल शांत और दृढ़ आग्रह मिलता है कि तीमुथियुस अपने वरदान को जागृत करे और परमेश्वर के सैनिक, विद्यार्थी और पवित्र जन के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाए।

(ग) उसके कष्ट (3:11क)

पौलुस ने तीमुथियुस से लिखा, “तू ने मेरे... सताए जाने, और दुःख उठाने में मेरा साथ दिया; और ऐसे दुःखों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे, और अन्य दुःखों में भी जो मैं ने उठाए हैं।” वास्तव में, वह तीमुथियुस को अपनी पहली मिशनरी यात्रा और उसके नगर में अपनी पहली यात्रा की परिस्थितियों की याद दिला रहा था। “दुःख” के लिए प्रयुक्त शब्द कष्ट या पीड़ा सहने को दर्शाता है।

अपनी पहली यात्रा में, पौलुस साइप्रस द्वीप के सफल दौरे के बाद पिसिदिया के अन्ताकिया पहुँचा था। इस यात्रा के दौरान यूहन्ना मरकुस मिशनरी कार्य से अलग हो गया। संभव है कि वह इस बात से निराश था कि अब नेतृत्व बरनबास की बजाय पौलुस के हाथ में आ गया था, या शायद वह टॉरस पर्वतों के खतरनाक और डाकुओं से भरे मार्ग से होकर जाने के प्रस्ताव से भयभीत हो गया था।

अन्ताकिया में, पौलुस को सब्त के दिन आराधनालय में बोलने का अवसर दिया गया। अगले सब्त को बहुत बड़ी संख्या में अन्यजाति लोग उसे सुनने के लिए आ पहुँचे। यहूदियों ने, ईर्ष्या और क्रोध से भरकर, “विरोध और निन्दा” करते हुए उसका विरोध किया। तब पौलुस ने पूरी तरह अन्यजातियों की ओर प्रस्तान किया। उनमें से बहुत से लोगों ने उद्धार पाया और एक कलीसिया की स्थापना हुई। इसके प्रतिकार में यहूदियों ने लोगों को भड़काकर पौलुस के विरुद्ध उत्पीड़न खड़ा कर दिया। लूका लिखता है कि उन्होंने “उपद्रव करवाया।” इसके बाद पौलुस ने अपने जूतों से उस आराधनालय की धूल झाड़कर प्रतिक्रिया दी (प्रेरितों के काम 13:14-52)।

पौलुस आगे बढ़कर इकुनियुम पहुँचा, जहाँ यहूदियों और अन्यजातियों की एक बड़ी संख्या ने विश्वास किया। फिर से “विश्वास न करनेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उसकाए और कटुता उत्पन्न कर दी।” इस बार पौलुस ने परिस्थिति का सामना किया। वह काफी समय तक वहाँ रहा, प्रचार करता रहा और चमत्कार करता रहा। परन्तु विरोध बढ़ता गया और अन्त में यहूदियों के अगुवों द्वारा उकसाए गए यहूदियों और अन्यजातियों के संयुक्त आक्रमण का रूप ले लिया, जिसका उद्देश्य पौलुस और बरनबास का अपमान करना और उन्हें पत्थरवाह करना था। तब वे मिशनरी लुस्त्रा और दिरबे की ओर बच निकले (प्रेरितों के काम 14:1-6)।

तीमुथियुस को अवश्य ही उन जुड़वाँ नगरों में पौलुस के आगमन की बातें अच्छी तरह याद रही होंगी। लुस्त्रा में पौलुस ने जन्म से लँगड़े एक व्यक्ति को चंगा किया था। आश्चर्यचकित भीड़ ने यह मान लिया था कि वह और बरनबास दोनों कोई देवता हैं और उनकी आराधना करने की तैयारी करने लगे। पौलुस ने उन्हें रोका और उनके मन को सच्चे परमेश्वर की ओर मोड़ने का प्रयास किया। परन्तु शीघ्र ही अन्ताकिया और इकुनियुम से यहूदी वहाँ आ पहुँचे। वे उपद्रव करने के इरादे से आए थे और उन्होंने लोगों को उकसाकर पौलुस को पत्थरवाह करवाया। उसे मृत समझकर छोड़ दिया गया, परन्तु वह फिर उठ खड़ा हुआ और दिरबे को चला गया, जहाँ उसने बहुतों को सुसमाचार सुनाया। इस सेवा के अंत में वह फिर लुस्त्रा, इकुनियुम

और अन्ताकिया—उन्हीं नगरों में लौटा जहाँ उसे इतना कठोर सताव सहना पड़ा था, ताकि नए विश्वासियों को दृढ़ करे और कलीसियाओं को व्यवस्थित करे (प्रेरितों के काम 14:7-23)।

तीमुथियुस ने पौलुस के साथ अपनी आगे की यात्राओं के दौरान यह अच्छी तरह जान लिया होगा कि प्रेरित सताव और कष्टों को अपने कार्य का सामान्य भाग मानता था; वह उन्हें सहज रूप से सह लेता था। पौलुस ने फिलिप्पी में सताव सहा (प्रेरितों के काम 16:15-24), थिस्सलुनीके और बिरीया में भी (प्रेरितों के काम 17:1-14)। उसने एथेंस में निंदा सहा (प्रेरितों के काम 17:32) और कुरिन्थुस में विरोध और सताव झेला (प्रेरितों के काम 18:1-12)। इफिसुस में वह एक दंगे के बीच में था (प्रेरितों के काम 19:24-41)। यरूशलेम के मन्दिर में यहूदियों ने उसे पीटा और मार डालने का प्रयास किया (प्रेरितों के काम 21:26-31)। इसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया और वह एक और दंगे का कारण बना (प्रेरितों के काम 22:22-30; 23:10)। जब उसे मार डालने के एक गंभीर षड्यंत्र का पता चला, तो उसे रोमी सैनिकों द्वारा नगर से बाहर सुरक्षित ले जाया गया (प्रेरितों के काम 23:12-24)। वह कैसरिया में दो वर्ष तक बन्दी बनकर रहा (प्रेरितों के काम 23:33-35)। एक और हत्या की साजिश से बचकर, अन्ततः पौलुस ने कैसर के पास अपील की (प्रेरितों के काम 25:1-11) और तब उसे रोम भेजा गया, जहाँ उसे झूठे आरोपों के कारण फिर से बन्दी बना दिया गया (प्रेरितों के काम 28:16)।

अब अंतिम बार कारागृह में रहते हुए, पौलुस ने इन सभी कष्टों को स्मरण किया और उन्हें कुछ शब्दों में संक्षेप में बताया—इसलिए नहीं कि वह उन पर ठहरकर विचार करना चाहता था, बल्कि इसलिए कि वह चाहता था कि तीमुथियुस भी सतावों को उसी प्रकार सहजता से सहन करना सीख लें।

(घ) उसकी विजय (3:11ख)

पौलुस ने तीमुथियुस को यह आश्वासन दिया, “परन्तु प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ा लिया।” यद्यपि वह बार-बार पीटा गया था और उसका शरीर उन कोड़ों के निशानों और घावों से भरा हुआ था जो उसने सहे थे (उसकी पीठ मानो उसके दुःख और पीड़ा का एक जीवित प्रमाण थी), फिर भी वह जीवित था। जब तक उसका कार्य पूरा नहीं हुआ, तब तक वह अपराजित बना रहा। परन्तु जैसे-जैसे वह प्रत्येक शब्द लिखता गया, वह अपने कार्य के अन्त के और साथ ही जल्लाद की कुल्हाड़ी के भी और निकट पहुँचता जा रहा था।

(2) पौलुस की चेतावनी (3:12-13)

(क) संसार की बड़ी घृणा (3:12)

अपने समय की परिस्थितियों को भली-भाँति पहचानते हुए, पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी, “पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।” शैतान की अंतिम दिनों की योजनाएँ कलीसिया के प्रारम्भिक इतिहास से ही शुरू हो गई थीं, और पौलुस जानता था कि वे आगे भी जारी रहेंगी। संसार ने हमारे प्रभु को जन्म लेने के लिए एक चरनी दी और मरने के लिए एक क्रूस दिया। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं कि सच्ची कलीसिया ने भी संसार से कष्ट ही पाए हैं। सभी प्रेरितों ने सताव सहे, और उनमें से अधिकतर शहीद भी हो गए। तीमुथियुस स्वयं भी पहले ही कष्ट का अनुभव कर चुका था (इब्रानियों 13:23)।

संसार के इस विरोध के प्रति यह जागरूकता हमारे आज के विश्राम-प्रिय कलीसियाई युग की सोच से बिल्कुल भिन्न है। कुछ प्रचारक अपने अनुयायियों को धन और अच्छे स्वास्थ्य का वायदा करते हैं, यदि वे उनकी शिक्षाओं को मानें और उनके कार्यों में सहभागी हों। ऐसे शिक्षक लोगों को सकारात्मक सोच की शक्ति सीखने के लिए प्रेरित करते हैं और यह आश्वासन देते हैं कि परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि हम बीमार, गरीब या दुखी हों। परन्तु यीशु की आवाज़ इन मीठी बातों को चीरते हुए स्पष्ट कहती है: “संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।” (यूहन्ना 16:33)।

(ख) संसार का बढ़ता पतन (3:13)

पौलुस ने अपनी चेतावनी को आगे बढ़ाते हुए कहा, “परन्तु दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे।” यहाँ “दुष्ट” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “बुराई करने में कष्ट उठाने वाला,” अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो सक्रिय रूप से दुष्टता में लगा ही रहता है और जिसका स्वभाव घोर और हानिकारक बुराई से भरा हुआ होता है। इसका संज्ञा रूप “उस दुष्ट” के लिए भी प्रयोग होता है, जो शैतान के लिए प्रयुक्त हुआ है (1 यूहन्ना 2:13)। “बहकाने वाले” के लिए प्रयुक्त शब्द नये नियम में केवल यहीं मिलता है। इसका मूल अर्थ है “विलाप करने वाला,” परन्तु पारम्परिक यूनानी में इसका अर्थ “जादूगर,” “धोखेबाज़” या “तंत्र-मंत्र करनेवाला” भी होता था।

पृथ्वी पर सदा ही ऐसे दुष्ट लोग रहे हैं जो प्रसव वेदना सहने वाली स्त्री की तरह परिश्रम करके बुराई को जन्म देते हैं। वे अपने पिता शैतान के समान झूठे और धोखेबाज़ होते हैं। पौलुस ऐसे ही लोगों की दुनिया में रहता था, और नीरो उनका प्रधान था। नैतिक दृष्टि से, तब से अब तक केवल एक छोटा सा कदम भर ही है—नीरो के संसार से आने वाले मसीह-विरोधी के संसार तक, और पौलुस के समय के दुष्ट लोगों और बहकाने वालों से हमारे समय के दुष्ट लोगों और बहकाने वालों तक।

बाइबल की भविष्यवाणियाँ प्रायः दोहरी पूर्तिकरण रखती हैं—एक आंशिक, प्रारंभिक पूर्ति उस समय जब वे दी जाती हैं, और एक बाद में, पूर्ण पूर्ति किसी दूर भविष्य में—आमतौर पर प्रभु के प्रथम और दूसरे आगमन से संबंधित होती है। अक्सर पवित्र आत्मा वर्तमान परिस्थितियों का उपयोग करके भविष्य की किसी स्थिति का दर्शन कराता है। तत्काल और स्थानीय परिस्थिति उसे अनुभव करने वालों के लिए वास्तविक होती है, परन्तु दर्शन में वह केवल बहुत बाद में होने वाली घटना का एक प्रकार या छाया मात्र होती है। यीशु के कुँवारी जन्म की भविष्यवाणी इसका एक उत्तम उदाहरण है (यशायाह 7:13-18; मत्ती 1:22-25)। यशायाह ने एक बच्चे के जन्म का उल्लेख करके राजा आहाज के दिनों में सीरो-एप्रैम की संधि के विघटन की भविष्यवाणी की, और पवित्र आत्मा ने उसी घटना का उपयोग उस कुँवारी जन्म की भविष्यवाणी करने के लिए किया, जो लगभग छह सौ वर्ष बाद पूरी हुई।

अन्तियोकुस एपीफेनेस के विषय में दानिय्येल की भविष्यवाणी एक अन्य उदाहरण है। उस सीरियाई राजा का दुष्ट शासन और यहूदियों के साथ उसका व्यवहार उस भविष्यवाणी की तत्काल पूर्ति थी। साथ ही, वह अन्तिम दिनों के मसीह-विरोधी के जीवन का एक प्रकार या छाया भी था (दानिय्येल 8:8-27; 11:21-45)। इस भविष्यवाणी की निकट, आंशिक और उदाहरणात्मक पूर्ति इतिहास में अन्तियोकुस के द्वारा हुई, और उसकी बाद की, अन्तिम दिनों में इसका पूर्ण पूर्तिकरण मसीह-विरोधी के द्वारा होगा।

जैसे यशायाह और दानियेल की भविष्यवाणियों का तत्काल और भविष्य की पूर्तिकरण था, वैसे ही “दुष्ट और बहकाने वाले” के विषय में पौलुस की बात भी दो समय-कालों पर लागू होती थी। यह उसके समय के मूर्तिपूजक रोमी संसार के नैतिक पतन और निरन्तर गिरावट का एक स्पष्ट वर्णन था, और साथ ही यह अन्तिम दिनों में संसार की नैतिक भ्रष्टता की एक भविष्यवाणी भी थी।

हमारे युग का बढ़ता हुआ नैतिक पतन भविष्यवाणी का पूर्तिकरण है और यह संसार को मसीह-विरोधी के आने के लिए तैयार कर रहा है (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)। पौलुस द्वारा वर्णित दुष्ट लोग हमारे समाज की ऐतिहासिक यहूदी-मसीही नींव को कमजोर करने में लगे हुए हैं। अश्लीलता और विकृति को अधिक से अधिक लोग स्वीकार कर रहे हैं। भ्रष्टता और हिंसा को सहन किया जा रहा है, और बहुत से अपराध बिना दण्ड के यहीं छोड़े जा रहे हैं। परिवार के मूल्य “बिना-दोष” तलाक, अधार्मिकता के बढ़ावे और गर्भपात के प्रचार के कारण लगातार कमजोर हो रहे हैं।

शिक्षा प्रणाली अनेक प्रकार से विफल हो रही है। विद्यालयों का उपयोग उग्र सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में किया जा रहा है, और उनमें से कुछ हिंसा और नशे की लत के अड्डे बन गए हैं। घोटालों से घिरी हुई कलीसिया अपनी आवाज़ और विश्वसनीयता खोती जा रही है। राजनेताओं को प्रायः स्वार्थी अवसरवादी के रूप में तुच्छ समझा जाता है। न्यायालय, मीडिया और विद्यालय बड़े पैमाने पर ऐसे लोगों के प्रभाव में हैं जो उदारवादी, स्वतंत्रतावादी और धर्मनिरपेक्ष मानववादी विचारधारा रखते हैं और मसीही विश्वास का विरोध करते हैं। स्त्री-समानतावाद का प्रभाव भी बढ़ रहा है, जो बाइबल-विरोधी विचारों को बढ़ावा देता है। “न्यू एज” आंदोलन के नाम पर शैतानवाद और गुप्त समाज पश्चिमी संसार की आत्मा को धीरे-धीरे खोखला कर रहे हैं।

सार्वजनिक विद्यालयों में बाइबल और प्रार्थना पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। घृणित और लाइलाज बीमारियाँ तेजी से फैल रही हैं, जबकि सरकारें और स्वास्थ्य अधिकारी उन नई बीमारियों की वास्तविक गंभीरता को छिपाने के लिए केवल खोखली बातें करते हैं, जिन्हें वे नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। अन्यजातीय जीवन-शैलियों को मान्यता दी जा रही है और अक्सर उनकी सराहना भी की जाती है। वास्तव में, संसार “पाप के पुरुष” के आगमन के लिए तैयार हो रहा है। दुष्ट लोग और धोखेबाज़ सचमुच और भी बुरे होते जा रहे हैं। तो फिर, एक मसीही को क्या करना चाहिए?

घ. अंतिम दिनों के लिए संदेश (3:14-17)

(1) प्रोत्साहन का एक वचन (3:14-15)

(क) संकल्प (3:14)

i. पवित्रशास्त्र में निरन्तरता का आग्रह (3:14क)

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई चुनौती ही पवित्र आत्मा द्वारा हमें भी दी गई चुनौती है: “पर तू उन बातों पर जो तू ने सीखी हैं...दृढ़ बना रह।” अर्थात्, हमें अपनी बाइबल को दृढ़ता से थामे रहना है। जब पुराने चिन्ह हटा दिए जाएँ, जब चारों ओर सड़न और पतन फैल जाए, और “जब शत्रु बाढ़ की तरह आए” (यशायाह 59:19), तब बाइबल ही एकमात्र सुरक्षित लंगर है। संसार के मार्ग दिखाने वाले चिन्ह आँधी में

उड़ जाएंगे। मानव मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र अनिश्चितताओं से भरे हुए हैं। केवल परमेश्वर का वचन ही आधिकारिक, अनन्त और अपरिवर्तनीय है।

पौलुस ने आग्रह किया, "दृढ़ बना रह।" इस शब्द का अर्थ है "ठहरे रहना, निवास करना, स्थिर रहना।" (यह नये नियम में सौ से अधिक बार और प्रेरित यूहन्ना की रचनाओं में पचास से अधिक बार आता है।) तीमुथियुस को परमेश्वर के वचन में बने रहना था—उसी में अपना निवास बनाना था। यह उसके समय के हवा में उड़ने वाले विधर्मों से सुरक्षित शरण था और संसार की घृणा की आँधी में बह जाने के भय से एक सुरक्षित आश्रय था।

ii. पवित्रशास्त्र पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया (3:14ख)

पौलुस ने अपनी चुनौती को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा: "तू उन बातों पर जो तू ने सीखी हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है।" यहाँ प्रयुक्त शब्द का तात्पर्य है अध्ययन, निरीक्षण और प्रश्न पूछने के द्वारा अपने ज्ञान को बढ़ाना।

तीमुथियुस जानता था कि उसने अपनी बाइबल सर्वोत्तम शिक्षकों से सीखी है। पौलुस उसका सबसे महान और प्रतिभाशाली शिक्षक था। पौलुस जैसे व्यक्ति के साथ साधारण बातचीत भी शिक्षा देने वाली होती थी। निस्संदेह, पौलुस और तीमुथियुस के बीच लंबे और रोचक संवाद हुए होंगे। पौलुस ने उसे अवश्य बताया होगा कि कैसे वह एक समय प्रसिद्ध यहूदी विद्वान गमलीएल के अधीन रहकर रब्बी बनने का अध्ययन कर रहा था। उसने यहूदी धर्म का अनुसरण किया, परन्तु उसे उसमें कभी संतोष नहीं मिला। और निश्चय ही, पौलुस ने उसे यह भी बताया होगा कि कैसे जीवित मसीह में विश्वास करने के बाद उसने कई वर्ष जंगल में बिताए, जहाँ उसने कलवरी के प्रकाश में पुराने नियम का पुनः अध्ययन किया।

संभवतः समय-समय पर प्रेरित पौलुस तीमुथियुस के सामने विचार करने के लिए प्रश्न रखता होगा, या किसी उपदेश की व्याख्या करता होगा, या किसी झूठी शिक्षा की मूल त्रुटि को उजागर करता होगा। शायद उसने उसे कुछ इब्रानी भी सिखाई हो और यह समझाया हो कि वह एक प्रसंग में एक विशेष यूनानी शब्द क्यों उपयोग करता है और दूसरे प्रसंग में कोई दूसरा। निस्संदेह, उसने अपने गहरे ज्ञान और समझ के द्वारा तीमुथियुस के पुराने नियम के इतिहास, काव्य और भविष्यवाणियों के ज्ञान को और भी समृद्ध किया होगा।

हाँ, तीमुथियुस को सर्वोत्तम शिक्षकों की आशीष मिली थी, परन्तु उसे "दृढ़ रहना" आवश्यक था। व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के द्वारा उसे अभी बहुत सा क्षेत्र जीतना बाकी था।

(ख) स्मरण (3:15)

फिर पौलुस ने तीमुथियुस का ध्यान उसकी बाइबल और उसके बचपन की ओर दिलाया: "और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।"

तीमुथियुस का पिता एक यूनानी था (प्रेरितों के काम 16:1)। सम्भव है कि उसने अपने छोटे बेटे को यूनान की महानता और उसके देवताओं की कहानियाँ सुनाई हों और बताया हो कि उनका निवास ओलम्पस पर्वत पर है। वहाँ ज़्यूस जैसे देवता रहते थे, जो देवताओं का पिता माना जाता था; हर्मीस, जो देवताओं का

दूत था; और नेपट्यून जो समुद्र का देवता था। परन्तु तीमुथियुस की माता ने उसे सिखाया कि यूनानी पौराणिक कथाओं के ये काल्पनिक अधर्मी, और वासनाओं से भरे देवता वास्तव में मनुष्य के पतित स्वरूप के अनुसार गढ़े गए काल्पनिक देवता मात्र ही हैं।

तीमुथियुस के पिता ने सम्भवतः उसे होमर की कहानियाँ सुनाई होंगी—यूलिसीस, ट्रॉय की हेलेन, सर्के, साइक्लोप्स, सायरन, मेडुसा और मिनोटौर की—ऐसी “एक समय की बात है” वाली कहानियाँ, जो रोमांच, उत्साह और कठिन परिस्थितियों से बच निकलने की घटनाओं से भरी होती थीं। उसने उसे इतिहास की बातें भी बताई होंगी—मकदूनिया के फिलिप और सिकन्दर की, थर्मोपाइली और सालामिस की लड़ाइयों की, स्पार्टनो और फारस के साथ हुए युद्धों की; एथेंस और मार्स हिल की; यूनान के स्वर्णिम युग की; और प्लेटो, पाइथागोरस, अरस्तू, आर्किमिडीज़ और हेरोडोटस जैसे महान व्यक्तियों की भी। और नन्हा तीमुथियुस निस्संदेह आश्चर्य से भरी आँखों के साथ इन सब कथाओं को सुनता होगा।

परन्तु तीमुथियुस की माता और नानी यहूदी थे, और उनके पास उसे सुनाने के लिए अन्य कथाएँ थीं। उन्होंने तीमुथियुस को आदम और हव्वा की; कैन और हाबिल की; अब्राहम, इसहाक और याकूब की; दाऊद और गोलियत की; शिमशोन और दलीला की; मूसा और फिरौन की; तथा यूसुफ, योनातान, यिर्मयाह, योना और अय्यूब की कहानियाँ सुनाई। यही वे कथाएँ थीं जिन्होंने तीमुथियुस के मन और हृदय को गहराई से प्रभावित किया।

आखिर ओलम्पस पर्वत की तुलना मोरियाह पर्वत, सीनै पर्वत या सियोन पर्वत से क्या थी? हरक्यूलिस की शिमशोन से क्या तुलना थी? यूनान के देवताओं की तुलना यहूदियों के एलोहीम-यहोवा-अदोनाय से क्या थी? जब किसी के पास दैवीय प्रकाशन हो सकता है, तो वह केवल मानवीय तर्क से क्यों संतुष्ट हो? इसलिए युवा तीमुथियुस का हृदय पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ गया। उसकी आत्मा के लिए हुए इस संघर्ष में यूनानी धर्म की काल्पनिक कहानियाँ पवित्रशास्त्र के सत्य के सामने हार गईं। यूनानी दार्शनिकों का भी यही परिणाम हुआ।

“बचपन से” तीमुथियुस परमेश्वर के वचन में जड़ पकड़ चुका था और स्थिर हो गया था। यहाँ “बचपन” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “ब्रेफोस” है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “गर्भस्थ शिशु” या “नवजात बच्चा।” अर्थात्, तीमुथियुस ने अपनी माता के दूध के साथ ही पवित्रशास्त्र को ग्रहण कर लिया था। उसकी माँ की लोरियाँ भजन संहिता के गीत हुआ करते थे। घर में जो गीत गाए जाते थे, वे इब्रानी भजन थे। उसने उसे बाइबल से पढ़ना सिखाया और यह भी सिखाया कि जीवन के हर विषय में बाइबल ही सर्वोच्च और अंतिम अधिकार है। और जब उसकी माँ उसे नहीं सिखाती थी, तब उसकी नानी सिखाती थी। तीमुथियुस का पिता अवश्य ही बहुत सहनशील रहा होगा, या सम्भव है कि वह तब ही मर गया हो जब तीमुथियुस अभी छोटा ही था।

बचपन से ही, तीमुथियुस मूसा की सरकंडों के बीच की कहानी, जलती हुई झाड़ी के पास मूसा, शेरों की मांद में दानिय्येल और कर्मेल पर्वत पर एलियाह के बारे में जानता था। उसे मूसा की व्यवस्था और परमेश्वर की धार्मिक माँगों के विषय में सिखाया गया; नैतिक व्यवस्था और रीति-रिवाजों संबंधी व्यवस्था के विषय में; बलिदानों, भेंटों, तम्बू (मिलापवाले तम्बू) और मन्दिर के विषय में; तथा इब्रानी इतिहास के बारे में—अब्राहम से लेकर परमेश्वरतंत्र, फिर राजतंत्र, फिर अधीनता और अंततः यहूदियों के विश्वव्यापी बिखराव

तक सब कुछ। तीमुथियुस ने भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को पढ़ा और आने वाले मसीह के विषय में इब्रानी आशा को सही तरह से समझ लिया था।

तीमुथियुस “पवित्रशास्त्र” को भली-भाँति जानता था। 2 तीमुथियुस 3:15 में “पवित्रशास्त्र” के लिए प्रयुक्त मूल यूनानी शब्द “ग्राम्मा” का बहुवचन है, जिसका अर्थ है “अक्षर” या “वर्णमाला के अक्षर।” अर्थात्, तीमुथियुस ने न केवल अपने अक्षर-ज्ञान (कखग) पवित्रशास्त्र से सीखा, बल्कि वह एक शिक्षित व्यक्ति भी था, जैसा कि हम आज कहते हैं। प्रभु यीशु के विषय में भी यही सत्य था। लोग उसके अधिकार भरे उपदेश को सुनकर चकित होते थे और कहते थे, “इसे बिन पढ़े विद्या [ग्राम्मा] कैसे आ गई?” (यूहन्ना 7:15)। वास्तव में, यह कहीं अधिक उत्तम है कि कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र में “शिक्षित” हो, बजाय इसके कि उसके नाम के साथ बड़े-बड़े प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की डिग्रियों की लंबी सूची जुड़ी हो, परन्तु उसे बाइबल का ज्ञान न हो।

जब पौलुस अपने नगर में आया, तब तक तीमुथियुस का हृदय और मन अच्छी तरह तैयार हो चुके थे। उसने तुरंत “मसीह यीशु पर विश्वास करने से उद्धार” के संदेश को ग्रहण कर लिया। इसके बाद पौलुस न केवल उसका आत्मिक पिता बना, बल्कि उसका मार्गदर्शक भी बन गया। पौलुस की शिक्षा के अधीन तीमुथियुस का ज्ञान उसकी भक्त माता और नानी द्वारा दी गई शिक्षा से भी कहीं अधिक आगे बढ़ गया।

अब वह अपने प्रिय शिक्षक को खोने वाला था। इसलिए पौलुस ने परमेश्वर के वचन में उसकी गहरी जड़ों की याद दिलाकर उसके संकल्प को दृढ़ करने का प्रयास जारी रखा। जिसे बहुत कुछ दिया गया है, उससे बहुत कुछ अपेक्षा भी की जाती है।

(2) स्पष्टीकरण का एक वचन (3:16-17)

(क) बाइबल और उसकी प्रेरणा (3:16क)

पौलुस ने पवित्रशास्त्र के विषय में महत्वपूर्ण बातें कहना जारी रखा। सबसे पहले उसने बाइबल की प्रेरणा के विषय में लिखा: “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।” यहाँ “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र” वाक्यांश लिखित पवित्रशास्त्र की ओर संकेत करता है। इस संदर्भ में इसका उल्लेख पुराने नियम के उन ग्रन्थों से है जिन्हें यहूदी अधिकृत (विधान-कृत) मानते थे, और नये नियम की उन रचनाओं से भी है जिन्हें मसीही बाद में अधिकारपूर्ण और प्रमाणित मानेंगे। ये ग्रन्थ अपोकलिप्सा तथा अन्य जाली पत्रियों और धार्मिक लेखों से भिन्न हैं, जो स्वीकृति पाने के लिए व्यर्थ प्रयास करते रहे।

पवित्रशास्त्र को “रचा गया” कहने का अर्थ यह है कि तथाकथित यहूदी मौखिक व्यवस्था को एक बार के लिए पूरी तरह अस्वीकार कर दिया गया। यह मौखिक व्यवस्था मनुष्यों की व्यर्थ परम्पराओं से बनी थी, जिन्हें रब्बी बहुत मानते थे। पौलुस स्वयं इन परम्पराओं में प्रशिक्षित था और जानता था कि उनका कोई वास्तविक औचित्य नहीं है। स्वयं प्रभु यीशु ने भी उन्हें अस्वीकार किया और उनकी निन्दा की (मत्ती 15; मरकुस 7)।

पौलुस का 2 तीमुथियुस 3:16 में दिया गया कथन स्पष्ट है: “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।” फिर भी आज बाइबल के अनेक आधुनिक अनुवाद इस प्रकार कहते हैं: “हर वह पवित्रशास्त्र जो

परमेश्वर की प्रेरणा से है।” यह आधुनिक अनुवाद पौलुस के कथन की शक्ति को कम कर देता है। फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया की इवेंजेलिकल फाउंडेशन, इंक. के डॉ. राल्फ कैपर ने इस विषय पर 1964 में शिकागो के मूडी बाइबल इंस्टिट्यूट में आयोजित फाउंडर्स वीक सम्मेलन में चर्चा करते हुए कहा,

‘यदि आप कुछ अन्य अनुवादों से परिचित हैं, तो आप समझ जाएंगे कि वे अधिकृत संस्करण से भिन्न हैं। कुछ में लिखा है: “प्रत्येक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।” इससे तुरंत यह प्रश्न उठा, क्या यह दर्शाता है कि कुछ पवित्रशास्त्र प्रेरित हैं और कुछ नहीं? अनुवाद में यह अंतर क्यों है? यह ध्यान देने योग्य है कि संशोधित मानक संस्करण, अधिकृत संस्करण की सच्चाई को पुनर्स्थापित करता है। जो लोग यूनानी पाठ से परिचित हैं, वे समझ पाएंगे कि अंग्रेज़ी पाठ में किस प्रकार अस्पष्टता है। यूनानी में यह इस प्रकार लिखा है: “हर पवित्रशास्त्र परमेश्वर-प्रेरित है।”

कठिनाई सबसे पहले “पवित्रशास्त्र” शब्द के प्रयोग में है। जैसा कि आप जानते हैं, अंग्रेज़ी में कुछ संज्ञाएँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं। कुछ संज्ञाएँ एकवचन होती हैं, जैसे घर, नाव, घोड़ा। दूसरी ओर, कुछ संज्ञाएँ समूहबोधक होती हैं, जैसे मछली या फल। कभी हम फल कहते हैं, कभी बहुत सारे फल, पर अर्थ वही रहता है। “पवित्रशास्त्र” भी ऐसा ही शब्द है। यहाँ इसे समूहबोधक अर्थ में प्रयोग किया गया है।

थोड़ा तकनीकी दृष्टि से देखें तो, यदि यहाँ कोई वर्तमान क्रिया-विशेषण रूप में विशेषण का प्रयोग होता, तो अमेरिकी अनुवाद “हर पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है” सही हो सकता था। और स्वाभाविक रूप से हमारे मन में यह प्रश्न उठता कि क्या सभी शास्त्र प्रेरित हैं या नहीं। पर यूनानी बहुत स्पष्ट है। इसमें किसी क्रियाविशेषण का प्रयोग नहीं किया गया है, न ही विशेषण को किसी विशेष स्थिति में रखा गया है। यह शाब्दिक रूप से कहता है: “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र प्रेरित है” या तकनीकी दृष्टि से कहें तो, “हर पवित्रशास्त्र परमेश्वर द्वारा प्रेरित है।”

“प्रेरणा” शब्द भी बहुत रोचक है क्योंकि यह यूनानी शब्द थीओप्नेस्टोस से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - परमेश्वर-श्वासित। “थियोस” का अर्थ है परमेश्वर और “प्नेउ” का अर्थ है सांस या श्वास लेना। उदाहरण के लिए, यह शब्द “वायुयंत्र” वाले टायर और ड्रिल में भी आता है। इस प्रकार, इसका शाब्दिक अर्थ है: “सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-श्वासित है।”

2 पतरस 1:21 में हम पाते हैं कि उस श्वास का माध्यम जिसने वचन को प्रेरित किया, कोई और नहीं बल्कि स्वयं पवित्र आत्मा है। “क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।” यहाँ पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि मूल विचारों और मूल शब्दों के संदर्भ में मानव पहल का कोई भाग नहीं था: “क्योंकि भविष्यद्वाणी कभी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई।” फिर से यूनानी शब्द का संदर्भ लें। अंग्रेज़ी पाठ में प्रयुक्त “हुई” और “उभारे जाकर” के लिए वही यूनानी शब्द हैं। यदि मैं इसे लगातार अनुवाद करूँ तो हम इसे इस प्रकार पढ़ सकते हैं: “क्योंकि भविष्यद्वाणी पुराने समय में मनुष्यों की इच्छा से नहीं गई; वे केवल माध्यम या साधन थे; वे परमेश्वर के वचन के सृजनकर्ता नहीं थे, बल्कि उपकरण थे।” सृजनकर्ता, यदि आप चाहें तो, कोई और नहीं बल्कि पवित्र आत्मा है।

“क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे - न कि सोचकर।” इसका एक बहुत रोचक उदाहरण हमें प्रेरितों के काम 1:16 में मिलता है। पतरस कहता है: “हे भाइयो, अवश्य था कि पवित्रशास्त्र का वह लेख पूरा हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में, जो यीशु के पकड़नेवालों का अगुवा था, पहले से कहा था।” प्रेरणा की विधि इस वाक्यांश में स्पष्ट होती है: “जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से...पहले से कहा था,” यह इंगित करता है कि दाऊद का मुख पवित्र आत्मा के सत्य को घोषित करने का उपकरण था।

इस प्रकार परमेश्वर का वचन परमेश्वर-श्वासित है। जैसे वायु-संचालित झिल हवा से चलने वाली, हवा द्वारा संचालित और हवा से सक्रिय होती है, वैसे ही पवित्रशास्त्र परमेश्वर-श्वासित, परमेश्वर-प्रेरित, परमेश्वर-समर्थित और परमेश्वर-सक्रिय है। शाब्दिक अर्थ में यह “परमेश्वर द्वारा भीतर से श्वासित” है। जैसे परमेश्वर ने आदम के शरीर में जीवन का श्वास फूँका (उत्पत्ति 2:7), वैसे ही उसने पवित्रशास्त्र के शब्दों में अपना दैवीय जीवन फूँका—केवल कुछ पवित्रशास्त्र नहीं, बल्कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र। “पस ग्राफे” का अर्थ है एक एकीकृत सम्पूर्ण। हर शब्द—हर बिंदु और छोटे चिन्ह तक (मत्ती 5:18)—प्रेरणा से रचे गए हैं। यही हम कहते हैं जब हम पवित्रशास्त्र की पूर्ण, शाब्दिक प्रेरणा की बात करते हैं। यह सब शाब्दिक रूप से प्रेरित है; यह सब दैवीय रूप से प्रेरित है।

इस महत्वपूर्ण विषय पर और भी कहा जा सकता है। 2 तीमुथियुस 3:16 का अनुवाद संशोधित संस्करण और कई अन्य आधुनिक अनुवादों में (जैसा कि एल्फोर्ड, इस अनुवाद का समर्थक, स्वीकार करते हैं) अजीब, कठोर और पूरे नये नियम में किसी भी समान प्रयोग का समर्थन न करने वाला है। किंग जेम्स का अनुवाद सरल, सटीक और उच्चकोटि का है। इसके अतिरिक्त, यह अपने संदर्भ के साथ पूर्ण तालमेल में है। 3:15 में, पौलुस ने पवित्रशास्त्र की स्तुति की थी कि यह व्यक्ति को “उद्धार के लिए बुद्धिमान” बना सकती है; 3:17 में उसने दिखाया कि पवित्रशास्त्र “परमेश्वर के मनुष्य” के जीवन में कितना प्रभावशाली है।

(ख) बाइबल और उसकी जानकारी (3:16ख)

पौलुस ने बाइबल के बारे में अगला कथन यह है कि यह “उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है।” परमेश्वर का वचन एक व्यावहारिक दस्तावेज़ है। यह हमें वहीं मिलता है जहाँ हम हैं और हमें बताता है कि क्या करना है। यह व्यावहारिक ग्रन्थ हमारे दैनिक जीवन की वास्तविकताओं से निपटने में हमारी मदद करने के लिए बनाया गया है।

3:16 में “लाभदायक” शब्द का अर्थ “उपयोगी” है। “उपदेश” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द है दिदास्कालिया, जो दर्शाता है कि बाइबल का कार्य शिक्षा देना है। दिदास्कालिया, जो मुख्यतः पौलुस का शब्द है, पास्टरीय पत्रियों में पंद्रह बार आता है। “सुधारने” के लिए प्रयुक्त मूल शब्द है एलेन्कोस, जो दर्शाता है कि परमेश्वर के वचन में किसी को दोषी ठहराने की शक्ति है। बाइबल वह साधन है जिसका प्रयोग पवित्र आत्मा हमारे विवेक को जागृत करने के लिए करता है। यह हमें डाँटता है। “सुधार” के लिए प्रयुक्त शब्द केवल यहाँ नये नियम में आता है और किसी व्यक्ति के जीवन के पुनर्निर्देशन से सम्बन्धित है। इसका शाब्दिक अर्थ है “सच्ची अवस्था में पुनर्स्थापन करना।”

पौलुस की पत्रियाँ कलीसियों को परमेश्वर के वचन के इन “लाभप्रद” कार्यों का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। रोमियो, इफिसियों और थिस्सलुनीकियों की कलीसियों को लिखी गई ये पत्रियाँ प्रमुख पत्रियाँ हैं। ये तीनों पत्रियाँ उपदेश से सम्बन्धित हैं। रोमियों की पत्री मसीह के क्रूस के उपदेश से सम्बन्धित है, इफिसियों की पत्री मसीह की कलीसिया के उपदेश से सम्बन्धित है, और पहली और दूसरी थिस्सलुनीकियों की पत्रियाँ मसीह के आगमन के उपदेश से सम्बन्धित हैं।

रोमियों के बाद 1 और 2 कुरिन्थियों की पत्रियाँ आती हैं, जो समझाने से संबंधित हैं। पौलुस ने कुरिन्थुस के विश्वासियों को फटकार लगाई क्योंकि वे रोमियों को लिखे पत्रियों की व्यावहारिक शिक्षाओं के अनुसार नहीं जी रहे थे। कुरिन्थियों ने क्रूस की शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू नहीं किया, बल्कि वे इसमें असफल रहे।

कुरिन्थियों की पत्रियों के बाद गलातियों की पुस्तक आती है, जो सुधार से सम्बन्धित है। पौलुस ने गलातियों के विश्वासियों को सुधारने का कार्य किया क्योंकि वे रोम की पत्री जे उपदेशात्मक शिक्षा में प्रवेश नहीं कर रहे थे। गलातियों ने क्रूस की सरल शिक्षा से हटकर “और ही प्रकार के सुसमाचार” की ओर बढ़ना शुरू कर दिया था (गलातियों 1:6)।

रोमियों की तरह, इफिसियों की पत्री के बाद एक पत्री आती है जो सुधार से सम्बन्धित है: फिलिप्पियों के लिए लिखी गई पत्री। इसमें पौलुस ने यूओदिया और सुन्तुखे को डाँटा, जिनकी झगड़े ने व्यावहारिक रूप से इफिसियों की पत्री में मसीह के शरीर की एकता के विषय में दी गई शिक्षा को नष्ट कर दिया था।

इस क्रम का पालन करते हुए, फिलिप्पियों की पत्री के बाद कुलुस्सियों की पत्री आती है, जो सुधार से सम्बन्धित है। पौलुस ने कुलुस्सियों को सुधारने का कार्य किया क्योंकि वे इफिसियों की पत्री की शिक्षा से उपदेशात्मक रूप से भटक रहे थे। कुलुस्से में एक खतरनाक संप्रदाय उभर आया था, जिसने मसीह की प्रधानता और प्रभुत्व पर हमला किया था।

इस क्रम के अनुसार, थिस्सलुनीकियों के लिए लिखी गई उपदेशात्मक पत्रियाँ आती हैं, परन्तु इनके बाद समझाने और सुधार की पत्रियाँ नहीं आतीं। हालांकि इन्हें सम्भवतः सबसे पहले लिखा गया था, थिस्सलुनीकियों की पत्रियाँ नये नियम में कलीसिया की पत्रियों में अंतिम हैं। इन पत्रियों में सभी सत्य अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है, क्योंकि मसीह के दूसरे आगमन से बढ़कर कोई अन्य सत्य सिखाया नहीं जा सकता। जो लोग रोमियों की पत्रियों में मरे हुए और जी उठे हुए के रूप में देखे जाते हैं और इफिसियों की पत्री में जिन्हें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए दिखाया गया है, वही थिस्सलुनीकियों की पत्री में मसीह के साथ उठा लिए गए के रूप में दिखाई देते हैं। रोमियों की पत्री में, हमें मसीह में धर्मी ठहराया गया है; इफिसियों की पत्री में, हमें मसीह में पवित्र ठहराया गया है; और थिस्सलुनीकियों में, हमें मसीह के साथ महिमावंत दिखाया गया है। एक बार जब हम स्वर्ग में होंगे, तो हमें किसी भी तरह से समझाने और सुधारने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।[10]

(ग) बाइबल और उसकी शिक्षा (3:16ग)

पौलुस ने आगे कहा कि पवित्र शास्त्र “धार्मिकता की शिक्षा” के लिए लाभदायक है। “शिक्षा” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “पैदिया” है, जिसका अर्थ बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण, या हृदय और मन के विकास

से है। जब इसे परमेश्वर के वचन के साथ जोड़ा जाता है, तो पैदिया में ताड़ना (अनुशासन) का भाव भी शामिल होता है। इसलिए “शिक्षा” का अर्थ मसीही अनुशासन और मसीही चरित्र का विकास है। पवित्र आत्मा बाइबल के द्वारा हमें धार्मिकता में प्रशिक्षित करता है। वह हमें आज्ञा देता है, हमें दोषी ठहराता है, सुधारता है और सलाह देता है। वह हमें संयमित करता है, हमारी सराहना करता है और हमें सांत्वना देता है।

(घ) बाइबल और उसका उद्देश्य (3:17)

पौलुस यहाँ पर बाइबल के विषय में एक और बात कहता है। उसने इसके उद्देश्य के बारे में लिखा: “ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।” परमेश्वर केवल इस बात से संतुष्ट नहीं है कि हम बाइबल को जानें; वह चाहता है कि हम उसके सत्यों को अपने जीवन में उतारें भी। जैसे प्रभु यीशु जो स्वयं “वचन देहधारी हुआ” (यूहन्ना 1:14), उसी प्रकार हमें भी जीवित पत्रियाँ होना चाहिए, जो “सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते हैं।” (2 कुरिन्थियों 3:2)।

पौलुस ने 1 तीमुथियुस 6:11 में तीमुथियुस को “परमेश्वर का जन” कहा था। अब वह उसे स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर का जन होने का अर्थ है अपने दैनिक जीवन में पवित्रशास्त्र के अनुसार जीवन जीना। लक्ष्य है “सिद्ध [आर्टियोस]” होना। यूनानी शब्द का अर्थ है “पूर्ण, उपयुक्त रूप से तैयार किया हुआ।” परमेश्वर का वचन हमें पूरी तरह योग्य बनाता है, जैसे उसने तीमुथियुस को बनाया, ताकि हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकें। पवित्र शास्त्र हमें “हर एक भले काम के लिए तत्पर” बनाता है। इस यूनानी शब्द का तात्पर्य “पूरी तरह से तैयार किया हुआ” भी हो सकता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि पवित्र शास्त्र हमें एक पूर्ण साजो-समान प्रदान करता है, जिसमें वह सब कुछ सम्मिलित है जिसकी हमें आवश्यकता है, ताकि हम ऐसे जीवन जी सकें जो भले कामों से परिपूर्ण हों। बाइबल, जीवते परमेश्वर का जीवित वचन, हमें प्रकाश देता है और हमें सामर्थ्य देता है। वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है और हमें इस परदेशी संसार में परमेश्वर की इच्छा और कार्य को पूरा करने के लिए सामर्थ्य प्रदान करता है।

ड. अंतिम दिनों का मनुष्य (4:1-5)

जैसे-जैसे पौलुस अपनी पत्नी को आगे बढ़ाता गया, जल्लाद की कुल्हाड़ी की छाया और लंबी तथा अधिक गहरी होती गई। पृथ्वी पर प्रेरित पौलुस का कार्य लगभग समाप्त हो चुका था। उसकी व्यस्त लेखनी शीघ्र ही सदा के लिए शांत होने वाली थी। अब उसके लिए केवल यही शेष रह गया था कि वह अपने युवा सहकर्मी को गंभीर आज्ञा दे और उसे चुनौती दे। 2 तीमुथियुस अध्याय 4 में, हम पौलुस के शब्दों में एक नई तात्कालिकता को अनुभव करते हैं। वह तीमुथियुस के हृदय को दृढ़ता से पकड़कर उसे हर दिशा से प्रेरित और उत्साहित कर रहा था।

(1) तीमुथियुस को आदेश (4:1-4)

(क) गवाह (4:1)

तीमुथियुस को अपनी अंतिम आज्ञा देते समय, पौलुस ने दो गवाहों को बुलाया—जीवते परमेश्वर और मसीह यीशु। उसने लिखा, “परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुएों का न्याय करेगा,

और उसके प्रकट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ।” जिस शब्द का अनुवाद “आदेश देता हूँ” किया गया है, वह “डायमार्तुरोमई” है, और यह बहुत ही प्रबल शब्द है; इसलिए इस पद की शुरुआत इस प्रकार भी की जा सकती है: “मैं तुझे गंभीरता से आदेश देता हूँ!” जिस शब्द का अनुवाद “सामने” किया गया है, वह एक संयुक्त शब्द है, जिसके केंद्र में यूनानी भाषा का “आँख” के लिए प्रयोग होने वाला शब्द है। पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग इसलिए किया ताकि तीमुथियुस यह समझे कि यह आज्ञा जीवित परमेश्वर और प्रभु मसीह की उपस्थिति और उनकी दृष्टि में दी जा रही है।

किसी मानवीय न्यायालय में लाया जाना और शपथ दिलाया जाना एक गंभीर बात है। परन्तु तीमुथियुस को तो सारे ब्रह्मांड के सर्वोच्च न्यायालय के सामने आज्ञा दी गई थी; उसे यह बताया गया कि इस कार्यवाही को परमेश्वर स्वयं ध्यानपूर्वक देख रहा है, और उसे स्मरण कराया गया कि आने वाले दिनों में उसे प्रभु यीशु मसीह के सामने अपना लेखा देना होगा। पौलुस ने इन दैवीय गवाहों का उल्लेख इसलिए किया, क्योंकि वह तीमुथियुस के हृदय, मन, इच्छा और विवेक पर इस आज्ञा के महत्व को गहराई से अंकित करने के लिए इससे बेहतर कोई तरीका नहीं सोच सकता था। प्रेरित ने अपने शब्दों में और अधिक गंभीरता जोड़ने के लिए मसीह की पूर्ण उपाधि का प्रयोग किया।

तीमुथियुस को प्रभु के पुनः आगमन—उसके “प्रकट होने” (एपिफानेइया)—को ध्यान में रखना आवश्यक था। इस यूनानी शब्द के क्रिया रूप में इसका अर्थ है, “प्रकाशित होना, प्रकट होना, दिखाई देना।” यहाँ “एपिफानेइया” उस समय को दर्शाता है जब प्रभु महाक्लेश के अंत में पाप के पुरुष का नाश करने के लिए आएगा। “तब वह अधर्मी (पुरुष) प्रकट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज (एपिफानेइया) से भस्म करेगा” (2 थिस्सलुनीकियों 2:8)।

उस आगमन से पहले कलीसिया का उठा लिया जाना “पैरोसिया” के समय हो चुका होगा (1 कुरिन्थियों 15:23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17)। जब अंतिम समय की घटनाएँ पृथ्वी पर अपने चरम पर पहुँचेंगी, तब कलीसियाई युग के विश्वासी मसीह के न्याय आसन के सामने उपस्थित होंगे (रोमियों 14:10), ताकि उनकी विश्वासयोग्यता के अनुसार उन्हें डाँटा जाए या प्रतिफल दिया जाए (1 कुरिन्थियों 3:12-15)। इस न्याय का एक उद्देश्य यह होगा कि प्रत्येक विश्वासी के जीवन और सेवा का मूल्यांकन किया जाए और उसे सहस्राब्दी राज्य में उसका उचित स्थान दिया जाए (मत्ती 25:14-30)। जब यह न्याय पूरा हो जाएगा, तब परमेश्वर के लहू से छुड़ाए हुए पवित्र जन मसीह के साथ पृथ्वी पर उसके महिमामय प्रकट होने में सहभागी होने के लिए लौट आएं। पवित्र और व्यवहारिक मसीही जीवन जीने के लिए यह कितना शक्तिशाली प्रेरणा का कारण है! 2 तीमुथियुस 4:1 में “प्रकट होने” का उल्लेख करके, पौलुस ने अपने युवा सहकर्मी को इन अन्य बातों की याद दिलाई, जो “एपिफानेइया” से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। तीमुथियुस इन बातों को समझता था, क्योंकि वह पौलुस की अंतिम दिनों संबंधी शिक्षा से भली-भाँति परिचित था (3:10)।

प्रभु के पुनः आगमन के साथ उसका राज्य भी घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। यहाँ उसका “राज्य” पृथ्वी पर उसके सहस्राब्दी राज्य को दर्शाता है, जो पुराने नियम की अनेक उज्ज्वल भविष्यवाणियों का विषय है। सभी विश्वासी मसीह के साथ राज्य नहीं करेंगे। हमारे व्यक्तिगत सेवा के क्षेत्र यहाँ और अभी पवित्र आत्मा के साथ हमारे सहयोग, या उसके अभाव के द्वारा निर्धारित हो रहे हैं। यह तथ्य भी पवित्र और व्यवहारिक मसीही जीवन जीने के लिए एक और शक्तिशाली प्रेरणा है।

(ख) कार्य (4:2)

i. प्रचार करना (4:2क)

संक्षिप्त और तीखे वाक्यों की एक श्रृंखला में, पौलुस ने तीमुथियुस को चार कार्य करने के लिए बुलाया। पहला, उसे “वचन का प्रचार” करना है। यहाँ “प्रचार” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “एक सन्देशवाहक के समान उद्घोषणा करना।” अंग्रेजी के द कम्पैनिन बाइबल के अनुसार, यह शब्द “घोषित किए जाने वाले विषय से संबंधित नहीं है... और इसमें शिक्षा देने का विचार सम्मिलित नहीं है।” यह केवल एक राजकीय घोषणाकर्ता का चित्र प्रस्तुत करता है—हाथ में तुरही लिए हुए, किसी सार्वजनिक स्थान पर सावधान खड़ा, और सम्राट के नाम में एक अनिवार्य घोषणा को सुनाता हुआ एक व्यक्ति। यहाँ किसी प्रकार की चर्चा या वाद-विवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। घोषणाकर्ता वहाँ इस मांग के पक्ष और विपक्ष पर तर्क करने के लिए नहीं होता; वह वहाँ इसे केवल घोषित करने और तुरंत आज्ञाकारिता की मांग करने के लिए होता है।

आत्मा से अभिषिक्त प्रचारक के पास एक संदेश होता है जिसे उसे घोषित करना है—जीवते परमेश्वर की एक संक्षिप्त आज्ञा कि आदम की नष्ट हुई जाति के पापी मन फिराएँ और मसीह को ग्रहण करें। शिक्षक सब कारणों और विवरणों को समझाता है, परन्तु प्रचारक केवल एक अनिवार्य आज्ञा सुनाता है, जिसे लोग यदि अनदेखा करें या ठुकराएँ, तो उसका जोखिम उन्हें स्वयं उठाना पड़ेगा।

अरियुपगुस पर एथेंस के न्यायालय के सामने, पौलुस ने एक प्रचारक के रूप में दैवीय अंतिम आदेश सुनाया। उसने कहा, “परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धार्मिकता से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुएों में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है” (प्रेरितों के काम 17:30-31)। प्रतिक्रिया सामान्य ही थी: कुछ ने मजाक उड़ाया, कुछ ने टालमटोल की, और कुछ ने विश्वास किया।

तीमुथियुस इफिसुस में लोगों की पीठ थपथपाने के लिए नहीं था। उस दुष्ट नगर में प्राचीन समय के सबसे घृणित पंथों में से एक स्थापित था। तीमुथियुस वहाँ इस उद्देश्य से था कि वह सार्वजनिक मार्गों में एक घोषणाकर्ता के रूप में खड़ा होकर स्वर्ग की अंतिम आज्ञा सुनाए। वह इस कार्य से पीछे हटना चाहता होगा, क्योंकि पहले यह प्रचार करने का काम पौलुस करता था। परन्तु अब, चाहे उसकी इच्छा हो या न हो, यह दायित्व तीमुथियुस का था। उसे परमेश्वर के सामने इसी प्रकार की आज्ञा दी गई थी।

ii. दृढ़ बने रहना (4:2ख)

दूसरी बात, जिसके लिए तीमुथियुस को बुलाया गया था, यह थी कि वह “समय और असमय तैयार” रहे। सुलैमान ने कहा था, “हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का एक समय है।” (सभोपदेशक 3:1), लेकिन पौलुस ने इस मुहावरे को एक ओर रख दिया। उस सहज और आरामदायक सोच के लिए समय बहुत आगे बढ़ चुका था। संसार अत्यधिक दुष्टता और दुख से भरा हुआ था; जीवन बहुत छोटा था; स्वर्ग और नरक अत्यंत वास्तविक थे; आवश्यकताएँ बहुत बड़ी थीं; अवसर बहुत ही क्षणिक था। यह अभी —या फिर कभी नहीं— वाली स्थिति थी।

“समय” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है और “असमय” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वे एक-दूसरे से संबंधित शब्द हैं। “समय” के लिए प्रयुक्त शब्द यहाँ और मरकुस 14:11 में यहूदा के संदर्भ में पाया जाता है। जब यहूदा ने याजकों के साथ अपनी दुष्ट संधि कर ली, तब वह एक उचित अवसर खोजने लगा कि वह यीशु को उसके शत्रुओं के हाथ पकड़वा दे: “वह अवसर ढूँढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।”

तीमुथियुस को प्रचार करने के लिए किसी सुविधाजनक समय की प्रतीक्षा नहीं करनी थी। उसे मौसम की परवाह नहीं करनी थी। उसे भीड़ के जिज्ञासु होने या विरोधी दृष्टियों की कोई चिंता नहीं करनी थी। उसे घर पर नहीं बैठना था क्योंकि उसे सदी हो गई है, या क्योंकि हजारों अन्य बातें उसका ध्यान खींच रही हो, या क्योंकि समय सुसमाचार के सार्वजनिक प्रचार के लिए बहुत खतरनाक है। उसे पौलुस के समान होना था, जिसने रोमियों को लिखा, “अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता” (रोमियों 1:15-16)। तीमुथियुस को ऐसे वचनों को अपने प्राण में गहराई तक बसाना था: “यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!!” (1 कुरिन्थियों 9:16)।

iii. जाँच करना (4:2ग-घ)

तीमुथियुस के लिए यहाँ जो तीसरा कार्य बताया गया है, वह है “उलाहना और डाँटकर समझाना।” तीमुथियुस के प्रचार के द्वारा लोगों को उनके पाप के विषय में बोध कराया जाना चाहिए। यहाँ “उलाहना” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह शास्त्रियों और फरीसियों की उस घटना के संदर्भ में भी प्रयुक्त हुआ है, जब वे प्रभु को लज्जित करने और फँसाने का प्रयास कर रहे थे। वे एक स्त्री को, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, उसके पास लाए (यूहन्ना 8:3-11)। प्रभु ने उत्तर में झुककर भूमि पर कुछ लिखा। फिर उसने उनसे कहा, “तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।” और वह फिर झुककर भूमि पर लिखने लगा। जैसे ही वह ऐसा कर रहा था, सब दोष लगाने वाले अपने ही विवेक द्वारा दोषी ठहराए जाकर एक-एक करके वहाँ से चले गए। यही शब्द यूहन्ना 16:8 में भी मनुष्य के हृदय में पवित्र आत्मा के दोषी ठहराने वाले कार्य के लिए प्रयुक्त हुआ है: वह संसार को पाप के विषय में निरुत्तर करेगा।

यहाँ “डाँट” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह ऐसे प्रचार के संदर्भ में आता है जो किसी कारण से लोगों को उनके पाप बोध कराने में सफल नहीं होता। फिर भी यह एक प्रबल शब्द है, जिसमें दण्ड की संभावना का भाव निहित है। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस यह समझे कि जब उसके प्रचार से लोगों में पापबोध न हो, तब भी उसे घोषणा करते रहना है और आने वाले न्याय के विषय में कठोर चेतावनी देनी है। उसे लोकप्रिय बनने के लिए नहीं बुलाया गया था, बल्कि बिना किसी भय या पक्षपात के परमेश्वर के सत्य को प्रकट करने के लिए बुलाया गया था।

iv. विनती करना (4:2ड-च)

तीमुथियुस का चौथा कार्य “प्रेम और निष्ठा के साथ विनती करना”—“सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ समझाना।” उसे पहले ही 3:10 में पौलुस की शिक्षा और उसके धीरज के विषय में स्मरण कराया जा चुका था।

“समझा” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसमें यह विचार निहित है कि किसी को अलग बुलाकर उससे विनती करना, उससे आग्रह करना, उसे शिक्षा देना या उससे याचना करना। इस प्रकार, प्रचारक की जिम्मेदारी केवल घोषणा करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उससे एक कदम आगे बढ़ जाती है।

यह समझाना “धीरज” (मकरोथुमिया) के भाव में किया जाना चाहिए। इस यूनानी शब्द का अर्थ उस प्रेम को समेटे हुए है जो हमें छोड़ने नहीं देता, वह प्रेम जिसे “पानी की बाढ़ भी नहीं बुझा सकता” (श्रेष्ठगीत 8:7), और वह प्रेम जो “धीरजवन्त है और कृपालु है” (1 कुरिन्थियों 13:4)।

तीमुथियुस को धीरजवन्त होना था, परन्तु वह किसी को मसीह के पास लाने के लिए “उपदेश” से समझौता नहीं कर सकता था। “उपदेश” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका सरल अर्थ है “निर्देश।” कभी-कभी प्रचार में शिक्षा का तत्व भी होता है, यद्यपि प्रचार सामान्यतः विवेक, हृदय और इच्छा को संबोधित करता है। शिक्षा मुख्य रूप से मन को संबोधित करती है। लोगों को दैवीय मांगों के प्रति उत्तर देने का कारण भी दिया जाना आवश्यक है (यशायाह 1:18)।

(ग) चेतावनी (4:3-4)

i. समय निकट आ रहा है (4:3क)

पौलुस के दिनों में, कलीसिया से दूर हो जाने और प्रकट किए गए सत्य के विरुद्ध विरोध का एक बढ़ता हुआ प्रवाह उत्पन्न हो रहा था। यह प्रवाह बढ़ेगा और अंतिम दिनों की परिस्थिति में एक प्रमुख तत्व बन जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)। पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी, “क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे” (2 तीमुथियुस 4:3)।

“सह सकेंगे” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका अर्थ है “थामे रखना।” पौलुस ने अंतिम दिनों के लोगों की कल्पना की कि वे सही उपदेश के विषय में स्वयं को स्थिर नहीं रखेंगे। उसके मन में मुख्य रूप से उसकी अपनी शिक्षा थी, जो समस्त नये नियम के धर्मविज्ञान की रीढ़ है।

तीमुथियुस के दिनों में, गूढ़ज्ञानवादी विधर्म काफ़ी तेजी से बढ़ रहा था। आज के समय में उदार धर्मविज्ञान ने उन बहुत से शिक्षण संस्थानों और कलीसियाओं पर अधिकार कर लिया है, जिन्हें ऐसे लोगों ने स्थापित किया था जो दृढ़ विश्वास रखते थे, बाइबल पर भरोसा करते थे और उसकी महान शिक्षाओं पर अटल खड़े रहते थे। कई मंचों और कक्षाओं में ऐसे लोग बैठे हैं जो पवित्रशास्त्र की सत्यता, अधिकार और प्रेरणा का इनकार करते हैं। वे मसीह के परमेश्वरत्व; उसका देहधारण करना, उसके आश्चर्यकर्म, उसकी अचूकता, उसकी निष्कलंकता, उसका पुनरुत्थान और उसका स्वर्गारोहण; और साथ ही साथ उसके व्यक्तिगत तथा वास्तविक दूसरे आगमन का भी इनकार करते हैं। वे मनुष्य के पतन, लहू के द्वारा प्रायश्चित, नरक के उपदेश और नये जन्म की आवश्यकता का भी इनकार करते हैं। वे धर्मत्यागी हैं, भेड़ों के भेष में भेड़िये हैं, अंधों के अंधे अगुवे हैं। वे “खरा उपदेश न सह सकेंगे।”

गलत उपदेश की यह स्थिति केवल उदार विचारधारा तक सीमित नहीं है। उदाहरण के लिए, बहुत से लोग जो अपने आप को विश्वासी कहते हैं और विश्वास की मुख्य शिक्षाओं को मानने का दावा करते हैं, वे “करिश्माई” अनुभव के आधार पर एक हो रहे हैं। वे शिक्षा को तुच्छ समझते हैं और कहते हैं कि यह

विभाजन उत्पन्न करती है। एक करिश्माई बैपटिस्ट, एक करिश्माई रोमन कैथोलिक के साथ हाथ मिला सकता है। वे उपदेश में अपने स्पष्ट मतभेदों को एक ओर दरकिनार कर देते हैं।

ii. त्यागा हुआ सत्य (4:3ख-4)

क. लोगों की अभिलाषाएँ (4:3ख)

गलत उपदेश वाले लोगों के विषय में पौलुस ने लिखा, वे “कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे।” यह लिखते समय पौलुस के हृदय में मन की उस अतृप्त लालसा का विचार था, जो विचित्र और अनोखी शिक्षाओं के प्रति होती है। अन्तिम दिनों में, लोग अद्भुत और असामान्य धर्मविज्ञानी रुचियों के पीछे भागेंगे। “खुजली” के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ है “खुरेदना, गुदगुदाना।” यह संकेत देता है कि लोगों में सनसनीखेज समाचार सुनने की लालसा होगी, चमत्कार देखने की इच्छा होगी, गूढ़ रहस्यों की खोज करने की प्रवृत्ति होगी, गलत व्याख्यात्मक प्रणालियों में लिप्त होने की चाह होगी, भविष्यवाणी की पूर्ति के बारे में कल्पनाशील सिद्धांतों को अपनाने की और विचित्र पंथों को जन्म देने की प्रवृत्ति होगी।

ख. वे झूठ जिन पर लोग ध्यान देंगे (4:4)

पौलुस ने आगे कहा, “और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएँगे।” “कथा-कहानियों” के लिए जो मूल शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “मुथोस” है, जिसका अर्थ है तथ्य के विपरीत कल्पित कहानी। उदाहरण के लिए, लोग मॉर्मन मत की ओर मुड़ेंगे, जिसका बहुत सा भाग कल्पना पर आधारित है। या वे अन्य “कथा-कहानियों” की ओर मुड़ेंगे, जैसे वे बातें जिन्हें उदार धर्मविज्ञानी प्रकट किए गए सत्य को समझाने या उससे बचने के लिए गढ़ते हैं, विशेषकर बाइबल में वर्णित चमत्कारों के विषय में। इन्हें कल्पना माना जा सकता है, क्योंकि ये तथाकथित “उच्च आलोचना” की असत्य और खंडित की जा चुकी अटकलों पर आधारित होती हैं।

“वे अपने कान फेर लेंगे” इस अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार भी किया जा सकता है—“वे अब सुनना ही बंद कर देंगे।” पौलुस जिन लोगों की कल्पना कर रहा था, वे केवल सत्य से अपने कान नहीं फेरेंगे, बल्कि जान-बूझकर उन्हें बंद कर लेंगे।

“फेर लेंगे” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका अर्थ है “मोड़ना, टेढ़ा करना।” इसमें चिकित्सकीय भाव भी है और यह, उदाहरण के लिए, किसी अंग के खिसक जाने के लिए प्रयुक्त होता है। एक खिसका हुआ हाथ या पैर स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर सकता। इसी प्रकार, जो लोग सत्य से मुड़कर झूठ को ग्रहण करते हैं, वे उन भ्रमों के असहाय शिकार बन जाते हैं जिन्हें वे अपनाते हैं। वे सत्य के प्रेम को ग्रहण करने से इनकार करते हैं और अधर्म में आनंद लेते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12)। अन्तिम दिनों में, ऐसे सरलता से बहकने वाले लोग मसीह-विरोधी के प्रचार के शिकार आसानी से बन जाएंगे।

(2) तीमुथियुस को चुनौती (4:5)

(क) सतर्क रहो (4:5 क)

यहाँ तीमुथियुस के लिए पौलुस की चुनौती चार भागों में है। पहला, उसने लिखा, “तू सब बातों में सावधान रह।” “सावधान रह” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका वास्तविक अर्थ है “दाखमधु से दूर रहना, संयमी बनना।” यहाँ इसका अर्थ है “सतर्क रहना।” तीमुथियुस को अपनी आँखें खुली रखनी थीं। पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों से भी कुछ इसी प्रकार कहा था: “इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है...मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे” (प्रेरितों के काम 20:28-30)। वे भेड़िये पहले ही घूम रहे थे, और तीमुथियुस को चेतावनी दी गई थी कि वह हमेशा सतर्क बना रहे।

(ख) साहसिक बनो (4:5ख)

पौलुस की चुनौती का अगला भाग था, “दुःख उठा।” तीमुथियुस को कठिनाइयों को सहने के लिए तैयार रहना था। पौलुस को इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि उस संसार में, जो मसीह के प्रति बढ़ती हुई शत्रुता से भरा हुआ था, मसीही होने की कीमत लगातार बढ़ती जाएगी। प्रेरित पहले ही तीमुथियुस से कह चुका था कि वह एक अच्छा योद्धा बने और कष्टों को सहे (2 तीमुथियुस 2:3)। अब ऐसा प्रतीत होता है मानो पौलुस अपनी जंजीर को हिला रहा हो और कुल्हाड़ी की छाया की ओर दृष्टि कर रहा हो। समय तेजी से समाप्त हो रहा था।

(ग) बहुमुखी बनो (4:5ग)

तीमुथियुस, अपने वरदान और बुलाहट के कारण, एक पास्टर था (1:6)। फिर भी, पौलुस ने उसे चुनौती दी कि वह “सुसमाचार प्रचार का काम” करे। पास्टर और सुसमाचार प्रचारक के वरदान भिन्न होते हैं (इफिसियों 4:11)। पास्टर मूल रूप से एक चरवाहा होता है। उसका कार्य है उस झुंड को खिलाना, उसकी रक्षा करना और उसकी देखभाल करना जो उसको सौंपा गया है। दूसरी ओर, सुसमाचार प्रचारक मूल रूप से आत्माओं को जीतने वाला होता है। जब वह प्रचार करता है, तो लोगों को पाप-बोध होता है और वे मसीह की ओर फिरते हैं, कभी-कभी बड़ी भारी संख्या में। तीमुथियुस के पास सुसमाचार प्रचारक का वह विशेष वरदान नहीं था; लेकिन उसे “सुसमाचार प्रचार का काम करना” था। उसे सुसमाचार का प्रचार करना था और निमंत्रण देना था; उसे लोगों से मसीह के विषय में बात करनी थी; उसे एक गवाह बनना था और लोगों को मसीह की ओर ले जाने का प्रयास करना था।

(घ) विजयी बनो (4:5घ)

पौलुस ने आगे तीमुथियुस को यह चुनौती दी, “अपनी सेवा को पूरा कर।” तीमुथियुस को उस कार्य को पूरा करना था जो परमेश्वर ने उसे सौंपा था। “पूरा कर” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका अर्थ है “पूरा माप भर देना।” यह एक ऐसे जहाज़ का चित्र प्रस्तुत करता है जो अपनी पाल पूरी तरह से फैलाकर आगे बढ़ रहा है। तीमुथियुस को अपने पाल खोलकर पूरी शक्ति से प्रयास करना था, क्योंकि इफिसुस में अभी अनुकूल हवा चल रही थी। सम्भव है कि तूफान आने वाला हो, परन्तु अभी पाल समेटने की आवश्यकता नहीं थी। तीमुथियुस को आगे बढ़ते रहना था—चाहे अनुकूल हवा में पूरे पाल खोलकर, या फिर गरजते तूफान के कारण पाल समेटकर।

इस प्रकार, तीमुथियुस को विजयी होने के लिए प्रेरित करते हुए, पौलुस ने अपने “पुत्र” के लिए इस चारगुणी चुनौती को पूरा किया। पत्र की शेष भाग विविध प्रकार की बातों, अनुरोधों, स्मरणों और दृढ़ निश्चयों की एक श्रृंखला है।

2 तीमुथियुस का शेष भाग बाइबल के सबसे रोचक अंशों में से एक है, क्योंकि ये छोटे-छोटे वचन उस महान प्रेरित के जीवन, सेवा और पत्रियों का समापन करते हैं। उसके अंतिम “आमीन” के बाद मानो मौन छा गया। ये वचन पौलुस के लिखे हुए अंतिम शब्द थे, और इस कारण वे अपने विषय और आकार की अपेक्षा कहीं अधिक गहरी रुचि उत्पन्न करते हैं। फिर भी, जब कोई व्यक्ति जानता है कि उसके दिन—और सम्भवतः उसके घंटे भी—बहुत कम रह गए हैं, तब वह जो कुछ कहता है, वह सदैव महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि अंतिम शब्द प्रायः उस व्यक्ति को वैसा ही प्रकट करते हैं जैसा वह वास्तव में होता है।

ख. महान प्रेरित की मृत्यु का निकट आना (4:6-18)

1. पौलुस की आशा (4:6-8)

क. जब मृत्यु उसके सामने थी (4:6-7)

(1) अंतिम संकट (4:6क)

जल्लाद की कुल्हाड़ी का साया लगातार करीब आ रहा था। पौलुस की मृत्यु निकट थी। जब मेरे दादाजी को पता चला कि वे मरने वाले हैं, तो उन्होंने मेरे पिता से कहा, “मरना कोई बड़ी बात नहीं है, लियोनार्ड; असली बात तो जीना है!” पौलुस ने भी लगभग यही बात कही। अच्छा जीवन जी लेने के बाद, वह अंतिम संकट का सामना करने के लिए तैयार था।

“क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूँ,” प्रेरित ने तीमुथियुस को लिखा। पौलुस सदा तैयार रहता था। कई वर्ष पहले उसने उसी नगर के विश्वासियों को, जहाँ अब वह कैद में था, लिखा था, “अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ” (रोमियों 1:15)। और उसने ऐसा किया भी। अब वह उसी का मूल्य चुका रहा था, परन्तु रोम के मसीही उससे दूर-दूर रह रहे थे। जब नीरो उन्हें मानो जलती मशालों के समान उपयोग कर रहा था, तब उनमें से अधिकतर लोग नीरो के सबसे प्रमुख कैदी के साथ किसी प्रकार का संबंध स्थापित करके अपने संकट को और बढ़ाना नहीं चाहते थे।

“अर्घ के समान उंडेला जाता हूँ” के लिए जो मूल शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “स्पेन्डोमाई” है, जिसका अर्थ है “किसी तरल बलिदान के रूप में उंडेला जाना।” इसलिए इसका एक और अर्थ इस प्रकार हो सकता है, “मैं पहले ही उंडेला गया हूँ।” यदि पौलुस का सिर काटा जाता, तो कुल्हाड़ी का प्रहार वास्तव में उसके लहू को एक अर्घ के समान उंडेल देता। यह उसके प्रिय प्रभु के लिए उसकी ओर से अंतिम सेवा होती।

यद्यपि वह नहीं जानता था कि चंचल स्वभाव वाला नीरो क्या आदेश देगा, फिर भी पौलुस को आशा थी कि उसकी रोमी नागरिकता उसे यातना और क्रूस पर चढ़ाए जाने से बचा लेगी। सिर काटा जाना ही सबसे संभावित दण्ड प्रतीत होता था। रोमन कैथोलिक कलीसिया एक प्रबल परम्परा को संजोए हुए है कि पौलुस का वास्तव में “तीन सोतों की कलीसिया” के स्थान पर सिर काटा गया था। इस परम्परा के अनुसार, जब

उसका सिर लुढ़का, तो उसने पृथ्वी को तीन बार स्पर्श किया, और हर बार वहाँ से पानी का एक नया सोता फूट पड़ा।

चाहे स्थिति कुछ भी रही हो, मृत्यु के विचार से पौलुस विचलित नहीं हुआ। वह शहीद के रूप में मरने की अपेक्षा कर रहा था; वह अपनी मृत्यु को एक बलिदान के रूप में देख रहा था। यदि उसका सिर जल्लाद के तख्ते पर रखा जाता, तो वह उस भयानक राजकीय उपकरण को एक वेदी में बदल देता।

(2) अंतिम यात्रा (4:6ख)

पौलुस ने आगे कहा, “और मेरे कूच का समय आ पहुँचा है।” “कूच” के लिए जो मूल रूप से शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “अनालुसिस” है, जो पवित्रशास्त्र में केवल यहीं पाया जाता है। तथापि, इसका क्रिया रूप अन्य स्थानों पर मिलता है। पौलुस ने इसी शब्द का प्रयोग अपने फिलिप्पी के मित्रों से कहते समय किया था कि उसे “जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है” (फिलिप्पियों 1:23)। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है “खोल देना,” और यह अत्यंत चित्रात्मक है। इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब यात्रा की तैयारी में तंबू को उतारा जाता है, या जहाज़ के चलने से पहले लंगर उठाया जाता है, या बोझ उठाने वाले पशु को जुए से खोल दिया जाता है। इसी शब्द का उपयोग “लौटने” के अर्थ में भी लूका 12:36 में किया गया है, जहाँ उन लोगों का उल्लेख है जो “अपने स्वामी की बाट देख रहे हों कि वह विवाह से कब लौटेगा।”

जब पौलुस ने फिलिप्पियों को अपने “कूच करने और मसीह के साथ रहने की इच्छा” के विषय में लिखा, तब वह रोम में पहली बार कैद में था। वह कैद अपेक्षाकृत हल्की थी। लगाए गए झूठे आरोप अदालत में टिकने की सम्भावना नहीं रखते थे, और नीरो ने अभी तक मसीहियों के प्रति खुली क्रूरता का मार्ग नहीं अपनाया था। उस समय पौलुस अपने दण्ड के विषय में निश्चित नहीं था, परन्तु उसे आशा थी कि वह मुक्त कर दिया जाएगा। फिर भी, उसने मृत्यु की सम्भावना को स्वीकार कर लिया था। फिलिप्पियों 1:23 में “इच्छा” के लिए जो मूल शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “एपिथुमिया” है, जो नये नियम में सामान्यतः लालसा या तीव्र इच्छा के अर्थ में आता है। पौलुस स्वर्ग जाने की तीव्र अभिलाषा रखता था। वह लंगर उठाकर उस स्वर्गीय तट की ओर कूच करने, विवाह में सम्मिलित होने और दूल्हे के साथ लौटने के लिए के लिए आतुर था।

अब वह फिर से कारागृह में था, और इस बार वह निश्चित रूप से अपनी मृत्यु के सामने खड़ा था। पौलुस ने अपने उसी पुराने शब्द “अनालुओ” को फिर से प्रयोग किया। उसने अपना विचार नहीं बदला था। शीघ्र ही लंगर उठा लिया जाएगा—या और अधिक सही कहें तो जल्लाद की कुल्हाड़ी द्वारा लंगर की रस्सी काट दी जाएगी—और वह यहाँ से कूच कर जाएगा! पौलुस के मन में इस संभावना के विषय में कुछ भी भयानक या निराशा नहीं थी। यह उस जीवन का स्वाभाविक अंत था जो राजा की सेवा में पूर्ण रूप से उंडेल दिया गया था।

प्रत्याशित प्रस्थान के बाद की यात्रा कोई लंबी नहीं होगी। पृथ्वी और स्वर्ग के बीच की दूरी मीलों में नहीं मापी जाती। पौलुस बहुत पहले ही इस बात पर विचार कर चुका था कि यह परिवर्तन कैसे होता है। नये

नियम के एक अत्यंत रोचक अध्याय में, पौलुस ने समझाया कि यह परिवर्तन कैसे कार्य करता है: “देह से अलग होकर... प्रभु के साथ रहना” (2 कुरिन्थियों 5:8)। यात्रा इसी तरह पूरी हो जाएगी!

(3) अंतिम न्याय (4:7)

मसीहियों के लिए अंतिम न्याय मसीह के न्याय आसन पर होगा (रोमियों 14:10; 1 कुरिन्थियों 3:10-15)। पौलुस इसके प्रति सचेत था, परन्तु इसमें उसके लिए कोई भय नहीं था। उसने कहा, “मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।” यह एक पसंदीदा और अक्सर बोले जाने वाला कथन दर्शाता है कि पौलुस इस न्याय की प्रतीक्षा उत्साह के साथ कर रहा था; वह अपने प्रभु के मुख से प्रशंसा के गूँजते हुए वचन सुनने की लालसा रखता था। प्रेरित ने स्तिफनुस के महिमामय प्रवेश को कभी अपने में से भुलाया नहीं था (प्रेरितों के काम 6:15; 7:53-60)।

(क) अच्छी जीत, पौलुस! (4:7क)

पौलुस कह सकता था, “मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ।” यहाँ “लड़ चुका हूँ” के लिए जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका शाब्दिक अर्थ है “संघर्ष में प्रवेश करना।” इसका संकेत ओलंपिक खेलों में प्रतिस्पर्धा करने या सैनिक संघर्ष में भाग लेने की ओर हो सकता है। संभव है कि पौलुस अपने आप की तुलना एक रोमी सैनिक से कर रहा था। इस रूपक के लिए उसे दूर देखने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह स्वयं एक सैनिक द्वारा जंजीर में बँधा हुआ था! वह अनेक रोमी सैनिकों को जानता था, और अपनी पहली कैद के समय उसने उनमें से कईयों को मसीह के पास पहुँचाया था, जिनमें से कुछ राजभवन (प्रेटोरियन) के पहरेदारों के सदस्य भी थे (फिलिप्पियों 1:13)।

पौलुस ने बार-बार इस तथ्य को स्वीकार किया था कि मसीही हमेशा युद्ध की अवस्था में है। उसने इफिसियों से कहा था कि वे परमेश्वर का पूरा हथियार बाँध लें और शैतान की प्रधानताओं और प्रभुताओं के विरुद्ध, इस संसार के अंधकार के हाकिमों के विरुद्ध, और आकाशीय स्थानों में दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध हर तरफ से युद्ध करें (इफिसियों 6:11-18)। पौलुस ने अभी-अभी तीमुथियुस को भी स्मरण दिलाया था कि वह “मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुःख उठा” (2 तीमुथियुस 2:3)।

पौलुस ने अपने सेवकाई में वही अभ्यास किया जो उसने दूसरों को सिखाया। उसने दिन-रात शत्रु की सारी शक्ति के विरुद्ध युद्ध किया। अब वह युद्ध के घावों से भरा हुआ एक बन्दी था; फिर भी शैतान समझ नहीं पा रहा था कि उसके साथ क्या करे। यदि शैतान पौलुस को छोड़ देता, तो वह संसार को उलट-पुलट कर देता। यदि शैतान उसे कारागृह में बन्द करता, तो वह अपने पहरेदारों को मसीह के पास ले आता, ऐसी प्रार्थना करता जो शैतान के गढ़ों को नींव तक हिला देती, और ऐसे अमर पत्रियाँ लिखता जो आने वाली पीढ़ियों के असंख्य विश्वासियों को उसी प्रकार युद्ध करने के लिए सुसज्जित करते जैसे स्वयं प्रेरित ने किया था। और यदि शैतान पौलुस को मार डालता, तो वह केवल महिमा में प्रवेश करता, जहाँ वह जाने की तीव्र इच्छा रखता था।

“मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ,” पौलुस ने लिखा। यहाँ जो क्रिया रूप प्रयुक्त हुआ है, वह भूतकाल की पूर्णता को दर्शाता है और इसके साथ निरंतर परिणाम का भाव भी निहित है। प्रेरित पौलुस उस पल की प्रतीक्षा कर रहा था जब वह प्रभु से यह सुन सकेगा, “बहुत बढ़िया, अच्छी जीत के लिए बधाई पौलुस!”

(ख) अच्छा दौड़ा, पौलुस! (4:7ख)

पौलुस निश्चित रूप से कह सकता था, “मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है।” यहाँ “दौड़” के लिए जो मूल रूप से शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह “ड्रोमोस” है, जिसका तात्पर्य दौड़ने का मैदान है। अब प्रेरित अपने आप को एक यूनानी धावक के रूप में देख रहा था।

अपने पहले प्रचार-यात्रा के दौरान, जब पौलुस ने पिसिदिया के अन्ताकिया के आराधनालय में यहूदियों को प्रचार किया, तब उसने यही शब्द यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में भी प्रयोग किया। उसने कहा, “यूहन्ना ने अपनी सेवा [ड्रोमोस] पूरी की।” फिर पौलुस ने यूहन्ना के शब्दों को दोहराया: “तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन् देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती भी मैं खोलने के योग्य नहीं” (प्रेरितों के काम 13:25)। यूहन्ना के यह कथन बोलने के कुछ ही समय बाद, हेरोदेस ने उसे मरवा डाला। इसके कुछ समय बाद, पौलुस ने इसी शब्द का उपयोग मिलेतुस में इफिसुस के प्राचीनों को दिए गए अपने विदाई संदेश में किया: “बन्धन और क्लेश मेरे लिये तैयार हैं। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा [ड्रोमोस] को पूरी करूँ” (प्रेरितों के काम 20:23-24)। इफिसुस के बहुत से विश्वासियों को यह विदाई स्मरण आ गई होगी, जब उन्होंने वह पढ़ा जो पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा था।

अब पौलुस ने समाप्ति रेखा पार कर ली थी। “पूरी कर ली” यह शब्द अनेक यादों को फिर से जागृत करता है। यह हमें सीधे कलवरी तक ले जाता है, जहाँ हम प्रभु को क्रूस पर देखते हैं (यूहन्ना 19:28-30)। वह जानता था कि “सब कुछ अब पूरा हो चुका है।” जब वह क्रूस पर लटका हुआ था, तब हम कल्पना कर सकते हैं कि उसका सम्पूर्ण मन पुराने नियम की उन सभी प्रतिज्ञाओं, भविष्यद्वाणियों, प्रतिरूपों और परछाईयों को देख रहा था, जिनका उसके पहले आगमन से सम्बन्ध था, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सब सम्पूर्ण रूप से पूरी हो चुकी हैं। केवल एक भविष्यद्वाणी शेष रह गई थी: “मेरी प्यास बुझाने के लिये उन्होंने मुझे सिरका पिलाया” (भजन संहिता 69:21)। इसलिए “ताकि पवित्रशास्त्र पूरा हो,” यीशु ने कहा, “मैं प्यासा हूँ।” वहाँ पास ही “सिरके से भरा एक पात्र” रखा हुआ था। प्रभु के इस कथन पर वहाँ खड़े लोगों ने “एक स्पंज को सिरके से भरकर जूफे पर रखा और उसके मुँह से लगाया।” जब यीशु ने वह सिरका ले लिया, तो उसने कहा, “पूरा हुआ,” और अपना सिर झुकाकर अपने प्राण त्याग दिए। इस शब्द का अर्थ है “समाप्त करना, पूरा करना, सिद्ध करना।” इसलिए जब प्रभु ने विजयी होकर कहा, “पूरा हुआ,” तो उसका अर्थ था कि उसकी पीड़ाएँ समाप्त हो गए थे। उसका महान उद्धार का कार्य पूर्ण हो चुका था।

कुछ कम अर्थ में, पौलुस की स्थिति भी इसी के समान थी। उसका मन उन वर्षों की ओर लौट रहा था जब उसने पहली बार मसीह से भेंट की थी। उसने दमिश्क, अरब, किलिकिया, अन्ताकिया, गलातिया, यूरोप और एशिया माइनर को स्मरण किया, और उसे समझ में आ गया कि उसका कार्य पूरा हो चुका है। उसका कुछ कार्य तो बहुत पहले ही पूर्ण हो चुका था। उसने कुरिन्थुस से रोम की कलीसिया को लिखा, “मैं ने यरूशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा पूरा प्रचार किया” (रोमियों 15:19)। उसने यरूशलेम से लेकर आज जिसे हम यूगोस्लाविया कहते हैं, लगभग पंद्रह सौ मील तक विस्तृत क्षेत्र में सुसमाचार का प्रचार किया था। वास्तव में उसने उन प्रदेशों में अपना कार्य पूरा कर लिया था। उसने रोमियों से कहा, “परन्तु अब इन देशों में मेरे कार्य के लिये और जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों

से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। इसलिये जब मैं स्पेन को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा” (रोमियों 15:23)। बाद में वह इफिसुस के विषय में भी यही कह सकता था। इफिसुस के प्राचीन उसे आँसुओं के साथ छोड़ गए थे, “वे विशेषकर इस बात से शोकित थे जो उसने कही थी कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे” (प्रेरितों के काम 20:38)। तब से वह स्पेन और रोम की यात्रा कर चुका था।

पौलुस का कार्य पूरा हो चुका था। वह अपनी अंतिम यात्रा पूरी कर चुका था, अपना अंतिम संदेश सुना चुका था, अपनी अंतिम पुस्तक लिख चुका था—अपनी दौड़ समाप्त कर चुका था। अब वह उस पल की ओर देख रहा था जब वह प्रभु को यह कहते हुए सुनेगा, “अच्छा दौड़ा, पौलुस!”

(ग) बहुत बढ़िया, पौलुस! (4:7ग)

“मैं ने विश्वास की रखवाली की है,” पौलुस ने आगे कहा। सम्भव है कि अब उसके मन में अपनी तुलना एक ऐसे इब्रानी भविष्यद्वक्ता से हो रही थी, जो एक धर्मत्यागी युग में परमेश्वर के लिए निडर होकर खड़ा रहता है। ऐसे विश्वास के वीरों की एक पूरी श्रेणी हमारे मन के सामने आ जाती है। हम एलिय्याह को निर्बल अहाब और दुष्ट ईज़ेबेल का सामना करते हुए, अद्भुत काम करते हुए देखते हैं। हम एलीशा को एक धर्मत्यागी युग में निडर खड़ा हुआ देखते हैं। हम यशायाह को आहाज को डाँटते और हिजकिय्याह को दृढ़ करते हुए देखते हैं, और अन्त में वह मनश्शे के द्वारा आरे से चिरा गया। हम यिर्मयाह और यहजकेल को समय की आवश्यकता के अनुसार चेतावनी देते या रोते हुए देखते हैं, और अपने ही देशवासियों के क्रोध का सामना करते हुए देखते हैं। हम दानिय्येल को विश्वास बनाए रखते हुए और नबूकदनेस्सर, बेलशस्सर और दारा जैसे अत्याचारी राजाओं के सामने निडर होकर प्रचार करते हुए देखते हैं। और हम उन बारह तथाकथित छोटे भविष्यद्वक्ताओं को भी देखते हैं—शायद छोटे प्रकाश के तारे, परन्तु फिर भी तारे ही हैं—जो अपने समय के लोगों के विवेक को जीवंत करने के लिए मृत्यु का सामना करने से भी नहीं पीछे नहीं हटे।

भविष्यद्वक्ताओं की तरह, पौलुस ने भी “विश्वास की रखवाली की।” यहाँ “रखवाली” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है “सुरक्षित रखना, निगरानी करना।” और “विश्वास” के लिए मूल रूप से प्रयुक्त शब्द “पिस्टिस” है, जिसका सम्बन्ध सुनने से उत्पन्न होने वाले दृढ़ विश्वास से है (रोमियों 10:17)। पौलुस ने प्रभु पर अपने पूर्ण भरोसे में कभी किसी तरह की डगमगाहट नहीं दिखाई। उसका विश्वास उतना ही दृढ़ और स्थिर था जब वह जल्लाद की कुल्हाड़ी की छाया में खड़ा था, जितना कि उस समय था जब उसने पहली बार दमिश्क के मार्ग पर विश्वास किया था।

इसके अतिरिक्त, पौलुस ने उसे सौंपे गए सत्य के धरोहर की अपने जीवन से भी बढ़कर रक्षा की थी। वह यहूदियों के क्रोध और भीड़ की हिंसा के सामने विश्वास में अटल खड़ा रहा। उसने फेलिक्स, फेस्टुस और राजा अग्रिप्पा के सामने बिना किसी समझौते के दृढ़ता दिखाई। और न ही निर्दयी नीरो के सामने पौलुस कभी डगमगाया।

यरूशलेम की कलीसिया के प्रेरितों और प्राचीनों के सामने भी पौलुस निडर बना रहा। उसने अन्यजाति विश्वासियों के इस अधिकार का समर्थन किया कि वे यहूदी धर्म की सभी रीति-रिवाजों की बंधनों से स्वतंत्र रहें (प्रेरितों के काम 15)। उसने पतरस प्रेरित का आमने-सामने साहसपूर्वक सामना किया, और जब उसने

महत्वपूर्ण सत्य में समझौते के संकेत दिखाए, तब उस प्रमुख प्रेरित को फटकार भी लगाई (गलातियों 2:11-16)।

शैतान ने पौलुस का विरोध करके उसकी शिक्षा को कमजोर करने का प्रयास किया। वहाँ गलातिया के व्यवस्था पर जोर देने वाले लोग थे, यहूदी रीति-रिवाजों पर अड़े रहने वाले लोग थे, और कुलुस्से के ज्ञानवाद से प्रभावित लोग भी थे। जाली पत्री भी प्रचलित किए गए थे (2 थिस्सलुनीकियों 2:2)। उसके चरित्र, उसके रूप-रंग और उसके साधारण बोलचाल पर भी कठोर आक्रमण किए गए थे (2 कुरिन्थियों 10:10; 11:6)। शैतान के विरुद्ध पौलुस का दृष्टिकोण सरल था: “क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है” (2 तीमुथियुस 1:12)। जो कुछ परमेश्वर ने पौलुस को सौंपा था, उसे पौलुस ने वापस परमेश्वर को ही सौंप दिया। अब पौलुस उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था जब वह प्रभु को यह कहते सुनेगा, “बहुत बढ़िया, पौलुस!” मृत्यु उसके सामने थी, फिर भी पौलुस इस बात से आनन्दित हो सकता था कि अन्त में वह “निकम्मा ठहराया जाने वाला” नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 9:27)।

जब तीमुथियुस ने इन शब्दों को पढ़ा होगा, तो उसका हृदय अवश्य ही गहराई से प्रभावित हुआ होगा। वह जानता था कि ये बातें सत्य हैं।

ख. जब मृत्यु उसके पीछे खड़ी थी (4:8)

(1) पौलुस के लिए मुकुट का एक दिन (4:8क)

पौलुस उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था जब मृत्यु के बाद वह मसीह के न्यायासन के सामने खड़ा होगा। उसने कहा, “भविष्य में मेरे लिये धर्म का मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा।” इस कथन के द्वारा पौलुस ने इस सत्य की पुष्टि की कि उद्धार तो निःशुल्क है, परन्तु प्रतिफल कमाने पड़ते हैं। उसे इस बात में ज़रा सा भी सन्देह नहीं था कि उसने एक मुकुट अर्जित किया है। यहाँ “मुकुट” के लिए जो शब्द मूल रूप से प्रयोग हुआ है, वह “स्टेफानोस” है, जो उन विजेताओं के मुकुट को दर्शाता है जो यूनानी खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अंजीर के पत्तों या लता से बनाया हुआ दिया जाता था।

पौलुस को “धर्म का मुकुट” प्राप्त होने की आशा थी। पवित्रशास्त्र में अन्य प्रकार के मुकुटों का भी उल्लेख मिलता है: 1 पतरस 5:4 में महिमा का मुकुट; याकूब 1:12 में जीवन का मुकुट; फिलिप्पियों 4:1 में आत्माओं को जीतने वाले का मुकुट; और प्रकाशितवाक्य 2:10 में शहीदों का मुकुट बताया गया है। निस्सन्देह, पौलुस इन सबको प्राप्त करेगा, परन्तु जिस मुकुट के विषय में वह निश्चित था, वह धर्म का मुकुट था। यह उस धर्मी जीवन के लिये उसका प्रतिफल होगा जो उसने इस पृथ्वी पर प्रभु के लिए जिया था।

रोमियों के नाम अपनी पत्री में, पौलुस ने धर्म के विषय को विस्तार से समझाया—कि इसकी आवश्यकता क्या है, यह कैसे प्राप्त होता है, और यह कैसे जीवन में प्रकट होता है। वह अच्छी तरह से जानता था कि परमेश्वर द्वारा हम को दी जाने वाली “मसीह की धार्मिकता” और पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर कार्यान्वित की जाने वाली “पवित्रों की धार्मिकता” में क्या अंतर है (1 यूहन्ना 3:7; प्रकाशितवाक्य 19:8)। पहली हमारे स्थान से सम्बन्ध रखती है, जो सिद्ध है; और दूसरी हमारी स्थिति से सम्बन्ध रखती है, जो

अपूर्ण है। जहाँ तक देहधारी मनुष्य के रूप में संभव था, पौलुस ने अपने भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा को उसे यीशु के समान बनाने की अनुमति दी थी। पौलुस ने ऐसे जीवन जिया जिसमें पवित्र आत्मा शोकित नहीं हुआ। धर्मी न्यायी यह सुनिश्चित करेगा कि उसे उचित प्रतिफल मिले।

(2) सभी के लिए एक महत्वपूर्ण दिन (4:8ख)

हम भी उस न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। जैसा कि पौलुस ने कहा, यह मुकुट “मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।” उसने “उस दिन” विश्वासियों को मिलने वाले प्रतिफलों को उनके उसके प्रकट होने के प्रति प्रेम की मात्रा से जोड़ा। प्रभु के मध्य आकाश में आने और अपनी दुल्हन को अपने पास ले जाने की आशा पर स्थिर दृष्टि रखना धर्मी जीवन जीने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा है। प्रेरित यूहन्ना ने भी 1 यूहन्ना 3:1-3 में यही बात कही है। फिर भी, यह सम्भव है कि यदि हम पवित्र आत्मा से भरा हुआ जीवन न जीएँ, तो हम अपने मुकुट को खो देंगे।

धर्मी जीवन जीना आरम्भ करने के लिए कभी भी देर नहीं होती। उस मरते हुए चोर के विषय में ज़रा विचार करें। उसके पास केवल कुछ ही घंटे शेष बाकी थे, फिर भी उसने मसीह पर विश्वास किया और इतनी विजय के साथ गवाही दी कि उसकी गवाही परमेश्वर के जीवित वचन का भाग बन गई (लूका 23:39-43)। उस मनुष्य के शब्दों के कारण बहुत से लोग महिमा में होंगे।

2. पौलुस के संघर्ष (4:9-15)

क. उसकी विनती (4:9)

पौलुस अपने समापन शब्दों की शुरुआत एक विनती के साथ करता है: “शीघ्र मेरे पास आने का प्रयत्न कर।” वह अपने प्रिय तीमुथियुस को एक बार फिर देखने की लालसा रखता था। उसने उसे रोम आने, कारागृह में उससे मिलने, खतरों का सामना करने, और मसीह में अपनी परिपक्वता को सिद्ध करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह कोई छोटी विनती नहीं थी, क्योंकि उस समय रोम पृथ्वी पर लगभग ऐसा स्थान था जहाँ कोई भी मसीही जाना नहीं चाहता था। बहुत से मसीही उस नगर से निकलने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि नीरो अत्यधिक क्रोधित था और बड़ी मात्रा में अत्याचार कर रहा था।

नीरो क्लौडियुस कैसर जर्मानिकुस का पालन-पोषण उसकी माता अग्रिप्पीना के द्वारा हुआ, जो सम्राट औगुस्तुस की परपोती थी। वह दुष्ट सम्राट कैलिगुला की बहन थी, जिसने केवल लोगों को पीड़ा में तड़पते हुए मरते देखने के आनंद के लिए सैकड़ों लोगों को यातनाएँ देकर मरवा डाला। अग्रिप्पीना ने अपने दूसरे पति को विष देकर मार डाला, और फिर अपने ही मामा, सम्राट क्लौडियुस से विवाह कर लिया। नीरो ने क्लौडियुस की पुत्री ओक्टाविया से विवाह किया। क्लौडियुस ने नीरो को अपना उत्तराधिकारी बना दिया, और इससे पहले कि वह अपना विचार बदल पाता, अग्रिप्पीना ने क्लौडियुस को भी विष देकर मरवा डाला। ऐसा था वह वातावरण जिसमें इतिहास का सबसे कुख्यात खलनायक का पालन-पोषण हुआ था।

नीरो सत्रह वर्ष की आयु में सम्राट बना। अपने शासन के प्रारम्भिक कुछ वर्षों में उसने कुछ अच्छी सम्भावनाएँ दिखाईं। सेनेका और बुरुस के मार्गदर्शन में ऐसा प्रतीत होता था कि नीरो लोगों की उससे की गई ऊँची आशाओं को पूरा करेगा। फिर भी, उसी समय उसके पतन के बीज दिखाई देने लगे थे। सल्वियुस

ओथो और ओफोनियुस टिजेलिनस ने नीरो को देवताओं में किसी भी प्रकार के विश्वास को त्याग देने के लिए प्रभावित किया। वह और उसके साथी भेष बदलकर गलियों में घूमते, स्त्रियों को परेशान करते और अपने आप को दुष्टता और अनैतिकता में लिप्त कर देते थे।

सिंहासन पर बैठते ही नीरो ने क्लौदियुस के चौदह वर्षीय पुत्र ब्रिटानिकुस की हत्या करवा दी, ताकि कोई भी उस किशोर को उसके विरुद्ध सिंहासन के दावे के लिए उपयोग न कर सके। नीरो ने अपनी ही माँ को डुबाकर मारने का प्रयास किया; और जब उसकी यह योजना असफल हो गई, तो उसने बुरे लोगों के एक समूह को भेजकर उसे छुरा घोंपकर मरवा डाला। नीरो अपनी पत्नी से घृणा करता था, इसलिए उसने उसे देश निकाला दे दिया और फिर उसकी हत्या भी करवा दी। इसके बाद उसने अपनी एक उपपत्नी, पॉप्पेआ सबीना नामक एक यहूदी स्त्री से विवाह किया, जिसे उसने सीनेटर ओथो से छीन लिया था। बाद में नीरो ने पॉप्पेआ की लात मार-मारकर हत्या कर दी। फिर उसने मेस्सलीना से उसके पति की हत्या करवाने के बाद विवाह कर लिया। नीरो की नापसंदगी या संदेह को भड़काना अपने ही मृत्यु-आदेश पर हस्ताक्षर करने के समान था।

सन् 64 में, रोम के एक गरीब क्षेत्र में आग लग गई, जहाँ अधिकांश झुग्गी-बस्तियाँ लकड़ी की बनी हुई थीं। यह आग एक सप्ताह से अधिक समय तक भयंकर रूप से जलती रही। यह कहानियाँ फैल गई कि जब रोम जल रहा था, तब नीरो बाँसुरी बजा रहा था, और व्यापक रूप से यह माना गया कि उसने स्वयं ही वह आग लगवाई थी, या कम से कम किसी से लगवाई थी। वह नगर को यूनानी शैली में पुनः बनाना चाहता था और अपने लिए एक भव्य स्वर्णिम महल भी बनाना चाहता था। अचानक उसे एक बलि का बकरा चाहिए था, इसलिए उसने नये समूह—मसीहियों—को इसके लिए दोषी ठहराया। उसने उन पर आग लगाने का आरोप लगाया और मसीही विश्वास के विरुद्ध एक भयंकर, व्यापक और दुष्ट आतंक का शासन आरम्भ कर दिया। मसीहियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर निर्दयता से मार डाला गया। उन्हें जीवित जला दिया जाता था ताकि वे नीरो की आधी रात की मदहोश दावतों के लिए मशालों का काम करें; उन्हें जानवरों की खाल में डालकर सील दिया जाता था और मैदान में जंगली पशुओं के सामने फेंक दिया जाता था।

रोम पर गहरा आतंक छाया हुआ था। सन् 65 में, रोम के कुछ सबसे प्रमुख लोगों से जुड़ी एक व्यापक साजिश का भंडाफोड़ हुआ। उनकी उच्च पदवी भी उन्हें नीरो के क्रोध से बचा नहीं सकी। कवि लूकान, और नीरो का पुराना गुरु, दोनों मार डाले गए, और दार्शनिक सेनेका को आत्महत्या करने के लिए विवश किया गया। नीरो अब पूरी तरह उस रक्त के प्यासे और सन्देहशील अत्याचारी के रूप में कार्य कर रहा था, जिसके रूप में इतिहास उसे आज याद करता है। दोषी हों या निर्दोष, जो भी सीनेटर, प्रमुख नागरिक, या सैनिक अधिकारी उसके संदेह के घेरे में आ जाता था, उन्हें मार डाला जाता था।

तब स्पेन, गौल और अफ्रीका में रोमी सेनाओं ने नीरो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और गल्बा को सम्राट घोषित कर दिया। अंततः उत्तेजित होकर रोमी सीनेट ने नीरो को दासों की मृत्यु—कोड़े मारकर और कूस पर चढ़ाकर—मरने की सज़ा सुनाई। उसकी अपनी व्यक्तिगत सेना, प्रतिष्ठित प्रेटोरियन पहरेदार भी उसके शत्रुओं के साथ मिल गए।

नीरो ने विदेशों में उठते हुए विद्रोहों के समाचार सुने, पर वह केवल हँस पड़ा। आखिरकार, वह सम्राट था! वह स्वयं को देवता समझता था! लेकिन सन् 68 की एक रात, वह अचानक एक भयानक रूप से उस शांत

महल में जाग उठा। उसके पहरेदार जा चुके थे; स्थान सुनसान पड़ा था। नीरो ने अपने वस्त्र के ऊपर एक पुराना चोगा डाला, घोड़े पर चढ़ा और रात के अँधेरे में फाओन नामक एक पूर्व दास के घर की ओर भाग गया। वहाँ उसे समाचार मिला कि महासभा ने उसे राज्य का शत्रु घोषित करते हुए मृत्यु-दण्ड सुनाया है। इतिहासकार सूएटोनियुस के अनुसार, भोर के समय जब नीरो ने घोड़ों की आहट सुनी, तो उसने अपना ही गला काटकर आत्महत्या कर ली।

जब नीरो अभी भी सत्ता में था, तब पौलुस ने तीमुथियुस से रोम आने का आग्रह किया। प्रेरित ने लिखा, “मेरे पास आने का प्रयत्न कर।” यहाँ “प्रयत्न कर” का अर्थ है “अपना पूरा प्रयास कर,” या “शीघ्रता कर,” या “हर सम्भव कोशिश कर।” 2:15 में इसी शब्द का अनुवाद “परिश्रम कर” के रूप में किया गया है। इसलिए पौलुस की विनती यह थी कि जब तक समय है, तीमुथियुस उसके पास पहुँचने के उपायों पर पूरा मन लगाकर प्रयास करता रहे।

पौलुस ने तीमुथियुस को सिखाया था कि एक अच्छा योद्धा खतरे से पीछे नहीं हटता, परन्तु वह चाहता था कि तीमुथियुस उन खतरों से पूरी तरह अवगत रहे जिनका सामना उसे वहाँ आने पर करना पड़ेगा। पौलुस ने रोम की स्थिति को इतने स्पष्ट रूप से बता दिया था कि तीमुथियुस समझदारी से निर्णय ले सके। प्रेरित नहीं चाहता था कि उसका युवा मित्र केवल भावनाओं में बहकर निर्णय ले। यदि वह आए, तो उसे पूरी जागरूकता और समझ के साथ आना चाहिए।

ख. उसकी दुर्दशा (4:10-15)

(1) उसके मित्र (4:10-13)

(क) भगोड़ा—देमास (4:10क)

जब पौलुस ने रोम की स्थिति के विषय में विचार किया, तो उसके मन में कई नाम आने लगे। सबसे पहले उसे देमास का ध्यान आया। पौलुस ने कहा, “क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है।” पौलुस की पहली रोमी कैद के समय लिखी गई पत्रियों में देमास का सम्मानपूर्वक उल्लेख किया गया था (कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन 24), परन्तु उस समय खतरा बहुत कम था। लेकिन अब देमास ने अपने चरित्र पर एक कलंक लगा लिया था; उसने महान प्रेरित पौलुस का साथ छोड़ दिया था।

2 तीमुथियुस 4:10 में “छोड़ दिया” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ है “किसी को संकट में छोड़ देना, निराश कर देना, त्याग देना, तज देना।” प्रभु ने भी इसी शब्द का उपयोग क्रूस पर अपनी पूरी तरह से त्यागे जाने की भावना को व्यक्त करने के लिए किया था (मत्ती 27:46)।

पौलुस ने देमास के छोड़कर जाने का कारण इस संसार के प्रति उसके प्रेम को बताया। “यह वर्तमान संसार” एक ऐसा खतरा है जिसका सामना हम सभी को करना पड़ता है। हमें यह निर्णय लेना होता है कि हम किस संसार के लिए जीएँगे—इस संसार के लिए या आने वाले संसार के लिए। यह संसार हमारा शत्रु है। “संसार” शब्द बाइबल में उस मानव जीवन और समाज का प्रतीक है जिसमें परमेश्वर को बाहर रखा जाता है। यह पापियों के लिए शैतान का निवास स्थान है और विश्वासियों के लिए उसका प्रलोभन है। पौलुस ने देमास के

द्वारा त्यागे जाने का कारण उसकी घोर सांसारिकता को ठहराया। यदि देमास ने आने वाले संसार के प्रति प्रेम विकसित किया होता, तो वह शहीद होने से पीछे नहीं हटता। स्पष्ट है कि देमास प्रभु को उस प्रकार नहीं जानता था जैसे पौलुस जानता था, और न ही वह “उसके प्रकट होने को प्रिय” जानता था जैसा पौलुस करता था।

हम नहीं जानते कि देमास थिस्सलुनीके क्यों गया। सम्भव है कि वह उसका अपना नगर रहा हो। सम्भव है कि वहाँ उसे कोई कार्य मिला हो। या शायद वह केवल इटली, अद्रिया समुद्र और मकिदुनिया की दूरी अपने और उस पागल व्यक्ति के बीच रखना चाहता था, जो रोम पर शासन कर रहा था। पौलुस ने देमास को धर्मत्यागी नहीं कहा। देमास ने केवल वही किया जो यूहन्ना मरकुस ने किया था, जब उसने पौलुस और बरनबास का साथ छोड़ दिया था (प्रेरितों के काम 13:13)।

(ख) विदा हो चुके लोग—क्रेसकेंस और तीतुस (4:10ख-ग)

प्रेरित के मन में उसके दो और मित्रों का ध्यान भी आया। क्रेसकेंस (पौलुस का एक प्रिय मित्र) गलातिया चला गया था, और तीतुस (पौलुस का प्रसिद्ध सहकर्मी) दलमतिया चला गया था। उनके नामों के साथ वह कलंक नहीं जुड़ा था जो देमास के साथ जुड़ा था।

हम क्रेसकेंस के विषय में कुछ भी नहीं जानते। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी ही पहल पर, परन्तु पौलुस की सहमति से, गलातिया के लिए लौट गया था। वह देमास की तरह चुपके से नहीं गया था। निस्संदेह, गलातिया उस उथल-पुथल के केंद्र से बहुत दूर था, परन्तु वास्तव में रोमी संसार में कोई भी स्थान मसीही के लिए सुरक्षित नहीं था। नीरो के दूत, जासूस और सैनिक हर जगह फैले हुए थे। गलातियों के चंचल स्वभाव को देखते हुए, सम्भव है कि पौलुस ने यह समझा हो कि क्रेसकेंस को अपने आशीर्वाद के साथ गलातिया जाने देना उचित है; परन्तु यह भी एक और विदाई ही थी। सम्भव है कि तीतुस भी इसी प्रकार दलमतिया गया हो।

हम तीतुस के विषय में जानते हैं। कुछ वर्ष पहले कुरिन्थुस के संकट के समय पौलुस ने उसका उपयोग किया था, और उसने उसे क्रेते द्वीप पर छोड़ दिया था ताकि वहाँ की कलीसियाओं में सुव्यवस्था और अनुशासन स्थापित करे। लगभग उसी समय जब पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी पहली पत्री लिखी, उसने तीतुस को भी निर्देशों से भरी एक समान पत्री लिखी थी। तीतुस दृढ़ स्वभाव का व्यक्ति था। हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह पौलुस को संकट की घड़ी में छोड़ देता।

पौलुस की अंतिम यात्राओं और उसकी गिरफ्तारी के वास्तविक स्थान के विषय में परिस्थितियाँ स्पष्ट नहीं हैं। फिर भी, हम जानते हैं कि वह कुरिन्थुस के पास निकुपुलिस में शीतकाल बिताने का इरादा रखता था। उसने तीतुस को निकुपुलिस में उससे मिलने के लिए बुलाया और अरतिमास को क्रेते में तीतुस के कार्यभार को सँभालने के लिए भेजा। जब तीतुस निकुपुलिस पहुँचा, तो सम्भव है कि उसने पाया हो कि पौलुस पहले ही गिरफ्तार हो चुका है और अब रोम में कैदी है। इस बात की भी सम्भावना है कि वह पौलुस के पीछे-पीछे रोम गया हो और वहाँ से पौलुस के आदेश पर दलमतिया चला गया हो। यह भी सम्भव है कि तीतुस ने पौलुस को निकुपुलिस में ही पाया हो और वहाँ से दलमतिया गया हो, जो रोम से बहुत दूर नहीं था। दलमतिया, अद्रिया समुद्र के पार, इटली के पूर्वी तट के समानान्तर फैला हुआ था।

(ग) वैद्य—लूका (4:11क)

देमास, क्रेसकेंस और तीतुस चले गए थे। केवल लूका ही पौलुस के साथ रह गया था। लूका और पौलुस ने पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान त्रोआस में मिलने के बाद समय-समय पर साथ-साथ यात्रा की थी। लूका सम्भवतः एक यूनानी था; हो सकता है कि पौलुस उसे अपने तरसुस के विद्यार्थी दिनों से जानता हो। यह भी सम्भव है कि लूका वही “मकिदुनिया का मनुष्य” हो, जिससे पौलुस अपनी महत्वपूर्ण दर्शन के बाद मिला था (प्रेरितों के काम 16:9)।

लूका पवित्रशास्त्र में सदैव नम्रता से स्वयं को परदे के पीछे रखता है। प्रेरितों के काम की कहानी में पौलुस के साथ उसकी उपस्थिति “हम” शब्द के प्रयोग से प्रकट होती है। लूका उस महत्वपूर्ण समुद्री यात्रा में पौलुस के साथ था, जिसका उसने प्रेरितों के काम 27 में बहुत जीवंत वर्णन किया है, और ऐसा प्रतीत होता है कि वह पौलुस की पहली, दो वर्ष की रोमी कैद के दौरान भी उसके साथ रहा था। उसी समय लूका ने सम्भवतः प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखी। वह उस समय भी पौलुस के साथ था जब प्रेरित ने रोम के कारागृह से कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम अपनी पत्रियाँ लिखीं (कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन 24)। सम्भव है कि लूका पौलुस के साथ उसकी रिहाई और पुनः गिरफ्तारी के बीच के समय में भी रहा हो। शायद, पौलुस को अनेक शारीरिक दुर्बलताएँ थीं, जिनमें से कुछ उन मारों और कष्टों के कारण थीं जो उसने मसीह के कार्य के लिए सहे थे। उसे एक व्यक्तिगत वैद्य की आवश्यकता थी।

प्रिय वैद्य लूका वास्तव में “प्रिय वैद्य” ही था। पौलुस लगभग सबके द्वारा छोड़ दिया गया था और भयानक परिस्थितियों में कैद था, फिर भी वह परमेश्वर का धन्यवाद करता था कि साहसी लूका अभी भी उसके साथ खड़ा था। नीरो के अत्याचारों के प्रमाण हर ओर दिखाई दे रहे थे, और मृत्यु की कुल्हाड़ी निकट आती जा रही थी। हम “केवल लूका मेरे साथ है” इन शब्दों की करुणा को कैसे माप सकते हैं? उन हजारों लोगों में से, जिन्हें पौलुस मसीह के पास लाया था और जिनकी उसने सेवा की थी, केवल लूका ही अब उसका निकट और प्रतिदिन का साथी रह गया था। दूसरी ओर, “केवल लूका मेरे साथ है” इन शब्दों में छिपी स्तुति और धन्यवाद को हम कैसे माप सकते हैं? निश्चय ही स्वर्ग में लूका का प्रतिफल अत्यंत महान होगा!

(घ) शिष्य—मरकुस (4:11ख)

पौलुस ने आगे कहा, “मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है।” पौलुस और मरकुस का इतिहास कुछ उतार-चढ़ाव भरा रहा था। जब पौलुस और बरनबास अपनी पहली प्रचार-यात्रा पर निकले, तो मरकुस उनके साथ उनके “सेवक” के रूप में गया (प्रेरितों के काम 12:25-13:5)। परन्तु जब आगे आने वाले खतरों का सामना करना पड़ा, तो मरकुस उन्हें छोड़कर लौट गया। पौलुस ने गलातिया जाने का निश्चय किया था, और टॉरस पर्वत तथा सिलिसियाई द्वार से होकर जाने वाला मार्ग डाकुओं से कुख्यात रूप से भरा हुआ था। मरकुस बीच में ही छोड़कर चला गया। बाद में, जब पौलुस और बरनबास अपनी दूसरी प्रचार-यात्रा की योजना बना रहे थे, तो मरकुस को लेकर उनके बीच विवाद हो गया। बरनबास, जो मरकुस का रिश्तेदार था, उसे दूसरा अवसर देना चाहता था और अपने साथ ले जाना चाहता था। परन्तु पौलुस ने कहा, “नहीं!” इसके बाद ऐसा मतभेद हुआ जिसके परिणामस्वरूप उनके मार्ग अलग-अलग हो गए। (प्रेरितों के काम 15:36-41)।

ऐसा प्रतीत होता है कि जब पौलुस ने रोम में अपनी पहली कैद के दौरान कुलुस्सियों और फिलेमोन के नाम पत्रियाँ लिखीं (कुलुस्सियों 4:10; फिलेमोन 24), उससे पहले मरकुस और पौलुस के बीच मेल-मिलाप हो चुका था। सम्भव है कि जब पौलुस ने तीमुथियुस से मरकुस को साथ लाने के लिए कहा, उस समय मरकुस तीमुथियुस के साथ या उसके निकट ही था। निश्चित ही कुछ ऐसा हुआ था जिसने मरकुस के प्रति पौलुस का विश्वास फिर से दृढ़ कर दिया। ऐसा लगता है कि बरनबास और पतरस ने मरकुस को अपने साथ लिया और उसे एक और अवसर दिया।।

फिर एक दिन, सम्भव है, किसी ने पौलुस को एक पाण्डुलिपि दी और कहा, “आपको इसे पढ़ना चाहिए। यह मसीह के जीवन और सेवा का सुसमाचार है। इसमें पतरस की छाप स्पष्ट दिखाई देती है, परन्तु इसे उसने स्वयं नहीं लिखा था। यह तेज गति से आगे बढ़ने वाला है और इसके मन में एक गैर-यहूदी, संभवतः रोमी पाठकों का ध्यान रखा गया है। यह प्रभु यीशु को यहोवा के सेवक के रूप में प्रस्तुत करता है। इसे ‘सेवक का सुसमाचार’ कहा जा सकता है।”

पौलुस ने उस पाण्डुलिपि को बड़ी रुचि के साथ पढ़ा। उसने पूछा, “यह किसने लिखा?”

“मरकुस!”, जवाब मिला!

“अच्छा, बरनबास सही था। मुझे पता नहीं था कि उस युवक में यह क्षमता है!”

हम निश्चित रूप से नहीं जानते, परन्तु सम्भव है कि ऐसा ही हुआ होगा। किसी भी स्थिति में, कुछ तो अवश्य हुआ था, क्योंकि मरकुस, जो पहले एक सेवक के रूप में असफल रहा था और खतरे से भाग गया था, अब सेवा के लिए उपयोगी बन गया था और खतरे का सामना करने के लिए भी तैयार था। पौलुस उसे देखना चाहता था। इसके अतिरिक्त, तीमुथियुस के लिए यह बेहतर होता कि वह शेरों की मांद जैसे स्थान में प्रवेश करते समय अकेले रोम आने की बजाय किसी के साथ आए।

(ई) भेजा गया—तुखिकुस (4:12)

क्योंकि तीमुथियुस को रोम के लिए प्रस्थान करना था, इसलिए यह उचित था कि इफिसुस में उसके स्थान पर कोई और सेवा सँभाले। इस कारण पौलुस ने अपने मित्र तुखिकुस को वहाँ भेजा। ऐसा लगता है कि इफिसुस उसका अपना नगर था। वह उन अन्यजातियों के दल का सदस्य था, जो यरूशलेम में निर्धनों के लिए इकट्ठी की गई सहायता पहुँचाने के लिए पौलुस के साथ गए थे (प्रेरितों के काम 20:4)। तुखिकुस रोम में भी पौलुस के साथ था, जब उसने कुलुस्सियों के नाम पत्री लिखी (कुलुस्सियों 4:7)। निश्चित ही, तुखिकुस को विदा करते समय पौलुस के हृदय को फिर एक गहरा आघात पहुँचा होगा, क्योंकि वह उसके उज्ज्वल युवा साथियों में से एक था। पौलुस ने कहा, “तुखिकुस को मैं ने इफिसुस भेजा है।”

(च) भरोसा करने योग्य—करपुस (4:13)

ऐसा लगता है कि पौलुस को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि तीमुथियुस रोम आएगा। वह भरोसे के लायक था, जैसे कि करपुस भी था। करपुस यहाँ थोड़ी देर के लिए प्रकट होता है—बस इतना कि उसका नाम पवित्रशास्त्र में लिखा जाए और हमें यह समझ में आए कि वह पौलुस के असंख्य मित्रों में से एक था। प्रेरित ने लिखा, “जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ, जब तू आए तो उसे और पुस्तकें

विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना।” यह एक गंभीर पद है, क्योंकि यह उस अत्यन्त कठिन परिस्थिति की ओर संकेत करता है जिसमें अब पौलुस था—और जिसके विषय में उसने विस्तार से कुछ भी नहीं लिखा।

हम यह मान सकते हैं कि पौलुस मामेर्तीन कारागृह में था। हम कल्पना कर सकते हैं कि रोमी सैनिक उसे उसके उत्तर-पूर्वी भाग से ले जाते हुए, तथाकथित “कराहने की सीढ़ियों” से ऊपर ले गए और उस अंधेरे भीतरी भाग में पहुँचाया, जहाँ उसे जल्लाद के हवाले कर दिया गया। उसके ऊपरी वस्त्र उतार लिए गए और उसे केवल उसके भीतर के वस्त्र के साथ अधनंगा छोड़ दिया गया। वह एक प्रसिद्ध कैदी था—घृणा किए जाने वाले मसीहियों का स्वीकार किया हुआ और स्वयं घोषित अगुवा था; इसलिए कारागृह का रक्षक उसके प्रति किसी प्रकार की ढील देने का साहस नहीं कर सकता था। इसके बाद पौलुस को फर्श में बने एक द्वार के पास ले जाया गया। वह द्वार खोला गया, रस्सियाँ उसकी बाँहों के नीचे से निकाली गईं, और उसे नीचे उस भयानक अंधेरी कोठरी में उतारा गया जिसे टुल्लियानुम कहा जाता था। जब उसके पैर ज़मीन को छू गए, तो रस्सियाँ ऊपर खींच ली गईं और दरवाज़े को वापस जोर से बंद कर दिया गया।

पौलुस के ज़माने में, उस कालकोठरी का नाम फुसफुसाकर बोला जाता था। वह एक अंधेरा गड्ढा था, जो ज़मीन में बना हुआ एक गड्ढा था। वहाँ नमी और ठंडक भरी रहती थी। उसका बिस्तर बासी और गीले भूसे का एक ढेर था, और फर्श गन्दगी से भरा हुआ था। वहाँ एक जलस्रोत तो था, परन्तु हवा दूषित और बहुत ही दुर्गन्ध वाली थी। समय-समय पर कैदियों के लिए भोजन ऊपर से नीचे उतारा जाता था—ऐसा साधारण भोजन जो किसी तरह उनके प्राण बचाए रखे—और सम्भवतः पतला, खट्टा दाखरस की एक छोटी मशक भी उतारी जाती थी। कैदियों के बारे में यह कहा जाता था कि उस भयानक गड्ढे में उनमें से कईयों को चूहे खा जाते थे।

पौलुस की अंतिम कारावास की स्थिति ऐसी भयानक थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह तीमुथियुस से अपना बागा लाने के लिए कह रहा था। इसमें भी आश्चर्य नहीं कि वह लूका को कितना मूल्य देता था, जो उसकी आवश्यकता में उसके साथ खड़ा रहा और किसी प्रकार उस कड़ी सुरक्षा को पार कर गया जो नीरो के सबसे महत्वपूर्ण कारागृह के चारों ओर थी। संभव है कि कुछ समय बाद उसकी कैद की कठोरता थोड़ी कम हुई हो, क्योंकि किसी तरह वह अपनी यह अंतिम पत्री लिखकर पूरी कर पाया। शायद उसे एक दीपक रखने की अनुमति दी गई हो। सम्भव है कि पौलुस की रोमी नागरिकता ने उसे कुछ राहत दिलाई हो। यह भी हो सकता है कि लूका ने स्वेच्छा से उसके साथ वही कष्ट सहा हो। नीरो निस्संदेह पौलुस के दण्ड से कुछ राजनीतिक लाभ उठाना चाहता था और नहीं चाहता था कि वह टुल्लियानुम की कालकोठरी में भूख, बीमारी या उपेक्षा से मर जाए—यद्यपि यह जानकर कि पौलुस वहाँ है, उसे अवश्य ही एक दुष्टतापूर्ण संतोष मिलता होगा।

अपने कारागृह की ठंड में, पौलुस को “वह बागा याद आया जो त्रोआस में छोड़ दिया था।” त्रोआस ही वह स्थान था जहाँ पौलुस को सुसमाचार के साथ यूरोप जाने का मकिदुनिया बुलाहट मिली थी। “बागा” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह एक भारी ओढ़ने वाले वस्त्र को दर्शाता है, जिसे यात्री तूफानी मौसम से अपने को बचाने के लिए इस्तेमाल करते थे। यह बागा आम तौर पर बकरी के बाल से बनाया जाता था, और वह कठोर तथा भारी होता था, और निश्चित ही भूमध्यसागर के गर्मी के महीनों में इसकी कोई

आवश्यकता नहीं होती थी। जब पौलुस ने वह बागा करपुस के पास छोड़ा था, तब वह नहीं जानता था कि बाद में उसे उसकी ज़रूरत पड़ेगी।

विलियम टिन्डेल का भी ऐसा ही अनुभव था। अंग्रेज़ी बाइबल के जनक टिन्डेल ने पवित्रशास्त्र का अनुवाद इब्रानी और यूनानी से किया (विक्लिफ के विपरीत, जिन्होंने लैटिन से अनुवाद किया था)। टिन्डेल का उद्देश्य था कि “हल चलाने वाला एक साधारण लड़का भी पवित्रशास्त्र को पादरियों से अधिक जान सके।” उसके किए हुए कार्य का लगभग नब्बे प्रतिशत भाग सीधे किंग जेम्स अनुवाद में सम्मिलित हो गया। परन्तु पादरी वर्ग उससे घृणा करता था। इंग्लैंड में उसके लिए स्थान न होने के कारण वह महाद्वीप की ओर भाग गए, जहाँ उनके शत्रु उसके विरुद्ध षड्यंत्र करते रहे। अन्ततः एक ऐसे व्यक्ति ने उन्हें धोखा दिया, जिसने उसके विश्वास को जीत लिया था। टिन्डेल को पवित्र रोमी साम्राज्य के विशेष अधिकारियों द्वारा विधर्मी ठहराकर उस पर मुकदमा चलाया गया। न्याय की प्रतीक्षा करते हुए वे कई महीनों तक एक बहुत ही असुविधाजनक कारागृह में पड़े रहे। 6 अक्टूबर, शुक्रवार, 1536 को, बेल्जियम के विलवोर्डे में उन्हें जीवित जला दिया गया।

टिन्डेल के कारागृह से लिखे गए पत्रों में से एक आज भी सुरक्षित है। यह पत्र उनके अपने हाथ से सन् 1535 की सर्दियों में लैटिन भाषा में लिखा गया था और किले के अधिकारी को संबोधित था। उस पत्र में टिन्डेल ने विनती की कि उनके व्यक्तिगत सामान में से उन्हें एक गरम टोपी और एक गरम बागा भेजने की अनुमति दी जाए, क्योंकि जो उनके पास था वह बहुत ही पतला था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने एक कपड़े का टुकड़ा भी माँगा, जिससे वह अपने वस्त्र को सिल सके। उन्होंने लिखा, “मेरा बाहरी कोट घिस चुका है।” फिर उन्होंने आगे कहा, “परन्तु सबसे बढ़कर, मैं आपसे विनती और प्रार्थना करता हूँ कि आप अधिकारी से आग्रह करें कि वह कृपापूर्वक मुझे इब्रानी बाइबल, इब्रानी व्याकरण और इब्रानी शब्दकोश रखने की अनुमति दे, ताकि मैं अपना समय उसके अध्ययन में बिता सकूँ।” निस्सन्देह, टिन्डेल भली-भाँति जानते थे कि उनकी स्थिति किस प्रकार पौलुस की स्थिति के समान तुल्य ही थी।

पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया, “जब तू आए तो... पुस्तकें... और विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना।” “पुस्तकों” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह “बिब्लियॉन” है, जो नये नियम में एक सामान्य शब्द है। इसी से हमारे शब्द “ग्रंथ-सूची” और “बाइबल” शब्द निकले हैं। मूल रूप से यह शब्द पपीरस पौधे के भीतरी भाग को दर्शाता था। बाद में यह उस कागज़ के लिए प्रयोग होने लगा, जिसे मिस्रवासी इसी छाल से बनाते थे, और इस प्रकार लिखी हुई पुस्तक के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। यहाँ जिन पुस्तकों का पौलुस उल्लेख करता है, वे पपीरस के बने हुए चर्मपत्र थे।

“चर्मपत्र” के लिए मूल रूप से जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह “मेम्ब्राना” है, और यह नए नियम में केवल यहीं पाया जाता है। यह लिखने की सामग्री भेड़ों और बकरियों की खाल से तैयार की जाती थी, और उत्तम गुणवत्ता की सामग्री बछड़ों या मेमनों की खाल से बनाई जाती थी। पौलुस की ये पत्रियाँ सम्भवतः पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की मूल्यवान प्रतियाँ थीं। उसकी “पुस्तकें” अन्य प्रकार के लेखों का एक संग्रह थीं।

किसी भी स्थिति में, पौलुस चाहता था कि अपनी मृत्यु की घड़ियाँ निकट आते हुए भी वह अपनी पुस्तकों और अपने पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता रहे। सम्भव है कि वह उन्हें तीमुथियुस और लूका के लिए

अपनी धरोहर के रूप में छोड़ना चाहता हो। उसके पास देने के लिए यही सब था—उसका बागा और उसकी पुस्तकें। प्रभु के पास तो देने के लिए इससे भी कम था—केवल उसके वस्त्र और उसका बागा।

जैसा कि स्पर्जन ने एक बार कहा था, पौलुस एक पवित्र आत्मा से प्रेरित प्रेरित था; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। वह कम से कम तीस वर्षों से प्रचार कर रहा था; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। उसने प्रभु को देखा था; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। वह तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया था; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। उसने ऐसी बातें सुनी थीं जिन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। उसने नये नियम का एक बड़ा भाग लिखा था; फिर भी उसे अपनी पुस्तकें चाहिए थीं। “पुस्तकें ले आना,” उसने कहा।

(2) उसका शत्रु—सिकंदर (4:14-15)

पौलुस ने तीमुथियुस के साथ एक दुष्ट मनुष्य के विषय में एक स्मरणीय बात और चेतावनी साझा की: “सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराईयाँ की हैं” (4:14)। बहुत सम्भव है कि यह वही सिकन्दर हो जिसका उल्लेख 1 तीमुथियुस 1:20 में मिलता है; पौलुस ने उसे शैतान को सौंप दिया था ताकि वह निन्दा करना छोड़ना सीखे। कुछ विद्वानों का विचार है कि यह वही सिकन्दर है जिसका उल्लेख लूका ने इफिसुस के उस दंगे के संदर्भ में किया है, जिसे देमेत्रियुस नामक चाँदी के कारीगर ने भड़काया था (प्रेरितों के काम 19:33)। इफिसुस की भीड़ उस समय अनियंत्रित हो गई थी, जब यहूदियों ने सिकन्दर नामक एक व्यक्ति को अपना प्रवक्ता बनाने की कोशिश की। सम्भवतः वे यह दिखाना चाहते थे कि यहूदी समुदाय का मसीहियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। किन्तु जैसे ही उसने बोलने का प्रयास किया, भीड़ ने उसे पहिचान लिया कि वह यहूदी है और चिल्ला चिल्लाकर उसकी आवाज़ को दबा दिया। यदि वह वही सिकन्दर था जिसका उल्लेख 1 तीमुथियुस में है, तो वह पेशे से एक धातु का कारीगर था। सम्भवतः इसी कारण इफिसुस के यहूदियों ने उसे अपना प्रवक्ता चुना होगा; उन्हें लगा कि उनके ही काम के एक व्यक्ति की बात सुनी जाएगी।

वह चाहे जो भी था, वह पौलुस और सुसमाचार से घृणा करता था। उसने पौलुस के साथ “बहुत बुराईयाँ की।” यूनानी भाषा में इसका अर्थ “अनेक बुरी बातें” भी किया जा सकता है। “बुराई” के लिए जो शब्द मूल रूप से यहाँ प्रयोग हुआ है, वह “काकोस” है, जो दुष्टता और गिरे हुए स्वभाव को दर्शाता है। हमें यह नहीं बताया गया कि इस दुष्ट व्यक्ति ने किस प्रकार अपनी बुराई को पौलुस के विरुद्ध प्रकट किया।

संभव है कि सिकन्दर ने रोम में पौलुस के पहले मुकद्दमे के समय उसका विरोध किया हो। शायद उसने यहूदियों की जनता को पौलुस और मसीही विश्वास के विरुद्ध, और नीरो के समर्थन में उकसाया हो। रोम में यहूदी समुदाय स्वयं में काफी प्रभावशाली था, परन्तु सम्भव है कि वे इस बात से प्रसन्न हुए हों कि ध्यान उन पर से हटकर मसीहियों पर केन्द्रित हो गया था। यहूदियों ने रोमी यहूदी-विरोध का अनुभव किया था और वे उसके कारण सदा भयभीत रहते थे (प्रेरितों के काम 18:2)।

नीरो यहूदी समुदाय से भली-भाँति परिचित था, क्योंकि उसने एक यहूदी स्त्री से विवाह किया था; और अपने अनुकूल समयों में वह उसकी यहूदी सोच को अवश्य सुनता होगा। सम्भव है कि नीरो ने सिकन्दर जैसे यहूदी का स्वागत किया हो और उसे प्रोत्साहित भी किया हो। उसकी ताने और निन्दाएँ, मसीहियों के विरुद्ध अपने अभियान के दौरान, नीरो के दोषी मन के लिए किसी मरहम के समान काम कर रही होंगी।

संभव है कि पौलुस का सामना करने में नीरो स्वयं भी असहज रहा हो और उसने मुकदमे में सिकन्दर की सहायता चाही हो। पौलुस कोई साधारण या कमजोर व्यक्ति नहीं था—यहाँ तक कि एक रोमी सम्राट के लिए भी नहीं।

संभव है कि सिकन्दर ने पौलुस के विरुद्ध गवाही दी हो। उसने इफिसुस के दंगे को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया हो, यह दिखाने के लिए कि पौलुस रोमी व्यवस्था और कानून के विरुद्ध भड़काऊ और अशान्ति फैलाने वाला है। सिकन्दर ने सम्भवतः गलातिया, मकिदुनिया, कुरिन्थुस और यरूशलेम की ऐसी घटनाओं की एक श्रृंखला प्रस्तुत की हो। अपने विवरण में, उसने उन घटनाओं को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया हो, यहूदियों द्वारा दंगे भड़काने के तथ्य को हटाकर, और पौलुस को एक अराजकता फैलाने वाला और एक अवैध धर्म का मुख्य प्रचारक दिखाया हो।

संभव है कि सिकन्दर ने नीरो की दृष्टि में उसकी कृपादृष्टि पाई हो, परन्तु वह एक नाश होने के लिए नियुक्त मनुष्य था। पौलुस ने लिखा, “प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा” (2 तीमुथियुस 4:14)। यदि यह वही सिकन्दर था जिसे पौलुस पहले ही शैतान के हवाले कर चुका था, तो उस अनुशासन का उस पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा था। वह और भी अधिक बुराई की ओर बढ़ गया था। फिर भी, हम पौलुस के शब्दों में कोई द्वेष या कडुवाहट को नहीं देखते। वह केवल इस बात के लिए कृतज्ञ था कि परमेश्वर अभी भी सिंहासन पर विराजमान है और नीरो और सिकन्दर जैसे लोग सदा जीवित नहीं रहते।

फिर भी, सिकन्दर एक खतरनाक व्यक्ति था, और तीमुथियुस को उसके विषय में चेतावनी देना आवश्यक था। “तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया है” (4:15)। यदि सिकन्दर इफिसुस का रहने वाला था, तो निश्चय ही वह तीमुथियुस को भी जानता और उससे घृणा करता था। चाहे वह इफिसुस में हो या रोम में, तीमुथियुस को इस चालाक विरोधी से सतर्क रहने की आवश्यकता थी। “विरोध किया” के लिए जो यूनानी शब्द है, उसका अर्थ है “अपने आप को किसी के विरुद्ध खड़ा करना।” यही शब्द उस प्रकार के विरोध के लिए प्रयोग हुआ है, जैसा मिस्र के जादूगरों ने मूसा का सामना करते समय उसका विरोध किया था और जिससे फिरौन का हृदय और अधिक कठोर हो गया था (3:8)। सिकन्दर ने भी वही गलती की थी। पौलुस और सुसमाचार का जानबूझकर विरोध करके, इस ठठेरे ने नीरो के दुष्ट संकल्प को और भी अधिक दृढ़ कर दिया।

3. पौलुस का शौर्य (4:16-18)

क. पौलुस का अकेलापन (4:16)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, “मेरे पहले प्रतिवाद के समय किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था। भला हो कि इसका उनको लेखा देना न पड़े।” इस प्रकार, पौलुस ने उसी कडुवे अनुभव का स्वाद चखा, जिसे उसके प्रिय प्रभु ने चखा था, जब सबके द्वारा त्यागे जाने पर वह कैफा, पीलातुस और हेरोदेस के सामने बिल्कुल अकेला खड़ा था।

हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं जब पौलुस पहली बार नीरो के सामने उपस्थित हुआ। वहाँ सम्राट अपने राजकीय वस्त्रों में बैठा था। उसके शासनकाल के कांस्य सिक्कों पर उसका चित्र मिलता है—मोटी गर्दन वाला, भारी भौंहों वाला, चपटी नाक वाला और कठोर मुख वाला व्यक्ति। उसकी आँखें हल्की-नीली

थीं। वह तोंद वाला था और उसकी टाँगें पतली थीं, और उसे त्वचा की समस्या तथा शरीर से दुर्गन्ध आने की शिकायत थी। उसके चारों ओर उसके सलाहकार और चापलूस खड़े थे। शाही पहरेदार वहाँ उपस्थित सभी लोगों पर कड़ी निगाह रखे हुए थे।

वहाँ नीरो बैठा था—जो अनेक सेनाओं का स्वामी था। उसकी राजनीतिक शक्ति बहुत दूर तक फैली हुई थी, यहाँ तक कि दूर ब्रिटेन तक भी। वह वहाँ बैठा था—घृणित और खतरनाक और अपने मन पर अनेक अपराधों का बोझ लिए हुए। जब वह पौलुस से पूछताछ कर रहा था, उसी समय उसके दूत रोम की पहाड़ियों में उन पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों को ढूँढ़ रहे थे जो मसीह का नाम लेते थे। अपने छिपने के स्थानों में, परमेश्वर के लहू से खरीदे गए लोग, पकड़े जाने के भय से काँपते हुए, जागते और प्रार्थना करते थे। क्या नीरो ही वह मसीह-विरोधी था? कुछ मसीही ऐसा ही सोचते थे।

और दूसरी ओर, वहाँ पौलुस खड़ा था। उसे उस गहरे कालकोठरी से ऊपर लाया गया था। साफ़ किया गया, वस्त्र पहनाए गए, और कड़ी पहरेदारी के बीच उसे नीरो के सामने लाया गया। पौलुस नागरिकता से रोमी, जन्म से यहूदी और नए जन्म के द्वारा मसीही था। वह एक पवित्र जन था, परन्तु रूप-रंग में उतना आकर्षक नहीं था। उसके शत्रु कहते थे कि उसका “वह देह का निर्बल और वक्तव्य में हल्का है” (2 कुरिन्थियों 10:10)। कुछ बाइबल विद्वानों का विचार है कि उसे आँखों की कोई विकृत बीमारी थी; अन्य मानते हैं कि उसे मिर्गी की बीमारी थी। किसी भी मामले में, अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान वह बहुत मार खा चुका था और उसका शरीर कष्टों से टूट चुका था।

लेकिन पौलुस के पास ब्रह्मांड को समझने की क्षमता थी। नीरो यह नहीं जानता था कि वह ऐसे व्यक्ति का सामना कर रहा है जो सम्भवतः संसार के सबसे बुद्धिमान मनुष्यों में से एक था, जिसका तीक्ष्ण मन परमेश्वर के सर्वव्यापी और सर्वज्ञ आत्मा के द्वारा प्रकाशित था। रोम में कोई भी व्यक्ति वाद-विवाद में पौलुस को पराजित नहीं कर सकता था। नीरो, अपनी भ्रष्टता के बावजूद, कुछ प्रतिभा तो रखता ही था, परन्तु वह पौलुस की बराबरी नहीं कर सकता था।

इसके अतिरिक्त, पौलुस निडर था। वह विनम्र अवश्य रहता, परन्तु कभी भी डरकर झुकता नहीं था (प्रेरितों के काम 23:1-5)। उसने बार-बार अपने साहस को सिद्ध किया था। नीरो के चारों ओर जो चापलूस और कमजोर लोग थे, वे सम्राट से अत्यन्त भयभीत रहते थे, परन्तु पौलुस को नीरो से किसी भी प्रकार का भय नहीं था। जब प्रेरित वहाँ खड़ा था, तो उसने केवल एक दुखी और अपवित्र मनुष्य को अपने सामने देखा, जिसे अत्याधिक रूप से मसीह की आवश्यकता थी। पौलुस दृढ़ निश्चय कर चुका था कि वह इस पापी के प्राण के लिए एक बार अवश्य प्रयत्न करेगा (प्रेरितों के काम 23:11; इफिसियों 6:18-20)।

इस प्रकार हम उन्हें एक दूसरे के आमने-सामने खड़ा देखते हैं—शैतान का मनुष्य और परमेश्वर का मनुष्य; पृथ्वी का सबसे दुष्ट मनुष्य और सबसे धर्मी मनुष्य। यदि पौलुस को कुछ कहने का अवसर मिला हो, तो उसने नीरो से क्या कहा होगा? सम्भव है कि उसने वही कहा हो जो उसने कभी राजा अग्रिप्पा से कहा था (प्रेरितों के काम 26:1-29)। यदि पौलुस को अपनी गवाही देने और अपने संदेश को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का अवसर मिला होगा, तो उसने “धर्म, संयम और आने वाले न्याय” के विषय में तर्क किया होगा, यहाँ तक कि नीरो भी वैसे ही काँप उठा हो जैसा कभी फेलिक्स काँप उठा था (प्रेरितों के काम 24:25)।

पौलुस ने उस मुकदमे के विषय में एक बात स्पष्ट कही—वह वहाँ अकेला खड़ा था। उसने 2 तीमुथियुस 4:16 में लिखा, “किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था।” “साथ नहीं दिया” के लिए मूल रूप से जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह “पराजिनोमाई” है, जिसका तात्पर्य न्यायालय में आकर अभियुक्त के पक्ष में खड़ा होना है। पौलुस के पास कोई कानूनी सहायक नहीं था, कोई वकील नहीं, कोई ऐसा नहीं जो सिकंदर जैसे लोगों के झूठ और तोड़-मरोड़ की बातों का उत्तर दे सके, जिन्हें सम्भवतः अभियोग में सहायता के लिए बुलाया गया था। “छोड़ दिया” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वही शब्द पौलुस ने देमास के विषय में भी प्रयोग किया था। वास्तव में, प्रेरित पौलुस कह रहा है, “उन्होंने सब ने मुझे त्याग दिया।” उसे उस कड़वे अनुभव का भी अन्त तक सामना करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप, नीरो ने अपनी दुष्टता में और अधिक दृढ़ होकर पौलुस को मृत्यु दण्ड दे दिया, परन्तु उसने उसके दण्ड के समय और तरीके को निर्धारित नहीं किया।

कौन जाने कि उसके बाद नीरो कभी चैन से सो पाया या नहीं। जैसे स्तिफनुस का चेहरा शाऊल का पीछा करता रहा, वैसे ही पौलुस की छवि अवश्य ही नीरो का पीछा करती रही होगी। उसने कभी ऐसा मनुष्य नहीं देखा था। पौलुस एक ऐसा व्यक्ति था जो निडर, अडिग और अत्यन्त सच्चा था। वह ऐसा मनुष्य था जो उसकी आँखों में आँखें डालकर बात करता था, शिष्टता को वस्त्र की तरह धारण करता था, प्रेम में सत्य बोलता था, और—क्या यह सम्भव है?—ऐसे बोलता था मानो वह वास्तव में अपने न्यायी और आरोप लगाने वालों से प्रेम करता हो। पौलुस की उपस्थिति में, नीरो जितना कभी मसीह के समान होने के निकट आ सकता था—जितना वह कभी स्वर्ग के निकट आ सकता था, उतना निकट था। अपने पूरे जीवन में वह दुष्टता और पतन के बीच घिरा रहा था। उसने कुछ बुद्धिमान लोगों को देखा था, बहुत से चतुर लोगों को, और कुछ साहसी लोगों को भी देखा था। परन्तु अब उसने एक भले मनुष्य को देखा—ऐसा मनुष्य जो पृथ्वी पर जितना सम्भव हो सकता है, उतना यीशु के समान था। “ऐसे मनुष्य का अन्त करो!” यरूशलेम की भीड़ ने एक बार चिल्लाया था (प्रेरितों के काम 22:22)। नीरो ने भी वैसा ही किया।

ख. पौलुस का प्रभु (4:17-18)

(1) प्रभु की सजीव उपस्थिति (4:17क)

क्या पौलुस सचमुच सबके द्वारा छोड़ दिया गया था और उसे रोमी जंगली पशु का अकेले सामना करना पड़ा था? नहीं! प्रेरित का मन प्रभु की उपस्थिति से आश्चस्त था। उसने कहा, “परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा।”

अचानक, उसे एहसास हुआ कि कोई अदृश्य रूप से उस न्याय-कक्ष में आ गया है। अब पौलुस को निर्दयी नीरो और ठठेरे सिकंदर का अकेले सामना नहीं करना था। वर्षों पहले दमिश्क के मार्ग पर उसने प्रभु का मुख देखा था। अब उसे पता चला कि वही प्रभु स्वर्ग से उतरकर संघर्ष कर रहे अपने गवाह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। प्रेम, आनन्द और वह शान्ति जो सारी समझ से परे है, पौलुस के मन में भर गई। उसका हृदय अब नहीं घबराया। उसके विचार स्पष्ट हो गए। उसका निश्चय और दृढ़ हो गया। यीशु ने अपने चेहलों से वायदा किया था, “देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ” (मत्ती 28:20); और पौलुस ने पहले से भी अधिक इस वायदे को सच्चा पाया। अब उसे किसी अन्य कानूनी सहायक की क्या आवश्यकता

थी? जो वर्षों से पिता के सामने उसका सहायक था (1 यूहन्ना 2:1), वही अब उसके पास खड़ा था और उसके मन में उचित विचार उत्पन्न कर रहा था।

(2) प्रभु की विजयी उपस्थिति (4:17ख)

मुकदमे के समय प्रभु की उपस्थिति का उल्लेख करते हुए, पौलुस ने आगे कहा, प्रभु ने “मुझे सामर्थ्य दी।” यहाँ “सामर्थ्य” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह “डूनामिस” (अर्थात् शक्ति) से सम्बन्धित है। प्रभु ने पौलुस को सामर्थ्य से परिपूर्ण कर दिया; उसने उसमें सामर्थ्य उण्डेल दी।

आखिरकार, पौलुस भी “हमारे समान ही एक साधारण स्वभाव का मनुष्य” था (याकूब 5:17)। वह भय से अछूता नहीं था। मुकदमे से पहले, उस आने वाले मुकदमे के विचार से उसके भीतर अवश्य ही भय उत्पन्न हुआ होगा। परन्तु जब वही प्रभु, जो शद्रक, मेशक और अबेदनगो के साथ आग की भट्टी में खड़ा था (दानियेल 3:19-25), उस भ्रष्ट रोमी न्यायालय में पौलुस के साथ खड़ा हुआ, तो वह अब अपराजित था। नीरो उसके साथ जो सबसे अधिक कुछ कर सकता था, वह केवल उसे मार सकता था—और सम्राट यह भी तब तक नहीं कर सकता था जब तक प्रभु उसे इसकी अनुमति न देता।

(3) प्रभु की आश्चस्त करने वाली उपस्थिति (4:17ग)

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि प्रभु ने उसे इसलिये सामर्थ्य दी, “ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो और सब अन्यजातीय सुन लें।” प्रभु ने उसे वह सामर्थ्य दी कि वह उसी न्यायालय में और उसी सम्राट के सामने सुसमाचार को स्पष्ट रूप से सुना सके। पौलुस ने अनेक स्थानों पर सुसमाचार का प्रचार किया था। उसने यरूशलेम के मन्दिर के आँगन में क्रोधित भीड़ के सामने प्रचार किया था। उसने एथेंस के अरियुपगुस में ठट्ठा करने वाली सभा के सामने प्रचार किया था। उसने फेलिक्स, फेस्तुस और अग्रिप्पा के सामने भी सुसमाचार सुनाया था। अब, जब वह रोमी संसार के सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँच गया था, तो पौलुस ने राज्य के उच्चतम अधिकारियों—यहाँ तक कि नीरो के सामने भी—सुसमाचार को पूर्ण रूप से और स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया। जहाँ तक हमें ज्ञात है, यह “प्रचार” पौलुस का अंतिम संदेश था।

यह उचित ही था कि नीरो को भी कम-से-कम एक अवसर मिले कि वह सुसमाचार को बिना किसी मिलावट और स्पष्ट रूप से सुन सके, इससे पहले कि वह स्वयं परमेश्वर के महान श्वेत सिंहासन के सामने बुलाया जाए। अब पौलुस का मनोभाव एस्तेर रानी के समान था, जिसे “ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?” वह स्वयं भी उसके साहसी शब्दों को दोहरा सकता था: “और यदि नष्ट हो गया तो हो गया” (एस्तेर 4:14,16)।

(4) प्रभु की नियंत्रणकारी उपस्थिति (4:17घ)

“मैं सिंह के मुँह से छुड़ाया गया,” पौलुस ने लिखा। निश्चय ही यहाँ वह नीरो की ओर संकेत कर रहा था, जो अपने ही वासनाओं के अतिरिक्त किसी और नियम से नहीं चलता था। संभव है कि सिकंदर के झूठ और बोलने की निपुणता ने नीरो को और अधिक कठोर बना दिया हो। सम्भव है कि पौलुस की गवाही पर सम्राट क्रोध से दाँत पीस रहा हो।

नीरो पूरी तरह सक्षम था कि वह पौलुस को कोड़े लगवाकर अधमरा कर दे—चाहे वह रोमी नागरिक ही क्यों न हो। नीरो उसे मैदान में जंगली पशुओं के सामने फेंक सकता था। वह नियम और परम्पराओं की अवहेलना करते हुए, पौलुस की रोमी नागरिकता का उपहास उड़ाकर उसे कूस पर चढ़ा सकता था। वह उसे उसी समय मृत्यु-दण्ड भी दे सकता था। परन्तु पौलुस का समय अभी नहीं आया था। जब तक उसका कार्य पूरा नहीं हुआ, वह मानो पराजित था।

(5) प्रभु की निरंतर उपस्थिति (4:18)

अपनी कालकोठरी में वापस लौटकर, पौलुस ने यह विश्वास प्रकट किया कि प्रभु उसे उस सम्राट से बचाएगा और अपने राज्य के लिये सुरक्षित रखेगा: “और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित पहुँचाएगा।” पौलुस पृथ्वी के राज्यों को बहुत देख चुका था। वह उस स्वर्गीय राज्य की आशा करता था, जिसका शासन उसी के हाथ में है जिसकी उपस्थिति उसके साथ थी। सम्भव है कि पौलुस को फिर एक बार सुनवाई का अवसर मिला हो, परन्तु नीरो उसे जीवित नहीं छोड़ने वाला था। नीरो उससे डरता भी था और उससे घृणा भी करता था—जैसे एक अत्यन्त दुष्ट व्यक्ति एक सचमुच अच्छे मनुष्य से घृणा करता है। फिर भी, नीरो की शक्ति सीमित थी। उससे भी अधिक सामर्थी एक ऐसा है, जो सीमा निर्धारित करता है और सबसे बड़े सम्राट से भी कह सकता है, “बस, यहाँ तक—और इससे आगे नहीं।”

नीरो अब भी “हर एक बुरे काम” करने में सक्षम था। “बुरे” के लिए जो शब्द प्रयोग हुआ है, वह उस सक्रिय विरोध को दर्शाता है जो भलाई के विरुद्ध होता है। यह शब्द ऐसे व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करता है जो दुष्टता से भरा हुआ है और किसी धिनौने कार्य को अंजाम देने के लिए लालायित है। नीरो ऐसा ही एक व्यक्ति था, और उसका ध्यान पौलुस पर लगा हुआ था। परन्तु प्रभु अब भी पौलुस के साथ था, और नीरो भी उसे पार नहीं कर सकता था। पौलुस के विरुद्ध रची गई कोई भी योजना कभी सफल नहीं हो सकती थी।

प्रेरित बहुत पहले ही मृत्यु के विषय में मन बना चुका था। मृत्यु उसके लिए केवल महिमा के द्वार को खोलने वाली थी। मेघारोहण में उठाए जाने को छोड़कर, पौलुस को किसी भी स्थिति में मृत्यु का सामना करना ही था। उसके जीवन में जितनी बार वह बाल-बाल बचा था, उसे देखते हुए हम कह सकते हैं कि वह वर्षों से मानो उधार के समय पर अपनी जीवन गुजार रहा था।

यह जानते हुए कि आगे का मार्ग कठिन हो सकता है, पौलुस ने फिर भी लिखा, “प्रभु मुझे छुड़ाएगा [रूओमाई]... और मुझे सुरक्षित रखेगा।” यह शब्द, जो 4:17 में भी प्रयोग हुआ है, एक कोमल शब्द है जो बचाव के विचार को प्रकट करता है—अर्थात् किसी को बचाने वाले के पास खींच लिया जाना और उसे खतरे से बाहर ले जाया जाना। जब पौलुस को न्यायालय के सामने लाया गया था, तब प्रभु ने उसे छुड़ाया था, और जब तक आवश्यकता होगी, वह उसे छुड़ाता ही रहेगा। इसका भाव यह है कि प्रभु उसे सुरक्षित रखेगा।

निस्संदेह, पौलुस अत्यन्त भयंकर संकट में था। उसके चारों ओर जो सताव चल रहा था, वह अत्यन्त भयानक था। अत्यधिक डरावने अत्याचार सामान्य बात के रूप में किए जा रहे थे। परन्तु पौलुस ने अपने मन और हृदय को अपनी वर्तमान विपत्तियों पर टिकने नहीं दिया। यदि वह उन पर मनन करता, तो सम्भव था कि उसका साहस टूट जाता। इसके स्थान पर, उसने अपना ध्यान केवल प्रभु और उसके “स्वर्गीय

राज्य” पर लगाया। वर्षों से पौलुस प्रार्थना करता आया था, “तेरा राज्य आए,” और अब वह निकट आ रहा था। वह वर्षों से उस राज्य का सदस्य था (कुलुस्सियों 1:13), और अब वह उसके मोती के बने द्वारों से प्रवेश करने और उस देश में अपना निवास लेने की प्रतीक्षा कर रहा था, जहाँ कभी दिन ढलता नहीं है।

जब पौलुस ने उस प्रभु के बारे में सोचा जो उस भयानक गड्ढे में उसका साथी था, तो अपने आप उसके मुँह से एक स्तुति-गान फूट निकला: “उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे।” वर्षों पहले, उसने उससे दमिश्क के मार्ग पर भेंट की थी और तब से वह उसे “स्वर्गीय प्रभु” के रूप में जानता था (1 कुरिन्थियों 15:47)। अब शीघ्र ही पौलुस भी घर जाने वाला था और उसे उसकी सारी महिमा में देखने वाला था, उन अद्भुत दृश्यों के बीच जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता (2 कुरिन्थियों 12:2-5)। पौलुस अपने सांसारिक वातावरण को मानो भूल ही गया था। उसका हृदय और मन दोनों “अवर्णनीय और महिमामय आनन्द” से भर गया था (1 पतरस 1:8)। अब वह केवल इतना ही कह सकता था—“आमीन।” उसके लिए, समय मानो अनन्तता में विलीन हो चुका था!

भाग 13

निष्कर्ष

2 तीमुथियुस 4:19-22

क. अभिवादन (4:19-20)

1. टिप्पणियाँ (4:19)

पौलुस अपनी अंतिम पत्री को एक-दो व्यक्तिगत उल्लेखों के बिना समाप्त नहीं कर सकता था, इसलिए उसने अपने कुछ मित्रों का अभिवादन किया जो इफिसुस में तीमुथियुस के साथ थे। उसने कुछ स्मरण करने योग्य सहायकों (“प्रिस्का और अक्विला को नमस्कार”) और एक स्मरण करने योग्य घराने (“और उनेसिफुरुस के घराने”) का उल्लेख किया।

पौलुस ने प्रिस्किल्ला और अक्विला से पहली बार कुरिन्थुस में अपनी दूसरी प्रचार-यात्रा के दौरान भेंट की थी। यह दम्पति यहूदी शरणार्थी थे, जो सम्राट क्लौडियुस के समय यहूदी-विरोध के कारण रोम से आए थे। क्योंकि प्रिस्किल्ला और अक्विला तम्बू बनाने का काम करते थे, जैसा कि पौलुस भी करता था, इसलिए वह उनके साथ रहा और नगर में सुसमाचार का प्रचार करते हुए उनके साथ काम भी करता रहा (प्रेरितों के काम 18:1-3)। जब पौलुस कुरिन्थुस में अपना कार्य समाप्त कर चुका, तो वह उन्हें अपने साथ इफिसुस ले गया और वहाँ उस सुसमाचार प्रचार के लिए मार्ग तैयार करने के लिए छोड़ दिया जिसे वह बाद में उस महत्वपूर्ण नगर में करने वाला था (प्रेरितों के काम 18:19-21)।

क्योंकि वे प्रारम्भिक विश्वासी थे और वचन में अच्छी रीति से शिक्षित थे, इसलिए वे अपुल्लोस जैसे समर्थ प्रचारक को भी उपयोगी शिक्षा देने में समर्थ थे (प्रेरितों के काम 18:24-26)। जब पौलुस ने रोमियों के नाम अपनी पत्री लिखी, उस समय यह दम्पति रोम में थे; और उस पत्री में उसने यह स्वीकार किया कि वह उनके

प्रति बहुत ऋणी है (रोमियों 16:3-4)। जब पौलुस ने तीमुथियुस के नाम अपनी अंतिम पत्री लिखी, तब यह दम्पति फिर से इफिसुस में थे, और पौलुस ने उनका नाम लेकर व्यक्तिगत रूप से नमस्कार कहा। ऐसा करते समय, निश्चय ही अनेक मधुर स्मृतियाँ उसके मन में उमड़ आई होंगी।

पौलुस ने पहले ही 2 तीमुथियुस 1:16 में उनेसिफुरुस की प्रशंसा की थी। परिणामों की परवाह किए बिना, उसने कारागृह में पौलुस से भेंट की थी। उनेसिफुरुस के घराने का उल्लेख कुछ लोगों के अनुसार यह संकेत देता है कि यह साहसी भाई हाल ही में मर गया था। पौलुस उस मनुष्य और उसके परिवार दोनों के विषय में कोमल भाव से सोचता था।

2. समाचार (4:20)

क. इरास्तुस का निवास (4:20क)

तीमुथियुस को समाचार बताते हुए, पौलुस ने लिखा कि “इरास्तुस कुरिन्थुस में ही रह गया।” यह जानकारी इस बात का संकेत देती है कि अपनी गिरफ्तारी से कुछ समय पहले पौलुस ने कुरिन्थुस का दौरा किया था।

इरास्तुस, जो कुरिन्थुस नगर का भंडारी था (रोमियों 16:23), पौलुस के साथ उसकी दूसरी प्रचार-यात्रा में गया था। प्रेरित ने उसे और तीमुथियुस को इफिसुस से मकिदुनिया भेजा था (प्रेरितों के काम 19:22), सम्भवतः यरूशलेम के निर्धनों के लिए एकत्रित किए गए प्रेम-दान के सम्बन्ध में। इस प्रकार, इरास्तुस और तीमुथियुस उस दंगे से बच गए जो उसके थोड़े ही समय बाद इफिसुस में भड़क उठा था।

ख. त्रुफिमस की बीमारी (4:20ख)

पौलुस ने एक और समाचार का उल्लेख किया: “त्रुफिमस को मैं ने मिलेतुस में बीमार छोड़ा है।” त्रुफिमस एशिया का रहने वाला और इफिसुस का निवासी था (प्रेरितों के काम 20:4; 21:29)। वह उस दल का सदस्य था जो अन्यजातियों की धन-सहायता यरूशलेम ले गया था, और इस कारण वह मकिदुनिया से त्रोआस, वहाँ से मिलेतुस और फिर यरूशलेम तक यात्रा कर चुका था। उसके बाद उसके साथ क्या हुआ, इसकी जानकारी नहीं है। स्पष्ट है कि वह पौलुस के साथ उसकी अंतिम यात्रा में भी रोम की ओर गया था। जब त्रुफिमस बीमार पड़ गया, तो पौलुस को उसे मिलेतुस में, जो इफिसुस से ज़्यादा दूर नहीं था, छोड़ना पड़ा। संभवतः पौलुस को आशा थी कि तीमुथियुस इस समाचार पर ध्यान देगा और अपने इस सहकर्मी की आवश्यकता के समय उसकी सहायता के लिए कुछ करेगा।

एक समय था जब पौलुस तीमुथियुस, त्रुफिमस या किसी और को चंगा कर सकता था, परन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि चिन्ह के वरदान — जैसे कि अन्यभाषाएँ, चमत्कार और चंगाई—कलीसिया से हटा लिए गए थे। जैसे ही प्रेरित यूहन्ना अपनी पुस्तकें लिखकर मसीह के पास कूच कर गया, प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के वरदान भी समाप्त हो गए। ये चिन्ह देने वाले वरदान यहूदियों के सामने मसीही विश्वास को प्रमाणित करने के लिए दिए गए थे (1 कुरिन्थियों 1:22), परन्तु उन चिन्हों की उपेक्षा की गई। राष्ट्रीय जीवन समाप्त होने की कगार पर था; इसलिए इन चिन्हों की अब कोई आवश्यकता नहीं रही। इस कारण, बीमार त्रुफिमस पीछे छोड़ दिया गया, परन्तु उसे भुलाया नहीं गया।

ख. एक विनती (4:21क)

पौलुस ने एक अंतिम विनती की, जो करुणा और तीव्र इच्छा से भरी हुई थी: “जाड़े से पहले चले आने का प्रयत्न कर।” प्रेरित उस कालकोठरी में अपनी हड्डियों तक ठंड से काँप रहा था। पौलुस अपने बागे (4:13) के विषय में सोचते हुए व्याकुल हो रहा था और यह कल्पना कर रहा था कि जब जाड़ा आएगा, तब उसकी स्थिति कैसी होगी।

यदि तीमुथियुस जाड़े से पहले नहीं पहुँचा, तो बहुत देर हो जाती। जाड़ा आते ही समुद्र के द्वारा यात्रा करना लगभग असम्भव हो जाता। पहाड़ी मार्गों से स्थल-यात्रा भी लगभग असम्भव हो सकती थी। और पौलुस को यह भी लगता था कि उसके पास अधिक समय नहीं बचा है। क्या तीमुथियुस समय पर पहुँच पाया? आइए, हम आशा करें कि वह पहुँच गया होगा! आइए, हम यह भी आशा करें कि जैसे ही उसने यह पत्री पढ़ी, उसने तुरंत किसी को मिलेतुस भेजा होगा ताकि त्रुफिमस की देखभाल हो सके, अपना सामान बाँधा, यात्रा की तैयारी की, और त्रोआस होते हुए रोम के लिए निकल पड़ा।

ग. एक अतिरिक्त भाग (4:21ख-22)

1. अंतिम अभिवादन (4:21ख)

पौलुस, यद्यपि नीरो के सामने खड़े होते समय अपने बचाव के लिए अकेला छोड़ दिया गया था, फिर भी वह रोम में मित्रों के बिना नहीं था। प्रेरित ने रोम में सताव के प्रहार के मध्य जीवित बचे हुए संकटग्रस्त मसीही समुदाय के कुछ लोगों का उल्लेख किया: “यूबूलुस, और पूदेस, और लीनुस और क्लौदिया, और सब भाइयों का तुझे नमस्कार।” “और” शब्द का बार-बार प्रयोग करके प्रत्येक नाम को अलग-अलग बताने की शैली यह प्रकट करती है कि उसने हर एक नाम का उल्लेख कितनी सावधानी और ध्यानपूर्वक किया। इन उल्लेख किए गए व्यक्तियों के विषय में हमें कुछ विशेष जानकारी नहीं है, सिवाय कुछ अनुमानों के—जैसे कि लीनुस रोम का पहला बिशप बना, और क्लौदिया एक ब्रिटिश राजा की पुत्री थी जो रोम का सहयोगी था।

आपसी मित्रों के अलावा, वहाँ “सब भाई” भी थे। रोम की कलीसिया नीरो के क्रोध के बावजूद जीवंत बनी हुई थी। अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं हो पा रहे थे (मत्ती 16:18)।

2. एक उपयुक्त विदाई (4:22क)

पौलुस ने तीमुथियुस को एक उपयुक्त विदाई दी: “प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे।” प्रेरित जानता था कि इफिसुस की तुलनात्मक सुरक्षा से निकलकर रोम के भीषण संकट के केंद्र तक यात्रा करते समय तीमुथियुस को प्रभु की उपस्थिति का गहरा अनुभव आवश्यक होगा। उसे अपने सारे साहस और सारे दृढ़ निश्चय से भी अधिक की आवश्यकता होगी; उसे प्रभु की आवश्यकता होगी।

वही प्रभु जो रोम में पौलुस के साथ था, इफिसुस में तीमुथियुस के साथ भी हो सकता था, चाहे वह त्राओस की ओर मार्ग में हो या इटली जाने वाले जहाज़ पर हो। उसका प्रवेश बंदरगाह ओस्तिया (रोम का समुद्री बंदरगाह) या नेपल्स की खाड़ी पर स्थित पुतियुली हो सकता था, जहाँ पौलुस पहले उतर चुका था। यदि

तीमुथियुस पुतियुली पर उतरकर अप्पियुस के चौक, तीन सराए और रोम तक मीलों पैदल चलकर जाता, तो उसे दैवीय उपस्थिति की और भी अधिक आवश्यकता होती।

रोम पहुँचने से पहले, संभव है कि तीमुथियुस हर प्रकार के संदेह से बच सके। कौन संदेह करता कि मसीही समूह का एक अगुवा जान-बूझकर रोम की यात्रा करेगा, जबकि समझदारी की बात तो यह थी कि मसीही लोग रोम से बाहर निकल जाएँ? परन्तु रोम में पहुँचने के बाद, तीमुथियुस को वास्तविक खतरे का सामना करना पड़ता। सड़कों पर जासूस भरे पड़े थे। खबरी अपनी सुरक्षा के लिए अधिकारियों को सूचनाएँ देकर लाभ उठाते थे। शीघ्र ही सुरक्षा बलों को यह समाचार मिल जाता कि नगर में एक विदेशी व्यक्ति मामेर्तीन कारागृह का रास्ता पूछ रहा है। जब तीमुथियुस उस कारागृह में पहुँचकर पौलुस से मिलने की इच्छा प्रकट करता, तब उसे निश्चय ही यह स्मरण रखना होता कि कोई और भी उसके साथ खड़ा है।

3. विदाई का उपहार (4:22ख)

पौलुस ने अपनी पत्नी यह कहते हुए समाप्त की: “तुम पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।” पौलुस के पास और कौन-सी विरासत छोड़ने के लिए थी? उसके पास न तो सोना था और न ही कोई अमूल्य रत्न। यदि उसका बागा समय पर पहुँचता, तो सैनिक उसके लिए चिट्ठियाँ डालते, जैसे उन्होंने प्रभु के वस्त्र के लिए किया था।

पौलुस के अंतिम शब्द उस प्रेरिताई उदाहरण का अनुसरण करते हैं, जो पतरस ने प्रेरितों के काम 3:6 में स्थापित किया था: “चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ।” पौलुस के पास अनुग्रह था, और अनुग्रह ही वह सब कुछ था जिसकी तीमुथियुस को आवश्यकता हो सकती थी। यही सब कुछ था जिसकी पौलुस को आवश्यकता थी; और यही उसके पास था।

यह अनुग्रह ही था जिसने पौलुस से भेंट की थी, जब वह कलीसिया का प्रधान सताने वाला था। यही अनुग्रह ही था जिसने उसके पापों को धो दिया और उसका नाम जीवन की पुस्तक में लिख दिया। यह अनुग्रह ही था जिसने उसे सेवकाई के लिए चुना और अन्यजातियों के लिए एक प्रेरित ठहराया। यही अनुग्रह ही था जिसने इतने वर्षों तक उसे इतने सामर्थी रीति से अनेक प्रकार से उपयोग किया। यह अनुग्रह ही था जिसने उसकी आँखें स्वर्ग के लिए खोल दिए और फिर उसे उसका काँटा भी दिया। यह अनुग्रह ही था जिसने उसे इतने सारे संकटों से पार पहुँचाया। यही अनुग्रह था जिसने उसकी सेवकाई को आशीष दी और असंख्य आत्माओं के मन-परिवर्तन और आश्वासन के लिए उसका इस्तेमाल किया। यह अनुग्रह ही था जिसने कारागृह में भी उसके हृदय में प्रभु की उपस्थिति का अनुभव कराया। तो फिर, अनुग्रह से बेहतर उपहार वह और क्या दे सकता था?

“तुम पर अनुग्रह होता रहे,” पौलुस ने लिखा। “आमीन।” और फिर परदा गिर गया। पौलुस के पास अब और कुछ कहने के लिए नहीं था। उसकी सेवकाई पूर्ण हो चुकी थी।

परंपरागत रूप से पौलुस के शहीद होने की तारीख 19 जून, ईसवी 68 मानी जाती है। उसी महीने नीरो ने आत्महत्या कर ली। नीरो “अपने स्थान” में चला गया, जैसे यहूदा गया था (प्रेरितों के काम 1:25), जहाँ से कुछ लोग मानते हैं कि वह मसीह-विरोधी के रूप में फिर से लौटेगा। पौलुस मसीह के पास चला गया और “अवर्णनीय और महिमामय आनन्द” में प्रवेश किया (1 पतरस 1:8)। प्रभु की मुस्कान और स्वागत उसका भाग बना। उसके लिए महिमा से भरा हुआ प्रवेश था। जीवन का मुकुट अब उसका था।

हम कल्पना कर सकते हैं कि उस निर्णायक दिन क्या हुआ होगा, जब पौलुस ने अपनी कालकोठरी को हमेशा के लिए छोड़ दिया। उसने अपने प्रिय वैद्य को अंतिम विदाई दी और उसे मृत्यु-स्थल पर ले जाया गया। वहाँ एक बड़ी कुल्हाड़ी तैयार थी। निस्संदेह, पौलुस ने अपने जल्लाद के लिए कुछ कृपा भरे शब्द कहे होंगे और यह गवाही भी दी होगी कि वह “क्षण भर में, पलक झपकते ही” कहाँ होगा—जैसा कि उसने स्वयं कहा था (1 कुरिन्थियों 15:52)। फिर उसने अपना सिर उस काठ पर झुका दिया, अपनी आँखें बंद कीं, और जब उन्हें फिर खोला तो वह प्रत्यक्ष रूप से अपने प्रियतम प्रभु यीशु के मुख की ओर देख रहा था।

हम सर वाल्टर रैले की मृत्यु-दण्ड की घटना को स्मरण करते हैं। जब कृतघ्न सम्राट जेम्स ने उसे मृत्यु के लिए भेजा, तब उस निडर खोजी ने अपने अंत का सामना अत्यन्त शान्ति के साथ किया। जल्लाद ने उसके अंतिम क्षणों को आसान बनाने के लिए उसे यह दिखाने का प्रयास किया कि वह अपना सिर किस प्रकार काठ पर रखे। रैले ने उसका धन्यवाद किया, परन्तु कहा, “यदि हृदय ठीक स्थान पर है, तो सिर किस ओर रखा है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।”

निश्चित रूप से, पौलुस भी वही शब्द कह सकता था। उसका हृदय अब लगभग दो हजार वर्षों से यीशु के साथ है। अब वह पूर्ण शान्ति और विश्राम में है, और उसके किए हुए कार्य आज भी उसके पीछे-पीछे चलते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13)।